



श्रीरायचन्द्र जिनागमसंग्रहे

भगवत्सुधर्मस्वामिप्रणीत

# श्रीमद्भगवतीसूत्र

(व्याख्याप्रज्ञप्ति.)

मूल अने अनुवादसहित

पंचम अंग-तृतीय खंड

शतक ७-१५

प्रेरक-श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंद.

अनुवादक अने संशोधक—

पंडित भगवानदास हरखचंद दोशी

गूजरात विद्यापीठ

अमदावाद.

Publisher Nārharī Dvāṛkadas Paṛṅkī Mahamātrā Gujrat Vidyāpīṭh, Ahmedābād.

---

Printer Ramechandra Yeau Shedge, at the Nirmay-sagar Press, 26-28, Kolbat Lane, Bombay.

## संपादकीय निवेदन.

जिनागमप्रकाशननी योजनामां भगवतीसूत्रना प्रथमना वे खंडो प्रकाशित थई गया छे, अने ल्यार पछी लगभग चार वर्षे आ तीय खंड प्रकाशित थाय छे. प्रथमना वे खंडो मूळ अने टीकाना अनुवाद साथे पं० वेचरदास जीवराज दोशी पासे संशोधन करावी शोधित पुंजाभाई हीराचंद द्वारा संस्थापित जिनागमप्रकाशक सभाना मानद कार्यवाहक मटेता मनसुखलाल रवजीभाईए प्रकाशित कर्या ता, परन्तु ल्यार पछी पंडित वेचरदास गूजरात पुरातत्वमंदिरमां नियोजित थवाथी अने महेता मनसुखलाल रवजीभाई सदगत थवाथी ता कार्य बन्ध पड्युं. ल्यार पछी केटला एक समय गया बाद श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंदे गूजरात पुरातत्वमंदिरना आचार्य श्रीजिनविज- गजी द्वारा आ काम मने सोप्युं. उपरना वन्ने खंडोमा मूळ अने टीका अनुवाद सहित होवाथी अधिक विस्तार अने टाईपोनी विविधता होवाथी आगळ छपावानी मुश्किली हती, तेमज टीका अने टीकाना अनुवादनी पण बहु उपयोगिता जगती नहोती, तेथी आ त्रीजा खंडमा मात्र मूळ अने तेनो अनुवाद सातमा शतकथी आरंभी पंदरमां शतक सुधी आपवामां आवेल छे. मूळ सूत्रमां ज्यां ज्यां वीजा सूत्रोना पाठोनी भलामण करेली छे त्या ते ते स्थळे ते ते सूत्रोना स्थळोनी पाना-पंक्तीवार सूचना करवामां आवी छे. एक सविस्तर वेपयानुक्रम आपवामा आव्यो छे, अने मूळना अनुवादाने स्पष्ट करवा माटे स्थळे स्थळे टिप्पणो पण आपवामां आव्यां छे.

आ ग्रन्थना संशोधनमां नीचेनी प्रतोनो उपयोग करवामां आव्यो छे.

क. भगवतीसूत्र मूळ ( डहेलाना उपाश्रयनो भंडार ) जुनी अने प्रायः शुद्ध.

ख. भगवतीसूत्र सटीक ( डहेलाना उपाश्रयनो भंडार ) अशुद्ध.

ग. भगवतीसूत्र सटीक ( शातिसागरनो उपाश्रय ) नवी अने प्रायः शुद्ध.

घ. भगवतीसूत्र सटीक ( आगमोदयसमिति मुद्रित ).

ङ. भगवतीसूत्र सटीक ( वावुधनपतसिंगजी प्रकाशित ).

ते सिवाय मुनिमहाराज श्रीहंसविजयजीना ज्ञानभंडारमांथी भगवती मूळनी ताडपत्रनी अपूर्ण प्रत शतक १३ थी मळी छे.

उपरनी प्रतोनो अनुसरीने दशमा शतक सुधी आवश्यक पाठान्तरो लेवामां आव्या छे, पण पाछळथी आचार्य श्रीजिनविजयजीनी ज्ञाना प्रमाणे पाठान्तर न लेता मूळ पाठने सशोधित करवामा ते प्रतिओनो उपयोग करेली छे.

अनुवाद मूळ पाठने अनुसरीनेज करवामां आव्यो छे, अने तेने स्पष्ट करवा माटे वधाराना शब्दो [ ] कोष्टकमां आपेला छे.

मूळ पाठमां सूत्रनो विभाग नथी, पण अहि प्रश्न अने उत्तरनी एक सूत्रमां गणना करी सूत्र विभाग करवामा आव्यो छे. अवान्तर ने जुदा सूत्र तरीके न गणता तेज सूत्रमा तेनी गणना करी लीधी छे. ते सिवाय ज्यां प्रश्न नथी, परन्तु चरित्र के वर्णनात्मक भाग मा पण सरळताथी समजवा खातर सूत्रनो विभाग कर्यो छे. प्रत्येक उद्देशकमा सूत्रना अंको तेने प्रारंभे मूकवामां आव्या छे अने तेनो पाद पण तेनी नीचे ते सूत्रनो अक मूकी आपवामां आवेल छे.

विषयविभागनी स्पष्टता खातर दरेक पानानी पाळ उपर ( मार्जिनमां ) विषय अथवा प्रश्न सूचित करेल छे.

आ पुस्तक पूर्ण थया पछी छेवटे तेनी प्रस्तावना तथा शब्दकोश आपवा धारणा छे. चोथा खंडमां आ ग्रन्थ समाप्त थशे.

आ पुस्तकना संशोधनमां जे जे महाशयोए हस्तलिखित प्रतो आपी सक्रिय सहाय करी छे ते माटे तेओनो कृतज्ञतापूर्वक आभार छुं.

छेवटे आ ग्रन्थना संशोधनमा के तेना अनुवादमां अज्ञान अने प्रमादथी अशुद्धि के दोषो रखा होय ते माटे क्षमा याची सुझाने सूचित करवा प्रार्थना करी विरसुं छुं.

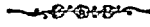
श्रीजैनविद्यार्थिमंदिर  
चौनरबरोड-अमदावाद  
मागशर सुदि पूर्णिमा.

भगवानदास दोशी.





# विषयानुक्रम.



## शतक ७ उद्देशक १. पृ० १-६.

जीव परभवमां जतां क्यारे आहारक अने क्यारे अनाहारक होय ?—लोक संस्थान.—श्रमणोपासकने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया लागे ?—व्रतातिचार.—कर्मरहित जीवनी गति.—दु खी जीव दु खथी व्याप्त होय.—उपयोगरहित अनगारने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया ?—अनगारने सदोष पानभोजन.—निर्दोष पानभोजन.—क्षेत्रातिक्रान्तादि पानभोजन.—शास्त्रातीतादि पानभोजन.

## शतक ७ उद्देशक २. पृ० ७-११.

हिंसालुं प्रत्याख्यान करनारने कदाच सुप्रत्याख्यान अने कदाच दुप्रत्याख्यान थाय.—शा हेतुथी दुप्रत्याख्यान थाय ?—शा हेतुथी सुप्रत्याख्यान थाय ?—प्रत्याख्यान.—मूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—देशमूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—उत्तरगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानना प्रकार—शुं जीवो मूलगुणप्रत्याख्यानी छे वगेरे प्रश्न.—शुं नारको मूलगुणप्रत्याख्यानी छे वगेरे.—मूलगुणप्रत्याख्यानी वगेरेनुं अल्पबहुत्व.—पंचेन्द्रिय तिर्यंचोतु अल्पबहुत्व.—मनुष्यनुं अल्पबहुत्व.—जीवो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी छे ? वगेरे प्रश्न.—नारक अने पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी.—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी वगेरेनुं अल्पबहुत्व.—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी वगेरे जीवो.—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी वगेरेनुं अल्पबहुत्व.—जीवो सयत, असयत अने सयतासयत.—जीवो शुं प्रत्याख्यानी छे वगेरे.—प्रत्याख्यानी वगेरेनुं अल्पबहुत्व.—जीवो शाश्वत के अशाश्वत ?—नारको शाश्वत के अशाश्वत ?

## शतक ७ उद्देशक ३. पृ० १२-१५.

वनस्पतिकाय क्यारे अल्पाहारी अने क्यारे महाहारी होय ?—ग्रीष्ममां अल्पाहारी छता पुष्पित अने फलित केम होय ?—मूल, कन्द अने बीज पोतपोताना जीवथी व्याप्त छे ?—वनस्पति शी रीते आहार करे ? अनन्तजीव वनस्पति शी रीते आहार करे ?—कृष्णलेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ?—नीललेइयावाळो महाकर्मवाळो अने कापोतलेइयावाळो अल्पकर्मवाळो होय ?—वेदना ते निर्जरा नथी.—नारकोने वेदना ते निर्जरा नथी.—जे वेद्युं ते निर्जर्युं नथी—जेने वेदे छे तेने निर्जरतो नथी.—जेने वेदशे तेने निर्जरशे नहि.—जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.—नारकोने वेदना अने निर्जरानो समय भिन्न छे.—नारको शाश्वत अने अशाश्वत छे.

## शतक ७ उद्देशक ४. पृ० १६.

जीवोना प्रकार.—सप्रह गाथा.

## शतक ७ उद्देशक ५. पृ० १७.

खेचर जीवोना शोनिंसप्रह.

## शतक ७ उद्देशक ६. पृ० १८-२२.

नारकायुपनो वन्ध.—नारकायुपनुं वेदन.—नारकोमा महावेदनानु वेदनुं.—असुरकुमारमा महावेदनानुं वेदन.—पृथिवीकायिकमा विविध वेदनानुं वेदन.—आयुपनो वन्ध.—कर्कशवेदनीय कर्म.—कर्कशवेदनीय कर्मना हेतुओ—नारकोने कर्कशवेदनीय कर्म.—अकर्कश वेदनीय कर्म.—अकर्कशवेदनीय कर्मना हेतुओ.—नारकोने अकर्कशवेदनीय कर्म वंधाय छे ?—सातावेदनीय कर्म.—सातावेदनीय कर्मना हेतुओ.—असातावेदनीय कर्म.—असातावेदनीय कर्मना हेतुओ.—जंघुद्दीपना भारतवर्षमा आ अवसर्पिणीमा दुःपमाहु पमा कालने विषे आकारभावप्रत्यवतार—हाहाभूतकाल—भयकर वात.—मलिन दिशाओ—अधिक शीत अने ताप.—अरसविरसादि मेघो.—ग्रामादिमा रहेला मनुष्य, पशु, पक्षिओनो नाश.—वनस्पतिओनो नाश.—पर्वतादिनो नाश.—भूमिनुं खरूप.—मनुष्यनो आकारभावप्रत्यवतार—मनुष्यनो आहार—ते मनुष्यो मरीने क्या जशे ?—ते सिंहादि मरीने क्या जशे ?—कागवा वगेरे मरीने क्या जशे ?

## शतक ७ उद्देशक ७. पृ० २३-२६.

सृष्ट अनगारने क्रिया—ऐर्यापथिकी क्रिया लागवानु कारण.—काम रूपी के अरूपी ?—सचित के अचित ?—जीव के अजीव ?—जीवोने काम होय के अजीवोने होय ?—भोगो रूपी के अरूपी ?—भोगो सचित के अचित ?—भोगो जीव के अजीव ?—भोगो जीवोने होय के अजीवोने होय ?—भोगोना प्रकार—कामभोगना प्रकार—जीवो कामी के भोगी ?—नारको कामी के भोगी होय ?—पृथिवीकाय, वेद्न्द्रिय, तेद्न्द्रिय अने चउरिन्द्रिय

जीवो कानी के भोगी होय ?—अल्पबहुल—उग्रम्य मनुष्य.—धर्मोपधिज्ञानी.—परमावधिज्ञानी.—केवलज्ञानी.—असंखी जीवो अक्षामपूर्वक वेदना वेदे ?—समर्थ छता अज्ञान वेदना वेदे ?—समर्थ छता पण अक्षामपूर्वक वेदना केम वेदे ?—समर्थ तीर्थेच्छापूर्वक वेदना वेदे ?—समर्थ तीर्थेच्छापूर्वक वेदानाने केम वेदे ?

### शतक ७ उद्देशक ८. पृ० २७—२८.

उग्रम्य मनुष्य केवल सयम बडे सिद्ध धयो ?—हृन्वि धने कुंभुनो जीव गमान छे ?—पापकर्म दु नश्य छे ?—दुगसंजाओ,—नारकोने द्य प्रनारनी वेदना.—हाथी धने कुंभुने समान वप्रत्याख्यान किया.—आपाकर्म धाहार करनार नापु छुं बाधे ?

### शतक ७ उद्देशक ९. पृ० २९—३५.

असुरत साधु वहारना पुद्गलोने ग्रहण क्या गिवाय एकत्रणवाळुं एक रूप विदुवैवा ममर्थ छे ?—महाशिलान्द्रक संग्राम.—महाशिलान्द्रक धापी कहेवाय छे ?—महाशिलान्द्रकमा केटला छाय माणतोने संहार धयो ?—मरीने तेओ क्या उप्पय धया ?—रथसुगल संग्राम.—कोनो जय धने कोनो पराजय ?—रथसुगल संग्राम धापी कहेवाय छे ?—मनुष्योने संहार.—तेओ मरीने क्या उप्पय धया ?—शु बुद्धमा हणाएण सयं जाय ?—ते वात सिध्या छे.—नागनो पांड्र वरण—तेनी रथसुगल संग्राममा जानी तयारी.—वरणनो धमिग्रह—बुद्धनो वरणने गरन प्रदर.—वरणतुं बुद्धमापी पाछा फरतुं—तेतुं नवैभ्राणातिपाताटिविरमण.—गंधोदक तथा पुष्पशुषि—वरण मरीने क्यां गयो ?—वरण देवलोवयी च्यवी मोले जजे.—वरणनो मित्र मरीने क्यां गयो ?—वरणनो मित्र ल्यायी क्या जजे ?

### शतक ७ उद्देशक १०. पृ० ३६—४०.

बन्धुतीर्थिको—पंचास्त्रिकाय विपे सदेह—गौतमने प्रथ—गौतमनो उत्तर.—कालोदायीतुं आगमन.—कालोदायिना प्रभो.—पुद्गलास्त्रिकायने विपे कर्म लागे ?—पापकर्म अशुभनिपाकसहित होय ?—पापकर्मों अशुभनिपाकसंयुक्त केम होय ?—कल्याण कर्मों कल्याणफलसुक्त होय.—कल्याण कर्मों कल्याण निपाकफलसहित केम होय ?—अत्रिनायनो समारंभ करनार वे पुष्पमा कोण महाकर्मवाळो होय ?—अचित्त पुद्गलोने प्रज्ञान करे ?—क्या पुद्गलोने प्रज्ञान करे ?

### शतक ८ उद्देशक १. पृ० ४१—५५.

पुद्गलनो परिणाम.—प्रयोगपरिणत पुद्गलो—प्रथमदंतक—एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो—चायत् पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.—नैरयिकप्रयोगपरिणत—तिर्यंचपचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.—जलचरादिप्रयोगपरिणत.—मनुष्यप्रयोगपरिणत.—देवप्रयोगपरिणत.—भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषिक धने वैमानिकप्रयोगपरिणत.—द्वितीयदंडक—सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रयोगपरिणत.—त्रैशुन्द्रियादिप्रयोगपरिणत—रत्नप्रभादिनैरयिकप्रयोगपरिणत.—संमूर्च्छिमजलचरादिप्रयोगपरिणत.—संमूर्च्छिममनुष्यादिप्रयोगपरिणत—असुरकुमारादिप्रयोगपरिणत—सर्वाथेसिद्धदेवप्रयोगपरिणत—तृतीयदंडक—सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रयोगपरिणत—रत्नप्रभादिनैरयिकप्रयोगपरिणत—जलचरादि तिर्यंचप्रयोगपरिणत—मनुष्यप्रयोगपरिणत.—असुरकुमारादिदेवप्रयोगपरिणत—चतुर्थदंडक.—पंचम दंडक—षष्ठ दंडक—सप्तम दंडक—अष्टम दंडक—नवम दंडक.—मिथ्रपरिणत पुद्गलो.—मिथ्रपरिणत पुद्गलने विपे नव दंडक—विस्रमापरिणत पुद्गलो—एकत्रयपरिणाम—मन प्रयोगादिपरिणत—आरंभसत्त्वमन प्रयोगादिपरिणत—आरंभसत्त्वमन.प्रयोगादिपरिणत.—मत्त्वानुप्रयोगादिपरिणत.—आंदायिकादिकायप्रयोगपरिणत—आंदायिककायप्रयोगपरिणत—आंदायिकमिथ्रकायप्रयोगपरिणत—वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत.—वैक्रियमिथ्रकायप्रयोगपरिणत—आहार शरीरकायप्रयोगपरिणत—आहारकमिथ्रकायप्रयोगपरिणत.—सामंशरीरकायप्रयोगपरिणत.—मिथ्रपरिणत.—सत्त्वम.नोमिथ्रपरिणत.—निष्कामपरिणत—व्रणं, गन्ध, रस धने सर्शपरिणत—संस्थानपरिणत.—त्रे द्रव्योने परिणाम—मन प्रयोगादिपरिणत.—मिथ्रपरिणत वे द्रव्यो.—निष्कामपरिणत वे द्रव्यो.—व्रण द्रव्योने परिणाम—मन प्रयोगादिपरिणत व्रण द्रव्यो.—चार द्रव्योने परिणाम—मन.प्रयोगादिपरिणत चार द्रव्यो.—पांच, छ, चायत् अनन्त द्रव्योने परिणाम.—अल्पबहुल.

### शतक ८ उद्देशक २. पृ० ५६—७६.

आशीविप—जातिआशीविप.—शुद्धिकलाशीविपना विपनो विपय—महृत्कलाशीविपना विपनो विपय.—उरगना विपनो विपय—मनुष्यजतिआशीविपना विपनो विपय.—कर्मोशीविप—गर्भजपचेन्द्रियतिर्यंचकर्मोशीविप.—गर्भजमनुष्यकर्मोशीविप—भवनवासीकर्मोशीविप—अपर्याप्तदेवकर्मोशीविप—वानव्यन्तर, वैमानिक, कल्पोपग्रह, चायत् महेश्वरदेवलोकवयन्तकर्मोशीविप—अपर्याप्तमौघमोदिडेवो कर्मोशीविप—उग्रम्य दस स्थानकोने न जाणे.—ज्ञानना प्रकार—आमिनिबोधिकज्ञानना प्रकार.—मतिअज्ञान—अवग्रह—श्रुतअज्ञान—विभंगज्ञान—ज्ञानी धने अज्ञानी—नैरयिको, असुरकुमारो, पृथिविकायिक, वेदुन्द्रिय, वेदुन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यंचो धने मनुष्यो ज्ञानी के अज्ञानी ?—वानव्यन्तर, ज्योतिषिको धने वैमानिको ज्ञानी के अज्ञानी ?—सिद्धो ज्ञानी के अज्ञानी ?—निरयगतिक, निर्यंचगतिक, मनुष्यगतिक, सिद्धगतिक, सेन्द्रिय, एकेन्द्रियादि, अनिन्द्रिय, सत्त्विक, पृथिवीकायिकादि, व्रणकायिक, कायरहित, सूक्ष्म जीवो, वादर जीवो, पर्याप्त जीवो, पर्याप्त नैरयिकादि, पर्याप्त पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, पर्याप्त मनुष्यो, अपर्याप्त जीवो, अपर्याप्तनैरयिकादि, अपर्याप्त पृथिवीकायिकादि, अपर्याप्त वेदुन्द्रियादि, अपर्याप्त मनुष्य, अपर्याप्त वानव्यन्तर, ज्योतिषिक, वैमानिक, नोपर्याप्तनोअपर्याप्त जीवो, निरवभवस्थ, तिर्यंचभवस्थ, मनुष्यभवस्थ, देवभवस्थ, अभवस्थ, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, नोभवसिद्धिकनोअभवसिद्धिक, सही जीवो, असही जीवो धने नोसहीनोअसही जीवो ज्ञानी के अज्ञानी होय ?—लक्ष्यना प्रकार—ज्ञानलक्ष्य—अज्ञानलक्ष्य—दर्शनलक्ष्य—चारित्र्यलक्ष्य.—चारित्र्याचारित्र्यलक्ष्य—दीर्घलक्ष्य—इन्द्रियलक्ष्य—ज्ञानलक्ष्यवाळा ज्ञानी के अज्ञानी होय ?—ज्ञानलक्ष्यरहित—आमिनिबोधिकज्ञानलक्ष्य.—आमिनिबोधिकलक्ष्यरहित.—अवधिज्ञानलक्ष्यक जीवो.—अवधिज्ञानलक्ष्यरहित—मन पर्यवज्ञानलक्ष्यक.—मन पर्यवज्ञानलक्ष्यरहित—केवलज्ञानलक्ष्यक—केवलज्ञानलक्ष्यरहित.—अज्ञानलक्ष्यक.—अज्ञानलक्ष्यरहित—मलज्ञान धने श्रुताज्ञानलक्ष्यरहित—विभंगज्ञानलक्ष्यक धने विभंगज्ञानलक्ष्यरहित—दर्शनलक्ष्यक.—दर्शनलक्ष्यरहित.—मिथ्यादर्शनलक्ष्यक.—मिथ्यादृष्टिलक्ष्यक.—चारित्र्यलक्ष्यक.—सामायिकादिचारित्र्यलक्ष्यक धने अलक्ष्यक.—चारित्र्याचारित्र्यलक्ष्यक धने अल-

बिधक.—ज्ञानादिलब्धिक अने अलब्धिक.—बालवीर्य, पंडितवीर्य अने बालपंडितवीर्यलब्धिक अने अलब्धिक.—इन्द्रियलब्धिक अने अलब्धिक.—श्रोत्र-  
न्द्रियादिलब्धिक अने अलब्धिक.—साकारउपयोगवाळा.—आभिनियोधिकारिसाकारउपयोगवाळा.—मतिअज्ञानादिसाकारोपयोगवाळा जीवो.—अनाकारोप-  
योगवाळा जीवो.—सयोगी जीवो.—सदृश्य जीवो.—वृष्णादिलेख्यावाळा.—सकपायी जीवो.—अकपायी जीवो.—वेदसहित अने वेदरहित जीवो.—आहारक  
जीवो.—अनाहारक.—आभिनियोधिक ज्ञाननो विषय.—श्रुतज्ञाननो विषय.—अवधिज्ञाननो विषय.—मन पर्यवज्ञाननो विषय.—केवलज्ञाननो विषय.—  
मतिअज्ञाननो विषय.—श्रुतअज्ञाननो विषय.—विभगज्ञाननो विषय.—ज्ञानी ज्ञानीपणे क्या सुधी रहे ?—आभिनियोधिकादि दशनो स्थितिकाळ.—आभिन-  
योधिक ज्ञानना पर्यायो.—श्रुतज्ञानादिना पर्यायो.—विभगज्ञानना पर्यायो.—पाच ज्ञानना पर्यायोतुं अल्पबहुल.—मत्सादि त्रण अज्ञाननो पर्यायोतुं अल्पबहुल.  
—पाच ज्ञान अने त्रण अज्ञानना पर्यायोतुं अल्पबहुल.

### शतक ८ उद्देशक ३. पृ० ७७-७८.

वृक्षना प्रकार.—संख्यातजीवी वृक्ष.—असंख्यातजीवी वृक्ष.—एकबीजवाळा.—अनन्तजीवी वृक्ष.—कोइ जीवना वे, त्रण के संख्यात खंड क्या  
होय तो तेनी वषेनो भाग जीवप्रदेशाथी स्पृष्ट होय ?—जीवप्रदेशोने शलादिथी पीडा थाय ?—पृथिवीओ.

### शतक ८ उद्देशक ४. पृ० ७९.

पांच क्रियाओ.

### शतक ८ उद्देशक ५. पृ० ८०-८३.

आजीविकना प्रश्नो—जेणे सामायिक करेलुं छे एवा थावकना भाड-पात्रादि वस्तु कोइ अपहरण करे तो ते भाडने शोधे के अभाडने शोधे ?—अपहृत  
भाड अभाड थाय तो ते पोताना भाडने शोधे छे एम केम कहेवाय ?—ममलभावतु प्रत्याख्यान करुं नथी माटे एम कहेवाय.—ए प्रमाणे कोइ तेनी छीने  
सेवे तो ते छीने सेवे छे के अछीने सेवे छे ?—प्रत्याख्यानथी छी ते अछी थाय ?—जो एम थाय तो तेनी छीने सेवे छे एम केम कहेवाय ?—प्रेमवन्धन  
अविच्छिन्न छे माटे एम कहेवाय ?—थावक स्थूल प्राणातिपाततु प्रत्याख्यान केवी रीते करे ?—अतीतकालसंबन्धी प्राणातिपातना प्रतिक्रमणना भागा.—  
वर्तमान प्राणातिपातना सवरसवन्धे भागा.—अनागत प्राणातिपातना प्रत्याख्यान सवन्धे भागा.—स्थूल मृपावादातुं प्रत्याख्यान अने तेना भागा.—यावत्  
स्थूल परिग्रहना भागा.—आजीविकनो सिद्धान्त —आजीविकना चार श्रमणोपासको.—थावकोने वज्यं पंदर कर्मादानो.—देवलोक.

### शतक ८ उद्देशक ६. पृ० ८४-८८.

संयतने निर्दोष अज्ञानादिथी प्रतिलाभता शुं फल थाय ?—एकान्त निर्जरा थाय.—सदोष अज्ञानादिथी प्रतिलाभता शुं फल थाय ?—घणी निर्जरा अने  
अल्प पापकर्मनो वन्ध थाय.—असयतने आहारथी प्रतिलाभता शुं फल थाय ?—एकान्त पापकर्म थाय —निर्मन्वने वे पिंड प्रहण करवा माटे उपनिमन्त्रण-  
त्रण पिंड, यावत् दश पिंडतुं उपनिमन्त्रण.—वे पात्रतु उपनिमन्त्रण.—आराधक अने विरायक—(आलोचना जेनी पासे करवानी होय ते) स्थविरो मूक थाय —  
(आलोचना करतार) निर्मन्थ मूक थाय.—पछी स्थविरो काळ करे.—निर्मन्थ काळ करे—सप्राप्त निर्मन्थना चार आलापक.—निहारभूमि के विहारभूमि  
तरफ जता ( निर्मन्थ ).—प्राप्तनुप्राप्त विहार करता ( निर्मन्थ ).—आराधक निर्मन्थी.—आराधक होवातुं कारण.—बलता वीपकमा शुं बळे छे ?—ज्योति  
बळे छे.—बलता धरमा शुं बळे छे ?—ज्योति बळे छे —परना एक औदारिक शरीरने आश्रयी जीवने क्रिया.—नारकने क्रिया.—असुरकुमारने क्रिया —  
एक जीवनी औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिक जीवनी एक औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिकादिने क्रिया.—जीवने औदारिक शरीरने  
आश्रयी क्रिया.—नैरयिकोने क्रिया.—जीवने वैक्रियशरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिकने वैक्रिय शरीरने आश्रयी क्रिया.—मनुष्यने जीव पेठे क्रियाओ  
होय.—वैमानिकोने कर्मण शरीरने आश्रयी क्रियाओ.

### शतक ८ उद्देशक ७. पृ० ८९-९२.

अन्यतीर्थिको अने स्थविरोनो सवाद.—अन्यतीर्थिकोए स्थविरोने वल्लु के तमे असयत अने एकान्त बाल छो —स्थविरो पूछे छे के अने श्राथी  
असयत अने बाल छीए ?—अन्यतीर्थिको त्रिविधे त्रिविधे असयत होवातुं कारण कहे छे अने स्थविरो तेनो उत्तर आपे छे—इत्यादि.

### शतक ८ उद्देशक ८. पृ० ९३-१००.

गुरुप्रत्यनीक.—गतिप्रत्यनीक —समूहप्रत्यनीक.—अनुकंपाप्रत्यनीक —श्रुतप्रत्यनीक.—भावप्रत्यनीक.—व्यवहार.—व्यवहारतुं फल.—ऐर्यापयिक  
अने सांपरायिकवन्ध.—ऐर्यापयिकवन्धना स्वामी —ऐर्यापयिक कर्म वेदरहित जीव वाधे.—छीपश्चात्कृतादि जीव वाधे.—ऐर्यापयिक कर्मसवन्धे  
भागा.—ऐर्यापयिक कर्मसवन्धे सादि सपर्यवसितादि भंग —'ऐर्यापयिक कर्म शुं देशथी देशने वाधे' इत्यादि प्रश्न.—उत्तर—सर्वथी सर्वने वाधे छे —  
सांपरायिक कर्मवन्धना स्वामी —छी वगेरे वाधे —छीपश्चात्कृतादि वाधे.—सांपरायिक कर्म वाच्यु, वाधे छे अने वाधेते वे सवन्धे भागा.—सादिसपर्य-  
वसितादि भागा.—(सांपरायिक कर्म) देशथी देशने वाधे ?—कर्मप्रकृतिओ.—परिपहो —परिपहोने कर्मप्रकृतिओमां समवतार.—वेदनीय कर्ममां  
समवतार.—दर्शनमोहनीय कर्ममां समवतार.—चारित्रमोहनीय कर्ममां समवतार—अन्तराय कर्ममां समवतार—सप्तविधकर्मवन्धकने परिपहो.—अष्ट-  
विधकर्मवन्धकने परिपहो.—षड्विधकर्मवन्धकने परिपहो —एकविधकर्मवन्धक चीतराग छद्मस्थने परिपहो.—एकविधकर्मवन्धक सयोगिकेवलीने परिपहो.—कर्म-  
वन्धरहित अयोगिकेवलीने परिपहो —जंबूद्वीपमा सूर्य दूर छता पासे केम देखाय छे ?—सूर्यो सर्वत्र उंचाहमा सरसा छे ?—तेजना प्रतिपातथी दूर छता  
पासे देखाय छे.—तेजना अभितापथी पासे छता दूर देखाय छे.—अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे ? इत्यादि प्रश्न.—अतीत क्षेत्रने प्रकाशे छे ? इत्यादि प्रश्न-  
वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे.—स्पृष्ट क्षेत्रने प्रकाशित करे छे —अतीत क्षेत्रने उद्द्योतित करे छे ? इत्यादि.—सूर्यनी क्रिया वर्तमान क्षेत्रमा कराय छे —  
सूर्य स्पृष्ट क्रियाने करे छे.—केटल क्षेत्र उंचे तपावे छे ?—मनुष्योत्तर पर्वतनी अदरना चन्द्रादि देवो शुं ऊर्ध्व लोकमा उत्पन्न थयेला छे ?—मनुष्योत्तर  
पर्वतनी बहारा चन्द्रादि देवो ऊर्ध्व लोकमा उत्पन्न थयेला छे ?—इन्द्रस्थान केटला काळसुधी उपपातविरहित छे ?

## शतक ८ उद्देशक ९. पृ० १०१-११७.

चन्द्र.—विद्यसावन्ध.—अनादि विद्यसावन्ध.—धर्मास्तिकायनो अनादि विद्यसावन्ध.—अनादि विद्यसावन्धनो काळ.—सादि विद्यसावन्ध.—  
 वन्धनप्रत्ययिकवन्ध —भाजनप्रत्ययिकवन्ध —परिणामप्रत्ययिकवन्ध.—प्रयोगवन्ध —आलापनवन्ध.—आलीनवन्ध.—छेपणावन्ध.—उच्चयवन्ध.—  
 समुच्चयवन्ध.—संहननवन्ध.—देशसंहननवन्ध.—सर्वसंहननवन्ध —शरीरवन्ध —पूर्वप्रयोगप्रत्ययिकवन्ध.—प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिकवन्ध.—शरीरप्रयोगवन्ध.—  
 औदारिकशरीरप्रयोगवन्ध.—एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगवन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना उद्यथी थाय छे ?—एकेन्द्रिय-  
 औदारिकशरीरप्रयोगवन्ध.—पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगवन्ध.—मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगवन्ध —औदारिकशरीरप्रयोगवन्ध देश के सर्ववन्ध छे ?—  
 एकेन्द्रियऔदारिकप्रयोगवन्ध.—मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगवन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगवन्धनो काळ —एकेन्द्रिय.—पृथिवीकायिक.—औदारिक शरीर-  
 वन्धना अन्तरनो काळ —एकेन्द्रिय.—पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय.—पंचेन्द्रिय तिर्यचना औदारिकशरीरवन्धनुं अन्तर.—एकेन्द्रियऔदारिक शरीरना  
 प्रयोगवन्धनुं अन्तर.—पृथिवीकायिकऔदारिकशरीरवन्धनुं अन्तर.—औदारिक शरीरना सर्ववन्धक, देशवन्धक अने अयन्धकनुं अल्पवहुल —वैक्रिय-  
 शरीरप्रयोगवन्ध.—वायुकायिकएकेन्द्रियशरीरप्रयोगवन्ध के तेथी भिन्न एकेन्द्रियशरीरप्रयोगवन्ध ?—वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना उद्यथी थाय  
 छे ?—वायुकायिकवैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध.—नैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध —तिर्यचयोनिवैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध —देशवन्ध अने सर्ववन्ध —वैक्रियशरीर-  
 प्रयोगवन्धकाळ.—वायुकायिकवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धनो काळ —रत्नप्रभानैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धकाळ —वैक्रियशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर —वायुका-  
 यिक वैक्रियशरीरप्रयोगवन्धान्तर.—तिर्यचपंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर.—वायुकायिकवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर —रत्नप्रभानारक वैक्रिय-  
 शरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर —अशुभकुमार, नागकुमार, यावत्—सहस्रार देवो.—आनतदेववैक्रियशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर.—प्रैयेयकल्पातीत.—अनुत्तरौ-  
 पपातिक.—अल्पवहुत्व.—आहारकशरीरप्रयोगवन्ध —आहारकशरीरप्रयोगवन्ध मनुष्य के ते शिवाय बीजाने होय ?—आहारकशरीरप्रयोगवन्ध कया  
 कर्मना उद्यथी होय ?—देशवन्ध अने सर्ववन्ध —आहारकशरीरप्रयोगवन्धनो काळ —अन्तर.—देशवन्धक, सर्ववन्धक अने अयन्धकनुं अल्पवहुत्व.—  
 तैजसशरीरप्रयोगवन्ध —एकेन्द्रिय, यावत् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध —तैजसशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना उद्यथी थाय ?—देशवन्ध के सर्ववन्ध ?—सर्ववन्ध  
 नथी.—तैजसशरीरप्रयोगवन्धनो काळ —तैजसशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर.—कामेशरीरप्रयोगवन्ध.—ज्ञानावरणीय कामेशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना  
 उद्यथी थाय छे ?—दर्शनावरणीय कामेशरीरप्रयोगवन्ध —सातावेदनीय.—असातावेदनीय —सोहनीय.—नारकायुप —तिर्यचयोनिवायुप.—मनुष्या-  
 युप —देवायुप —शुभनाम —अशुभनाम —उच्चगोत्र —नीचगोत्र —अन्तराय.—ज्ञानावरणीयनो देशवन्ध के सर्ववन्ध ?—ज्ञानावरणीय कामेशरीर-  
 प्रयोगवन्धनो काळ —ज्ञानावरणीय कामेशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर.—देशवन्धक अने अयन्धकनुं अल्पवहुल —आयुषकर्मना देशवन्धक अने अयन्धक-  
 जीवोनुं अल्पवहुत्व.—औदारिकशरीरना सर्ववन्ध साथे वैक्रियशरीरवन्धनो सवन्ध —आहारक शरीरवन्धनो संवन्ध —तैजसशरीरनो संवन्ध.—देश-  
 वन्धक के सर्ववन्धक ?—कामेशरीरनो संवन्ध.—औदारिक शरीरना देशवन्ध साथे वैक्रिय शरीरनो सवन्ध —वैक्रिय शरीरना सर्ववन्ध साथे औदारिक  
 शरीरनो संवन्ध.—देशवन्ध साथे औदारिक शरीरवन्धनो संवन्ध.—आहारक शरीरना सर्ववन्ध साथे औदारिक शरीरवन्धनो संवन्ध.—आहारक  
 शरीरना देशवन्ध साथे औदारिक शरीरनो सवन्ध —तैजस शरीरना देशवन्धक साथे औदारिक शरीरनो संवन्ध.—औदारिक शरीरनो देशवन्धक के  
 सर्ववन्धक ?—वैक्रियशरीरनो वन्धक के अयन्धक ?—कामेशरीरनो वन्धक के अयन्धक ?—देशवन्धक के सर्ववन्धक ?—कामेशरीरना देशवन्धक  
 साथे औदारिक शरीरवन्धकनो संवन्ध —शरीरना देशवन्धक, सर्ववन्धक अने अयन्धकनुं अल्पवहुल.

## शतक ८ उद्देशक १०. पृ० ११८-१२४.

‘शील ज धेय छे’ इत्यादि अन्यतीर्थिकोनुं मन्तव्य —‘शीलसंपन्न छे पण श्रुतसपन्न नथी’ इत्यादि चतुर्भंगी.—देशाराधक, देशविराधक, सर्वाराधक  
 अने सर्वविराधक.—आराधनाना प्रकार.—ज्ञानाराधना.—दर्शनाराधना —उत्कृष्ट जानाराधना अने उत्कृष्ट दर्शनाराधनानो संवन्ध —उत्कृष्ट दर्शनाराधना  
 अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संवन्ध —उत्कृष्ट जानाराधक केटला भव पछी मोक्षे जाय ?—उत्कृष्ट दर्शनाराधक क्यारे मोक्षे जाय ?—उत्कृष्ट चारित्राराधक  
 मोक्षे क्यारे जाय ?—ज्ञाननी मध्यमाराधना आराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—दर्शन अने चारित्रानी मध्यमाराधनानो आराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—ज्ञाननी  
 जघन्य आराधनानो आराधक क्यारे मोक्षे जाय ?—ए प्रमाणे दर्शनाराधना अने चारित्राराधना.—पुद्गलपरिणामना प्रकार.—वर्णपरिणाम, गन्धपरिणाम,  
 रसपरिणाम अने रस्यपरिणाम.—संस्थानपरिणाम —पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश, वे प्रदेशो, यावत् अन्तत् प्रदेशो शु द्रव्य छे, द्रव्यदेश छे इत्यादि प्रश्न.—  
 लोकाकाश अने एक जीवना प्रदेशो.—कर्मप्रकृति.—नैरयिक यावत् वैमानिकोने कर्मप्रकृति.—ज्ञानावरणीय कर्मना अविभागपरिच्छेद.—नैरयिक जीवनो  
 एक एक प्रदेश केटला ज्ञानावरणीय कर्मना परिच्छेदोथी आवेष्टित छे ?—एक एक जीवनो एक एक प्रदेश दर्शनाराधनीयना केटला अविभाग परिच्छेदथी  
 वेष्टित छे ?—ज्ञानावरणीय अने दर्शनाराधनीयनो सवन्ध.—ज्ञानावरणीय अने वेदनीयनो सवन्ध —ज्ञानावरणीय अने मोहनीय कर्मनो संवन्ध.—ज्ञाना-  
 वरणीय अने आयुषकर्मनो संवन्ध.—ए प्रमाणे दर्शनाराधनीयादिनो वेदनीयादिनो साथे संवन्ध —जीव पुद्गली के पुद्गल ?—नैरयिको पुद्गली के पुद्-  
 गल ?—सिद्धो पुद्गली के पुद्गल ?

## शतक ९ उद्देशक १-३०. पृ० १२५-१२७.

जंबूद्वीप —जंबूद्वीपमां चन्द्रोने प्रकाश —लवणमसुद्रमा चन्द्रोने प्रकाश —घातकिरिसेठ, कालोदसमुद्र, पुष्करलद्वीप, अभ्यन्तर पुष्करार्थ अने पुष्करोदे-  
 समुद्रमा केटला चन्द्रो प्रकाशित थाय छे ?—अलगावीश अन्तद्वीपो.

## शतक ९ उद्देशक ३१. पृ० १२८-१३७.

केवल्यादिपासे मांभल्या शिवाय कोई जीवने धर्मनो बोध थाय के नहि इत्यादि प्रश्न.—बोधि—सम्यग्दर्शननो अनुभव करे के नहि ?—तेनो हेतु.—  
 ए प्रमाणे प्रप्रज्ञाने स्वीकारे के नहि ?—तेनो हेतु.—ब्रह्मचर्य.—ब्रह्मचर्यावासनो हेतु —संयम —संयमनो हेतु.—संवर.—संवरनो हेतु.—आभिनिनोधिक-  
 ज्ञान —आभिनिनोधिकज्ञाननो हेतु —श्रुतज्ञान —अवधिज्ञान अने मन पर्यवज्ञान —केवलज्ञान —धर्मबोध, शुद्धसम्यक्त्वनो अनुभव वगेरे.—केवल्यादिनुं  
 यचन मांभल्या शिवाय कोई धर्मादिनो अनुभव करे तेनो हेतु.—केवल्यादिना वचन मांभल्या जिवाय सम्यक्त्वादिने स्वीकारे.—विभंगज्ञाननी उत्पत्ति.—सम्भ-

दर्शननी प्राप्ति.—चारित्र्यनो स्वीकार.—अवधिज्ञाननी उत्पत्ति.—उद्देश्य.—ज्ञान.—मनोयोगी इत्यादि.—संघयण.—सस्थान.—उंचाई.—आनुप.—वेद.—पुरुषवेदादि.—रूपाय.—सञ्चलनक्रोधादि.—अध्यवसायो —प्रणस्त अध्यवसाय.—नारक, तिर्यच, देव अने मनुष्यभक्तोथी मुक्ति.—अन्तानुबंध्यादिकपायनो क्षय.—अश्रुत्वा केवली धर्मोपदेश न करे.—प्रत्रज्या न आपे.—सिद्ध थाय.—ऊर्ध्व, अधो अने तिर्यग्लोकमा होय.—ऊर्ध्वलोकमा वृत्त वैताड्यमा होय.—अधोलोक प्राप्तादिमा होय.—तिर्यग्लोकमा पदर कर्मभूमिमा होय.—ते एक समये केटला होय ?—केवल्यादि पासेथी धर्म सामळीने कोई धर्मने पामे अने कोई धर्मने न पामे इत्यादि.—केवल्यादि पासेथी धर्म श्रमण करीने सम्भ्रज्यदर्शनादि युक्त जीवने अवधिज्ञानादिनी प्राप्ति.—उद्देश्य.—ज्ञान.—योग.—वेद.—उपशांतवेद के क्षीणवेद होय ?—क्षीवेदादि.—सकपायी के अकपायी ?—उपशात के क्षीणकपायी ?—केटला कपाय होय ?—अध्यवसायो.—धर्मोपदेश.—प्रत्रज्या आपे.—तेना शिष्यो पण प्रत्रज्या आपे.—प्रशिष्यो पण प्रत्रज्या आपे.—सिद्ध थाय.—शिष्यो पण सिद्ध थाय.—प्रशिष्यो पण सिद्ध थाय.—छुं ते ऊर्ध्वलोकमां होय इत्यादि.—एक समयमा सख्या.

### शतक ९ उद्देशक ३२. पृ० १३८-१६१.

वाणिज्यग्राम.—गागेयना प्रश्नो.—नैरयिको सान्तर के निरंतर उत्पन्न थाय छे ?—असुरकुमार.—पृथ्वीकायिको.—वेद्दंद्रियो यावत् वैमानिको.—नैरयिको अने यावत् स्तनितकुमारुं सान्तर अने निरन्तर च्यवन.—पृथ्वीकायिकादिनुं सान्तर के निरंतर च्यवन.—वेद्दन्द्रियादि.—ज्योतिषिक.—प्रवेशनक.—नैरयिक प्रवेशनक.—एक नैरयिक.—त्रे नैरयिक.—त्रण नैरयिको.—एकसयोगी सात विकल्पो.—द्विकसयोगी वेंतालीश विकल्पो.—त्रिकसयोगी पात्रीश विकल्पो.—चार नैरयिको.—द्विकसयोगी त्रैसठ विकल्पो.—त्रिकसयोगी विकल्पो.—चतु.सयोगी पात्रीश विकल्पो.—पांच नैरयिक.—द्विकसयोगी ८५ विकल्पो.—त्रिकसयोगी २१० विकल्पो.—चतु.सयोगी १४० विकल्पो.—पंचसयोगी २१ विकल्पो.—छ नैरयिको.—द्विकसयोगी १०५ विकल्पो.—त्रिकसयोगी विकल्पो.—चतु.सयोग अने पंचसयोग —छ संयोगी विकल्पो.—सात नैरयिको.—द्विकसयोगी विकल्पो.—त्रिकसयोग, चतु संयोग, पंचसयोग अने छ-सयोग —सप्तसयोगी विकल्पो.—आठ नैरयिको.—द्विकसयोगी विकल्पो.—यावत् पट्कसयोगी विकल्पो.—सप्तसयोगी विकल्पो.—नव नैरयिको.—द्विकसयोगी विकल्पो.—दश नैरयिको.—द्विकसयोगादि विकल्पो.—सख्यात नैरयिको.—द्विकसयोगी विकल्पो.—त्रिकसयोगी विकल्पो.—असख्यात नैरयिको.—द्विकसयोगादि विकल्पो.—उत्कृष्ट प्रवेशनक.—द्विकसयोग.—त्रिकसयोग.—चतु संयोग.—पंचसयोग.—पट्कसयोग.—सप्तसयोग.—नैरयिकप्रवेशनक-अल्पवहुत्व.—तिर्यचप्रवेशनक प्रकार.—एक तिर्यचयोनिक.—त्रे तिर्यचयोनिक.—यावत् असख्याता तिर्यचो.—उत्कृष्ट तिर्यचयोनिकप्रवेशनक.—तिर्यचयोनिक-प्रवेशनकाल्पवहुत्व.—एक मनुष्य.—त्रे मनुष्यो.—दश मनुष्यो.—सख्याता मनुष्यो.—असख्याता मनुष्यो.—उत्कृष्ट मनुष्यप्रवेशनक.—मनुष्यप्रवेशनक-अल्पवहुत्व.—देव प्रवेशनकना प्रकार.—एक देव —त्रे देवो.—उत्कृष्ट देवप्रवेशनक.—देवप्रवेशनकनुं अल्पवहुत्व.—सर्व प्रवेशनकनुं अल्पवहुत्व.—नैरयिकोनी सान्तर अने निरन्तर उत्पाद अने उद्दत्तना —विद्यमान नैरयिको उत्पाद थाय के अविद्यमान ?—सद् नैरयिको उद्दत्त छे के असद् ?—सद् नैरयिकादिना उत्पाद अने उद्दत्तना सवन्धे प्रश्न —सद् नैरयिकादिना उत्पाद अने उद्दत्तना होतु—आप स्वयं जाणो छो के असखं जाणो छो ?—नैरयिको खय उपजे छे के असखं उपजे छे ?—असुरकुमारो.—पृथिवीकायिको.—गागेय भगवान् महावीरने सर्वज्ञ माने छे, अने दीक्षा ग्रहण करी निर्वाण पामे छे.

### शतक ९ उद्देशक ३३. पृ० १६२-१८४.

ब्राह्मणकुंडग्राम.—ऋषभदत्त.—देवानदा —महावीरखानी समोसयां—चहुशालक चैत्य.—देवानदाना स्तनमांथी दूधनी धार केम छूटी ?—पुत्रना जेहथी दूधनी धार छूटी.—ऋषभदत्ते प्रत्रज्या लीधी —देवानंदानी प्रत्रज्या.—क्षत्रियकुंडग्राम.—जमालिनुं वर्णन.—ब्राह्मणकुंडग्राम —चहुशाल चैत्य.—जमालि भगवंत महावीरनो उपदेश सामळी दीक्षा ग्रहण करवा इच्छे छे.—मातापिताने पोतानी इच्छातुं निवेदन.—जमालिनी मातानो शोक —मातापिता अने जमालीनो सवाद.—मातापिता.—जीवित चपल छे, मनुष्य सघधी काम भोगो अशुचि अने अशाश्वत छे इत्यादि जमालिनुं कथन.—हिरण्यदिनो उप-भोग कर इत्यादि मातापितातुं कथन.—हिरण्यदि अनिल्य अने अशाश्वत छे एतु जमालिनुं कथन.—निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य छे पण दुष्कर छे एतुं मातापितातुं कथन.—नायरने दुष्कर छे, पण धीर पुरुषने दुष्कर नथी एतु जमालिनु कथन.—दीक्षानी अनुमति.—जमालिनी दीक्षा.—श्रावस्ती नगरी.—कोष्ठक चैत्य.—चंपानगरी.—पूर्णभद्र चैत्य.—निर्ग्रन्थ प्रवचन उपर जमालिनी अश्रद्धा.—क्रियमाण अकृत छे एतु जमालिनुं असामर्थ्य.—भगवान् महावीरना उत्तरो —लोक शाश्वत छे के अशाश्वत ?—जीव शाश्वत छे के अशाश्वत ?—उत्तर आपवानुं जमालिनुं असामर्थ्य.—भगवान् महावीरना उत्तरो —लोक शाश्वत छे.—लोक अशाश्वत छे —जीव शाश्वत छे —जीव अशाश्वत छे.—कित्विपिक देवनी स्थिति.—कित्विपिक देवोनो निवास —कया कर्मथी कित्विपिकदेवपणे उपजे ?—कित्विपिक देवो मरीने क्यां उपजे ?

### शतक ९ उद्देशक ३४. पृ० १८५-१८७.

पुरुषने हणतो पुरुषने हणे के नोपुरुषने हणे ?—पुरुष अने नोपुरुषनो घात करे—अथने हणतो अथने हणे के नोअथने हणे ?—अमुक व्रतने हणतो तेने हणे के बीजा व्रतने पण हणे ?—ऋषिने हणतो ऋषिनेज हणे के बीजाने हणे ?—पुरुषने हणनार पुरुषना वैरथी वन्धाय के नोपुरुषना वैरथी पण वन्धाय ?—ऋषिना वैरथी के नोऋषिना वैरथी वन्धाय ?—पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकने धामोच्छ्वसहूपे ग्रहण करे अने मूके ?—अप्सायिक पृथिवीकायिकने ग्रहण करे ?—अप्सायिक अप्सायिकने ग्रहण करे अने मूके ?—तेज कायिक पृथिवीकायायिकने ग्रहण करे अने मूके ?—पृथिवीकायायिकने क्रियाओ.—वायुकायिकने क्रिया.

### शतक १० उद्देशक १. पृ० १८८-१९०.

पूर्वादि दिशाओ —दिशाओना प्रकार.—दिशाओना दश नाम.—ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—आग्नेयी दिशा.—याम्या दिशा.—शरीरना प्रकार.—औदारिक शरीरना प्रकार.

### शतक १० उद्देशक २. पृ० १९१-१९२.

कपायभावमा रहेला साधुने ऐर्यापयिकी क्रिया के सापरायिकी क्रिया लागे ?—अकपायभावमां वर्तता साधुने ऐर्यापयिकी के सापरायिकी क्रिया ?—ऐर्यापयिकी अथवा सापरायिकी क्रियानो हेतु ?—योनि.—वेदनाना प्रकार.—नैरयिकोने वेदना.—भिक्षुप्रतिमा.—आराधना.

## शतक १० उद्देशक ३. पृ० १९३-१९५.

राजपूह नगर.—देव आत्मगन्तव्यी चार पाच देवानासोने सप्रे ?—अतर्द्धिक देव महर्द्धिक देवनी वषे यडेने जाय ?—ममर्द्धिक देव ममर्द्धिक देवनी वषे यडेने जाय ?—मोह पमाधीने जडे घाके के ते निचाय जाय ?—मोह पमाधीने जाय के जडेने मोह पमाडे ?—महर्द्धिक देव धर्द्धिक देवनी वषे यडेने जाय ?—महर्द्धिक देव अतर्द्धिकने मोह पमाधीने जाय के ते त्रिचाय जाय ?—महर्द्धिक देव मोह पमाधीने जाय के जडेने मोह पमाडे ?—अनुरहृमार देवसवन्धे पूर्वोक्त प्रश्नो.—अतर्द्धिक देव महर्द्धिक देवनी वषे ? थईने जाय ?—ममर्द्धिक देव ममर्द्धिक देवनी वषे यडेने जाय ?—अतर्द्धिक देवी महर्द्धिक देवनी वषे थईने जाय ?—महर्द्धिक वैमानिक देवी अतर्द्धिक वैमानिक देवनी वषे यडेने जाय ?—अतर्द्धिक देवी महर्द्धिक देवनी वषे थईने जाय ?—महर्द्धिक वैमानिक देवी अतर्द्धिक वैमानिक देवनी वषे यडेने जाय ?—अतर्द्धिक देवी महर्द्धिक देवनी वषे थईने जाय ?—महर्द्धिक वैमानिक देवी अतर्द्धिक वैमानिक देवनी वषे थईने जाय ?—महर्द्धिक देवी मोह पमाधीने जाय के ते तिचाय जाय ?—शोढता घोटाने 'गु गु' शब्द केम थाय छे ?—भाषाना वार प्रकार

## शतक १० उद्देशक ४. पृ० १९६-१९८.

—वाणिज्यप्राम.—द्विपलाश चेल.—इमानहृन्वी धनगर.—चमरेन्द्रने प्रायश्चित्तक देवो छे ?—प्रायश्चित्तक देवोको सुवन्य—बलीन्द्रने प्रायश्चित्तक देवो—तेनी हेतु—वरणेन्द्रने प्रायश्चित्तक देवो—शक्रेन्द्रने प्रायश्चित्तक देवो—इशानेन्द्रने प्रायश्चित्तक देवो.—मगरकुमारने प्रायश्चित्तक देवो.

## शतक १० उद्देशक ५. पृ० १९९-२०४.

राजपूह नगर.—गुणशील चैत्र—चमरेन्द्रने अग्रमहिषीओ—अग्रमहिषीओको परिवार.—चमरेन्द्र पोतानी मभामा देवीओ नाथे भोगो भोगववा समर्थ छे ?—हेतु.—चरेन्द्रना सोमलोकपालने पटराजीओ.—सोमलोकपाल पोतानी सभामा देवीओ नाथे भोग भोगववा समर्थ छे ?—यमने अग्रमहिषीओ.—बलीन्द्रने अग्रमहिषीओ. बलीन्द्रना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.—धरणेन्द्रने अग्रमहिषीओ—वरणा लोकपाल नालयात्तने अग्रमहिषीओ.—भूतानेन्द्रने अग्रमहिषीओ—भूतानेन्द्रना लोकपालने अग्रमहिषीओ—कालेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—उरुपेन्द्रने अग्रमहिषीओ—पूर्णेन्द्रने अग्रमहिषीओ—राक्षसना इन्द्र भीमने अग्रमहिषीओ—ए प्रमाणे किजरेन्द्र, सत्पुरुषेन्द्र, अतिकायेन्द्र अने नीतारलीन्द्रने अग्रमहिषीओ—चन्द्र, जगारप्रहृ जने शक्रे अग्रमहिषीओ.—शक सुवर्मा सभामा देवीओ नाथे भोग भोगववा समर्थ छे ?—शकना लोकपाल सोम, इशानेन्द्र अने उशानना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.

## शतक १० उद्देशक ६. पृ० २०५.

शकनी सुधर्मा समा कया छे ?—शक केवी ऋद्धि अने केवा सुखवाळो छे ?

## शतक १० उद्देशक ७-३४. पृ० २०६.

अष्टावीश अन्तर्द्वापी.

## शतक ११ उद्देशक १. पृ० २०७-२१३.

उत्पल एकजीवी छे के अनेकजीवी छे ?—जीवो उत्पलमा कयाथी आर्वीने उपजे छे ?—एक मनयमा केटला उपजे ?—प्रतिसमय काटवामां आवे तो कयारे सली थाय ?—शरीरनी अवगाहना.—ज्ञानावरणीयादि कर्मना वन्धक—आयुप कर्मना वन्धक—ज्ञानवरणीयादि कर्मना वेदक.—ज्ञानावरणादि कर्मना उदयवाळा—उदीरक के अनुदीरक ?—दृष्णादिदेयावाळा.—सम्बगृष्टि, मिथ्यादृष्टि के मिथ्यादृष्टि ?—ज्ञानी के अज्ञानी ?—मनोयोगी, वचनयोगी के काययोगी ?—माहारउपयोगी के अनाहारउपयोगी ?—शरीरना वर्णादि—उच्छ्वासक निश्वासक के अनुच्छ्वासकनिश्वासक ?—आहारक के अनाहारक ?—सर्वविरति, अविरति के देशविरति ?—सक्रिय के अक्रिय ?—सप्तविधवन्धक के अष्टविधवन्धक ?—आहारादि सजाओ.—रूपाय.—वेद.—पेदना वन्धक—सज्ञी के असज्ञी ?—सेन्द्रिय के अनिन्द्रिय ?—उत्पलनो जीव उत्पलपणे कयासुधी रहै ?—उत्पलनो जीव पृथिवीना आवी उत्पलमा आवे स्यारे केटलो काल गमनागमन करे ?—उत्पलनो जीव वनसातिमा जईने पुन उत्पलमा आवे स्यारे केटलो काल गमनागमन करे ?—उत्पलनो जीव वेदन्द्रियमा जईने उत्पलपणे उपजे स्यारे केटलो काल जाय ?—पद्मेन्द्रिय तिर्यक थईने उत्पलमा आवे स्यारे केटलो काल जाय ?—आहार.—आयुप.—समुद्घात—अ्यन.—सर्व जीवोतु उत्पलपणे उपजतु.

## शतक ११ उद्देशक २. पृ० २१४.

शालूक.

## शतक ११ उद्देशक ३. पृ० २१५.

पलाश.

## शतक ११ उद्देशक ४. पृ० २१६.

कुंभिक.

## शतक ११ उद्देशक ५. पृ० २१७.

नाटीक

## शतक ११ उद्देशक ६. पृ० २१८.

पथ.

## शतक ११ उद्देशक ७. पृ० २१९.

कार्णिक.

## शतक ११ उद्देशक ८. पृ० २२०.

नलिन.

## शतक ११ उद्देशक ९. पृ० २२१-२२७.

हस्तिनापुर.—शिवराजा.—शिवभद्रपुत्र.—शिवराजानो सकल्प—शिवभद्रनो राज्याभिषेक.—शिवराजनी प्रव्रज्या.—शिवराजपिनो अभिग्रह.—शिवराजपिने विभंगज्ञान.—शिवराजपिनो 'सात द्वीप अने सात समुद्र छे' एवो अध्यवसाय.—शिवराजपिसमत सात द्वीप अने सात समुद्रसंबन्धे प्रश्न.—वर्णादिरहित अने वर्णादिसहित द्रव्यो—लवणसमुद्रमा द्रव्यो.—धातुकिरंडमा द्रव्यो.—शिवराजपिनु कथन यथार्थ नथी.—'असख्यात द्वीपसमुद्रो छे' एतुं महावीरस्वामीतुं कथन.—शिवराजपिनुं शंक्ति थनु.—शिवराजपिनो महावीर स्वामी पासे आववानो सकल्प.—शिवराजपिनुं महावीरस्वामी पासे आगमन.—शिवराजपिनी वीक्षा.

## शतक ११ उद्देशक १०. पृ० २२८-२३३.

लोकना प्रकार—क्षेत्रलोकना प्रकार—अधोलोकक्षेत्रलोकना प्रकार—तिर्यक्क्षेत्रलोक.—ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.—अधोलोकनुं सस्थान.—तिर्यक्लोकनुं सस्थान.—ऊर्ध्वलोकनुं सस्थान.—लोकनुं सस्थान.—अलोकनुं सस्थान.—शुं अधोलोक ; जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—शुं तिर्यक्लोक जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—शुं अलोककाश जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न—शुं अधोलोकना एक आकाशप्रदेशमा जीवो छे—इत्यादि.—तिर्यक्लोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं जीवो छे—इत्यादि.—लोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो होय ?—अलोकना एक आकाश प्रदेशमा शुं जीवो होय ?—द्रव्यादिनी अपेक्षाए अधोलोका दिनी विचार.—लोकनो विस्तार.—अलोकनो विस्तार.—लोकना एक आकाशप्रदेशमा जीवना प्रदेशो परस्पर संबद्ध छे अने एक वीजाने पीडा उत्पन्न करे ?—एक आकाशप्रदेशमा जघन्य अने उत्कृष्ट पदे रहेला जीवप्रदेशो तथा सर्वजीवोनुं अल्पबहुत्व.

## शतक ११ उद्देशक ११. पृ० २३४-२४७.

वाणिज्यग्राम.—दूतिपलाशक चैत्य—ऋक्षना प्रकार—प्रमाणऋक्ष—हस्तिनापुर—वलराजा—प्रभावती राणी.—वासगृह—शय्या.—महास्त्र—प्रने जोई प्रभावतीनुं जागवु.—सिंहनुं वर्णन—सिंहने स्त्रप्रमा जोईने जागी.—वलराजानु शयनगृहतरफ आवनुं—स्त्रप्रनु फल.—प्रभावती देवी स्त्रप्रन फलने स्त्रीकारे छे—व्यायामशाळा अने स्नानगृहप्रवेश—स्त्रप्रपाठकोने बोलाववांनो आज्ञा—स्त्रप्रपाठकोने स्त्रप्रना फलनो प्रश्न—गर्भनु रक्षण.—पुत्रजन्म.—वधामणी—पुत्रजन्ममहोत्सव—पुत्रनु नाम पाटवु—पाच वाव वडे पुत्रनु पालन.—महावलकुमारने भगवा मोकलवो.—महावलनुं पाणिग्रहण.—प्रीतिदान, —धर्मघोष अनगरनुं आगमन—महावलनुं वंदन करवा माटे जनु—वीक्षानी रजा मागवी—महावलकुमारने राज्याभिषेक अने वीक्षा.—ब्रह्मदेवलोकमां उपजनु अने त्याची च्यवी सुदर्शनश्रेष्ठीपणे उपजनु.—सुदर्शन श्रेष्ठीने जातिस्मरण.—सुदर्शन श्रेष्ठीनी प्रव्रज्या.

## शतक ११ उद्देशक १२. पृ० २४८.

आलम्बिकानगरी—शयवनचैत्य—ऋषिभद्रप्रमुख श्रमणोपासको—श्रमणोपासकोनो वार्तालाप—देवलोकमा देवोनी स्थिति—जघन्य स्थिति.—उत्कृष्ट स्थिति.—देवोनी स्थिति.—ऋषिभद्रपुत्र अनगारिकपणाने लेवाने समर्थ छे ?—ऋषिभद्र पुत्र देवलोकधी च्यवी क्या जशे ?—सिद्धिपद पामशे.—वृत्तात.

## शतक १२ उद्देशक १. पृ० २५२-२५६.

श्रावस्तीनगरी—शंखप्रमुख श्रमणोपासको—शंखनी उत्पला स्त्री—पुष्कलि श्रमणोपासक—शंखनो सकल्प—अशानादिनो आहार करता पाक्षिक पौषध लेवो मने श्रेयस्कर नथी—भोजन माटे शंखश्रमणोपासकने बोलाववा योग्य छे—पुष्कलि शंखने बोलाववा जाय छे—शंखे कहुं के—आहारनो आस्वाद लेता पोषधनुं पालन करवु मने योग्य नथी—शंखनो महावीरस्वामिने वंदन करवानो सकल्प—शंख भगवंतने वंदन करवा जाय छे.—वीजा श्रमणोपासको पण वादवा जाय छे—शंखनी निन्दा न करो—जागरिकाना प्रकार—कोवथी व्याकुल थयेलो जीव शुं बाधे ?—मानी जीव शुं बाधे ?—शंख प्रव्रज्या ग्रहण करवा समर्थ छे ?

## शतक १२ उद्देशक २. पृ० २५७-२६०.

कौशाम्बी नगरी—उदायन राजा—जयती श्रमणोपासिका—जयंती शृंगवतीसहित भगवतने वंदन करवा जाय छे—जयंतीना प्रश्नो—जीवो शायी भारेपणु पामे ?—भयपणु स्वाभाविक छे के परिणामजन्म छे ?—सर्व भयजीवो मोक्ष जशे ?—तो शु लोक भयरहित थशे ?—सूतापणुं सारं के जागतापणुं सारं ?—सबलपणुं सारं के दुर्वलपणुं सारं ?—दक्षत्व सारं के आळसुपणुं सारं ?—श्रोत्रेन्द्रियवशातं शुं करे ?—जयतीए प्रव्रज्या ग्रहण करी.

## शतक १२ उद्देशक ३०. पृ० २६१.

पृथिवीओना प्रहार.—प्रथम पृथिवीना नाम अने गोत्र

## शतक १२ उद्देशक ४. पृ० २६२-२७४.

वे परमाणुओ एकहूणे एकठा थरने शु थाय ?—त्रण परमाणुओ—चार परमाणुओ—पाच परमाणुओ.—छ परमाणुओ.—सात परमाणुओ—आठ परमाणुओ.—नव परमाणुओ—दस परमाणुओ—सख्याता परमाणुओ.—असख्याता परमाणुओ.—अनन्त परमाणुओ—अनन्तानन्त पुद्गलपरिवर्तों—पुद्गलपरिवर्तना प्रकार—नैरयिकोने पुद्गलपरिवर्तों.—एक नैरयिकने औदारिकपुद्गलपरिवर्तों—असुरकुमारने औदारिकपुद्गलपरिवर्तों—एक नैरयिकने वैकि-



चपुद्गलपरिवर्त — नैरयिकोने पुद्गलपरिवर्त — एक नैरयिकने नैरयिकपणामा औदारिकपुद्गलपरिवर्त — एक नैरयिकने असुरपणामा औदारिकपुद्गलपरिवर्त — एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामा औदारिकपुद्गलपरिवर्त — एक असुरपणामा नैरयिकपणामा औदारिकपुद्गलपरिवर्त — एक नैरयिकने नैरयिकपणामा वैक्रियपुद्गलपरिवर्त — नैरयिकोने नैरयिकपणामा केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्त व्यतीत थया छे ? — नैरयिकोने पृथिवीकायिकपणामा औदारिकपुद्गलपरिवर्त — औदारिकपुद्गलपरिवर्त शा हेतुथी कहेवाय ? — औदारिकपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिनाळ — औदारिकादिपुद्गलपरिवर्तनाळसुं अल्पवहुत्व — पुद्गलपरिवर्तसुं अल्पवहुत्व.

### शतक १२ उद्देशक ५. पृ० २७५—२७८.

प्राणातिपात वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे ? — जोनादि केटला वर्णादिसहित छे ? — मान वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे ? — माया, — लोभ, — राग द्वेष वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे ? — प्राणातिपातविरमणादि केटला वर्णादियुक्त छे ? — चार प्रकारनी मति — अवग्रहादि — उत्थनादि केटला वर्णादियुक्त छे ? — सप्तम अवनागान्तर — सप्तम तनुवात — नैरयिकोने वर्णादि — पृथिवीकायिको — मनुष्यो — ज्ञानव्यन्तरादि, — वर्मान्तिनायादि, — शानावरणादि, — वृष्णले-  
द्वयादि, — सम्यग्दृष्ट्यादि — औदारिकादि शरीर — साकारोपयोग अने अनाकारोपयोग — सर्वद्वेष्यो — गर्भमा उत्पन्न थतो जीव — जीव अने जगत् कर्मथी विविधरूपे परिणमे छे ?

### शतक १२ उद्देशक ६. पृ० २७९—२८१.

राहु चन्द्रने व्रते छे ? — राहु देवसु वर्णने, — राहुना नामो, — राहुना विमानो, — राहु आवतो के जतो चन्द्रना प्रकाशने आवरे छे — राहुना प्रकार, — राहु चन्द्रने अने सूर्यने वयारे टाके ? — शा हेतुथी चन्द्रने सथी — शोभायुक्त कहेवाय छे ? — शा हेतुथी सूर्यने आदित्य कहेवाय छे ? — चन्द्रने अप्रमहि-  
षियो — सूर्य अने चन्द्र केवा प्रकारना काममोगो भोगवे छे ?

### शतक १२ उद्देशक ७. पृ० २८२—२८५.

लोहसुं महत्त्व, — नरकपृथिवी, — आ जीव रत्नप्रमाना एक एक नरकावासनां पृथिवीकायिकादिपणे उत्पन्न थयो छे ? — सर्व जीवो — शर्कराप्रमाना नरकावासना पृथिवीकायिकादिपणे उत्पन्न थयो छे ? — तमा पृथिवी — सप्तम पृथिवीमा पूर्वं उत्पन्न थयो छे ? — असुरकुमार — पृथिवीकायिकानावासना पूर्वं उत्पन्न थयो छे ? — वैश्वानरावासना पूर्वं उत्पन्न थयो छे ? — सनत्कुमार कल्पमा, — प्रवेयकविमानावासना, — अनुत्तर विमानावासना, — आ जीव सर्व जीवोना माता-  
पिता इत्यादि संबन्धरूपे उत्पन्न थयो छे ? — सर्व जीवो आ जीवना माता इत्यादि संबन्धरूपे उत्पन्न थया छे ? — आ जीव सर्व जीवोना गत्ररूपे उत्पन्न थयो छे ? — सर्व जीवो, — आ जीव सर्व जीवना राजा तरीके उत्पन्न थयेल छे ? — आ जीव सर्व जीवोना दासरूपे उत्पन्न थयेल छे ? — सर्व जीवो.

### शतक १२ उद्देशक ८. पृ० २८६—२८७.

महाकृदिवारो देव नरीने मात्र वे शरीरवाळा नागोमा उपजे ? — नागना जन्ममा अचित्त — पूजित थाय ? — वे शरीरवाळा मणिमा उत्पन्न थाय ? — वे शरीरवाळा वृक्षमां उत्पन्न थाय ? — वानर वगेरे जीवो रत्नप्रमाना उत्पन्न थाय ? — सिंह वगेरे पण नैरयिकपणे उपजे ? — काक वगेरे.

### शतक १२ उद्देशक ९. पृ० २८८—२९३.

देवोना भव्यदेवादिप्रकार, — भव्यद्रव्यदेवादि कहेवासुं कारण — नरदेव, — वर्मदेव, — देवाधिदेव — भावदेव — भव्यद्रव्यदेवो क्यांथी आवीने उपजे ? — नरदेवो क्यांथी आवीने उपजे ? — रत्नप्रमादिमाथी कइ नरकपृथिवीथी आवी उपजे ? — शु भवनवासीआदि देवोमाथी क्या देवोथी आवी उपजे ? — वर्मदेव क्यांथी आनी उपजे ? — देवाधिदेव क्यांथी उपजे ? — रत्नप्रमादि नरकपृथिवीमाथी कइ नरकपृथिवीथी आवी उपजे ? — देवोमां सर्व वैमानिक देवोथी आवीने उपजे ? — भावदेवो क्यांथी आवी उपजे ? — भव्यद्रव्यदेवनी स्थिति, — नरदेवनी स्थिति, — वर्मदेवनी स्थिति, — देवाधिदेवनी स्थिति, — भावदेवनी स्थिति, — भव्यद्रव्यदेवनी विक्रान्तागक्ति — देवाधिदेवनी विक्रान्तागक्ति — भावदेवनी विक्रान्तागक्ति — भव्यद्रव्यदेवो मरण पानी क्यां जाय ? — नरदेव मरण पानी क्या उपजे ? — वर्मदेव मरण पानी क्या जाय ? — वर्मदेवो क्या देवोमा उत्पन्न थाय ? — देवाधिदेवो मरण पानी क्या जाय ? — भावदेव मरण पानी क्या जाय ? — भव्यद्रव्यदेवोनी स्थिति, — भव्यद्रव्यदेवने केटला काळसुं अंतर होय ? — नरदेवने परस्पर केटल अन्तर होय ? — वर्मदेवने परस्पर केटल अन्तर होय ? — देवाधिदेवसुं अन्तर — भावदेवसुं अन्तर, — भव्यद्रव्यदेवासुं परस्पर अल्पवहुत्व —

### शतक १२ उद्देशक १०. पृ० २९४—३००.

आत्माना प्रकार — द्रव्यात्मा अने क्यायात्मानो संबन्ध — द्रव्यात्मा अने योगात्मानो संबन्ध, — द्रव्यात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध — द्रव्यात्मानो ज्ञानात्मानो साथे संबन्ध — दर्शनात्मा साथे संबन्ध — चारित्रात्मा साथे संबन्ध — वीर्यात्मा — कपायात्मा अने योगात्मानो संबन्ध — कपायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध — द्रव्यात्मा वगेरेसुं अल्पवहुत्व, — आत्मा ज्ञानस्वरूप छे के अन्वस्वरूप छे ? — नैरयिकोना आत्मा — पृथिवीकायिकोना आत्मा, — आत्मा दर्शनरूप छे के तेथी अन्व छे ? — नैरयिकोना आत्मा — रत्नप्रमा पृथिवी सदरूप छे के असदरूप छे ? — शर्कराप्रमा, — सौधर्मदेवलोक, — प्रवेयकविमान, — एक परमाणु सदरूप छे के अमदरूप छे ? — द्विप्रदेशिक स्क्न्ध — शा हेतुथी सदरूप छे इत्यादि, — त्रिप्रदेशिक स्क्न्धना आत्मा — आदि तेर भागा, — शा हेतुथी त्रिप्रदेशिक स्क्न्धना 'आत्मा' इत्यादि भागा थाय छे ? — चतुप्रदेशिक स्क्न्धना १९ भागाथो — शा हेतुथी 'आत्मा' इत्यादि रूप छे, — पंचप्रदेशिक स्क्न्धना २२ भागाथो, — शा हेतुथी आत्मा इत्यादिरूप छे ?

### शतक १३ उद्देशक १. पृ० ३०१—३०६.

नरकपृथिवी, — रत्नप्रमाने विषे नरकावासो — सख्याता योजन विस्तारवाळा नरकानासोमा एक समवे नारकादिनो उत्पाद, — एक समवे नारकादिनी उद्भवना, — रत्नप्रमानां नारक जीवोनी सत्ता, — असत्ययोजनवाळा नरकानासोमा नारकादिनो उत्पाद — शर्कराप्रमाना नरकानासो, — चालुकाप्रमाना नरकानासो, — पुरुषप्रमाना नरकानासो — वृक्षप्रमाना नरकानासो — तम प्रमाना नरकानासो — सप्तम नरकमा नरकानासो, — रत्नप्रमानां सख्याता योजन विस्तारवाळा नरकानासोमा सम्यग्दृष्टि वगेरेनो उत्पाद, — सम्यग्दृष्टि वगेरेनी उद्भवना, — सम्यग्दृष्टि वगेरेथी धाविरहित होय, — सप्तम नरकमां सम्यग्दृष्टि

बगोरे उपजे ?—कृष्णादिदेस्यावाळो थईने कृष्णलेस्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय ?—नीललेस्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय ?—तेनो हेतु —कापोतलेस्यावाळा नारकोमा उपजे ?

### शतक १३ उद्देशक २. पृ० ३०७—३१०.

देवोना प्रकार —भवनवासी देवोना प्रकार —असुरकुमारना आवासो.—असुरकुमारमा उत्पाद.—उद्वर्तना —नागकुमारादिना आवासो —ज्ञानव्यं-तर देवोना आवास.—एकसमये वानव्यंतर देवोना उत्पाद —ज्योतिषिक देवोना विमानावास.—सौवर्म देवलोकमां विमानावास.—एकसमये सौधर्मधी माहीने सहस्रार सुधी देवोना उत्पाद —आनत अने प्राणत देवलोकमा विमानावास.—प्रैवेयक.—अनुत्तर विमानो.—पाच अनुत्तरमा एक समये देवोना उत्पादादि —असुरकुमारावासमा सम्यग्दृष्ट्यादि उपजे ?—कृष्णादिदेस्यावाळा थईने कृष्णलेस्यावाळा देवोना उत्पन्न थाय ?

### शतक १३ उद्देशक ३. पृ० ३११.

नारको अनन्तराहारी होय अने लार वाद अनुक्रमे परिचारणा करे ?

### शतक १३ उद्देशक ४. पृ० ३१२—३२३.

नारकपृथिवी.—नैरयिकद्वार —स्पर्शद्वार —प्रणिधिद्वार —निरयान्तद्वार.—लोकमध्यद्वार —अधोलोकमध्य —ऊर्ध्वलोकमध्य.—तिर्यग्लोकमध्य.—दिशा—विदिशाप्रवहद्वार.—ऐन्द्री दिशा क्यांथी नीकळे छे ?—आग्नेयी —याम्या—दक्षिण.—नैर्ऋती.—ऊर्ध्वदिशा —तमादिशा.—लोक —अस्तिनायप्रव-र्तनद्वार.—धर्मास्तिकायवडे जीवोत्तुं प्रवर्तन —अधर्मास्तिकायवडे प्रवर्तन —आकाशास्तिकायवडे प्रवर्तन.—जीवास्तिकायवडे प्रवर्तन —पुद्गलास्तिकायवडे प्रवर्तन.—अस्तिकायप्रदेशस्पर्शनाद्वार.—धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश धर्मास्तिकायादि द्रव्यना केटला प्रदेशोवडे स्पर्शाय ?—अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश.—आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.—जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशो —पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना सख्याता प्रदेशो —पुद्गलास्तिकायना असंख्य प्रदेशो —पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो —कालनो एक समय —धर्मास्तिकाय द्रव्य —अध-र्मास्तिकाय.—अवगाढद्वार —ज्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्या चीजा धर्मास्तिकायादिना केटला प्रदेश अवगाढ होय ?—अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश —आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश —जीवास्तिकायनो एक प्रदेश —पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश —पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशो —पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो —एक अद्वासमय.—एक धर्मास्तिकाय —एक अधर्मास्तिकाय —पृथिवीकायिक.—अपञ्चायिक —अस्तिकायनिपदनद्वार —धर्मास्तिकायादि त्रण द्रव्यमा वेसवाने समर्थ थाय ?—बहुसमद्वार —लोकनो बक्रभाग —सस्थानद्वार.

### शतक १३ उद्देशक ५. पृ० ३२४.

नैरयिको शुं सचित्ताहारी छे, अचित्ताहारी छे के मिथ्याहारी छे ?

### शतक १३ उद्देशक ६. पृ० ३२४—३२९.

नारको सांतर के निरन्तर उपजे ?—असुरकुमारना चमरेन्द्रनो चमरचंच नामे आवास —चमरेन्द्र चमरवच नामे आवासमां रहे छे ?—चंपानगरी.—पूर्णभद्र चैत्य —सिन्धुसौवीर देश —वीतभय —उदायन राजा —प्रभावती देवी —पोताना भाणेज केशीकुमारने राज्याभिषेक करवानो उदायननो सकल्प —केशीकुमारनो राज्याभिषेक —उदायननी वीक्षा अने मुक्ति —अभिचिकुमारनो उदायनने विषे वैरानुबन्ध अने तेतुं वीतभय नगरथी नीरुळी जलुं — अभिचिनो असुरकुमारमा उत्पाद.

### शतक १३ उद्देशक ७. पृ० ३३०—३३४.

भापा—भापा आत्मस्वरूप छे के तेथी अन्य छे ?—रूपी के अरूपी ?—सचित्त के अचित्त ?—जीवस्वरूप के अजीवस्वरूप ?—जीवोने भापा के अजीवोने भापा होय ?—भापा क्यारे कहेवाय ?—भापा क्यारे भेदाय ?—भापाना प्रकार —जन —मन आत्मा छे के तेथी अन्य छे ?—मन क्यारे होय ?—मन क्यारे भेदाय ?—मनना प्रकार —काय आत्मा छे के तेथी अन्य ?—रूपी के अरूपी ?—काय क्यारे होय ?—काय क्यारे भेदाय ?—कायना प्रकार —मरणना प्रकार —आवीचिक मरणना प्रकार —द्रव्यावीचिक मरणना प्रकार —नैरयिक द्रव्यावीचिक मरण —क्षेत्रावीचिक मरण —नारक क्षेत्रावीचिक मरण —अवधि मरण —द्रव्यावधि मरण —नैरयिक द्रव्यावधि मरण शा हेतुथी कहेवाय छे ?—आत्यन्तिक मरण —द्रव्यात्यन्तिक मरण —नैरयिक द्रव्यात्यन्तिक मरण शाथी कहेवाय छे ?—यालमरणना प्रकार —पण्डितमरण —पादपोषगमन —भक्तप्रत्याख्यान.

### शतक १३ उद्देशक ८. पृ० ३३५.

कर्मप्रकृति.

### शतक १३ उद्देशक ९. पृ० ३३५—३३७.

वैक्रिय शक्तिथी कोई दोरटाथी बाधिली घटीका लेटने एदाहूपे गमन करे ?—केटला रूपो विकुर्वां शके ?—हिरण्यनी पेटी लेटने गमन करे ?—वड-वागुलीनी पेठे गमन करे ?—जलौकानी पेठे गमन करे ?—बीजबीजक पक्षीनी पेठे गमन करे ?—विडालक पक्षीनी पेठे गमन करे ?—नीवजीवक पक्षीनी जेम गमन करे ?—हंस पेठे गति करे ?—समुद्रनायसना आकारे गति करे ?—चक्रहस्त पुरुषनी जेम गति करे ?—रत्नहस्त पुरुषनी पेठे गमन करे ?—विष-—शृणालिका.—चनरांड.—पुष्करिणीना आकारे आकाशमा गमन करे ?—केटला रूपो विडुवें ?—मायासहित के मायारहित विडुवें ?

### शतक १३ उद्देशक १०. पृ० ३३८.

समुद्रात.



## भगवत्सुधर्मस्वामिप्रणीत भगवतीसूत्र.

### सत्तमं सयं.

१. १ आहार २ विरति ३ स्थावर ४ जीवा ५ पक्षी य ६ आड ७ अणगारे ।  
८ छत्रस्थ ९ असंबुड १० अन्नउत्थि दस सत्तमंमि सए ॥

### पढमो उद्देशो.

२. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं चदासी-जीवे णं भंते ! कं समयमणाहारए भवइ ? [उ०] गोयमा !

### ससम शतक.

१. [उद्देशसंग्रह-] १ आहार, २ विरति, ३ स्थावर, ४ जीव, ५ पक्षी, ६ आयुप्, ७ अनगार, ८ छत्रस्थ, ९ असंबुट, अने १० अन्यतीर्थिक-ए संबन्धे सातमा शतकमां दश उद्देशको छे.

[ प्रथम उद्देशकमां आहार-आहारक अने अनाहारक इत्यादि विपे हकीकत छे, वीजा उद्देशकमां विरति-प्रत्याख्यानसंबन्धी वर्णन छे, त्रीजा उद्देशकमा स्थावर-वनस्पति वगैरेनी वक्तव्यता छे, चौथा उद्देशकमां जीव-संसारी जीवनी प्ररूपणा छे, पांचमा उद्देशकमां पक्षी-खेचरजीवोनी हकीकत छे, छट्टा उद्देशकमां आयुप् वगैरेनी हकीकत छे, सातमा उद्देशकमा अनगार-साधु वगैरेनी हकीकत छे, आठमा उद्देशकमां छत्रस्थ मनुष्यादिनी हकीकत छे, नवमा उद्देशकमा असंबुट-प्रमत्तसाधुवगैरेनी वक्तव्यता छे, अने दशमां उद्देशकमा कालोदायि-प्रमुख अन्यतीर्थिकसंबन्धी वक्तव्यता छे. ]

### प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] ते काले अने ते समये ( गौतम इन्द्रभूति ) यावत् ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! जीव ( परभवमा जता ) कये समये अनाहारक ( आहार नहि करनार ) होय ? [उ०] हे गौतम ! ( परभवमा ) प्रथम समये जीव कदाच आहारक होय अने कदाच अना-

२. \* आहारना वे प्रकार छे-१ आभोगनिर्वर्तित ( इच्छापूर्वक ग्रहण करायेलो ) आहार अने २ अनाभोगनिर्वर्तित ( इच्छाशिवाय अनाभोगपणे ग्रहण करायेलो ) आहार. तेमा आभोगनिर्वर्तित आहार नियत समये होय छे, परन्तु अनाभोगनिर्वर्तित आहार उत्पत्तिना प्रथमसमयथी प्रारम्भी अन्ततमय सुवी प्रतिसमय निरन्तर होय छे, जुओ-( प्रज्ञा. प. २९, प. ४९८. )

† ज्यारे जीव मरण पानी ऋजुगतिथी परभवमा प्रथम समये उत्पन्न थाय छे ल्यारे परभवानुपूर्णा प्रथम समयेज आहारक होय छे, परन्तु ज्यारे वक्रगति बढे वे समये उत्पन्न थाय छे ल्यारे प्रथम समये अनाहारक होय छे अने वीजे समये आहारक होय छे, ज्यारे घ्रण समये उत्पन्न थाय छे ल्यारे प्रथमना वे

पहमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए, वितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, ततिए समए सिए आहारए सिय अणाहारए, चउत्ये समए नियमा आहारए । एवं दंडओ । जीवा य णंगिटिया य चउत्ये समए, मेसा ततिए समए ।

३. [प्र०] जीवे णं भंते ! कं समय सव्वप्पाहारए भवति ? [उ०] गोयमा ! पढमसंमयोवचनए वा चरमसमए भवत्ये वा, पत्य णं जीवे सव्वप्पाहारए भवइ । दंडओ भाणिअद्यो जाव वेमाणिआणं ।

४. [प्र०] किंसंठिए णं भंते ! लोए पन्नते ? [उ०] गोयमा ! सुपइट्टगसंठिए लोए पन्नते, हेट्टा विच्छिन्ने, जाव उप्पि उट्टमुट्टंगागारसंठिए, तंसिं च णं सासयंसि लोगंसि हेट्टा विच्छिन्नंसि जाव उप्पि उट्टमुट्टंगागारसंठियंसि उप्पयनान-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ पासइ, अजीवे वि जाणइ पासइ; तयो पच्छा सिज्जति, जाव अंतं करेइ ।

५. [प्र०] संमणोवासयस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जति । [प्र०] से केणट्टेणं जाव संपराइया ? [उ०] गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाऽहिगरणवत्तिं च णं तस्स नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ; से तेणट्टेणं जाव संपराइया ।

हारक होय, बीजे समये कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, त्रीजे समये कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, परन्तु चोथे समये अवश्य आहारक होय. ए प्रमाणे ("नारक इत्यादि चोवीस) दंडक (पाठ) कहैया. सामान्य जीवो अने एकेन्द्रियो चोथे समये आहारक होय छे, अने (एकेन्द्रिय शिवाय) बाकीना जीवो त्रीजे नमये आहारक होय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! जीव कये समये सौथी अल्प आहारवाळो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! उत्पन्न यना प्रथम समये अने भवने (जीवितने) छेछे समये, आ समये जीव सौथी अल्प आहारवाळो होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक सुवी दंडक कहैयो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! लोकं सस्थान (आकार) केवा प्रकारे काणुं छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक सुप्रतिष्ठक—शरावना आनार जेवो कहैलो छे. ते नीचे विस्तीर्ण-पहोळो यावत् उपर ऊर्ध्व (उभा) मृदगना आकारे संस्थित छे. नीचे विस्तीर्ण यावत् उपर ऊर्ध्व मृद-गना आकारे रहैला ते शाश्वत लोकमा उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनार अरिहंत जिन केवलज्ञानी जीवोने पण जाणे छे अने जुए छे, अजीवोने पण जाणे छे अने जुए छे, त्थार पट्टी सिद्ध थाय छे, यावत् (सर्व दु.खोने) अंत करे छे.

५. [प्र०] हे भगवन् ! श्रमणना उपाश्रयमा रहीने सामायिक करनार श्रमणोपासकने (श्रावकने) जुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण साम्परायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! श्रमणना उपाश्रयमा रही सामायिक करनार श्रावकनो आत्मा अधिकरण (कपायना साधनो) युक्त छे, तेथी तेने आत्माना (पोताना) अधिकरण निमित्ते ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे, ते हेतुथी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे.

१ तितिए ख । २-समतोवचनए क; अस्सिन् पुस्सके पट्टुदाः तकारघटितः पाठ उपलभ्यते, यथा—किंसंठिते, सुपतिट्टग, (७, १, ४) यत्र पूर्व संस्कृतप्रकृतं तकारो न विद्यते तत्रापि तकारः, यथा—अयमर्थः, इण्टे, तिण्टे, सामायिक, सामाइस, सामातिथ, नैरयिक, नैरइस, नैरतिस । ३ तसिं ग-घ । ४-वासगस्स च । ५ संपराइथा ख ।

समये अनाहारक होय छे, अने त्रीजे नमये आहारक होय छे, ज्यारे चार समये परभवमा उत्पन्न थाय छे, त्तारे आदिना त्रण समये अनाहारक होय छे, अने चोथे समये आहारक होय छे त्रण समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे थाय छे—त्रसनाधीनी वहार विदिशामा रहैलो कोइ जीव ज्यारे बाबोलोकथी ऊर्ध्वलोकमां त्रसनाधीनी वहार दिशामा उत्पन्न थाय त्तारे ते अवश्य प्रथम समये विध्रेणिथी तनध्रेणिमा आवे, बीजे समये त्रसनाधीमा प्रवेश करे, त्रीजे समये ऊर्ध्व लोकमा जाय, अने चोथे समये लोऽनाधी वहार जइ उत्पत्तिस्थाने उपजे अहीं आदिना त्रण समये विग्रह गति होय छे अथ्य आचार्य एम कहे छे के चार समयनी पण विग्रहगति सभये छे—जेम कोई जीव अधोलोकमा त्रसनाधीनी वहार विदिशामाथी ऊर्ध्वलोकमा त्रसनाधीनी वहार निदिशामा उत्पन्न थाय त्तारे त्रण समय पूर्वनी पेठे जाणवा, चोथे समये त्रसनाधीथी वहार नीकळी समध्रेणिमा आवे, अने पाचमे समये उत्पत्तिस्थाने उत्पन्न थाय. तेमा आदिना चार (भ टी प. २८७-२)

\* २ मात नारखोने एक दंडक, अत्तरादि दश भुवनपतिना दश दंडक, पृथ्यादि पाच म्यावरना पाच दंडक, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रियना त्रण दंडक, गभंज तिर्यच अने गभंज मत्तुप्यनो एक एक दंडक, व्यन्तर ज्योतिपिक अने वैमानिकनो एक एक दंडक—ए रीते चोवीस दण्डको जाणवा

† जे नारकादि त्रस जीवो मरीने त्रसने विधे उत्पन्न थाय, तेजुं त्रसनाधीथी वहार जवु आववु न थाय माटे ते त्रीजे समये अवश्य आहारक होय. जेम, कोइ मत्सादि जीव भरतक्षेत्रना पूर्वभागथी ऐरवतक्षेत्रना पश्चिमभागनी नीचे नरकमा उत्पन्न थाय, ते एक समये भरतना पूर्वभागथी पश्चिमभाग तरफ जाय, बीजे नमये ऐरवतना पश्चिमभाग तरफ जाय अने त्रीजे समये नरकमा जाय. जुओ (भ टी प. २८८-२).

‡ अहीं शराव-चपणीथाने उठुं याळी तेना उपर कलश मूकेलो होय तेजुं शराव रेधु, केमके ते शिवाय केवल शरावनी साधे लोकस्थानद सादइय घटी शकहुं नथी. जुओ—(भ. टी. प. २८९-२).

६. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाय भवइ, पुढविसमारंभे अपच्चक्खाय भवइ; से य पुढाविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ? [उ०] णो तिण्ण्हे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाय आउट्ठति ।

७. [प्र०] समणोवासयस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणस्सइसमारंभे पच्चक्खाय, से य पुढाविं खणमाणे अन्नयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ? [उ०] णो तिण्ण्हे समट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाय आउट्ठति ।

८. [प्र०] समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलामेमाणे किं लब्भइ ? [उ०] गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा जाव पडिलामेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पापति, समाहिकारए णं तमेव समाहिं पडिलभइ ।

९. [प्र०] समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा जाव पडिलामेमाणे किं चयति ? [उ०] गोयमा ! जीवियं चयति, दुच्चयं चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहइ, वोहिं बुच्चइ; तओ पच्छा सिज्जति, जाव अंतं करेति ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पत्तायति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

११. [प्र०] केहं णं भंते ! अकम्मस्स गती पत्तायति ? [उ०] गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं, बंधणत्थेयणयाए, निरिंधणयाए, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पत्तायति ।

१२. [प्र०] केहं णं भंते ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गइपरिणामेणं<sup>१</sup> अकम्मस्स गती पत्तायति ? [उ०] से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुवं निच्छिड्डं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्ममाणे परिकम्ममाणे दग्घेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता अट्ठहिं मट्ठियालेवेहिं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयति, भूतिं भूतिं सुक्कं समाणं अत्थाइमतारंमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खवेज्जा, से

६. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासकने पूर्वे त्रसजीवोना वधतुं प्रत्याख्यान होय अने पृथ्वीकायना वधतुं प्रत्याख्यान न होय, ते पृथ्वीने खोदता जो कोई त्रस जीवनी हिसा करे तो हे भगवन् ! तेने ते व्रतमां अतिचार लगे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. कारण के ते ( श्रावक ) तेनो वध करवा प्रवृत्ति करतो नथी.<sup>१</sup>

७. [प्र०] हे भगवन् ! श्रमणोपासके पूर्वे वनस्पतिना वधतुं प्रत्याख्यान करुं होय, ते पृथ्वीने खोदता कोई एक वृक्षना मूळने छेदी नांखे तो तेने ते व्रतनो अतिचार लगे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. कारण के ते तेना ( वनस्पतिना ) वध माटे प्रवृत्ति करतो नथी.

८. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना ( उत्तम ) श्रमण या ब्राह्मणने प्रासुक ( अचित्त-निर्जाव ) अने एपणीय ( दोपरहित इच्छवा योग्य ) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहार वडे प्रतिलाभता-सत्कार करता श्रमणोपासकने शो लाभ थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने यावत् प्रतिलाभतो श्रमणोपासक तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने समाधि उत्पन्न करे छे, अने समाधि करनार ( श्रावक ) ते समाधिने प्राप्त करे छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! तथारूप श्रमणने यावत् प्रतिलाभतो श्रमणोपासक शेनो त्याग करे ? [उ० ] हे गौतम ! जीवितनो ( जीव-निर्वाहना कारणभूत अन्नादिनो ) त्याग करे, दुस्त्यज वस्तुनो त्याग करे, दुर्लभ वस्तुने प्राप्त करे, बोधि-सम्यग्दर्शननो अनुभव करे, ल्यार पछी सिद्ध थाय, यावत् ( सर्व दुःखनो ) अंत करे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मरहित जीवनी गति स्त्रीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! हा, स्त्रीकाराय.

११. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मरहित जीवनी गति केवी रीते स्त्रीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी, गतिना परिणामथी, वधननो छेद थवाथी, निरिंधन थवाथी-कर्मरूप इन्वनथी मुक्त थवाथी अने पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति स्त्रीकाराय छे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी अने गतिना परिणामथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्त्रीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक पुरुष छिद्र विनाना, नहि भांगेला सुका तुंबडाने क्रमपूर्वक अलंत संस्कार करीने डाभ अने कुश वडे वीटे, ल्यार पछी तेने माटीना आठ लेपथी लीपे, लीपीने तापमा सुकत्ते, ज्यारे ते तुंबडुं अलंत सुकाय ल्यारे ताग विनाना अने न तरी शकाय तेवा पुरुष-

१ आचरंते-प्रवर्तते इत्यर्थः । २ तामेय ख । ३ दुचय ख । ४ 'कहं णं, कहणं, कहं णं, कहं न' इत्येवं विकल्पात्मकानि बहुधा रूपाणि उपलभ्यन्ते, परमत्र 'कहं णं' इत्येवमेकैवैव पाठो न्यस्तः । ५ निरंधणयाए क विना अन्यत्र । ६ पच्चत्ता क । ७ 'बंधणत्थेयणयाए निरंधणयाए पुव्वप्पओगेण' इत्यधिक. पाठः क विना अन्यत्र । ८ परिकम्ममाणे ख । ९ भूइ भूइ ख । १० मपोरिसियंसि क विना अन्यत्र ।

६. \* सामान्यरीते देशविरति श्रावकने संकल्पपूर्वक हिसातुं प्रत्याख्यान होय छे, तेथी ज्या सुधी ते जेनी हिसातु प्रत्याख्यान करुं होय तेनी संकल्पपूर्वक हिसा करवा प्रवृत्ति न करे त्या सुधी तेने ते व्रतमा दोष लागतो नथी.

८. † ब्राह्मणतुं स्वरूप तुओ-( उत्त० अ. २५. गा. १९-३४ ).

पूर्णं गौयमा ! से तुंवे तेनिं अट्टणं मट्टियालेपणं गुरुयत्ताण, भागियत्ताण, मुग्गंभागियत्ताण, मल्लित्तलमनियत्ता अहं धर-  
णितलपट्टणणे भवद ? हंता, भवद । अहे णं से तुंवे तेनिं अट्टणं मट्टियालेपणं परिक्काणं धरणिन्तलमनियत्ता उरिंय मक्कि-  
लत्तलपट्टणणे भवद ? हंता, भवद । एवं रात्तु गौयमा ! निम्नंगयाण, निरंगणयाण, गदपरिणामेणं अकम्मस्स गती पत्तायि ।

१३. [प्र०] कहं णं भंते ! बंधणत्तेवणयाण अकम्मस्स गतिं पत्ता ? [उ०] गौयमा ! से जजानामए फलमिबलिया इ  
वा, मुग्गंसिबलिया इ वा, मासंसिबलिया इ वा, सिबलिसिबलिया इ वा, परंउमिजिया इ वा उण्हे दिशा सुंवा समापी  
कुडित्ता णं पंगंतमंतं गच्छद, एवं रात्तु गौयमा । ।

१४. [प्र०] कहं णं भंते ! निरिंधणयाण अकम्मस्स गती ? [उ०] गौयमा ! से जजानामए धूमस्स इंधणवियमुक्कस्स  
उहं वीससाए निव्वायाएणं गती पवत्तति, एवं रात्तु गौयमा । ।

१५. [प्र०] कहं णं भंते पुच्चप्पओणेणं अकम्मस्स गती पंतत्ता ? [उ०] गौयमा ! से जजानामए कंडस्स कोदंडमिमु-  
क्कस्स लम्पाभिमुही निव्वायाएणं गती पवत्तद, एवं रात्तु गौयमा ! पुच्चप्पओणेणं अकम्मस्स गती पत्तायने, एवं रात्तु  
गौयमा ! नीसंगयाए, निरंगणयाए, जाव पुच्चप्पओणेणं अकम्मस्स गती पत्ता ।

१६. [प्र०] दुक्की णं भंते ! दुक्केणं फुडे, अदुक्की दुक्केणं फुडे ? [उ०] गौयमा ! दुक्की दुक्केणं फुडे, नो अदुक्की  
दुक्केणं फुडे ।

१७. [प्र०] दुक्की णं भंते ! नेरत्तिए दुक्केणं फुडे, अदुक्की नेरत्तिए दुक्केणं फुडे ? [उ०] गौयमा ! दुक्की नेरत्तिए  
दुक्केणं फुडे, नो अदुक्की नेरत्तिए दुक्केणं फुडे । एवं दंडओ, जाव वेमाणिजाणं । एवं पंच दंडगा नेयव्वा—१ दुक्की  
दुक्केणं फुडे, २ दुक्की दुक्कं परियायद, ३ दुक्की दुक्कं उदीरे, ४ दुक्की दुक्कं वेदेति, ५ दुक्की दुक्कं निजरेति ।

प्रमाणयी अधिक (उंडा) पाणीमा तेने नाखे, हे गौतम ! खरेपर ते तुंवहुं माटीना आठ लेप वडे गुरु थयेहुं होमायी, भारे यमायी अने  
अधिक वजन वालुं होवायी पाणीना उपरना तळीआने छोडी नीचे पृथिवीने तळीए जड वेसे ? हा वेसे. एवे ते माटीना आठ लेपनो क्षय  
थाय ल्यारे ते तुंवहुं पृथिवीना तळने छोडी पाणीना तळ उपर आवीने रहे ? हा रहे. ए प्रमाणे हे गौतम ! नि.नगणयायी, नीरागणयायी अने  
गतिना परिणामयी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे

१३. [प्र०] हे भगवन् ! बंधननो छेद थवायी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक वटा-  
णानी डिंग, मगनी डिंग, अडदनी डिंग, सिबलिनो (शेमळनी) डिंग अने एरंडासुं फळ तडके मुक्का होय अने सुकाय ल्यारे ते फुटीने  
(तेमाना वीज) पृथ्वीनी एक बाजुए जाय; ए प्रमाणे हे गौतम ! बंधननो छेद थवायी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! निरिंधन (कर्मरूप इन्धनयी मुक्त) थवायी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम !  
इन्धनयी छूटेला धूमनी गति सामाविक रीते प्रतिबन्ध शिवाय उंचे प्रवर्ते छे, ए प्रमाणे हे गौतम ! [निरिंधनपणायी—कर्मरूप इन्धनयी मुक्त  
थवायी कर्मरहित जीवनी गति प्रवर्ते छे.]

१५ [प्र०] हे भगवन् ! पूर्वना प्रयोगयी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक धनुषयी  
छूटेला वाणनी गति प्रतिबन्ध शिवाय लक्ष्यना सन्मुख प्रवर्ते छे, तेम हे गौतम ! पूर्वप्रयोगयी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे,  
हे गौतम ! ए प्रमाणे नि संगतायी, नीरागतायी, यावत् पूर्वप्रयोगयी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! \* दु.खी जीव दु.खयी व्याप्त—बद्ध होय के अदु.खी—दुःखरहित जीव दु.खयी व्याप्त होय ? [उ०] हे  
गौतम ! दु.खी जीव दु.खयी व्याप्त होय, पण दुःखरहित जीव दु.खयी व्याप्त न होय.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! दु.खी नारक दु.खयी व्याप्त होय के अदु.खी नारक दु.खयी व्याप्त होय ? [उ०] हे गौतम ! दु.खी नारक  
दु.खयी व्याप्त होय, पण दु.खरहित नारक दु.खयी व्याप्त न होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने विषे दंडक कहेवो. ए प्रमाणे पांच दंडक  
जाणवा—१ दु.खी दु.खयी व्याप्त छे, २ दु.खी दु.खने ग्रहण करे छे, ३ दु.खी दु.खने उदीरे छे, ४ दु.खी दु.खने वेदे छे, ५ दु.खी  
दु.खनी निर्जरा करे छे.

१ मट्टियालेपेण क विनाऽन्यत्र । २ सुक्का क । ३ गिरंधणत्ताए क विना अन्यत्र ।

१६. \* दु.खना कारणभूत सिध्यात्वादिक कर्म पण दु.ख कहेवायछे.—टीका.

१८. [प्र०] अणगारस्स णं भंते । अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्ठमाणस्स वा, अणाउत्तं वत्थं पडिग्गाहं कंबलं पायपुंछणं गेण्हमाणस्स वा, निक्खिखमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ । [प्र०] से केणट्ठेणं ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा चोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ; जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ, नो इरियावहिया किरिया कज्जइ; अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ; से णं उस्सुत्तमेव रियति से तेणट्ठेणं ।

१९. [प्र०] अहं भंते ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता मुच्छिण, गिद्धे, गडिप, अज्जोववन्ने आहारं आहारेति, एस णं गोयमा ! सइंगाले पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथे वा, निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता महयाअप्पत्तिं कोहकिलामं करेमाणे आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा ! सधूमे पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं अन्नदव्वेणं सद्धिं संजोयत्ता आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोस-दुट्ठे पाण-भोयणे । एस णं गोयमा ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते ।

२०. [प्र०] अहं भंते ! वीर्तिगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिण जाव आहारेति, एस णं गोयमा ! वीर्तिगाले पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथे निग्गंथी वा जाव पडिग्गाहेत्ता णो महयाअप्पत्तिं जाव आहारेइ, एस णं गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथे निग्गंथी वा जाव पडिग्गाहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोसविप्पमुक्के पाण-भोयणे । एस णं गोयमा ! वीर्तिगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते ।

२१. [प्र०] अहं भंते ! खेत्तातिकंतस्स, कालातिकंतस्स, मग्गातिकंतस्स, पमाणातिकंतस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं अणुग्गए सूरिप पडिग्गाहेत्ता

१८. [प्र०] हे भगवन् ! उपयोग ( आत्मजागृति, सावधानता ) शिवाय गमन करता, उभा रहेता, वेसता अने सूता, तेमज उपयोग शिवाय वख, पात्र, काम्बल अने पादप्रोच्छनक ( रजोहरण ) ने ग्रहण करता ने मुक्ता अनगार ( साधु ) ने हे भगवन् ! ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सापरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ व्युच्छिन्न—क्षीण थया छे तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे, पण सापरायिकी क्रिया लागती नथी. जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ व्युच्छिन्न थया नथी तेने सापरायिकी क्रिया लागे छे, पण ऐर्यापथिकी क्रिया लागती नथी. सूत्रने अनुसारे वर्तता साधुने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे, अने सूत्रविरुद्ध वर्तनारने सांपरायिकी क्रिया लागे छे, ते [ उपयोग रहित साधु ] सूत्र विरुद्ध वतें छे ते माटे हे गौतम ! [ तेने सापरायिकी क्रिया लागे छे. ]

१९. [प्र०] हे भगवन् ! अंगारदोपसहित, धूमदोपसहित अने संयोजनादोप वडे दुष्ट पानभोजननो शो अर्थ कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! कोइ निर्ग्रन्थ—साधु या साध्वी प्रासुक अने एपणीय अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने ग्रहण करी मूर्च्छित, गृद्ध, प्रथित अने आसक्त थइने आहार करे तो हे गौतम ! ए अंगारदोपसहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे कोइ साधु या साध्वी प्रासुक एपणीय अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने ग्रहण करी अत्यंत अप्रीतिपूर्वक क्रोधथी खिन्न थइने आहार करे तो हे गौतम ! ए धूमदोपसहित पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् [ आहारने ] ग्रहण करीने गुण ( खाट ) उत्पन्न करवा माटे वीजा पदार्थ साथे संयोग करीने आहार करे तो हे गौतम ! ए संयोजनादोप वडे दुष्ट पानभोजन कहेवाय. हे गौतम ! ए प्रकारे अंगारदोप, धूमदोप अने संयोजना-दोपथी दुष्ट पानभोजननो अर्थ कह्यो.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! हवे अंगारदोपरहित, धूमदोपरहित अने संयोजनादोपरहित पानभोजननो शो अर्थ कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! जे कोइ निर्ग्रन्थ कि निर्ग्रन्थी यावत् [ आहारने ] ग्रहण करीने मूर्च्छारहित यावत् आहार करे, ते हे गौतम ! अंगारदोपरहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे कोइ निर्ग्रन्थ के निर्ग्रन्थी यावत् ग्रहण करीने अत्यन्त अप्रीतिपूर्वक यावत् आहार न करे, हे गौतम ! ए धूमदोपरहित पानभोजन कहेवाय. जे कोइ निर्ग्रन्थ के निर्ग्रन्थी यावत् ग्रहण करीने जेवो प्राप्त थाय तेवो जे आहार करे [ पन्तु खाट माटे वीजा साथे संयोग न करे ], हे गौतम ! ए संयोजनादोपरहित पानभोजन कहेवाय. आ अंगारदोपरहित, धूमदोपरहित अने संयोजनादोपरहित पानभोजननो अर्थ कह्यो छे.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! हवे क्षेत्रातिक्रान्त, कालातिक्रान्त, मार्गातिक्रान्त अने प्रमाणातिक्रान्त पानभोजननो शो अर्थ कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! कोइ साधु या साध्वी प्रासुक अने एपणीय अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने सूर्य उग्या पहेला ग्रहण करी सूर्य



उग्गए सूरिण आहारं आहारंति, एस णं गोयमा ! गित्तातिङ्गंते पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथो वा जाव साइमं पट्टमाए पाँ-  
सीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसि उवायणावेत्ता आहारं आहारं, एस णं गोयमा ! कालातिङ्गंते पाण-भोयणे । जे णं  
निग्गंथो वा जाव साइमं पडिग्गाहत्ता परं जडजोयणमेराए वीरकमावइत्ता आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! मग्गाविद्धंते  
पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथो वा, निग्गंथी वा फासु-पत्तपिजं जाव साइमं पडिग्गाहत्ता परं वत्तीराए कुकुटिअंडगपमाणे-  
त्ताणं कवलाणं आहारं आहारं, एस णं गोयमा ! पमाणागंते पाण-भोयणे । अट्ट कुकुटिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारं  
आहारेमाणे अण्णाहारे, दुवान्म कुकुटिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे अवट्टोभोयरिया, सोलस कुकुटिअंडगपमा-  
णमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे दुभागपत्ते, उट्टवीसं कुकुटिअंडगपमाणं जाव आहारं आहारेमाणे औमोदरिया, वत्तीसं  
कुकुटिअंडगमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एण्णेण वि दोसेणं ऊणं आहारं आहारेमाणे समणे निग्गंथे नो  
पकामरसमोईत्ति वत्तव्यं सिया । एस णं गोयमा ! तेत्तातिङ्गंतस्स, कालातिङ्गंतस्स, मग्गातिङ्गंतस्स, पमाणातिङ्गंतस्स पाण-  
भोयणस्स अट्टे पत्तते ।

२२. [प्र०] अह भंते ! सन्धातीयस्स, सत्थपरिणामियस्स, एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियंस्स पाण-भोयणस्स के  
अट्टे पत्तते ? [उ०] गोयमा ! जेणं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निम्मित्तसत्थमुसले ववगयमाला-वन्नग-विलेवणे ववगयचुयववयव-  
त्तदं, जीवधिप्पजटं, अकयं, अकारियं, असंकपियं, अणाहयं, अकीयकडं, अणुदिट्ठं, नवकोडीपरिसुद्धं, दसदोसविप्पमुद्धं, उग्ग-  
मु-प्पायणेसणासुपरिसुद्धं, वीत्तिगालं, वीतधूमं, संजोयणादोसविप्पमुद्धं, सुग्गुरं, अचचववं, अदुयं, अविलेवियं अणपरिसाई,  
अन्तोवज्जण-वण्णाणुलेवणभूयं, संजमजायामायावत्तियं, संजमभारवहणट्टयाए विलमिच पन्नगभूएणं अण्णाणेणं आहारे आहारंति,  
एस णं गोयमा ! सन्धातीयस्स, सत्थपरिणामियस्स जाव पाण-भोयणस्स अयमट्टे पत्तते । सेयं भंते, सेयं भंते ! त्ति ।

### सत्तमसए पट्टमो उट्टमो समत्तो ।

उग्गा पठी खाय, हे गौतम ! ए क्षेत्रातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु वा साध्वी यावत् खादिम आहारने पहेल्य पहोरमां ग्रहण करी  
छेछा पहोर सुवी राखीने पठी तेनो आहार करे, हे गौतम ! आ कायातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु वा साध्वी यावत् खादिम  
आहारने ग्रहण करीने अर्धभोजननी मर्यादाने ओळगी पठी खाय, हे गौतम ! ए मार्गातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु के साध्वी  
प्रासुक अने एण्णीय यावत् खादिम आहारने ग्रहण करीने कुकडीना इंडाप्रमाण वत्रीयथी अविक्क कवल खाय, हे गौतम ! ए प्रमाणाति-  
क्रान्त पानभोजन कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र आठ कवलनो आहार करनार साधु अल्पाहारी कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र  
वार कवलनो आहार करनार साधुने काइक न्यून अर्थ ऊनोदरिका कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र सोल कोळीआनो आहार करनार  
साधु द्विभागप्राप्त—अर्धाहारी कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र चोवीश कवलना आहार करनार साधुने ऊनोदरिका कहेवाय. कुकडीना  
इंडाप्रमाण मात्र वत्रीश कवलनो आहार करनार साधु प्रमाणप्राप्त—प्रमाणसर भोजन करनार कहेवाय. तेथी एक पण कवल ओछो आहार  
करनार साधु 'प्रकामरसमोजी—अलन्त मधुरादि रसनो भोक्ता' ए प्रमाणे न कही शक्या. हे गौतम ! ए प्रमाणे क्षेत्रातिक्रान्त, कायातिक्रान्त,  
मार्गातिक्रान्त अने प्रमाणातिक्रान्त पानभोजननो अर्थ करो छे.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! शखातीत ( अग्निगरे शखथी उतरेछे ), शखपरिणामित ( अग्निगरे शखथी परिणाम पामेले—अचित्त  
करावेले ), एषित ( एण्णा दोषथी रहित ), व्येषित ( त्रिविध या विगेषित. एण्णादोषथी रहित ) सामुदायिक—मिश्ररूप पान भोजननो शो  
अर्थ करो छे ? [उ०] हे गौतम ! कोइ साधु वा साध्वी जे शख अने मुगलादिरहित छे, तेम पुप्पमाला अने चन्दनना विलेपन रहित छे  
तेओ कृम्यादि जन्तु रहित, निर्जीव, [ साधुने माटे ] नहि करेल, नहि करावेल, नहि संकल्पेल, अनाहूत—आमन्त्रण रहित, नहि खरीवेळ,  
औद्देशिक रहित, नवकोटि विशुद्ध, अंशकित्तादि वज्जोप रहित, इडम अने उवादनैरणाना दोषथी विशुद्ध, अंगारदोषरहित, धूसदोषरहित,  
संयोजनादोषरहित, सुरसुरके चपचप शब्द रहित पणे, बहु उतावळथी नहि तेम बहु धीमेथी नहि, [आहारना] कोइ भागने छोट्या शिवाय,  
गाडाना धरिना मेलनीं पेटे के वण उपरना लेपनीं पेटे, केवळ संयमना निर्वाहने माटे, संयमना भारने वहन करवा अर्थ जेम साप विलमा  
पेसे तेम पोते आहार करे, हे गौतम ! ए शखातीत, शखपरिणामित यावत् पानभोजननो अर्थ करो छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भग-  
वन् ! ते एमज छे, [ एम कही गौतम ! यावत् विचरे छे ].

### सप्तम शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१ चरवीसं ख । २ ऊनोदरिए ख, ओमोदरिए घ । ३ एकेण ख । ४ गासेणं घ । ५ समुदा-ख-ग । ६ जपरिसाही ख ।  
७-वणभूयं ख । ८-गच्छुएणं ख ।

२२ \* १ हणे २ हणवे ३ हणताने अनुमोटे, ४ राधे ५ रवावे, ६ संवताने अनुमोटे, ७ खरीद करे ८ खरीद कएवे अने  
९ खरीद करताने अनुमोटे † कुञ्जो—( पिडनिर्मुक्ति, गा. ५२०. ) ‡ उट्टमएणगाना वायाडमार्दि १६ दोष छे, कुञ्जो—( पिडनिर्मुक्ति, गा. ९२-९३ )  
§ उवादनैरणाना वात्रोपिदादि १६ दोष छे, कुञ्जो—( पिडनिर्मुक्ति, गा. ४०८-४०९ )

## वितीओ उद्देशो.

१. [प्र०] से पूर्णं भंते ! सद्यपाणेहिं, सद्यभूएहिं, सद्यजीवेहिं, सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपञ्चक्खायं भवति, दुपञ्चक्खायं भवति ? [उ०] गोयमा ! सद्यपाणेहिं, जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपञ्चक्खायं भवति, सिय दुपञ्चक्खायं भवति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं जाव सिय दुपञ्चक्खायं भवति ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणस्स णो एवं अभिस्समन्नागयं भवति-इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपञ्चक्खायं भवति, दुपञ्चक्खायं भवति । एवं खलु से दुपञ्चक्खाई सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ । एवं खलु से मुसावाई सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-पडिहय-पञ्चक्खायपावकस्से, सकिरिए, असंबुडे, एगंतदंडे, एगंतवाले यावि भवति । जस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणस्स एवं अभिस्समन्नागयं भवइ-इमे जीवा इमे अजीवा, इमे तसा इमे थावरा, तस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपञ्चक्खायं भवति, नो दुपञ्चक्खायं भवति । एवं खलु से सुपञ्चक्खाई सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चक्खायमिति वदमाणे सच्चं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ । एवं खलु से सच्चवादी सद्यपाणेहिं, जाव सद्यसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पञ्चक्खायपावकस्से, अकिरिए, संबुडे, एगंतपंडिए यावि भवति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-जाव सिय दुपञ्चक्खायं भवति ।

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! 'सर्वं प्राणोमां, सर्वं भूतोमां, सर्वं जीवोमा अने सर्वं सत्त्वोमां में [हिसानु] प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे वोल्नारने सुप्रत्याख्यान थाय के दुप्रत्याख्यान थाय ? [उ०] हे गौतम ! 'सर्वं प्राणोमां यावत् सर्वं सत्त्वोमा प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे वोल्नारने कदाच सुप्रत्याख्यान थाय अने कदाच दुप्रत्याख्यान थाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के-सर्वं प्राणोमा यावत् सर्वं सत्त्वोमां यावत् कदाच दुप्रत्याख्यान थाय ? [उ०] हे गौतम ! 'सर्वं प्राणोमा यावत् सर्वं सत्त्वोमा प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे वोल्नार जेने आवा प्रकारनुं ज्ञान न होय के "आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे" तेने-सर्वं प्राणोमा यावत् सर्वं सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे कहेनारने-सुप्रत्याख्यान न थाय, पण दुप्रत्याख्यान थाय. ए रीते खरेखर ते दुप्रत्याख्यानी 'सर्वं प्राणिओमा यावत् सर्वं सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' एम वोल्तो सत्य भापा वोल्तो नथी, असत्य भापा वोले छे. ए प्रमाणे ते मृपावादी सर्वं प्राणोमा यावत् सर्वं सत्त्वोमा त्रिविधे त्रिविधे असंयत-सयमरहित, अविरत-विरतिरहित, जेणे पापकर्मनो त्याग के प्रत्याख्यान कर्तुं नथी एवो, सक्रिय-कर्मवन्ध-सहित, संवररहित, एकान्त दण्ड एटले हिसा करनार अने एकान्त अज्ञ छे. सर्वं प्राणोमां यावत् 'सर्वं सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे वोल्नार जेने आहुं ज्ञान यथु होय के "आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे," तेने-सर्वं प्राणोमा यावत् सर्वं सत्त्वोमा प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे वोल्नारने-सुप्रत्याख्यान थाय, दुप्रत्याख्यान न थाय. ए प्रमाणे खरेखर ते सुप्रत्याख्यानी 'सर्वं प्राणोमां यावत् सर्वं सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' एम वोल्तो सत्य भापा वोले छे, मृपा भापा वोल्तो नथी. ए रीते ते सुप्रत्याख्यानी, सत्य-भापी, सर्वं प्राणोमा यावत् सर्वं सत्त्वोमा त्रिविधे त्रिविधे संयत, विरति युक्त, जेणे पापकर्मनो घात ने प्रत्याख्यान कर्तुं छे एवो, अक्रिय-कर्मबंधरहित, सवरयुक्त एकान्त पडित पण छे. हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के यावत् कदाच दुप्रत्याख्यान थाय.

२. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! पच्चक्खाणे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते, तं जहा—मूलगुण-पच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य ।

३. [प्र०] मूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—सद्यमूलगुणपच्चक्खाणे य देसमूलगुणपच्चक्खाणे य ।

४. [प्र०] सद्यमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा—सद्याओ पाणाइचायाओ वेरमणं, जाव सद्याओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

५. [प्र०] देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा—थूलाओ पाणाइचायाओ वेरमणं, जाव थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

६. [प्र०] उत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—सद्युत्तरगुणपच्चक्खाणे य देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य ।

७. [प्र०] सद्युत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दसविहे पन्नत्ते, तं जहा—

“अणागयमइकंतं<sup>३</sup> कोडीसहियं<sup>५</sup> नियंटियं<sup>५</sup> चव ।

सौंगारमणागारं पैरिमाणकडं<sup>७</sup> निरवसेसं ॥

सैकियं<sup>९</sup> चव अइहाए पच्चक्खाणं भवे दसहा ॥”

प्रत्याख्यान.

२. [प्र.] हे भगवन् ! केटला प्रकारे पच्चक्खाण कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारे पच्चक्खाण कहुं छे. ते आ प्रकारे—मूलगुण-पच्चक्खाण अने उत्तरगुणपच्चक्खाण.

उत्तमत्याख्या  
ना प्रकार.

३. [प्र०] हे भगवन् ! मूलगुणपच्चक्खाण केटला प्रकारं कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! मूलगुण प्रत्याख्यान वे प्रकारं कहुं छे, ते आ प्रकारे—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यान अने देशमूलगुणप्रत्याख्यान.

मूलगुणप्रत्या-  
खाना प्रकार

४. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान पांच प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—सर्व प्राणातिपातथी विराम पामवो, यावत् सर्व मृपावादथी विराम पामवो.

देशमूलगुण-  
प्रत्याखाना प्रकार.

५. [प्र०] हे भगवन् ! देशमूलगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! देशमूलगुणप्रत्याख्यान पांच प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—स्थूलप्राणातिपातथी विरमण, यावत् स्थूलमृपावादथी विरमण.

उत्तरगुणप्रत्या-  
खाना प्रकार.

६. [प्र०] हे भगवन् ! उत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! [ उत्तरगुणप्रत्याख्यान ] वे प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान अने देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान.

सद्युत्तरगुण-  
प्रत्याखाना प्रकार

७. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान दस प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ अनागत, २ अतिक्रान्त, ३ कोटिसहित, ४ नियंत्रित, ५ साकार, ६ अनाकार, ७ कृतपरिमाण, ८ निरवशेष, ९ सकेत, १० अद्धा प्रत्याख्यान. ए रीते प्रत्याख्यान दस प्रकारे कहुं छे.

७. सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानना दस प्रकारनु स्वरूप—१ भविष्यमा जे तप करवानो छे ते पूर्वे करवो ते अनागत तप जेम, पर्युपणा पवे आवशे दारे गुर्वोदिनी वेगावय करवाथी तप करवामा थडचण यजे एम समजी प्रथम तप करवो. २ पूर्वे करवानो तप पछी करवो ते अतिक्रान्त तप जेम, पर्युपणापवेमा गुर्वोदिनी वेगावय करवा निमित्ते तप अद यवयो नथी एम धारी ते तप पछी करवो. ३ एक तप जे दिवसे पूरो थाय तेज दिवसे वीजो तप करवो, ए रीते प्रचारमाननी आदि अने अन्त कोटी मेरववी ते कोटिसहित तप. ४ नियमित दिवसे विम्र आब्या छता थवय तप करवो ते नियंत्रित तप. ५ महत्तराकारादि धारार-धपवाद-धूरेक तप करवो ते साकार तप. ६ महत्तराकारादि आकार शिवाय तप करवो ते निराकार तप. ७ दत्ति ( एक साथे एउदार पात्रमा पटेल आतादि ), कन्ठ, उद, चीज इत्यादिनु परिमाण करवु ते परिमाण तप. ८ चार प्रकारना आहारनो त्याग करवो ते निरवशेष तप. ९ इति इत्यादि सकेतपूर्वक तप करवो ते सकेत तप. १० कालनु प्रमाण करी पौह्यादि तप करवो ते अद्धा तप बुजो—(भ. टी. प. २९६.)

८. देसुत्तरगुणपञ्चखाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पन्नत्ते, तं जहा—१ दिसिद्वयं, २ उच्चभोगपरिभोगपरिमाणं, ३ अन्नत्थदंडवेरमणं, ४ सामादयं, ५ देसावगासियं, ६ पोसहोववासो, ७ अतिहिसंविभागो; अपच्छिममारणंतियसंलेहणाऽऽराहणता ।

९. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं मूलगुणपञ्चखाणी, उत्तरगुणपञ्चखाणी, अपञ्चखाणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा मूलगुणपञ्चखाणी वि, उत्तरगुणपञ्चखाणी वि, अपञ्चखाणी वि ।

१०. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं मूलगुणपञ्चखाणी ?—पुच्छा [उ०] गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपञ्चखाणी, नो उत्तरगुणपञ्चखाणी, अपञ्चखाणी; एवं जाव चउरिंदिया, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, चाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिया जहा नेरइया ।

११. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपञ्चखाणीणं, उत्तरगुणपञ्चखाणीणं, अपञ्चखाणीण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सवत्थोवा जीवा मूलगुणपञ्चखाणी, उत्तरगुणपञ्चखाणी असंखेज्जगुणा, अपञ्चखाणी अणंतगुणा ।

१२. [प्र०] एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सवत्थोवा जीवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपञ्चखाणी, उत्तरगुणपञ्चखाणी असंखेज्जगुणा, अपञ्चखाणी असंखिज्जगुणा ।

१३. [प्र०] एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपञ्चखाणीणं—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सवत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपञ्चखाणी, उत्तरगुणपञ्चखाणी संखेज्जगुणा, अपञ्चखाणी असंखेज्जगुणा ।

१४. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं सवमूलगुणपञ्चखाणी, देसमूलगुणपञ्चखाणी, अपञ्चखाणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा सवमूलगुणपञ्चखाणी, देसमूलगुणपञ्चखाणी, अपञ्चखाणी वि ।

८. [प्र०] हे भगवन् ! देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहं छे ? [उ०] हे गौतम ! देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान सात प्रकारे कहं छे, ते आ प्रमाणे—१ दिग्गत, २ उपभोगपरिभोगपरिमाण, ३ अनर्थदंडविरमण, ४ सामायिक, ५ देशावकाशिक, ६ पोपधोपवास, ७ अतिधिसविभाग अने अपश्चिममारणान्तिक—सलेखणाजोपणाऽऽराधना.

९. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो शुं मूलगुणप्रत्याख्यानी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो मूलगुणप्रत्याख्यानी पण छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी पण छे अने अप्रत्याख्यानी पण छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! नारकजीवो शुं मूलगुणप्रत्याख्यानी छे ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नारको मूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण अप्रत्याख्यानी छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा. पचेन्द्रिय तिर्यच अने मनुष्यो जेम जीवो कहा तेम जाणवा. वानमंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो जेम नारको कहा तेम जाणवा.

११. [प्र०] हे भगवन् ! मूलगुणप्रत्याख्यानी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमा कोण कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो सौथी थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अणंतगुण छे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ए (पूर्वे कहेला) जीवोमा पचेन्द्रिय तिर्यच जीवो नो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवो सर्वथी थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ए जीवोमा मूलगुणप्रत्याख्यानी वगैरे मनुष्यो नो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी मनुष्यो सर्वथी थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी मनुष्यो सख्यातगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी मनुष्यो असंख्यगुण छे.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, अने अप्रत्याख्यानी पण छे.

\* विशेष माटे जुओ—(उपासक० प. ६-१)

८. † अपश्चिम—जेना पछी बीजी सलेखना नथी एटले सौथी छेछी, मारणान्तिक—मरणकाले, सलेखना—शरीर अने कपायादिने छुश करनार तपविशेष—नो जोपणा—स्वीकारकरवा—वडे आराधन करवु ते अपश्चिममारणान्तिकसलेखनाजोपणाऽऽराधना देशोत्तरगुणमा दिग्गतादि सात गुणनी गणना करी, अने आ सलेखनानी गणना न करी तेहुं कारण ए छे के दिग्गतादि सात गुणो अवश्य देशोत्तरगुणहप छे, अने आ संलेखनानो नियम नथी, केमके ते देशोत्तरगुणवाळने देशोत्तरगुणहप अने सर्वोत्तरगुणवाळने सर्वोत्तरगुणहप छे, तो पण देशोत्तरगुणवाळने पण अन्ते करवा योग्य छे एम जणाववा आठमी सलेखना कही. जुओ—(भ. टी. प. २९५-१).

१५. [प्र०] नेरडयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरडया नो सद्यमूलगुणपञ्चम्याणी, नो देसमूलगुणपञ्चम्याणी, अपञ्चम्याणी । एवं जाव चजरिंदिया ।

१६. [प्र०] पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया नो सद्यमूलगुणपञ्चम्याणी, देसमूलगुणपञ्चम्याणी चि, अपञ्चम्याणी चि । मणुस्सा जहा जीवा, चाणमंतर-जोइस-वेमाणिया जहा नेरडया ।

१७. [प्र०] एप्पसि णं भंते ! जीवाणं सद्यमूलगुणपञ्चम्याणीणं, देसमूलगुणपञ्चम्याणीणं, अपञ्चम्याणीणं य कयरे कयरेहितो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्यमूलगुणपञ्चम्याणी, देसमूलगुणपञ्चम्याणी असंखेजगुणा, अपञ्चम्याणी अणंतगुणा । एवं अप्पावहुगाणि तिचि चि जहा पढमिहण दंडण- नवरं सद्यमूलगुणपञ्चम्याणी पंचिदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपञ्चम्याणी, अपञ्चम्याणी असंखेजगुणा ।

१८. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं सद्यउत्तरगुणपञ्चम्याणी, देसउत्तरगुणपञ्चम्याणी. अपञ्चम्याणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा सद्यउत्तरगुणपञ्चम्याणी चि तिचि चि । पंचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं चेव, सेसा अपञ्चम्याणी, जाव वेमाणिया ।

१९. [प्र०] एप्पसि णं भंते ! जीवाणं सद्यउत्तरगुणपञ्चम्याणीणं ? [उ०] अप्पावहुगाणि तिचि चि जहा पढमे दंडण, जाव मणुस्साणं ।

२०. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं संजया, असंजया, संजयासंजया ? [उ०] गोयमा ! जीवा संजया चि, असंजया चि, संजयासंजया चि तिचि चि, एवं जहेव पन्नवणाए तहेव भाणियधं जाव वेमाणिया, अप्पावहुगं तहेव तिण्ह चि भाणियधं ।

२१. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं पञ्चम्याणी, अपञ्चम्याणी, पञ्चम्याणापञ्चम्याणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा पञ्चम्याणी चि तिचि चि, एवं मणुस्सा चि तिचि चि, पंचिदियतिरिक्खजोणिया आइह्विगहिया, सेसा सद्ये अपञ्चम्याणी, जाव वेमाणिया ।

नारक

१५. [प्र०] नारकोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नारको सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, देसमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण अप्रत्याख्यानी छे.

पंचेन्द्रियतिर्यच

१६. [प्र०] पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंचेन्द्रियतिर्यचो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण देसमूलगुणप्रत्याख्यानी छे अने अप्रत्याख्यानी छे. जेम जीवो कया तेम मनुष्यो जाणवा. जेम नारको कया तेम वानमतर, प्योतिष्क अने वैमानिको जाणवा.

सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी वगेरेण अल्पवहुत्व.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी, देसमूलगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमा कोण कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो सर्वथी थोडा छे, देसमूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो अनंतगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. ए प्रमाणे त्रणे (जीव, पंचेन्द्रियतिर्यच अने मनुष्यना) अल्पवहुत्वो प्रथम दंडकमा [मू० ११, १२, १३] कया प्रमाणे जाणवा, परंतु सर्वथी थोडा पंचेन्द्रिय तिर्यचो देसमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, अने अप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यचो असंख्यगुण छे.

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी वगेरे जीवो

१८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी छे, देसोत्तरगुणप्रत्याख्यानी छे, के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी वगेरे त्रणे प्रकारना छे. पंचेन्द्रिय तिर्यचो अने मनुष्यो ए प्रमाणे छे. वाकीना वैमानिक सुधीना जीवो अप्रत्याख्यानी छे.

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी वगेरेण अल्पवहुत्व

१९. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी, देसोत्तरगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमा कोण कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] त्रणे अल्पवहुत्वो प्रथम दंडकमा कया प्रमाणे यावत् मनुष्योने जाणवा.

स्यत, अस्यत, अने संयत

२०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो संयत छे, असंयत छे के सयतासंयत ( देस संयत ) छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो संयत पण छे, असंयत पण छे, अने संयतासंयत पण छे—ए त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे जेम \*पन्नवणां कयु छे ते प्रमाणे यावत् वैमानिकोने अही कहेवुं, तेम अल्पवहुत्व पण त्रणुं कहेवुं.

प्रत्याख्यानी वगेरे

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो प्रत्याख्यानी छे, अप्रत्याख्यानी छे, के प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी ( देसप्रत्याख्यानी ) छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो प्रत्याख्यानी वगेरे त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे मनुष्यो पण त्रणे प्रकारना छे. पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको प्रथमभंगरहित छे. वाकीना वैमानिक सुधीना सर्व जीवो अप्रत्याख्यानी छे.

२२. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सवत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा । पंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया सवत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । मणुस्सा सवत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ।

२३. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जीवा सिय सासया, सिय असासया ? [उ०] गोयमा ! दव्वट्टयाए सासया, भावट्टयाए असासया, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—जाव सिय असासया ।

२४. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] एवं जहा जीवा तथा नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया जाव सिय सासया, सिय असासया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

### सत्तमसए वितीओ उद्देशो समत्तो ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रत्याख्यानी विगरे जीवोमा यावत् कोण विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रत्याख्यानी जीवो सौथी थोडा छे, प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. देशप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यचो सर्वथी थोडा छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे प्रत्याख्यानी मनुष्यो सर्वथी थोडा छे, देशप्रत्याख्यानी सख्यातगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आ हेतुथी कहो छो के कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे ? [उ०] द्रव्यनी अपेक्षाए जीवो शाश्वत छे, अने पर्यायनी अपेक्षाए जीवो अशाश्वत छे; ते हेतुथी एम कहुं छुं के यावत् कथंचित् अशाश्वत छे.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारको शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] जेम जीवो कह्या तेम नारको पण जाणवा. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको पण जाणवा, यावत् कथंचित् शाश्वत अने कथंचित् अशाश्वत छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [ एम कही गौतम यावत् विचरे छे. ]

### सप्तम शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

## ततिओ उद्देशो

१. [प्र०] वणस्सइकाइया णं भंते ! किं कालं सद्यप्पाहारगा वा, सद्यमहाहारगा वा भवंति ? [उ०] गोयमा ! पांडस-वरिसारत्तेसु णं पत्थ णं वणस्सइकाइया सद्यमहाहारगा भवंति, तदाणंतरं च णं सरप्प, तयाणंतरं च णं द्वैमंते, तदाणंतरं च णं वसंते, तदाणंतरं च णं गिम्हे, गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सद्यप्पाहारगा भवंति ।

२. [प्र०] जइ णं भंते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सद्यप्पाहारगा भवंति, कम्हा णं भंते ! गिम्हासु वद्वे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेत्तिज्जमाणा, सिरीण अईव अईव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ? [उ०] गोयमा ! गिम्हासु णं वद्वे उस्सिणजोणिया जीवा य, पोगला य वणस्सइकाइयत्ताण चिउक्कमंति, चयंति, उवचजंति: एवं मल्लु गोयमा ! गिम्हासु वद्वे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, जाव चिट्ठंति ।

३. [प्र०] से णूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा, जाव वीया वीयजीवफुडा ? [उ०] हंता, गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा, जाव वीया वीयजीवफुडा ।

४. [प्र०] जइ णं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, जाव वीया वीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सइकाइया आहारंति, कम्हा परिणामंति ? [उ०] गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिवद्धा तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति: कंदा कंद-जीवफुडा मूलजीवपडिवद्धा, तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति, एवं जाव वीया वीयजीवफुडा फलजीवपडिवद्धा तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति ।

## तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिको कया काले सौथी अल्पआहारवाळ्य होय छे, अने कया काले सौथी महाआहारवाळ्य होय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रावृट् ऋतुमां—श्रावण भाद्रवा मासमा, अने वर्षा ऋतुमा—आसो कार्तिक मासमा वनस्पतिकायिक जीवो सौथी महाआहारवाळ्य होय छे, लार पछी शरद ऋतुमा, लार पछी हेमन्त ऋतुमा, लार पछी वसन्त ऋतुमा अने लार घाट ग्रीष्म ऋतुमा [ अनुक्रमे ] अल्प आहारवाळ्य होय छे. ग्रीष्म ऋतुमां सर्वथी अल्पआहारवाळ्य होय छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ग्रीष्म ऋतुमा वनस्पतिकायिक जीवो सौथी अल्प आहारवाळ्य होय तो ते घणा वनस्पतिकायिको ग्रीष्ममां पादडावाळा, पुष्पावाळ्य, फलवाळ्य, लीला छम दीपना, अने वननी शोभा वडे अत्यंत सुगोमित केम होय छे ? [उ०] हे गौतम ! ग्रीष्म ऋतुमां घणा उष्णयोनिकाय जीवो अने पुद्गले वनस्पतिकायिको उपजे छे, विशेष उपजे छे, ववे छे, विशेष वृद्धि पामे छे; ए कारणथी हे गौतम ! ग्रीष्म ऋतुमा घणा वनस्पतिकायिको पादडावाळा, पुष्पावाळ्य यावत् होय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, कंदो कन्दना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे ? [उ०] हे गौतम ! मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जो मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे, तो वनस्पतिकायिक जीवो केवी रीते आहार करे, अने केवी रीते परिणामावे ? [उ०] हे गौतम ! मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, अने ते पृथिवीना जीव साथे संवद्ध (जोडा-येटा) छे, माटे वनस्पतिकायिक जीवो आहार करे छे, अने तेने परिणामावे छे. ए प्रमाणे यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे, अने ते फलना जीव साथे संवद्ध छे, माटे ते आहार करे छे, अने तेने परिणामावे छे.

अल्पिकाय अल्पा-  
नी अने महाहारी

ग्रीष्ममा अल्पाहारी  
उत्ता पुष्पित अने  
अल्पिकेम होय ?

यो मूलना जीवथी  
व्याप्त छे.

वनस्पति श्री रीते  
आहार करे ?

५. [प्र०] अह भंते ! आलुप, मूलप, सिंगबरे, हिरिली, सिरिलि, सिस्सिरिलि, किंट्रिया, छिरिया, छीरघिरालिया, कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरणकंदे, खेलुडे, अहमदमुत्या, पिंडहरिद्रा, लोहिणी, हुथीह, थिरुगा, मुग्गपर्णा, अस्सकणी, सीहकणी, सीहंठी, मुखुंठी, जेयावन्ने तहप्पगारा सधे ते अणंतजीवा चिविहसत्ता ? [उ०] हंता, गोयमा ! आलुप, मूलप जाव अणंतजीवा चिविहसत्ता ।

६. [प्र०] सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइय अप्पकम्मतराय, नीललेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] हंता, सिया । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—कण्हलेसे नेरइय अप्पकम्मतराय, नीललेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] गोयमा ! ठिंति पडुच्च, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराय ।

७. [प्र०] सिय भंते ! नीललेसे नेरइय अप्पकम्मतराय, काउलेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] हंता, सिया । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—नीललेसे अप्पकम्मतराय, काउलेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] गोयमा ! ठिंति पडुच्च, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराय । एवं असुरकुमारे वि; नवरं तेउलेसा अच्चहिया, एवं जाव वेमाणिया, जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियघाओ, जोइसियस्स न भण्णइ । जाव सिय भंते ! पम्हलेस्से वेमाणिय अप्पकम्मतराय, सुकलेस्से वेमाणिय महाकम्मतराय ? हंता, सिया । से केणट्टेणं ? सेसं जहा नेरइयस्स, जाव महाकम्मतराय ।

८. [प्र०] से नूणं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सा वेदणा ? [उ०] गोयमा ! णो निणट्टे समट्टे । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जा वेयणा न सा णिज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ! कम्म वेदणा, णोरुम्म निज्जरा, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव न सा वेदणा ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! आलु (वटाटा) मूला, आलु, हिरिली, सिरिलि, सिस्सिरिलि, किट्टिका, छिरिया, छीरघिरारिका, वज्जकद, सूरणकद, खेलुडा, आर्द्रभद्रमोथ, पिंडहरिद्रा, रोहिणी, हुथीह, थिरुगा, मुद्रपर्णा, अधकणी, सिंहकणी, सीहठी, मुखुंठी अने तेवा प्रकारनी वीजी वनस्पतिओ शुं अनन्त जीववाळी अने भिन्न भिन्न जीववाळी छे ? [उ०] हे गौतम ! आलु (वटाटा) मूला यावत् अनन्त जीववाळी अने भिन्न भिन्न जीववाळी छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! कदाच कृष्णलेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हा, गौतम ! कदाच होय. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के—कृष्णलेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्थितिनी अपेक्षाए, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के ते यावत् महाकर्मवाळो होय.

७. [प्र०] हे भगवन् ! कदाच नीललेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने कापोतलेइयावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हा, गौतम ! कदाच होय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ए प्रमाणे कहो छो के—नीललेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने कापोतलेइयावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्थितिनी अपेक्षाए, ते हेतुथी हे गौतम ! ते यावत् महाकर्मवाळो होय. ए प्रमाणे असुरकुमारोने विपे पण जाणवुं, परन्तु तेओने एक तेजोलेइया अधिक होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक देवो पर्यन्त जाणवुं. जेने जेटली लेइयाओ होय तेने तेटली कहेवीं, पण 'व्योतिष्क देवोने न कहेवुं, यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! कदाच पद्मलेइयावाळो वैमानिक अल्पकर्मवाळो अने शुद्धलेइयावाळो वैमानिक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! हा, कदाच होय. [प्र०] ते शा हेतुथी ? [उ०] वाकीनु जेम नाग्वने कहुं तेम जाणवु, यावत् महाकर्मवाळो होय.

८. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर जे वेदना ते निर्जरा, अने जे निर्जरा ते वेदना कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन्, एम शा हेतुथी कहो छो के—जे वेदना ते निर्जरा अने जे निर्जरा ते वेदना न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! वेदना नरुमं छे, अने निर्जरा नोकर्म छे, ते हेतुथी यावत् ते वेदना न कहेवाय.

१ मूलप ख । २ किट्टिया घ । ३ रोहट्टे फ । ४ अहप मह-घ । ५ सिय ख । ६-सियस्म णं न ख । ७ निय ख ।

६ \* कृष्णलेइया अरान्त अशुभ परिणामरूप होवारी अने तेनी अपेक्षाए नीललेइया संरंके शुभ परिणामरूप होवारी नामान्वत कृष्णलेइयावाळो वज्ज-ज्जमां अने नीललेइयावाळो अल्पकर्मवाळो होय, परन्तु यदान आशुपुनी स्थितिनी अपेक्षाए कृष्णलेइयावाळो अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो महाकर्मवाळो होय. जेम के कृष्णलेइयावाळो नारक जेने पोताना आशुपुनी घणी स्थिति क्षय करेछो छे तेने घना कर्मनो क्षय यवो होय, तेनी अपेक्षाए कोइ पावनी नरककृष्णोनां सत्तरसामरोपमंगा आशुपुन्यवाळो नीललेइयावाळो जीव जे हवणांज उत्पन्न यवो होय तेने पोताना आशुपुनी स्थितिनी धरारे क्षय नठि कवो होवारी घना कर्म वाकी होय, तेथी ते महाकर्मवाळो होय. बुजो-भ. टी. प. ३०१-१.

७. † उद्योतिष्मने तेजो लेइया शिवाय वीजी अन्य लेइया नहि होवारी अन्यलेइयापेदा ते लपकर्मवाळो के महाकर्मवाळो न कहेवाय. उने-भ. टी. प. ३०१-१

८. ‡ उदयप्राप्त कर्मनु तेदवुं-अनुभव करवो ते वेदना, अने वेदित कर्मनो क्षय यवो ते निर्जरा, एट्टेने वेदना कर्मनी घणी होवारी तेने कर्म वसुं, कर्म वेदित यवु एट्टे तेने कर्म न परी सकाय, तेथी नोर्म्मनी निर्जरा घाय छे, माटे निर्जरने नोकर्म कृष्ण छे बुजो-भ. टी. प. ३०१-१.)



९. [प्र०] नेरड्याणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ? णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—नेरड्याणं जा वेयणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ! नेरड्याणं कम्म वेदणा, णोकम्म निज्जरा. से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१०. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु, जं निज्जरिंसु तं वेदेंसु ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जं वेदेंसु नो तं निज्जरेंसु, जं निज्जरेंसु नो तं वेदेंसु ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदेंसु, नोकम्मं निज्जरिंसु. से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंसु । [प्र०] नेरड्याणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरेंसु ? [उ०] एवं नेरड्या वि, एवं जाव वेमाणिया ।

११. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदेंति तं निज्जरेंति. जं निज्जरेंति तं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जाव नो तं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदेंति, नोकम्मं निज्जरेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति, एवं नेरड्या वि, जाव वेमाणिया ।

१२. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति, जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ! [प्र०] से केणट्ठेणं जाव णो तं वेदिस्संति ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति, एवं नेरड्या वि, जाव वेमाणिया ।

१३. [प्र०] से णूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए से वेदणासमए ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं एवं बुच्चइ—जे वेयणासमए न से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ? [उ०] गोयमा ! जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति, अन्नम्मि समयं वेदेंति, अन्नम्मि समयं निज्जरेंति, अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए; से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ।

कोने वेदना ते निर्जरा नथी

९. [प्र०] हे भगवन् ! शु नारकोने जे वेदना छे ते निर्जरा कहेवाय, अने जे निर्जरा छे ते वेदना कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम आ हेतुथी कहो छो के नारकोने जे वेदना ते निर्जरा न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! नारकोने वेदना छे ते कर्म छे, अने निर्जरा छे ते नोकर्म छे, ते हेतुथी एम कहुं छुं के हे गौतम ! यावत् निर्जरा ते वेदना न कहेवाय. प्रमाणे यावत् वैमानिको जाणवा.

जे वेदु ते निर्जरा नथी

१०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर जे वेदुं ते निर्जयुं, अने जे निर्जयुं ते वेदुं ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी [प्र०] हे भगवन् ! एम आ हेतुथी कहेवाय छे के जे वेदुं ते निर्जयुं नथी, जे निर्जयुं ते वेदुं नथी ? [उ०] हे गौतम ! कर्म वेदुं, अने नोकर्म निर्जयुं; ते हेतुथी हे गौतम ! यावत् ते वेदुं नथी [प्र०] हे भगवन् ! नारकोए जे वेदुं ते निर्जयुं ? [उ०] पूर्वं कइया प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको पण जाणवा.

जेने वेद छे तेने निर्जरा नथी

११. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर जेने वेदे छे तेने निर्जरे छे, अने जेने निर्जरे छे तेने वेदे छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम आ हेतुथी कहेवाय छे के यावत् जेने वेदे छे तेने निर्जरतो नथी, जेने निर्जरे छे तेने वेदतो नथी. [उ०] हे गौतम ! कर्मने वेदे छे अने नोकर्मने निर्जरे छे, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के यावत् [जेने निर्जरे छे] तेने वेदतो नथी. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको जाणवा.

जेने वेद छे तेने निर्जरे छे नथी.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जेने वेदये तेने निर्जरये, अने जेने निर्जरये तेने वेदये ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम आ हेतुथी कहो छो के यावत् तेने वेदये नहि ? [उ०] हे गौतम ! कर्मने वेदये अने नोकर्मने निर्जरये, ते हेतुथी यावत् जेने [वेदये] तेने निर्जरये नहि

जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय छे, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी [प्र०] हे भगवन् ! आ हेतुथी एम कहेवाय छे के जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! जे समये वेदे छे ते समये निर्जरा करतो नथी, जे समये निर्जरा करे छे ते समये वेदतो नथी, अन्य समये वेदे छे, अन्य समये निर्जरा करे छे, वेदनानो समय भिन्न छे अने निर्जरानो समय भिन्न छे; ते हेतुथी यावत् वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.

१४. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए से वेदणासमए ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं एवं बुच्चइ—नेरइयाणं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेयणासमए ? [उ०] गोयमा ! नेरइया णं जं समयं वेदेंति णो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति, अन्नम्मि समए वेदेंति, अन्नम्मि समए निज्जरेंति, अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए, से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१५. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—नेरइया सिय सासया, सिय असासया ? [उ०] गोयमा ! अट्ठोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया, से तेणट्ठेणं जाव सिय सासया, सिय असासया; एवं जाव वेमाणिया, जाव सिय असासया । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

### सत्तमसए ततियो उद्देशो समत्तो ।

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने जे वेदनानो समय छे, ते निर्जरानो समय छे, अने निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा कारणथी कहो छो के नारकोने जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! नारको जे समये वेदे छे ते समये निर्जरा करता नथी, अने जे समये निर्जरा करे छे ते समये वेदता नथी, अन्य समये वेदे छे अने अन्य समये निर्जरा करे छे, तेओनो वेदनानो समय जूदो छे, अने निर्जरानो समय जूदो छे; ते हेतुथी यावत् निर्जरानो समय ते वेदनानो समय नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणहुं.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारको शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! कथचित् शाश्वत छे, अने कथचित् अशाश्वत पण छे [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी एम कहो छो के नारको कथचित् शाश्वत छे अने कथचित् अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! अव्युच्छित्तिनय—(द्रव्यार्थिकनय—)नी अपेक्षाए शाश्वत छे, अने व्युच्छित्तिनयनी (पर्यायनयनी) अपेक्षाए अशाश्वत छे; ते हेतुथी यावत् कथचित् शाश्वत छे अने कथचित् अशाश्वत छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको यावत् कथचित् अशाश्वत छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [ एम कही गौतम यावत् विचरे छे. ]

### सप्तमशतके तृतीय उद्देशक समाप्त.

## चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे नयरे जाव एवं वयासि—कतिविहा णं भंते ! संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! छविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तं जहा—पुंढविकाइया, एवं जहा जीवाभिगमे जाव सम्मत्तकिरियं वा, मिच्छत्त-किरियं वा ।

<sup>३</sup> [ जीवा छविह पुढवी जीवाणं <sup>३</sup>टिती भवट्टिती<sup>५</sup> काये ।  
निह्वेवण अणगारे किरिया सम्मत्त-मिच्छत्तां ॥ ]

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसए चउत्थो उद्देशो समाप्तो ।

## चतुर्थ उद्देशक.

गोना प्रसार १. [प्र०] राजगृह नगरमा [ गौतम ] यावत् ए प्रमाणे वोल्या—हे भगवन् ! ससारी जीवो केटल प्रकारना क्खा छे ? [उ०] हे गौतम ! संसारी जीवो छ प्रकारना क्खा छे, ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिक विगरे. ए प्रमाणे जेम <sup>५</sup>जीवाभिगमसूत्रमा क्खुं छे तेम सम्यक्त्वक्रिया अने मिथ्यात्वक्रियासुधी अर्हा जाणुं.

उग्रहाथा १ [ १ जीवोना छ प्रकार, २ पृथिवीना छ प्रकार, ३ पृथिवीना भेदोनी स्थिति—आयुप्, ४ भवस्थिति, ५ सामान्यकाय स्थिति ६ निर्लेपना—खाली थवानो काळ, ७ अनगारसवधी हकीकत, ८ सम्यक्त्वक्रिया अने मिथ्यात्वक्रिया ] हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [ एम कही गौतम यावत् विचरे छे. ]

सप्तम शतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

१ पुट्टिकाइंभा ख । २ [ ] एतच्चिह्नान्तर्गतं पाठो वाचनान्तरे उपलभ्यते, स च टीकाकारेण व्याख्यात. । ३ टिति भ-ख । ४-तिक्का-ए । ५-उत्तं उच्छे क ।

१ \* ( जीवाभिगम प. १३९. सू. १००—१०४ )

† वाचनान्तरमा भावेली उग्रह गाथानो अर्थ [ ] आ कोट्टरमां भाव्यो छे.

## पंचमो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-खहरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते, तं जहा-अंडया, पोयया, समुच्छिमा; एवं जहा जीवाभिगमे, जाव 'नो च्चव णं ते विमाणे वीतीवण्णा, एमहालया णं गोयमा ! ते विमाणा पन्नत्ता' ।

जोणीसंगह-लेसा दिट्ठी नाणे य जोग-उवओगे ।  
उववाय-ट्टिति-समुग्घाय-चवण-जाती-कुल-विहीओ ॥

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसयस्स पंचमो उद्देशो समत्तो ।

## पञ्चम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [ गौतम ] यावत् ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! खेचर पचेन्द्रिय तिर्यचोनो योनिसंग्रह केटला प्रकारे कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनो योनिसंग्रह त्रण प्रकारे कखो छे; ते आ प्रमाणे-अडज, पोतज अने संमूर्च्छिम. जेम \*जीवाभिगम सूत्रमां कखुं छे ते प्रमाणे यावत् 'ते विमानोने उहंवी न शके, एटला मोटा ते विमानो कखा छे' लां सुधी सर्व जाणवु.

† [ १ योनिसंग्रह, २ लेस्या; ३ दृष्टि-सम्यक्, मिश्र अने मिथ्यात्वदृष्टि, ४ ज्ञान, ५ योग, ६ उपयोग, ७ उपपात-उत्पन्न यहुं, ८ स्थिति-आयुप्, ९ समुद्घात, १० च्यवन, ११ जातिकुलकोटी ].

हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [ एम कही गौतम यावत् विचरे छे. ]

सप्तम शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

१ कतिविहे णं जो- घ । २ [ ] पृत्तचिह्नान्तर्गत. पाठो वाचनान्तरे उपलभ्यते ।

१. \* ( जीवाभिगम प. १३२-१३७. सू. ९६-९९ )

† वाचनान्तरमा आवेली सग्रहगाथानो अर्थ आ [ ] कोटकमा आप्यो छे.

## छठो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वैयासी-जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइपसु उचवज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पकरेति, उचवज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, उचवज्जे नेरइयाउयं पकरेइ ? [उ०] गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं परुरेइ, नो उचवज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उचवज्जे नेरइयाउयं पकरेइ । एवं असुरकुमारोसु चि, एवं जाव वेमाणिएसु ।

२. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइपसु उचवज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उचवज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, उचवज्जे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ? [उ०] गोयमा ! णो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उचवज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उचवज्जे वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेति । एवं जाव वेमाणिएसु ।

३. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइपसु उचवज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए महावेयणे, उचवज्जमाणे महावेदणे, उचवज्जे महावेदणे ? [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, उचवज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेयणे-अहे णं भंते ! उचवज्जे भवति तयो पच्छा एगंतदुक्खं वेयणं वेयति, आहच्च सायं ।

४. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए असुरकुमारोसु उचवज्जित्तए पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, उचवज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, अहे णं उचवज्जे भवद तयो पच्छा एगंतसातं वेयणं वेदेति, आहच्च असायं । एवं जाव थणियकुमारोसु ।

## पष्ठ उद्देशकं.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा [ गौतम ] यावत् ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! जे जीव नारकने विपे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमा रहीने नारकतुं आयुप् वावे ? त्यां-नारकमा उत्पन्न यतो नारकतुं आयुप् वावे ? के त्यां उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप् वावे ? [उ०] हे गौतम ! आ भवमा रहीने नारकतुं आयुप् वावे, पण त्या उत्पन्न थता नारकतुं आयुप् न वावे, अने उत्पन्न थइने पण नारकतुं आयुप् न वावे, ए प्रमाणे असुरकुमारोमा अने यावत् वैमानिकोमा जाणतुं.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव नारकने विपे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमा रही नारकतुं आयुप् वेदे, त्यां उत्पन्न थता नारकतुं आयुप् वेदे, के त्या उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप् वेदे ? [उ०] हे गौतम ! आ भवमा रही नारकतुं आयुप् न वेदे, पण उत्पन्न थता अने उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप् वेदे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमा पण जाणतुं.

३. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव नारकमा उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमा रहेलो महावेदनावाळो होय, त्यां उत्पन्न थता महावेदनावाळो होय, के उत्पन्न थया पछी महावेदनावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच ते आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; कदाच उत्पन्न थता महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे, त्यार पछी एकान्त दुःखरूप वेदनाने वेदे छे, अने क्वचित् सुखने वेदे छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव असुरकुमारमा उत्पन्न थवाने योग्य छे ते सवन्धी प्रश्न [उ०] हे गौतम ! ते कदाच आ भवमा रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय, उत्पन्न थता कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे त्यार पछी एकान्त सुखरूप वेदनाने वेदे छे, अने कदाच दुःखने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारने विपे जाणतुं.

५. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए पुढचिक्काइएसु उववज्जित्तए पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे; एवं उववज्जमाणे वि, अहे णं उववज्जे भवति तओ पच्छा वेमायाए वेयणं वेदेति । एवं जाव मणुस्सेसु, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारोसु ।

६. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया ? [उ०] गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! हंता, अत्थि ।

८. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाइवाएणं, जाव मिच्छादंसणस-ल्लेणं; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

९. [प्र०] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

११. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवा अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं, जाव परिग्ग-हवेरमणेणं, कोहविवेगेणं, जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

१२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! णो तिण्ठे समट्ठे । एवं जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं ।

१३. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

१४. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए, बहूणं पाणाणं, जाव सत्ताणं अट्टक्खणयाए, असोयणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपिट्ठणयाए, अपरियावणयाए, एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति; एवं नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव पृथिवीकायमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते संवन्धी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रहेले ते कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; ए प्रमाणे उत्पन्न थता पण महावेदनावाळो होय के अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे त्थार पछी ते विविध प्रकारे वेदनाने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्योमां जाणवु. जेम असुरकुमारोने विपे [सू. ४] कहु तेम वानव्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो विपे जाणवुं.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो आभोगथी-जाणपणे आयुप्नो वंध करे के अनाभोगथी-अजाणपणे आयुप्नो वंध करे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो आभोगथी आयुप्नो वन्ध न करे, पण अनाभोगथी आयुप्नो वन्ध करे. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको जाणवा.

७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने कर्कशवेदनीय-दु.खपूर्वक भोगववा योग्य कर्मो-बंधाय छे ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने कर्कशवेदनीय कर्मो केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणातिपात-जीवहिंसाथी, यावत् मिथ्यादर्शन-शल्यथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने कर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के नारकोने कर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वे कहु प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने अकर्कशवेदनीय-सुखपूर्वक भोगववा योग्य कर्मो-बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कर्मो केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणातिपातविरमणथी, यावत् परिग्रहविरमणथी; क्रोधनो त्याग करवाथी, यावत् मिथ्यादर्शनशल्यनो त्याग करवाथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने अकर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परंतु मनुष्योने जेम जीवोने [सू. ११.] कहुं तेम जाणवुं.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने सातावेदनीय कर्म बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने सातावेदनीय कर्म केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणोने विपे अनुकंपाथी, भूतोने विपे अनुकंपाथी, जीवोने विपे अनुकंपाथी, सत्त्वोने विपे अनुकंपाथी, घणा प्राणोने यावत् सत्त्वोने दु.ख न देवाथी, शोक नहि उपजाववाथी, खेद नहि उत्पन्न करवाथी, वेदना न करवाथी, नहि मारवाथी तेम परिताप नहि उपजाववाथी ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवो सातावेदनीय कर्मो बाधे छे. ए प्रमाणे नारकोने पण जाणवुं, यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

१५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं असायावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता अत्थि ।

१६. [प्र०] क्हं णं भंते ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्ठणयाए, परपरियावणयाए; वहुणं पाणाणं, जाव सत्ताणं दुक्खणयाए, सोयणयाए जाव परियावणयाए; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । एवं नेरदयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१७. [प्र०] जंबुईवि णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए दुंसमदुसमाए समाए उत्तमकट्टपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिस्स आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? [उ०] गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूय, भंभाभूय, कोलाहलभूय; समयाणुभावेण य णं खर-फरस-धूलिमइला, दुविसहा, वाडला, भयंकरा, वाया संवट्ठगा य वीहिंति; इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समंता रओसला, रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा; समयलुक्खयाए य णं अहियं चंदा सीयं मोच्छंति, अहियं सुरिया तवइस्संति: अदुत्तरं च णं अभिक्खणं वहवे अरसमेहा, विरसमेहा, खारमेहा, सत्तमेहा, खट्टमेहा, अग्गिमेहा, विज्जुमेहा, विसमेहा, असणिमेहा: अपिचणिज्जोदगा [अजचणिज्जोदया] वाहि-रोग-वेदणोदीरणापरिणामसलिला, अमणुत्तपाणियागा, चंडानिलपहयतिक्रधाराविवायपउरं वासं वासिंहिति; जे णं भारहे वासे गामाSSगर-नगर-खेड-कच्यड-मडंय-दोणमुट्ट-पट्टणा-SSसमगयं जणवयं, चउपय-नवेलए, खहरं पक्खिसंधं, गामा-सर-पयारनिरए तसे य पाणे, बहुप्पगारे रक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वाह्लि-तण-पट्टयग-हरिनो-सहि पवालं-कुरमादीए य तण-वणस्सइकाए विद्धंसेहिंति, पट्टय-गिरि-डोंगर-उंत्थल-भंदिमादीए य वेयट्ठगिरिविजे विरावेहिंति, सलिलविल-ई-दुग्गविसमनिणु-नयाइं च गंगा-सिंधुवज्जादं समीकरेहिंति ।

१८. [प्र०] तीसे णं समाए भारहवासस्स भूमीए केरिस्स आगारभावपडोयारे भविस्सति ? [उ०] गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालभूया, मुंमुस्सभूया, छारियभूया, चत्तकवेह्यभूया, तत्तसमजोतिभूया, धूलिवहुला, रेणुवहुला, पंकवहुला, पणगवहुला, चलणिवहुला, वहुणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुंविक्कमा यावि भविस्सति ।

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने असातावेदनीय कर्मो वंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने असातावेदनीय कर्म केम वंधाय ? [उ०] हे गौतम ! वीजाने दु ख देवार्थी, वीजाने शोक उपजाववार्थी, वीजाने खेद उत्पन्न करवार्थी, वीजाने पीडा करवार्थी, वीजाने मारवार्थी, वीजाने परिताप उत्पन्न करवार्थी, तेम घणा प्राणोने वावत् मत्तोने दु ख देवार्थी, शोक उपजाववार्थी, यावत् परिताप उत्पन्न करवार्थी, ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने असातावेदनीय कर्म वंधाय छे ए प्रमाणे नारकोने, यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जंबुद्वीपनामे द्वीपमां भारतवर्षने विपे आ अवसर्षिणीमा दु.पमाडु पमा काल-छट्टो आरो ज्यारे अलंत उक्तट अन्नस्थाने प्राप्त थये त्तारे भारतवर्षनो आकारभावप्रत्यवतार ( आकार अने भावोने आविर्भाव ) केवा प्रकारे थये ? [उ०] हे गौतम ! हाहाभूत ( जे काळे दु खी छोको 'हा हा' शब्द करये ), भंभाभूत ( जे काळे दु खान पशुओ 'भा भा' शब्द करये ), अने कोलाहलभूत ( ज्यारे दु खपीटिन पत्नीओ कोलाहल करये ) एवो काल थये. कालना प्रभावार्थी घणा कठोर, धूळ्यी मेल, असहा, अनुचित अने भयंकर वायु, तेमज मवर्तक वायु वाये. आ काळे वारंवार चारे वाज्ज, धूल उडती होवार्थी रजथी मलिन अने अंधकारवडे प्रकाशरहित दिशाओ घूमाडा जेवी शंका देवार्थे. कालनी रक्षनार्थी चन्द्रो अधिक शीतता आपये अने मूर्खो अलंत तपये. वळी वारंवार घणा खराव रसवाळा, विरुद्ध रसवाळा, गारा, ग्यतरममान पाणिवाळा, [ ग्याटा पाणिवाळा ] अग्निना पेटे दाहक पाणिवाळा, विजळी युक्त, अज्ञानिमेव-करावोरेने पाडनार ( पर्वतने भेदनाग, ) विपन्नेयो-जेरी पाणिवाळा-नहि पीवाटायक पाणिवाळा, [ निर्वाह न थइ शके तेवा पाणिवाळा ], व्याधि, रोग अने वेदना उत्पन्न करनार पाणिवाळा, मनने न रुचे तेवा पाणिवाळा मेवो तीक्ष्ण धारणा पडवा डेव पुष्कळ वरसये. जेथी भारत वर्षमां ग्राम, आकर, नगर, खेड, क्वेट, मडंय, दोणमुट्ट, पट्टन अने आश्रममा रहेल मनुष्यो, चोपगा-गायो वेदा-थने आकाशमां गमन करता पक्षि-ओना टोळाओ, तेमज गाम अने अण्णमा चालना त्रम जीवो तथा बहु प्रकारना वृत्तो, गुल्मो, लताओ, वेलडीओ, घास, पर्वगो-शेरडी करारे, वगे वगे, आपर्षा-शास्त्रिगंगे, प्रवाळो अने अंजुरादि तृणवनस्पतिओ नाश पामये. वनाड्य शिवाय पर्वतो, गिरिओ, हुंगरो, धूळना उंचा म्थये, रज विनानी भूमिओ नाश पामये गंगा अने सिन्धुनदी शिवाय पाणिना बराओ, खाडाओ, दुर्गम अने विपम भूमिमा रहेय उंचा अने नीचा म्थये मग्धा थये.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! [ ते काळे ] भारतवर्षना भूमिनो केवो आकारभावप्रत्यवतार थये ? [उ०] हे गौतम ! ते काळे जेवी, सुर्ग-द्रागाना अग्नि जेवी, भस्मीभूत, तपी गयेला कटाह ( कडावा ) जेवी, ताप वडे अग्निना मरखी, बहुधूळवाळी वहु-रूपारे ते बहुकीचटवाळी, बहुगैवाळवाळी, वणाकाटववाळी अने पृथ्वी उपर रहेला घणा प्राणिओने चालवुं मुक्केल पडे एवी भूमि थये. जाणवुं.

पावने घ । २-वापिपति-घ । ३-इहीने सं-ख । ४-उत्सपि-घ । ५-दूममदूसमाए-घ, दुस्समदुस्समाए क । ६-भंभाभूय ख । ७-हाहिंति कविनाऽन्य । ८-धूमाहिंति घ । ९-दुग्गविसमनिणु-घ । १०-उच्छल-घ । ११-भदिमा-घ । १२-नट-ख । १३-सुम्भुभूया घ ।

१९. [प्र०] तीसे णं भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? [उ०] गोयमा ! मणुया भविस्संति दुरूवा, दुव्वन्ना, दुग्गंधा, दुरसा, दुफासा, अणिट्ठा, अकंता, जाव अमणामा, हीणस्सरा, दीणस्सरा, अणि-ट्ठस्सरा, जाव अमणामस्सरा, अणादेज्जवयणपच्चायाया, निहज्जा, कूड-कवड-कलह-व्ह-वंध-वेरनिरया, मज्जायातिकमप्पहाणा, अकज्जनिच्चुजता, गुरुनियोय-विणयरहिया य, विकलरुवा, परूढनह-केस-मंसु-रोमा, काला, खर-फरुस-भ्रामवन्ना, फुट्टसिरा, कविल-पलियकेसा, वहुण्हारुसंपिणद्ध-दुहंसणिज्जरूवा, संकुडियवलीतरंगपरिवेदियंगमंगा, जरापरिणतव थेरगनरा, पविरलपरि-सडियदंतसेढी, उम्भडघड(य)मुहा [ उम्भडवाडामुहा, ] विसमणयणा, वंकनासा, वंक[ग]-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छ-कंसरा-भिभूया, खर-तिकवन्नख-कंडूइयविकखयतणू, दहु-किडिम-सिंज्ज-फुडियफरुसच्छवी, चित्तलंगा, टोलागति-विसमसंधिवंधण-उक्कुडुअट्टिगविभत्त-दुच्चला कुसंधयण-कुप्पमाण-कुसंठिया, कुरूवा, कुट्टाणासण-कुसेज-हुंभोइणो, असुइणो, अणेगवाहिपरिपी-लियंगमंगा, खलंत-वेम्भलगती, निरुच्छाहा, सत्तपरिवज्जिया, विगयंवेट्ट-नट्टतेया, अभिक्खणं सीय-उण्ह-खर-फरुसवायविज्ज-डियमलिणपंसुरयगुंडियंगमंगा, वहुकोह-माण-माया, वहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, ओसन्नं धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्टा, उक्को-सेणं रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-वीसतिवासपरमाउसो, पुत्त-नत्तुपरियालपणय[ परिपालण ]वहुला गंगा-सिंधुओ महानदीओ, वेयहं च पवयं निस्साए वावत्तारिं 'निओदा वीयं वीयामेत्ता विलवासिणो भविस्संति ।

२०. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया कं आहारं आहारेहिति ? [उ०] गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समयेणं गंगा-सिंधुओ महानदीओ र्हंपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जलं 'वोच्चिहिति, से वि य णं जले वहुमच्छ-कच्छभाइत्ते, णो चेव णं आउवहुले भविस्सति । तए णं ते मणुया सूरुगमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तंसि य विलेहितो निद्धाहिति, निद्धाइत्ता विलेहितो मच्छ-कच्छमे थलाइं गाहेहिति, गाहित्ता सियायवत्तएहिं मच्छ-कच्छएहिं एक्कवीसं वाससहस्साइं चित्ति कप्पेमाणा विहरिस्संति ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! ते काळे भारतवर्षमां मनुष्यो नो केवो आकारभावप्रत्यवतार थरो ? [उ०] हे गौतम ! खरावरूपवाळा, खराववर्णवाळा, दुग्ंधवाळा, दुदुरसवाळा, खराववर्षवाळा, अनिए, अमनोइ, मनने न गमे तेवा, हीनखरवाळा, दीनखरवाळा, अनिएखरवाळा, यावत् मनने न गमे तेवा खरवाळा, जेना वचन अने जन्म अग्राह्य छे एवा, निर्लेज, कूड कपट कलह वध वंध अने वैरमां आसक्त, मर्यादातुं उल्लंघन करवामा मुख्य, अकार्य करवामां निल तत्पर, मातपितादिनो अवश्य करवा योग्य विनयरहित, वेडोळ रूपवाळा, जेना नख, केग, दाढी, मूळ अने रोम वधेला छे एवा, काळा, अत्यत कठोर, श्यामवर्णवाळा, छूटा केशवाळा, थोळा केशवाळा, वहु स्नायुधी वाधेल होवाने लीधे दुर्दर्शनीय रूपवाळा, जेओना प्रलेक अग वाक्का अने वलीतरंगी-करचलीओथी व्याप्त छे एवा, जरा-परिणत ( वृद्धावस्थायुक्त ) वृद्धपुरुष जेवा, छूटा अने सडीं गयेला दांतनी श्रेणिवाळा, घटना जेवा भयंकर मुखवाळा [ भयंकर छे घाटा ( डोकनी पाळळनो भाग ), अने मुख जेओना एवा ] विपमनेत्रवाळा, वाक्की नासिकावाळा, वाक्का अने वलिओथी विकृत थयेला, भयंकर मुखवाळा, खस अने खरजथी व्याप्त, कठण अने तीक्ष्ण नखो वडे खजवाळावथी विकृत थयेला, दट्ट ( दराज ) किडिम ( एक जातनो कोट ) अने सिम्म ( कुप विशेष, करोळीआ ) वाळा, फाटींगयेल अने कठोर चामडीवाळा, विचित्रअंगवाळा, उट्टादिना जेवी गतिवाळा, [ खराव आकृतिवाळा ], साधाना विपम वंधनवाळा, योग्यस्थाने नहि गोठवायेला छूटा देखाता हाडकावाळा, दुर्वल, खरावसंधयणवाळा, खरावप्रमाणवाळा, खरावसंस्थानवाळा, खरावरूपवाळा, खराव स्थान अने आसनवाळा, खरावशय्यावाळा, खरावभोजनवाळा, जेओना प्रलेक अंग अनेक व्याधिओथी पीडित छे एवा, स्वलनायुक्त विहलगतिवाळा, उत्साहरहित, सत्वरहित, विकृतचेष्टावाळा, तेजरहित, वारवार शीत, उष्ण तीक्ष्ण अने कठोर पवनवडे व्याप्त, जेओना अंग धूळवडे मलिन अने रजवडे व्याप्त छे एवा, वहु क्रोध, मान अने मायावाळा, वहु लोभवाळा, अशुभ दुःखना भागी, प्राय. धर्मसज्ञा अने सम्यक्त्वथी भ्रष्ट, उल्कष्ट एक हाथ प्रमाण शरीरवाळा, सोळ अने वींग वरसना परम आयुषवाळा, पुत्र पौत्रादि परिचारमा अलंत स्नेहवाळा [ घणा पुत्रपौत्रादिंतुं पालनकरनारा ], वीजना जेवा, वीजमात्र एवा [ मनुष्योना ] वहोतेर कुटुंबो गंगा, सिंधु महानदीओ अने वैताल्य पर्वतनो आश्रय करीने विलमा रहेनारा थरो.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते मनुष्यो केवा प्रकारनो आहार करशे ? [उ०] हे गौतम ! ते काळे अने ते समये रथना मार्गप्रमाण विस्तारवाळी गंगा अने सिंधु ए महानदीओ रथनी धरीने पेसवाना छिद्र जेटला भागमां पाणिने वहेशे, ते पाणि घणा माळळा अने काचवा वगेरेथी भरेछं हशे, पण तेमा घणुं पाणि नहि होय. ल्यारे ते मनुष्यो सूर्य उग्या पछी एक मुहूर्तनी अंदर अने सूर्य आयग्या पछी एक मुहूर्तना पोतपोताना विलोथी वाहेर नोकळशे अने माळळां अने काचवा वगेरेने जमीनमा डाटशे, टाढ अने तडका वडे वफाड गयेलां माळळा अने काचवा वगेरेथी एकवीश हजार वर्ष सुवी आजीविका करता तेओ ( मनुष्यो ) ल्या रहेशे.



८. [प्र०] सचित्ता भंते ! भोगा, अचित्ता भोगा ? [उ०] गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ।  
 ९. [प्र०] जीवा णं भंते ! भोगा ?—पुच्छा [उ०] गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ।  
 १०. [प्र०] जीवाणं भंते ! भोगा, अजीवाणं भोगा ? [उ०] गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाणं भोगा ।  
 ११. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! भोगा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिचिहा भोगा पन्नत्ता, तं जहा—गंधा, रसा, फासा ।  
 १२. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! कामभोगा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पन्नत्ता, तं जहा—सहा,  
 रूवा, गंधा, रसा, फासा ।

१३. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं कामी, भोगी ? [उ०] गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जीवा कामी वि. भोगी वि ? [उ०] गोयमा ! सोइंदिय-चरिण्णदियाइं पडुच्च कामी, चरिण्णदिय-जिह्मिदिय-फारिण्णदियाइं पडुच्च भोगी, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव भोगी वि ।

१४. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं कामी, भोगी ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव थणियकुमार ।

१५. [प्र०] पुढ्विकाइयाणं पुच्छा [उ०] गोयमा ! पुढ्विकाइया नो कामी, भोगी । [प्र०] से केणट्टेणं जाव भोगी ? [उ०] गोयमा ! फारिण्णदियं पडुच्च, से तेणट्टेणं जाव भोगी; एवं जाव वणस्सइकाइया; वेइंदिया एवं चेव, नवरं जिह्मिदिय-फारिण्णदियाइं पडुच्च भोगी, तेइंदिया वि एवं चेव, नवरं चरिण्णदिय-जिह्मिदिय-फारिण्णदियाइं पडुच्च भोगी ।

१६. [प्र०] चउरिण्णियाणं पुच्छा [उ०] गोयमा ! चउरिण्णिया कामी वि, भोगी वि । [प्र०] से केणट्टेणं जाव भोगी वि ? [उ०] गोयमा ! चरिण्णदियं पडुच्च कामी, चरिण्णदिय-जिह्मिदिय-फारिण्णदियाइं पडुच्च भोगी, से तेणट्टेणं जाव भोगी वि । अचसेसा जहा जीवा, जाव वेमाणिया ।

८. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो सचित्त छे के अचित्त छे ? [प्र०] हे गौतम ! भोगो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवस्वरूप छे के अजीवस्वरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवस्वरूप पण छे अने अजीवस्वरूप पण छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवोने होय के अजीवोने होय ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवोने होय छे, पण अजीवोने भोगो होता नथी.

११. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो त्रण प्रकारना कइया छे; ते आप्रमाणे—गंध, रस अने स्पर्श.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! काम-भोग केटला प्रकारे कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! काम अने भोग [वन्ने मळी] पाच प्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे—शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो कामी के भोगी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो कामी पण छे, अने भोगी पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे ? [उ०] हे गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय अने चक्षुने आश्रयी जीवो कामी कहेवाय छे, तेम घ्राणेन्द्रिय, जिहेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए जीवो भोगी कहेवाय छे; ते हेतुथी हे गौतम ! जीवो यावत् भोगी पण छे.

१४. हे भगवन् ! शुं नारको कामी छे के भोगी छे ? [उ०] पूर्वे कइया प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे यावत् स्तमितकुमारोने जाणवुं.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पृथिवीकायिको कामी नथी, पण भोगी छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के पृथिवीकायिको भोगी छे ? हे गौतम ! स्पर्शनेन्द्रियने आश्रयी; ते हेतुथी तेओ यावत् भोगी छे. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिको जाणवा, वेइन्द्रिय जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, परन्तु तेओ जिहा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए भोगी छे. तेइन्द्रिय जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, पण घ्राण, जिहा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए तेओ भोगी छे.

१६. [प्र०] चउरिण्णिय जीवोको प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चउरिण्णिय जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत् भोगी पण छे ? [उ०] ते चउरिण्णिय जीवो चक्षुनी अपेक्षाए कामी; घ्राण, जिहा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए भोगी छे, ते हेतुथी यावत् भोगी समजवा. वाकीना यावत् वैमानिक सुधीना जीवो जेम सामान्य जीवो कइया तेम जाणवा.

१७. [प्र०] एषसि णं भंते ! जीवाणं कामभोगीणं, नोकामीणं नोभोगीणं, भोगीणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसा-  
हिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्यत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा ।

१८. [प्र०] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उवज्जित्तए, से णूणं भंते ! से खीण-  
भोगी नो पभू उट्टाणेणं, कम्मणेणं, वलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार—परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरित्तए ? से णूणं  
भंते ! एयमट्टं एवं वयह ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्टे समट्टे, पभू णं भंते ! से उट्टाणेण वि, कम्मणेण वि, वलेण वि, वीरिएण  
वि, पुरिसक्कार—परक्कमेण वि अन्नयराइं विपुलाइं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे,  
महापज्जवसाणे भवइ ।

१९. [प्र०] आहोहिए णं भंते ! मैणूसे जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु ? [उ०] एवं चेव, जहा छउमत्थे जाव महाप-  
ज्जवसाणे भवति ।

२०. [प्र०] परमाहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्जित्तए, जाव अंतं करेत्तए, से णूणं भंते !  
से खीणभोगी—? [उ०] सेसं जहा छउमत्थस्स ।

२१. [प्र०] केवली णं भंते ! मैणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं ? [उ०] एवं जहा परमाहोहिए, जाव महापज्जवसाणे भवइ ।

२२. [प्र०] जे इमे भंते ! असन्निणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइआ जाव वणस्सइकाइआ, छट्टा य एगतिया तसा; एए  
णं अंधा, मूढा, तमं पचिट्ठा, तमपडल-मोहजालपडिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदन्तीति वत्तं सिया ? [उ०] हंता, गोयमा !  
जे इमे असन्निणो पाणा, जाव पुढविकाइआ जाव वणस्सइकाइआ छट्टा य जाव वेदणं वेदंतीति वत्तं सिया ।

१७. [प्र०] हे भगवन् ! कामभोगी, नोकामी नोभोगी अने भोगी जीवोमां कया जीवो कया जीवोयी यावत् विशेषाधिक छे ?  
[उ०] हे गौतम ! कामभोगी जीवो सौथी थोडा छे, नोकामी नोभोगी जीवो अनन्तगुण छे, अने भोगी जीवो अनन्तगुण छे.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! छन्नस्य मनुष्य जे कोइ पण देवलोकमा देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते क्षीणभोगी—दुर्बलशरीरवाळो  
उत्थान वडे, कर्म वडे, वल वडे, वीर्य वडे अने पुरुषकार—पराक्रम वडे विपुल एवा भोग्य भोगोने भोगववा समर्थ छे ? हे भगवन् ! खरेखर  
आ अर्थने आ प्रमाणे कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ते उत्थान वडे पण, कर्म वडे पण, वलवडे पण, वीर्य वडे पण  
अने पुरुषकार—पराक्रम वडे पण कोइ पण विपुल एवा भोग्य भोगोने भोगववा समर्थ छे, ते माटे ते भोगी भोगोने ल्याग करतो महानिर्ज-  
रावाळो अने महापर्यवसान—महाफलवाळो थाय छे.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! अधोऽवधिक—नियतक्षेत्रना अवधिज्ञानवाळो—मनुष्य जे कोइ पण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य  
छे ते क्षीणभोगी पुरुषकार—पराक्रमवडे विपुल भोगोने भोगववा समर्थ छे ? [उ०] ए प्रमाणे छन्नस्थनी पेटे यावत् ते महापर्यवसान—  
महाफलवाळो थाय छे.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! परमावधिज्ञानी मनुष्य जे तेज भवमा सिद्ध थवाने यावत् [ सर्व दुःखोनी ] अन्त करवाने योग्य छे, हे  
भगवन् ! खरेखर ते क्षीणभोगी विपुल भोगोने भोगववा समर्थ छे ? [उ०] वाकीनुं सर्व छन्नस्थनी पेटे जाणवुं.

२१. [प्र०] केवलज्ञानी मनुष्य जे तेज भवमां सिद्ध थवाने यावत् [ दुःखोनी ] अन्त करवाने योग्य छे ते—[ विपुल भोगोने  
भोगववा समर्थ छे ? ] [उ०] परमावधिज्ञानी पेटे जाणवुं, यावत् ते महापर्यवसान—महाफलवाळो थाय छे.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जे आ \*असंज्ञी—मनरहित प्राणीओ छे, जेमके, पृथिवीकायिको यावत् वनस्पतिकायिको अने छट्टा केट्टा  
एक ( संमूर्छिम ) त्रसजीवो, जेओ अंध—अज्ञानी, मूढ, अज्ञानान्वकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजाल वडे टकायेला छे  
तेओ अक्रामनिकरण—अनिच्छापूर्वक—वेदना वेदे छे एम कहेवाय ? [उ०] हा, गौतम ! जे आ असंज्ञी प्राणीओ पृथिवीकायिको यावत्  
वनस्पतिकायिको अने छट्टा [ संमूर्छिम त्रसो ] अनिच्छापूर्वक वेदना वेदे छे एम कहेवाय.

१ इण्टे घ । २ मणुस्से घ । ३ मणुस्से घ । ४—च्छिन्ना रत्न ।

२२. \* 'जे असंज्ञी—मनरहित प्राणीओ छे, तेओने मन नहि होवाथी इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्तिने अभावे अक्रामनिकरण—अनिच्छापूर्वक अज्ञानपणे  
वेदना—खुरादु तनो अनुभव करे ?' भावो प्रश्ननो भावार्थ छे, तेना उत्तरमां 'हा' अनुभव करे एम कयु छे.

२३. [प्र०] अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! अत्थि ।

२४. [प्र०] क्हं णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदंति ? [उ०] गोयमा ! जे णं णो पभू विणा पद्विणं अंध-कारंसि रूवाइं पासित्तप, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्जाइत्ता णं पासित्तप, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयत्थिन्ता णं पासित्तप, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणवलोइत्ता णं पासित्तप, जे णं नो पभू उटं रूवाइं अणालोपत्ता णं पासित्तप, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोइत्ता णं पासित्तप, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदंति ।

२५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदंति ? [उ०] हन्ता, अत्थि ।

२६. [प्र०] क्हं णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदंति ? [उ०] गोयमा ! जे णं नो पभू समुहस्स पारं गमित्तप, जे णं नो पभू समुहस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तप, जे णं नो पभू देवलोणं गमित्तप, जे णं नो पभू देवलोणगयाइं रूवाइं पासित्तप, एस णं गोयमा ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदंति । सेयं भंते ! सेयं भंते ! त्ति ॥

### सत्तमस्स सयस्स सत्तमो उद्देशो समनो ।

२३. [प्र०] हे भगवन् ! तु एम छे के समर्थ छता (सही छतां) पण जीव अनिच्छापूर्वक वेदनाने वेदे ? [उ०] हे गौतम ! हा एम छे.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! समर्थ छता पण जीव अनिच्छापूर्वक वेदनाने केम वेदे ? [उ०] हे गौतम ! जे समर्थ छता अंधकारमा प्रदीप शिवाय रूपो (पदार्थो) जोवाने समर्थ नथी, जे अवलोकन कार्या शिवाय आगळ रहेला रूपो जोवाने समर्थ नथी, जे अवेक्षण कार्या विना पाळळ रहेला रूपो जोवा समर्थ नथी, जे आलोचन कार्या शिवाय उपरना रूपो जोवाने समर्थ नथी, जे आलोचन कार्या शिवाय नीचेना रूपो जोवाने समर्थ नथी; हे गौतम ! ते आ समर्थ छता पण अनिच्छापूर्वक वेदनाने वेदे छे.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! एम छे के समर्थ पण प्रकामनिकरण-तीव्रिच्छापूर्वक-वेदनाने वेदे ? [उ०] हे गौतम ! हा वेदे.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! समर्थ छता पण तीव्रिच्छापूर्वक वेदनाने केम वेदे ? [उ०] हे गौतम ! जे समुद्रने पार पारना समर्थ नथी, जे समुद्रने पार रहेला रूपो जोवा समर्थ नथी, जे देवलोकमां जवा समर्थ नथी, अने जे देवलोकमा रहेला रूपोने जोवा समर्थ नथी; हे गौतम ! ते समर्थ छता पण तीव्रिच्छापूर्वक वेदनाने वेदे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, [ एम कटी गौतम यावद् विचरे छे. ]

### सातमां शतकमां सातमो उद्देशक समाप्त.

१ वेदति स । २ दीवेण घ । ३-ज्जापत्ता स । ४ अणुलो-घ, अणालोइत्ता स । ५-एयत्ता स । ६ अणालोपत्ता स ।

२३-२४. \* जे सजी-मनसहित-समर्थ छे, तेओ पण अनिच्छापूर्वक अज्ञानपणे सुखदु खनो अनुभव करे ? हा तेओ पण करे ? हे भगवन् ! जेओ समर्थ-इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्तियुक्त-छता तेओ अनिच्छापूर्वक अज्ञानपणे शी रीते सुखदु खनो अनुभव करे ? तेना उत्तरमा कणुं छे के जे समर्थ (जोवानी शक्तिवाळो) छता अन्वयारना रहेला पदार्थोने प्रथीप शिवाय जोइ शकतो नथी, तेम पाळळ, उचे, नीचे रहेला पदार्थोने उपयोग-त्याल-शिवाय जोइ शकतो नथी, ते समर्थ छता-इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्तियुक्त छता-अज्ञानदशामा सुखदु खनो अनुभव करे छे ज्यारे अमनी जीव सामर्थ्यने अभावे इच्छा अने ज्ञानशक्तिरहित होवारी अनिच्छा अने अज्ञानदशामा सुखदु ख वेदे छे, तेम सजी इच्छा अने ज्ञानशक्ति होवा छता ते शक्तिनी प्रवृत्तिने अभावे अनिच्छा अने अज्ञानदशामा सुख दु ख वेदे छे.

२५-२६. † सजी मनसहित होवा छता प्रकामनिकरण-तीव्र अभिलाषपूर्वक-सुख दु खने वेदे ? हा वेदे. हे भगवन् ! शी रीते वेदे ? तेना उत्तरमां कणुं छे के जे समुद्रनी पार जवाने समर्थ नथी, तेने पार रहेला रूपो जोवाने समर्थ नथी ते तीव्र अभिलाषपूर्वक सुख-दु खने वेदे छे अही ते इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्ति संपन्न छे, परन्तु तेने प्राप्त करवाउं सामर्थ्य नथी, मात्र तेनो तीव्र अभिलाष छे, तेथी ते सुखदु खने वेदे छे असजी जीवो इच्छा अने ज्ञानशक्तिने अभावे अनिच्छा अने अज्ञानपूर्वक सुख-दु ख वेदे छे. सजी जीवो इच्छा अने ज्ञानशक्तियुक्त होवा छता उपयोगने अभावे अनिच्छा अने अज्ञानपूर्वक सुख-दु ख वेदे छे. वळी सजी जीवो समर्थ तेम इच्छाशुक्त होवा छता प्राप्तिना सामर्थ्यने अभावे मात्र तीव्र अभिलाषथी सुख दु ख वेदे छे.

## अट्टमो उद्देशओ ।

१. [प्र०] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं—एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देशए तहा भाणियधं, जाव अलमत्थु ।

२. [प्र०] से णूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ? [उ०] हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य एवं जहा 'रायप्पसेणइज्जे' जाव खुड्डियं वा, महालियं वा से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव समे चेव जीवे ।

३. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिन्ने से सुहे ? [उ०] हंता, गोयमा ! नेरइयाणं पावे कम्मे जाव सुहे । एवं जाव वेमाणियाणं ।

४. [प्र०] कति णं भंते ! सन्नाओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! दस सन्नाओ पन्नत्ताओ, तं जहा—आहारसन्ना, भयसन्ना, मेहुणसन्ना, परिग्गहसन्ना, कोहसन्ना, माणसन्ना, मायासन्ना, लोभसन्ना, लोगसन्ना, ओहसन्ना । एवं जाव वेमाणियाणं ।

५. नेरइया दसविहं वेयणं पच्चर्पुंभवमाणा विहरंति, तं जहा—सीयं, उंसिणं, खुहं, पिवासं, कंडुं, परज्झं, जरं, दाहं, भयं, सोगं ।

## अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! छन्नस्य मनुष्य अनंत अने शाश्वत अतीत काले केवल संयम वडे \* [ यावत् सिद्ध ययो ? ] [उ०] ए प्रमाणे जेम प्रथम शतकना चोथा उद्देशकमा † कहुं छे तेम यावत् ‡ 'अलमस्तु' पाठ सुची कहेवु.

२. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर हस्ती अने कुंथुनो जीव समान छे ? [उ०] हा गौतम ! हस्ती अने कुंथुनो [ जीव समान छे. ] जेम 'रायपसेणीय' सूत्रमा कहुं छे ते प्रमाणे यावत् 'खुड्डियं वा महालियं वा' ए पाठ सुची जाणवुं.

३. [प्र०] हे भगवन् ! नारको वडे जे पाप कर्म करायेलुं छे, कराय छे अने कराशे ते सधलु दुःखरूप छे, अने जे निर्जीर्ण ( क्षीण ) थयु ते सुखरूप छे ? [उ०] हा, गौतम ! नारको वडे जे पाप कर्म करायुं [ ते दुःखरूप छे, अने जे निर्जीर्ण थयु ] ते यावत् सुखरूप छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

४. [प्र०] हे भगवन् ! सन्नाओ केटली कहेली छे ? [उ०] हे गौतम ! दस सन्नाओ कही छे. जेम, १ आहारसन्ना, २ भयसन्ना, ३ मैथुनसन्ना, ४ परिग्रहसन्ना, ५ क्रोधसन्ना, ६ मानसन्ना, ७ मायासन्ना, ८ लोभसन्ना, ९ लोकसन्ना, अने १० ओघसन्ना ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

५. [प्र०] नारको दस प्रकारनी वेदनानो अनुभव करता होय छे; ते आ प्रमाणे—१ शीत, २ उष्ण, ३ क्षुवा, ४ पिपासा-तरस, ५ कंडू-खरज, ६ परतन्त्रता, ७ ज्वर, ८ दाह, ९ भय, १० जोक.

१ -णुच्चभव ख । २ उसीणं ख ।

१. \* अवशिष्ट अश—केवल सवर वडे, केवल ब्रह्मचर्य वडे, केवल अष्ट प्रवचनमाताओना पालन वडे सिद्ध थयो, बोध पान्यो, यावत् सर्व दु खोनो अन्त कयो ? [उ०] हे गौतम ! ए सर्व योग्य नथी.

† जुओ—( पृ. १३७ प १३९-१६३ ) ‡ अवशिष्ट अश—[प्र०] उत्पन्न ज्ञानदर्शनने धारण करनारा अरिहंत, जिन, केवली पूर्ण छे एम कहेवाय ? [उ०] हा, गौतम ! उत्पन्न ज्ञान-दर्शनने धारण करनारा अरिहंत जिन केवली अलमस्तु-पूर्ण छे एम कहेवाय.

૬. [પ્ર૦] સે ણૂણં મંતે ! હૃત્થિસ્ત ય કુંથુસ્ત ય સમા ચેવ અપચ્ચક્કમાણફિરિયા કજ્જતિ ? [ ૩૦ ] હંતા, ગોયમા ! હૃત્થિસ્ત ય કુંથુસ્ત ય જાવ કજ્જતિ । [ પ્ર૦ ] સે કેણટ્ટેણં મંતે ! પવં યુચ્છર જાવ કજ્જર ? [ ૩૦ ] ગોયમા ! અવિરત્તિં પડુચ્ચ, સે તેણટ્ટેણં જાવ કજ્જર ।

૭. [પ્ર૦] આહાકમ્મં ણં મંતે ! મુંજમાણે ફિં ઘંઘટ, ફિં પફરેટ, ફિં ચિણાર, ફિં ઉવચિણાર ? [ ૩૦ ] પવં જહા પદમે સપ નવમે ઉદ્દેસપ તદ્દા માણિયઘં, જાવ સાસપ પંડિપ, પંડિયત્તં અસાસયં । સેવં મંતે !, સેવં મંતે ! સ્તિ ।

સત્તમસ્સ સયસ્સ અદ્દમો ઉદ્દેમો સમત્તો ।

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સરેસર હાથી અને કુંથુને અપ્રત્યાપ્યાન ક્રિયા નમાન હોય ? [ ૩૦ ] હા, ગૌતમ ! હાથી અને કુંથુને યાવત્ અપ્રત્યાપ્યાન ક્રિયા સમાન હોય છે. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ હેતુથી પમ વહો છો કે હાથી અને કુંથુને નમાન અપ્રત્યાપ્યાન ક્રિયા હોય ? [ ૩૦ ] હે ગૌતમ ! અવિરત્તિને આશ્રયી, તે હેતુથી યાવત્ હાથી અને કુંથુને સમાન અપ્રત્યાપ્યાન ક્રિયા હોય.

૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આધાકર્મ આહારને આનાર [ નાથુ ] શું વાવે, શું કરે, ઝેનો ચય કરે અને ઝેનો ઉપચય કરે ? [ ૩૦ ] જેન \*પ્રયમ શતકના નવમા ઉદ્દેશકમા વર્તું છે એ પ્રમાણે યાવત્ †પંડિત શાશ્વત છે, પણ પંડિતપણું અશાશ્વત છે' ત્યાં સુધીં કરેલું. હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે, હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે [ એમ કરી ગૌતમ યાવત્ વિચરે છે ].

સાતમાં શતકમાં આટમો ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

૭ \* પૃ ૨૧૦. પ્ર ૩૦૩-૩૦૬. † અવશિષ્ટ અર્થ—હે ગૌતમ ! આધારને આહારને આનાર [ નાથુ ] આયુષ્યને શિવાય સાતકર્મની પ્રકૃતિથી શિથિલર્જવથી વેવાવેલી હોય તો તેનો ગાઢ વચ્ચ કરે છે, યાવત્ સસારમા ભ્રમણ કરે છે.

‡ અવશિષ્ટ અર્થ—હે ભગવન્ ! અસ્થિર વલ્લુ પરાવર્તન પામે, સ્થિર વલ્લુ પરાવર્તન ન પામે ? અસ્થિર વલ્લુ માગે, સ્થિર ન માગે ? ચાલક શાશ્વત છે, ચાલકપણું અશાશ્વત છે ? પંડિત શાશ્વત છે, પંડિતપણું અશાશ્વત છે ? [ ૩૦ ] હે ગૌતમ ! અસ્થિર વલ્લુ પરાવર્તન પામે, યાવત્ પંડિતપણું અશાશ્વત છે.

## नवमो उद्देशओ ।

१. [प्र०] असंबुडे णं भंते ! अणगारे वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं विउच्चित्तए ? [ उ० ] णो तिणट्टे समट्टे ।

२. [प्र०] असंबुडे णं भंते ! अणगारे वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं जाव-[ उ० ] हंता, पभू ।

३. [प्र०] से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति, अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुच्चइ ? [ उ० ] गौयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुच्चइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुच्चइ, नो अन्नत्थगए पोग्गले जाव विकुच्चति । एवं एगवन्नं अणेगरूवं चउभंगो जहा छट्टसए नवमे उद्देशए तहा इहा वि भाणियच्चं, नवरं अणगारे ईहगयं(ए)इहगए चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुच्चइ, सेसं तं चेव, जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलत्ताए परिणा-मेत्तए ? हन्ता, पभू । से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता, जाव नो अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुच्चइ ।

## नवमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! असंबृत-प्रमत्त साधु-बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय एकवर्णवालुं एक रूप विकुर्ववा समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी.

२. [प्र०] हे भगवन् ! असंबृत साधु बहारना पुद्गलोने ग्रहण करी एकवर्णवालुं एक रूप यावत् [ विकुर्ववा समर्थ छे ? ] [उ०] हा, समर्थ छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ते साधु शुं अही-मनुष्य लोकमा रहेला-पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे, ला रहेला पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे के अन्य स्थले रहेला पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे ? [उ०] हे गौतम ! अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी विकुर्वे, पण ला रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी न विकुर्वे, तेम अन्यत्र रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी यावत् न विकुर्वे. ए प्रमाणे एकवर्ण अने अनेकरूप-इत्यादि चतुर्भगी जेम \*छट्टा शतकना नवमां उद्देशकमा कही छे तेम अहीं पण कहेवी, परन्तु एटलो विशेष छे के अहीं रहेले साधु अही रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी विकुर्वे, वाकीनुं ते प्रमाणे यावत् 'रुक्खपुद्गलोने स्निग्धपुद्गलो पणे परिणमाववा समर्थ छे ? हा, समर्थ छे, हे भगवन् ! शुं अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी, यावत् अन्यत्र रहेला पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय विकुर्वे छे' ला सुधी जाणुं.

१ बाहिरिए ख । २ परियादित्ता क । ३ विगुच्चति क । ४ इहइं इह- क ।

३. \*उओ ( घ. ३३८ प्र. २-६ ).

४. [प्र०] णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विनायमेयं अरहया—महासिलकंटक संगामे । महासिलकंटक णं भंते । संगामे वट्टमाणे के जइत्था, के पराजइत्था ? [उ०] गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते जइत्था; नव मल्लई नव लेच्छई कासी-क्रोस-लगा अट्टारस वि गणरायाणो पराजइत्था । तप णं से कोणिए राया महासिलकंटक संगामं उवट्टियं जाणित्ता कोडुंविपुुरिसे संदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-जोह-कलियं चाउरंगिणि सेणं सन्नाहेह, सन्नाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह । तप णं ते कोडुंविपुुरिसा कोणिएणं रत्ता एवं बुत्ता समाणा हट्ट-तुट्ट- जाव थंजलि कट्टु 'एवं सामी, तहत्ति' आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवपसम-तिकप्पणा—विकप्पेहिं सुनिउणेहिं एवं जहा उवचाइए जाव भीमं संगामियं अउत्तं उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेति, हय-गय- जाव सन्नाहेति, संनाहित्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कर-यल- जाव कूणियस्स रत्तो तमाणत्तियं पच्चप्पि-णंति । तप णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं धणुप्पविसइ, मज्जणघरं धणुप्प-विसित्ता पट्टाप, कयवलिकम्म, कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते, सद्दालंकारविभूसिए, सन्नद्ध-यद्ध-वम्मियकवण, उप्पीलियसरास-णपट्टीए, पिणङ्गेवेज्ज—विमलवरवद्धचिधपट्टे, गहियाउहप्पहरणे, संकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउत्तामरवाल-वीतियंगे, मंगलजयसहकयालोए एवं जहा उवचाइए जाव उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं उरुत्ते । तप णं से कूणिए राया हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जहा उवचाइए जाव सेयवरचामराहिं उद्धुवमाणीहिं उद्धुवमाणीहिं हय-गय-रहपवरजोहकलियाए

४. [प्र०] अर्हते जाण्युं छे, अर्हते प्रलक्ष कर्तुं छे, अर्हते विशेषतः जाण्यु छे के महाशिलाकटक नामे मग्राम छे हे भगवन् ! महाशिलाकटक संग्राम थतो हतो ल्यारे कोण जीला अने कोण हार्या ? [उ०] हे गौतम ! वज्जी ( इन्द्र ) अने विदेहपुत्र ( कूणिक ) जीला, नव मल्लकी अने नव लेच्छकी जेओ कागी अने कोशलदेशना अटार गणराजाओ हता तेओ पराजय पाय्सा. ल्यार पछी—महाशिलाकटक संग्राम विजुव्या पछी—ते कूणिक राजा महाशिला कटक नामे संग्राम उपस्थित थएले जाणी पोताना कौटुम्बिक पुरुपोने बोलावे छे, बोलावने तेओने एम कह्युं के हे देवानुप्रियो ! शीघ्र उदायि नामना पइहस्तीने तैयार करो, अने घोडा, हाथी, रथ अने योधाओथी युक्त चतुरंग सेनाने तैयार करो, तैयार करी मारी आज्ञा जल्दी पाछी आपो ल्यार वाद ते कूणिकना एम कहेवाथी ते कौटुम्बिक पुरुपो हट्ट तुष्ट थइ यावत् अजली करीने हे स्वामिन् ! ए प्रमाणे 'जेवी आज्ञा' एम कहीने आज्ञा अने विनय वडे वचननो स्वीकार करे छे. वचननो स्वीकार करीने कुशल आचार्योना उपदेश वडे तीक्ष्ण मतिकल्पनाना विक्लपोथी ओपपातिकसूत्रमा कहा प्रमाणे यावत् भयंकर अने जेनी साथे कोड युद्ध न करी शके एवा उदायि नामना मुख्य हस्तीने तैयार करे छे; घोडा हाथी इत्यादियी युक्त यावत् [ चतुरंग सेनाने तैयार करे छे. ] ते सेनाने सज्ज करीने ज्या कूणिकराजा छे त्या तेओ आवे छे, आवीने करतल [ जोडीने ] कूणिक राजाने ते आज्ञा पाछी आपे छे. ल्यार वाद ते कूणिक राजा ज्या खानगृह छे त्या आवे छे, अने त्या आवीने खानगृहमा प्रवेश करे छे, त्या प्रवेश करी न्हाइ वलिकर्म ( पूजा ) करी प्रायश्चित्तरूप ( विघ्नो नो नाग करनार ) कौतुक ( मपीतिलकादि ) अने मंगलो करी सर्वालंकारथी विभूषित थइ, सन्नद्ध वद्ध थइ वस्तरने वारण करी धनुर्दंडने ग्रहण करी, लोकमा आभूषण पहेरी, उत्तमोत्तम चिह्नपट्ट वाधी, आयुध अने प्रहरणोने धारण करी, माथे धारण कराता कोरटक पुष्पनी मालावाला छत्र सहित, जेनु अंग चार चामरोना वाल वडे वीजायलुं छे, जेना दर्शनथी मंगल अने जयशब्द थाय छे एवो ( कूणिक ) ओपपातिकसूत्रमा कहा प्रमाणे यावत् आवीने उदायिनामे प्रधानहस्ती उपर चढ्यो. ल्यार वाद हारवडे तेनुं वक्ष.स्यल टकायेलुं होवाथी रति उत्पन्न करतो ओपपातिकसूत्रमा कहा प्रमाणे वारंवार वीजाता श्वेत चामरो वडे यावत् घोडा, हाथी, रथ अने उत्तम योद्धाओथी युक्त चतुरंग सेनानी साथे परिवारयुक्त, महान् सुभटोना विस्तीर्ण समूहथी व्याप्त कूणिकराजा ज्या महाशिलाकटक

१ जवित्था स्ख । २ सदावेइं स्ख । ३ तेणेव उवागच्छित्ता घ । ४ गच्छइ घ । ५ तेणेव उवा- घ । ६ अणुपवि-घ । ७ सकोरट-क ।

४. \* महाशिलाकटक संग्रामनो स्वन्ध आ प्रमाणे छे—चम्पानगरीमा कूणिक नामे राजा हतो, तेने हट्ट अने विहल्ल नामे वे नाना भाइओ हता, ते वने हनेशा सेचनक गन्धहस्त्रि उपर वेसी विलास करता, ते जोइने कूणिकराजनी पत्नी पद्मावतीए अटेचाइथी तेनी पासेथी ते हस्ती लइ लेवा माटे कूणिकने कर्तुं कूणिके तेओनी पाठे हस्तीनी मागणी करी ते वने भाइओ कूणिकना भयथी नासीने हस्ती अने परिवारसहित वैशाली नगरीमा पोताना मामा चेटक राजानी पाठे गया कूणिके दूत मोकली ते वने भाइओने सोंपी देवानी मागणी करी, परन्तु चेटकराजाए सोंपवानी ना कही कूणिके वहेराय्युं के जो तुं ते वने भाइओने न मोकल तो युद्ध करवा तैयार था चेटकराजाए उत्तर आय्यो हुं तैयार छुं तेथी कूणिके पोताना कालादि दश भाइओने चेटकराजानी साथे युद्ध करवा बोलाव्या. आ वात जाणीने चेटकराजाए पण अटार गणराजाओने एकठा कर्यां. युद्ध शर थयुं चेटकराजाने एवुं तत ( नियम ) हतु ते दिवसमा एकवार एक वाण फेंकता, परन्तु तेनुं वाण कही निष्फल जनु नहोतु कूणिकना सैन्यनो दटनायक काल नामे तेनो भाइ हतो, ते युद्ध करता चेटकराजानी पाठे गयो. चेटके तेने एक वाण वडे पाळ्यो, कूणिकनु सैन्य नाहु, वने सैन्यो पोताने स्थाने गया दश दिवसमा चेटकराजाए कूणिकना कालादि दश भाइओनो नाश न्यो. अगिआरमे दिवसे कूणिके चेटकने जितवा माटे देवुं आराधन करवा अष्टम ( ऋण उपवास ) तप कर्तुं तेथी शक अने चमरेन्द्र आख्या शकै कर्तुं के चेटक परमश्रानक छे तेथी तेने हु मारीदा नहि, पण तारं रक्षण करीश तेथी ते गक्रे कूणिकनु रक्षण करवा साह वज्रना जेनुं अमेय कवच कर्तुं अने चम रेन्द्रे वे चम्पम पिचुव्यां—महाशिलानटक अने रयमुशल संग्राम जुओ—( म. टी. प. ३१६. )

† जुओ ( औप. प. ६२-१ ) ‡ जुओ ( औप. प. ६६-२. ) § जुओ ( औप. प. ७२-१ )

चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिबुडे, महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
गच्छित्ता महासिलाकंटयं संगामं ओयाए । पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता  
णं चिट्ठइ । एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य । एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिण राया पैरा  
जिणित्तए । तए णं से कूणिण राया महासिलाकंटकं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्टारस वि  
गणरायाणो ह्यमहियपवरवीरघाइय-वियडियच्चिधच्चयपडागे किच्छपाणगए दिसो दिसिं पडिसेहित्था ।

५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुचइ महासिलाकंटए संगामे ? [उ०] गोयमा ! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे  
जे तत्थ आसे वा, हत्थी वा, जोहे वा, सारही वा तणेण वा, पत्तेण वा, कट्टेण वा, सक्कराए वा, अभिहम्मति सधे से  
जाणेइ महासिलाए अहं अभिहए, से तेणट्टेणं गोयमा ! महासिलाकंटए संगामे ।

६. [प्र०] महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ? [उ०] गोयमा ! चउरासीइं  
जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।

७. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला, जाव निप्पच्चव्खाणपोसहो-ववासा, रुट्टा, परिकुविया, समरवहिया, अणुंव-  
संता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया, कहिं उववन्ना ? [उ०] गोयमा ! ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिणएसु उववन्ना ।

८. [प्र०] णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विन्नायमेयं अरहया—रहमुसले संगामे । रहमुसले णं भंते ! संगामे  
वट्टमाणे के जइत्था, के पराजइत्था ? [उ०] गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नवमल्लई, नव  
लेच्छई पराजयित्था । तए णं से कूणिण राया रहमुसलं संगामं उवव्वियं, सेसं जहा महासिलाकंटए, नवरं भूयाणंदे हत्थिराया  
जाव रहमुसलं संगामं ओयाए । पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया, एवं तहेव जाव चिट्ठति; मग्गओ य से चमरे असुरे  
असुरिंदे असुरकुमारराया एगं महं आयासं किट्ठिणपडिरूपणं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ । एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेति, तं  
जहा—देविंदे य, मणुइंदे य, असुरिंदे य । एग हत्थिणा वि णं पभू कूणिण राया जइत्तए, तहेव जाव दिसोदिसिं पडिसेहित्था ।

सग्राम छे ल्या आवे छे, ल्या आवीने ते महाशिलाकंटक संग्राममा उतर्यो, तेनी आगळ देवनो इन्द्र देवनो राजा शक्र एक मोटुं वज्रना सरलु अमेघ  
कवच ( वल्तर ) विकुर्वीने उभो छे. ए प्रमाणे वे इन्द्रो सग्राम करे छे, जेमके एक देवेन्द्र अने वीजो मनुजेन्द्र. हवे ते कूणिक राजा  
एक हाथी वडे पण शत्रुपक्षनो पराजय करवा समर्थ छे. ल्यार बाद ते कूणिके महाशिलाकंटक संग्रामने करता नवमल्लकि अने नव-  
लेच्छकि जेओ काशी अने कोसलाना अट्टार गणराजाओ हता, तेओना महान् योद्धाओने हण्पा, घायल कर्या अने मारी नाह्या, तेओनी  
चेहयुक्त ध्वजा अने पताकाओ पाडी नाखी, अने जेओना प्राण मुक्केलीमा छे एवा तेओने [ युद्धमाथी ] चारे दिशाए नसाडी मुक्या.

५. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी एम कहेवाय छे के ते महाशिलाकंटक संग्राम छे ? [ उ० ] हे गौतम ! ज्यारे महाशिलाकंटक  
सग्राम थतो हतो ल्यारे ते सग्राममा जे घोडा, हाथी, घोधा अने सारथिओ तृण, काष्ठ, पादडा के काकरा वती हणाय ल्यारे तेओ सघळा  
एम जाणे के हुं महाशिलाथी हणायो, ते हेतुथी हे गौतम ! ते महाशिलाकंटक संग्राम कहेवाय छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो ल्यारे तेमां केटल लाख माणसो हणायो ? [ उ० ] हे गौतम !  
चौराशी लाख माणसो हणायो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! नि.शील, यावत् प्रलाख्यान अने पोपधोपवासरहित, रोपे भरायेला, गुस्से थयेला, युद्धमा घायल थयेला,  
अनुपशात एवा ते मनुष्यो कालसमये मरण पामीने क्या गया, क्या उत्पन्न थया ? [ उ० ] हे गौतम ! घणे भागे तेओ नारक अने तिर्यंचयो-  
निमा उत्पन्न थया छे.

८ [प्र०] अर्हते जाण्युं छे, अर्हते प्रलक्ष कर्युं छे, अर्हते विशेष प्रकारे जाण्युं छे के रथमुगल नामे संग्राम छे. हे भगवन् !  
ज्यारे रथमुगल नामे संग्राम थतो हतो ल्यारे कोनो विजय थयो, अने कोनो पराजय थयो ? [ उ० ] हे गौतम ! वज्जी ( इन्द्र ), विदेहपुत्र  
( कूणिक ) अने असुरेन्द्र असुर कुमारराजा चमर एओ जील्या; नव मल्लकि अने नव लेच्छकि राजाओ पराजय पाय्मा. ल्यार बाद ते  
कूणिकराजा रथमुगल संग्राम उपस्थित थयेलो जाणी [ पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावे छे ]. वाकीउं [ सर्व वृत्तान्त ] \*महाशिलाकंटक  
संग्रामनी पेटे जाणवु. परन्तु विशेष ए छे के अर्हा भूतानद नामे प्रधान हस्ती छे; यावत् ते [ कूणिक ] रथमुगलसंग्राममा उतर्यो.  
तेनी आगळ देवेन्द्र देवराज शक्र छे. ए प्रमाणे पूर्वनी पेटे यावत् रहे छे पाळल असुरेन्द्र असुरकुमारनो राजा चमर एक मोटुं लोढाउं  
†किठीनना जेवुं कवच विकुर्वीने रहेलो छे. ए प्रमाणे खरेखर त्रण इन्द्रो युद्ध करे छे. जेमके—देवेन्द्र, मनुजेन्द्र अने असुरेन्द्र. हवे ते  
कूणिक एक हाथीवडे पण शत्रुओनो पराजय करवा समर्थ छे. यावत् तेणे पूर्वे कख्या प्रमाणे [ शत्रुओने ] चारे दिशाए नसाडी मुक्या

१ तेणेव उवा- घ । २ चिहति घ । ३ पराजइत्तए क । ४ -मूसले र । ५ - घ । मूसल ६ भूयाणंदे र । ७ जयत्तए ख ।

\* जुओ ( स. ४ ). ८. † किठिन-वासनु वनावेळ तापसउं पात्र.-टीका.



९. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धश्च रहमुसले संगामे ? [उ०] गोयमा ! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे एगे खे अणासप, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणन्गयं, जहवहं, जणप्पमहं, जणसंवट्टकप्पं रहिरकहमं करमाणे सत्तओ समंता परिधावित्था, से तेणट्टेणं जाव रहमुसले संगामे ।

१०. [प्र०] रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ? [उ०] गोयमा ! ट्णणडति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।

११. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला जाव उचवत्ता ? [उ०] गोयमा ! तत्थ णं वससाहस्सीओ एगाए मच्छीए कुच्चिसि उचवत्ताओ, एगे देवलोगेसु उचवत्ते, एगे सुकुले पचायाए; अचसेसा ओसअं नरग-तिरिफगजोणिपसु उचवत्ता ।

१२. [प्र०] कम्हा णं भंते ! सजे देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारगया कूणियरओ साहेजं दलयिन्था ? [उ०] गोयमा ! सजे देविंदे देवराया पुधसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारगया परिव्यायसंगतिए; एवं गलु गोयमा ! सजे देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारगया कूणियस्त रओ साहेजं दलयिन्था ।

१३. [प्र०] वहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्त एवमोद्धकगति, जाव परुवेद-पवं गलु वट्टे मणुस्ता अन्नयरेसु उचावपमु संगामेसु अभिसुटा चैव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोगमु देवत्ताए उचवत्तागे भवंति, से कट्टमेयं भंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! जण्णं से वहुजणे अन्नमन्नस्त एवं आद्यन्नप्रति-जाव उचवत्तारो भवंति; जे ने एवमाहंनु मिच्छं ते एवमाहंनु । अहं पुण गोयमा ! एवं आद्यन्नमि, जाव परुवेमि-पवं गलु गोयमा ! तेषं कालेणं, तेषं समणं वेसाली नामं नगरी होत्था । वन्नओ, तत्थ णं वेसालीए णगरीए चरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ, अहे जाव अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे, जाव पडिल्लभेमाणे छट्टं छट्टेणं अणियित्तेणं तवोकम्मेषं अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तए णं से चरुणे णाणत्तुए अन्नया कयाए रायाभियोगेणं, गणाभियोगेणं, वलाभियोगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्टभत्तिए अट्टमभत्तं अणुवट्टेति, अणुवट्टिआ

रथमुशल सनाम  
शाधी कहेवाय छे ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणयी ते रथमुशल नंग्राम कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे रथमुशलसंग्राम थनो एतो खारे अश्वरहित, सारथिरहित, योधाओ रहित अने मुशलसहित एक रथ घणा जनसहारने, जनवधने, जनप्रमर्दने, जनप्रलयने, तेम ओहिना कीचडने करतो चारे तरफ चारे वाजुए दोडे छे; ते कारणयी यावत् ते रथमुशलसंग्राम कहेवाय छे.

मनुष्यो नो सहार-

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे रथमुशल संग्राम थनो हतो खारे केटटा लाख माणसो हणाया ? [उ०] हे गौतम ! छत्तुं खार माणसो हणाया.

नेओ मरीने क्यां  
उत्पन्न थया ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! शीलरहित ते मनुष्यो यावत् क्यां उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! तेमां दश हजार मनुष्यो एक नाट्टलीना उदरमां उत्पन्न थया, एक देवलोक्का उत्पन्न थयो, एक उत्तम कुलने विपे उत्पन्न थयो, अने वाकीना मनुष्यो घणे भागे नारक अने तिर्यच योनिमां उत्पन्न थया.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! देवना इन्द्र देवना राजा अके अने असुरना इन्द्र असुरकुमारना राजा चमरे कूणिक राजाने केम सहाय आपी ? [उ०] हे गौतम ! देवना इन्द्र देवना राजा अके कूणिकराजानो पूर्वसगतिक-पूर्वभवसवन्धी मित्र-हतो, अने असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरे कूणिक राजानो पर्यायसगतिक-तापसनी अवस्थामा मित्र-हतो, तेथी हे गौतम ! ए प्रमाणे देवना इन्द्र देवना राजा अके अने असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरे कूणिक राजाने सहायता आपी.

यु बुद्धमा हणायेला  
खमं जाय ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! घणा माणसो परत्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपणा करे छे के-अनेक प्रकारना सप्रामोमांना कोइ पण संग्राममा सामा (युद्ध करता) हणायेला घाबल थयेला घणा मनुष्यो मरणसमये काळ करीने कोइ पण देवलोकमा देवपणे उत्पन्न थाय छे, हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होय ? [उ०] हे गौतम ! ते बहु मनुष्यो परत्पर जे ए प्रमाणे कहे छे के-यावत् तेओ देवपणे उत्पन्न थाय छे; पण जेओए ए प्रमाणे कहुं छे तेओए ए प्रमाणे मिथ्या कहु छे. हे गौतम ! हुं तो आ प्रमाणे कहं छुं, यावत् प्ररूपणा करं छुं. हे गौतम ! ते आ प्रमाणे-ते काळे अने ते समये वैशाली नामे नगरी हती. वर्णन. ते वैशाली नगरीमा वरुणनामे नागनो पीत्र रहेतो हतो, ते धनवान्, यावत् जेनो पराभव न थइ अके एवो (समर्थ) हतो. ते श्रमणोनो उपासक, जीवाजीव तत्त्वेन जाणनार, यावत् [आहारादिवडे] प्रतिलाभतो-सत्कार करतो-निरन्तर छट्ट छट्टना तप करवा वडे आत्माने वासित करतो विचरे छे. खार वाद ज्यारे ते नागना पीत्र वरुणने राजाना अभियोगथी (आदेशथी), गणना अभियोगथी, वलना अभियोगथी रथमुशल संग्राममा जवा माटे आज्ञा थइ खारे पट्टभक्त करनार

रथमुशल मग्राममा  
जवानी तैवारी

१ छत्तुं क विनाऽन्यत्र । २ मच्छियाए क । ३ दलयिन्था ख । ४ -माहवपंति ख-थ । ५ परुवेमि घ । ६-मार्हिसु ख ।

१३. \* जुओ (गीता अ. २ श्लो. ३७).

कोडुंविद्यपुरिसे सद्वावेह, सद्वावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घं आसरहं जुत्तामेव उवट्टावेह, हय-गय-रहं जाव सन्नाहेत्ता मम एयं आणत्तिं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्जयं जाव उवट्टावेति, हय-गय-रहं जाव सन्नाहेति, सन्नाहित्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए, जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, जहा कूणिओ, जाव -पायच्छित्ते, सद्वालंकारविभूसिए, सन्नद्ध-चद्धे सकोरंटमहँदामेणं जाव धरिज्जमाणेणं; अणेगणनायकं जाव दूय-संधिपालसद्धिं संपरिखुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटे आसरहं दुँरुहइ, दुरुहित्ता हय-गय-रह- जाव संपरिखुडे, महयाभडचडगर- जाव परिक्खित्ते जेणेव रँहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रँहमुसलं संगामं ओयाओ । तए णं से वरुणे णागणत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ- कप्पति मे रँहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुद्धिं पहणइ से पडिहणित्तए, अवसेसे नो कप्पतीति, अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, अभिगेण्हित्ता रँहमुसलं संगामं संगामेति । तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रँहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए, सँरिसत्तए, सँरिसद्धए, सरिसमंडमत्तोवगरणे र्हेणं पडिरहं हवं आगए । तए णं से पुरिसे वरुणं णागनत्तुयं एवं वदासी-पहण भो वरुणा ! णागणत्तुया । तए णं से वरुणे णागणत्तुए तं पुरिसं एवं वदासी-नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया ! पुद्धिं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुद्धिं पहणाहि । तए णं से पुरिसे वरुणे णागणत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसइ, धणुं परामुसित्ता उंसुं परामुसइ, उंसुं परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठाणं टिच्चा आययकन्नाययं उंसुं करेइ, आययकन्नाययं उंसुं करित्ता वरुणं णागणत्तुयं गाढप्पहारीकरेइ । तए णं से वरुणे णागत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसइ, धणुं परामुसित्ता, उंसुं परामुसइ, उंसुं परामुसित्ता आययकन्नाययं उंसुं करेइ, आययकन्नाययं उंसुं करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवइ । तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे, अवले, अवीरिए, अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, तुरए निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, रहं परावत्तित्ता रहमुसलाओ संगामाओ पडिणिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगतमंतं अवक्कमइ, एगतमंतं अवक्क-

ते [ वरुण ] अष्टमभक्तने वधारे छे, अने अष्टमभक्तने वधारीने कौटुंबिक पुरुषोने वोलावे छे. वोलावीने तेणे ए प्रमाणे कहुं के हे देवानु-प्रियो ! चारघंटावाळा अश्वरथने सामग्रीसहित हाजर करो; अने घोडा, हाथी, रथ अने प्रवर-[ योद्धाओथी युक्त चतुरंग सेनाने तैयार करो ], यावत् तैयार करीने ए मारी आज्ञा पाछी आपो. ल्यार पछी ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् तेनो स्वीकार करीने छत्रसहित, ध्वजासहित [ रथने ] शीघ्र हाजर करे छे, घोडा, हाथी, रथ-[ अने प्रवर योद्धाओ सहित सेनाने ] यावत् तैयार करे छे; तैयार करी ज्यां नागनो पौत्र वरुण छे [ त्या आवी ] आज्ञा पाछी आपे छे. ल्यार पछी ते नागनो पौत्र वरुण ज्या स्नानगृह छे त्या आवे छे, आवीने कूणिकनी पेटे यावत् कौतुक ( मपीतिलकादि ) अने मगलरूप प्रायश्चित्त करीने सर्वालंकारथी विभूषित थयेलो कवचने पहरी बाधी, कोरंटनी माळायुक्त धारणकराता छत्र वडे सहित अनेक गणनायको यावत् दूत अने संधिपालनी साथे परिवरेलो स्नानगृहथी बहार नीकले छे. बहार नीकलीने, ज्या बहारनी उपस्थानशाला छे, ज्या चारघंटावाळो अश्वरथ छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने चारघंटावाळा अश्वरथ उपर चडे छे, चडीने घोडा, हाथी, रथ-[ अने प्रवर योधावाळी सेना ] साथे महान् सुभटोना समूह वडे यावत् विंटायेलो ज्यां रथमुशल संग्राम छे त्या आवे छे, अने त्या आवी ते रथमुशल संग्राममां उतर्यो. ज्यारे नागनो पौत्र वरुण रथमुशल संग्राममा उतर्यो ल्यारे ते आवा प्रकारना आ अभिग्रहने ग्रहण करे छे-‘रथमुशल संग्राममा युद्ध करता मने जे पहेला मारे तेने मारवो कल्पे, वीजाने मारवा कल्पे नहिं’. आवा प्रकारना आ अभिग्रहने धारण करी ते रथमुशल संग्राम करे छे. ल्यार वाद रथमुशल संग्राम करता नागना पौत्र वरुणना रथनी सामे तेना जेवो समानवयवाळो, समानत्वचावाळो अने समान अल्लशस्त्रादिउपकरणवाळो एक पुरुष रथमा वेसीने शीघ्र आव्यो. ल्यार वाद ते पुरुषे नागना पौत्र वरुणने एम कहुं के ‘हे नागना पौत्र वरुण ! तु मने प्रहार कर’ ल्यारे ते नागना पौत्र वरुणे ते पुरुषने एम कहुं के ‘हे देवानुप्रियो ! ज्या सुधी हुं प्रथम न हणाउं त्या सुधी मारे प्रहार करवो न कल्पे, माटे पहेला तुंज प्रहार कर’. ज्यारे ते नागना पौत्र वरुणे ते पुरुषने एम कहुं ल्यारे ते कुपित थयेलो क्रोधाग्निथी दीपतो धनुषने ग्रहण करे छे, धनुषने ग्रहण करी वाणने ग्रहण करे छे, वाणने ग्रहण करी अमुक स्थाने रहीने तेने कानपर्यंत लाउं खेचे छे; लाउं खेचीने ते नागना पौत्र वरुणने सख्त प्रहार करे छे. ल्यारवाद ते पुरुषथी सख्त धवायेल नागनो पौत्र वरुण कुपित थइ यावत् क्रोधाग्निथी दीपतो धनुषने ग्रहण करे छे, धनुषने ग्रहण करी वाणने ग्रहण करे छे, वाणने ग्रहण करी तेने कानपर्यंत लाउं खेचे छे, खेचीने ते पुरुषने एक घाए पत्यरना टुकडा थाय तेम जीवितथी जूदो करे छे. हवे ते पुरुषथी सख्त धवायेल ते नागनो पौत्र वरुण शक्तिरहित, निर्बल, वीर्यरहित, पुरुषार्थ अने पराक्रमरहित थयेलो पोते ‘टकी नहि थके’ एम समजी घोडाओने थोभावे छे, थोभावीने रथने पाछो फेरवे छे, रथने पाछो फेरवीने रथमुशल संग्रामथी बहार नीकले छे, बहार नीकली एकांत

मिच्छा तुरण निगिण्हट्ट, तुरण निगिण्हित्ता रहं उवेइ, रहं उवेत्ता, रट्ठाओ पंधोउरहट्ट, रट्ठाओ पंधोउरहिता तुरण मोएण, तुरण मोएत्ता तुरण विसज्जेइ, तुरण विसज्जित्ता दम्मसंधारणं संथरउ, संथरित्ता दम्मसंधारणं दुरहट्ट, दम्मसंधारणं दुरहिता, पुंस्त्यामिमुहे संपलियंफनिससे करयल-जाव कट्ट एवं वयासी- नमोअणु णं जरिउंताणं भगवताणं, जाव संपत्ताणं; नमोअणु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स, आइगरस्स, जाव संपाविउकामस्स, ममं धम्मायरियस्स, धम्मोउद्देशगस्स; वंदामि णं भगवणं तत्थगयं इहणए, पासउ मे से भगवं तत्थगण, जाव वंदति, नमंसति, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी-पुअं पि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिण थूलण पाणाउवाए पच्चग्गाए जावजीवाए, एवं जाव थूलण परिग्गहे पच्चग्गाए जावजीवाए इयाणि पि णं वंदं तस्सेव भगवओ महावीरस्स अंतिण सधं पाणातिवायं पच्चग्गामि जावजीवाए, एवं जग रंद्धओ, जाव एवं पि णं चरमोहं उसास-नीसावेदि वोस्तिरिस्सामि चि कट्ट सत्ताहपटं मुयइ, मुइत्ता सहउउरणं करेति, सहउउरणं करेत्ता आलोउयपडिउंते, समाहिपत्ते, आणुपुणीए कालगण । तए णं तस्स वरणस्स णागणत्तुयस्स णं पियवालययंसए रहमुसलं संगामं संगामेमाणे एणेणं पुरिसेणं गाहपपहारीकए समाणे अन्धामे अवणे जाव अधारणिज्जमिति कट्ट वरणं णागणत्तुयं रहमुसलायो संगामाओ पडिणिज्जममाणं पासइ, पासित्ता तुरण निगेण्हट्ट, तुरण निगेण्हित्ता जटा वरणे जाव तुरण विसज्जेति, पंडसंधारणं दुरहट्ट, पंडसंधारणं दुरहिता पुगन्ध्यामिमुहे जाव अंजलि कट्ट एवं वयासी- जांउं णं भंते ! मम पियंवालययंसस्स वरणस्स नागनत्तुयस्स सीलाउं, वयाइं, गुणाइं, वेरमणाइं, पच्चग्गाण-पोनतोववाणाइं, ताउं णं ममं पि भवंतु चि कट्ट सत्ताहपटं मुयइ, मुइत्ता सहउउरणं करेति, सहउउरणं करेत्ता आणुपुणीए कालगण । तए णं तं वरणं णागणत्तुयं कालगयं जायित्ता अहासत्तिहिपंदि वाणमंतरोहं देवेहिं दिधे मुरभिगंधो-इगवासे तुट्टे, इम्मउवणे कुमुने निपाटिण, दिधे य गीय-गंप्रणिनादे कए या चि होन्था । तए णं तस्स वरणस्स णागणत्तुयस्स तं दिधं देविहिं, दिधं देवज्जुतिं, दिधं देवाणुनागं सुणिता य पासित्ता य चहुज्जणो अन्नमन्नस्स एवं आइन्नाइ, जाव परूवेति-एवं रलु देवाणुणिया ! वद्धे मणुम्सा जाव उवप्रचारो भवंति ।

भागमां आवे छे, एकान्त भागमा आवी घोडाओने थोभावे छे, थोभावी रयने उभो गरो छे, उभो गर्गी रयणी उतरे छे, उतरीने रयणी घोडाओने छुटा करे छे, छुटा करी घोडाओने निमज्जित करे छे, निमज्जित करी टाभनो नयागे पायरे छे, टाभनो नयागे पायरी पूर्वदिशा सन्मुख ते टाभना सयारा उपर वेसे छे. पूर्वाभिमुख पर्यकासने टाभना नयाग उपर वेसी हाथ जोडी यावत् ते नागनां पौत्र वरण आ प्रमाणे बोन्धो-पूय अर्हतेने नमस्कार थाओ, यावत् जेओ [ सिद्धिगतिने ] प्राप्त थया छे. श्रमण भगवान् महावीरने नमस्कार थाओ, जे तीर्थनी आदि करनारा छे, यावत् [ सिद्धिने ] प्राप्त करवानां इच्छावाळ्य छे, जे मारा धर्माचार्य अने धर्मना उपदेयाक छे. त्या गहेत्ता भगवाने अर्ह रहेले हुं वाहु छु. त्यां रहेत्ता भगवान् मने जुओ. यावत् वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने ते [ वरण ] आ प्रमाणे बोन्धो-पहेलं मं श्रमण भगवान् महावीरनीं पासि जीवनपर्यंत रथूलप्राणातिपाततुं प्रत्याख्यान करुं हंतुं, ए प्रमाणे यावत् रथूल परिग्रहनु प्रत्याख्यान जीवनपर्यंत करुं हंतुं, अखारे अरिहंत भगवान् महावीरनीं पासि सर्व प्राणातिपाततुं प्रत्याख्यान यावजीव करुं हंतुं. ए प्रमाणे स्वच्छकनीं पेटे सर्व जाणवुं. आ जरीरनो पण छेत्ता खासोच्छासनीं साथे त्याग करीग, एम धानी सत्ताहपट्ट-वन्तरने छोडे छे, वन्तरने छोडीने [ वाणादिना ] शल्यने बहार काडे छे, बहार काडीने आलोचना लड प्रतिजान्त यड-पडिक्कीं समाधिने प्राप्त थयेले ते कालधर्म पाम्यो. हवे ते नागना पौत्र वरणनो एक प्रिय बालमित्र रथमुशल सम्राम करतो हतो, ज्यारे ते एक पुरुषथी सरज थायल थयो, खारे ते अक्तिरहित, बलरहित यावत् पोते 'ठकी नहि अके' एम समजी नागना पौत्र वरणने रथमुशल नंप्रामथी बहार नांयळ्ळा जुए छे, जोइने ते घोडाओने थोभावे छे, थोभावीने वरणनीं पेटे यावत् घोडाओने विसज्जित करे छे, अने पटना (बलना) सयारा उपर वेसे छे. संवारा उपर पूर्वदिशा सन्मुख वेसीने यावत् अजली करीने आ प्रमाणे बोन्धो-हे भगवन् ! मारा प्रिय बालमित्र नागना पौत्र वरणना जे शीलव्रतो, गुणव्रतो, विरमणव्रतो, प्रत्याख्यान अने पोपथोपवास होय ते मने पण हो, एम कही वन्तरने छोडे छे, छोडीने शल्यने काडे छे, शल्यने काडीने ते अनुक्रमे कालधर्म पाम्यो. हवे ते नागना पौत्र वरणने मरण पामेले जाणीने पासि रहेत्ता वानव्यंतर देवोए तेना उपर दिव्य अने सुगंधी गंधोदकनीं वृष्टि करी, पांच वर्णना फुले तेना उपर नाख्या, तथा दिव्य गीत गान्धर्वनो शब्द पण कर्यो. खार वाद ते नागना पौत्र वरणनीं दिव्य देवद्वि, दिव्य देवश्रुति अने दिव्य देवप्रभाव सामळीने अने जोइने घणा माणसो परस्पर एम कहे छे, यावत् प्ररूपणा करे छे के-हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे घणा मनुष्यो यावत् देवलोकांमा उत्पन्न थाय छे.

१ पचोरुभति क । २ पुरच्छाभि- घ । ३ ममं ख । ४ ण वस्सेव घ । ५ अरिहंतस्सेव घ । ६ कतिनं घ । ७ पडिसं-क विनाऽन्यत्र । ८ दुरहइ ख, दुरहइ घ । ९ दुरहि-ख, दुरहि-घ । १० जयणं-ख । ११ पिय-ख । १२ आणुपुणिया ग ।

१३. \*जुओ ( भ. श. २. ८० १ पृ २८४ )

१४. [प्र०] वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कर्हिं गए, कर्हिं उचवन्ने ? [उ०] गोयमा ! सोहम्मे कण्णे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उचवन्ने, तत्थ णं अत्थेगत्तियाणं देवाणं चत्तारि पल्लिओवमाणि ढिती पण्णत्ता, तत्थ णं वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पल्लिओवमाइं ढिती पन्नत्ता । से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ढिक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिञ्जिहिति, जाव अंतं करेहिति ।

१५. [प्र०] वरुणस्स णं भंते ! णागणत्तुयस्स पियवालचयंसए कालमासे कालं किच्चा कर्हिं गए, कर्हिं उचवन्ने ? [उ०] गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ।

१६. [प्र०] से णं भंते ! तओर्हिंतो अणंतरं उद्धट्ठित्ता कर्हिं गच्छिहिति, कर्हिं उचवज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! महाविदेहे वासे सिञ्जिहिति, जाव अंतं काहिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसयस्स नवमओ उद्देशओ समत्तो ।

१४ [प्र०] हे भगवन् ! नागनो पौत्र वरुण मरणसमये मरीने क्यां गयो, क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म देवलोकने विपे अरुणाभनामे विमानमा देवपणे उत्पन्न थयो छे. त्यां केटलाक देवोनी आयुपूनी स्थिति चार पल्योपमनी कही छे. त्यां वरुणदेवनी पण गर पल्योपमनी स्थिति कही छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते वरुणदेव देवलोकथी आयुपूनी क्षय थवाथी, भवनो क्षय थवाथी, स्थितिनी क्षय थवाथी—[ क्या जशे ? ] [उ०] यावत् महाविदेह क्षेत्रने विपे सिद्धिने पामशे, यावत् [ सर्व दुःखोनी ] अन्त करशे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! नागना पौत्र वरुणनो प्रिय बालमित्र मरणसमये मरण पामीने क्यां गयो, क्या उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! ते कोइ सुकुलमा उत्पन्न थयो छे.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! त्याथी मरीने तुरत ते [ वरुणनो बाल मित्र ] क्या जशे ? [उ०] हे गौतम ! ते महाविदेह क्षेत्रमा सिद्धिने पामशे, यावत् [ सर्व दुःखोनी ] अन्त करशे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, [ एम कही गौतम यावत् विचरे छे ]

सातमा शतकनो नवमो उद्देशक समाप्त.

## दसमो उद्देशो.

१. तेषं कालेणं, तेषं समरणं रायगिहे नामं नगरे ह्येत्या, चक्रथो । गुणसिलप चेदप, चक्रथो । जाव पुद्विसि-  
लापंद्दथो, वंद्दथो । तस्स णं गुणसिलयस्स च्चदयस्स अदूरसामंते वदथे अन्नउत्थिया परियमंति, तं जहा-कालोदाई, सेलोदाई,  
सेवालोदाई, उदप, नामुदप, नम्मुदप, अन्नवालप, सेलैवालप, संगवालप, मुदन्थी गाहावदं । तप णं तेषि अन्नउत्थियाणं  
अन्नया कयाइं एगयथो समुवागयाणं, सन्निसिद्धाणं, सन्निसन्नाणं अयमेयारुचे मिहो फहाममुह्याये समुप्पज्जित्था-एवं सत्तु  
समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेति, तं जहा-धम्मत्थिकायं, जाव आगासत्थिकायं । तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि  
अत्थिकाए अजीवकाए पन्नवेति, तं जहा-धम्मत्थिकायं, अथम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं पोग्गलत्थिकायं; एगं च णं समणे  
णायपुत्ते जीवत्थिकायं अरुविकायं जीवकायं पन्नवेति । तत्थ णं समणे णायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरुविकाए पन्नवेति, तं जहा-  
धम्मत्थिकायं, अथम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवत्थिकायं, एगं च णं समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रुविकायं अजीवकायं  
पन्नवेति । से कहमेयं मन्ने एवं ? तेषं कालेणं, तेषं समरणं समणे भगवं महावीरे जाव गुणसिलप चेदप समोसदे ।  
जाव परिस्ता पडिगया । तेषं कालेणं, तेषं समरणं समणस्स भगवथो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूर्हं नामं अण्णारं  
गोयमगोत्ते णं, एवं जहा वित्थियसए निर्यंठ्ठेसए जाव भिन्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्त-पाणं पडिग्गाहित्ता रायगि-  
हाथो णगराथो जाव अतुरियं, अचवलं, अंसंमंतं जाव रियं सोहेमाणे सोहेमाणे तेषि अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीद्दि-  
यति । तप णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीडवयमाणं पासंति, पासेत्ता अन्नमन्नं सदाव्वंति, अन्नमन्नं सदाव्विठा

## दसमो उद्देशक.

१. ते काले ते समये राजगृह नामे नगर हत्तुं वर्णन. गुणगील चैस हत्तुं वर्णन. यावत् पुथियाशिलापट्ट हत्तो. ते गुणशीउ  
चैलनी पासे थोडे दूर घणा अन्यतीर्थिको रहे छे ते आ प्रमाणे—कालोदायी, ईलोदायी, सेनालोदायी, उदय, नामोदय, नमोदय, अन्य-  
पालक, शैलपालक, शखपालक अने सुहस्ती गृहपति. त्थार पट्टी अन्य कोट समये एकत्र आवेला, वेठेला, सुउपूवक वेठेला ते अन्य  
तीर्थिकोनो आवा प्रकारनो आ वार्नालाप थयो—श्रमण ज्ञातपुत्र (महावीर) पाच अस्तिकायने प्ररुपे छे. जेमके, धर्मास्तिकाय, यावत्  
आकाशास्तिकाय. तेमा श्रमण ज्ञातपुत्र चार अस्तिकाय अजीवकाय छे एम जणावे छे जेम, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति-  
काय अने पुद्गलास्तिकाय एक जीवास्तिकायने श्रमण ज्ञातपुत्र अरुपी जीवकाय जणावे छे. ते पाच अस्तिकायमा श्रमण ज्ञातपुत्र चारं  
अस्तिकायने अरुपिकाय जणावे छे. जेम, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने जीवास्तिकाय. एक पुद्गलास्तिकायने श्रमण  
ज्ञातपुत्र रूपिकाय अने अजीवकाय जणावे छे. ए प्रमाणे आ केम मानी शकाय ? ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर यावत्  
गुणशिल चैसमा समोसथी. यावत् परिपत् [ वंदन करीने ] पाट्टी गइ. ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना मोट्टा शिय  
गातमगोत्री इन्द्रभूति नामे अनगार वीजा अतकना निर्धन्योद्वेयकमा कला प्रमाणे भिक्षाचर्याए भमता ययापर्याम भक्त पानने प्रहण करीने  
राजगृहनगर थकी यावत् त्वरारहितपणे, अचलपणे, असंभ्रान्तपणे ईर्या समिनिने वारवार शोधता ते अन्यतीर्थिकोनी थोडे दूर जाय छे. त्थारे  
ते अन्यतीर्थिको भगवान् गातमने थोडे दूर जता जुए छे, जोइने एक वीजाने बोलावे छे, एक वीजाने बोलावीने तेओए आ प्रमाणे कथुं-

एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमा क्हा अविप्पकडा, अयं च णं गोयमे अहं अदूरसामंतेणं वीईवयद, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अहं गोयमं एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्ठु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति, एयं अट्ठं पडिसुणित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए, धम्मोवदेसए, समणे णायपुत्ते पंचे अत्थिकाए पन्नवेत्ति, तं जहा-धम्मत्थिकायं, जाव आगासत्थिकायं; तं चेव जाव रुविकायं अजीवकायं पन्नवेत्ति; से क्हमेयं गोयमा ! एवं ? [३०] तए णं से भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं नत्थि त्ति वदामो, नैत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो; अह्हे णं देवाणुप्पिया ! सधं अत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो, सधं नत्थिभावं नत्थि त्ति वयामो; तं चेयसा [वेदसा] खलु तुम्हे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्ठु ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-एवं, एवं । जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, एवं जहा नियंतुइसए जाव भत्त-पाणं पडिदंसेत्ति, भत्त-पाणं पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ; वंदित्ता, नमंसित्ता नच्चासत्ते जाव पज्जुवासत्ति ।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवत्ते या वि होत्था, कालोदाई य तं देसं हव्वं आगए । 'कालोदाइ'त्ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइ एवं वयासी-से णूणं ते कालोदाई ! अन्नया क्कयाइ एगयओ सहियाणं, समुवागयाणं, संनिविट्ठाणं तहेव जाव से क्हमेयं मत्ते एवं ? से णूणं कालोदाई ! अत्थे समट्ठे ? हंता अत्थि । तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई !, अहं पंचत्थिकायं पन्नवेमि, तं जहा-धम्मत्थिकायं, जाव पोग्गलत्थिकायं; तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवत्थिकाए अजीवतया पन्नवेमि, तहेव जाव एणं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रुविकायं पन्नवेमि ।

३. [प्र०] तए णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं वदासी-एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि, अधम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि अरुविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केई आसइत्तए वा, सइत्तए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा, तुयट्ठित्तए वा ? [३०] णो तिणट्ठे समट्ठे कालोदाई !, एयंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रुविकायंसि अजीवकायंसि चक्किय केई आसइत्तए वा, सइत्तए वा, जाव तुयट्ठित्तए वा ।

हे देवानुप्रियो ! आपणने आ कथा ( पचास्तिकायनी वात ) अप्रकट-अज्ञात छे, अने आ गौतम आपणाथी योडे दूर जाय छे, माटे । देवानुप्रियो ! आपणे आ अर्थ गौतमने पुछयो श्रेयस्कार छे एम कही तेओ एक वीजानी पासे ए वातनो स्त्रीकार करे छे, स्त्रीकार करी ज्यां भगवान् गौतम छे ला आवे छे, ला आवीने तेओ भगवान् गौतमने ए प्रमाणे कहुं-हे गौतम ! तमारा वर्माचार्य, धर्मोपदेशव श्रमण ज्ञातपुत्र पाच अस्तिकाय प्ररूपे छे, ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकाय, यावत् आकाशास्तिकाय, यावत् रूपिकाय अजीवकायने जणां छे. हे पूज्य गौतम ! ए प्रमाणे शी रीते होय ? ल्यारे ते भगवान् गौतमे ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कहुं-हे देवानुप्रियो अमे अस्तिभावने नास्ति ( अविद्यमान ) कहेता नथी, तेम नास्तिभावने अस्ति ( विद्यमान ) कहेता नथी. हे देवानुप्रियो ! सर्व अस्तिभावने अस्ति कहीए छीए, अने नास्तिभावने नास्ति कहीए छीए. माटे हे देवानुप्रियो ! ज्ञान वडे तमे स्वयमेव ए अर्थनो विचार करो एम कहीने [ गौतमे ] ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कहुं के ए प्रमाणे छे, ए प्रमाणे छे. हवे भगवान् गौतम ज्या गुणगिल चैल्य छे, ज्य श्रमण भगवान् महावीर छे-[ ला आवीने ] \*निर्न्योदेशकमा कह्वा प्रमाणे यावत् भक्त-पानने देखाडे छे भक्त-पानने देखाडीने श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे, वादी, नमस्कार करी वहु दूर नहि तेम वहु पासे नहि ए प्रमाणे उपासना करे छे.

२. ते काले, ते समये श्रमण भगवान् महावीर महाकथा प्रतिपन्न-( घणा माणसोने धर्मोपदेश करवामा प्रवृत्त ) हता कालोदायी ते स्थले शीघ्र आब्यो. हे कालोदायि ! ए प्रमाणे [ बोलावीने ] श्रमण भगवान् महावीरे कालोदायीने आ प्रमाणे कहुं-हे कालोदायि ! अन्यदा कोई दिवसे एकत्र एकठा थयेला, आवेला, वेठेला एवा तमने पूर्वे कह्वा प्रमाणे [ पंचास्तिकायसंवन्वे विचार थयो हतो ? ] यावत् ए वात ए प्रमाणे केम मानी शकाय ? [ एवो विचार थयो हतो ? ] हे कालोदायि ! खरेखर आ वात यथार्थ छे ? हा, यथार्थ छे हे कालोदायि ! ए वात सल्य छे. हुं पाच अस्तिकायनी प्ररूपणा करूं छु, जेमके, धर्मास्तिकाय, यावत् पुद्गलास्तिकाय. तेमा चार अस्तिकाय अजीवास्तिकायने अजीवरूपे कहूं छूं. पूर्वे कह्वा प्रमाणे यावत् एक पुद्गलास्तिकायने रूपिकाय जणां छूं. ल्यारे ते कालोदायिए श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे कहुं-

३. [प्र०] हे भगवन् ! ए अरूपी अजीवकाय धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायमा वेसवाने, सुवाने, उभो रहेवाने, नीचे वेसवाने, आळोटवाने कोइ पण शक्तिमान् छे ? [३०] आ अर्थ योग्य नथी परन्तु हे कालोदायि ! एक रूपी अजीवकाय पुद्गलास्तिकायमा वेसवाने, सुवाने, यावत् आळोटवाने कोइपण शक्तिमान् छे.

१ वीतीवतेत्ति क । २-सुणेत्ति घ । ३ पंचत्थि-क । ४ क्हमेयं भते ! गो-घ । ५ नत्थि त्ति भा-ग । ६-ए एवं वदति क । ७ कालो-दाईत्ति घ । ८ कयाई घ । ९ वा चिट्ठइत्तए ख । १० वा सइत्तए ख ।

१. \*जुओ ( भ न. २. उ० ५ पृ. २८१ )

४. [प्र०] एयंसि णं भंते ! पोगलन्थिकायंसि, रुविकायंसि, धञ्जीकायंसि जीवाणं पावा णं कम्मा णं पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] णो तिण्ठे समट्ठे, कालोदाई ! । एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरुविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति । एत्थ णं से कालोदाई संवुद्धे, समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ; वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुच्चं अंतियं धम्मं निखामेत्तए, एवं जहा रंइए, तद्देव पंइइए, तद्देव एत्तए अंगाई जाव विहरइ ।

५. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कैयाइ रायगिहाथो णयराओ, गुणसिलाथो च्छयाओ पट्टिनिग्गमनि, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समणं रायगिहे नामं नगरे गुणसिलए च्छए होन्था । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ जाव समोसेहे, परिखा जाव पट्टिगया । तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कैयाइ जेणव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-[प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

६. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुअं थालीपागसुद्धं अट्टारस्सवंजणाकुलं विससंमिस्सं भोजणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोजणस्स आवाए भइए भवति, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुस्सत्ताए, दुग्ंधत्ताए जहा महासवए, जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति; एवमेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाववाए, जाव निच्छादंत्तणसहे, तस्स णं आवाए भइए भवइ, तओ पच्छा विपरिणममाणे विपरिणममाणे दुस्सत्ताए जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवं रलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागं जाव कज्जंति ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं कट्टाणा कम्मा कट्टाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

८. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं कट्टाणा कम्मा जाव कज्जन्ति ? [उ०] कालोदाई ! से जहानामए केई पुरिसे मणुअं थालीपागसुद्धं अट्टारस्सवंजणाकुलं ओसहमिस्सं भोजणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोजणस्स आवाए नो भइए भवइ, तओ पच्छा

९. [प्र०] हे भगवन् ! ए रूपी अजीवकाय पुद्गलात्तिकायने विपे जीवोना पाप-अशुभ फल-विपाकसहित पाप कर्मो लग्ने ? [उ०] हे कालोदायि ! ए अर्थं योग्य नथी परन्तु ए अरूपी जीवकायने विपे पाप फल-विपाकसहित पापकर्मो लग्ने छे, अही कालोदायी ओव पाम्यो, ते श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे; वादीने, नमस्कार करीने तेणे आ प्रमाणे कथुं— भगवन् ! हुं तमारी पासे वरं सामळवा इच्छुं छुं. ए प्रमाणे \*त्कन्तकनीं पेटे तेणे प्रत्त्या अंगीकार करी, अने ते प्रमाणे अंगीकार अगरे [ भर्णाने ] यावत् विचरे छे.

५. लार पछी अन्यदा कोइ दिवसे श्रमण भगवान् महावीर राजगृहनगरथी अने गुणशिल चैलथी नीकळी बहार देगोमा विहार करे छे. ते काले ते समये राजगृहनामना नगरमा गुणशिल नामतुं चैल हतुं ला अन्यदा कोइ दिवस श्रमण भगवान् महावीर यावद् समोसया. यावत् परिपद् पाछी गइ लार पछी ते कालोदायी अनगर अन्य कोट दिवसे ज्जां भगवान् महावीर छे ला आवे छे, त्यां आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे-नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे कथुं-[प्र०] हे भगवन् ! जीवोने पापकर्मो पाप-अशुभ फल-विपाक सहित होय ? [उ०] हा होय.

६. [प्र०] हे भगवन् ! पापकर्मो पाप-अशुभ फलविपाकसहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेम कोइ एक पुरए सुन्दर, स्थालीमा रांधवा वडे शुद्ध ( परिपक ), अटार प्रकारना दाळ शाकादि व्यंजनोथी युक्त, विषमिश्रित भोजन करे, ते भोजन शरुआतमां साहं लग्ने, पण लार पछी ते परिणाम पामना खरावरूपणे, दुग्ंधपणे 'महासव' उद्देशकमां कथा प्रमाणे चारवार परिणाम पामे छे. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने पापकर्मो अशुभफलविपाक संयुक्त होय छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण ( शुभ ) कर्मो कल्याणफलविपाक संयुक्त होय ? [उ०] हा, कालोदायि ! होय.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण कर्मो कल्याणफलविपाकसहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेम कोइ एक पुरए सुन्दर, स्थालीमां रांधवा वडे शुद्ध-परिपक, अटार प्रकारना [ दाळ शाकादि ] व्यंजनोथी युक्त औषधमिश्रित भोजन करे, ते

१ पावा णं कम्मा णं घ । २ कज्जंति ? हंता, कज्जंति । एत्थ णं घ । ३ पच्चइए ख । ४ कयाई ख । ५ रायगिहे न-, ६ गुणसि ले च्छइए, तए-ख । ७ कयाई ख । ८ अंजणाकुलं घ । ९ महासवए क । १० जहानाम घ । ११ केई ख ।

४. \* कुज्जो ( म. श. २. ८. १ पृ. २३९ ). ६ । कुज्जो ( म. श. ६. ८. ३. पृ. २७० )

पुद्गलात्तिकायने विपे कर्म लग्ने ?

पापकर्मो अशुभ विपाकसहित होय ?

पापकर्मो अशुभ विपाकसहित केम होय ?

कल्याणकर्मो कल्याण फलविपाकसहित होय ?

कल्याण कर्मो कल्याण फलविपाकसहित केम होय ?

परिणममाणे परिणममाणे सुखवत्ताए, सुवन्नत्ताए, जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए, भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे, जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, तस्स णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुखवत्ताए, जाव नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ, एवं खल्लु कालोदाई ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जांति ।

९. [प्र०] दो भंते ! पुरिसा सरस्सिया जाव सरस्सिभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं अगणिकायं समारंभंति, तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति, एगे पुरिसे अगणिकायं निद्वावेति, एएस्सि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव ? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, जाव अप्पवेयणतराए चेव ? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निद्वावेति ? [उ०] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव, जाव महावेयणतराए चेव । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निद्वावेइ से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धइ—तत्थ णं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराए चेव ? [उ०] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे बहुतराणं पुंढविकायं समारंभंति, बहुतराणं आउक्कायं समारंभंति, अप्पतराणं तेउक्कायं समारंभंति, बहुतराणं वाउकायं समारंभंति, बहुतराणं वणस्सइकायं समारंभंति, बहुतराणं तसकायं समारंभंति । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निद्वावेति, से णं पुरिसे अप्पतराणं पुंढविकायं समारंभइ, अप्पतराणं आउक्कायं समारंभइ, बहुतराणं तेउक्कायं समारंभंति, अप्पतराणं वाउकायं समारंभंति, अप्पतराणं वणस्सइकायं समारंभंति, अप्पतराणं तसकायं समारंभंति, से तेणट्टेणं कालोदायी ! जाव अप्पवेयणतराए चेव ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति, उज्जोवेंति, तवेति, पभासेंति ? [उ०] हंता, अत्थि.

भोजन प्रारंभमां सारुं न लागे, लार पछी ज्यारे ते अलत्त परिणाम पामे ल्यारे ते सुरूपपणे, सुवर्णपणे, यावत् सुखपणे वारंवार परिणमे दुःखपणे परिणाम पामतुं नथी. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने प्राणातिपातविरमण, यावत् परिग्रहविरमण, क्रोधनो त्याग यावत् अर्थादर्शनशल्यनो त्याग प्रारंभमां सारो न लागे, पण पछी ज्यारे ते परिणाम पामे ल्यारे ते सुरूपपणे यावत् वारंवार परिणमे छे, पण दुःखरूपे परिणत थतो नथी. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोना कल्याण कर्मो कल्याण फलविपाकसयुक्त होय छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! सरखा वे पुरुपो यावत् समान भाड—पात्रादिउपकरणवाळा होय, तेओ परस्पर साथे अग्निकायनो समारंभ—हिंसा करे, तेमां एक पुरुप अग्निकायने प्रकट करे, अने एक पुरुप तेने ओलवे, हे भगवन् ! आ वे पुरुपोमा कयो पुरुप महाकर्मवाळो, महाक्रियावाळो, महाआस्रववाळो अने महावेदनावाळो होय, अने कयो पुरुप अल्पकर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो होय के जे पुरुप अग्निकायने प्रकटावे छे ते, के जे पुरुप अग्निकायने ओलवी नाखे ते ? [उ०] हे कालोदायि ! ते वे पुरुपमा जे पुरुप अग्निकायने प्रकटावे छे, ते पुरुप महाकर्मवाळो यावत् महावेदनावाळो होय, अने जे पुरुप अग्निकायने ओलवी नाखे छे ते पुरुप अल्पकर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे ग्राथी कहो छो के ते वे पुरुपोमा जे पुरुप [अग्निने प्रदीप्त करे छे ते महावेदनावाळो अने जे ओलवे छे ते ] यावत् अल्पवेदनावाळो होय ? [उ०] हे कालोदायि ! ते वेमा जे पुरुप अग्निकायने प्रदीप्त करे छे, ते पुरुप घणा पृथिवीकायनो समारंभ करे छे, थोडा अग्निकायनो समारंभ करे छे, घणा वायुकायनो समारंभ करे छे, घणा वनस्पतिकायनो समारंभ करे छे अने घणा त्रसकायनो समारंभ करे छे. तेमा जे पुरुप अग्निकायने ओलवी नाखे छे ते पुरुप थोडा पृथिवीकायनो, थोडा अष्कायनो, थोडा वायुकायनो, थोडा वनस्पतिकायनो, थोडा त्रसकायनो अने वधारे अग्निकायनो समारंभ करे छे. ते हेतुथी हे कालोदायि ! यावत् अल्पवेदनावाळो होय.

१०. हे भगवन् ! एम छे के अचित्त पण पुद्गलो अवभास करे, उद्योत करे, तपे, प्रकाश करे ? [उ०] हे कालोदायि ! हा एम छे.



११. [प्र०] क्यरे णं भंते ! अचिन्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पमासंति ? [उ०] कालोदाई ! कुण्डस्व अणगारस्म तेय-लेस्ता निसट्टा समाणी दूरं गता, दूरं निपतद, देमं गता देसं निपतति, जाहिं जाहिं च णं सा निपतद, ताहिं ताहिं णं ते अचिन्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पमासंति, णेणं कालोदाई ! ते अचिन्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पमासंति । तप णं से कालोदाई अणगा समणं भगवं महार्यारे वंदति, नमंसति, वंदित्ता, नमंसित्ता यहाहिं चउत्थ-उट्ट-उट्टम- जाव अणगाणं भायेमाणे जटा पटमसण कालासवेसियपुत्ते जाव सप्रदुक्कण्णहीणे । सेवं भंते !, सेवं भते ! चि ।

सत्तमसतस दममो उद्देशो समत्तो.

सत्तमं सयं नमत्तं ।

क्या पुद्गलो प्रकाश करे?

(जिनागम पाठ)

११. [प्र०] हे भगवन् ! अचित्त छ्ता पण क्या पुद्गले अवभास करे, यावत् प्रकाश करे ? [उ०] हे कालोदायि ! क्रोधावगन थयेला साधुनी तेजोलेदया नीवळीने दूर जडने दूर पडे छे. देगमा (जा योग्य स्थाने) जडने ते देगमां-स्थानमां पडे छे. जा ज्यो ते पडे छे त्या त्या अचित्त पुद्गले पण अवभास करे छे, यावत् प्रकाश करे छे. ते कारणथी हे कालोदायि ! ए अचित्त पुद्गले पण अवभास करे छे, यावत् प्रकाश करे छे. लार वाद ते कालोदायी अनगार भ्रमण भगवान् मत्तारने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे अणगा चतुर्थ ( उपवास ), पष्ठ ( वे उपवास ), अष्टम ( त्रण उपवास ) ( इत्यादि तप वटे ) यावत् आमाने वासिन करना ते प्रथम शतकमा \*कालासवेसियपुत्तनी पेटे यावद् सर्वदु खयी रहित थया. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [ एम करी गौतम यावत् विचरे छे ]

सातमा गतकजो दसमो उद्देशक समाप्त.

## अट्टमं सयं-

१. १ पोग्गल २ आसीविस ३ रुक्ख ४ किरिय ५ आजीव ६ फासुक-७ मदत्ते ।  
८ पडिणीय ९ वंध १० आराहणा य दस अट्टमंमि सते ॥

### पढमो उद्देशो.

२. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वदासी-कइविहा णं भंते ! पोग्गला पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पोग्गला पन्नत्ता, तं जहा-पधोगपरिणया, मीससापरिणया, वीससापरिणया य ।

### अष्टम शतक.

१. [उद्देश संग्रह-] १ पुद्गल, २ आशीविप, ३ वृक्ष, ४ क्रिया, ५ आजीव, ६ प्रासुक, ७ अदत्त, ८ प्रत्यनीक, ९ वन्ध अने १० आराधना—ए संवन्धे दश उद्देशको आठमा शतकमा छे.

[ १ पुद्गलना परिणाम विपे प्रथम उद्देशक छे, २ आशीविपादि सवघे वीजो उद्देशक छे, ३ वृक्षादि विपे त्रीजो उद्देशक छे, ४ कायिकीआदि क्रिया विपे चोथो उद्देशक छे, ५ आजीवक विपे पांचमो उद्देशक छे, ६ प्रासुकदानादि विपे छट्टो उद्देशक छे, ७ अदत्तादान विपे सातमो उद्देशक छे, ८ प्रत्यनीक (गुर्वादिना विद्वेपी) विपे आठमो उद्देशक छे, ९ प्रयोगवन्धादिने विपे नवमो उद्देशक छे, अने १० आराधना इत्यादिने विपे दशमो उद्देशक छे. ]

### प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! केटला प्रकारना पुद्गलो कख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारना पुद्गलो कख्या छे. ते आ प्रमाणे—१ प्रयोगपरिणत ( प्रयोग एटले जीवना व्यापारथी शरीरादिरूपे परिणाम पामेला ), २ \*मिश्रपरिणत ( मिश्र-प्रयोग अने स्वभाव वन्धेना सवन्ध-थी परिणाम पामेला ), अने ३ विससापरिणत ( विससा-स्वभाव-थी परिणामेला )

१ फासुक घ । २ अट्टमसि सए क-ग ।

२. \* प्रयोगपरिणामनो त्याग कर्या शिवाय विससा-स्वभाव-थी परिणामान्तरने प्राप्त भयेला मृतकलेवरादि पुद्गलो ते मिश्रपरिणत कहेवान छे, अथवा विससाथी परिणत भयेली औदारिकादि वर्गणाओ जीवना प्रयोगथी ज्यारे औदारिकादिशरीर वगेरे रूपे परिणत भय ल्यारे ते पण मिश्रपरिणत कहेवान छे. यद्यपि औदारिकादिशरीरपणे परिणाम पामेल औदारिकादि वर्गणाओ प्रयोगपरिणत कहेवाय छे, कारण के त्या विससापरिणामनी विवक्षा नवी, पण जो विससा अने प्रयोग ए उभयपरिणामनी विवक्षा करवामा आवे तो ते मिश्रपरिणत कहेवाय छे—टीकाकार.

३. [प्र०] पञ्चोपपरिणया णं भंते ! पोग्गला कडविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—पंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया, वेदंन्द्रियपञ्चोपपरिणया, जाव पंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया ।

४. [प्र०] पंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया णं भंते ! पोग्गला कडविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—पुड-चिक्काइअपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया, जाव वणस्सइकाइअपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया ।

५. [प्र०] पुडचिक्काइअपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया णं भंते ! पोग्गला कडविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पुडविहा पन्नत्ता, तं जहा—पुडुमपुडचिक्काइअपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया, चादरपुडचिक्काइअपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया य । आउफाडअपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया एवं चेव, एवं उयओ भेदो जाव वणस्सइकाइआ य ।

६. [प्र०] वेदंन्द्रियपञ्चोपपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणेगविहा पन्नत्ता, णं तंइन्द्रियपञ्चोपपरिणया, चउरिन्द्रियपञ्चोपपरिणया चि ।

७. [प्र०] पंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउरिन्द्रिय पन्नत्ता । तं जहा—नेरइयपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया, तिरिक्खपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया, एवं मणुस्स०, द्वेषपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया य ।

८. [प्र०] नेरइयपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तविहा पन्नत्ता; तं जहा—खणव्यमापुडविनेरअपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणया चि, जाव अहेसत्तमपुडविनेरअपञ्चोपपरिणया चि ।

९. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिन्द्रियपञ्चोपपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा—जलचरपंचिन्द्रिय-तिरिक्खजोणियपञ्चोपपरिणया, थलचरपंचिन्द्रिय०, सहचरपंचिन्द्रिय० ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! प्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच प्रकारना कया छे; ते आ प्रमाणे—एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत ( एकेन्द्रिय जीवना व्यापार वडे परिणाम पामेला ), वेदंन्द्रियप्रयोगपरिणत, यावत् पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच प्रकारना कया छे; ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो, यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

५. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—सूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो, अने वादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो. ए प्रमाणे—अपकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो ( वे प्रकारे ) जाणवा, ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण वे प्रकारना जाणवा.

६. [प्र०] हे भगवन् ! वेदंन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! ते अनेक प्रकारना कया छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा.

७. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारना कया छे. ते आ प्रमाणे—नारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, तिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, ए प्रमाणे मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

८ [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकपंचेन्द्रिय-प्रयोगपरिणत पुद्गलो सात प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् नीचे सप्तम-नरकपृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

९. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! तिर्यंचयोनिक-पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो त्रण प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—जलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, स्थलचरतिर्यंच-योनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने खेचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

१ वणस्सइकाइआण पुच्छा, गोयमा ! अणेगविहा पन्नत्ता क । २ तिरिक्ख एवं म- क । ३ -चरनिरिक्खपंचिन्द्रियजोणिय- क ।

३. हेवे नव दंडवद्वारा (सं० ३-२४) प्रयोगपरिणत पुद्गलोतुं निरूपण करे छे—१ सूक्ष्म एकेन्द्रियधी आरभी सर्वापंचिन्द्रियेवो पर्यन्त जीवोनी विशेषताधी प्रयोगपरिणत पुद्गलनो प्रथम दंडक, २ तेवी रीते सूक्ष्म पृथिवीकायिकधी आरभी सर्वापंचिन्द्रियेवो सुधी पर्याप्त अने अपर्याप्तता नेदधी बीजो दंडक, ३ आँदारिकादि पाच शरीरनी विशेषताधी त्रीजो दंडक, ४ पाच इन्द्रियोनी विशेषताधी चोवो दंडक, ५ आँदारिकादि पाच शरीर अने स्वशीदि पाच इन्द्रियोनी विशेषताधी पाचवो दंडक, ६ वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श अने सस्थाननी विशेषताधी छटो दंडक, ७ आँदारिकादिशरीर अने वर्णादिनी विशेषताधी सातवो दंडक, ८ इन्द्रियो अने वर्णादिनी विशेषताधी आठवो दंडक, अने ९ शरीर, इन्द्रिय अने वर्णादिनी विशेषताधी नववो दंडक. ए प्रमाणे नव दंडक जाणवा—टीकाकार

१०. [प्र०] जलयरतिरिन्ध्रजोगियपयोगपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमजलयर०, गम्भवकंतियजलयर० ।

११. [प्र०] थलयरतिरिक्ख० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—चउप्पयथलयर०, परिसप्पयथलयर० ।

१२. [प्र०] चउप्पयथलयर० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमचउप्पयथलयर०, गम्भवकंतियचउप्पयथलयर० । एवं पणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य । उरपरिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमा य गम्भवकंतिया य । एवं भुयपरिसप्पा वि, एवं सहयरा वि ।

१३. [प्र०] मणुस्सपंचिदियपओग० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिममणुस्स०, गम्भवकंतियमणुस्स० ।

१४. [प्र०] देवपंचिदियपओग० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा—भवणवासिदेवपंचिदियपओग०, एवं जाव वेमाणिया ।

१५. [प्र०] भवणवासिदेवपंचिदिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दसविहा पन्नत्ता, तं जहा—असुरकुमार०, जाव थणियकुमार० । एवं पतेणं अभिलावेणं अट्टविहा वाणमंतरा, पिसाया जाव गंधव्वा । जोतिसिया पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—चंद्विमाणजोतिसिया, जाव ताराविमाणजोइसिआ देवा । वेमाणिया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—कप्पोवग० कप्पातीतगवेमाणिया । कप्पोवगा दुवालसविहा पन्नत्ता, तं जहा—सोहम्मकप्पोवग० जाव अच्युयकप्पोवगवेमाणिया । कप्पातीतग० दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—गेवेज्जगकप्पातीतग० अणुत्तरोववातीयकप्पातीतग० । गेवेज्जगकप्पातीतग० नवविहा पन्नत्ता, तं जहा—हेट्टिमहेट्टिमगेवेज्जगकप्पातीतग०, जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जगकप्पातीतग० ।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! जलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! जलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो वे प्रकारना क्हा छे; ते आ प्रमाणे—संमूर्छिमजलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने गर्भजजलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

११. [प्र०] हे भगवन् ! स्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! स्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो वे प्रकारना क्हा छे, ते आ प्रमाणे—चतुष्पदस्थलचरपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने परिसर्पस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! चतुष्पदस्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! चतुष्पदस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो वे प्रकारना क्हा छे, ते आ प्रमाणे—संमूर्छिमचतुष्पदस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने गर्भजचतुष्पदस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलाप ( पाठ ) वडे परिसर्पो वे प्रकारना क्हा छे—उरपरिसर्प अने भुजपरिसर्प. उरपरिसर्पो वे प्रकारना क्हा छे—संमूर्छिम अने गर्भज. ए प्रमाणे भुजपरिसर्पो अने खेचरो ( पक्षीओ ) पण वे प्रकारना क्हा छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो वे प्रकारना क्हा छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिममनुष्यप्रयोगपरिणत अने गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो चार प्रकारना क्हा छे, ते आ प्रमाणे—भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् वैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो

१५. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! दस प्रकारना क्हा छे. ते आ प्रमाणे—असुरकुमारप्रयोगपरिणत, यावत् स्तानितकुमारप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलाप वडे आठ प्रकारना वानन्धनगे, पिशाचो यावत् गान्धर्वो कहेवा, ज्योतिपिको पाच प्रकारना क्हा छे; ते आ प्रमाणे—चन्द्रविमानज्योतिपिकदेव, यावत् ताराविमानज्योतिपिकदेव. वैमानिक देवो वे प्रकारना क्हा छे; ते आ प्रमाणे—कल्पोपपन्नकवैमानिकदेव अने कल्पातीतवैमानिक देव. कल्पोपपन्नकवैमानिक वार प्रकारना क्हा छे; सौधर्मकल्पोपन्नक, यावत् अच्युतकल्पोपन्नक. कल्पातीतवैमानिको हे गौतम ! वे प्रकारे क्हा छे; ते आ प्रमाणे—गैयककल्पातीतवैमानिक देव अने अनुत्तरौपपातिककल्पातीत वैमानिक देव. गैयककल्पातीत वैमानिक देवो नव प्रकारे क्हा छे, ते आ प्रमाणे—अधस्तन अधस्तन ( नीचेनी त्रिकमा नीचे रहेला ) गैयककल्पातीत वैमानिक देवो, यावत् उपर उपर ( उपरनी त्रिकमा उपरना ) गैयक कल्पातीत देवो.

१६. [प्र०] अणुत्तरोववाइअकप्यातीनगवेमाणिअदेवपंचिन्द्रियप्रयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कउविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—विजयअणुत्तरोववाइअ० जाव परिणया, जाव सच्चट्टसिउअणुत्तरोववाइअदेवपंचिन्द्रिय० जाव परिणया । (दं. १.)

१७. [प्र०] सुहुमपुढविकाइअण्णिदिअप्रयोगपरिणता णं भंते ! पोग्गला कउविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—केति अपज्जत्तगं पढमं भणति पच्छा पज्जत्तगं । पज्जत्तासुहुमपुढविकाइअ० जाव परिणता य अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइअ० जाव परिणता य । वादरपुढविकाइअण्णिदिअ० एवं चेव, एवं जाव यणस्सइकाइया । पवेण दुविहा सुहुमा य वादरा य पज्जत्ता अपज्जत्ता य भाणिअत्था ।

१८. [प्र०] वेइन्द्रियपञ्चोगपरिणताणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगवेइन्द्रियपञ्चोगपरिणता य अपज्जत्तग० जाव परिणता य । एवं तेइन्द्रिया वि, एवं चउरिन्द्रिया वि ।

१९. [प्र०] रयणप्यभापुढविनेरइअ० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगरयणप्यमा० जाव परिणता य अपज्जत्तग० जाव परिणता य, एवं जाव अहेसत्तामा ।

२०. [प्र०] संमुच्छिमजलयरतिरिअ० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तग० अपज्जत्तग० । एवं गम्भवकंतिया वि । संमुच्छिमचउण्णयथलयरा एवं चेव; एवं गम्भवकंतिया वि । एवं जाव संमुच्छिमपटयर० गम्भवकंतिया य, पक्के पज्जत्ता अपज्जत्ता य भाणिअत्था ।

२१. [प्र०] संमुच्छिममणुस्सपंचिन्द्रिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पगविहा पन्नत्ता, अपज्जत्ता चेव ।

२२. [प्र०] गम्भवकंतियमणुस्सपंचिन्द्रिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगम्भवकंतिया वि, अपज्जत्तगम्भवकंतिया वि ।

१६. [प्र०] अनुत्तरौपपातिककल्पातीनवैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—विजयअनुत्तरौपपातिकदेवप्रयोगपरिणत, यावत् सर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत (दं. १.)

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकणकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकणकेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकणकेन्द्रियप्रयोगपरिणत. आ स्थले ( वीजी वाचनामा ) कोइ अपर्याप्तने प्रथम कहे छे, अने पृथी पर्याप्तने कहे छे. ए प्रमाणे वादरपृथिवीकायिकणकेन्द्रिय, यावत् वनस्पतिकायिकण कहेवा. ते तथा ववे प्रकारे छे—सूक्ष्म अने वादर, तथा पर्याप्त अने अपर्याप्त.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! वेइन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कया छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे त्रीन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो पण जाणवा.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाणवुं.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्द्धिमजलचरतिर्यचयोनिकप्रयोगपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसंमूर्द्धिमजलचरप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तसंमूर्द्धिमजलचरप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे गर्भज जलचरो पण जाणवा. ए प्रमाणे संमूर्द्धिम तथा गर्भज चतुष्पदस्थलचर जीवो जाणवा, ए प्रमाणे यावत् संमूर्द्धिम तथा गर्भज खेचरो पण जाणवा, ते दरेकना पर्याप्त अने अपर्याप्त वे भेटो कहेवा.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्द्धिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—अपर्याप्तसंमूर्द्धिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कया छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत.

द्वितीय दंडक  
सूक्ष्मपृथिवी-  
कायिकादिप्र-  
योगपरिणत.

वेइन्द्रियादिप्र-  
योगपरिणत

रत्नप्रभादि-  
नैरयिकप्रयोग-  
परिणत

संमूर्द्धिमजलच-  
रादिप्रयोगप-  
रिणत.

संमूर्द्धिममनु-  
ष्यादिप्रयोग-  
परिणत

२३. [प्र०] असुरकुमारभ्रवणवासिदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार०, अप-  
ज्जत्तगअसुरकुमार०; एवं जाव थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य । एवं एतेणं अभिलावेणं दुयएणं भेदेणं पिसाया, जाव गंध-  
व्वा, चंदा, जाव ताराविमाणा, सोहम्मरूपोवगा, जावच्चुतो, हेट्टिमहेट्टिमगेविज्जकप्पातीत० जाव उवरिमउवरिमगेविज्ज०; विज-  
यअणुत्तरोववाइअ०, जाव अपराजिअ० ।

२४. [प्र०] सव्वट्टसिद्धकप्पातीत० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तासव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइअ०,  
अपज्जत्तासव्वट्ट० जाव परिणता वि ( दं. २. ).

जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइअएगिंदियअयोगपरिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया । जे पज्जत्त-  
सुहुम० जाव परिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया, एवं जाव चउरिंदिया पज्जत्ता, णवरं जे पज्जत्तावादरवा-  
उकाइअएगिंदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय—वेउव्विय—तेया—कम्मसरीर० जाव परिणता; सेसं तं चेव । जे अपज्जत्तरयणप्प-  
भापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते 'वेउव्विय—तेया—कम्मसरीरप्पयोगपरिणया; एवं पज्जत्तगा वि, एवं जाव अहेसत्तमा । जे  
अपज्जत्तासंमुच्छिमजलयर० जाव परिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मसरीर० जाव परिणया, एवं पज्जत्तगा वि । गम्भवकंति-  
यअपज्जत्तगा एवं चेव; पज्जत्तगा णं एवं चेव । नवरं सरीरगाणि चत्तारि जहा वादरवाउकाइआणं पज्जत्तगाणं; एवं जहा  
जलचरेसु चत्तारि आलावगा भणिआ एवं चतुप्पद—उरपरिसप्प—भुयपरिसप्प—खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा । जे  
संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मसरीर० जाव परिणया । एवं गम्भवकंतिया वि, अपज्जत्तग-पज्जत्तगा  
वि एवं चेव, नवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि । जे अपज्जत्ताअसुरकुमारभ्रवणवास्ति० जहा नेरइया तहेव, एवं पज्जत्तगा  
वि; एवं दुयएणं भेदेणं जाव थणियकुमारा । एवं पिसाया, जाव गंधव्वा, चंदा, जाव ताराविमाणा, सोहम्मरूपो०, जावच्चुओ;  
हेट्टिमहिट्टिमगेवेज्जग०, जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जग०, विजयअणुत्तरोववाइए, जाव सव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइए; एकेके णं दुयओ

२३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारभ्रवणवासिदेवप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना  
क्हा छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो पर्याप्त अने  
अपर्याप्त जाणवा ए प्रमाणे ए अभिलाप वडे वे भेदो पिशाचो यावत् गांधर्वोना जाणवा. तेमज चन्द्रो यावत् ताराविमानो, सौधर्मकल्पोप-  
नक, यावत् अच्युत कल्पोपनक, तथा नीचे नीचेनी त्रैवेयक कल्पातीत यावत् उपर उपरना त्रैवेयककल्पातीतदेवप्रयोगपरिणत, विजय-  
अणुत्तरौपपातिक, यावत् अपराजितअणुत्तरौपपातिक.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्धअणुत्तरौपपातिककल्पातीतदेवप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे  
गौतम ! ते वे प्रकारना क्हा छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअणुत्तरौपपातिक, यावत् अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धप्रयोगपरिणत. ए [ प्रमाणे  
वे दंडको जाणवा. ]

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे, अने जे पुद्गलो  
पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय पर्याप्ता  
जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के जे पुद्गलो पर्याप्तवादरवायुकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरी-  
रप्रयोगपरिणत छे, वानीनुं सर्व पूर्वे क्हा प्रमाणे जाणवुं. जे पुद्गलो अपर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वैक्रिय, तैजस  
अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तनारको पण जाणवा ए प्रमाणे यावत् सप्तम पृथिवी सुधी जाणवुं जे पुद्गलो अपर्याप्त-  
संमूर्द्धिमजलचरप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस, अने कार्मणशरीर यावत् परिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्ता [ समूर्द्धिम जलचर ] पण  
जाणवा. गर्भजअपर्याप्त अने गर्भजपर्याप्त पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के पर्याप्तवादरवायुकायिकनी पेठे तेओने चार  
शरीर होय छे. ए प्रमाणे जेम जलचरोमा चार आलापक कहेला छे तेम चतुप्पद, उरपरिसर्प, मुजपरिसर्प अने खेचरोमा पण चार आला-  
पक कहेवा, जे पुद्गलो संमूर्द्धिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे, ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे, ए प्रमाणे गर्भज  
अपर्याप्ता जाणवा, पर्याप्ता पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए के तेओने पाच शरीर कहेवा. जेम नैरयिको संवन्धे कहुं, तेम अपर्याप्त असु-  
रकुमारभ्रवणवास्ति देवो संवन्धे पण जाणवुं, तेम पर्याप्ता सवन्धे पण जाणवुं, ए प्रकारे ए वे मेदवडे यावत् स्तनितकुमारो पण जाणवा. ए प्रमाणे  
पिशाचो अने यावत् गांधर्वो जाणवा. चन्द्रो यावत् तारा विमानो, सौधर्मकल्प यावत् अच्युतकल्प, नीचेनी त्रिकमा नीचेना त्रैवेयक यावत्  
उपरनी त्रिकमा उपरना त्रैवेयक अने विजयअणुत्तरौपपातिक यावत् सर्वार्थसिद्ध अणुत्तरौपपातिकना प्रत्येके वन्धे भेद कहेवा; यावत् जे



जे अपञ्जत्तासुहुमपुढविकाइयर्पिगिदियओरालिय—तेया—कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पञ्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुद्दीए नेयधं, जस्स जइ सरीराणि, जाव जे पञ्जत्तासव्वट्टिसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिदियवेउद्विय—तेया—कम्मासरीर— जाव परिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि ( दं. ७ )

जे अपञ्जत्तासुहुमपुढविकाइयर्पिगिदियफासिंदियपयोगपरिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पञ्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुद्दीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियद्याणि, जाव जे पञ्जत्तासव्वट्टिसिद्धअणुत्तरोववाइअ- जाव देवपंचिदियसोर्तिदिय— जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । ( दं. ८ )

जे अपञ्जत्तासुहुमपुढविकाइयर्पिगिदियओरालिय—तेया—कम्मा—फासिंदियपयोगपरिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पञ्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुद्दीए जस्स जति सरीराणि इंदियाणि य तस्स तति भाणियद्याणि, जाव जे पञ्जत्तासव्वट्टिसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिदियवेउद्विय—तेया—कम्मा—सोइंदिय— जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । एवं एते नव दंडगा ।

२५. [प्र०] मीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—पर्गिदिय-मीसापरिणया, जाव पंचिदियमीसापरिणया ।

२६. [प्र०] पर्गिदियमीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! एवं जहा पयोगपरिणतेहिं नव दंडगा भणिया, एवं मीसापरिणएहिं वि नव दंडगा भाणियद्या, तहेव सधं निरवसेसं, नवरं अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियधं, सेसं तं चेव, जाव जे पञ्जत्तासव्वट्टिसिद्धअणुत्तरोववाइअ- जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।

जे पुद्दलो अपर्यात्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे, ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. ए प्रमाणे पर्यात्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत पुद्दलो पण जाणवा. ए प्रकारे यथा-सूको जाणवुं. जेने जेटलां शरीर होय [ तेने तेटला कहेवा ] यावत् जे पुद्दलो पर्यात्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय वैक्रिय, तैजस कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी काळावर्णे पण परिणत छे, अने सस्थानथी यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे [ दं. ७ ]

जे पुद्दलो अपर्यात्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. जे पुद्दलो पर्यात्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते पण ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे सर्व अनु-क्रमे जाणवु, जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी; यावत् जे पुद्दलो पर्यात्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे [ दं. ८ ]

जे पुद्दलो अपर्यात्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मण, अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. जे पर्यात्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक—[ एकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मण तथा स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते पण ] ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे अनुक्रमे सर्व जाणवु. जेने जेटला शरीर अने इन्द्रियो होय तेने तेटला कहेवा, यावत् जे पुद्दलो पर्यात्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय—वैक्रिय, तैजस अने कार्मण तथा श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे अने यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. ए प्रमाणे ए नव दंडको कथा.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! मिश्रपरिणत पुद्दलो केटला प्रकारना कथा छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच प्रकारना कथा छे, ते आ प्रमाणे—एकेन्द्रियमिश्रपरिणत अने यावत् पंचेन्द्रियमिश्रपरिणत.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियमिश्रपरिणतपुद्दलो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणतपुद्दलो सन्नवे नव दंडक कथा तेम मिश्रपरिणतपुद्दलो सन्नवे पण नव दंडक कहेवा, तेम याकीनुं सर्व कहेवुं, परन्तु विरोप ए छे के [ प्रयोग परिणतने स्थाने ] 'मिश्रपरिणत' एवो पाठ कहेवो. याकी वधुं ते प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे पुद्दलो पर्यात्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकप्रयोगपरिणत छे ते यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे.



२७. [प्र०] वीससापरिणता णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पत्तत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पत्तत्ता, तं जहा—वन्नपरिणता, गंधपरिणता, रसपरिणता, फासपरिणता, संटाणपरिणता । जे वन्नपरिणता ते पंचविहा पत्तत्ता, तं जहा—कालवन्नपरिणता, जाव सुक्खिलवन्नपरिणता । जे गंधपरिणता ते दुविहा पत्तत्ता, तंजहा—सुन्मिगंधपरिणया वि, दुन्मिगंधपरिणया वि, एवं जहा पैन्नवणाए तदेव निरवसेसं जाव जे संटाणतो आयतसंटाणपरिणता ते वन्नओ कालवन्नपरिणया वि, जाव सुक्खफासपरिणया वि ।

२८. [प्र०] पणे भंते ! द्धे किं पयोगपरिणए, भीसापरिणए, वीससापरिणए ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणए वा, भीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ।

२९. [प्र०] जेदि पयोगपरिणते किं मणप्ययोगपरिणए, वंयप्ययोगपरिणए, कायप्ययोगपरिणए ? [उ०] गोयमा ! मणप्ययोगपरिणए वा, वंयप्ययोगपरिणए वा, कायप्ययोगपरिणए वा ।

३०. [प्र०] जदि मणप्ययोगपरिणते किं सच्चमणप्ययोगपरिणते, मोसमणप्ययोगपरिणते, सच्चामोसमणप्ययोगपरिणते, असच्चामोसमणप्ययोगपरिणते ? [उ०] गोयमा ! सच्चमणप्ययोगपरिणते वा, मोसमणप्ययोगपरिणते वा, सच्चामोसमणप्ययोगपरिणते वा, असच्चामोसमणप्ययोगपरिणते वा ।

३१. [प्र०] जदि सच्चमणप्ययोगपरिणते किं आरंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, अणारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, सारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, असारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, समारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, असमारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए ? [उ०] गोयमा ! आरंभसच्चमणप्ययोगपरिणते वा, जाव असमारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए वा ।

२७. [प्र०] हे भगवन् ! विन्नसापरिणत (समावधी परिणामने प्राप्त वनेला) पुद्गले केदला प्रकारना कथा छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच प्रकारना कथा छे, ते आ प्रमाणे—वर्णपरिणत, गंधपरिणत, रसपरिणत, स्पर्शपरिणत अने नंस्वानपरिणत. जे वर्णपरिणत पुद्गले छे ते पाच प्रकारना कथा छे, ते आ प्रमाणे—कालवर्णरूपे परिणत, जावत् शुद्धवर्णरूपे परिणत. जे गंधपरिणत छे ते वे प्रकारना छे; ते आ प्रमाणे—गुणवर्णपरिणत अने दुर्गंधपरिणत. ए प्रमाणे जेम प्रज्ञापना पटमा कणु छे तेम सरे जाणवुं. जावत् जे (पुद्गले) संस्वानधी आयतनंस्वानरूपे परिणत छे ते वर्णधी काळवर्णरूपे पण परिणत छे, जावत् रूक्षस्पर्शरूपे पण परिणत छे.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! एक द्रव्य शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विन्नसापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विन्नसापरिणत पण होय.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते [एकद्रव्य] प्रयोगपरिणत होय तो शुं मन.प्रयोगपरिणत होय, आक्षप्रयोगपरिणत होय, के प्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मन प्रयोगपरिणत होय, आक्षप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य मन प्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्वमन प्रयोगपरिणत होय, मृदामन प्रयोगपरिणत होय; सत्वमृदामन प्रयोगपरिणत होय के असत्वामृदामन प्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सत्वमन प्रयोगपरिणत होय, मृदामन.प्रयोगपरिणत होय, सत्वमृदामन प्रयोगपरिणत होय के असत्वामृदामन प्रयोगपरिणत होय.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य सत्वमन प्रयोगपरिणत होय तो शुं आरमसत्वमन प्रयोगपरिणत होय, अनारमसत्वमन.प्रयोगपरिणत होय, सरमसत्वमन प्रयोगपरिणत होय, अनरमसत्वमन प्रयोगपरिणत होय, समारमसत्वमन प्रयोगपरिणत होय के असमारंभसत्वमन.प्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते आरमसत्वमन.प्रयोगपरिणत होय, जावत् असमारंभसत्वमन.प्रयोगपरिणत पण होय.

१ कालावन्न-क । २-चणए क । ३ भीसप-क । ४ जइ व । ५ वहप-घ । ६ सच्चामण-क ।

२७. \* प्रज्ञा० पट १ प-१०-१

२९. † आंतरिकादिद्विधप्रयोगवदे मनोवर्गणा द्रव्यने ग्रहण करी तेने मनोयोग वदे मनपणे परिणामाच्या जे पुद्गले ते मन प्रयोगपरिणत कहेवाय छे, आंतरिकादिद्विधप्रयोग वदे भाषाद्रव्यने ग्रहण करी वचनयोग वदे भाषारूपे परिणामाची बहार झटाता जे पुद्गले ते वाक्प्रयोगपरिणत कहेवाय छे, अने काययोग वदे ग्रहण करीने आंतरिकादिद्विधरूपे परिणामाच्या जे पुद्गले ते कायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे—टीकाकार.

३०. ‡ नलपदावर्धना निवृत्तगृहवाह्य मननो व्यापार ते सत्वमन प्रयोग कहेवाय छे कंठक नल अने कंठक असत्य एम मिश्रित वनेल होय ते सत्वमृदा कहेवाय छे, अने सत्व ने असत्व द्वयेधी रहित ते असत्वमृदा कहेवाय छे.

३१. § आरम्भ—जांबहिंसा, तेने विषे मन प्रयोग एटले मननो व्यापार, ते वडे परिणाम पामेळ जे पुद्गले ते आरमसत्वमन प्रयोगपरिणत कहेवाय छे, ए प्रमाणे नीजा पण जाणी देवा; परन्तु विशेष ए छे के अनारंभ—जांबहिंसानी अभाव, सरंभ—वपनी सकल्प अने समारंभ—परित्याग उपनाववो.—टीकाकार.

विन्नसापरि-  
णतपुद्गले.

एकद्रव्य  
परिणाम

मन.प्रयोगादि-  
परिणत

आरमसत्वम-  
न.प्रयोगादिप-  
रिणत

३२. [प्र०] यदि मोसमण्ययोगपरिणते किं आरंभमोसमण्ययोगपरिणत वा ? [उ०] एवं जहा सच्चैणं तथा मोसैण वि, एवं सच्चामोसमण्ययोगेण वि, एवं असच्चामोसमण्ययोगेण वि ।

३३. [प्र०] यदि वइप्पयोगपरिणते किं सच्चवइप्पयोगपरिणते, मोसवइप्पयोगपरिणते ? [उ०] एवं जहा मण्ययोगपरिणत तथा वय्ययोगपरिणत वि, जाव असमारंभवइप्पयोगपरिणते वा ।

३४. [प्र०] यदि काय्ययोगपरिणते किं ओरालियसरीरकाय्ययोगपरिणते, ओरालियमीसासरीरकाय्ययोगपरिणते, वेउद्वियसरीरकाय्ययोगपरिणत, वेउद्वियमीसासरीरकाय्ययोगपरिणत, आहारगसरीरकाय्ययोगपरिणते, आहारगमीसासरीरकाय्ययोगपरिणते, कम्मासरीरकाय्ययोगपरिणते ? [उ०] गोयमा ! ओरालियसरीरकाय्ययोगपरिणते वा, जाव कम्मासरीरकाय्ययोगपरिणते वा ।

३५. [प्र०] यदि ओरालियसरीरकाय्ययोगपरिणते किं प्पिंदियओरालियसरीरकाय्ययोगपरिणते, एवं जाव प्पिंदियओरालिय— जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! प्पिंदियओरालियसरीरकाय्ययोगपरिणते वा, वेइंदिय— जाव परिणते वा, जाव प्पिंदियओरालियकाय्ययोगपरिणत वा ।

३२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मृपामनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं आरंभमृपामनःप्रयोगपरिणत होय ? [ उ० ] ए प्रमाणे जेम सत्यमनःप्रयोगपरिणतने विपे कहुं तेम मृपामनःप्रयोगपरिणत विपे जाणहुं. ए प्रमाणे सत्यमृपामनःप्रयोगने विपे अने असत्यमृपामनःप्रयोगने विपे पण जाणहुं.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वाक्प्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यवाक्प्रयोगपरिणत होय ? [ उ० ] ए प्रमाणे जेम मनःप्रयोगपरिणतने विपे कहुं, तेम वचनप्रयोगपरिणतने विपे पण जाणहुं, यावत् असमारंभवचनप्रयोगपरिणत होय.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य कायप्रयोगपरिणत होय तो शुं ? \*औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, २ औदारिक मिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ३ वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ४ वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ५ आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ६ आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के ७ काम्रणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते एक द्रव्य औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय, यावत् काम्रणशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय.

३५. [प्र०] जो ते ( एक द्रव्य ) औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, वेइन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, के यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, वेइन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय.

### १ --पयोगपरिणण वि ग । २ मोसवय- क ।

३४. \* औदारिककायप्रयोग पर्याप्ताने ज होय छे, ते वडे परिणत जे पुद्वल द्रव्य ते औदारिककायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे. ज्यारे औदारिकशरीर उत्पत्तिसमये अपूर्णवस्थामा काम्रण साथे मिश्र थाय छे ल्यारे ते औदारिकमिश्र कहेवाय छे, ते कायप्रयोगधी परिणत जे द्रव्य ते औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे आ औदारिकमिश्रकायप्रयोग अपर्याप्त जीवने ज होय छे. परभवमा उत्पत्तिसमये जीव प्रथम काम्रणयोग वडे आहार करे छे, ल्यार पछी ज्या-सुधी शरीर ( शरीरपर्याप्ति ) निष्पन्न न थाय त्यासुधी औदारिकमिश्रयोगवडे आहार करे छे ए प्रकारे काम्रण साथे औदारिकशरीरनी मिश्रता होवाधी त्या औदारिकमिश्रकायप्रयोग जाणवो, केमके उत्पत्तिने लीधे औदारिकशरीरनी प्रधानता छे. वळी औदारिकशरीरवाळो मनुष्य, तिर्थेव के वाद्वरायुकायिक ज्यारे वैक्रियशरीर करे ल्यारे ते औदारिककाययोगने विपे वततो आत्मप्रदेशीने विस्तारी वैक्रियशरीरयोग पुद्वलने ग्रहण करे, अने ज्यासुधी ते वैक्रियशरीरपर्याप्ति पूर्ण न करे त्यासुधी वैक्रियनी साथे औदारिकशरीरनी मिश्रता होवाधी तेने औदारिकमिश्रकायप्रयोग जाणवो, केमके ते प्रारमक होवाधी तेनी (औदारिककायप्रयोगनी ) प्रधानता छे एवी रीते आहारकनी साथे औदारिकनी मिश्रता जाणवी.

† वैक्रियमिश्रकायप्रयोग देव अने नारकमा उत्पन्न यता अपर्याप्ताने होय छे, अहीं वैक्रियशरीरनी मिश्रता काम्रणनी साथे छे वळी लब्धिजन्य वैक्रियशरीरने ल्याग करता अने औदारिकने ग्रहण करता औदारिकशरीरवाळने वैक्रियनी प्रधानता होवाधी त्या औदारिकनी साथे वैक्रियनी मिश्रता छे तेथी ल्या वैक्रियमिश्रकायप्रयोग जाणवो

‡ आहारकमिश्रकायप्रयोग औदारिकनी साथे आहारकनी मिश्रता थाय ल्यारे होय छे, अने ते आहारकशरीरने ल्याग करता अने औदारिकशरीरने ग्रहण करता होय छे. अर्थात्—ज्यारे आहारकशरीरी पोतातु कार्य समाप्त करीने पुन औदारिकशरीरने धारण करे ल्यारे आहारकसुं प्राधान्य होवाधी अने तेनो औदारिकशरीरने ग्रहण करवामा व्यापार होवाधी ज्यासुधी तेनो सर्वथा ल्याग न करे त्यासुधी तेनी ( आहारकशरीरनी ) औदारिकनी साथे मिश्रता होय छे, तेथी ल्या आहारकमिश्रकायप्रयोग जाणवो.

¶ अहीं काम्रणशरीरकायप्रयोग विग्रहगतिमा सर्व ससारी जीवने, अने समुद्रघात करता केवलज्ञानीने श्रीजा, चोथा अने पांचमां समये होय छे.

३६. [प्र०] जदि पंगिदियओरालियस्सीरकायप्यओगपरिणते किं पुढविक्काइयण्णिदिय— जाव परिणते वा, जाव वणम्म-  
रकाइयण्णिदियओरालियकायप्यओगपरिणते वा ? [उ०] गोयमा ! पुढविक्काइयण्णिदिय— जाव परिणण वा. जाव वण-  
स्सइकाइयण्णिदिय— जाव परिणण वा ।

३७. [प्र०] जदि पुढविक्काइयण्णिदियओरालियस्सीर— जाव परिणते किं मुहुमपुढविक्काइय— जाव परिणण, वाटरपुढ-  
विक्काइय— जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! मुहुमपुढविक्काइयण्णिदिय— जाव परिणते वा. वायरपुढविक्काइय— जाव परिणते वा ।

३८. [प्र०] जदि सुहुमपुढविक्काइय— जाव परिणते किं पज्जत्तमुहुमपुढविक्काइय— जाव परिणते, अपज्जत्तमुहुमपुढ-  
विक्काइय— जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! पज्जत्तमुहुमपुढविक्काइय— जाव परिणते वा, अपज्जत्तमुहुमपुढविक्काइय— जाव  
परिणते वा: एवं वादरा चि, एवं जाव वणम्मइकाइयाणं चउत्तओ भेदो, वेइदिय-नेइदिय-चउत्तइदियाणं दुयओ भेदो— पज्जत्तगा  
य अपज्जत्तगा य ।

३९. [प्र०] जदि पंचिदियओरालियस्सीरकायप्यओगपरिणते किं तिरिक्कजोणियपंचिदियओरालियम्मरीरकायप्यओग-  
परिणते, मणुस्सपंचिदिय— जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! तिरिक्कजोणिय— जाव परिणण वा, मणुस्सपंचिदिय— जाव  
परिणण वा ।

४०. [प्र०] जइ तिरिक्कजोणिय— जाव परिणण किं जलयरतिरिक्कजोणिय— जाव परिणण वा, थलयर-त्तलयर-  
जाव परिणण वा ? [उ०] एवं चउत्तओ भेदो, जाव चउत्तरणं ।

४१. [प्र०] जइ मणुस्सपंचिदिय— जाव परिणण किं संमुच्छिमणुस्सपंचिदिय— जाव परिणण, गम्मवइंतियमणुस्स-  
जाव परिणण ? [उ०] गोयमा ! ओमु चि ।

४२. [प्र०] जइ गम्मवइंतियमणुस्स— जाव परिणण किं पज्जत्तगम्मवइंतिय— जाव परिणण, अपज्जत्तगम्मवइंतियमणु-  
स्सपंचिदियओरालियस्सीरकायप्यओगपरिणण ? [उ०] गोयमा ! पज्जत्तगम्मवइंतिय— जाव परिणण वा, अपज्जत्तगम्मवइंतिय-  
जाव परिणण वा ।

३६. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियऔदारिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदा-  
रिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनरपत्तिकायिकएकेन्द्रियऔदारिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवी-  
कायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनरपत्तिकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ।

३७. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं सूक्ष्मपृथिवीकायिक-  
एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के वादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकएके-  
न्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के वादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ।

३८. [प्र०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य सूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरि-  
णत होय, के अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के  
अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे वादरपृथिवीकायिको जाणवा. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिकना चार भेद  
( सूक्ष्म, वादर, पर्याप्त अने अपर्याप्त ) अने वेदन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, अने चउत्तइन्द्रिय जीवोना वे भेद पर्याप्त अने अपर्याप्त जाणवा.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य पंचेन्द्रियऔदारिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं तिर्यचयोनिकपंचेन्द्रियऔदारिकजरीर-  
कायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! तिर्यचयोनिकऔदारिकजरीर-  
कायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय ।

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य तिर्यचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं जलचरतिर्यचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय  
के स्थलचर अने खेचरयोनिककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] पूर्वं प्रमाणे यावत् खेचरोना [संमूर्द्धिम, गर्भज, पर्याप्त अने अपर्याप्त]  
चार भेदो जाणवा.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं संमूर्द्धिममनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत  
होय के गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते (एक द्रव्य) [संमूर्द्धिम अने गर्भज] मनुष्यकायप्रयोगपरि-  
णत होय ।

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य गर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के  
अपर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकजरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्त-  
गर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय ।

४३. [प्र०] जइ ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए, वेदंदि-  
जाव परिणए, जाव पंचिंदियओरालिय- जाव परिणए ? [उ०] गोयमा ! एगिंदियओरालिय- एवं जहा ओरालियसरीरकायप्प-  
योगपरिणएणं आलावगो भणियो, तहा ओरालियनीसासरीरकायप्पयोगपरिणएण वि आलावगो भाणियद्वो, नवरं वायखाउ-  
काइय-गम्भवकंतिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-गम्भवकंतिपमणुस्साणं एएसिणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं, सेसाणं अपज्जत्तगाणं ।

४४. [प्र०] जइ वेउद्वियसरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियवेउद्वियसरीरकायप्पयोगपरिणए, जाव पंचिंदियवेउद्वि-  
यसरीर- जाव परिणए ? [उ०] गोयमा ! एगिंदिय- जाव परिणए वा, पंचिंदिय- जाव परिणए वा ।

४५. [प्र०] जइ एगिंदिय- जाव परिणए, किं वाउक्काइयएगिंदिय- जाव परिणए, अवाउक्काइयएगिंदिय- जाव परिणए ?  
[उ०] गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदिय- जाव परिणए, नो अवाउक्काइय- जाव परिणए; एवं एणं अभिलावेणं जहा 'ओगाहणसंठाणे'  
वेउद्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भाणियद्वं, जाव पज्जत्तसव्वद्विसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउ-  
द्वियसरीरकायप्पओगपरिणए वा, अपज्जत्तसव्वद्विसिद्धअणुत्तरोववाइअ-जाव परिणए वा ।

४६. [प्र०] जइ वेउद्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए जाव पंचिंदिय-  
मीसासरीरकायप्पयोगपरिणए ? [उ०] एवं जहा वेउद्वियं तहा वेउद्वियमीसगं पि, नवरं देव-नेरइयाणं अपज्जत्तगाणं, सेसाणं  
पज्जत्तगाणं तहेव, जाव नो पज्जत्तसव्वद्विसिद्धअणुत्तरोववाइअ- जाव परिणए, अपज्जत्तसव्वद्विसिद्धअणुत्तरोववातियदेवपं-  
चिंदियवेद्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए ।

४७. [प्र०] जइ आहारगसरीरकायप्पयोगपरिणए किं मणुस्साहारगसरीरकायप्पयोगपरिणए, अमणुस्साहारग- जाव  
परिणए ? [उ०] एवं जहा 'ओगाहणसंठाणे' जाव इद्विपत्तपमत्तसंजयसम्मद्विद्विपज्जत्तसंखेज्जवासाउय- जाव परिणए,  
नो अणिद्विपत्तपमत्तसंजयसम्मद्विद्विपज्जत्तसंखेज्जवासाउय- जाव परिणए ।

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियऔदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत  
होय, वेइन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पचेन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! एकेन्द्रिय-  
औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय. जेम 'औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत'नो आलापक कह्यो तेम 'औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत'  
नो पण आलापक कह्यो. परन्तु विशेष ए छे के 'औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत'नो आलापक वादरवायुकायिक, गर्भजपंचेन्द्रियतिर्यच  
अने गर्भजमनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता एओने, अने ते शिवाय वाकीना अपर्याप्ता जीवोने कह्यो.

४४. हे भगवन् ! जो एक द्रव्य वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत्  
पचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय के पंचेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोग-  
परिणत होय.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोग-  
परिणत होय के वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य वायुकायिकएकेन्द्रियकाय-  
प्रयोगपरिणत होय, पण वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत न होय. ए प्रमाणे ए अभिलाप(पाठ)थी "प्रज्ञापना सूत्रना  
'अवगाहनासंस्थान' पदने विपे वैक्रियशरीरसंबन्धे कहु छे तेम अहां पण कहेंहुं; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककल्पातीत-  
वैमानिकदेवपचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग-  
परिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम वैक्रियशरीरप्रयोगसंबन्धे कहु, तेम  
वैक्रियमिश्रकायप्रयोगसंबन्धे पण कहेंहुं, परन्तु विशेष ए छे के वैक्रियमिश्रकायप्रयोग देव अने नैरयिक अपर्याप्ताने अने वाकीना वधा  
पर्याप्ताने कह्यो; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकवैक्रियमिश्रकायप्रयोगपरिणत न होय, पण अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक-  
देवपचेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय. ( ४ )

४७. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं मनुष्याहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय  
के अमनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे जेम प्रज्ञापनासूत्रना 'अवगाहनासंस्थान' पदने विपे कहुं छे तेम  
जाणहुं; यावत् ऋद्धिप्राप्त-आहारकलब्धिमान् प्रमत्त साधु सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्येयवर्षायुपूर्वाळ मनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत होय, पण  
ऋद्धिने-आहारकलब्धिने-अप्राप्त प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि संख्यातवर्षायुपूर्वाळ मनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत न होय. ( ५ )

४८. [प्र०] जह आहारगमीसासरीरकायप्रयोगपरिणण किं मणुस्साहारगमीसासरीर० ? [उ०] पयं जहा आहारगं तहेव मीसगं पि निरवसेसं भाणियधं ।

४९. [प्र०] जह कम्मासरीरकायप्रयोगपरिणण किं णिंदियकममासरीरकायप्रयोगपरिणण, जाव पंचिंदियकममासरीर-जाव परिणण ? [उ०] गोयमा ! णिंदियकममासरीरकायप्रयोगपरिणण, पयं जहा 'धोणाहणसंटाणं' कम्मगस्स भेट्ठो तहेव इहायि, जाव पज्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरोववाट्टय- जाव देवपंचिंदियकममासरीरकायप्रयोगपरिणण, अपज्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरो-जाव परिणण वा ।

५०. [प्र०] जह मीसापरिणण किं मणमीसापरिणण, वयमीसापरिणण, कायमीसापरिणण ? [उ०] गोयमा ! मणमीसापरिणण वा, वयमीसा०, कायमीसापरिणण वा ।

५१. [प्र०] जह मणमीसापरिणण किं सच्चमणमीसापरिणण वा, मोसमणमीसापरिणण वा ? [उ०] जहा पओगपरिणण तहा मीसापरिणण वि भाणियधं निरवसेसं, जाव पज्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरोववाट्टय- जाव देवपंचिंदियकममासरीरगमीसापरिणण वा, अपज्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरोववाट्टय- जाव कम्मासरीरमीसापरिणण वा ।

५२. [प्र०] जह वीसत्तापरिणण किं वन्नपरिणण, गंधपरिणण, रसपरिणण, फासपरिणण, सटाणपरिणण ? [उ०] गोयमा ! वन्नपरिणण वा, गंधपरिणण वा, रसपरिणण वा, फासपरिणण वा, सटाणपरिणण वा ।

५३. [प्र०] जह वध्नपरिणण किं कालवध्नपरिणण, नील- जाव सुक्खिलवध्नपरिणण ? [उ०] गोयमा ! कालवध्नपरिणण, जाव सुक्खिलवध्नपरिणण ।

५४. [प्र०] जह गंधपरिणण किं सुध्मिगंधपरिणण, दुध्मिगंधपरिणण ? [उ०] गोयमा ! सुध्मिगंधपरिणण, दुध्मिगंधपरिणण ।

५५. [प्र०] जह रसपरिणण किं तित्तरसपरिणण ?-पुच्छा [उ०] गोयमा ! तित्तरसपरिणण, जाव महुररसपरिणण ।

४८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य आहारकमिश्रणरीरकायप्रयोगपरिणण होय तो शुं मनुष्याहारकमिश्रणरीरकायप्रयोगपरिणण होय ? इत्यादि. [ उ० ] हे गौतम ! जेम आहारकमिश्रणरीरकायप्रयोगपरिणण होय तो शुं मनुष्याहारकमिश्रणरीरकायप्रयोगपरिणण होय. ( ६ )

४९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य कर्मणशीरकायप्रयोगपरिणण होय तो शुं एकेन्द्रियकर्मणशीरकायप्रयोगपरिणण होय यावत् पंचेन्द्रियकर्मणशीरकायप्रयोगपरिणण होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियकर्मणशीरकायप्रयोगपरिणण होय प्रमाणे जेम 'प्रज्ञापना मूत्रना 'अवगाहनानस्थान' पदने विषे कहुं छे तेम अहीं पण जाणवुं, यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपानिकदेवपंचेन्द्रियकर्मणशीरकायप्रयोगपरिणण होय, के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपानिककर्मणशीरकायप्रयोगपरिणण होय.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मिश्रणपरिणण होय तो शुं मनोमिश्रणपरिणण होय, वचनमिश्रणपरिणण होय, के कायमिश्रणपरिणण होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते मनोमिश्रणपरिणण होय, वचनमिश्रणपरिणण होय, के कायमिश्रणपरिणण होय

५१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मनोमिश्रणपरिणण होय तो शुं मल्यमनोमिश्रणपरिणण होय, मृपामनोमिश्रणपरिणण होय ? [ उ० ] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणण पुद्गले संबन्धे कहुं तेम मिश्रणपरिणणसंबन्धे सर्व कहेवुं, यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपानिकदेवपंचेन्द्रियकर्मणशीरमिश्रणपरिणण होय, के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपानिककर्मणशीरमिश्रणपरिणण होय.

५२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य विस्रसापरिणण-स्वभावपरिणण होय तो शुं ते वर्णपरिणण होय, गंधपरिणण होय, रसपरिणण होय, स्पर्शपरिणण होय के संस्थानपरिणण होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते वर्णपरिणण होय, गंधपरिणण होय, रसपरिणण होय, स्पर्शपरिणण होय, अने संस्थानपरिणण पण होय.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वर्णपरिणण होय तो शुं काव्यवर्णपणे परिणण होय, नीलवर्णपणे परिणण होय के यावत् शुक्लवर्णपणे परिणण होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते काव्यवर्णपणे परिणण होय, यावत् शुक्लवर्णपणे परिणण होय.

५४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य गंधपणे परिणण होय तो शुं सुगंधपणे परिणण होय के दुर्गंधपणे परिणण होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते सुगंधपणे परिणण होय अने दुर्गंधपणे परिणण होय.

५५. [प्र०] जो ते एक द्रव्य रसपरिणण होय तो शुं तित्तरसपरिणण होय ? इत्यादि [ उ० ] हे गौतम ! ते तित्तरसपरिणण होय यावत् महुररसपणे परिणण होय.

५६. [प्र०] जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए, जाव लुक्खफासपरिणए ? [उ०] गोयमा ! कक्खडफासपरिणए, जाव लुक्खफासपरिणए ।

५७. [प्र०] जइ संठाणपरिणए— पुच्छा । [उ०] गोयमा ! परिमंडलसंठाणपरिणए वा, जाव आययसंठाणपरिणए वा ।

५८. [प्र०] दो भंते ! द्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पओगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा; अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए, अहवा एगे पओगपरिणए एगे वीससापरिणए; अहवा एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए एवं (६) ।

५९. [प्र०] जइ पओगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया, वइप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! मणप्पयोगपरिणया, वइप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया वा; अहवा एगे मणप्पयोगपरिणए एगे वयप्पयोगपरिणए; अहवा एगे मणप्पयोगपरिणए एगे कायप्पयोगपरिणए, अहवा एगे वयप्पयोगपरिणए एगे कायप्पयोगपरिणए ।

६०. [प्र०] जइ मणप्पओगपरिणया किं सच्चमणप्पयोगपरिणया, असच्चामणप्पयोगपरिणया, सच्चामोसमणप्पयोगपरिणया, असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! सच्चमणप्पओगपरिणया वा, जाव असच्चामोसमणप्पओगपरिणया; अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए एगे मोसमणप्पयोगपरिणए, अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए एगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए, अहवा एगे सच्चमणप्पयोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्पयोगपरिणए; अहवा एगे मोसमणप्पयोगपरिणए एगे सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए; अहवा एगे मोसमणप्पयोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्पयोगपरिणए; अहवा एगे सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ।

६१. [प्र०] जइ सच्चमणप्पयोगपरिणया किं आरंभसच्चमणप्पओगपरिणया, जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणया वा, जाव असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणया वा, अहवा एगे आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणए ।

५६. [प्र०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य स्पर्शपरिणत होय तो ते शु कर्कशस्पर्शपरिणत होय के यावत् रूक्षस्पर्शपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कर्कशस्पर्शपणे परिणत होय, यावत् रूक्षस्पर्शपणे पण परिणत होय.

५७. [प्र०] हे भगवन् ! एक द्रव्य संस्थानपरिणत होय तो शुं ते परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंस्थानपणे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत होय.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! वे द्रव्यो शु प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्ससापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्ससापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वीजुं मिश्रपरिणत होय. २ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वीजुं विस्ससापरिणत होय. ३ अथवा एक द्रव्य मिश्रपरिणत होय अने वीजुं विस्ससापरिणत होय.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो ते शुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय अने कायप्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं वचनप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक मनःप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं कायप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक वचनप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं कायप्रयोगपरिणत होय.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वे द्रव्यो मन प्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, असत्यमन प्रयोगपरिणत होय, सत्यमृषामन.प्रयोगपरिणत होय के असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! सत्यमन प्रयोगपरिणत होय के यावत् असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं मृषामनःप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक सत्यमन.प्रयोगपरिणत होय अने वीजुं सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं असत्यामृषामन.प्रयोगपरिणत होय. ४ अथवा एक मृषामन.प्रयोगपरिणत होय अने वीजुं सत्यमृषामन.प्रयोगपरिणत होय. ५ अथवा एक मृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ६ अथवा एक सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय.

६१. [प्र०] हे भगवन् ! जो वे द्रव्यो सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं १ आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, २ अनारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ३ संरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ४ असंरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ५ समारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के ६ असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वे द्रव्यो आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, अनारंभसत्यमनः-

परिणय एते अनारंभसञ्चमण्ययोगपरिणय। एवं एषणं गैमणं दुयासंजोषणं नेयउं, सद्ये संजोगा जन्थ जत्तिया उडुंति ते भाणि-  
यद्वा, जाव सवट्टसिद्धगत्ति ।

६२. [प्र०] जति मीसापरिणया किं मणमीसापरिणया ? [उ०] एवं मीसापरिणया वि ।

६३. [प्र०] जइ वीससापरिणया किं चन्द्रपरिणया, गंधपरिणया० ? [उ०] एवं वीससापरिणया वि, जाव अहवा एगे  
चउरंससंठाणपरिणय, एगे आयतसंठाणपरिणय वा ।

६४. [प्र०] तिन्नि मंते ! द्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणया  
वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा; अहवा एगे पयोगपरिणय दो मीसापरिणया; अहवा एगे पयोगपरिणय दो वीस-  
सापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया एगे मीसापरिणय; अहवा दो पयोगपरिणया एगे विससापरिणय; अहवा एगे मीसा  
परिणय दो वीससापरिणया; अहवा दो मीसापरिणया एगे वीससापरिणय; अहवा एगे पयोगपरिणय एगे मीसापरिणय  
एगे वीससापरिणय ।

६५. [प्र०] जइ पयोगपरिणया किं मणप्ययोगपरिणया, वयप्ययोगपरिणया, कायप्ययोगपरिणया ? [उ०] गोयमा !  
मणप्ययोगपरिणया वा, एवं एक्कसंयोगो, दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियद्वो ।

६६. [प्र०] जइ मणययोगपरिणया किं सच्चमणप्ययोगपरिणया, असच्चमणप्ययोगपरिणया, सच्चामोसमणप्ययोगपरिणया,  
असच्चामोसमणप्ययोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! सच्चमणप्ययोगपरिणया वा, जाव असच्चामोसमणप्ययोगपरिणया वा; अहवा  
एगे सच्चमणप्ययोगपरिणय दो मोसमणप्ययोगपरिणया वा । एवं दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियद्वो एथ चि तहेव, जाव  
अहवा एगे तंससंठाणपरिणय एगे चउरंससंठाणपरिणय एगे आयतसंठाणपरिणय वा ।

६७. [प्र०] चत्तारि मंते ! द्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणया  
वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा, । अहवा एगे पयोगपरिणय तिन्नि मीसा परिणया; अहवा एगे पयोगपरिणय  
प्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य आरंभसत्त्वमन प्रयोगपरिणत होय अने वीजुं अनारंभसत्त्वमन प्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे ए रीते  
द्विक संयोगो करवा. ज्यां जेट्ठा द्विकसंयोगो थय ला ते सवव्य कहवा; यावत् सर्वाथसिद्धवेमालिकदेव सुवीं कहवुं.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! जो वे द्रव्यो मिश्रपरिणत होय तो शुं ते मनोमिश्रपरिणत होय ? इत्यादि. [ उ० ] हे गौतम ! प्रयोग-  
परिणत संवे कर्तुं तेम मिश्रपरिणतसंवे कहवुं.

६३. [प्र०] हे भगवन् ! जो वे द्रव्यो विस्त्रसापरिणत होय तो शुं ते वर्णपणे परिणत होय, गन्धपणे परिणत होय ? इत्यादि [उ०]  
हे गौतम ! ए रीते पूर्वे क्ख्या प्रमाणे विस्त्रसापरिणतसंवे पण जाणवुं, यावत् एक द्रव्य समचतुरत्तसंस्थानपणे परिणत होय अने वीजुं  
आयतसंस्थानपणे पण परिणत होय.

६४. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय, के विस्त्रसापरिणत होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते  
( त्रणे द्रव्यो ) प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय अने विस्त्रसापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वे मिश्र-  
परिणत होय, २ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने वे विस्त्रसापरिणत होय, ३ अथवा वे प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय,  
४ अथवा वे प्रयोगपरिणत होय अने एक विस्त्रसापरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने वे विस्त्रसापरिणत होय. ६ अथवा वे  
मिश्रपरिणत होय अने एक विस्त्रसापरिणत होय. ७ अथवा एक प्रयोगपरिणत एक मिश्रपरिणत अने एक विस्त्रसापरिणत होय.

६५. [प्र०] जो ते त्रणे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो शुं मन प्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत  
होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते मन प्रयोगपरिणत पण होय ए प्रमाणे एकसंयोग, द्विकसंयोग अने त्रिकसंयोग कहवो.

६६. [प्र०] जो ते त्रणे द्रव्यो मन-प्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्त्वमन प्रयोगपरिणत होय ? ( इत्यादि ४ प्रश्न ). [ उ० ] हे गौतम !  
सत्त्वमन प्रयोगपरिणत होय, अथवा यावत् असत्त्वामृपामन-प्रयोगपरिणत होय. अथवा एक सत्त्वमन-प्रयोगपरिणत होय अने वे मृपामन-  
प्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे अर्हो पण द्विकसंयोग अने त्रिकसंयोग कहवो. यावत् अथवा एक त्रयत्त ( त्रिकोण ) संस्थानपणे परिणत होय,  
एक समचतुरत्त ( चौरस ) संस्थानपणे परिणत होय अने एक आयतसंस्थानपणे परिणत होय.

६७. [प्र०] हे भगवन् ! चार द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्त्रसापरिणत होय ? [ उ० ] हे गौतम ! ते  
( चारे द्रव्यो ) प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्त्रसापरिणत होय. १ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण मिश्रपरिणत होय.

तिन्नि वीससापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया दो मीसापरिणया, अहवा दो पयोगपरिणया दो वीससापरिणया; अहवा तिन्नि पओगपरिणया एगे मीसापरिणए, अहवा तिन्नि पओगपरिणया एगे वीससापरिणए, अहवा एगे मीससापरिणए तिन्नि वीससापरिणया, अहवा दो मीसंसापरिणया दो वीससापरिणया, अहवा तिन्नि मीसापरिणया एगे वीससापरिणए; अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए दो वीससापरिणया; अहवा एगे पयोगपरिणए दो मीसापरिणया एगे वीससापरिणए; अहवा दो पयोगपरिणया एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए ।

६८. [प्र०] जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया, वयप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया ? [उ०] एवं एएणं कमेणं पंच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणंता य दद्वा भाणियद्वा दुयासंजोएणं, तियासंजोएणं, जाव दससंजोएणं, वारससंजोएणं उचजुंजिउणं जत्थ जत्तिया संजोगा उट्ठेति ते सद्धे भाणियद्वा, एए पुण जहा नवमसए पवेसणए भणिहामो तद्वा उचजुंजिउण भाणियद्वा, जाव असंखेज्जा अणंता एवं चेव, नवरं एक्कं पदं अब्भहियं, जाव अहवा अणंता परिमंडलसंठाणपरिणया, जाव अणंता आयतसंठाणपरिणया ।

६९. [प्र०] एएसिणं भंते ! पोग्गलाणं पयोगपरिणयाणं, मीसापरिणयाणं, वीससापरिणयाण य कयरे कयरेहितो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्धत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणंतगुणा, वीससापरिणया अणंतगुणा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

### अट्टमसए पटमो उद्देशो समत्तो ।

२ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण विस्ससापरिणत होय. ३ अथवा वे प्रयोगपरिणत होय अने वे मिश्रपरिणत होय. ४ अथवा वे प्रयोगपरिणत होय अने वे विस्ससापरिणत होय. ५ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय. ६ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने एक विस्ससापरिणत होय. ७ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने त्रण विस्ससापरिणत होय. ८ अथवा वे मिश्रपरिणत होय अने वे विस्ससापरिणत होय. ९ अथवा त्रण मिश्रपरिणत होय अने एक विस्ससापरिणत होय. १० अथवा एक प्रयोगपरिणत होय एक मिश्रपरिणत होय अने वे विस्ससापरिणत होय. ११ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय वे मिश्रपरिणत होय अने एक विस्ससापरिणत होय. १२ अथवा वे प्रयोगपरिणत होय एक मिश्रपरिणत होय अने एक विस्ससापरिणत होय.

६८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते चार द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो शुं मनःप्रयोगपरिणत होय ? ( वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय ? ) [उ०] हे गौतम ! सर्व पूर्वनी पेठे जाणवु; ए क्रमवडे पाच, छ, सात यावत् दश, संख्याता, असख्याता, अने अनंत द्रव्योना द्विकसंयोग त्रिकसंयोग, यावत् दशसंयोग, वारसंयोग उपयोगपूर्वक कहेवा अने ज्या जेटला संयोगो थाय त्या ते सर्व कहेवा. ए वधा संयोगो \*नवम शतकना प्रवेशनकमा जे प्रकारे कहीशु तेम उपयोगपूर्वक विचारीने कहेवा, यावत् असख्येय अने अनंत द्रव्योनी परिणाम ए प्रमाणे जाणवो, परन्तु एक पद अधिक करीने कहेवु, यावत् अथवा अनंत द्रव्यो परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय, यावत् अनंत द्रव्यो आयतसंस्थानपणे परिणत होय.

६९. [प्र०] हे भगवन् ! प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत अने विस्ससापरिणत ए पुद्गलोमां कया पुद्गलो कोनाथी यावद् विशेषाधिक होय छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडा पुद्गलो प्रयोगपरिणत छे, तेथी मिश्रपरिणत अनंतगुण छे, अने तेथी विस्ससापरिणत अनंतगुण छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे ]

### अष्टमशतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१ मीसाप-घ । २-यव्वं ( एक्कसजोणेणं ) दु-घ ।

६८. \* भग. श. ९. उ० ३२.



## वीओ उद्देशो.

१. [प्र०] कतिचिद्वा णं भंते ! आसीविसा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! दुविद्वा आसीविसा पण्णत्ता, तं जहा- जाति-आसीविसा य कम्मआसीविसा य ।

२. [प्र०] जाइआसीविसा णं भंते ! कतिचिद्वा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! चउद्विद्वा पण्णत्ता, तं जहा- विच्छुयजाति-आसीविसे, मंडुकजाइआसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे ।

३. [प्र०] विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवनिण विसए पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पभू णं विच्छुयजातिआसी-विसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं चोदि विसेणं विसपरिगयं विंसट्टमाणं पकरेत्तए, विसए से विसट्टयाए, नो चैव णं संपत्तीए करेसु वा, करेति वा, करिस्संति वा ।

४. [प्र०] मंडुकजातिआसीविस-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पभू णं मंडुकजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं चोदि विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चैव जाव करिस्संति वा । एयं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं जंतुद्दीवप्पमाणमेत्तं चोदि विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चैव जाव करिस्संति वा । मणुस्सजातिआसीविसस्स वि एयं चैव, नवरं समयखेत्तप्पमाणमेत्तं चोदि विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चैव जाव करिस्संति वा ।

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! \*आशीविपो केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! आशीविपो वे प्रकारना कइया छे; ते आ प्रमाणे-जातिआशीविप अने कर्माशीविप.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जातिआशीविपो केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारना कइया छे; ते आप्रमाणे- १ वृश्चिकजातिआशीविप, २ मंडुकजातिआशीविप, ३ उरगजातिआशीविप अने ४ मनुष्यजातिआशीविप.

३. [प्र०] हे भगवन् ! वृश्चिकजातिआशीविपना विपनो केटले विपय कइयो छे ?-अर्थात् वृश्चिकजातिआशीविपोना विपनुं सामर्थ्य केटलं छे ? [उ०] हे गौतम ! वृश्चिकजातिआशीविप अर्धभरतक्षेत्र प्रमाण शरीरने विपवडे विदलित-नाश-करवा विपथी व्याप्त करवा समर्थ छे. एटलं तेना विपनु सामर्थ्य छे, पण संप्राप्ति-संबन्ध वडे तेओए तेम करुं नथी, तेओ करता नथी, अने करशे पण नहि.

४. [प्र०] मंडुकजातिआशीविपना विपनो केटले विपय छे ? [उ०] हे गौतम ! मंडुकजातिआशीविप पोताना विपथी भरतक्षेत्र-प्रमाण शरीरने व्याप्त करवा समर्थ छे. बाकी सर्व पूर्वनी पेठे जाणहुं, यावत् संप्राप्तिवडे तेम करशे नहि. ए प्रमाणे उरगजातिआशीविप संबन्धे पण जाणहुं, परन्तु विशेष ए छे के ते उरगजातिआशीविप जंबूद्वीपप्रमाण शरीरने पोताना विपथी व्याप्त करवा समर्थ छे; बाकी-सर्व पूर्ववत् जाणहुं; यावत् संप्राप्तिथी तेम करशे नहि. ए प्रमाणे मनुष्यजातिआशीविप संबन्धे पण जाणहुं, परन्तु एटले विशेष छे के ते मनुष्यक्षेत्रप्रमाण शरीरने पोताना विपथी व्याप्त करवा समर्थ छे. बाकी सर्व पूर्ववत् जाणहुं; यावत् संप्राप्तिथी तेम करशे नहि.

### १ विसट्टमाणं क ।

१. ~ आशी एटले दाढा, तेमा जेओने विप होय ते प्राणीओ आशीविप कहेवाय छे. तेना वे प्रकार छे-जातिआशीविप अने कर्माशीविप. साप बीछी चनेरे जाति एटले जन्मथी आशीविप छे कर्म एटले शापादिकथी चीजाने उपघात करनारा ते कर्माशीविप कहेवाय छे. पर्याप्ता पंचेन्द्रिय तिर्यच अने मनुष्यने तपश्चर्यादिकथी अथवा-बीजा कोई-कारणथी आशीविपलच्चि उत्पन्न थाय छे, अने तेथी तेओ शापादिकथी चीजानो नाराकरवानी शक्तिवाळा होय छे. तेओ आशीविपलच्चिना खभावथी सहस्रार देवलोक सुधीना देवोमां उत्पन्न थाय छे, अने देवो अपर्याप्त अवस्थामां पूर्वे तेणे आशीविपभावनो अनुभव करेले होवाथी कर्माशीविपलच्चिवाळा होय छे. —टीका

५. [प्र०] जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे, तिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे, मणुस्सकम्मआसीविसे, देवकम्मआसीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइयकम्मआसीविसे, तिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे वि, मणुस्सकम्मआसीविसे वि, देवकम्मआसीविसे वि ।

६. [प्र०] जइ तिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे, जाव नो चउरिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे; पंचिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे ।

७. [प्र०] जइ पंचिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे किं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे, गम्भवकंतिय-पंचिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे ? [उ०] एवं जहा वेउद्वियसरीरस्स भेदो, जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयगम्भवकंतियपंचिंदियतिरिक्खजोगियकम्मआसीविसे, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय— जाव कम्मआसीविसे ।

८. [प्र०] जदि मणुस्सकम्मआसीविसे किं संमुच्छिममणुस्सकम्मआसीविसे, गम्भवकंतियमणुस्सकम्मआसीविसे ? [उ०] गोयमा ! णो संमुच्छिममणुस्सकम्मआसीविसे, गम्भवकंतियमणुस्सकम्मआसीविसे, एवं जहा वेउद्वियसरीरं, जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमंगगम्भवकंतियमणुस्सकम्मआसीविसे, नो अपज्जत्ता— जाव कम्मआसीविसे ।

९. [प्र०] जदि देवकम्मआसीविसे किं भवणवासिदेवकम्मआसीविसे, जाव वेमाणियदेवकम्मआसीविसे ? [उ०] गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मआसीविसे, वाणमंतर—जोतिसिय—वेमाणियदेवकम्मआसीविसे वि ।

१०. [प्र०] जदि भवणवासिदेवकम्मआसीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मआसीविसे, जाव थणियकुमार— जाव कम्मआसीविसे ? [उ०] गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मआसीविसे वि, जाव थणियकुमार— जाव कम्मआसीविसे वि ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! जो कर्माशीविप छे तो शुं नैरयिक कर्माशीविप छे, तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे, मनुष्य कर्माशीविप छे के देव कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिक कर्माशीविप नथी, पण तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे, मनुष्य कर्माशीविप छे अने देव-कर्माशीविप छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जो तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे के यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिकथी आरंभी यावत् चतुरिन्द्रिय तिर्यचयोनिकपर्यन्त कर्माशीविप नथी, पण पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! जो पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे तो शुं समूर्द्धिम पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे के गर्भजपंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम वक्रियशरीरसंबन्धे जीव भेद कह्यो छे तेम यावत् पर्याप्त संख्यात-वर्पना आयुष्यवाळा गर्भज कर्मभूमिमा उत्पन्न थयेला पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविप होय छे, पण अपर्याप्त असंख्यातवर्पना आयुष्य-वाळा यावत् कर्माशीविप नथी.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जो मनुष्य कर्माशीविप छे, तो शुं समूर्द्धिम मनुष्य कर्माशीविप छे के गर्भज मनुष्य कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! समूर्द्धिम मनुष्य कर्माशीविप नथी, पण गर्भज मनुष्य कर्माशीविप छे. जेम वक्रियशरीरसंबन्धे जीवभेद कह्यो छे ते प्रमाणे यावत् पर्याप्त संख्यातवर्पना आयुष्यवाळा कर्मभूमिमा उत्पन्न थयेला गर्भज मनुष्य कर्माशीविप छे पण अपर्याप्त असंख्यात वर्पना आयुष्यवाळा कर्माशीविप नथी.

९. [प्र०] हे भगवन् ! जो देव कर्माशीविप छे तो शुं भवनवासी देव कर्माशीविप छे के यावत् वैमानिकदेव कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! भवनवासी देव कर्माशीविप छे, वानव्यंतर देव, ज्योतिष्क देव, अने वैमानिकदेव पण कर्माशीविप छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! जो भवनवासी देव कर्माशीविप छे तो शुं असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविप छे के यावत् स्तनित-कुमार भवनवासी देव कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! असुरकुमार भवनवासी देव पण कर्माशीविप छे, यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव पण यावत् कर्माशीविप छे.

११. [प्र०] जदि असुरकुमार- जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्ताअसुरकुमारभवनवासिदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ताअसुरकुमार- जाव कम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो पज्जत्ताअसुरकुमार- जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्ताअसुरकुमार- जाव कम्मासीविसे; एवं जाव थणियकुमाराणं ।

१२. [प्र०] जदि चाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायावाणमंतरदेवकम्मासीविसे ? [उ०] एवं सधेसि अपज्जत्तागाणं, जोहसियाणं सधेसि अपज्जत्तागाणं ।

१३. [प्र०] जदि वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! कप्पोपगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

१४. [प्र०] जदि कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोहम्मकप्पोवग- जाव कम्मासीविसे, जाव अशुयकप्पोवग- जाव कम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो आणयकप्पोवग-, जाव नो अशुयकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

१५. [प्र०] जदि सोहम्मकप्पोवग- जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणिय-, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, एवं जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणिय- जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवग- जाव कम्मासीविसे ।

१६. दस ठाणाइं छउमत्थे सधभावणं न जाणति न पासति, तं जहा- १ धम्मत्थिकायं, २ अधम्मत्थिकायं, ३ आणासत्थिकायं, ४ जीवं असरीरपडिवद्धं, ५ परमाणुपोग्गळं, ६ सद्धं, ७ गंधं, ८ वातं, ९ अयं जिणे भविस्सद्दं चा णवा भविस्सद्दं,

११. [प्र०] हे भगवन् ! जो असुरकुमार यावत् कर्माशीविप छे तो शुं पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविप छे के अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविप नयी, पण अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविप छे, ए प्रमाणे यावत् स्तानितकुमारो सुधी जाणवुं.

१२. [प्र०] जो वानव्यंतर देवो कर्माशीविप छे तो शु पिशाच वानव्यंतर देवो कर्माशीविप छे ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! तुज्जे वधा अपर्याप्तावस्थामां कर्माशीविप छे, तेम सधब्बा प्योनिष्को पण अपर्याप्तावस्थामा कर्माशीविप छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! जो वैमानिक देव कर्माशीविप छे तो शुं कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे के कल्पातीत वैमानिक देव कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे, पण कल्पातीत वैमानिक देव कर्माशीविप नयी.

१४. [प्र०] जो कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे, तो शुं सौधर्मकल्पोपपन्नक यावत् कर्माशीविप छे के यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक देव कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे, यावत् सहस्सारकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे, पण आनतकल्पोपपन्नक, यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप नयी.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जो सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे, तो शुं पर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे के अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप नयी, पण अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव यावत् कर्माशीविप छे; ए प्रमाणे यावत् पर्याप्त सहस्सारकल्पोपपन्नक देव यावत् कर्माशीविप नयी, पण अपर्याप्त सहस्सारकल्पोपपन्नक देव यावत् कर्माशीविप छे.

१६. "छद्मस्य (जानी) सर्वभावयी-प्रत्यक्ष ज्ञानयी आ दग् वस्तुओने जाणतो नयी, तेम जोतो नयी, ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकाय, अवर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीररहित (मुक्त) जीव, परमाणुपुद्गल, शब्द, गंध, वायु, आ जीव जिन थरो के नहि ?, अने आ जीव

१ -कुमार जाव क- घ । २ कुमारभवनवासीक- घ । ३ एवं थणिय-घ । ४ जाव क- ख-ग । ५ -यदेव जाव क- क । ६ सोधम्म-क ।

१६ \* छद्मस्य एटले संपूर्णज्ञान (केवलज्ञान) रहित, परन्तु आ स्वल्हे तेनो अयं 'अवध्यादिविशिष्टज्ञान रहित' एवो जाणवो, केमके विशिष्ट अवधिज्ञानी अमूर्त होवायी धर्मास्तिकायादिने जाणतो नयी, पण मूर्त होवायी परमाण्वादिने जाणे छे कारण के विशिष्ट अवधिज्ञानो विषय सर्व मूर्त द्रव्यो छे. अहाँ कोइ शका करे के छद्मस्य परमाण्वादिने कथंचित् जाणे, पण सर्व पर्याप्तयी न जाणे, ते माटे छद्ममा 'सर्वभावयी न जाणे' एम कथुं छे. तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे- एम अर्थ करवायी दश संख्यानो नियम नहि रहै, केमके घटादि घणा पदार्थो अनन्त पर्याप्तये छद्मस्थने जाणवा अशक्य छे, माटे सर्वभावनो अर्थ साक्षात्-प्रत्यक्ष एवो करवो. एटले अवध्यादि विशिष्टज्ञानरहित छद्मस्य धर्मास्तिकायादि दशवस्तुने प्रत्यक्षरूपे न जाणे अने न देखे.—टीका.

१० अयं सद्यदुक्खाणं अंतं करेस्सति वा नवा करेस्सइ । एयाणि चैव उप्पन्ननाण—दंसणधरे अरहा जिणे केवली सद्यभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं, जाव करेस्सति वा नवा करेस्सति ।

१७. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! णाणे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे णाणे पण्णत्ते, तं जहा— आभिणिवोहियणाणे, सुयणाणे, ओहिणाणे, मणपज्जवनाणे, केवलणाणे ।

१८. [प्र०] से किं तं आभिणिवोहियणाणे ? [उ०] आभिणिवोहियणाणे चउद्विहे पन्नत्ते, तं जहा—उग्गहो, ईहा, अवाओ, धारणा; एवं जहा 'रायप्पसेणइज्जे' णाणाणं भेदो तहेव इह भाणियओ, जाव सेत्तं केवलणाणे ।

१९. [प्र०] अन्नाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तं जहा— मइअन्नाणे, सुयअन्नाणे, विभंगणाणे ।

२०. [प्र०] से किं तं मइअन्नाणे ? [उ०] मइअन्नाणे चउद्विहे पण्णत्ते, तं जहा— उग्गहे, जाव धारणा ।

२१. [प्र०] से किं तं उग्गहे ? [उ०] उग्गहे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य, एवं जहेव आभिणि-वोहियणाणं तहेव, नवरं एगइयवज्जं जाव नोइदियधारणा । सेत्तं धारणा, सेत्तं मइअन्नाणे ।

२२. [प्र०] से किं तं सुयअन्नाणे ? [उ०] जं इमं अन्नाणिपहिं मिच्छादिट्ठिपहिं जहा नंदीए, जाव चत्तारि वेदा संगो-वंगा, सेत्तं सुयअन्नाणे ।

सर्वं दुःखोऽन्तं करशे के नहि ?—ए दश स्थानोऽने उत्पन्नं ज्ञानं—दर्शनने धारणं करनारं अर्हन्, जिन, केवली सर्वभावधी—साक्षात् ज्ञानधी जाणे छे अने जुए छे. जेमके धर्मास्तिकाय, यावत् आ जीव सर्वदुःखोऽन्तं करशे के नहि.

### ज्ञान.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञान पांच प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे—\*आभिनि-वोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! आभिनिवोधिक ज्ञान केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिवोधिक ज्ञान चार प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे— १. अवग्रह, ईहा, अपाय अने धारणा. जेम 'राजप्रश्रीय' सूत्रमा ज्ञानोना प्रकार कह्या छे तेम अर्ही पण कहेवा; यावत् 'ए प्रमाणे केवलज्ञान कहुं' त्यां सुधी कहेहुं.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! १. अज्ञान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! अज्ञान त्रण प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—मति-अज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! मतिअज्ञान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! मतिअज्ञान चार प्रकारं छे. ते आप्रमाणे— अवग्रह, यावत् धारणा.

२१. [प्र०] अवग्रह केटला प्रकारे छे ? [उ०] अवग्रह वे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—अर्थावग्रह अने 'व्यंजनावग्रह'—ए प्रमाणे जेम 'नंदीसूत्रमा आभिनिवोधिकज्ञान सवधे कहुं छे तेम अर्ही जाणवुं. परन्तु त्या आभिनिवोधिकज्ञान प्रसंगे अवग्रहादिना ॥कार्यिक—समानार्थक शब्दो कहेला छे ते शिवाय यावत् नोइन्द्रियधारणा सुधी कहेहुं, ए प्रमाणे धारणा कही. ए प्रमाणे मतिअज्ञान कहुं.

२२. [प्र०] श्रुतअज्ञान केवा प्रकारं छे ? [उ०] 'जे अज्ञानी एवा मिथ्यादृष्टिओए प्ररुप्युं छे'—इत्यादि \*\*नंदीसूत्रमा कह्या प्रमाणे यावत् सांगोपाग चार वेद ते श्रुतअज्ञान, ए प्रमाणे श्रुतअज्ञान कहुं.

१७ \* अभि-अर्थाभिमुख एटले यथार्थ, नि-निश्चित, बोध ते आभिनिवोधिक, अर्थात् इन्द्रिय अने अनिन्द्रियनिमित्तक यथार्थ अने निश्चित बोध ते आभिनिवोधिकज्ञान. श्रुत एटले श्रवण करवुं ते द्वारा जे ज्ञान थाय ते श्रुतज्ञान, इन्द्रिय अने मनधी श्रुतप्रत्यानुसारे जे बोध थाय ते श्रुतज्ञान. अवधि-सर्वं मूर्तद्रव्योनी मर्यादा-धी जे प्रत्यक्ष ज्ञान थाय ते अवधिज्ञान. मनोद्रव्यना पर्याय-आकारविशेष-तुं जे ज्ञान ते मन पर्यवज्ञान सर्वं द्रव्य पर्यायतुं संपूर्ण ज्ञान ते केवलज्ञान.

१८. † रूपादि अर्थनो विशेषरहित सामान्य बोध ते अवग्रह, विद्यमान अर्थना विशेष धर्मनी विचारणा करवी ते ईहा, अर्थनो निश्चय करवो ते अपाय, निश्चित अर्थने स्मृति इत्यादि रूपे धारण करवो ते धारणा

‡ राजप्रश्रीय प. १३०-१. पं. ४.

१९. ॥ विपरीत अथवा मिथ्या ज्ञानने अज्ञान कहे छे.

२१. § व्यंजनावग्रह-जे वडे अर्थ प्रकट करवो ते व्यञ्जन, एटले उपकरणेन्द्रिय अने शब्दादिरूपे परिणाम पामेल द्रव्यनो समूह. उपकरणेन्द्रिय वडे प्राप्त थयेल शब्दादि विषयोऽप्यव्यक्त ज्ञान ते व्यंजनावग्रह, लारपछी 'आ काइक छे' एवो सामान्य अवबोध ते अर्थावग्रह. § नंदीसूत्र प. १६८-२. पं. ४.

॥ अवग्रहता, अवधारणता, श्रवणता, अवलंबनता अने मेधा-आ पाव अवग्रहना एकार्थक शब्दो कह्या छे अने ईहादिना पण एकार्थक शब्दो कह्या छे ते अर्ही मतिअज्ञानने विषे न कहेवा.

२२. \*\* नंदीसूत्र. प. १९४-१. पं. ४.

૨૩. [પ્ર૦] સે કિં તં વિમંગનાણે ? [ઉ૦] વિમંગનાણે અણેગવિદે પળ્ણત્તે, તં જહા—ગામસંટિપ, નગરસંટિપ, જાલ સન્નિવેસસંટિપ, દીવસંટિપ, સમુદ્ધસંટિપ, વાસસંટિપ, વાનહરસંટિપ, પદ્ધયસંટિપ, સ્વપ્પસંટિપ, થુમ્મસંટિપ, દયસંટિપ, ગયસંટિપ, નરસંટિપ, કિંતરસંટિપ, કિંપુરિસસંટિપ, મહોરગસંટિપ, ગંધવસંટિપ, ઉસમસંટિપ, પમુ—પસય—વિદ્ધગ—વાનરણાણા-સંટાણસંટિપ પળ્ણત્તે ।

૨૪. [પ્ર૦] જીવાણં મંતે ! કિં નાણી અચ્ચાણી ? [ઉ૦] ગોયમા ! જીવા નાણી વિ અચ્ચાણી વિ; જે નાણી તે અન્થે-ગતિયા દુચ્ચાણી, અન્થેગતિયા તિચ્ચાણી, અન્થેગતિયા ચ્ચડનાણી, અન્થેગતિયા પ્ગનાણી । જે ઠુંચાણી તે આમિણિવોહિયનાણી ય સુયનાણી ય । જે તિચ્ચાણી તે આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી, અથવા આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, મળપ્પચ્ચવનાણી । જે ચ્ચડનાણી તે આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી, મળપ્પચ્ચવનાણી । જે પ્ગનાણી તે નિયમા કેવલનાણી । જે અચ્ચાણી તે અન્થેગતિયા દુચ્ચાણી, અન્થેગતિયા તિચ્ચાણી । જે દુચ્ચાણી તે મદ્ધઅચ્ચાણી સુયઅચ્ચાણી ય । જે તિચ્ચાણી તે મદ્ધઅચ્ચાણી, સુયઅચ્ચાણી, વિમંગનાણી ।

૨૫. [પ્ર૦] નેરહ્યા ણં મંતે ! કિં ણાણી, અચ્ચાણી ? [ઉ૦] ગોયમા ! નાણી વિ, અચ્ચાણી વિ । જે નાણી તે નિયમા તિચ્ચાણી, તં જહા—આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી । જે અચ્ચાણી તે અન્થેગતિયા દુચ્ચાણી, અન્થેગતિયા તિચ્ચાણી; एवं તિચ્ચિ અચ્ચાણાણિ મયણાપ ।

૨૬. [પ્ર૦] અસુરકુમારા ણં મંતે ! કિં નાણી, અચ્ચાણી ? [ઉ૦] જહેવ નેરહ્યા તહેવ, નિચ્ચિ નાણાણિ નિયમા, નિચ્ચિ ય અચ્ચાણાણિ મયણાપ, एवं જાવ ધણિયકુમારા ।

૨૭. [પ્ર૦] પુદ્ધચિદ્ધાહ્યા ણં મંતે ! કિં નાણી, અચ્ચાણી ? [ઉ૦] ગોયમા ! નો નાણી, અચ્ચાણી । જે અચ્ચાણી તે નિયમા દુઅચ્ચાણી—મદ્ધઅચ્ચાણી ય સુયઅચ્ચાણી ય । एवं જાવ વળસ્સદ્ધાહ્યા ।

વિમગજ્ઞાન

૨૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! વિમંગજ્ઞાન કેવા પ્રકારનું કાર્ય છે ? [ઉ૦] \*વિમંગજ્ઞાન અનેક પ્રકારનું કાર્ય છે, તે આ પ્રમાણે—પ્રાણને આકારે, વર્ષ ( ભારતાદિક્ષેત્ર )ને આકારે, વર્ષધરપર્વતને આકારે, પર્વતને આકારે, વૃક્ષના આકારે, સ્વપ્ના આકારે, ઘોડાના આકારે, હાર્થીના આકારે, મનુષ્યના આકારે, કિંનરના આકારે, કિંપુરુપના આકારે, મહોરગના આકારે, ગંધર્વના આકારે, વૃષભના આકારે, પશુ, પંસય, પક્ષી અને વાનરના આકારે—૯ પ્રમાણે અનેક આકારે વિમંગજ્ઞાન કહેલું છે.

જાની અને અજ્ઞાની

૨૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શું જીવો જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જીવો જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે. જે જીવો જ્ઞાની છે તેમા કેટલાક વે જ્ઞાનવાળા, કેટલાક ત્રણ જ્ઞાનવાળા, કેટલાક ચાર જ્ઞાનવાળા અને કેટલાક ૯ક જ્ઞાનવાળા છે. જે વે જ્ઞાનવાળા છે તે મતિજ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાનવાળા છે. જે ત્રણ જ્ઞાનવાળા છે તે મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અને અવધિજ્ઞાનવાળા છે, અથવા મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને મન.પર્યવજ્ઞાનવાળા છે. જે ચારજ્ઞાનવાળા છે તે મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન.પર્યવજ્ઞાનવાળા છે. જે ૯ક જ્ઞાનવાળા છે તે અવધ્ય ૯ક કેવલજ્ઞાનવાળા છે. જે જીવો અજ્ઞાની છે તેમા કેટલાક વે અજ્ઞાનવાળા અને કેટલાક ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે. જે વે અજ્ઞાનવાળા છે તે મતિઅજ્ઞાન, અને શ્રુતઅજ્ઞાનવાળા છે, અને જેઓ ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે તેઓ મતિઅજ્ઞાન, શ્રુતઅજ્ઞાન, અને વિમંગજ્ઞાનવાળા છે.

નૈરવિક્ષો.

૨૫. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! નારકો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! નારકો જ્ઞાનો પણ છે અને અજ્ઞાનો પણ છે. તેમા જે જ્ઞાનો છે તે અવધ્ય ૩જ્ઞાન જ્ઞાનવાળા હોય છે, તે આ પ્રમાણે—મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાનવાળા. જે અજ્ઞાનો છે તેમા કેટલાક ૬વે અજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાક ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે. ૯ પ્રમાણે ત્રણ અજ્ઞાનો મજના ૯ ( વિકલ્પે ) હોય છે.

અસુરકુમારો.

૨૬. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અસુરકુમારો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો છે ? [ઉ૦] જેમ નૈરવિક્ષો કહ્યા તેમ અસુરકુમારો જાણવા. અર્થાત્ જેઓ જ્ઞાનો છે તેઓ અવધ્ય ત્રણ જ્ઞાનવાળા હોય છે, અને જેઓ અજ્ઞાનો છે તેઓ મજના ૯ ત્રણ અજ્ઞાનવાળા હોય છે. ૯ પ્રમાણે યાવત્ સ્થાનિતકુમારો સુધી જાણવું.

પૃથિવૈકાથિક.

૨૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! પૃથિવૈકાથિકો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાનો નથી પણ અજ્ઞાનો છે, અને તે અવધ્ય વે અજ્ઞાનવાળા છે, મતિઅજ્ઞાનો અને શ્રુતઅજ્ઞાનો. ૯ પ્રમાણે યાવત્ વનસ્પતિકાથિક સુધી જાણવું.

૧ મહોરગગંધવ સંટિપ ના । > દુયનાણી ક-ટ ।

૨૩ \* સિધ્ધાદર્શન મોહનીય કર્મના ઉચ્ચથી વિપરીત ૯વુ અવધિજ્ઞાન વે વિમગજ્ઞાન, તેનો પ્રામ માત્ર નિપય હોવાથી તે પ્રામાકારે કહેવાય છે ૯ પ્રમાણે ધીજા મેદો પણ જાણી લેવા । પસય વે સરીવાલ્લુ ડંગલી ચોપયુ પ્રાણી ધિષેપ.—ટીનાકાર.

૨૫ † સમ્પદ્ધટિ નારદોને મવપ્રત્યય અવધિજ્ઞાન હોય છે, તેથી તેઓ અવધ્ય ત્રણજ્ઞાનવાળા હોય છે. ‡ જે અજ્ઞાનો છે તેનાં કેટલાક વે અજ્ઞાનવાળા છે, કેમકે ક્ષોદ અસ્ત્રી પચેન્દ્રિય તિર્થંચ નરવમા ઉત્પન ધાય સારે તેઓને અપર્યાપ્તાવસ્થાના વિમંગ ન હોવાથી વે અજ્ઞાન હોય છે, અને જો સિધ્ધાદટિ સંઠી પંચેન્દ્રિય નરકમા ઉત્પન ધાય તો તેઓને અપર્યાપ્તાવસ્થામા પણ વિમંગજ્ઞાન હોય છે તેથી ત્રણ અજ્ઞાન કહ્યા છે—ટીનાકાર.

२८. [प्र०] वेद्द्रियाणं पुच्छ । [उ०] गोयमा ! णाणी वि अच्चाणी वि । जे नाणी ते नियमा दुच्चाणी, तं जहा—आभि-  
णिबोहियनाणी य सुयनाणी य । जे अच्चाणी ते नियमा दुअच्चाणी, तं जहा—मइअच्चाणी य सुयअच्चाणी य । एवं तेद्द्रिय—चउं-  
रिद्रिया वि ।

२९. [प्र०] पंचिद्रियतिरिक्वजोणियाणं पुच्छ । [उ०] गोयमा ! नाणी वि अच्चाणी वि । जे नाणी ते अन्धेगइया  
दुच्चाणी, अत्येगतिया तिच्चाणी । एवं तिण्णि णाणाणि तित्ति अच्चाणाणि य भयणाए । मणुस्सा जहा जीवा, तहेव पंच नाणाइं  
तित्ति अच्चाणाणि य भयणाए । वाणमंतरा जहा नेरइया । जोइसियन्नेमाणियाणं तित्ति नाणाणि तित्ति अच्चाणाणि नियमा ।

३०. [प्र०] सिद्धाणं भंते ! पुच्छ । [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अच्चाणी; नियमा पगनाणी केवलणाणी ।

३१. [प्र०] निरयगतियाणं भंते ! जीवा किं नाणी, अच्चाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी वि अच्चाणी वि, तित्ति नाणाइं  
नियमा, तित्ति अच्चाणाइं भयणाए ।

३२. [प्र०] तिरियगतियाणं भंते ! जीवा किं नाणी अच्चाणी ? [उ०] गोयमा ! दो नाणा, दो अच्चाणा नियमा ।

२८. [प्र०] \*वेद्द्रिय जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जेओ  
ज्ञानी छे तेओ अवश्य वे ज्ञानवाळा छे, ते आ प्रमाणे—मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी. जेओ अज्ञानी छे ते अवश्य वे अज्ञानवाळा छे; ते आ  
प्रमाणे—मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. ए प्रमाणे त्रीन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय जीवो संवन्धे पण जाणहुं.

२९. [प्र०] पचेन्द्रियतिर्यचयोनिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे अने अज्ञानी पण छे, जेओ  
ज्ञानी छे तेमा केटलाक वे ज्ञानवाळा, अने केटलाक त्रण ज्ञानवाळा छे, ए प्रमाणे त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए (विकल्पे) जाणवां.  
जीवोनीं पेटे मनुष्योने पाच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. नैरयिकोने कहुं (सू. २५.) तेम वानव्यंतरोने जाणहुं. ज्योतिपिको  
अने वैमानिकोने अवश्य त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! सिद्धो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! सिद्धो ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी, तेओ  
अवश्य एक केवलज्ञानवाळा छे.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! निरयगतिक—नरकगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे ? [उ०] हे गौतम ! ते ज्ञानी  
पण होय छे अने अज्ञानी पण होय छे, [जेओ ज्ञानी छे] तेओने अवश्य त्रण ज्ञान होय छे अने [जे अज्ञानी छे तेओने] त्रण अज्ञान  
भजनाए होय छे.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यचगतिक—तिर्यचगतिमा जता जीवो—शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे ? [उ०] हे गौतम !  
तेओने अवश्य वे ज्ञान अने वे अज्ञान होय छे.

१ नाणा घ । २ अच्चाणा घ ।

२८. \* वेद्द्रियादि जीवोमा पूर्ववदासुए मनुष्य के तिर्यच औपगमिकसम्यग्दृष्टि उपसाम सम्यक्त्व वमतो उत्पद्य भाय ल्यारे तेने अपर्याप्तावस्थाए  
सास्वादन सम्यग्दर्शन होय छे ते जघन्यथी एक रामय, अने उरुहृष्ट छ आवलिका सुधी रहे छे, त्या सुधी ते ज्ञानी कहेवाय छे. लार पछी ते मिथ्यात्वने  
आस घाय छे ल्यारे ते अज्ञानी कहेवाय छे.

३१. † १ गति, २ इन्द्रिय, ३ काय, ४ सूक्ष्म, ५ पर्याप्त, ६ भवस्य, ७ भवउद्विदिक, ८ संज्ञी, ९ लक्ष्य, १० उपयोग, ११ छेद्वा, १२ कषाय,  
१३ वेद, १४ आहार, १५ ज्ञान, १६ गोचर ( विषय ), १७ काल, १८ अंतर, १९ अल्पवहुत्व अने २० पर्याय—ए बीज द्वारा अहीं विभक्त छे. तेमा  
प्रथम गतिद्वारने विषे निरयगति द्वार कहे छे. निरय—नरकने विषे गति—गमन जेओहुं छे तेओ निरयगतिक कहेवाय छे एउठे सम्यग्दृष्टि के मिथ्यादृष्टि,  
ज्ञानी के अज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यच अने मनुष्य नरकमा उत्पन्न धया वाळा अन्तर गतिमा वर्तता होय ते निरयगतिक समजवा, ते माटे अहीं निरयगच्छनी  
साथे गतिप्रदण करेल छे निरयगतिकने—जो ते ज्ञानी होय तो तेने—त्रण ज्ञान अवश्य होय छे, केमके तेने अविज्ञान भवप्रलय होवापी ते अन्तर गतिमां  
पण होय छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे, केमके असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यच नरकमां जाय ल्यारे अपर्याप्तावस्थाए विभंगज्ञान न होवापी तेने बे  
अज्ञान होय छे, अने मिथ्यादृष्टि सरीने त्रण अज्ञान होय छे, कारणके तेने भवप्रलय विभंगज्ञान होय छे. —टीका.

३२ ‡ तिर्यचगतिमा जता यथे अन्तराल गतिमा वर्तता होय ते तिर्यचगतिक जीवो जानवा, तेने ते ज्ञान अने वे अज्ञान होय छे, केमके सम्यग्दृष्टि जीवो  
अविभंगज्ञानथी पठ्या पछी मतिभुनज्ञानसहित तिर्यचगतिमा जाय छे, तेगी तेने वे ज्ञान होय छे, अने मिथ्यादृष्टि जीवो विभंगज्ञानथी पठ्या पछी तिर्यच-  
गतिमां पाय छे माटे तेने वे अज्ञान होय छे —टीका.

૩૩. [પ્ર૦] મણુસ્સગદ્દયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી, અદ્દાણી ? [૩૦] ગોયમા ! તિદ્ધિ નાણાં મયણાપ, દો અદ્દાણાં નિયમા । દેવગતિયા જહા નિરયગતિયા ।

૩૪. [પ્ર૦] સિદ્ધગતિયા ણં મંતે ? [૩૦] જહા સિદ્ધા ।

૩૫. [પ્ર૦] સહંદિયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અદ્દાણી ? [૩૦] ગોયમા ! ચત્તારિ નાણાં, તિદ્ધિ અદ્દાણાં મયણાપ ।

૩૬. [પ્ર૦] ઈંદિયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી ? [૩૦] જહા પુઠવિકાદ્દયા, વેહંદિય-તેહંદિય-ચરિંદિયાણં દો નાણા, દો અદ્દાણા નિયમા । પંચિંદિયા જહા સહંદિયા ।

૩૭. [પ્ર૦] અર્ણિદિયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી ? [૩૦] જહા સિદ્ધા ।

૩૮. [પ્ર૦] સકાદ્દયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અદ્દાણી ? [૩૦] ગોયમા ! પંચ નાણાણિ તિદ્ધિ અદ્દાણાં મયણાપ । પુઠવિકાદ્દયા જાવ વણસ્સહકાદ્દયા નો નાણી, અદ્દાણી, નિયમા દુઅદ્દાણી, તં જહા-મતિઅદ્દાણી ય સુયઅદ્દાણી ય । તસ કાદ્દયા જહા સકાદ્દયા ।

મનુષ્યગતિક-

૩૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! \*મનુષ્યગતિક-મનુષ્યગતિમાં જતા જીવો-શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને મજના ( વિકલ્પે ) ત્રણ જ્ઞાન હોય છે અને અવશ્ય વે અજ્ઞાન હોય છે. †દેવગતિક-દેવગતિમાં જતા જીવો-નિરયગતિકની પેઠે ( સૂ. ૩૧. ) જાણવા.

સિદ્ધિગતિક

૩૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! †સિદ્ધિગતિમાં જતા જીવો શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] તેઓ સિદ્ધોની પેઠે ( સૂ. ૩૦. ) જાણવા.

સેન્દ્રિય.

૩૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! †સેન્દ્રિય-ઇન્દ્રિયવાળા-જીવો શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને મજના ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે.

એકેન્દ્રિયાદિ.

૩૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એકેન્દ્રિય જીવો શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! †પૃથિવીકાયિકની પેઠે ( સૂ. ૨૭. ) [ એકેન્દ્રિયજીવો ] જાણવા. વેહિન્દ્રિય, ત્રીંદ્રિય અને ચરિંદ્રિય જીવોને અવશ્ય વે જ્ઞાન અને વે અજ્ઞાન હોય છે. પંચેન્દ્રિય જીવો સેન્દ્રિયજીવોની પેઠે ( સૂ. ૩૫. ) જાણવા.

અનિન્દ્રિય

૩૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! †અનિન્દ્રિય-ઈન્દ્રિયરહિત-જીવો શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] તેઓ સિદ્ધની પેઠે ( સૂ. ૩૦. ) જાણવા.

સકાયિક જીવો.

૩૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સકાયિક જીવો શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને પાંચ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજના હોય છે. પૃથિવીકાયિક યાવત્ વનસ્પતિકાયિક †જીવો જ્ઞાની નથી પણ અજ્ઞાની હોય છે, અને તે અવશ્ય વે અજ્ઞાનવાળા હોય છે, તે આ પ્રમાણે—મતિઅજ્ઞાનવાળા અને શ્રુતઅજ્ઞાનવાળા. ત્રસકાયિક જીવો સકાયિક જીવોની પેઠે જાણવા.

૩૩. \* મનુષ્યગતિમાં જતા અતરાલ ગતિએ વર્તતા હોય તે અહીં મનુષ્યગતિક જાણવા, તેમાના કેટલાક જીવો જે જ્ઞાની છે તે તીર્થકરની પેઠે અવધિજ્ઞાન સાથે જ મનુષ્યગતિમાં જાય છે, અને કેટલાક તેને છોડીને જાય છે, માટે તેઓને ત્રણ અથવા વે જ્ઞાન હોય છે. જે અજ્ઞાની છે તેઓ વિભંગજ્ઞાનથી પચ્ચા પછી મનુષ્યગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે, માટે અવશ્ય તેને વે અજ્ઞાન હોય છે † દેવગતિમાં જતા અન્તરાલ ગતિએ વર્તતા જીવો નરકગતિકની પેઠે જાણવા. કેમકે જે જ્ઞાની દેવગતિમાં જાય છે, તેઓને ભવપ્રસય અવધિજ્ઞાન દેવાયુપ્ને પ્રથમ સમયેજ ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી નારકોની પેઠે તેઓને ત્રણ જ્ઞાન અવશ્ય હોય છે. જેઓ અજ્ઞાની છે અને અસત્તી યકી દેવગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તેઓને અપર્યાપ્તાવસ્થામાં વિભંગજ્ઞાનનો અમાવ હોવાથી વે અજ્ઞાન હોય છે. જે અજ્ઞાની સત્તી યકી આવી દેવગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે તેને ભવપ્રસય વિભંગજ્ઞાન હોવાથી ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે.—ટીકા.

૩૪. † અહીં અન્તરગતિના અમાવથી સિદ્ધ અને સિદ્ધિગતિકનો મેદ નથી, પણ ગતિદ્વારના ક્રમને લીધે તેનો જૂદો નિર્દેશ કર્યો છે.—ટીકા.

૩૫. † ઇન્દ્રિયદ્વારને નિપે સેન્દ્રિય એટલે ઇન્દ્રિયના ઉપયોગવાળા, તે જ્ઞાની અને અજ્ઞાની બંને પ્રકારના છે. તેમા જ્ઞાનીને ચાર જ્ઞાન મજના હોય છે, એટલે વે, ત્રણ કે ચાર જ્ઞાન હોય છે, પણ તેઓને કેવલજ્ઞાન હોતું નથી, કેમકે તે અતીન્દ્રિયજ્ઞાન છે. અહીં વે ઇત્યાદિ જ્ઞાનો કહેલા છે તે લલ્લિની અપેક્ષાએ જાણવા, ઉપયોગની અપેક્ષાએ સર્વને એક જ જ્ઞાન હોય છે અજ્ઞાનીને ત્રણ અજ્ઞાન મજના હોય છે—એટલે કવિત્ વે કે ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે.—ટીકા.

૩૬. † પૃથિવીકાયિકની પેઠે એકેન્દ્રિયજીવો મિથ્યાદૃષ્ટિ હોવાથી અજ્ઞાની છે અને તે વે અજ્ઞાનવાળા છે. વેહિન્દ્રિયાદિક જીવોને વે જ્ઞાન હોય છે, કેમકે તેમા સાત્તાદન ગુણધ્યાનવનો સમવ છે. તે શિવાય વીજાને વે અજ્ઞાન હોય છે —ટીકા.

૩૭. † અનિન્દ્રિય એટલે ઇન્દ્રિયના ઉપયોગરહિત કેવલજ્ઞાની, તેઓને સિદ્ધની પેઠે એક કેવલ જ્ઞાન હોય છે —ટીકા.

૩૮. † કાય એટલે ઔદારિકાદિશરીર અથવા પૃથિવ્યાદિ છ કાય, તે વડે સહિત તે સકાયિક, તેઓ કેવલ પળ હોય, તેથી સકાયિક સમ્યગ્દૃષ્ટિને પાંચ જ્ઞાન અને મિથ્યાદૃષ્ટિને ત્રણ અજ્ઞાન મજના હોય છે.—ટીકા.

३९. [प्र०] अकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

४०. [प्र०] सुहुमा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा पुढविकाइया ।

४१. [प्र०] वादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया ।

४२. [प्र०] नोसुहुमा नोवादरा णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

४३. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया ।

४४. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! नेरइया किं नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा नियमा, जहा नेरइया, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जहा पर्णिदिया । एवं जाव चउरिंदिया ।

४५. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।

४६. [प्र०] अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए ।

४७. [प्र०] अपज्जत्ता णं भंते ! नेरतिया किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा नियमा, तिण्णि अन्नाणा भयणाए । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया जहा पर्णिदिया ।

३९. [प्र०] हे भगवन् ! \*कायरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) तेओ जाणवा.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! †सूक्ष्म जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] †पृथिवीकायिकोनी पेठे (सू० २७.) जाणवा.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ‡वादरजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] ‡सकायिक जीवोनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! †नोसूक्ष्म नोवादर जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] †सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] †सकायिक जीवोनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त †नैरयिको शुं ज्ञानी छे ? के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे. जेम नैरयिको माटे कहुं तेम यावत् स्तनितकुमार देवो माटे जाणहुं. पृथिवीकायिको एकेन्द्रियनी पेठे (सू० ३६.) जाणवा. ए प्रमाणे यावत् चउरिंदियजीवो जाणवा.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान †भजनाए होय छे, मनुष्यो सकायिकनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा. वानव्यंतरो, ज्योतिषिको अने वैमानिको नैरयिकनी पेठे (सू० २५.) जाणवा.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त नैरयिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने अवश्य त्रण ज्ञान छे अने भजनाए त्रण अज्ञान छे, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार देवो जाणवा. जेम एकेन्द्रियो संबन्धे (सू० ३६.) कहुं तेम अपर्याप्त पृथ्वीकायिकधी आरंभी वनस्पतिकायिक पर्यन्त कहेहुं.

३९. \* जेओने पूर्वे कहेल काय एटले औदारिकादि शरीर अथवा पृथिव्यादिकाय नथी ते अकायिक एटले सिद्ध कहेयाय छे.—टीका.

४०. † सूक्ष्मद्वारने विषे सूक्ष्म जीवो पृथिवीकायिकनी पेठे मिथ्यादृष्टि होवाथी तेओने वे अज्ञान होय छे.

४१. ‡ सकायिक जीवोनी पेठे वादर जीवो केवलज्ञानी पण होय छे, माटे तेओने भजनाए पाच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

४३. † पर्याप्तद्वारने विषे पर्याप्त जीवो केवलज्ञानी पण होय छे, माटे ते सकायिकनी जेम पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवा.—टीका.

४४. † असंज्ञी धरि आवेला नारकोने अपर्याप्तवस्थामा विभंगनो अभाव होय छे अने पर्याप्त अवस्थामा तेओने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे.—टीका.

४५. † पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यचमा अधिज्ञान के विभंग ज्ञान केटलाकने होय अने केटलाकने न होय माटे त्रण ज्ञान के त्रण अज्ञान, अथवा वे ज्ञान के वे अज्ञान तेओने होय छे—टीका.



४८. [प्र०] वेददियाणं पुच्छ । [उ०] दो नाणा, दो अघाणा नियमा । एवं जाव पंचिन्द्रियतिरिक्त्वाजोणियाणं ।

४९. [प्र०] अपज्जत्तगा णं भंते ! मणुस्सा किं नाणी अघाणी ? [उ०] तिच्चि नाणाइं भयणाए, दो अघाणाइं नियमा । वाणमंतरा जहा नेरइया । अपज्जत्तगाणं जोइसिय-वेमाणियाणं निच्चि नाणा, तिच्चि अघाणा नियमा ।

५०. [प्र०] नोपज्जत्तगा नोअपज्जत्तगा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

५१. [प्र०] निरयभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी अघाणी ? [उ०] जहा निरयगतिया ।

५२. [प्र०] तिरियभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी अघाणी ? [उ०] तिच्चि नाणा, तिच्चि अघाणा भयणाए ।

५३. [प्र०] मणुस्सभवत्था णं० ? [उ०] जहा सकाइया ।

५४. [प्र०] देवभवत्था णं भंते ! ० ? [उ०] जहा निरयभवत्था । अभवत्था जहा सिद्धा ।

५५. [प्र०] भवसिद्धियाणं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया ।

गहियाँ

अपर्याप्त वेदन्द्रियादि.

४८. [प्र०] अपर्याप्त वेदन्द्रिय जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी ? [उ०] तेओने 'वेज्ञान अने वे अज्ञान अवश्य होय छे. ए यावत् पंचेन्द्रिय नियंत्रयोनिक सुधी जाणवुं

अपर्याप्त मनुष्य.  
अपर्याप्त वाचस्पत्यर  
ज्योतिषिक अने  
वैमानिक.

४९. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त मनुष्य शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान भजनाए होय छे अने अवश्य वे अज्ञान होय छे. नैरयिकोनी पेटे (सू० ४७.) वाचस्पत्यरोंने जाणवुं. तथा 'अपर्याप्त ज्योतिषिको अने वैमानिकोने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे.

नोपर्याप्त नोअ-  
पर्याप्त जीवो.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! नोपर्याप्त अने नोअपर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धनी पेटे (सू० ३०.) जाणवा.

निरयभवस्य.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! निरयभवस्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ निरयगतिकनी पेटे (सू० ३१.) जाणवा.

तिरियभवस्य.

५२. [प्र०] हे भगवन् ! तिरियभवस्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

मनुष्यभवस्य.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यभवस्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सकायिकनी पेटे (सू० ३८.) जाणवा.

देवभवस्य.

५४. [प्र०] हे भगवन् ! देवभवस्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ निरयभवस्यनी पेटे (सू० ५१.) जाणवा. अभवस्य-भवमा नहि रहेनारा [शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ] सिद्धनी पेटे (सू० ३०.) जाणवा.

भवसिद्धि.

५५. [प्र०] हे भगवन् ! भवसिद्धिक-भव्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सकायिकनी पेटे (सू० ३८.) जाणवा.

४८. \* अपर्याप्त वेदन्द्रियादिमाना कोइकने साक्षादन सम्यग्दर्शननो समभव होवार्था वे ज्ञान अने वाकीनाने वे अज्ञान होय छे.

४९ † सम्यग्दृष्टि मनुष्यने अपर्याप्तावस्थामां तीवैकरादिनी पेटे अवधिज्ञाननो समभव छे तेषी त्रण ज्ञान भजनाए होय छे, पण सिध्यादृष्टिने विभग होवुं नथी माटे अवश्य वे अज्ञान होय छे.

‡ अपर्याप्त ब्यन्तरो नारकोनी पेटे अवश्य त्रण ज्ञानवाळा, वे अज्ञानवाळा के त्रण अज्ञानवाळा जाणवा, केमके असही धरनी उत्पन्न थयेला तेने विपे अपर्याप्तावस्थाए विभगज्ञाननो अभाव छे.

§ ज्योतिषिक अने वैमानिकने विपे सजीधी ज आवीने उत्पन्न थाय छे, माटे तेओने अपर्याप्तावस्थामा पण भवप्रत्यय अवधि के विभंगनो अवश्य सद्भाव होवार्था त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.—टीका.

५०. § नोपर्याप्त अने नोअपर्याप्त एटले पर्याप्तमाव अने अपर्याप्तमावना ज्ञमावधी सिद्ध जीवो जाणवा, केमके तेओ पर्याप्त अने अपर्याप्तनाम कर्मधी रहित छे.—टीका

५१ § निरयभवस्य एटले नरकगतिये विपे उत्पत्तिस्थानने प्राप्त थयेला, अने निरयगतिक एटले नरकगतिमा जता अंतरणगतिमा वर्तता, पर्ण उत्पत्तिस्थानने नहि प्राप्त थयेला-एटलो तत्त्वत छे तेओ निरयगतिकनी पेटे त्रण ज्ञानवाळा अने वे के त्रण अज्ञानवाळा जाणवा.—टीका.

५५. || भव्य जीवो सकायिकनी पेटे पाच ज्ञानवाळा के त्रण अज्ञानवाळा भजनाए होय छे

५६. [प्र०] अमवसिद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी; तिन्नि अन्नाणाइं मयणाए ।

५७. [प्र०] नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

५८. [प्र०] सन्नीणं पुच्छा । [उ०] जहा सइंदिया । असन्नी जहा वेइंदिया । नोसन्नी नोअसन्नी जहा सिद्धा ।

५९. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! लद्धी पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा लद्धी पणत्ता, तं जहा— १ णाणलद्धी, २ दंसणलद्धी, ३ चरित्तलद्धी, ४ चरित्ताचरित्तलद्धी, ५ दाणलद्धी, ६ लाभलद्धी, ७ भोगलद्धी, ८ उवभोगलद्धी, ९ वीरियलद्धी, १० इंदियलद्धी ।

६०. [प्र०] णाणलद्धी णं भंते ! कइविहा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पणत्ता, तं जहा— आभिणिवोहियणा-लद्धी, जाव केवलणाणलद्धी ।

६१. [प्र०] अन्नाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा—मइअन्नाणलद्धी, इयअन्नाणलद्धी, विभंगनाणलद्धी ।

६२. [प्र०] दंसणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा—सम्मदंसणलद्धी, मेच्छादंसणलद्धी, सम्मामिच्छादंसणलद्धी ।

५६. [प्र०] हे भगवन् ! अमवसिद्धिक—अभव्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नयी पण अज्ञानी छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

५७. [प्र०] हे भगवन् ! नोभवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धोनी ठे (सू० ३०.) जाणवा.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! संज्ञिजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सेन्द्रियनी पेठे (सू० ३५.) जाणवा. असंज्ञिजीवो वेइन्द्रियनी पेठे (सू० २८.) जाणवा. नोसंज्ञि—नोअसंज्ञिजीवो सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! लब्धि केटला प्रकारे कही छे ? [उ०] हे गौतम ! \*लब्धि दश प्रकारे कही छे, ते आ प्रमाणे— १ ज्ञान-लब्धि, २ दर्शनलब्धि, ३ चारित्रलब्धि, ४ चारित्राचारित्रलब्धि, ५ दानलब्धि, ६ लाभलब्धि, ७ भोगलब्धि, ८ उपभोगलब्धि, ९ वीर्य-लब्धि अने १० इन्द्रियलब्धि.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानलब्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे— आभिनिवोधिकज्ञानलब्धि, यावत् केवलज्ञानलब्धि.

६१. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! अज्ञानलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे— मतिअज्ञानलब्धि, श्रुतअज्ञानलब्धि अने विभंगज्ञानलब्धि.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शनलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—सम्यग्दर्शनलब्धि, मिथ्यादर्शनलब्धि अने सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि.

### १ णाणल-क ।

५९. \* लब्धि—ते ते प्रतिबन्धक कर्मना क्षयादिकधी आत्माने ज्ञानादिगुणनो लाभ थवो, तेना दश प्रकार छे— १ तथाविध ज्ञानावरण कर्मना क्षय के क्षयोपशमधी यथासंभव पांच प्रकारना ज्ञाननो लाभ थवो ते ज्ञानलब्धि. २ सम्यक्, मिथ्र के मिथ्याधदानरूप आत्मानो परिणाम ते दर्शनलब्धि ३ चारित्र-मोहनीय कर्मना क्षय, उपशम के क्षयोपशमधी थयेलो आत्मपरिणाम ते चारित्रलब्धि ४ अप्रत्याप्त्यानावरण करायना क्षयोपशमधी थयेलो देवभिरनिष्प धान-परिणाम ते चारित्राचारित्रलब्धि. ५ अन्तराय कर्मना क्षय के क्षयोपशमधी उत्पन्न थयेली दानादि ५ लब्धिओ. अहीं भोग अने उपभोगमा एटलो विरोध छे के एकवार मात्र जेनो उपयोग थइ शके एवा आहारादिने भोग कहेवाय छे अने वारवार जेनो उपयोग थइ शके एवा ब्रह्म-भवनादि पदार्थने उपभोग करेवाय छे. १० मतिज्ञानावरणकर्मना क्षयोपशमधी प्राप्त थयेल भावेन्द्रियोनो तथा एकेन्द्रियादि जातिनामकर्म अने पर्याप्तनामकर्मना उदयधी द्रव्येन्द्रियोनो लाभ थयो ते इन्द्रियलब्धि.—टीका.

६२. † १ मिथ्यात्वमोहनीयकर्मना उपशम, क्षय के क्षयोपशमधी थएल धदानरूप आनपरिणाम ते सम्यग्दर्शनलब्धि, २ षण्णद मिथ्यात्वपुद्गलना वेदनधी थएल विपर्यायरूप जीवपरिणाम ते मिथ्यादर्शनलब्धि, अने ३ धर्म विद्युद मिथ्याच पुद्गलना वेदनधी उत्पन्न थएल मिथ्यदर्शिन जीवपरिणाम ते सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि.

६३. [प्र०] चरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा— सामाह्यचरित्तलद्धी, छेदोवट्टावणियलद्धी, परिहारविंसुद्धिलद्धी, सुहुमसंपरायलद्धी, अहक्खायचरित्तलद्धी ।

६४. [प्र०] चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पगागारा पन्नत्ता, एवं जाव उवभोगलद्धी पगागारा पन्नत्ता ।

६५. [प्र०] वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिचिहा पन्नत्ता, तं जहा—वालवीरियलद्धी, पंडियवीरियलद्धी, वालपंडियवीरियलद्धी ।

६६. [प्र०] इंदियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियलद्धी, जाव फासिंदियलद्धी ।

६७. [प्र०] नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । अत्येगतिया दुन्नाणी एवं पंच नाणां भयणाए ।

चारित्रलद्धि

६३. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्रलद्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! चारित्रलद्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१\* सामायिकचारित्रलद्धि, २ छेदोपस्थापनीयचारित्रलद्धि, ३ परिहारविशुद्धिकचारित्रलद्धि, ४ सूक्ष्मसंपरायचारित्रलद्धि अने ५ यथाख्यातचारित्रलद्धि.

चारित्राचारित्रलद्धि.

६४. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्राचारित्रलद्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनी कही छे, ए प्रमाणे [दान लद्धि], यावत् उपभोगलद्धि पण एक प्रकारनी कही छे.

वीर्यलद्धि.

६५. [प्र०] हे भगवन् ! वीर्यलद्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! वीर्यलद्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—वालवीर्यलद्धि, पडितवीर्यलद्धि अने वालपंडितवीर्यलद्धि.

इन्द्रियलद्धि.

६६. [प्र०] हे भगवन् ! इन्द्रियलद्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! इन्द्रियलद्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे— श्रोत्रेन्द्रियलद्धि यावत् स्पर्शेन्द्रियलद्धि.

ज्ञानलद्धिवाळा ज्ञानी के अज्ञानी ?

६७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानलद्धिवाळा जीवो शु ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी. केटला एक वेज्ञानवाळा छे, ए प्रमाणे तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे.

१-विशुद्धल-घ । २-सपरागल-क ।

६३\* ( १ ) हिंसादि सावध योगथी विरति ते सामायिकचारित्र, तेना वे प्रकार छे—इत्तर अने यावत्कथिक. इत्तर एटले अल्पकालिन, ते इत्तर सामायिक पहेंला अने छेला तीर्थकरना तीर्थने विषे प्रथम वीक्षा लेनारने होय छे यावत्कथिक एटले यावत्जीव, ते चारित्र मध्यम वावीश तीर्थकरना तीर्थने विषे वर्तमान साधुओने होय छे, केमके तेओ ऋषु अने ब्राह्म होवाथी तेओने चारित्रमा दोषनो सभव नथी तेथी तेओने प्रथमथी ज यावत्कथिक सामायिकचारित्र होय छे. अहीं कोइ शका करे के इत्तरसामायिकवाळा साधुए यावत्जीव सावध योगनी प्रतिज्ञा लीपेळी होवाथी अने फतीथी छेदोपस्थापनीय चारित्र लेचामां पूर्वना चारित्रनो त्याग थतो होवाथी प्रतिज्ञानो भग केम न थाय ? तेनु उत्तर ए छे के छेदोपस्थापनीय चारित्रमा पण सावधयोगनो त्याग होवाथी प्रतिज्ञानो भंग थतो नथी, पण ते चारित्रनी विशेषेण शुद्धि थवाथी नाममात्रनो मेद थाय छे (२) छेदोपस्थापनीय-पूर्वना चारित्रपर्यायनो छेद करीने पुन महाव्रतनो अंगीकार करवा ते, तेना वे प्रकार छे—सातिचार अने निरतिचार इत्तरसामायिकवाळा प्रथम वीक्षितने पुन महाव्रतनो आरोग करे, अथवा वीजा तीर्थकरना साधुओ वीजा तीर्थकरना तीर्थमा प्रवेश करे लारे तेने निरतिचार चारित्र होय छे, जेम श्रीपार्थनाथना साधुओ महावीर स्वामीना तीर्थमा आवी पंच महाव्रत धर्मनो स्वीकार करे महाव्रतनो मूलथी भंग करनार साधु पुन महाव्रतनो स्वीकार करे ते सातिचार ( ३ ) परिहारविशुद्धिचारित्र—जेमा तपो विशेषथी आत्मानी विशुद्धि थाय ते, तेना वे प्रकार छे—निर्विशमानक अने निर्विद्वेषाधिक. जेम के—नध साधुनो एक गच्छ होय छे, तेमां चार तप करनारा, चार वैयावृत्त्य ( सेवा ) करनारा अने एक वाचनाचार्य ( गुरु ) होय छे. चार तप करनारा साधुओ निर्विशमानक अने चार वैयावृत्त्य करनारा अने वाचनाचार्यने निर्विद्वेषाधिक कहेवाय छे तेमा निर्विशमानकनो जघन्य तप आ प्रमाणे छे—ग्रीष्म ऋतुमा जघन्य एक उपवास, मध्यम वे उपवास, अने उत्कृष्ट त्रण उपवास, शिशिर ऋतुमा जघन्य वे उपवास, मध्यम त्रण उपवास अने उत्कृष्ट चार उपवास, अने वर्षाऋतुमा जघन्य त्रण उपवास, मध्यम चार उपवास अने उत्कृष्ट पांच उपवास अने पारणे आयवील करवानु होय छे बल्पस्थितो ( चार वैयावृत्त्य करनारा अने एक वाचनाचार्य ) प्रति दिवस आयवील करे छे आ प्रमाणे छ मास सुधी तप कर्या पछी तप करनारा वैयावृत्त्य करे छे अने वैयावृत्त्य करनारा छ मास पर्यन्त तप करे छे लारपछी वाचनाय पण ए प्रमाणे छ मास सुधी तप करे छे अने तेमाथी एक गुरु थाय छे, वाक्रीना सवे साधुओ तेनु वैयावृत्त्य करे छे ए प्रमाणे अठार मासनो बल्प पूरो थया पछी तेओ गच्छमा भावे छे के जिन कल्पनो स्वीकार करे छे परिहारविशुद्धि चारित्रने ग्रहण करवाना इच्छानाळा तीर्थकर के केवलज्ञानी पासे ते चारित्रने ग्रहण करी शके छे, अथवा जेणे तीर्थकर के केवलज्ञानीनी पासे पूवे चारित्र ग्रहण करुं होय एवा साधुनी पासे पण ग्रहण करे छे. ( ४ ) सूक्ष्मसंपराय—ज्या मात्र सूक्ष्म-स्वल्प, संपराय-कपाय, लोभाशनो उदय छे ते सूक्ष्मसंपराय. तेना वे प्रकार छे—विशुद्ध्यमानक अने सङ्घियमानक तेमा विशुद्ध्यमानकचारित्र क्षपकश्रेणी अने उपशमधेणिए चढनारने होय छे, अने सङ्घियमानक उपशमधेणीथी पढनारने होय छे. ( ५ ) यथाख्यात-सर्वथा कपायोदयनो अभाव जे चारित्रने विषे होय ते यथाख्यात. तेना वे प्रकार छे. उपशमक-कपायनो उपशम करनार अने क्षपक-कपायनो क्षय करनार.—टीका.

६४. † चारित्राचारित्रलद्धि एटले देशविरतिलद्धि, अहीं मूलगुण, उत्तरगुण अने तेना भेदोनी विवक्षा कर्या शिवाय वीजा अग्रत्याख्यानावरणकपायन क्षययोगमज्ज्य परिणाममात्रनी विवक्षा करेळी होवाथी आ लद्धि एक प्रकारे कही छे—टीका.

६५. ‡ १ जेथी वाल-सयमरहित अज्ञानी-नी असयम-अज्ञानपूर्वक कष्टानुष्ठानमा प्रवृत्ति थाय ते वालवीर्यलद्धि, ते चारित्रमोहना उदयथी अने वीर्यान्तरादना क्षयोपशमथी प्रवृत्त थाय छे. २ जेमा सयमने विषे प्रवृत्ति थाय ते पडितवीर्यलद्धि, अने जेथी देशविरतिमा प्रवृत्ति थाय ते वालपडितवीर्यलद्धि.—टीका.

૬૮. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અન્નાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નો નાણી, અન્નાણી । અત્યેગતિયા દુઅન્નાણી, તિન્નિ અન્નાણાઈ મયણાપ ।

૬૯. [પ્ર૦] આમિણિવોહિયણાણલક્ષીયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અન્નાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી, નો અન્નાણી । અત્યેગતિયા દુઅન્નાણી, ચત્તારિ નાણાઈ મયણાપ ।

૭૦. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી, અન્નાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી વિ અન્નાણી વિ । જે નાણી તે નિયમા ઇગનાણી—કેવલનાણી । જે અન્નાણી તે અત્યેગતિયા દુઅન્નાણી, તિન્નિ અન્નાણાઈ મયણાપ । एवं સુયનાણલક્ષીયા વિ । તસ્સ અલક્ષીયા વિ જહા આમિણિવોહિયનાણસ્સ અલક્ષીયા ।

૭૧. [પ્ર૦] ઓહિનાણલક્ષીયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાણી, નો અન્નાણી । અત્યેગતિયા તિન્નાણી, અત્યેગતિયા ચ્ચડનાણી । જે તિન્નાણી તે આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી । જે ચ્ચડનાણી તે આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી, મળપજ્જવનાણી ।

૭૨. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાણી વિ અન્નાણી વિ । एवं ઓહિનાણવજ્જાઈ ચ્ચત્તારિ નાણાઈ તિન્નિ અન્નાણાઈ મયણાપ ।

૭૩. [પ્ર૦] મળપજ્જવનાણલક્ષીયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાણી, નો અન્નાણી । અત્યેગતિયા તિન્નાણી, અત્યેગતિયા ચ્ચડનાણી । જે તિન્નાણી તે આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, મળપજ્જવનાણી । જે ચ્ચડનાણી તે આમિણિવોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી, મળપજ્જવનાણી ।

૭૪. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાણી વિ, અન્નાણી વિ; મળપજ્જવનાણવજ્જાઈ ચ્ચત્તારિ નાણાઈ, તિણિ અન્નાણાઈ મયણાપ ।

૭૫. [પ્ર૦] કેવલનાણલક્ષીયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અન્નાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી, નો અન્નાણી । નિયમા ઇગનાણી—કેવલનાણી ।

૬૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની નથી પણ અજ્ઞાની છે. કેટલા એક વેદજ્ઞાનવાળા છે, અને તેઓને ત્રણ અજ્ઞાન મજના એ હોય છે.

૬૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આમિણિવોધિકજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની હોય છે, પણ અજ્ઞાની નથી. કેટલાએક વેદજ્ઞાનવાળા છે, તેઓને ચાર જ્ઞાન મજના એ હોય છે. [ એટલે કેટલાએક ત્રણજ્ઞાનવાળા અને કેટલાએક ચારજ્ઞાનવાળા હોય છે. ]

૭૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આમિણિવોધિકજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે જેઓ જ્ઞાની છે તેઓ અવશ્ય એક કેવલજ્ઞાની છે; જેઓ અજ્ઞાની છે તેમાં કેટલાએક વેદજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાએક ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે; એટલે તેઓને મજના એ ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે. એ પ્રમાણે \*શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિવાળા પણ જાણવા. શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો આમિણિવોધિકલઘ્વિરહિત જીવોની પેઠે જાણવા.

૭૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અવધિજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે, પણ અજ્ઞાની નથી. તેઓમા કેટલાએક ત્રણજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાએક ચારજ્ઞાનવાળા છે, જેઓ ત્રણજ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિવોધિકજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાનવાળા છે. જેઓ ચારજ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિવોધિકજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન:પર્યવજ્ઞાનવાળા છે.

૭૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અવધિજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે, એ પ્રમાણે તેઓને અવધિજ્ઞાન શિવાય ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજના એ હોય છે.

૭૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! મન:પર્યવજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે, પણ અજ્ઞાની નથી, તેમા કેટલાએક ત્રણજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાએક ચારજ્ઞાનવાળા છે. જે ત્રણ જ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિવોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની અને મન:પર્યવજ્ઞાની છે, અને જેઓ ચાર જ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિવોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની અને મન:પર્યવજ્ઞાની છે.

૭૪. [પ્ર૦] મન:પર્યવજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે, તેઓને મન:પર્યવજ્ઞાન શિવાય ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજના એ છે.

૭૫. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! કેવલજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે પણ અજ્ઞાની નથી. તેઓ અવશ્ય એકકેવલજ્ઞાનવાળા છે.

૭૦. \* આમિણિવોધિકલઘ્વિવાળાની પેઠે ( સૂ. ૬૯ ) શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જાણવા, એટલે તેઓ જ્ઞાની જ હોય છે, અને તેઓને ચાર જ્ઞાન મજના એ હોય છે. શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો આમિણિવોધિકલઘ્વિરહિત જીવોની પેઠે ( સૂ. ૭૦ ) જાણવા, એટલે તેઓ જ્ઞાની અથવા અજ્ઞાની હોય છે, જો જ્ઞાની હોય તો તેને માત્ર એક કેવલજ્ઞાન હોય છે અને અજ્ઞાની હોય તો ત્રણ અજ્ઞાન મજના એ હોય છે. પરન્તુ ચ-ચ-હ પ્રતિમા “તસ્સ અલક્ષીયા જહા આમિણિવોહિયનાણસ્સ લક્ષીયા” એવો પાઠ છે, ( શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો આમિણિવોધિકલઘ્વિવાળાની પેઠે જાણવા ) પણ એ પાઠ અર્થની દૃષ્ટિથી સંગત લાગતો નથી. ક પ્રતિમા આ પાઠ નથી, માત્ર સ્વ પ્રતિમા “અલક્ષીયા” એ પાઠ છે, અને તે અર્થની સાથે સંગત લાગતો હોવાથી તે પાઠ કાયમ રાખી તેને અંતુસારે અનુવાદ કરેલો છે—સચોષક.

७६. [प्र०] तस्स अलद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि, अघ्राणी वि । केवलनाणवज्जाहं चत्तारि नाणाहं तिन्नि अघ्राणाहं भयणाए ।

७७. [प्र०] अघ्राणलद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अघ्राणी । तिन्नि अघ्राणाहं भयणाए ।

७८. [प्र०] तस्स अलद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अघ्राणी । पंच नाणाहं भयणाए, जहा अघ्राणस्स लद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं मइअघ्राणस्स सुयअघ्राणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियघा । विमंगनाणलद्धियाणं तिन्नि अघ्राणाहं नियमा । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाहं भयणाए, दो अघ्राणाहं नियमा ।

७९. [प्र०] दंसणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अघ्राणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी वि, अघ्राणी वि; पंच नाणाहं तिन्नि अघ्राणाहं भयणाए ।

८०. [प्र०] तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अघ्राणी ? [उ०] गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि । सम्मादंसणलद्धियाणं पंच नाणाहं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं तिन्नि अघ्राणाहं भयणाए ।

८१. [प्र०] मिच्छादंसणलद्धिया णं भंते ! पुच्छा । [उ०] तिन्नि अघ्राणाहं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाहं; तिन्नि य अघ्राणाहं भयणाए । सम्मामिच्छादंसणलद्धिया, अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया तरेव भाणियघं ।

८२. [प्र०] चरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अघ्राणी ? [उ०] गोयमा ! पंच नाणाहं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाहं चत्तारि नाणाहं, तिन्नि य अघ्राणाहं भयणाए ।

७६. [प्र०] केवलज्ञानलब्धिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेओने केवलज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

७७. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धिवाळा जीवो शु ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी, पण अज्ञानी छे. तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

७८. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी नथी; तेओने पाच ज्ञान भजनाए होय छे. जेम अज्ञानलब्धिवाळा अने अज्ञानलब्धिरहित जीवो कइया तेम मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानलब्धिवाळा अने ते लब्धिही रहित जीवो कहेवा. [एटले अज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (सू० ७७) मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानलब्धिवाळा जीवो जाणवा, अने अज्ञानलब्धिरहित जीवोनी पेठे (सू० ७८) मलयज्ञान अने श्रुताज्ञानलब्धिरहित जीवो जाणवा. ] विमंगज्ञानलब्धिवाळा जीवोने अवश्य त्रण अज्ञान होय छे, अने विमंगज्ञानलब्धिरहित जीवोने भजनाए पांच ज्ञान के अवश्य वे अज्ञान होय छे.

७९. [प्र०] हे भगवन् ! \*दर्शनलब्धिवाळा जीवो शु ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. [ जेओ ज्ञानी छे ] तेओने पाच ज्ञान, अने [ जेओ अज्ञानी छे तेओने ] त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

८०. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शनलब्धिरहिता जीवो होता नथी सम्यग्दर्शनलब्धिवाळा जीवोने भजनाए पाच ज्ञान होय छे, अने सम्यग्दर्शनलब्धिरहित जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे.

८१. [प्र०] हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनलब्धिवाळा जीवो ज्ञानी होय के अज्ञानी ? [उ०] तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. मिथ्यादर्शनलब्धिरहित ( सम्यग्दृष्टि अने मिश्रदृष्टि ) जीवोने पाच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धिवाळा ( मिश्रदृष्टि ) जीवो मिथ्यादर्शनलब्धिवाळानी पेठे जाणवा. सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धिरहित जीवो जेम मिथ्यादर्शनलब्धिरहित जीवो कइया ते प्रमाणे जाणवा.

८२. [प्र०] हे भगवन् ! †चारित्र्यलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. चारित्र्यलब्धिरहित जीवोने मन पर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

१ सम्मदं- घ । २ -लद्धी अलद्धी त-घ ।

७९. \* दर्शन-श्रदान, तेमा जे ज्ञानपूर्वक होय ते सम्यक्श्रदान अने अज्ञानपूर्वक होय ते मिथ्याश्रदान. सम्यक्श्रदावाळा ते ज्ञानी अने मिथ्याश्रदावाळा ते अज्ञानी कहेवाय छे.

८०. † दर्शनलब्धिरहित जीवो नथी, केमके सर्व जीवने सम्यक् मिथ्याके मिश्र श्रदानमाथी एक श्रदान अवश्य होय छे.

८२. ‡ चारित्र्यलब्धिरहित जे ज्ञानी छे, तेओने मन पर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान भजनाए होय छे, केमके अविरतिपणामा आदिना वे के त्रण ज्ञान होय छे, अने सिद्धपणामा एक केवलज्ञान होय छे. सिद्ध नोचारित्री नोअचारित्री होवाथी चारित्र्यलब्धिरहित छे. जे अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

८३. [प्र०] सामाह्यचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी, केवलवज्जाइं चत्तारि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए । एवं जहा सामाह्यचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भणिया, एवं जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियद्वा, नवरं अहक्खायचरित्तलद्धीयाणं पंच नाणाइं भयणाए ।

८४. [प्र०] चरित्तचरित्तलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । अत्ये-  
गतिया दुन्नाणी, अत्येगतिया तिन्नाणी । जे दुन्नाणी ते आभिणिवोहियनाणी य सुयनाणी य । जे तिन्नाणी ते आभिणिवोहिय-  
नाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । दाणलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

८५. [प्र०] तस्स अलद्धीयाणं पुच्छ । [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । नियमा एगनाणी केवलनाणी । एवं जाव  
वीरियस्स लद्धी अलद्धी य भाणियद्वा । वालवीरियलद्धियाणं तिन्नि नाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं  
पंच नाणाइं भयणाए । पंडियवीरियलद्धीयाणं पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं णाणाइं, अन्ना-  
णाणि तिन्नि य भयणाए । वालपंडियवीरियलद्धियाणं तिन्नि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं पंच नाणाइं तिन्नि  
अन्नाणाइं भयणाए ।

८३. [प्र०] हे भगवन् ! \*सामायिकचारित्रलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ  
ज्ञानी होय छे, तेओने केवलज्ञान शिवाय चार ज्ञान भजनाए होय छे. सामायिकचारित्रलब्धिरहित जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान  
भजनाए होय छे. ए प्रमाणे जेवी रीते सामायिकचारित्रलब्धिवाळा अने सामायिकचारित्रलब्धिरहित जीवो क्ख्या तेम यावत् यथाख्यात-  
चारित्रलब्धिवाळा अने यथाख्यातचारित्रलब्धिरहित जीवो कहेवा. परन्तु यथाख्यातचारित्रलब्धिवाळने पांच ज्ञान भजनाए जाणवा.

८४. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्राचारित्र ( देशचारित्र ) लब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम !  
तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी; तेमा केटलक वेज्ञानवाळा अने केटलक त्रणज्ञानवाळा छे. जेओ वेज्ञानवाळा छे तेओ आभिनि-  
वोधिक ज्ञान अने श्रुतज्ञानवाळा छे, जेओ त्रणज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिवोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी छे. †चारित्राचारित्र  
( देशचारित्र ) लब्धिरहित जीवोने भजनाए पाच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे. †दानलब्धिवाळने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए  
होय छे.

८५. [प्र०] †दानलब्धिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, अने तेओ अवश्य एककेवल-  
ज्ञानवाळा छे. ए प्रमाणे यावत् वीर्यलब्धिवाळा अने वीर्यलब्धिरहित जीवो कहेवा. †वालवीर्यलब्धिवाळा जीवोने त्रण ज्ञान अने त्रण  
अज्ञान भजनाए होय छे. वालवीर्यलब्धिरहित जीवोने भजनाए पांच ज्ञान होय छे. पंडितवीर्यलब्धिवाळा जीवोने पण भजनाए पांच ज्ञान  
होय छे. पंडितवीर्यलब्धिरहितने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. वालपंडितवीर्यलब्धिवाळने भजनाए  
त्रण ज्ञान होय छे, अने वालपंडितवीर्यलब्धिरहित जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

१ एवं जहा जाव घ ।

८३. \* सामायिकचारित्रलब्धिवाळा जीवो ज्ञानी ज होय छे, तेथी तेओने केवलज्ञान शिवाय वाकीना चार ज्ञान भजनाए होय छे, केमके यथाख्यात-  
चारित्रोने ज केवलज्ञान होय छे. सामायिकचारित्रनी लब्धिरहित जे ज्ञानी छे तेओने छेदोपस्थापनीयभावे अने सिद्धभावे पाच ज्ञान भजनाए छे, जे अज्ञानी  
छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे परन्तु यथाख्यातचारित्रवाळने छद्मस्थपणे अने केवलीपणे पांच ज्ञान भजनाए होय छे.

८४. † चारित्राचारित्रलब्धिरहित जीवो देशविरति थावकथी अन्य जाणवा, तेमा जे ज्ञानी छे तेने पाच ज्ञान भजनाए होय छे, अने जे अज्ञानी छे  
तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

‡ दानान्तरायना क्षय के क्षयोपशयथी प्रकट थयेल दानलब्धिवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी होय छे. तेमा जेओ ज्ञानी छे तेओने पाच ज्ञान भजनाए छे,  
केमके केवलज्ञानी पण दानलब्धियुक्त छे जेओ अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

८५. † दानलब्धिरहित सिद्धो छे, तेओने दानान्तरायना क्षय थवा छना देवा लायक वस्तुना अभावथी, पात्रना अभावथी अने दानना प्रयोजनना  
अभावथी दानलब्धिरहित क्ख्या छे, तेओ अवश्य एककेवलज्ञानसहित छे. ए प्रमाणे लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्यलब्धिवाळा अने तेथी इतर जीवो जाणवा.  
अर्ही पूर्वे क्ख्या प्रमाणे लब्धिरहित सिद्धो जाणवा. यद्यपि दानान्तरायनो क्षय होवाथी केवलज्ञानीने दानादि लब्धिवो प्रकट थाय छे अने तेथी तेमनी पण  
दानादिमा प्रवृत्ति यवी जोइए, तो पण तेओ कृतकृत्य थयेला होवाथी अने प्रयोजनना अभावथी तेओनी दानादिमां प्रवृत्ति थवी नथी.—टीका.

‡ वालवीर्यलब्धिवाळा असंयत ( अवरिति ) कहेवाय छे, तेमा ज्ञानीने त्रण ज्ञान अने अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. वालवीर्यलब्धिरहित  
जीवो सर्वविरति, देशविरति अने सिद्धो जाणवा, तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. पंडितवीर्यलब्धिरहित असंयत, देशसंयत अने सिद्धो छे. तेमां  
असंयतने आदिना त्रण ज्ञान के त्रण अज्ञान भजनाए होय छे, देशसंयतने त्रण ज्ञान भजनाए होय छे, अने सिद्धने एक केवलज्ञान होय छे. मन पर्यवज्ञान  
मात्र पंडितवीर्यलब्धिवाळनेज होय छे. सिद्धो पंडितवीर्यलब्धिरहित छे, केमके अर्हिसादि धर्मव्यापारमां सर्वथा प्रवृत्ति करवी ते पंडितवीर्य छे अने ते  
तेओने नथी.—टीका.

૮૬. [પ્ર૦] ઈંદિયલક્ષિયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાળી, અઘ્નાળી ? [૩૦] ગોયમા ! ચત્તારિ ણાણાં, તિત્તિ ય અઘ્નાણાં મયણાણ ।

૮૭. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાળી, નો અઘ્નાળી । નિયમા ણગનાળી-કેવલણાળી । સોરં-દિયલક્ષિયા ણં જહ્વા ઈંદિયલક્ષિયા ।

૮૮. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાળી ચિ અઘ્નાળી ચિ । જે નાળી તે અત્યેગતિયા દુઘ્નાળી, અત્યેગતિયા ણગનાળી । જે દુઘ્નાળી તે આમિણિવોહિયનાળી, સુયનાળી । જે ણગનાળી તે કેવલનાળી । જે અઘ્નાળી તે નિયમા દુઅઘ્નાળી, તં જહ્વા-મદઅઘ્નાળી ય સુયઅઘ્નાળી ય । ચન્નિયંદિય-ધાર્ણિદિયાણં લક્ષી અલક્ષી ય જહેવ સોરંદિયસ્સ । જિર્મિ-દિયલક્ષિયાણં ચત્તારિ ણાણાં, તિત્તિ ય અઘ્નાણાણિ મયણાણ ।

૮૯. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા નાળી ચિ, અઘ્નાળી ચિ । જે નાળી તે નિયમા ણગનાળી-કેવલ-ણાળી । જે અઘ્નાળી તે નિયમા દુઅઘ્નાળી, તં જહ્વા-મદઅઘ્નાળી ય સુયઅઘ્નાળી ય । ફાર્સિદિયલક્ષીયા ણં અલક્ષીયા ણં જહ્વા ઈંદિયલક્ષિયા ય અલક્ષીયા ય ।

૯૦. [પ્ર૦] સાગારોવડ્ડા ણં મંતે ! જીવા કિં નાળી અઘ્નાળી ? [૩૦] પંચ નાણાં તિત્તિ અઘ્નાણાં મયણાણ ।

૯૧. [પ્ર૦] આમિણિવોહિયનાણસાગારોવડ્ડા ણં મંતે ? [૩૦] ચત્તારિ ણાણાં મયણાણ । एवं સુયનાણસાગારોવડ્ડા ચિ । ઓહિણાણસાગારોવડ્ડા જહ્વા ઓહિનાણલક્ષીયા । મણપજ્જવનાણસાગારોવડ્ડા જહ્વા મણપજ્જવનાણલક્ષીયા । કેવલના-

ઇન્દ્રિયલક્ષિક.

૮૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ઇન્દ્રિયલક્ષિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! \*તેઓને મજનાણ ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે.

ઇન્દ્રિયલક્ષિક.

૮૭. [પ્ર૦] ઇન્દ્રિયલક્ષિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે, પણ અજ્ઞાની નથી. તે અવશ્ય એક કેવલજ્ઞાનવાળા છે. શ્રોત્રેન્દ્રિયલક્ષિવાળા ઇન્દ્રિયલક્ષિવાળાની પેટે ( સૂ. ૮૬. ) જાણવા.

શ્રોત્રેન્દ્રિયલક્ષિ-રહિત.

૮૮. [પ્ર૦] શ્રોત્રેન્દ્રિયલક્ષિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે, અને અજ્ઞાની પણ છે. જેઓ જ્ઞાની છે તેઓમાં કેટલાક વેજ્ઞાનવાળા અને કેટલાક એકજ્ઞાનવાળા છે. જેઓ વેજ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિવોહિયજ્ઞાની અને શ્રુતજ્ઞાની છે, અને જેઓ એકજ્ઞાની છે તેઓ એક-કેવલજ્ઞાની છે, જેઓ અજ્ઞાની છે તેઓ અવશ્ય વેઅજ્ઞાનવાળા છે. જેમ કે મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની. નેત્રેન્દ્રિય અને પ્રાણેન્દ્રિયલક્ષિવાળાને શ્રોત્રેન્દ્રિયલક્ષિવાળાની પેટે ( સૂ. ૮૭. ) ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન જાણવા; નેત્રેન્દ્રિય અને પ્રાણેન્દ્રિયલક્ષિરહિત જીવોને શ્રોત્રેન્દ્રિયલક્ષિરહિત જીવોની પેટે વે જ્ઞાન, વે અજ્ઞાન અને એક કેવલજ્ઞાન હોય છે. જિહેન્દ્રિયલક્ષિવાળાને ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાણ હોય છે.

ચક્ષુરિન્દ્રિયને  
| નેત્રેન્દ્રિયલક્ષિવાળા  
અને લક્ષિરહિત.  
જિહેન્દ્રિયલક્ષિક.

૮૯. [પ્ર૦] જિહેન્દ્રિયલક્ષિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે, અને અજ્ઞાની પણ છે. જેઓ જ્ઞાની છે તેઓ અવશ્ય એક કેવલજ્ઞાની છે, જેઓ અજ્ઞાની છે તેઓ અવશ્ય વે અજ્ઞાનવાળા છે; તે આ પ્રમાણે- મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની. સ્પર્શેન્દ્રિયલક્ષિવાળાને ઇન્દ્રિયલક્ષિવાળાની પેટે ( સૂ. ૮૬. ) મજનાણ ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન જાણવા. સ્પર્શેન્દ્રિય લક્ષિરહિત જીવોને ઇન્દ્રિયલક્ષિરહિત જીવોની પેટે ( સૂ. ૮૭. ) એક કેવલજ્ઞાન હોય છે.

સ્પર્શેન્દ્રિયલક્ષિક.

૯૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સાકારુપયોગવાળા જીવો શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને પાચ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાણ ( વિકલ્પે ) હોય છે.

સાકારુપયોગવાળા.

૯૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આમિણિવોહિકસાકારોપયોગવાળા જીવો શું જ્ઞાની હોય કે અજ્ઞાની હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને મજનાણ ચાર જ્ઞાન હોય છે. એ પ્રમાણે શ્રુતજ્ઞાનસાકારુપયોગવાળા જીવો પણ જાણવા. અવધિજ્ઞાનસાકારુપયોગવાળા જીવોને અવધિજ્ઞાન-

આમિણિવોહિક અને  
શ્રુતજ્ઞાનોપયોગ

૧ -ઈન્દિયલક્ષીયા ણં અલક્ષીયા ણ ય-ઘ । ૨ -ઈન્દિયલક્ષિયા અલક્ષિયા ણ ।

૮૬. \* ઇન્દ્રિયલક્ષિવાળા જીવો જેઓ જ્ઞાની છે, તેઓને ચાર જ્ઞાન હોય છે, પણ કેવલજ્ઞાન હોતું નથી, કેમકે કેવલજ્ઞાનીને ઇન્દ્રિયનો ઉપયોગ નથી. જેઓ અજ્ઞાની છે તેઓને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાણ છે.—ટીકા.

૮૮. † શ્રોત્રેન્દ્રિયલક્ષિરહિત જીવોમાં જેઓ જ્ઞાની છે તે આદિના વેજ્ઞાનવાળા છે, અને તે અપર્યાપ્તવસ્થામાં સાસ્વાદનતન્યગૃહિત વિકલ્પેન્દ્રિય જીવો છે, એકજ્ઞાની વે કેવલજ્ઞાનવાળા છે, તેઓ ઇન્દ્રિયોપયોગરહિત હોવાથી શ્રોત્રેન્દ્રિયલક્ષિરહિત છે જે અજ્ઞાની છે તે આદિના વેઅજ્ઞાનવાળા છે.

૮૯. ‡ જિહેન્દ્રિયલક્ષિરહિત કેવલજ્ઞાની અને એકેન્દ્રિય જીવો છે, તેથી જેઓ જ્ઞાની છે તે એક કેવલજ્ઞાનવાળા છે, અને જેઓ અજ્ઞાની છે તેઓ અવશ્ય વેઅજ્ઞાનવાળા છે, કેમકે એકેન્દ્રિય જીવોમાં સાસ્વાદન નહિ હોવાથી જ્ઞાનનો અભાવ છે, તેમ વિમગ્નો પણ અભાવ છે.

૯૦. § આનાર-વિગેષ, તે ગૃહિત જે વોષ તે સાકાર વોષ ઇટલે વિગેષપ્રાઘ્લક વોષ, તેના ઉપયોગરહિત તે સાકારોપયુક્ત કહેવાય છે તે જ્ઞાની અને અજ્ઞાની વચ્ચે હોય છે તેમાં જ્ઞાનીને પાચ જ્ઞાન મજનાણ હોય છે, ઇટલે ક્વાચિત્ત વે, ત્રણ, ચાર અને એક પણ જ્ઞાન હોય છે. આ વધા જ્ઞાન લક્ષિને આશ્રયી જાણવા. ઉપયોગની અપેક્ષા તો એક કાલે એક જ્ઞાન કે એક અભાવ હોય છે. અજ્ઞાનીને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાણ હોય છે —ટીકા.

णसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया । मइअन्नाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाप । एवं सुयअन्नाणसागारोवउत्ता वि । विभंगणाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा ।

९२. [प्र०] अणागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] पंचे नाणाइं तिन्नि आन्नाणाइं भयणाप । एवं चक्खुदंसण-अचक्खुदंसणअणागारोवउत्ता वि; नवरं चत्तारि णाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाप ।

९३. [प्र०] ओहिदंसणअणागारोवउत्ताणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि अन्नाणी वि । जे नाणी ते अत्येगतिया तिन्नाणी अत्येगतिया चउनाणी । जे तिन्नाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिवोहियणाणी, जाव मणपज्जवनाणी । जे अन्नाणी ते नियमा तिअन्नाणी, तं जहा-मइअन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी । केवलदंसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया ।

९४. [प्र०] सजोगी णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया । एवं मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी वि । अजोगी जहा सिद्धा ।

९५. [प्र०] सलेस्सा णं भंते !० ? [उ०] जहा सकाइया ।

९६. [प्र०] कण्हलेस्सा णं भंते !० ? [उ०] जहा सइंदिया । एवं जाव पण्हलेस्सा, सुकलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ।

लब्धिवाळानी पेठे (सू. ७१.) [त्रण के चार ज्ञान] जाणवा. मनःपर्यवज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवोने मनःपर्यवज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (सू. ७३.) मति, श्रुत अने मनःपर्यव ए त्रण ज्ञान, के अवधिसहित चार ज्ञान जाणवा. केवलज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (सू. ७५.) एक केवलज्ञान सहित जाणवा. मतिअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. विभंगज्ञानसाकारोपयुक्त जीवोने अवश्य त्रण अज्ञान होय छे.

९२. [प्र०] हे भगवन् ! \*अनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. परन्तु तेओने चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

९३. [प्र०] †अवधिदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे, जेओ ज्ञानी छे तेओमां केटलाक त्रण ज्ञानवाळा अने केटलाक चार ज्ञानवाळा छे. जेओ त्रण ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिवोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी छे, जेओ चार ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिवोधिकज्ञानी, यावत् मनःपर्यायज्ञानी छे. जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य त्रणअज्ञानवाळा छे. ते आ प्रमाणे-मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, अने विभंगज्ञानी. केवलदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळा पेठे (सू. ७५.) एक केवलज्ञानयुक्त जाणवा.

९४. [प्र०] हे भगवन् ! ‡सयोगी जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सकायिकनी पेठे (सू. ३८.) जाणवा. ए प्रमाणे मनयोगी, वचनयोगी अने काययोगी पण जाणवा. अयोगी-योगरहित जीवो सिद्धोनी पेठे (सू. ३०.) जाणवा.

९५. [प्र०] हे भगवन् ! §लेइयावाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सकायिकनी पेठे (सू. ३८.) जाणवा.

९६. [प्र०] ¶कृष्णलेइयावाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सेन्द्रिय जीवोनी पेठे (सू. ३५.) जाणवा. ए प्रमाणे यावत् पद्मलेइयावाळा जीवो पण जाणवा. शुक्ललेइयावाळा सलेइयनी पेठे (सू. ९५.) जाणवा अने अलेइय-लेइयाविनाना-जीवो सिद्धोनी पेठे (सू. ३०.) जाणवा.

९२. \* जे ज्ञानने विषे आकार-जाति, गुण, क्रियादि स्वरूप विशेष-प्रतिभासित न थाय ते अनाकारोपयोग एटले दर्शन, अनाकारोपयोगवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी वे प्रकारना छे. ज्ञानीने लब्धिनी अपेक्षाए पांच ज्ञान भजनाए होय छे अने अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

९३. † अवधिदर्शनअनाकारउपयोगवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी वने छे, कारण के दर्शननो विषय सामान्य होवाथी अने सामान्य अभिज्ञरूप होवाथी ज्ञानी अने अज्ञानीना दर्शनमा भेद होतो नथी.

९४. ‡ योगद्वारमा सयोगीने सकायिकनी पेठे भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा. ए प्रमाणे मनयोगसहित, वचनयोगसहित अने काययोगसहित जीवो पण जाणवा, केमके केवलीने पण मनोयोगादि होय छे. सयोगी मिथ्याहृदिने त्रण अज्ञान होय छे अने अयोगीने एक केवलज्ञान होय छे.—टीका.

९५. ¶ लेइयाद्वारमा जेम सकायिकने भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान कदा तेम लेइयावाळोने पण जाणवा, केमके केवलीने पण शुक्ललेइया होवाथी ते लेइयासहित छे. योगान्तगतं कृष्णादि द्रव्यता स्वन्वथी आत्मानो परिणाम ते लेइया. विशेष माटे जुओ-(प्रज्ञापनाटीका. पद १७ प. ३३०-१.)

९६. § कृष्णलेइया इन्द्रियोपयोगनी पेठे चारज्ञानवाळा अने त्रण अज्ञानवाळोने होय छे.



૧૭. [પ્ર૦] સકસાર્દ ણં મંતે ! ૦ ? [૩૦] જહા મદંદિયા । ઇયં જાઘ લોમકસાર્દ ।

૧૮. [પ્ર૦] અકસાર્દ ણં મંતે ! કિં ણાણી૦ ? [૩૦] પંચ નાણારં મયણાપ ।

૧૯. [પ્ર૦] સવેદગા ણં મંતે ! ૦ ? [૩૦] જહા મદંદિયા । ઇયં દિવ્યવેદગા યિ, ઇયં પુરિમવેદગા યિ, ઇયં મુસુમ-વેદગા યિ । અવેદગા જહા અકસાર્દ ।

૧૦૦. [પ્ર૦] આહારગા ણં મંતે ! જીયા૦ ? [૩૦] જહા સકસાર્દ, નચરં કેવલજ્ઞાણં યિ ।

૧૦૧. [પ્ર૦] અણાહારગા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી, અનાણી ? [૩૦] મણપચ્ચવાણાયજ્ઞારં નાણારં, અપ્રાપ્તિ ય તિત્તિ મયણાપ ।

૧૦૨. [પ્ર૦] આમિણિવોહિયનાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિપ વિસપ પપ્પત્તે ? [૩૦] ગોયમા ! મે સમાસઓ ચડધિદે વપ્પે તં જહા—દ્ધઓ, રોચ્છઓ, કાલઓ, માવઓ । દ્ધઓ ણં આમિણિવોહિયનાણી આપ્પસેણં સવ્વદ્ધારં જાણદ પાસતિ, આમિણિવોહિયનાણી આપ્પસેણં સવ્વપ્પેચ્છં જાણદ પાસતિ, ઇયં કાલઓ યિ, ઇયં માવઓ યિ ।

૧૦૩. [પ્ર૦] મુયનાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિપ વિસપ પપ્પત્તે ? [૩૦] ગોયમા ! મે સમાસઓ ચડધિદે વપ્પે દ્ધઓ, રોચ્છઓ, કાલઓ, માવઓ । દ્ધઓ ણં મુયનાણી ઉચ્ચત્તે સવ્વદ્ધારં જાણતિ પાસતિ, ઇયં રોચ્છઓ યિ, માવઓ ણં મુયનાણી ઉચ્ચત્તે સવ્વમાયે જાણતિ, પાસતિ ।

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સકપાર્યા ! જીવો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો છે ? [૩૦] સંદ્રિય જીવોની પેટે ત્રણ જ્ઞાનો । કેવલજ્ઞા-  
૧ પ્રમાણે યાવત્ લોભકપાર્યા જીવો જાણવા.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અકપાર્યા ! જીવો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો છે ? [૩૦] તેઓને પાંચ જ્ઞાન મજનાપ એક જ્ઞાનો અને ત્રણ અજ્ઞાનો મજનાપ ચાર

૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વેદસહિત જીવો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો છે ? [૩૦] તેઓ સદ્દિવ્ય જીવોની પેટે ત્રણ જ્ઞાનો અને ત્રણ અજ્ઞાનો મજનાપ ચાર જ્ઞાનો । ૧ પ્રમાણે સ્ત્રીવેદી, પુરુષવેદી અને નપુંસકવેદી જીવો જાણવા, તથા વેદરહિત જીવો અકપાર્યા જીવોની પેટે (મ. ૧૮.) ત્રણ જ્ઞાનો ।

૧૦૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આહારકજીવો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો છે ? [૩૦] તેઓ સકપાર્યા જીવોની પેટે (મ. ૧૭.) ત્રણ જ્ઞાનો । પરન્તુ વિશેષ એ છે કે તેઓને કેવલજ્ઞાન (અધિક) હોય છે.

૧૦૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અનાહારક જીવો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને મન:પર્યવજ્ઞાન ત્રણ જ્ઞાનો અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાપ હોય છે.

૧૦૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આમિણિવોધિક જ્ઞાનનો વિષય કેટલો કલો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આમિણિવોધિક જ્ઞાનનો વિષય સંક્ષેપથી ચાર પ્રકારનો કલો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને માવથી. દ્રવ્યથી આમિણિવોધિક જ્ઞાનો આદેશવડે (સામાન્યરૂપે) સર્વ દ્રવ્યોને જાણે અને જુદા, ક્ષેત્રથી આમિણિવોધિકજ્ઞાનો આદેશવડે સર્વ ક્ષેત્રને જાણે અને જુદા; એ પ્રમાણે કાલથી અને માવથી પણ જાણવું-

૧૦૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શ્રુતજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કલો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે સંક્ષેપથી ચાર પ્રકારનો કલો છે, તે આ પ્રમાણે—જિહ્વેન્દ્રિયલઙ્ઘિવાચ્યને ચાર જ્ઞાનો અને ત્રણ અજ્ઞાનો મજનાપ હોય છે. તેઓને ત્રણ જ્ઞાનો અને ત્રણ અજ્ઞાનો મજનાપ હોય છે.

૮૯. [પ્ર૦] જિહ્વેન્દ્રિયલઙ્ઘિરહિત જીવો શું જ્ઞાનો છે કે અજ્ઞાનો ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને ત્રણ જ્ઞાનો અને ત્રણ અજ્ઞાનો મજનાપ હોય છે. એ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને માવથી. દ્રવ્યથી ઉપયુક્ત (ઉપયોગ સહિત) શ્રુતજ્ઞાનો સર્વ દ્રવ્યોને જાણે અને જુદા છે. એ પ્રમાણે ક્ષેત્રથી અને કાલથી પણ જાણવું, માવથી ઉપયુક્ત શ્રુતજ્ઞાનો સર્વ માવોને જાણે છે અને જુદા છે.

૧૧. \* વેદદ્વારમા સવેદકને સેન્દ્રિયની પેટે મજનાપ કેવલજ્ઞાન શિવાય ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે, અવેદક-વેદરહિત જીવોને સકપાર્યાને પેટે મજનાપ પાંચ જ્ઞાન હોય છે, કેમકે અનિશ્ચિત્વાદારદિગુણસ્થાનકે અવેદક હોય છે, તથા દ્ધમ્યને ચાર જ્ઞાન મજનાપ હોય છે, અને કેવલજ્ઞાનીને પાંચજુદા કેવલજ્ઞાન હોય છે.—ટીકા.

૧૦૦. † આહારમદ્ધારમા જેમ સકપાર્યા ચારજ્ઞાનવાચ્ય અને ત્રણઅજ્ઞાનવાચ્ય કર્યા, તેમ આહારકો પણ એ પ્રમાણે જાણવા, પરંતુ આહારકોને કેવલજ્ઞાન પણ હોય છે, કેમકે કેવલજ્ઞાની આહારક છે.—ટીકા.

૧૦૧. ‡ ત્રિપ્રહરણિ, કેવલ્લિસમુદ્ધાન અને અયોમિપણામા જીવો અનાહારક હોય છે અને યાત્રીની અવસ્થામા આહારક હોય છે. મન:પર્યવજ્ઞાન આહાર-સ્થામાં હોય છે, અને અનાહારકને આદિના ત્રણ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન વિપ્રહરણિમા, અને કેવલજ્ઞાનીને એક કેવલજ્ઞાન કેવલ્લિસમુદ્ધાન, અને અયોમિગ્રહ-સ્થામાં હોય છે, એ માટે અનાહારક જીવોને મન:પર્યવજ્ઞાન શિવાય ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન કર્યા છે

૧૦૨. § જ્ઞાનવિષયદ્ધારમા આમિણિવોધિક જ્ઞાનનો વિષય દ્રવ્ય-ધર્માન્તિકાયાદિ દ્રવ્ય-ને આશ્રયી, ક્ષેત્ર-દ્રવ્યોના આધારમૂલ સાકાશ-ને આશ્રયી, કાલ-દ્રવ્યના પર્યાયની અચચ્ચિન્તિ-ને આશ્રયી, અને માવ-બૌદ્ધિકાદિ ભાવ અથવા દ્રવ્યના પર્યાયો-ને આશ્રયી ચાર પ્રકારનો કલો છે. તેમા દ્રવ્યને આશ્રયી જે આમિણિવોધિક જ્ઞાન થાય છે, તે ધર્માન્તિકાયાદિ દ્રવ્યોને આદેશ-સામાન્યનિરોધરૂપ પ્રમાણ-થી, અથવા ઓષધથી દ્રવ્યમાત્રરૂપે જાણે છે, પરન્તુ તેમાં રહેલા સર્વવિશેષની અપેક્ષાએ જાણતો નથી, અથવા અદેશ-શ્રુતજ્ઞાન જનિત સસ્કારવડે અપાય અને ધારણાની અપેક્ષાએ જાણે છે, કેમકે અપાય ને ધારણા જ્ઞાન સ્વરૂપ છે, અને અવગ્રહ ને ક્રેહાની અપેક્ષાએ જુદા છે, કારણકે અવગ્રહ ને ક્રેહા દર્શનરૂપ છે. શ્રુતજ્ઞાનજન્ય સસ્કારવડે લોકાલોકરૂપ સર્વ ક્ષેત્રને જાણે છે. એ પ્રમાણે કાલથી સર્વ કાલને અને માવથી બૌદ્ધિકાદિ પાંચ માવોને જાણે છે —ટીકા

૧૦૩. ¶ ઉપયોગસહિત શ્રુતજ્ઞાની-સપૂર્ણદગપૂર્વધરાદિ શ્રુતકેવલી સર્વ ધર્માન્તિકાયાદિ દ્રવ્યને વિશેષથી જાણે છે, અને શ્રુતાનુસારી માનસ અચક્ષુદર્શન વડે સર્વ અમિલાય દ્રવ્યને જુદા છે. એ પ્રમાણે ક્ષેત્રાદિને ત્રિપે પણ જાણી શકે છે. માવથી ઉપયુક્ત શ્રુતજ્ઞાની બૌદ્ધિકાદિ સર્વ માવોને, અથવા સર્વ અમિલાય માવોને જાણે છે, અથવા અમિલાય માવોનો અનુન્તમો ભાગ જ શ્રુતપ્રતિપાદિત છે, તો પણ પ્રવંગાનુપસંગથી સર્વ અમિલાય માવ શ્રુતજ્ઞાનનો વિષય છે, મા તેની અપેક્ષાએ 'સર્વ માવોને જાણે છે' એમ કહ્યું છે —ટીકા.

સકપાર્યાની જીવો.

અકપાર્યાની જીવો.

વેદસહિત અને વેદરહિત જીવો.

આહારક જીવો.

અનાહારક.

આમિણિવોધિક જ્ઞાનનો વિષય.

જિહ્વેન્દ્રિયલઙ્ઘિવાચ્ય અને લઙ્ઘિરહિત-જિહ્વેન્દ્રિયલઙ્ઘિવાચ્ય

શ્રુતજ્ઞાનનો વિષય

१०४. [प्र०] ओहिनाणस्स णं भंते ! केवतिण विसण पन्नत्ते ? गोयमा ! से समासओ चउद्धिहे पन्नत्ते, तं जहा—द्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । द्वओ णं ओहिनाणी रूविदद्दाइं जाणइ पासइ; जहा नंदीए, जाव भावओ ।

१०५. [प्र०] मणपज्जवनाणस्स णं भंते ! केवतिण विसण पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउद्धिहे पन्नत्ते, तं जहा—द्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । द्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए, जहा नंदीए, जाव भावओ ।

१०६. [प्र०] केवलणाणस्स णं भंते ! केवतिण विसण पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउद्धिहे पन्नत्ते, तं जहा—द्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । द्वओ णं केवलनाणी सव्वदद्दाइं जाणइ पासइ । एवं जाव भावओ ।

१०७. [प्र०] मइअन्नाणस्स णं भंते ! केवतिण विसण पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउद्धिहे पन्नत्ते, तं जहा—द्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । द्वओ णं मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिणयाइं दद्दाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावओ ।  
१५ मइअन्नाणपरिणए भावे जाणइ पासइ ।

१०८. [प्र०] सुयअन्नाणस्स णं भंते ! केवतिण विसण पणत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउद्धिहे पन्नत्ते, तं जहा—द्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । द्वओ णं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिणयाइं दद्दाइं आघवेति, पन्नवेइ, परूवेइ । एवं जाव भावओ ।  
१५. [प्र०] भावओ णं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिणए भावे आघवेति तं चेव ।

गलेस्सा जहा सिद्ध.

०] हे भगवन् ! अवधिज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आश्रयवालांनी पेटे (क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी; द्रव्यथी अवधिज्ञानी रूपिद्रव्योने जाणे छे अने देखे छे—इत्यादि जेम \*नंदीसूत्रमां कहुं छे पेटे (सू. ७३.) रूपा जाणवुं.

केवलज्ञानलक्षण

१०५. [प्र०] हे भगवन् ! मनःपर्यवज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानी [मनपणे परिणत] अनंतप्रदेशिक अनन्त स्कंधोने अने देखे—इत्यादि जेम नदीसूत्रमा कहुं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत् भावथी जाणे छे.

१०६. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी केवलज्ञानी सर्व द्रव्योने जाणे छे अने जुए छे, ए प्रमाणे यावद् भावथी केवलज्ञानी सर्व भावोने जाणे छे अने जुए छे.]

१०७. [प्र०] हे भगवन् ! मतिअज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी मतिअज्ञानी मतिअज्ञानना विषयने प्राप्त द्रव्योने जाणे छे अने जुए छे; ए प्रमाणे यावद् भावथी मतिअज्ञानी मतिअज्ञानना विषयभूत भावोने जाणे छे अने जुए छे.

१०८. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतअज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी श्रुतअज्ञानी श्रुतअज्ञानना विषयभूत द्रव्योने कहे छे, जणावे छे अने प्ररूपे छे; ए प्रमाणे क्षेत्रथी अने कालथी जाणवुं. भावथी श्रुतअज्ञानी श्रुतअज्ञानना विषयभूत भावोने कहे छे, जणावे छे अने प्ररूपे छे.

१०४. \* द्रव्यथी अवधिज्ञानी जघन्यथी तैजस अने भापाद्रव्योनी अतरे रहेला एवा सूक्ष्म अनन्त पुद्गलद्रव्योने जाणे, उल्कृष्टथी वादर अने सूक्ष्म सर्व द्रव्योने जाणे, अने अवधिदर्शनथी देखे. क्षेत्रथी अवधिज्ञानी जघन्य अगुलना असंख्यातमा भागने अने उल्कृष्टथी शक्तिनी अपेक्षाए अलोकेने विषे असख्य लोकरूपमा खंडने जाणे अने जुए, कालथी अवधिज्ञानी जघन्य आवलिकाना असंख्यातमा भागने अने उल्कृष्टथी असंख्यात उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी अतीत अनागत कालने जाणे अने जुए—एटले तेदला कालमां रहेला रूपी द्रव्यने जाणे. यावत् भावथी अवधिज्ञानी जघन्य अनन्त भावोने जाणे अने जुए, पण दरेक द्रव्य दृढ अनन्त भावोने न जाणे. उल्कृष्टथी पण अनन्त भावोने जाणे अने जुए. ते भावो सर्व पर्यायनो अनन्तमो भाग जाणवो. जुओ—नंदी. प. १७-१ पं. १०.

१०५. † ऋजु—सामान्यग्राही मति ते ऋजुमतिमन पर्यय, जेम 'एणे घट चिन्तव्यो' एतुं सामान्य केटलाक पर्यायविशिष्ट मनोद्रव्युं ज्ञान. द्रव्यथी ऋजुमतिमन पर्यायज्ञानी अढी द्वीपमा रहेला सङ्गी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोए मनरूपे परिणमावेला मनोवर्गणाणा अनन्त स्कंधोने साक्षात् जाणे, परन्तु तेणे चिन्तवेल घटारिरूप अर्थने [आवा आकारवाळो मनोद्रव्यनो परिणाम आवा प्रकारना चिन्तन शिवाय न घटे] एवा] अनुमानथी जाणे, माटे 'देखे' एम कहुं. विपुल—अनेकविशेषग्राही मति—ज्ञान, अर्थात् पुष्कळविशेषविशिष्ट मनोद्रव्युं ज्ञान ते विपुलमति मनःपर्यवज्ञान, जेम 'एणे द्रव्यथी माटीनो, क्षेत्रथी पाटलिपुत्रनो, कालथी वसतःकालनो, अने भावथी पीतवर्णनो घट चिन्तव्यो.' क्षेत्रथी ऋजुमति जघन्यथी अगुलनो असंख्यातमो भाग अने उल्कृष्टथी तिर्यक् मनुष्यलोकमां रहेला सङ्गी पंचेन्द्रिय पर्यायाना मनोगत भावोने जाणे देखे, अने विपुलमति अढी आगुल अधिक ते क्षेत्रमा रहेला मनोगत भावने जाणे देखे, कालथी ऋजुमति जघन्य पत्योपमना असंख्यातमा भागने अने उल्कृष्टपणे पत्योपमना असंख्यातमा भाग जेटला अतीत अनागत कालने जाणे अने जुए, तेने ज विपुलमति वधारे सटपणे जाणे. भावथी ऋजुमति सर्व भावोना अनन्तमा भागे रहेला अनन्त भावने जाणे अने जुए. तेने विपुलमति विशुद्ध अने सटपणे जाणे अने जुए. जुओ—नंदी. प. १०७-२. प ११.

૧૦૯. [પ્ર૦] વિમંગનાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિપ્પ વિસપ્પ પ્ણ્ણત્તે ? [૩૦] ગોયમા ! સે સમાસઓ ચટ્ઠિદ્ધે પ્ણ્ણત્તે, તં જહા-દ્ધલ્લો, સેત્તલ્લો, કાલ્લો, માવલ્લો । દ્ધલ્લો ણં વિમંગનાણી વિમંગનાણપરિગયાઈં દ્ધાઈં જાણ્ણ પાસદ્ધ; પ્વં જાવ્ ભાવલ્લો ણં વિમંગનાણી વિમંગનાણપરિગપ્પ માવે જાણ્ણ પાસદ્ધ ।

૧૧૦. [પ્ર૦] ણાણી ણં મંતે ! 'ણાણિ'ત્તિ કાલ્લો કેવલ્લિરં દ્ધો ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી ડુલ્લિદ્ધે પ્ણ્ણત્તે, તં જહા-સાદ્ધ વા અપ્પજ્જવસિપ્પ, સાદ્ધ વા સપ્પજ્જવસિપ્પ । તત્ત્ય ણં જે સે સાદ્ધ સપ્પજ્જવસિપ્પ સે જહ્ણેણં અંતોમુદ્ધત્તં, ઉક્કોસેણં છાવ્ઠ્ઠિ સાગરોવમાઈં સાતિરેગાઈં ।

૧૧૧. [પ્ર૦] આમિણિવોદ્ધિયણાણી ણં મંતે ! આમિણિવોદ્ધિયં પ્વં નાણી, આમિણિવોદ્ધિયનાણી, જાવ કેવલ્લનાણી, અજ્ઞાણી, મદ્ધઅજ્ઞાણી, સુયઅજ્ઞાણી, વિમંગનાણી-પ્પર્પ્પસિં દ્ધસપ્પહવિ ચિ સંચિટ્ઠણા જહા કાયટ્ઠિદ્ધંપ્પ । અંતરં સવ્વં જહા જીવામિણે અપ્પાવહુગાણિ તિચ્છિ જહા વહુવત્તલ્લયાપ્પ ।

વિમંગજ્ઞાનનો વિષય.

૧૦૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વિમંગજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કઠો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે મંદેપથી ચાર પ્રકારનો કઠો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને ભાવથી; દ્રવ્યથી વિમંગજ્ઞાની વિમંગજ્ઞાનના વિષયમૂત દ્રવ્યોને જાણે છે અને જુદા છે, ૫ પ્રમાણે યાવદ્ ભાવથી વિમંગજ્ઞાની વિમંગજ્ઞાનના વિષયમૂત ભાવોને જાણે છે અને જુદા છે.

જ્ઞાની જ્ઞાનીપણે ક્યામુઠી રહે ?

૧૧૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્ઞાની જ્ઞાનીપણે કાલથી ક્યામુઠી રહે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જ્ઞાની વે પ્રજારના કયા છે, તે આ પ્રમાણે—સાદિ સપર્યવસિત અને માદિઅપર્યવસિત. તેમા જે જ્ઞાની સાદિમપર્યવસિત છે તે જઘન્યથી અન્તર્મુદ્ધર્ત સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી કાઠકા અધિક છાસટ સાગરોપમ સુધી જ્ઞાનીપણે રહે છે.

આમિણિવોધિકાદિ દગનો સ્થિતિકાલ.

૧૧૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આમિણિવોધિકજ્ઞાની, આમિણિવોધિકજ્ઞાનીપણે કાલથી કેટલા કાલ સુધી રહે ? [૩૦] ૫ પ્રમાણે જ્ઞાની, આમિણિવોધિકજ્ઞાની, યાવત્ કેવલ્લજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મતિઅજ્ઞાની, શુતઅજ્ઞાની અને વિમંગજ્ઞાની—૫ દગનો જ્ઞાની પણે સ્થિતિકાલ પ્રજાપનાસૂત્રના અટારમા િકાયસ્થિતિપદમા કહ્યા પ્રમાણે જાણવો; અને િજીવામિગમ મૂત્રમા કહ્યા પ્રમાણે ૫ દગનું પરસ્પર અન્તર જાણવું. તેમજ પ્રજાપના સૂત્રના 'વહુવત્તલ્લયા પદમા' કહ્યા પ્રમાણે ત્રણે જ્ઞાની, અજ્ઞાની અને ઉભયના અન્પવ્વત્તો જાણવા.

### ૧ અટ્ઠ્ઠ વિ હ ।

૧૧૦. \* કાલદ્વારમા સાદિ અપર્યવસિત ( જેની આદિ છે પણ અન્ત નથી તે ) કેવલ્લજ્ઞાની, અને માદિ સપર્યવસિત ( જેની આદિ અને અન્ત વખે છે તે ) મલ્લાદિજ્ઞાનવાલ્લો. તેમા કેવલ્લજ્ઞાનનો માદિઅપર્યવસિત કાલ છે, અને ઘીજા મલ્લાદિજ્ઞાનનો માદિમપર્યવસિત કાલ છે. તેમા આદિના વે જ્ઞાનની અપેક્ષા અલ્પ અન્તર્મુદ્ધર્ત કાલ કહ્યો છે, અન્યથા અવધિ અને મન પર્યવનો જઘન્ય કાલ એક નમય છે, અને ઉત્કૃષ્ટ કંદક અધિક છાસટ સાગરોપમ કાલ આદિના ત્રણ જ્ઞાનને આશ્રયી કહ્યો છે.—ટીકા.

૧૧૧. † જ્ઞાની, આમિણિવોધિકજ્ઞાની, શુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની, મન પર્યવજ્ઞાની, કેવલ્લજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મત્તજ્ઞાની, શુતાજ્ઞાની અને વિમંગજ્ઞાનીનો સ્થિતિકાલ 'પવ્વણામૂત્ર'ના અટારમા કાયસ્થિતિ પદમા કહ્યા પ્રમાણે જાણવો. તેમા જ્ઞાનીનો અલ્પસ્થિતિકાલ પૂર્વે ( નૂ ૧૧૦. ) વહેલો છે, છતાં અહીં ૫૫ કથો તે એક પ્રકારના સંચયને ઊંધે ત્રણો છે આમિણિવોધિકજ્ઞાન અને શુતજ્ઞાનનો કાલ જઘન્યથી અન્તર્મુદ્ધર્ત, અને ઉત્કૃષ્ટથી કંદક અધિક છાસટ સાગરોપમ છે. અવધિજ્ઞાનનો ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિકાલ પણ ૫ પ્રકારે છે, પણ જઘન્યથી એક નમય છે જેમકે, જ્યારે કોઈ વિમંગજ્ઞાની સમ્યગ્દર્શન પામે ત્યારે તેના પ્રથમ સમયેજ વિમંગજ્ઞાન અવધિજ્ઞાનરૂપે પરિણત થાય છે, ત્યાર પછી તરતજ ઘીજે સમયે પટે ત્યારે માત્ર એક નમય અવધિજ્ઞાન રહે છે. મન પર્યવજ્ઞાનીનો અલ્પસ્થિતિકાલ જઘન્યથી એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટથી કંદક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ હોય છે, જેમ અપ્રમત્ત ગુણસ્થાનકે ઘર્તમાન કોઈ સંચયને મન પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય, અને તરતજ ઘીજે સમયે નટ થાય ત્યારે તેને જઘન્ય એક સમય થાય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી કંદક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ છે, પૂર્વકોટી વર્ષના આગુપમાયા કોઈ મનુષ્યને ચારિત્ર અગીકાર કર્યા પછી તરતજ મન પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય અને યાવજીવ રહે ત્યારે તેનો સ્થિતિકાલ ઉત્કૃષ્ટથી કંદક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ થાય છે. કેવલ્લજ્ઞાનનો સ્થિતિકાલ સાદિ અનન્ત છે અજ્ઞાન, મલ્લજ્ઞાન અને શુતઅજ્ઞાનનો સ્થિતિકાલ † ત્રણ પ્રકારનો છે—૧ અનાદિ અનન્ત અમલ્લોને આશ્રયી, ૨ અનાદિ માન્ત મલ્લોને આશ્રયી, અને ૩ સાદિ માન્ત સમ્યગ્દર્શનથી પટેલાને આશ્રયી તેમા સાદિ માન્ત કાલ જઘન્યથી અન્તર્મુદ્ધર્ત હોય છે, કેમકે કોઈ જીવ સમ્યગ્દર્શનથી પટે અને પુનઃ અન્તર્મુદ્ધર્ત પછી સમ્યગ્દર્શન પામે. ઉત્કૃષ્ટથી અનન્ત કાલ જાણવો. કેમકે કોઈ જીવ સમ્યગ્દર્શનથી પછી અન્તકાલે પુનઃ સમ્યગ્દર્શન પામે. વિમંગજ્ઞાનનો સ્થિતિકાલ જઘન્યથી એક સમય છે, કેમકે તે ઉત્પન્ન થયા પછી ઘીજે સમયે તેનો નાશ થાય, અને ઉત્કૃષ્ટથી કંદક ન્યૂન પૂર્વકોટી અધિક તેત્રીગ સાગરોપમ છે. જેમ કોઈ મનુષ્યમા કંદક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ વિમંગજ્ઞાનિપણે રહીને સાતની નરક પ્રયત્તિમા ઉત્પન્ન થાય. સુઓ—પ્રજા ૦ પદ. ૧૮. પ. ૩૮૯—૧ પ. ૩.

‡ અન્તરદ્વારને વિષે પાંચ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાનનું અન્તર જેમ જીવામિગમસૂત્રમા કહ્યું છે તે પ્રમાણે જાણવું. આમિણિવોધિક જ્ઞાનનું પરસ્પર અન્તર જઘન્યથી અન્તર્મુદ્ધર્ત અને ઉત્કૃષ્ટથી કંદક ન્યૂન અર્થ પુદ્ગલપરાગત કાલ છે. ૫ પ્રમાણે શુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યવજ્ઞાનીને પણ જાણવું કેવલ્લજ્ઞાનીને પરસ્પર અન્તર નથી. મતિઅજ્ઞાની અને શુતઅજ્ઞાનીનું અન્તર જઘન્યથી અન્તર્મુદ્ધર્ત અને ઉત્કૃષ્ટથી કંદક અધિક છાસટ સાગરોપમ હોય છે. વિમંગજ્ઞાનીનું જઘન્યથી અન્તર અન્તર્મુદ્ધર્ત અને ઉત્કૃષ્ટથી ( વનસત્તિના કાલ જેટલો ) અનન્તકાલ છે સુઓ—( જીવામિ ૦ પ. ૪૫૯—૧ પ. ૫. )

† પાંચ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાનનું અલ્પવહુલ-સૌથી ઘોઠા જીવો મન પર્યવજ્ઞાની છે, તેથી અવધિજ્ઞાની અલ્પવહુલ ગુણ છે, તેથી આમિણિવોધિક જ્ઞાની અને શુતજ્ઞાની વંદે ત્રિશેષાધિક છે અને પરસ્પર તુલ્ય છે, તેથી કેવલ્લજ્ઞાની અનન્તગુણ છે. સૌથી ઘોઠા વિમંગજ્ઞાની છે, તેથી મતિઅજ્ઞાની અને શુતઅજ્ઞાની અનન્ત-ગુણ છે અને પરસ્પર સરસા છે. તેમા પ્રથમ જ્ઞાનીના અલ્પવહુલમા મન પર્યવજ્ઞાની સૌથી ઘોઠા છે, કારણ કે સંચયને જ મન પર્યવજ્ઞાન હોય છે. અવધિજ્ઞાની ચારે

११२. [प्र०] केवतिया णं भंते ! आभिणिवोहियणाणपज्जवा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता आभिणिवोहियणाण-  
पज्जवा पन्नत्ता ।

११३. [प्र०] केवतिया णं भंते ! सुयनाणपज्जवा पण्णत्ता ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव केवलणाणस्स । एवं मइअन्ना-  
णस्स सुयअन्नाणस्स य ।

११४. [प्र०] केवतिया णं भंते ! विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ।

११५. [प्र०] एएसिणं भंते ! आभिणिवोहियणाणपज्जवाणं, सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं  
वलनाणपज्जवाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्यत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाण-  
पज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिवोहियणाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ।

११२. [प्र०] हे भगवन् ! आभिनिवोधिकज्ञानना केटला \*पर्यायो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिवोधिकज्ञानना अनन्त  
पर्यायो कहा छे.

११३. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतज्ञानना केटला पर्यायो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वप्रमाणे [अनन्त पर्यायो] जाणवा. ए  
प्रमाणे यावत् केवलज्ञानना पर्यायो जाणवा, तेम मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानना पण पर्यायो जाणवा.

११४. [प्र०] हे भगवन् ! विभंगज्ञानना केटला पर्यायो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! विभंगज्ञानना अनन्त पर्यायो कहा छे.

११५. [प्र०] हे भगवन् ! ए (पूर्व कहेल) आभिनिवोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञानना पर्या-  
मां कोना पर्यायो कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो सौथी थोडा छे, तेथी अवधिज्ञानना  
पर्यायो अनंतगुण छे, तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्त छे, तेथी अनंतगुण आभिनिवोधिकज्ञानना पर्यायो छे, अने तेथी अनंतगुण केवल-  
ज्ञानना पर्यायो छे.

तिमा होय छे माटे तेथी असंख्यात गुणा छे. तेथी आभिनिवोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक होवार्तु कारण अवध्यादिज्ञानरहित छतां पण केटलाक  
चेन्द्रियजीवो अने केटलाक विकलेन्द्रियो पण (साखादनसम्यग्दर्शननो सभव होवार्थी) मति-श्रुतज्ञानी होय छे. अज्ञानिना अल्पबहुत्वमां पंचेन्द्रियोनेज  
ऐभंगज्ञान सभवे छे माटे ते सौथी थोडा छे, मल्यज्ञानी अने श्रुताज्ञानी एकेन्द्रियो पण होय छे, माटे तेथी तेओ अनन्तगुण छे अने परस्पर तुल्य छे. ज्ञानी  
अने अज्ञानिना मित्र अल्पबहुत्वमा सौथी थोडा मन पर्यवज्ञानी छे, तेथी असंख्यात गुणा अवधिज्ञानी, तेथी आभिनिवोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक छे  
अने परस्पर तुल्य छे. तेथी विभंगज्ञानी असंख्यात गुणा छे, केमके सम्यग्दृष्टि देव अने नारक करता मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणा छे. तेथी केवलज्ञानी अन-  
तगुणा छे, केमके एकेन्द्रिय शिवाय बाकीना सर्व जीवोथी सिद्धो अनन्तगुणा छे, तेथी मल्यज्ञानी अने श्रुताज्ञानी अनन्तगुण छे अने परस्पर तुल्य छे, केमके  
साधारण वनस्पतिजीवो मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी होय छे अने तेओ सिद्ध एकी अनन्तगुण छे. जुयो—प्रज्ञा० पद. ३ प. १३६-३ प. १०.

११२. \* पर्याय एटले भिन्न भिन्न अवस्थाओ के भेदो. तेना वे प्रकार छे—स्वपर्याय अने परपर्याय. क्षयोपशमनी विचित्रताथी मतिज्ञानना अवग्रहादि  
अनन्त भेदो थाय छे ते स्वपर्याय कहेवाय छे, अथवा मतिज्ञानना विषयभूत ज्ञेय पदार्थो अनन्त छे, अने ज्ञेयना भेदथी ज्ञानना पण अनन्त भेदो थाय छे, माटे  
ते रीते पण तेना अनन्त पर्यायो छे. अथवा केवलज्ञान बडे मतिज्ञानना अंश करता अनन्ता अंश थाय ते मतिज्ञानना अनन्त पर्यायो कहेवाय छे. मतिज्ञान  
शेवाय वीजा पदार्थोना पर्यायो छे ते तेना परपर्यायो छे अने ते स्वपर्यायथी अनन्तगुण छे. अहिं कोइ शंका करे के जो ते परपर्यायो छे तो ते मतिज्ञानना  
ए एम केम कहेवाय, अने जो ते मतिज्ञानना छे तो परपर्यायो केम कहेवाय ? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे—परपदार्थोना पर्यायोने मतिज्ञानने विषे सवन्ध नथी  
माटे ते परपर्याय कहेवाय छे, परन्तु मतिज्ञानना स्वपर्यायोने जाणवामा, अने तेनाथी बूढा पाटवामा प्रतियोगि-सवन्धी तरीके तेनो उपयोग छे माटे ते  
मतिज्ञानना परपर्यायो कहेवाय छे.—टीका.

११३. † श्रुतज्ञानना पण स्वपर्यायो अने परपर्यायो अनन्त छे. तेमा स्वपर्यायो जे श्रुतज्ञानना अक्षरश्रुतादि भेदो छे ते जाणवा, ते अनन्त छे, केमके  
तेनो क्षयोपशम विचित्र होवार्थी अने विषय अनन्त होवार्थी श्रुतानुसारी बोधना अनन्त प्रकार थाय छे. अथवा केवलज्ञान बडे श्रुतज्ञानना अनन्त अतो थाय  
ते तेना स्वपर्याय कहेवाय छे, तेथी भिन्न पदार्थोना विशेष धर्मो ते श्रुतज्ञानना परपर्यायो छे. अवधिज्ञानना अनन्त स्वपर्यायो छे, कारणके तेना मवप्रलय अने  
क्षयोपशमिक भेदथी, नारक तिर्यक मनुष्य अने देव रूप स्वामीना भेदथी, असंख्य क्षेत्र अने कालना भेदथी, अनन्त द्रव्य पर्यायना भेदथी, अने तेना अनन्त  
अक्षो थता होवार्थी तेना अनन्त भेदो थाय छे ए प्रमाणे मन पर्यवज्ञानना अने केवलज्ञानना विषयना अनन्त भेदथी तेम अनन्त अक्षोनी कल्पनाथी अनन्त  
पर्यायो थाय छे.—टीका.

११५. ‡ अही स्वपर्यायनी अपेक्षाए अल्पबहुत्व समजुं, केमके स्व अने परपर्यायनी अपेक्षाए सर्व ज्ञानोना सरखा पर्यायो छे. तेमा मांथी थोडा  
मन पर्यवज्ञानना पर्यायो छे, केमके तेनो विषय मात्र मन छे. तेथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके मन पर्यवज्ञाननी अपेक्षाए अवधिज्ञाननी  
विषय द्रव्य अने पर्यायोथी अनन्तगुण छे तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके तेनो विषय रूपी अने अरूपी द्रव्यो होवार्थी तेनाथी अनन्तगुण छे.  
तेथी आभिनिवोधिकज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, कारणके तेनो विषय अभिलाष्य अने अनभिलाष्य पदार्थो होवार्थी तेथी अनन्तगुण छे. तेथी केवलज्ञानना  
पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके तेनो विषय सर्व द्रव्यो अने सर्व पर्यायो होवार्थी तेथी अनन्तगुण छे. ए प्रमाणे अज्ञानोना अल्पबहुत्वतुं कारण जाणी हेतुं—टीका.

૧૧૬. [પ્ર૦] ઇપ્સિ ણં મંતે ! મદ્અધ્નાણપજ્જવાણં, સુયઅધ્નાણપજ્જવાણં વિમંગનાણપજ્જવાણ ય કયરે કયરેહિતો જાવ વિસેસાહિયા વા ? [૩૦] મોયમા ! સદ્ધત્યોવા વિમંગનાણપજ્જવા, સુયઅધ્નાણપજ્જવા અણંતગુણા, મદ્અધ્નાણપજ્જવા અણંતગુણા ।

૧૧૭. [પ્ર૦] ઇપ્સિ ણં મંતે ! આમિણિવોહિયનાણપજ્જવાણં, જાવ કેવલનાણપજ્જવાણં, મદ્અધ્નાણપજ્જવાણં, સુયઅધ્નાણપજ્જવાણં, વિમંગનાણપજ્જવાણં કયરે કયરેહિતો જાવ વિસેસાહિયા વા ? [૩૦] મોયમા ! સદ્ધત્યોવા મળપજ્જવનાણપજ્જવા, વિમંગનાણપજ્જવા અણંતગુણા, ઓહિનાણપજ્જવા અણંતગુણા, સુયઅધ્નાણપજ્જવા અણંતગુણા, સુયનાણપજ્જવા વિસેસાહિયા, મદ્અધ્નાણપજ્જવા અણંતગુણા, આમિણિવોહિયનાણપજ્જવા વિસેસાહિયા, કેવલનાણપજ્જવા અણંતગુણા । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ ।

અદ્ધમસપ વીઓ ઉદ્દેસો સમત્તો ।

૧૧૬. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! એ મતિઅજ્ઞાન શ્રુતઅજ્ઞાન અને વિમંગજ્ઞાનના પર્યાયોમાં કોના પર્યાયો કોના પર્યાયોથી યાવદ્ વિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વથી થોડા વિમંગજ્ઞાનના પર્યાયો છે, તેથી અનંતગુણ શ્રુતઅજ્ઞાનના પર્યાયો છે, અને તેથી અનંતગુણ મતિઅજ્ઞાનના પર્યાયો છે.

૧૧૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! એ આમિણિવોહિયજ્ઞાનના યાવત્ કેવલજ્ઞાનના તથા મતિઅજ્ઞાન, શ્રુતઅજ્ઞાન, અને વિમંગજ્ઞાનના પર્યાયોમાં કોના પર્યાયો કોના પર્યાયોથી યાવદ્ વિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સૌથી થોડા મન:પર્યાયજ્ઞાનના પર્યાયો છે, તેથી અનંતગુણ વિમંગજ્ઞાનના પર્યાયો છે, તેથી અનંતગુણ અવધિજ્ઞાનના પર્યાયો છે, તેથી અનંતગુણ શ્રુતઅજ્ઞાનના પર્યાયો છે, તેના કરતા શ્રુતજ્ઞાનના પર્યાયો વિશેષાધિક છે, તેથી મતિઅજ્ઞાનના પર્યાયો અનંતગુણ છે, તેથી મતિજ્ઞાનના પર્યાયો વિશેષાધિક છે અને તેના કરતાં કેવલજ્ઞાનના પર્યાયો અનંતગુણ છે. હે મગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે, હે મગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે. [ એમ કહી મગવાન્ ગૌતમ યાવદ્ નિહરે છે. ]

અદ્ધમશતે દ્વિતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

૧૧૭. \* જ્ઞાન અને અજ્ઞાનના મિશ્રસ્ત્રને વિષે સૌથી થોડા મન પર્યવજ્ઞાનના પર્યાયો છે, તેથી વિમંગજ્ઞાનના પર્યાયો અનંતગુણ છે, કેમકે સ્વપરના પ્રવેયકથી આરંભી સાતમી નરક ધૃતિવીમાં અને તિર્યક્ અસંખ્યાત દ્વીપ સમુદ્રમા રહેલા કેટલાક રૂપી દ્રવ્યો અને તેના કેટલાક પર્યાયો વિમંગજ્ઞાનનો વિષય છે, અને તે મન:પર્યવજ્ઞાનના વિષયની અપેક્ષાએ અનંતગુણ છે. વિમંગજ્ઞાનથી અવધિજ્ઞાનના પર્યાયો અનંતગુણ છે, કેમકે અવધિજ્ઞાનનો વિષય સકલ રૂપિદ્રવ્યો અને પ્રત્યેક દ્રવ્યના અસંખ્યાત પર્યાયો છે, અને તે વિમંગજ્ઞાનની અપેક્ષાએ અનંતગુણ છે. તેથી શ્રુતાજ્ઞાનના પર્યાયો અનંત ગુણ છે, કેમકે શ્રુતાજ્ઞાનનો વિષય શ્રુતજ્ઞાનની પેઠે સામાન્યારેજ્ઞે કરીને સર્વે મૂર્તામૂર્તે દ્રવ્યો અને સર્વે પર્યાયો હોવાથી અવધિજ્ઞાનની અપેક્ષાએ અનંત ગુણ છે. તેથી શ્રુતજ્ઞાનના પર્યાયો વિશેષાધિક છે, કેમકે શ્રુતઅજ્ઞાનને અગોચર કેટલાક પર્યાયને શ્રુતજ્ઞાન જાણે છે. તેથી મત્તજ્ઞાનના પર્યાયો અનંતગુણ છે, કેમકે શ્રુતજ્ઞાન અભિલાષ્યવસ્તુવિષયક હોય છે, અને મત્તજ્ઞાન તેનાથી અનંતગુણ અનભિલાષ્યવસ્તુવિષયક પણ હોય છે, તેથી મતિજ્ઞાનના પર્યાયો વિશેષાધિક છે. તેથી કેવલજ્ઞાનના પર્યાયો અનંતગુણ છે, કેમકે તે સર્વે કાલમા રહેલા સર્વે દ્રવ્યો અને સર્વે પર્યાયોને જાણે છે.—ટીકા.

## ततिओ उद्देसो ।

१. [प्र०] कइविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा-संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया ।

२. [प्र०] से किं तं संखेज्जजीविया ? [उ०] संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा-ताले, तमाले, तक्कलि, तेतलि-जहा पन्नवणाए जाव नालिएरी । जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं संखेज्जजीविया ।

३. [प्र०] से किं तं असंखेज्जजीविया ? [उ०] असंखेज्जजीविया डुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पगट्टिया य बहुवीयगा य ।

४. [प्र०] से किं तं पगट्टिया ? [उ०] पगट्टिया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा निवं-व-जंबु०-एवं जहा पन्नवणापए जाव फला बहुवीयगा । सेत्तं बहुवीयगा । सेत्तं असंखेज्जजीविया ।

५. [प्र०] से किं तं अणंतजीविया ? [उ०] अणंतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा-आलुप, मूलप, सिंगवेरे-एवं जहा सत्तमसए जाव सिउंढी, मुखुंढी, जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं अणंतजीविया ।

## तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! वृक्षो केटला प्रकारना कखा छे ? [उ०] हे गौतम ! वृक्षो त्रण प्रकारना कखा छे; ते आ प्रमाणे-संख्यात-जीववाळा, असंख्यातजीववाळा अने अनंतजीववाळा.

२. [प्र०] हे भगवन् ! संख्यातजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! संख्यातजीववाळा वृक्षो अनेक प्रकारना कखा छे, ते आ प्रमाणे-ताड, तमाल, तक्कलि, तेतलि-इत्यादि \*'प्रज्ञापना' सूत्रमा कखा प्रमाणे यावत् नालियेरी पर्यन्त जाणवा. ए सिवाय तेवा प्रकारना वीजा वृक्षो पण संख्यातजीववाळा जाणवा. ए प्रमाणे संख्यातजीवी वृक्षो कखा.

३. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्यातजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्यातजीववाळा वृक्षो वे प्रकारना कखा छे; ते आ प्रमाणे-एकवीजवाळा अने बहुवीजवाळा.

४. [प्र०] हे भगवन् ! एकवीजवाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! एकवीजवाळा वृक्षो अनेक प्रकारना कखा छे; ते आ प्रमाणे-'निव, आम्र, जाबू'-इत्यादि †प्रज्ञापनासूत्रना 'प्रज्ञापना' नामे प्रथमपदमा कखा प्रमाणे यावत् बहुवीजवाळा फले सुधी जाणवा. ए प्रमाणे असंख्यातजीवी वृक्षो कखा.

५. [प्र०] हे भगवन् ! अनंतजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! अनंतजीववाळा वृक्षो अनेकप्रकारना कखा छे, ते आ प्रमाणे-'आलु ( बटाटा ), शृंगवेर ( आदु )'-इत्यादि ‡सत्तम शतकमा कखा प्रमाणे यावत् सिउंढी मुखुंढी सुधी जाणवा. जे वीजा पण तेवा प्रकारना वृक्षो छे तेओ पण ( अनंतजीववाळा ) जाणवा. ए प्रमाणे अनंतजीववाळा वृक्षो कखा.

१ मूलप ग-ऊ । २ जाव सीओ कण्ठे सि-ग, जाव सीठण्ठे घ, जाव सीठण्ठे सु-ट ।

३. \* प्रज्ञा० पद. १. प. ३३-१. प. ६. । ३. † प्रज्ञा० पद. १. प. ३१-१ पं. ५. । ५ ‡ जग० वृ. खं. घ ७. ट. ३. म् ५.

६. [प्र०] अह भंते ! कुम्भे, कुम्भाचलिया, गोहा, गोहाचलिया, गोणा, गोणाचलिया, मणुस्से, मणुस्साचलिया, महिसे, महिसाचलिया—एपसिणं भंते ! दुहा वा तिहा वा संगैजहा वा छिप्राणं जे अंतरा ते वि णं तेहि जीवपणसेहि फुडा ! [उ०] हंता फुडा ।

७. [प्र०] पुरिले णं भंते ! अंतरे हत्येण वा, पादेण वा, अंगुलियाण वा, सत्तागाण वा, कट्टेण वा, किलिचेण वा, आमसमाणे वा, संमुसमाणे वा, आलिहमाणे वा, विळिहमाणे वा, अन्नयरेण वा तिम्रेणं सत्यजापणं आछिदमाणे वा, विछिदमाणे वा, अगणिकापणं वा समोदहमाणे तेसि जीवपणसाणं किंचि आवाहं वा विवाहं वा उप्पापइ, छविच्छेदं वा करेइ ? [उ०] णो तिणट्टे समट्टे, नो यल्लु तत्थ सत्थं कैमइ ।

८. [प्र०] कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट पुढवीओ पत्ताओ, तं जहा—रयणप्पमा, अहे सत्तमा, ईसीपम्भारा ।

९. [प्र०] रमा णं भंते ! रयणप्पमापुढवी किं चरिमा अचरिमा ? [उ०] चरिमपदं निरचसेसं भाणियधं । जाव वेमाणिया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा, अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

अट्टमसए ततिओ उद्देशो समत्तो ।

जीवप्रदेशोमी स्पृष्ट-

६. [प्र०] हे भगवन् ! काचओ, काचवानी श्रेणि, गोधा ( घो ), गोधानी श्रेणी, गाय, गायनी श्रेणि, मनुष्य, मनुष्यनी श्रेणि, महिप ( पाडे ), महिपनी श्रेणि—ए वधाना वे, ऋण के नस्याना ग्वंट कर्मा होय तो तेओनी वचनो भाग शुं जीवप्रदेशी स्पृष्ट-स्पर्शिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! हा, स्पृष्ट होय.

जीवप्रदेशोने शक्या-  
दिकमी पीडा थाय ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ पुरुष [ ते काचवादिना खडोना ] अन्तराट-वचेना भागने हाययी, पगयी, आगळीयी, सळीयी, काष्ठयी अने नाना लाकडायी स्पर्श करतो, विशेष स्पर्श करतो, योडुं विशेष आकर्षण करतो, अथवा कोइ पण तीक्ष्ण शस्त्रना समूहयी छेदतो, अधिक छेदतो, अग्नि वडे वाळतो, ते जीवप्रदेशोने योडी के अधिक पीडा उप्पन्न करे, या तेना कोइ अवयवोने छेद करे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ ययार्थ नयी, केमके जीव प्रदेशोने शक्य असर करतु नयी.

पृथ्वीओ-

८. [प्र०] हे भगवन् ! केटली पृथ्वीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ पृथिवीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—रत्नप्रमा, यावत् अव सतमपृथिवी अने ईपत् प्राग्भारा ( सिद्धशिला ).

९. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रमा पृथिवी शुं \*चरम—प्रान्तवर्ती—छे के अचरम—मध्यवर्ती—छे ? इत्यादि. [उ०] अही ( प्रज्ञापना सूत्रं ) 'चरम' पद सबळुं कहेवुं. यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! वैमानिको स्पर्श चरम वडे शु चरम छे के अचरम छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ चरम पण छे अने अचरम पण छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम कही भगवान् गौतम यावत् विचरे छे. ]

अट्टमशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

१ अंतरा ट, ( जं अंतरं ) ते अंतरे घ । २ कलिचेण घ । ३ संकमइ ग-घ ।

९ \* रत्नप्रमा पृथिवी चन्द्रये एववचनान्त अने बहुवचनान्त चरम अने अचरमना चार प्रश्नो, तेमज चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेशना वे प्रश्नो मळी छ प्रश्नो छे, भगवान् तेनो उत्तर आपे छे—हे गौतम ! रत्नप्रमा चरम पण नयी, तेम अचरम पण नयी—इत्यादि. चरम एट्टे पर्यन्तवर्ती अने अचरम एट्टे मध्यवर्ती. चरमपण अने अचरमपण अन्यवस्तु मापेय छे ते अन्य वस्तुं अही कयन नहि होवायी रत्नप्रमा पृथिवी चरम के अचरम कही शक्य नहि, एज कारणयी बहुवचनान्त चरम, अचरम, चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेश पण कही शक्य नहि परन्तु जो रत्नप्रमा पृथिवी असख्यात प्रदेशावगाढ होवायी तेना अनेक अवयवनी निवक्षा करीए तो वे अचरमरूप, तेम बहुवचनान्त चरमरूप, चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप कही शक्य, कारण के रत्नप्रमाना प्रान्त भागमा अवस्थित राहो अनेकपणे निवक्षित करीए ल्यारे बहुवचनान्त 'चरम' कही शक्य अने मध्यभागवर्ती खंड एकपणे निवक्षित करीए ल्यारे एकवचनान्त 'अचरम' कहेवाय. ए प्रमाणे प्रदेशदृष्टी चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेशरूप पण कही शक्य.— विशेष माटे जुओ—प्रज्ञा० चरमपद० १०. प. १५४-१.

## चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! पंच किरियाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-काइया, अहिगरणिया; एवं किरियापदं निरवसेसं भाणियच्चं, जाव मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

## अट्टमसए चउत्थो उद्देशो समत्तो ।

### चतुर्थं उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा यावत् [ गौतम ] ए प्रमाणे वोत्त्या के हे भगवन् ! केटली क्रियाओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच क्रियाओ कही छे, ते आ प्रमाणे-कायिकी, अधिकरणिकी-ए प्रमाणे अहीं [ प्रज्ञापना सूत्रं वावीशमुं ] सघळ्ळु \*क्रियापद यावत् 'मायाप्रत्ययिक क्रियाओ विशेषाधिक छे' त्या सुधी कहेवु. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे [ एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे ]

### अष्टमशते चतुर्थं उद्देशक समाप्त.

१. \* कायिकी, अधिकरणिकी, प्राद्वेपिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपातिकी-ए पाच क्रियाओ छे. तेमा कायिकी क्रिया वे प्रकारे छे-अनुपरत्तकायिकी अने दुष्प्रयुक्तकायिकी. हिंसादि सावय योग्यी देशधी के सर्वदा अनिच्छतयवेळाने अनुपरत्तकायिकी क्रिया होय छे. आ क्रिया मात्र अविरतिने होय छे. कायादीना दुष्प्रयोग बढे थयेली जे क्रिया ते दुष्प्रयुक्तकायिकी कहेवाय छे. आ क्रिया प्रमत्त साधुने पण होय छे. अधिकरणिकी क्रिया वे प्रकारे छे-संयोजनाधिकरणिकी अने निर्वर्तनाधिकरणिकी. संयोजन-पूर्वे वनावेत्ता अन्नशलादि हिंसाना साधनोने मेळवी तैयार राख्वा ते संयोजनाधिकरणिकी, अने नवा वनाववा ते निर्वर्तनाधिकरणिकी. पोतासुं, परंतुं अथवा चनेसुं अशुभ चिंतवुं ते प्राद्वेपिकी जे पोताने परने अथवा उभयने दु ख आपे ते पारितापनिकी. जे पोताने, परने अथवा बन्नेने जीवितधी रहित करे ते प्राणातिपातिकी.—विशेषमाटे जुओ-प्रज्ञा० पद. २२ प. ४३५-२



## पंचमओ उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं चयासी-आजीविया णं भंते ! धेरे भगवंते एवं चयासी-समणोवासगस्स णं भंते ! सामाह्यकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ 'भंडं अवहरेज्जा, सेणं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सयं भंडं अणुगवेसइ, परायगं भंडं अणुगवेसइ ? [उ०] गोयमा ! सयं भंडं अणुगवेसति, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ।

२. [प्र०] तस्स णं भंते ! तेहिं सीलद्वय-गुण-वेरमण-पच्चखाण-पोसहोववासेहिं से भंडे अमंडे भवइ ? [उ०] हंता भवइ । [प्र०] से केण खाइ णं अट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-सयं भंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ-णो मे हिरण्णे, णो मे सुवचे, नो मे कंसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलधन-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयणामादीए संतसारसावदेजे, ममत्तभावे पुण से अपरिण्णाए भवइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ सयं भंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ।

३. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! सामाह्यकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ जायं चरेज्जा, से णं भंते ! किं जायं चरइ, अजायं चरइ ? [उ०] गोयमा ! जायं चरइ, नो अजायं चरइ ।

## पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा यावत् [ गौतमे ] ए प्रमाणे कर्तुं के-हे भगवन् ! आजीविकोए ( गोशालकना शिष्योए ) स्वविर भगवन्तोने आ प्रमाणे कर्तुं हतुं-हे भगवन् ! जेणे सामायिक कर्तुं छे एवा श्रमणना उपाश्रयमा चेटेला श्रमणोपासकना भाड-वलादि वस्तुं कोइ अपहरण करे, तो हे भगवन् ! [ सामायिक समाप्त यया पछी ] ते वस्तुं अन्वेपण करतो ते श्रावक शुं पोताना भाडने शोचे छे के पारका भाडने शोचे ? [उ०] हे गौतम ! ते श्रावक पोताना भाटने शोचे छे, पण पारका भाडने शोचतो नथी,

२. [प्र०] हे भगवन् ! ते ग्रीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौपथोपवासवडे ते श्रावकं [ अपहृत ] भांड ते अभांड याय ? [उ०] हे गौतम ! हा, अभाट याय. [प्र०] हे भगवन् ! [ जो अभाड थाय तो ] एम शा हेतुथी कहो छो के-[ ते श्रमणोपासक ] पोताना भाडने शोचे छे, पण पारका भाडने शोचतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! [ सामायिक करनार ] ते श्रावकना मनमां एवो परिणान होय छे के-‘मारे हिरण्य नथी, मारे सुवर्ण नथी, मारे कासुं नथी, मारे वल्ल नथी, अने मारे विपुल धन, कलक, रत्न, मणि, मोती, शंख, परवाला, रक्त रत्नो-इत्यादि विद्यमान सारभूत द्रव्य नथी,’ परन्तु तेणे ममत्त भावतुं प्रत्याख्यान कर्तुं नथी, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहवाय छे के ते पोताना भाडने गवेपे छे, पण पारका भाडने गवेपतो नथी.

३. [प्र०] हे भगवन् ! जेणे सामायिक कर्तुं छे एवा, श्रमणना उपाश्रयमा रहेला श्रमणोपासकनी छीने कोइ पुरुष सेवे तो शुं ते तेनी छी सेवे छे के अलीने-अन्यनी छीने-सेवे ? [उ०] हे गौतम ! ते पुरुष तेनी छीने सेवे छे पण अन्यनी छीने सेवतो नथी.

४. [प्र०] तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ ? [उ०] इंता भवइ । [प्र०] से केणं खाइ णं अट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-जायं चरइ नो अजायं चरइ ? [उ०] गोयसा ! तस्स णं एवं भवइ-नो मे माता, नो मे पिता, णो मे भाया, नो मे भगिणी, णो मे भज्जा, णो मे पुत्ता, णो मे धूया, नो मे सुण्हा; पेज्ज-बंधणे पुण से अवोच्छिन्ने भवइ, से तेणट्टेणं गोयसा ! जाव नो अजायं चरइ ।

५. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! पुद्दामेव थूलप पाणाइवाए अपच्चक्खाए भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ? [उ०] गोयसा ! तीयं पडिक्कमति, पडुप्पन्नं संवरेति, अणागयं पच्चक्खाति ।

६. [प्र०] तीयं पडिक्कममाणे किं १ तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति, २ तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति, ३ तिविहं एगविहेणं पडिक्कमति, ४ दुविहं तिविहेणं पडिक्कमति, ५ दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति, ६ दुविहं एगविहेणं पडिक्कमति, ७ एगविहं तिविहेणं पडिक्कमति, ८ एगविहं दुविहेणं पडिक्कमति, ९ एक्कविहं एक्कविहेणं पडिक्कमति ? [उ०] गोयसा ! तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति, तिविहं दुविहेणं वा पडिक्कमति, एवं चेव जाव एक्कविहं वा एक्कविहेणं पडिक्कमति । १ तिविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, करंतं णाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा । २ तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; ३ अहवा न करेति न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा; ४ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा । तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे ५ न करेति, न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा; ६ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा, ७ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ कायसा । दुविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे ८ न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा; ९ अहवा न करेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा; १० अहवा न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा । दुविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे ११ न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा; १२ अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा; १३ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा कायसा; १४ अहवा न करेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; १५ अहवा न करेति, करंतं नाणु-

४. [प्र०] हे भगवन् ! ते शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौपधोपवास वडे [ते श्रावकनीं] स्त्री अस्त्री (अन्यस्त्री) थाय ? [उ०] हा, थाय. [प्र०] हे भगवन् ! तो एम शा हेतुयी कहो छो के तेनी स्त्रीने सेवे छे पण अस्त्री (अन्यस्त्री)ने सेवतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! [ शीलव्रतादि वडे ] ते श्रावकना मनमां एवुं होय छे के-भारे माता नथी, पिता नथी, भाइ नथी, बहेन नथी, स्त्री नथी, पुत्रो नथी, पुत्री नथी, अने स्नुपा (पुत्रवधू) नथी, परन्तु तेने प्रेमवन्धन व्रुव्युं नथी, ते हेतुयी हे गौतम ! ते पुरुष तेनी स्त्रीने सेवे छे, पण अन्यस्त्रीने सेवतो नथी.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासकने पूर्वे स्थूल प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान होतुं नथी, ते पट्टीयी तेनुं प्रत्याख्यान करतो शुं करे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत काले करेल प्राणातिपातने प्रतिक्रमे-निन्दे, प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) प्राणातिपातनो संवर-रोध करे, अने अनागत (भविष्य) प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अतीत कालना प्राणातिपातने प्रतिक्रमतो ते श्रमणोपासक शुं १ त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमे, २ त्रिविध द्विविधे ३ त्रिविध एकविधे, ४ द्विविध त्रिविधे, ५ द्विविध द्विविधे, ६ द्विविध एकविधे, ७ एकविध त्रिविधे, ८ एकविध द्विविधे, के ९ एकविध एकविधे प्रतिक्रमे ? [उ०] हे गौतम ! १ त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमे, २ त्रिविध द्विविधे प्रतिक्रमे-इत्यादि पूर्वे कक्षा प्रमाणे यावत् ९ एकविध एकविधे प्रतिक्रमे. त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करताने अनुमोदन आपतो नथी; २ द्विविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमोदन आपतो नथी, ३ अथवा मन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ४ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ५ त्रिविध एकविधे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी, करावतो नथी, अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ६ अथवा वचनथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ७ अथवा कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ८ द्विविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी, ९ अथवा मन, वचन अने कायथी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; १० अथवा मन, वचन अने कायथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ११ द्विविध द्विविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनथी करतो नथी अने करावतो नथी, १२ अथवा मन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी, १३ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी, १४ अथवा मन अने वचनथी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १५ अथवा मन अने कायथी करतो नथी अने करनारने

जाणइ मणसा कायसा; १६ अहवा न करेइ, करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा, १७ अहवा न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; १८ अहवा न कारवेइ, करंतं नाणुजाणति मणसा कायसा; १९ अहवा न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा । दुविहं पक्खिविहेणं पडिक्कममाणे २० न करेति, न कारवेति मणसा; २१ अहवा न करेति न कारवेति वयसा; २२ अहवा न करेति, न कारवेति कायसा; २३ अहवा न करेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा; २४ अहवा न करेइ, करंतं नाणुजाणइ वयसा; २५ अहवा न करेइ, करंतं नाणुजाणइ कायसा; २६ अहवा न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा; २७ अहवा न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ वयसा, २८ अहवा न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ कायसा । प्गविहं निविहेणं पडिक्कममाणे २९ न करेइ मणसा वयसा कायसा; ३० अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा, ३१ अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा । पक्खिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे ३२ न करेइ मणसा वयसा, ३३ अहवा न करेइ मणसा कायसा; ३४ अहवा न करेइ वयसा कायसा; ३५ अहवा न कारवेति मणसा वयसा; ३६ अहवा न कारवेति मणसा कायसा; ३७ अहवा न कारवेइ वयसा कायसा; ३८ अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; ३९ अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ४० अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा । प्गविहं प्गविहेणं पडिक्कममाणे ४१ न करेइ मणसा, ४२ अहवा न करेइ वयसा, ४३ अहवा न करेइ कायसा; ४४ अहवा न कारवेति मणसा; ४५ अहवा न कारवेति वयसा; ४६ अहवा न कारवेति कायसा, ४७ अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा, ४८ अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा; ४९ अहवा करंतं नाणुजाणइ कायसा ।

७. [प्र०] पटुप्पन्नं संवरेमाणे किं तिविहं तिविहेणं संवरेइ ? [उ०] एवं जहा पडिक्कममाणेणं पग्गूपपन्नं भंग्गा भणिया एवं संवरेमाणेण वि पग्गूपपन्नं भंग्गा भाणियद्वा ।

८. [प्र०] अणागयं पच्चन्यमाणे किं तिविहं तिविहेणं पच्चन्यइ ? [उ०] एवं तं चेव भंग्गा पग्गूपपन्नं भाणियद्वा जाव अहवा करंतं नाणुजाणइ कायसा ।

९. [प्र०] समणोवासगरस्स णं भंते ! पुद्दामेव थूलमुत्तावाप अपच्चन्यए भवइ, ते णं भंते ! पच्छा पच्चाइन्नमाणे १ [उ०] एवं जहा पाणाइवायस्स सीयालं भंगसयं भणियं, तहा मुत्तावायस्स वि भाणियच्चं । एवं अदिन्नादाणस्स वि, एवं थूल-

अनुमति आपतो नथी, १६ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १७ अथवा मन अने वचनथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १८ अथवा मन अने कायथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १९ अथवा वचन अने कायथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; २० द्विविध एकविधे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी अने करावतो नथी, २१ अथवा वचनथी करतो नथी अने करावतो नथी, २२ अथवा कायवडे करतो नथी अने करावतो नथी, २३ अथवा मनवडे करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २४ अथवा वचनवडे करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २५ अथवा कायवडे करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २६ अथवा मनवडे करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २७ अथवा वचनथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी २८ अथवा कायवडे करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २९ एकविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी, ३० अथवा मन, वचन अने कायथी करावतो नथी, ३१ अथवा मन, वचन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ३२ एकविध द्विविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनथी करतो नथी, ३३ अथवा मन अने कायथी करतो नथी, ३४ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी, ३५ अथवा मन अने वचनथी करावतो नथी, ३६ अथवा मन अने कायथी करावतो नथी, ३७ अथवा वचन अने कायथी करावतो नथी, ३८ अथवा मन अने वचनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ३९ अथवा मन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४० अथवा वचन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४१ एकविध एकविधे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी, ४२ अथवा वचनथी करतो नथी, ४३ अथवा कायथी करतो नथी; ४४ अथवा मनथी करावतो नथी, ४५ अथवा वचनथी करावतो नथी, ४६ अथवा कायथी करावतो नथी, ४७ अथवा मनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४८ अथवा वचनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४९ अथवा कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी.

७. [प्र०] प्रत्युत्पन्नं (वर्तमानं) प्राणातिपातनो सवर (रोध) करतो [श्रमणोपासक] शं त्रिविध त्रिविधे संवर करे ?—इत्यादि. [उ०] जेम प्रतिक्रमता ओगणपचास भागा कत्ता, तेम संवर करता पण ओगणपचास भागा कहेवा.

८. [प्र०] अनागत प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करतो [श्रमणोपासक] शं त्रिविध त्रिविधे प्रत्याख्यान करे ?—इत्यादि. [उ०] पूर्वं कत्ता प्रमाणे ओगणपचास भागा यावत् 'अथवा कायवडे करनारने अनुमति आपतो नथी' त्या सुधी कहेवा.

९. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासके पहेला स्थूल मृपावादनं प्रत्याख्यान करुं नथी, पठीथी हे भगवन् ! ते [स्थूल मृपावादनं] प्रत्याख्यान करतो शं करे ? [उ०] जेम प्राणातिपातना एकसो सुडतालीय भागा कत्ता, तेम मृपावाटना पण एकसो सुडतालीय भागा कहेवा, ए प्रमाणे [स्थूल] अदत्तादानना, स्थूल मैथुनना अने स्थूल परिग्रहना पण भागाओ यावत् 'अथवा कायथी करनारने अनुमति

वर्तमानप्राणातिपातना संवरसंबन्धे भागा

अनागत प्राणातिपातना प्रत्याख्यान संवरसंबन्धे भागा

स्थूलमृपावादनं प्रत्याख्यान अने तेना भागा, यावत् स्थूल परिग्रहना भागा

गस्स मेहुणस्स वि, थूलगस्स परिग्गहस्स वि, जाव अहवा करेत्तं नाणुजाणइ कायसा । एवं खलु परिसगा समणोवासगा भवंति, नो खलु परिसगा आजीविओवासगा भवंति ।

१०. आजीवियसमयस्स णं अयमंद्दु—अक्खीणपंडिभोइणो सत्ते सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्दव-इत्ता आहारं आहारंति । तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, तं जहा—१ ताले, २ तालपलंवे, ३ उद्विहे, ४ संविहे, ५ अवविहे, ६ उदए, ७ नामुदए, ८ णैम्मुदए, ९ अणुवालए, १० संखवालए, ११ अयंबुले, १२ कायरए—इच्चेते दुवालसं आजीविओवासगा अरिहंतदेवतागा, अम्मा—पिउसुस्सुसगा, पंचफलपडिक्कता, तं जहा—उंबरोहिं, वडेहिं, वोररोहिं, सतररोहिं, पिलक्खुहिं; पलंइ—लहसुणकंदमूलविवजगा, अणिल्लंछिपहिं अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिपहिं विंत्तेहिं विंत्ति कप्पेमाणा विहरंति । एए वि ताव एवं इच्छंति किमंग ! पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस—म्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेत्तं वा अन्नं न समणुजाणेत्तए । तं जहा—इंगालकम्म, वणकम्म, साडी-कम्म, भाडीकम्म, फोडीकम्म, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्म, निळ्ळण-कम्म, दवग्गिदावणया, सर-दह-तलागपरिसोसणया, असतीपोसणया । इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भविच्चा ालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।

११. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! चउद्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, णमंतरा, जोइसिया, चेमाणिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

अट्टमसए पंचमओ उद्देशओ समत्तो ।

भ्रापतो नथी! त्यां सुधी जाणवा. आ आवा प्रकारना श्रमणोपासको होय छे, पण आवा प्रकारना आजीविकना (गोशालना) उपासको गेता नथी.

१०. आजीविक (गोशालक)ना सिद्धातनो आ अर्थ छे—‘दरेक जीवो अक्षीणपरिभोगी—सविच्चाहारी छे, तेथी तेओ [लकडी वगैरेथी] इणीने [तरवार वगैरेथी] छेदीने, [शूलादिथी] भेदीने, [पाख वगैरेना कापवा वडे] लोप करीने [चामडी उतारवाथी] विलोपीने अने पिनाश करीने खाय छे. [अर्थात् वीजा जीवो हननादिमां तत्पर छे] पण आजीविकना मतमा आ वार आजीविकोपासको कहा छे, ते आ प्रमाणे—१ ताल, २ तालप्रलंब, ३ उद्विध, ४ सविध, ५ अवविध, ६ उदय, ७ नामोदय, ८ नमोदय, ९ अनुपालक, १० शंखपालक, ११ अयंबुल अने १२ कातर—ए वार आजीविकना उपासको छे, तेओनो देव अर्हत् (गोशालक) छे, मातापितानी सेवा करनार तेओ आ पाच प्रकारना फलने खाता नथी ते आ प्रमाणे—१ उंबराना फल, २ वडना फल, ३ वोर, ४ सतरनां फल अने ५ पीपळाना फल. तेओ हुंगळी, लसण अने कंदमूलना विवर्जक (त्यागी) छे. तेओ अनिल्लिखित (खसी नहि करायला), नहि नाथेला (नाक विंधेला) एवा वळ्ढो वडे त्रसप्राणीनी हिंसा विवर्जित व्यापार वडे आजीविका करे छे. ज्यारे ए गोशालकना श्रावको पण ए प्रकारे धर्मने इच्छे छे, तो पछी जे आ श्रमणोपासको छे तेओने माटे शुं कहेहुं? जेओने आ पंदर कर्मादानो खयं करवाने, वीजा पासे करवावने अने अन्य करनारने अनुमति आपवाने कल्पता नथी. ते कर्मादानो आ प्रमाणे छे—१ अंगारकर्म, २ वनकर्म, ३ शकटकर्म, ४ भाटकर्म, ५ स्फोट-कर्म, ६ दंतवाणिज्य, ७ लाक्षावाणिज्य, ८ केशवाणिज्य, ९ रसवाणिज्य, १० विपवाणिज्य, ११ यंत्रपीलनकर्म, १२ निर्लंछनकर्म, १३ दवाग्निदापन, १४ सरोवर, द्रह अने तलावतुं शोपण अने १५ असतीपोपण. ए श्रमणोपासको शुक्क—पवित्र, अने पवित्रताप्रधान थइने मरणसमये काल करीने कोइ पण देवलोकमा देवपणे उत्पन्न थाय छे.

११. [प्र०] हे भगवन्! केटला प्रकारना देवलोकको कहा छे? [उ०] हे गौतम! चार प्रकारना देवलोकको कहा छे. ते आ प्रमाणे—भवनवासी, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे. [एम कहीने यावद् भगवान् गौतम विहरे छे.]

अष्टम शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

## छट्टो उद्देशओ.

१. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तद्दारुचं समणं वा माहणं वा फासु-एणसणिज्जेणं असण-पाण-गाइम-सारमेणं पडिलामेमाणस्स किं कज्जति ? [उ०] गोयमा ! एगंतसो निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पाये कम्मे कज्जति ।

२. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तद्दारुचं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण० जाय पडिलामेमाणस्स किं कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! बहुतरिया से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराप से पाये कम्मे कज्जइ ।

३. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तद्दारुचं असंजयं अविरय-पडिहय-पच्चफ्फायायपायकम्मं फासुएण वा, अफासु-एण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण-पाण० जाय किं कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! एगंतसो से पाये कम्मे कज्जइ, नत्थि से काचि निज्जरा कज्जइ ।

४. निग्गंथं च णं गाहावद्दुकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पचिट्ठं केइ दोहिं पिंडेहिं उचनिमंतेज्जा-एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियत्ता सिया, जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायधे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा भुंजेज्जा, नो अत्तेसि दावप; एगंते नुणा-वाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयधे सिया ।

## पष्ठ उद्देशक.

सयतने निर्दोष अश-  
नादिथी प्रतिशामता  
शु फल थाय? एकांत  
निर्जरा थाय

१. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना ( उत्तम ) श्रमण या ब्राह्मणने प्रासुक ( अचित्त ) अने एपणीय ( निर्दोष ) अशन, पान, खादिम तथा स्वादिम आहार वडे प्रतिलाभता-सत्कार करता-श्रमणोपासकने शुं [ फल ] थाय ! [उ०] हे गौतम ! एकांत निर्जरा थाय, पण तेने पाप कर्म न थाय.

सदोष अशनादिथी  
प्रतिलाभता शु फल  
थाय? घणी निर्जरा  
अने अल्प पाप कर्मनो  
बंध थाय

२. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने अप्रासुक ( मचित्त ) अने अनेपणीय ( सदोष ) अशनादि वडे प्रतिलाभता श्रमणोपासकने शुं [ फल ] थाय ! [उ०] हे गौतम ! घणी निर्जरा थाय, अने अत्यन्त अल्प पाप कर्म थाय.

असयतने आहारथी  
प्रतिलाभता शु फल  
थाय? एकान्त पाप  
कर्म थाय.

३. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना विरतिरहित, अप्रतिहत अने अप्रत्याख्यात पापकर्मवाळा अनंयतने प्रासुक अथवा अण-सुक, एपणीय अथवा अनेपणीय अशनादि वडे प्रतिलाभता श्रमणोपासकने शुं [ फल ] थाय ! [उ०] हे गौतम ! एकांत पापकर्म थाय, पण काइ निर्जरा न थाय.

निर्ग्रन्थने वे पिंड म  
दहन करवा माटे एप-  
निमयण

४. गृहस्थना घरे आहार ग्रहण करवानी इच्छायी प्रवेश करेला निर्ग्रन्थने कोइ गृहस्थ वे पिंड ( आहार ) ग्रहण करवा माटे उपनिमंत्रण करे के-हे आशुप्मान् ! एक पिंड तमे खाजो, अने वीजो पिंड स्वविरोने आपजो. पछी ते निर्ग्रंथ ते ( वने ) पिंडने ग्रहण करे अने ते स्वविरोनी शोध करे, तपास करता ज्या स्वविरोने जुए लाज ते पिंड तेने आपे, जो कदाच शोधता स्वविरोने न जुए तो ते पिंड पोते खाय नहीं अने वीजाने आपे नहीं, पण एकान्त, अनापात-ज्या कोइ आवे नहि एवी अचित्त अने बहु प्रासुक संश्लिष ( भूमि ) ने जोइने, प्रमार्जनि ला परठवे.

५. [प्र०] निगमं च णं गाहावद्कुलं पिंडवायपडियाए - अणुप्पविट्ठं-केइ स्तीहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा-एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, दो थेराणं दलयाहि; से य ते पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसेयद्या, सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयधे सिया, एवं जाव दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा, णवरं एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि; सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयधे सिया ।

६. [प्र०] निगमं च णं गाहावद्द० जाव केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा-एगं आउसो ! अप्पणा पडिभुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि । से य तं पडिग्गहेज्जा, तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अत्तेसि दावए; सेसं तं चेव, जाव परिट्ठावेयधे सिया । एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्गहवत्तधया भणिया, एवं गोच्छंय-रयहरण-चोलपट्ट-कंवल-लट्टि-संथारगवत्तधया य भाणियद्या, जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा, जाव परिट्ठावेयधे सिया ।

७. [प्र०] निगमं येण य गाहावद्दकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अन्नयरे अकिच्चट्टाणे पडिसेविप, तस्स णं एवं भवति-इहेव ताव अहं पयस्स ठाणस्स आलोपमि, पडिकमामि, निन्दामि, गरिहामि, विउट्टामि, विसोहेमि, अकरणयाए अब्भुट्टेमि, जहापरियं प्रायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि; तयो पच्छा थेराणं अंतिसं आलोएस्सामि, जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि । से य संपट्टिप, असंपत्ते थेरा य पुद्दामेव अमुहा सिया, से णं भंते ! किं आराहए, विराहए ? [उ०] गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

८. [प्र०] से य संपट्टिप असंपत्ते अप्पणा य पुद्दामेव अमुहे सिया, से णं भंते ! किं आराहए, विराहए ? [उ०] गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

९. [प्र०] से य संपट्टिप असंपत्ते थेरा य कालं करेज्जा, से णं भंते ! किं आराहए, विराहए ? [उ०] गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

५. [प्र०] गृहस्थना घरे आहार ग्रहण करवाना इरादायी प्रवेश करेला निर्ग्रन्थने कोइ गृहस्थ त्रण पिंड ग्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे के-हे आयुप्पन् । एक पिंड तमे खाजो अने वीजा वे पिंड स्वविरोने आपजो. पछी ते निर्ग्रन्थ ते पिंडोने ग्रहण करे, अने स्वविरोनी तपास करे. वाकीनुं पूर्वसूत्रनी पेठे जाणवुं, यावत् परठवे, ए प्रमाणे यावद् दश पिंडोने ग्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे, परन्तु एम काहे के हे आयुप्पन् । एक पिंड तमे खाजो अने वाकीना नव पिंड स्वविरोने आपजो, वाकी वधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् परठवे.

६. [प्र०] निर्ग्रन्थ यावत् गृहपतिना कुलमा प्रवेश करे अने कोइ गृहस्थ वे पात्र वडे तेने उपनिमंत्रण करे के-हे आयुप्पन् ! एक पात्रनो तमे उपभोग करजो अने वीजुं पात्र स्वविरोने आपजो. ते वजे पात्रोने ग्रहण करे, वाकीनु ते प्रमाणे जाणवुं, यावत् पोते ते पात्रनो उपयोग न करे अने वीजाने आपे पण नहीं, वाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् ते पात्रने परठवे. ए प्रमाणे यावत् दस पात्र सुधी काहेवुं, जे प्रमाणे पात्रनी वक्तव्यता कही छे तेम गुच्छा, रजोहरण, चोलपट्ट, कंवल, दंड अने सस्तारकनी वक्तव्यता कहेवी, यावत् दश संस्तारकवडे उपनिमंत्रण करे, यावत् तेने परठवे.

७. [प्र०] कोइ निर्ग्रन्थे गृहपतिना घरे आहार ग्रहण करवाना इरादायी प्रवेश करता कोइ अकृत्य स्थाननुं प्रतिसेवन कर्तुं होय, पछी ते निर्ग्रन्थना मनमां एम थाय के-“प्रथम हुं अहीज आ अकार्य स्थाननुं आलोचन, प्रतिक्रमण, निन्दा अने गर्हा करुं, [तेना अनुबन्धने] छेदुं, विउद्ध करुं, पुनः न करवा माटे तैयार थाउं, अने यथायोग्य प्रायश्चित्तरूप तप कर्मनो स्वीकार करु. ल्यार पछी स्वविरोनी पासे जइने आलोचना करीश, यावत् तपकर्मनो स्वीकार करीश.” [एम विचारी] ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जवा नीकळे अने स्यां पहेच्या पहेला ते स्वविरो [वातादि दोपना प्रकोपधी] मूक थइ जाय-चोली न शके-अर्थात् प्रायश्चित्त न आपी शके तो हे भगवन् ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (१)

८. [प्र०] हवे ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जाय अने स्या पहेच्या पहेला ते (निर्ग्रन्थ) मूक थइ जाय तो हे भगवन् ! शु ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (२)

९. [प्र०] ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जवा नीकळे अने ते पहेंच्या पहेलां ते स्वविरो काळ करे तो हे भगवन् ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (३)

१०. [प्र०] से य संपट्टिण असंपत्ते अष्पणा य पुद्गामेव कालं फरेज्जा, से णं भंते ! किं आराहण, विराहण ? [उ०] गोयमा ! आराहण, नो विराहण ।

११. [प्र०] से य संपट्टिण, संपत्ते, धेरा य अमुहा सिया, से णं भंते ! किं आराहण, विराहण ? [उ०] गोयमा ! आराहण, नो विराहण । से य संपट्टिण संपत्ते, अष्पणा य०-पवं संपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियद्वा जट्ठे असंपत्तेण ।

१२. [प्र०] निग्गंथेण य वहिया वियारभूमि वा विहारभूमि वा निग्गंतेण अन्नयरे अकिच्चट्टाणे पडिसेविण, तस्स णं एवं भवति-इहेव ताव अहं०-पवं ण्थ वि ते चेव अट्ट आलावगा भाणियद्वा; जाव नो विराहण । निग्गंथेण य गामाणुगामं दुइज्जमाणेण अन्नयरे अकिच्चट्टाणे पडिसेविण, तस्स णं पवं भवद्-इहेव ताव अहं०, ण्थ वि ते चेव अट्ट आलावगा भाणियद्वा, जाव नो विराहण ।

१३. [प्र०] निग्गंधीए य गाहावइकुलं पिडवायपडियाण अणुपविट्टाण अन्नयरे अकिच्चट्टाणे पडिसेविण; तीले णं पवं भवद्-इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स धालोपमि, जाव तवोक्कम्मं पडिवज्जामि, तथो पच्छा पवत्तिणीण अंतियं धालोपस्सामि, जाव पडिवज्जिस्सामि । सा य संपट्टिया असंपत्ता पवत्तिणी य अमुहा सिया; सा णं भंते ! किं आराहिया, विराहिया ? [उ०] गोयमा ! आराहिया, नो विराहिया । सा य संपट्टिया जद्वा निग्गंथस्स निद्रि गमा भणिया एवं निग्गंधीए वि निद्रि आलावगा भाणियद्वा, जाव आराहिया, नो विराहिया ।

१४. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुधद्-आराहण, नो विराहण ? [उ०] गोयमा ! से जद्वा नामप केइ पुरिसे एणं महं उच्चालोमं वा, गयलोमं वा, सणलोमं वा, कप्पासलोमं वा, तणखुयं वा दुदा वा तिद्वा वा संगेज्जद्वा वा छिदिक्ता अगणिकार्यंसि पक्खिवेज्जा, से णूणं गोयमा ! छिज्जमाणे छिन्ने, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, उच्चमाणे द्देत्ति वत्तधं सिया ? हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिन्ने, जाव द्देत्ति वत्तधं सिया । से जद्वा वा केइ पुरिसे वत्तं अहत्तं वा, धोत्तं वा, तंतुग्गयं वा मंजिट्टा-

निर्ग्रन्थ काळ करे.

१०. [प्र०] हवे स्वविरोनी पासे जवा निकळेले ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे पहोंच्या पहेला पोते काळ करी जाव तो हे भगवन् ! शुं ते आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (४)

संप्राप्त निर्ग्रन्थना चार आलापक.

११. [प्र०] ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जवा नीकळे अने पहोंचता वार ते स्वविरो मूक बर्द जाय, तो हे भगवन् ! शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. हवे ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जाय अने त्या पहोंचता वार ते ( निर्ग्रन्थ ) मूक बर्द जाय तो शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ?-इत्यादि संप्राप्त ( पहेलेच्या ) निर्ग्रन्थना चार आलापक असंप्राप्त ( नहि पहेलेच्या ) निर्ग्रन्थनी पेटे कहेवा.

निहारभूमि के निहारभूमि तरफ जता

१२. कोई निर्ग्रन्थे बहार निहारभूमि के विहारभूमि तरफ जता कोई एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन करुं होय, पछी तेने एम थाय के 'हु प्रथम अही तेनुं आलोचनादि करुं'-इत्यादि पूर्वनी पेटे अही पण तेज आठ आलापक कहेवा, यावत् ते निर्ग्रन्थ विराधक नथी. निर्ग्रन्थे ग्रामानुग्रामविहार करता कोई एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन करुं होय, पछी तेने एम थाय के, हुं प्रथम तेनुं आलोचनादि करुं-इत्यादि पूर्ववत् अही पण तेज आठ आलापक कहेवा, यावत् 'ते निर्ग्रन्थ विराधक नथी.'

ग्रामानुग्राम विहार करता.

आराधक निर्ग्रन्थी.

१३. [प्र०] कोई साध्वीए आहार ग्रहण करवाना इरादाथी गृहपतिना घरे प्रवेश करता कोई एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन करुं, पछी तेने एम थाय के-हुं प्रथम आ अकृत्यस्थाननुं आलोचन करुं, यावत् तप कर्मनो स्वीकार करुं. लार पछी प्रवर्तिनी ( बुद्ध साध्वी ) नी पासे आलोचना करीश, यावत् तप कर्मनो स्वीकार करीश, [ एम विचारी ] ते साध्वी ते प्रवर्तिनीनी पासे जवा निकळे, अने त्या पहोंच्या पहेला ते प्रवर्तिनी मूर्गी थइ जाय, तो हे भगवन् ! शुं ते साध्वी आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते साध्वी आराधक छे पण विराधक नथी, जेम निर्ग्रन्थने त्रण आलापको कहा छे तेम 'ते साध्वी जवा नीकळे'-इत्यादि त्रण आलापको साध्वीने कहेवा. यावत् 'ते आराधक छे पण विराधक नथी.'

आराधक दोबाउ कारण.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के तेओ आराधक छे पण विराधक नथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक पुरुष एक मोटा ऊनना, गजना लोमना, शणना रेसाना, कपासना रेसाना, तृणना अन्नभागना वे, त्रण के संख्यात छेद-ककडा-करी तेने अग्निमां नाखे तो हे गौतम ! ते छेदातां छेदायेलें, अग्निमां नंखाता नंखायेलें, वळ्ना वळेले एम कहेवाय ? हे भगवन् ! हा, छेदाता छेदायेलें, यावद् वळ्ना वळेले कहेवाय, अथवा कोई पुरुष नहुं, धोएलें के तन्न-साळथी तरत उतरेलें कपडुं मजीठना रंगनी

द्वोणीय पक्खिवेज्जा, से ण्णं गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खिस्से, पक्खिप्पमाणे पक्खिस्से, रज्जमाणे रस्सेत्ति वत्तं सिया ? हंता भगवं ! उक्खिप्पमाणे उक्खिस्से जाव रस्सेत्ति वत्तं सिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-आराहणं नो विराहणं ।

१५. [प्र०] पदीवस्त णं भंते ! द्वियायमाणस्त किं पदीवे द्वियाति, लट्टी द्वियाइ, वत्ती द्वियाति, वेहे द्वियाइ, पदी-वचंपप द्वियाइ, जोई द्वियाइ ? [उ०] गोयमा ! नो पदीवे द्वियाइ, जाव नो पदीवचंपप द्वियाइ, जोई द्वियाइ ।

१६. [प्र०] अगारस्त णं भंते । द्वियायमाणस्त किं अगारे द्वियाइ, कुड्डा द्वियाइ, कडणा द्वियाइ, धारणा द्वियाइ, बलहरणे द्वियाइ, वंसा द्वियाइ, मल्ला द्वियाइ, चग्गा द्वियाइ, छित्तरा द्वियाइ, छाणे द्वियाति, जोती द्वियाति ? [उ०] गोयमा ! नो अगारे द्वियाति, नो कुड्डा द्वियाति, जाव नो छाणे द्वियाति, जोती द्वियाति ।

१७. [प्र०] जीवे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकरिण ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकरिण, सिय चउकरिण, सिय पंचकरिण, सिय अकरिण ।

१८. [प्र०] नेरइणं णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकरिण ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकरिण, सिय चउकरिण, सिय पंचकरिण ।

१९. [प्र०] असुरकुमारं णं भंते ? ओरालियसरीराओ कतिकरिण ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणिण; नवरं मणुस्से जहा जीवे ।

२०. [प्र०] जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरोहंतो कतिकरिण ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकरिण, जाव सिय अकरिण ।

कुंडीमां नाखे तो हे गौतम ! ते उंचेथी नाखता उंचेथी नंखायेल्लं, नांखतां नंखायेल्लं, रंगाता रंगायेल्लं एम कहेवाय ? हा भगवन् ! ते उंचेथी नांखता उंचेथी नंखायेल्लं, यावत् रंगाता रंगायेल्लं कहेवाय; ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के [आराधना माटे तैयार थएल्ले] ते आराधक छे पण विराधक नथी.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! वळ्ळा दीवामां शुं वळे छे ? शुं दीवो वळे छे, दीपयष्टि-दीवी वळे छे, वाट वळे छे, तेल वळे छे, दीवानुं टांकणु वळे छे, के ज्योति-दीपशिखा वळे छे ? [उ०] हे गौतम ! दीवो वळतो नथी, यावत् दीवानुं टांकणुं वळ्ळुं नथी, पण ज्योति वळे छे.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! वळता घरमा शुं वळे छे ? शुं घर वळे छे, भीतो वळे छे, त्राटी वळे छे, धारण ( मोभनी नीचेना स्तंभो ) वळे छे, मोभ वळे छे, वासो वळे छे, मल्लो ( भींतोना आधार थामला ) वळे छे, छींदरीओ वळे छे, छापं वळे छे, छान-डाम-वगेरेनुं टांकण वळे छे के ज्योति-अग्नि वळे छे ? [उ०] हे गौतम ! घर वळ्ळुं नथी, भीतो वळ्ळी नथी, यावत् डाम वगेरेनुं छान वळ्ळु नथी, पण ज्योति वळे छे.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! एक जीव [ परकीय ] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो, कदाच पांचक्रियावाळो, अने कदाच अक्रिय ( क्रिया रहित ) होय.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! एक नारक [ परकीय ] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! एक असुरकुमार [ परकीय ] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे [ त्रण, चार के पांच क्रियावाळो होय ] ए प्रमाणे यावद् वैमानिको जाणवा. परन्तु मनुष्यो जीवोनी पेठे जाणवा

२०. [प्र०] हे भगवन् ! एक जीव [ परकीय ] औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कदाच त्रणक्रियावाळो होय, यावत् कदाच अक्रिय होय.

१ ज्योति क्षि-घ । २ आगारे ग ।

१७ \*वायिकी, अधिहरणिकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपातिकी-ए पांच क्रियाओ छे तेमा एक जीव ज्यारे अन्य पृथिव्यारिक जीवना शरीरने आश्रयी कापानो आनार करे ल्यारे तेने वायिकी, अधिहरणिकी अने प्राद्वेषिकी ए त्रण क्रियाओ होय, केनके शचीतरणने कायिकी क्रियाना गद्म-पणा अधिहरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रिया धवश्य होय छे, अने बीजी के क्रियाओ भजनाए होय छे एटले ज्यारे ते जीवने परिताप लयम करे के पन करे ल्यारे तेने पारितापनिकी के प्राणातिपातिकी क्रिया होय छे-टीहा.



२१. [प्र०] नेरदण णं भंते ! ओरालियसरीरेहंतो कतिकिरिण ? [उ०] एवं पसो जहा पढमो दंडओ तथा एमो वि अपरिसेसो भाणियतो जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे ।

२२. [प्र०] जीवा णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिया, जाव सिय अकिरिया ।

२३. [प्र०] नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ? [उ०] एवं पसो वि जहा पढमो दंडओ तथा भाणियतो, जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा ।

२४. [प्र०] जीवा णं भंते ! ओरालियसरीरेहंतो कतिकिरिया ? [उ०] गोयमा ! निकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि, अकिरिया वि ।

२५. [प्र०] नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीरेहंतो कतिकिरिया ? [उ०] गोयमा ! निकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा ।

२६. [प्र०] जीवे णं भंते ! वेउद्वियसरीराओ कतिकिरिण ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिण, सिय चउकिरिण सिय अकिरिण ।

२७. [प्र०] नेरदण णं भंते ! वेउद्वियसरीराओ कतिकिरिण ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिण, सिय चउकिरिण, एवं जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे । एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिता तथा वेउद्वियसरीरेणं वि चत्तारि दंडगा भाणियद्वा, नवरं पंचमकिरिया न भण्ट, सेसं तं चेव । एवं जहा वेउद्वियं तथा आहारं पि, नेयं पि, कम्मं पि भाणियद्दं; एकेके चत्तारि दंडगा भाणियद्वा, जाव वेमाणिया णं भंते ! कम्मसरीरेहंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि । सेवं भंते ! सेवं भंते ! च्ति ।

### अट्टमसए छट्ठो उद्देशो समत्तो ।

नैरयिक.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! एक नैरयिक [ पर सवन्धी ] औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! जेम आ प्रथम दंडक [ सू. १८ ] कळो छे तेम आ सवळ्य टंडको पण यावद् वैमानिक सुवी कहेवा, परन्तु मनुष्यो जीवोनी पेटे जाणवा.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो [ पर सवन्धी ] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! कटाच त्रणक्रियावाळो होय, यावत् कटाच क्रियारहित होय.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको [ पर सवन्धी ] औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! जेम प्रथम दंडक [ सू. १८. ] कळो छे तेनी पेटे यावद् वैमानिक सुवी आ दंडक पण कहेवो, पण मनुष्यो जीवोनी पेटे कहेवा.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! कटाच त्रणक्रियावाळो पण होय, चारक्रियावाळो पण होय, पांचक्रियावाळो पण होय अने क्रिया रहिन पण होय.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको [ परकीय ] औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! त्रणक्रियावाळो पण होय, चारक्रियावाळो पण होय, अने पांचक्रियावाळो पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको जाणवा. पण मनुष्यो जीवोनी पेटे जाणवा.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! जीव [ परकीय ] वैक्रियशरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! कटाच त्रणक्रियावाळो, कटाच चारक्रियावाळो \*अने कटाच अक्रिय होय.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिक [ पर सवन्धी ] वैक्रिय शरीरने आश्रयीने केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! कटाच त्रणक्रियावाळो अने कटाच चारक्रियावाळो होय. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक सुवी जाणवुं, पण मनुष्यने जीवनी पेटे जाणवो. ए प्रमाणे जेम औदारिक शरीरना चार दंडक कट्या, तेम वैक्रिय शरीरना पण चार दंडक कहेवा, परन्तु तेमा पाचमी क्रिया न कहेवी. चाकीउं पूर्वनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम वैक्रियशरीर संवंधे कळुं, तेम आहारक, तैजस अने कामेण शरीर संवंधे पण कहेवुं. एक एकला चार दंडक कहेवा, यावत्-[प्र०] हे भगवन् ! वैमानिको कामेण शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! त्रणक्रियावाळो पण होय अने चारक्रियावाळो पण होय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम कही यावद् भगवान् गौतम विहरे छे. ]

### अष्टमशतके पट्ट उद्देशक समाप्त.

२६. \* जीवने वैक्रिय शरीरने आश्रयी चार क्रियाओ होय छे, पाच क्रियाओ होवी नसी. केमके वैक्रिय शरीरने घात करवो अशक्य छे—टीकां.

## सत्तमो उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं, तेणं समयेणं रायगिहे नयरे, वन्नओ, गुणसिल्लय चेइय, वन्नओ, जाव पुढविसिलावट्टओ । तस्स णं गुणसिल्लस्स चेइयस्स अदूरस्सामंते वहवे अन्नउत्थिया परिवसंति । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणे भगवं महा-  
त्तीरे आदिगरे जाव समोसडे; जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स वहवे  
अंतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना, कुलसंपन्ना, जहा वितियसए जाव जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का, समणस्स भगवओ  
महावीरस्स अदूरस्सामंते उड्डंजाणू, अहोसिरा, ज्ञाणकोट्टोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति ।

२. तए णं ते अन्नउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुच्चे  
णं अज्जो तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-प्पडिहय० जहा सत्तमसए वीतिए उद्देसए जाव एगंतवाला या वि भवह ।

३. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय-  
विरय० जाव एगंतवाला यावि भवामो ?

४. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुच्चे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं साति-  
ज्जह; तए णं ते तुच्चे अदिन्नं गेण्हमाणा, अदिन्नं भुंजमाणा, अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय० जाव  
एगंतवाला यावि भवह ।

## सप्तम उद्देशक.

१. ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णन. गुणसिल्लक चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्टक हतो. ते  
गुणसिल्लक चैत्यनी आसपास थोडे दूर घणा अन्यतीर्थिको रहे छे ते काले-ते समये श्रमण भगवान् महावीर, तीर्थनी आदिना करनारा  
यावत् समोसर्या, यावत् परिपद् विसर्जित थइ. ते काले-ते समये श्रमण भगवंत महावीरना घणा शिष्यो, स्थविर भगवंतो जातिसपन्न,  
कुलसंपन्न-इत्यादि जेम वीजा \*शतकमा वर्णव्या छे तेवा, यावद् जीवितनी आशा अने मरणना भयथी रहित हता, अने श्रमण भगवंत महावीरनी  
आसपास उंचा ढींचण करी नीचे मस्तक नमावी, ध्यानरूप कोष्टने प्राप्त थयेला, तेओ संयम अने तप वडे आत्माने भावित करता यावत्  
विहरे छे.

अन्यतीर्थिको अने  
स्थविरोनो सवाद-

२. लार पछी ते अन्यतीर्थिको ज्या स्थविर भगवंतो छे त्या आवे छे, अने त्या आवीने तेओए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के—  
हे आयो ! तमे त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत अने अप्रतिहत पापकर्मवाळा छे—इत्यादि जेम \*सातमा शतकना वीजा उद्देशकमा  
कक्षा प्रमाणे यावत् एकांत बाल-अन्न छे.

अन्यतीर्थिको-  
त्रिविधे त्रिविधे  
असंयत.

३. लार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आयो ! अमे क्या कारणथी त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत  
यावद् एकांत बाल छीए.

स्थविरो-

४. लार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आयो ! तमे अदत्त ( कोइए नहीं आपेल ) पदार्थनुं ग्रहण  
करो छे, अदत्त पदार्थने खाओ छे अने अदत्तनो खाद लो छे—अर्थात् [ ग्रहणादिकनी ] अनुमति आपो छे, तेथी अदत्तनुं ग्रहण  
करता, अदत्तने जमता अने अदत्तनी अनुमति आपता तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, अने अविरत यावद् एकांत बाल-पण छे.

अन्यतीर्थिको-  
त्रिविधे त्रिविधे  
असंयत दोबाल  
कारण.

१ तुम्हे णं क, तुम्हे णं क । २ तुम्हे क ।

१. \* भग० प्र खं. पृ २७८. श. २. उ. ५. पं. २.  
१२ भ० सू०

† भग. वृ. खं. श. ७. उ. २. सू. १. पं ८.

५. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिचं गेण्हामो, अदिचं भुंजामो, अदिचं सातिज्जामो ? जए णं अम्हे अदिचं गेण्हमाणा, जाव अदिचं सातिज्जमाणा तिचिहं तिविहेणं असंजय० जाव एगंतवाला याचि भवामो ?

६. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुम्हाणं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिचे, पडिग्गहेज्जमाणे अपडिग्गहिए, निस्सरिज्जमाणे अणिसिद्धे; तुच्चं णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहणं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरिज्जा, गाहावइस्स णं तं, नो खलु तं तुच्चं; तए णं तुच्चे अदिचं गेण्हह, जाव अदिचं सातिज्जह; तए णं तुच्चे अदिचं गेण्हमाणा जाव एगंतवाला याचि भवह ।

७. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिचं गेण्हामो, अदिचं भुंजामो, अदिचं सातिज्जामो; अम्हे णं अज्जो ! दिचं गेण्हामो, दिचं भुंजामो, दिचं सातिज्जामो । तए णं अम्हे दिचं गेण्हमाणा, दिचं भुंजामो, दिचं सातिज्जमाणा तिचिहं तिविहेणं संजय-विरथ-पडिहय० जहा सत्तमसए जाव एगंतपंडिया याचि भवामो ।

८. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! तुम्हे दिचं गेण्हह, जाव दिचं सातिज्जह, जए णं तुच्चे दिचं गेण्हमाणा, जाव एगंतपंडिया याचि भवह ?

९. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-अम्हे (म्हं) णं अज्जो ! दिज्जमाणे दिचे, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गहिए, निस्सरिज्जमाणे निस्सिद्धे; अम्हं णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहणं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हं णं तं, नो खलु तं गाहावइस्स; तए णं अम्हे दिचं गेण्हामो, दिचं भुंजामो, दिचं सातिज्जामो, तए णं अम्हे दिचं गेण्हमाणा, जाव दिचं सातिज्जमाणा तिचिहं तिविहेणं संजय० जाव एगंतपंडिया वि भवामो । तुच्चे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं असंजय० जाव एगंतवाला याचि भवह ।

५. स्यार वाद ते स्यविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे अदत्तुं ग्रहण करीए छीए, अदत्तुं भोजन करीए छीए अने अदत्तनी अनुमति आपीए छीए के जेथी अदत्तने ग्रहण करता, यावत् अदत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, यावत् एकात वाल छीए ?

६. स्यार वाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्यविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमारा मतमां अपातुं होय ते आपेळं नथी, ग्रहण करतुं होय ते ग्रहण करायेळं नथी, [ पात्रमां ] नंखातुं होय ते नंखायेळं नथी. हे आर्यो ! तमने आपवामां आवतो पदार्थ ज्या सुची पात्रमां पत्थी नथी, तेवामा वचमाथीज ते पदार्थने कोइ अपहरण करे तो ते गृहपतिना पदार्थनुं अपहरण थयुं एम कहेवाय, पण तमारा पदार्थनुं अपहरण थयुं एम न कहेवाय, तेथी तमे अदत्तुं ग्रहण करो छो, यावद् अदत्तनी अनुमति आपो छो, माटे अदत्तुं ग्रहण करता तमे यावत् एकात अइ छो.

७. स्यार पछी ते स्यविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के हे आर्यो ! अमे अदत्तुं ग्रहण करता नथी, अदत्तुं भोजन करता नथी अने अदत्तनी अनुमति पण आपता नथी, हे आर्यो ! अमे दत्तुं-आपेळ पदार्थनुं ग्रहण करीए छीए, दत्तुं भोजन करीए छीए, अने दत्तनी अनुमति आपीए छीए, माटे दत्तुं ग्रहण करता, दत्तुं भोजन करता अने दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे सयत, विरत अने पापकर्मनो नाश करवावाळ्य \*सत्तम शतकमा कइया प्रमाणे यावत् एकात पंडित छीए.

८. स्यार वाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्यविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे क्या कारणथी दत्तुं ग्रहण करो छो, यावत् दत्तनी अनुमति आपो छो, जेथी दत्तुं ग्रहण करता तमे यावद् एकात पंडित छो ?

९. ते पछी ते स्यविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कहुं के हे आर्यो ! अमारा मतमा अपातुं ते अपायेळं, ग्रहण करतुं ते ग्रहण करायेळं, अने [ पात्रमां ] नंखातुं ते नंखायेळं छे, जेथी हे आर्यो ! अमने देवातो पदार्थ ज्यासुची पात्रमा नथी पत्थो तेवामा वचमा कोइ ते पदार्थनो अपहार करे तो ते अमारा पदार्थनो अपहार थयो एम कहेवाय, पण ते गृहपतिना पदार्थनो अपहार थयो एम न कहेवाय, माटे अमे दत्तुं ग्रहण करीए छीए, दत्तुं भोजन करीए छीए, अने दत्तनी अनुमति आपीए छीए, तेथी दत्तुं ग्रहण करता, यावत् दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे सयत, यावद् एकात पंडित पण छीए. हे आर्यो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असयत यावद् एकात वाल छो.

१०. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं जाव एगंतवाला यावि भवामो ?

११. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—तुंघ्मे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं खातिज्जह; तए णं तुंघ्मे अदिन्नं गेण्हमाणा, जाव एगंतवाला यावि भवह ।

१२. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो, जाव एगंतवाला या वि भवामो ?

१३. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—तुंघ्मे (व्मं) णं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने, तं चेव जाव गाहा-वहस्स णं तं, णो खलु तं तुंघ्मं; तए णं तुज्जे अदिन्नं गेण्हह, तं चेव जाव एगंतवाला यावि भवह ।

१४. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुंघ्मे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय० जाव एगंत-वाला यावि भवह ।

१५. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंत-वाला यावि भवामो ?

१६. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुंघ्मे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढावि पेच्चेह, अभिहणह, वस्सेह, लेसेह, संघापह संघट्टेह परित्तावेह, किलामेह, उह्वेह; तए णं तुंघ्मे पुढावि पेच्चेमाणा, अभिहणमाणा जाव उह्वेमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजय—चिरय० जाव एगंतवाला यावि भवह ।

१७. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पुढावि पेच्चामो, अभि-हणामो, जाव उवह्वेमो; अम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं वा, जोयं वा, रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो, पपसं पपसेणं वयामो, तेणं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा पपसं पपसेणं वयमाणा नो पुढावि पेच्चेमो, अभिहणामो, जाव उवह्वेमो; तए णं अम्हे पुढावि अपेच्चेमाणा, अणभिहणेमाणा, जाव अणुवह्वेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय० जाव एगंतपंडिया यावि भवामो । तुंघ्मे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय० जाव वाला यावि भवह ।

१०. लार वाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्वविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावद् एकात बाल छीए ?

अन्यतीर्थिको-

११. लार वाद ते स्वविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे अदत्तुं ग्रहण करो छो, अदत्तुं भोजन करो छो अने अदत्तनी अनुमति आपो छो माटे अदत्तुं ग्रहण करता तमे यावद् एकांत बाल छो.

स्वविते-

१२. लार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्वविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी अदत्तुं ग्रहण करीए छीए, यावद् एकात बाल छीए ?

अन्यतीर्थिको-

१३. लार वाद ते स्वविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमारा मतमां अपातुं ते अपापेछुं नथी—इत्यादि पूर्वनी पेटे कहेवुं. यावद् ते वस्तु गृहपतिनी छे, पण तमारी नथी, माटे तमे अदत्तुं ग्रहण करो छो, यावद् पूर्व प्रमाणे तमे एकांत बाल छो.

स्वविते-

१४. लार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्वविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकात बाल छो.

अन्यतीर्थिको-

१५. लार वाद ते स्वविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत बाल छीए ?

स्वविते-

१६. लार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्वविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे गति करता पृथिवीना जीवने दवावो छो, हणो छो, पादाभिघात करो छो, श्लिष्ट (सघर्षित) करो छो, संहत—एकठा करो छो, संघट्टित—स्पर्शित करो छो, परितापित करो छो, क्लृप्त करो छो अने तेओने मारो छो; तेथी पृथिवीना जीवने दवावता, यावत् मारता तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, अविरत अने यावद् एकात बाल पण छो.

अन्यतीर्थिको-

१७. लार वाद ते स्वविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! गति करता अमे पृथिवीना जीवने दवावता नथी, हणता नथी, यावत् तेओने मारता नथी, हे आर्यो ! गति करता अमे कायना (शरीरना) कार्यने आश्रयी, योगने (ग्लानादिनी सेवाने) आश्रयी अने सत्यने (जीवरक्षणरूप संयमने) आश्रयी एक स्थलेयी वीजे स्थले जइए छीए, एक प्रदेशीयी वीजे प्रदेशे जइए छीए, तो एक स्थलेयी वीजे स्थले जता अने एक प्रदेशीयी वीजे प्रदेशे जता अमे पृथिवीना जीवने दवावता नथी, तेओने हणता नथी, यावत् तेओने मारता नथी; तेथी पृथिवीना जीवने नहि दवावता, नहीं हणता, यावत् नहीं मारता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, यावद् एकात पंडित छीए. हे आर्यो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकात बाल पण छो.

स्वविते-

१८. तप णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव पंगंतवाला यावि भवामो ?

१९. तप णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी-तुम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेघेद, जाव उवद्देवह; तप णं तुम्हे पुढविं पेघेमाणा, जाव उवद्देमाणा तिविहं तिविहेणं जाव पंगंतवाला यावि भवह ।

२०. तप णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी-तुम्हे (त्वं) णं अज्जो ! गम्ममाणे अगते, वीतिकमिज्जमाणे अवी-तिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते ।

२१. तप णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी-नो गल्लु अज्जो ! अहं गम्ममाणे अगप, वीतिकमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते; अहं णं अज्जो ! गम्ममाणे गप, वीतिकमिज्जमाणे वीतिक्कंते, रायगिहं नगरं विउकामे संपत्ते; तुम्हं णं अप्पणा चेव गम्ममाणे अगप, वीतिकमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते । ते थेरा भगवंतो अन्नउत्थिय एवं पडिहणंति, पडिहणित्ता गइप्पवायं नाम अज्जयणं पचवदंसु ।

२२. [प्र०] कइविहे णं भंते ! गइप्पवाय पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे गइप्पवाय पन्नत्ते, तं जह्दा-पयोगगई, तत नई, वंधण-छेयणगई, उववायगई, विहायगती, पत्तो आरम्म पयोगपयं निरवसेसं भाणियधं, जाव सेचं विहायगई । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

### अट्टमसए सत्तमो उद्देशो समत्तो ।

अन्यतीर्थिको. १८. स्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्यविर भगवंतोने एम कखुं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत वाल पण छीए ?

स्यविरो. १९. स्यार वाद ते स्यविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कखुं के, हे आर्यो ! गति करता तमे पृथिवीना जीवने दवाधो छो, यावद् मारो छो, माटे पृथिवीना जीवने दवावता, यावद् मारता तमे त्रिविध त्रिविधे [ असयत ] यावद् एकांत वाल छो.

अन्यतीर्थिको. २०. स्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्यविर भगवंतोने एम कखुं के, हे आर्यो ! तमारा ( मते ) गम्यमान-जे स्थले जवातुं होय ते अगत-न जवायेल्लं कहेवाय, जे उल्लंघन करातुं होय ते न उल्लंघन करायेल्लं एम कहेवाय, अने राजगृह नगरने प्राप्त करवानी इच्छावाळने न प्राप्त ययुं एम कहेवाय.

स्यविरो. २१. ते पछी ते स्यविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कखुं के, हे आर्यो ! अमारा ( मते ) गम्यमान-जे स्थले जवातुं होय ते अगत-न जवायेल्लं, व्यतिक्रम्यमाण-उल्लंघन करातुं ते अव्यतिक्रात-उल्लंघन न करायेल्लं, अने राजगृहनगरने प्राप्त करवानी इच्छावाळने असंप्राप्त-न प्राप्त थयेल्लं न कहेवाय, पण हे आर्यो ! अमारा ( मते ) गम्यमान ते गत, व्यतिक्रम्यमाण ते व्यतिक्रात अने राजगृह नगरने प्राप्त करवानी इच्छावाळने ते संप्राप्त कहेवाय छे. तमारे मते गम्यमान ते अगत, व्यतिक्रम्यमाण ते अव्यतिक्रात अने राजगृह नगरने यावत् प्राप्त करवानी इच्छावाळने ते असंप्राप्त छे. ते पछी ते स्यविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे निरुत्तर कर्या, अने निरुत्तर करीने तेओए गतिप्रपात नामे अव्ययन प्ररूप्युं.

गतिप्रपात. २२. [प्र०] हे भगवन् ! गतिप्रपातो केटला प्रकारे कख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! गतिप्रपातो पाच प्रकारना कख्या छे, ते आ प्रमाणे-<sup>\*</sup>१ प्रयोगगति, २ ततगति, ३ वंधनछेदनगति, ४ उपपातगति अने ५ विहायोगति. अहींथी आरमीने सवळुं प्रयोगपद अहीं कहेवुं. यावत् ए प्रमाणे विहायोगति छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम कहीने भगवान् गौतम यावद् विहरे छे. ]

### अष्टम शतके सप्तम उद्देशक समाप्त.

२२. \* १ प्रयोग-सलमनोयोगादि व्यापार पंदर प्रकारनो छे, ते वडे मन वगेरेना पुद्गलोनी गति ते प्रयोगगति. २ तत-विस्तीर्ण गति. जेम देवदत्त गाम जाय छे, केमके आ गति विस्तरवाळी छे, माटे एदला विशेषथी प्रयोगगतिथी जूदी कही छे. ३ वन्धनना छेद वडे जे गति थाय ते वन्धनछेदनगति, ते वीचसुक शरीरनी के शरीरसुक जीवनी जाणवी. ४ क्षेत्रादिक्रमा जे गति ते उपपात गति. आकाशादिक्रमा नारकादि, सिद्ध जीवो, अथवा पुद्गलोनी गति. ५ आकाशमां गमन करवु ते विहायोगति. जेमके परमाणुनी लोकान्त सुधी गति थाय छे. † प्रश्ना. पद. १६-५. ३२५-२

## अष्टमो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं चयासी-गुरू णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा-आयरियपडिणीय, उच्चज्जायपडिणीय, थेरपडिणीय ।
२. [प्र०] गतिं णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा-इहलोग-पडिणीय, परलोगपडिणीय, दुहओलोगपडिणीय ।
३. [प्र०] समूहं णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा-कुलपडिणीय, गणपडिणीय, संघपडिणीय ।
४. [प्र०] अणुकंपं पडुच्च पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा-तवस्सिपडिणीय, गिलाणपडिणीय, सेहपडिणीय ।
५. [प्र०] सुयं णं भंते ! पडुच्च पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा-सुत्तपडिणीय, अत्थपडिणीय, तदुभयपडिणीय ।
६. [प्र०] भावं णं भंते ! पडुच्च पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा-नाणपडिणीय, दंसणपडिणीय, चरित्तपडिणीय ।

## अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरां [ गौतमे ] यावद् ए प्रमाणे कहुं के हे भगवन् ! गुरुओने आश्रयी केटला प्रत्यनीको (द्विपी) कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण \*प्रत्यनीको कहा छे, ते आ प्रमाणे—आचार्यप्रत्यनीक, उपाध्यायप्रत्यनीक अने स्थविरप्रत्यनीक. गुरुप्रत्यनीक-
२. [प्र०] हे भगवन् ! गतिने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कहा छे, ते आ प्रमाणे—इहलोकप्रत्यनीक, परलोकप्रत्यनीक अने उभयलोकप्रत्यनीक. गतिप्रत्यनीक-
३. [प्र०] हे भगवन् ! समूहने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कहा छे, ते आ प्रमाणे—कुलप्रत्यनीक, गणप्रत्यनीक अने संघप्रत्यनीक. समूहप्रत्यनीक-
४. [प्र०] हे भगवन् ! अनुकंपाने आश्रयी प्रश्न; अर्थात् केटला प्रत्यनीको कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! अनुकंपाने आश्रयी त्रण प्रत्यनीको कहा छे, ते आ प्रमाणे—तपस्विप्रत्यनीक, ग्लानप्रत्यनीक अने शैक्षप्रत्यनीक. अनुकंपाप्रत्यनीक-
५. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतने आश्रयी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कहा छे, ते आ प्रमाणे—सूत्रप्रत्यनीक, अर्थप्रत्यनीक अने तदुभयप्रत्यनीक. श्रुतप्रत्यनीक-
६. [प्र०] हे भगवन् ! भावने आश्रयी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कहा छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञानप्रत्यनीक, दर्शनप्रत्यनीक अने चारित्रप्रत्यनीक. भावप्रत्यनीक-

१. \* प्रत्यनीक-विरोधी अथवा द्विपी. आचार्य, उपाध्याय अने स्थविरनो द्विपी होय स्थविर-उम्बर, श्रुत अथवा दीक्षा पर्याये जे साधु भोटो होय ते.—टीका.

२. † मनुष्यत्वादि गतिने आश्रयी त्रण प्रत्यनीको छे, १ तेमा इन्द्रियादिकधी प्रतिकूल अज्ञानकष्टाचरण करनार इहलोकप्रत्यनीक कहेवाय छे, २ इन्द्रियना विषयमां तत्पर ते परलोकप्रत्यनीक अने चौर्यादिकवडे इन्द्रियना विषयोमा तत्पर ते उभयलोकप्रत्यनीक.—टीका.

७. [प्र०] कश्चिद्दे णं भंते ! व्यवहारे पत्रत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्दे वयहारं पत्रत्ते, तं जहा-आगमे, सुतं, आषा, धारणा, जीए । जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं व्यवहारं पट्टवेजा; णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुते सिया, सुणं व्यवहारं पट्टवेजा । णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए व्यवहारं पट्टवेजा; णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए व्यवहारं पट्टवेजा; णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं व्यवहारं पट्टवेजा; इच्चेपाहिं पंचविं व्यवहारं पट्टवेजा, तं जहा-आगमेणं. सुणं, आणाए, धारणाए, जीएणं; जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा व्यवहारं पट्टवेजा ।

८. [प्र०] से किमाहु भंते ! आगमवलिआ समणा णिग्गंथा ? [उ०] इच्चेतं पंचविं व्यवहारं जया जया जहिं जहिं तहा तहा तहिं तहिं आणिस्सिधोवसितं समं व्यवहारमाणे समणे निग्गंथे आणाए धाराहए भवद् ।

९. [प्र०] कश्चिद्दे णं भंते ! वंधे पणत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविद्दे वंधे पत्रत्ते, तं जहा-इत्थियावहियावंधे य संपराय-वंधे य ।

१०. [प्र०] इत्थियावहियं णं भंते ! कम्मं किं नेरुत्थो वंधर, तिरिक्खजोणिओ वंधर, तिरिक्खजोणिणी वंधर, मणुस्सो वंधर, मणुस्सी वंधर, देवो वंधर, देवी वंधर ? [उ०] गोयमा ! नो नेरुत्थो वंधर, नो तिरिक्खजोणिओ वंधर, नो देवो वंधर, नो देवी वंधर । पुउपडिक्खए पटुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य वंधंति, पडिक्खमाणए पटुच्च ? मणुस्सो वा वंधर, २ मणुस्सी वा वंधर, ३ मणुस्सा वा वंधंति, ४ मणुस्सीओ वा वंधंति, ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य वंधर, ६ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य वंधंति, ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य वंधंति, ८ अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य वंधंति ।

व्यवहार-

७. [प्र०] हे भगवन् ! व्यवहार केट्ठा प्रकारो कयो छे ? [उ०] हे गौतम ! व्यवहार पाच प्रकारे कयो छे, ते आ प्रमाणे— १ \*आगमव्यवहार, २ श्रुतव्यवहार, ३ आज्ञाव्यवहार, ४ धारणाव्यवहार अने ५ जीतव्यवहार. ते पाच प्रकारना व्यवहारमां तेनीं पासे जे प्रकारे आगम होय ते प्रकारे तेणे आगमथी व्यवहार चलावयो, तेमा जो आगम न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे श्रुत होय ते श्रुत वडे व्यवहार चलावयो, अथवा जो तेमा श्रुत न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे आज्ञा होय ते प्रकारे तेणे आज्ञावडे व्यवहार चलावयो. जो तेमा आज्ञा न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे धारणा होय ते प्रकारे धारणा वडे तेणे व्यवहार चलावयो. जो तेमा धारणा न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे जीत होय ते प्रकारे तेणे जीत वडे व्यवहार चलावयो. ए प्रमाणे ए पाच व्यवहारो वडे व्यवहार चलावयो, ते आ प्रमाणे—आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत वडे जे जे प्रकारे तेनीं पासे आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत होय ते ते प्रकारे तेणे व्यवहार चलावयो.

व्यवहारतु फल.

८. [प्र०] हे भगवन् ! आगमना वल्लवाळा श्रमण निप्रंथो शुं कहे छे ? अर्थात् पंचविध व्यवहारतुं फल शुं कहे छे ? [उ०] ए प्रमाणे आ पाच प्रकारना व्यवहारने ज्यारे ज्यारे अने ज्जा ज्जा ( उचित होय ) त्यारे त्यारे त्या त्या अनिश्रोपश्रित-राग द्वेषना त्यागपूर्वक इतिरिती व्यवहारते श्रमण निप्रंथ आज्ञानो आराधक थाय छे.

ऐर्यापथिक अने सांपरायिक वंध.

९. [प्र०] हे भगवन् ! वन्ध केट्ठा प्रकारो कयो छे ? [उ०] हे गौतम ! वन्ध वे प्रकारो कयो छे, ते आ प्रमाणे—ऐर्यापथिकवन्ध अने सांपरायिक वन्ध.

ऐर्यापथिक वंधना स्वामी.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ऐर्यापथिक कर्म शुं १ नारक वाधे, २ तिर्यंच वाधे, ३ तिर्यंच स्त्री वाधे, ४ मनुष्य वाधे, ५ मनुष्यस्त्री वाधे, ६ देव वाधे के ७ देवी वाधे ? [उ०] हे गौतम ! १ नारक वांधतो नथी, २ तिर्यंच वांधतो नथी, ३ तिर्यंचस्त्री वांधती नथी, ४ देव वांधतो नथी अने ५ देवी वांधती नथी; पण पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी मनुष्यो अने मनुष्य स्त्रीओ वाधे छे. प्रतिपद्यमानने आश्रयी १ मनुष्य वाधे छे. २ अथवा मनुष्यस्त्री वाधे छे. ३ अथवा मनुष्यो वाधे छे. ४ अथवा मनुष्यस्त्रीओ वाधे छे; ५ अथवा मनुष्य अने मनुष्यस्त्री वाधे छे. ६ अथवा मनुष्य अने मनुष्यस्त्रीओ वाधे छे. ७ अथवा मनुष्यो अने मनुष्यस्त्री वाधे छे. ८ अथवा मनुष्यो अने मनुष्यस्त्रीओ वाधे छे.

७. \* व्यवहार एट्ठे सुसुद्धनी प्रवृत्ति, तेसु कारणे ज्ञान ते पण व्यवहार कहेवाय छे. १ आगम-केवलज्ञान, मन.पर्यव, अवधिज्ञान, चउद पूर्व, उज पूर्व अने नव पूर्व. २ श्रुत-आचारकल्पादि, ३ आज्ञा-अगीतार्थनी पासे गूढअर्थवाक्य पदो वडे बीजा देशना रहैला गीतार्थने निवेदन करवा माटे अती-चारनी आलोचना लेवी अने ते प्रमाणे बीजाना दोपनी पण शुद्धि करवी. ४ धारणा-गीतार्थे द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी विचार करी जे दोपनी जे शुद्धि करी होय तेने अवयवरीने वैवावध करनारा वगेरेने प्रायश्चित्त आपसु ५ जीत-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावादिनी अपेक्षाए शारीरिक बल, धैर्य वगेरेनी हातिनी विचार करी प्रायश्चित्त आपसु. विशेष माटे जुओ भ. टी. प. ३८४-२.

१०. † जेणे पूर्वे ऐर्यापथिक वन्ध कर्यो होय ते पूर्वप्रतिपन्न कहेवाय छे, अर्थात् ऐर्यापथिक वन्धना बीजा, बीजा वगेरे समयना वर्तमान होय ते. तेवा घणा पुरयो अने स्त्रीओ होय छे. केमके वन्धे प्रकारना केवलजिओ हमेशा होय छे, ऐर्यापथिक कर्मना वन्धक वीतराग—उपशान्त मोह, क्षीणमोह, अने सर्वोपि देवर्षी गुणस्थानके वर्तता होय छे. ऐर्यापथिकवन्धना प्रथम समये जेओ वर्तता होय ते प्रतिपद्यमान कहेवाय छे, अने तेओनी विरह संभवित होवायी मनुष्य अने मनुष्यस्त्री एकर एकना सयोगे अने एक ने बहुना योगे चार विरह्य थाय छे. द्विकसयोगे पण चार विरह्यो थाय छे. ए प्रमाणे सर्वमळीने आठ विरह्यो थाय छे.—टीका.

११. [प्र०] तं भंते ! किं इत्थी वंधइ, पुरिसो वंधइ, नपुंसगो वंधइ; इत्थीओ वंधंति, पुरिसा वंधंति, नपुंसगा वंधंति; नोइत्थी, नोपुरिसो, नोनपुंसगो वंधइ ? [उ०] गोयमा नोइत्थी वंधइ, नोपुरिसो वंधइ, जाव नोनपुंसगो वंधइ; पुड्वपडिवन्नप पडुच्च अवगयवेदा वा वंधंति, पडिवज्जमाणप पडुच्च अवगयवेदो वा वंधति अवगयवेदा वा वंधंति ।

१२. [प्र०] जइ भंते ! अवगयवेदो वा वंधइ, अवगयवेदा वा वंधंति तं भंते ! किं १ इत्थीपच्छाकडो वंधइ, २ पुरिस-पच्छाकडो वंधइ, ३ नपुंसगपच्छाकडो वंधइ, ४ इत्थीपच्छाकडा वंधंति ५ पुरिसपच्छाकडा वंधंति, ६ नपुंसगपच्छाकडा वंधंति; उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य वंधंति, इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य वंधंति ४, उदाहु इत्थी-पच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य वंधइ ४, उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य वंधइ ४, उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य वंधइ ८; एवं एते छवीसं भंगा, जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य वंधंति ? [उ०] गोयमा ! १ इत्थीपच्छाकडो वि वंधइ, २ पुरिसपच्छाकडो वि वंधइ, ३ नपुंसगपच्छा-कडो वि वंधइ, ४ इत्थीपच्छाकडा वि वंधंति, ५ पुरिसपच्छाकडा वि वंधंति, ६ नपुंसगपच्छाकडा वि वंधंति; ७ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य वंधइ, एवं एण चेव छवीसं भंगा भाणियद्वा, जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसप-च्छाकडा य नपुंसकपच्छाकडा य वंधंति ।

१३. [प्र०] तं भंते ! किं १ वंधी वंधइ वंधिस्सइ, २ वंधी वंधइ न वंधिस्सइ, ३ वंधी न वंधइ वंधिस्सइ, ४ वंधी वंधइ न वंधिस्सइ, ५ न वंधी वंधइ वंधिस्सइ, ६ न वंधी वंधइ न वंधिस्सइ, ७ न वंधी न वंधइ वंधिस्सइ, ८ न वंधी वंधइ न वंधिस्सइ ? [उ०] गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्येगतिण वंधी वंधइ वंधिस्सइ, अत्येगतिण वंधी वंधइ न वंधि-स्सइ, एवं तं चेव सद्धं जाव अत्येगतिण न वंधी न वंधइ न वंधिस्सइ । गहणागरिसं पडुच्च अत्येगतिण वंधी वंधइ वंधिस्सइ, एवं जाव अत्येगतिण न वंधी वंधइ वंधिस्सइ, णो चेव णं न वंधी वंधइ न वंधिस्सइ, अत्येगतिण न वंधी न वंधइ वंधिस्सइ, अत्येगतिण न वंधी न वंधइ न वंधिस्सइ ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! ते ऐर्यापथिक कर्मणे शुं १ स्त्री वांधे, २ पुरुष वांधे, ३ नपुंसक वांधे, ४ स्त्रीओ वांधे, ५ पुरुषो वांधे, ६ नपुंसको वांधे, ७ नोस्त्री, नोपुरुष, के नोनपुंसक वांधे ? [उ०] हे गौतम ! स्त्री न वांधे, पुरुष न वांधे, यावद् नपुंसको न वांधे; अथवा पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी वेदरहित जीवो वांधे, अथवा प्रतिपद्यमानने आश्रयी वेदरहित जीव अथवा वेदरहित जीवो वांधे.

ऐर्यापथिकं वेद-रहित वांधे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित जीव या वेदरहित जीवो ऐर्यापथिक कर्मणे वांधे तो शुं १ स्त्रीपश्चात्कृत ( जेने पूर्वे स्त्रीवेद होय एवो ) जीव वांधे, २ पुरुषपश्चात्कृत ( जेने पूर्वे पुरुषवेद होय एवो ) जीव वांधे, ३ नपुंसकपश्चात्कृत ( जेने पूर्वे नपुंसक वेद होय एवो ) जीव वांधे, ४ स्त्रीपश्चात्कृत जीवो वांधे, ५ पुरुषपश्चात्कृत जीवो वांधे, के ६ नपुंसकपश्चात्कृत जीवो वांधे ? ४ अथवा स्त्री-पश्चात्कृत अने पुरुषपश्चात्कृत जीव वांधे ? स्त्रीपश्चात्कृत अने पुरुषपश्चात्कृत जीवो वांधे ? ४ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत वांधे ? ४ अथवा पुरुषपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत वांधे ? ८ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत, पुरुषपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत पण कहेवा. ए प्रमाणे ए छवीश भंगो जाणवा, यावत् अथवा स्त्रीपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो वांधे ? [उ०] हे गौतम ! १ स्त्रीप-श्चात्कृत पण वांधे. २ पुरुषपश्चात्कृत पण वांधे अने ३ नपुंसकपश्चात्कृत पण वांधे ४ स्त्रीपश्चात्कृतो वांधे, ५ पुरुषपश्चात्कृतो वांधे अने ६ नपुंसकपश्चात्कृतो पण वांधे, अथवा ७ स्त्रीपश्चात्कृतो अने पुरुषपश्चात्कृतो वांधे, ए प्रमाणे ए छवीश भागा कहेवा. यावत् अथवा स्त्रीपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो वांधे.

स्त्रीपश्चात्कृत-वांधे

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( ऐर्यापथिक कर्मणे ) कोइए शुं वांधुं छे, वांधे छे, अने वांधशे; २ वांधुं छे, वांधे छे अने नहीं वांधे; ३ वांधुं छे, वांधतो नथी अने वांधशे; ४ वांधुं छे, वांधतो नथी अने नहि वांधे; ५ वांधुं नथी वांधे छे अने वांधशे; ६ वांधुं नथी, वांधे छे अने नहि वांधे; ७ वांधुं नथी, वांधतो नथी अने वांधशे, ८ वांधुं नथी, वांधतो नथी अने वांधशे नही ? [उ०] हे गौतम ! \*भवाकर्पणे आश्रयी कोइ एके वांधुं छे, वांधे छे अने वांधशे; कोइ एके वांधुं छे, वांधे छे अने वांधशे नहीं, ए रीते वधुं ते प्रमाणे ज जाणवुं, यावत् कोइ एके वांधुं नथी, वांधतो नथी अने वांधशे नहीं. ग्रहणाकर्पणे आश्रयी कोइ एके वांधुं छे, वांधे छे अने वांधशे. ए प्रमाणे यावत् कोइ एके वांधुं नथी, वांधे छे अने वांधशे; पण 'वांधुं नथी, वांधे छे अने वांधशे नहीं' ए भागो नथी. कोइ एके वांधुं नथी, वांधतो नथी अने वांधशे; कोइ एके वांधुं नथी, वांधतो नथी अने वांधशे नहीं.

ऐर्यापथिक कर्म-संबन्धे भाणवा.

१३. \* अनेक भवने विषे उपशमश्रेष्ठादिनी प्रातिघी ऐर्यापथिक कर्मपुद्गलोत्तं आकर्ष-ग्रहण करुं ते भवाकर्पे, अने एए भवने विषे ऐर्यापथिक कर्मपुद्गलोत्तं ग्रहण करुं ते ग्रहणाकर्ष—टीका.



१४. [प्र०] तं भंते ! किं साइयं सपञ्जवसियं वंधइ, साइयं अपञ्जवसियं वंधइ, अणारयं सपञ्जवसियं वंधइ, मणारयं अपञ्जवसियं वंधइ ? [उ०] गोयमा ! साइयं सपञ्जवसियं वंधइ, नो साइयं अपञ्जवसियं वंधइ, नो अणारयं सपञ्जवसियं वंधइ, नो अणारयं अपञ्जवसियं वंधइ ।

१५. [प्र०] तं भंते ! किं देसेणं देस वंधइ, देसेणं सद्यं वंधइ, सद्येणं देसं वंधइ, सद्येणं सद्यं वंधइ ? [उ०] गोयमा ! नो देसेणं देसं वंधइ, नो देसेणं सद्यं वंधइ, नो सद्येणं देसं वंधइ, सद्येणं सद्यं वंधइ ।

१६. [प्र०] संपराइयं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ वंधइ, तिरिक्खजोणिओ वंधइ, जाय देवी वंधइ ? [उ०] गोयमा ! नेरइओ वि वंधइ, तिरिक्खजोणिओ वि वंधइ, तिरिक्खजोणिणी वि वंधइ मणुस्सो वि वंधइ. मणुस्सी वि वंधइ, देवो वि वंधइ, देवी वि वंधइ ।

१७. [प्र०] तं भंते ! किं इत्थी वंधइ, पुरिसो वंधइ; तद्देव जाय नोरत्थी नोपुरिसो नोनपुंसगो वंधइ ? [उ०] गोयमा ! इत्थी वि वंधइ, पुरिसो वि वंधइ, जाय नपुंसगो वि वंधइ; अहवेण य अवगयवेदो य वंधइ, अहवेण य अवगयवेदो य वंधंति ।

१८. [प्र०] जइ भंते ! अवगयवेदो य वंधइ, अवगयवेदो य वंधंति तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो वंधइ, पुरिसपच्छाकडो वंधइ ? [उ०] पवं जहेइ दरियावहियायंभगस्त तद्देव निरयसेसं, जाय अहया इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य वंधंति ।

१९. [प्र०] तं भंते ! किं १ वंधी वंधइ वंधिस्सइ, २ वंधी वंधइ न वंधिस्सइ, ३ वंधी न वंधइ वंधिस्सइ, ४ वंधी न वंधइ न वंधिस्सइ ? [उ०] गोयमा ! १ अत्येगतिप वंधी वंधइ वंधिस्सइ, २ अत्येगतिप वंधी वंधइ न वंधिस्सइ, ३ अत्येगतिप वंधी न वंधइ वंधिस्सइ, ४ अत्येगतिप वंधी न वंधइ न वंधिस्सइ ।

ऐर्यापथिक कर्मसवणे  
सादि सपर्यवसित वाधे  
नग.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( ऐर्यापथिक कर्म ) श्रुं १ सादि सपर्यवसित वाधे, २ सादि अपर्यवसित वाधे, ३ अनादि सपर्यवसित वाधे के ४ अनादि अपर्यवसित वाधे ? [उ०] हे गौतम ! सादि सपर्यवसित वाधे पण सादि अपर्यवसित न वाधे, तेम अनादि सपर्यवसित अने अनादि अपर्यवसित न वाधे.

देशीय देशने वाधे !  
इत्यादि प्रश्न.  
सर्वेय्ये सर्वने वाधे हे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( ऐर्यापथिक ) कर्मने श्रुं \*देशीय देशने वाधे, देशीय सपने वाधे, सर्वेय्ये देशने वाधे, के देशीय सपने वाधे ? [उ०] हे गौतम ! देशीय देशने वाधतो नथी, देशीय सपने वाधतो नथी, सर्वेय्ये देशने वाधतो नथी, पण सर्वेय्ये सपने वाधे हे.

सांपरायिक कर्म  
स्वामी

१६. [प्र०] हे भगवन् ! सांपरायिक कर्म श्रुं नारक वाधे, तिर्यच वाधे, यावद् देवी वाधे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिक पण वाधे, तिर्यच पण वाधे, तिर्यचस्त्री पण वाधे, मनुष्य पण वाधे, मनुष्यस्त्री पण वाधे, देव पण वाधे अने देवी पण वाधे.

जीवगरे वाधे

१७. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुं सांपरायिक कर्मने स्त्री वाधे, पुरुष वाधे, तेमज यावत् नोस्त्री, नोपुरुष अने नोनपुंसक वाधे ? [उ०] हे गौतम ! स्त्री पण वाधे, पुरुष पण वाधे, यावद् नपुंसक पण वाधे; अथवा एओ अने वेदरहित स्त्री वगैरे एक जीव पण वाधे, अथवा एओ अने वेदरहित अनेक जीवो पण वाधे.

स्त्रीपश्चात्सादि वाधे

१८. [प्र०] हे भगवन् ! ( सांपरायिक कर्मने ) जो वेदरहितजीव अने वेदरहितजीवो वाधे तो श्रुं स्त्रीपश्चात्सादि वाधे के पुरुषपश्चात्सादि वाधे ? इत्यादि. [उ०] ए प्रमाणे जेम ऐर्यापथिकना वंधकने कथुं ( सू. १२. ) तेम अहीं सर्वे जाणहुं, अथवा स्त्रीपश्चात्सादि जीवो पुरुषपश्चात्सादि जीवो अने नपुंसकपश्चात्सादि जीवो वाधे हे.

सांपरायिक कर्म वां  
वाधे, वाधे हे अने  
वांवाधे-वे सर्वने  
भंगो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुं कोइए सांपरायिक कर्मने १ वाधुं, वाधे हे अने वांवाधे, २ वाधुं, वाधे हे अने वांवाधे नहीं, ३ वाधुं, वाधे नहीं अने वांवाधे नहीं; ४ वाधुं, वाधे नहीं अने वांवाधे नहीं ? [उ०] हे गौतम ! १ केटला एके वाधुं हे, वाधे हे अने वाधे; २ केटला एके वाधुं हे, वाधे हे अने वाधे नहीं; ३ केटला एके वाधुं, वाधता नथी अने वाधे; ४ केटला एके वाधुं, वांवाधता नथी अने वाधे नहीं.

२०. [प्र०] तं भंते ! किं साइयं सपज्जवसियं वंधइ ?-पुच्छा तहेव । [उ०] गोयमा ! साइयं वा सपज्जवसियं वंधइ, अणाइयं वा सपज्जवसियं वंधइ, अणाइयं वा अपज्जवसियं वंधइ, णो चेव णं साइयं अपज्जवसियं वंधइ ।
२१. [प्र०] तं भंते ! किं देसेणं देसं वंधइ ? [उ०] एवं जहेव इरियावहियावंधगस्स, जाव सधेणं सधं वंधइ ।
२२. [प्र०] कइ णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-णाणा-वरणिज्जं, जाव अंतराइयं ।
२३. [प्र०] कइ णं भंते ! परिसहा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! वावीसं परिसहा पन्नत्ता, तं जहा-दिग्गिहापरिसहे, पिवासापरिसहे, जाव दंसणपरिसहे ।
२४. [प्र०] एण णं भंते ! वावीसं परिसहा कतिसु कम्मपगडीसु समयरंति ? [उ०] गोयमा ! चउसु कम्मपयडीसु समयरंति, तं जहा नाणावरणिजे, वेयणिजे, मोहणिजे, अंतराइय ।
२५. [प्र०] नाणावरणिजे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समयरंति ? [उ०] गोयमा ! दो परिसहा समयरंति, तं जहा-पन्नापरिसहे नाणपरिसहे य ।
२६. [प्र०] वेयणिजे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समयरंति ? [उ०] गोयमा ! एक्कारस परिसहा समयरंति, तं जहा-
- “पंवेव आणुपुट्ठी चरिया सेज्जा वहे य रोगे य । तणफास-जल्लमेव य एक्कारस वेदणिज्जम्मि” ॥
२७. [प्र०] दंसणमोहणिजे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समयरंति ? [उ०] गोयमा ! एगे दंसणपरिसहे समयरइ ।
२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सापरायिक कर्मने) जुं सादि सपर्यवसित वांधे छे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ सादि सपर्यवसित वांधे छे, २ अनादि सपर्यवसित वांधे छे, ३ अनादि अपर्यवसित वांधे छे, पण सादि अपर्यवसित वांधतो नथी.
२१. [प्र०] हे भगवन् (सापरायिक कर्मने) जुं देशथी (जीवना देशथी) देशने (कर्मना देशने) वांधे छे ? इत्यादि. [उ०] जेम ऐर्यापथिकवंधक संवन्धे कहुं [सू १५.] तेम जाणहुं, यावत् 'सर्वथी सर्वने वांधे छे.'
२२. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटला प्रकारे कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे, ते आ प्रमाणे-ज्ञानावरणीय, यावद् अंतराय.
२३. [प्र०] हे भगवन् ! केटला परीपहो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वावीश परीपहो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-क्षुधापरीपह, पिपासापरीपह, यावद् दर्शनपरीपह.
२४. [प्र०] हे भगवन् ! वावीश परीपहोने केटली कर्मप्रकृतिओमा समवतार थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते वावीश परीपहोने चार कर्मप्रकृतिमा समवतार थाय छे, ते आ प्रमाणे-ज्ञानावरणीय, वेदनीय, मोहनीय अने अतराय.
२५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्ममां केटला परीपहोने समवतार थाय ? [उ०] हे गौतम ! वे परीपहोने समवतार थाय छे; ते आ प्रमाणे-प्रज्ञापरीपह अने ज्ञानपरीपह.
२६. [प्र०] हे भगवन् ! वेदनीयकर्ममा केटला परीपहोने समवतार थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! वेदनीयकर्ममा अग्यार परीपहो समवतरे छे, ते आ प्रमाणे-अनुक्रमे पहेला पाच परीपहो-(क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, अने दंशमशक.) चर्या, शय्या, वध, रोग, तृण-स्पर्श अने मलपरिपह-ए अग्यार परिपहोने वेदनीयकर्ममा समवतार थाय छे.
२७. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनमोहनीयकर्ममा केटला परीपहोने समवतार थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेमा एक दर्शन परीपहोने समवतार थाय छे.

सादिसपर्यवसितादि भांगा.

देशथी देशने वांधे ?

कर्मप्रकृतिओ.

परीपहो.

परीपहोने कर्मप्रकृतिओमा समवतार.

ज्ञानावरणीय कर्ममां समवतार.

वेदनीय कर्ममां समवतार.

दर्शनमोहनीय कर्ममां समवतार.

२५. \* विशिष्ट मलादि ज्ञानना सदभावे मद न करवो अने तेना अभावे दीनता न करवी ते ज्ञानपरिपह. वीजा ग्रन्थोमा आ परिपहने वदछे अज्ञान-परीपह कहेलो छे-टीका.

२८. [प्र०] चरित्तमोहणिजे णं भंते ! कम्मं कति परिसद्धा समयरंति ? [उ०] गोयमा ! सत्त परिसद्धा समयरंति, तं जहा-

“अरत्ती अचेल-इत्थी निसीद्धिया जायणा य अक्कोसे । सक्कार-पुरक्कारे चरित्तमोहणिम सत्तेते” ॥

२९. [प्र०] अंतराद्वय णं भंते ! कम्मं कति परिसद्धा समयरंति ? [उ०] गोयमा ! एगे अलामपरिसद्धे समयरंति ।

३०. [प्र०] सत्तविहवंधगस्स णं भंते ! कति परिसद्धा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! चावीसं परिसद्धा पन्नत्ता, वीसं पुण वेदेइ । जं समयं सीयपरीसद्धं वेदेति णो तं समयं उस्सिणपरीसद्धं वेदेइ, जं समयं उस्सिणपरीसद्धं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसद्धं वेदेइ, जं समयं चरियापरिसद्धं वेदेति णो तं समयं निसीद्धियापरिसद्धं वेदेति, जं समयं निसीद्धियापरीसद्धं वेदेइ णो तं समयं चरियापरिसद्धं वेदेइ ।

३१. [प्र०] अट्टविहवंधगस्स णं भंते ! कति परिसद्धा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! चावीसं परिसद्धा पणत्ता, तं च्छुहापरीसद्धे, पिवासापरीसद्धं, सीयपरीसद्धं, 'दंस-मसगपरीसद्धं, जाय अलामपरीसद्धे । ण्वं अट्टविहवंधगस्सं वि ।

३२. [प्र०] छद्धिवंधगस्स णं भंते ! सरागछउमत्थस्स कति परिसद्धा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! चोइम परिसद्धा पन्नत्ता, वारस्स पुण वेदेइ; जं समयं सीयपरीसद्धं वेदेइ णो तं समयं उस्सिणपरीसद्धं वेदेइ, जं समयं उस्सिणपरीसद्धं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसद्धं वेदेइ; जं समयं चरियापरीसद्धं वेदेति णो तं समयं सेज्जापरिसद्धं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसद्धं वेदेति णो तं समयं चरियापरीसद्धं वेदेइ ।

३३. [प्र०] पक्खिवंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परिसद्धा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! ण्वं चैव जहेव छद्धिवंधगस्स ।

३४. [प्र०] एगविहवंधगस्स णं भंते ! सज्जोगिमवत्थकेवलस्स कति परिसद्धा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पक्कार सपरीसद्धा पन्नत्ता, नव पुण वेदेइ, सेसं जहा छद्धिवंधगस्स ।

चारित्रमोहनीयमा  
समवतार

२८. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्रमोहनीयकर्ममा केटला परीपहो समयरंते छे ? [उ०] हे गौतम ! तेमा सात परीपहो समयरंते छे, ते आ प्रमाणे-अरति, अचेल, ली, नैपेधिकी, वाचना, आक्कोअ अने सक्कारपुरक्कार परीपह. ए सात परीपहो चारित्रमोहमा समयरंते छे.

अन्तरायकर्ममा  
समवतार.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! अन्तरायकर्ममा केटला परीपहो समयरंते छे ? [उ०] हे गौतम ! तेमा एक अलाम परीपह समयरंते छे.

सत्तविहवंधग-  
कने परिपहो.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! सात प्रकारना कर्मना वाधनारने केटला परीपहो कख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चावीस परीपहो कख्या छे. एण एक साथे वीस परीपहोने वेदे छे, कारण के जे समये शीतपरीपहने वेदे छे ते समये उष्णपरीपहने वेदतो नथी, अने जे समये उष्णपरीपहने वेदे छे ते समये शीतपरीपहने वेदतो नथी. तथा जे समये चर्यापरिपहने वेदे छे ते समये नैपेधिकीपरीपहने वेदतो नथी, अने जे समये नैपेधिकीपरीपहने वेदे छे ते समये चर्यापरिपहने वेदतो नथी.

अट्टविहवंधग-  
कने परिपहो.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! आठ प्रकारना कर्मना वाधनारने केटला परीपहो कख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने चावीस परीपहो कख्या छे, ते आ प्रमाणे-क्षुधापरीपह, पिवासापरीपह, शीतपरीपह, दंसमसगकपरीपह, यावद् अलामपरीपह. ए प्रमाणे अट्टविहवंधगकने पण सत्तविहवंधगकनी जेम जाणवुं. [ तेने चावीस परीपहो होय छे, अने ते एक साथे वीस परिपहोने वेदे छे. ]

पक्खिवंधग-  
कने परिपहो

३२. [प्र०] हे भगवन् ! छ प्रकारना कर्मना वन्धक सरागछउमत्थने केटला परीपहो कख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चौद परीपहो कख्या छे, पण ते एक साथे वार परीपहोने अनुभवे छे, कारण के जे समये शीतपरीपहने वेदे छे, ते समये उष्णपरीपहने वेदतो नथी अने जे समये उष्णपरीपहने वेदे छे ते समये शीतपरीपहने वेदतो नथी तथा जे समये चर्यापरिपहने वेदे छे ते समये शय्यापरीपहने वेदतो नथी, अने जे समये शय्यापरीपहने वेदे छे ते समये चर्यापरिपहने वेदतो नथी

एकविहवंधग-  
वीत-  
राग छद्दस्सने  
परिपह.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! एक प्रकारना कर्मना वाधनार वीतराग छद्दस्सने केटला परीपहो कख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम छ प्रकारना कर्मना वाधनारने परिपहो कख्या छे तेम एकविहवंधगकने पण जाणवा.

एकविहवंधग-  
वीत-  
योगी केवलीने  
परिपहो.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! एकविहवंधगक सयोगी भवस्य केवलजानीने केटला परीपहो कख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अग्यार परीपहो कख्या छे, तेमा साथे नव परीपहोने वेदे छे. चाकीनु वधु छ प्रकारना कर्मवन्धकनी पेटे जाणवु.

१ दंसपरिसद्धे मसग-क । २ -स्स वि सत्तविहवंधगस्स वि ग-घ ।

२८. \* नैपेधिकी-अन्य गृहादित्प स्वाध्यायभूमि, त्या जे परिपह-उपद्रवो याय तेथी अथ न पामवो ते नैपेधिकी परिपह-टीका.

३५. [प्र०] अवधगस्त णं भंते ! अग्निभिचत्थकेचल्लिस्स कति परीसहं पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! एक्कारसं परीसहा पन्नत्ता, नव पुण वेदेइ । जं समयं सीयपरीसहं वेदेति नो तं समयं उत्तिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उत्तिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ; जं समयं चरियापरिसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।

३६. [प्र०] जंबुद्वीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! जंबुद्वीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य, तं चेव जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ।

३७. [प्र०] जंबुद्वीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि मज्झंतियमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा च्चत्तेणं ? [उ०] हंता, गोयमा ! जंबुद्वीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण० जाव उच्चत्तेणं ।

३८. [प्र०] जइ णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि, अत्थमणमुहुत्तंसि य मूले जाव उच्चत्तेणं, से केणं खाइ अट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जंबुद्वीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? [उ०] गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभिता-रेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेस्सापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—जंबुद्वीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति; जाव अत्थमण— जाव दीसंति ।

३९. [प्र०] जंबुद्वीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, अणागयं खेत्तं गच्छंति ? [उ०] गोयमा ! पो तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, नो अणागयं खेत्तं गच्छंति ।

४०. [प्र०] जंबुद्वीवे णं दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, अणागयं खेत्तं ओभासंति ? [उ०] गोयमा ! नो तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्तं ओभासंति ।

३५. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मबन्धरहित अयोगी भवस्थ केवलज्ञानीने केटला परीपहो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! अगीयार परीपहो कहा छे, तेमा साथे नव परीपहोने वेदे छे; कारण के जे समये शीतपरीपहने वेदे छे ते समये उष्णपरीपहने वेदता नथी, अने जे समये उष्णपरीपहने वेदे छे ते समये शीतपरीपहने वेदता नथी. तथा जे समये चर्यापरीपहने वेदे छे ते समये शय्यापरीपहने वेदता नथी, अने जे समये शय्यापरीपहने वेदे छे ते समये चर्यापरीपहने वेदता नथी.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! जंबुद्वीपनामे द्वीपमा वे सूर्यो उगवाना समये दूर छता पासे देखाय छे, मध्याह्नसमये पासे छतां दूर देखाय छे, अने आयमवाने समये दूर छता पासे देखाय छे ? [उ०] हा, गौतम ! जंबुद्वीपमा वे सूर्यो उगवाना समये दूर छता पासे देखाय छे—इत्यादि, यावद् आयमवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! जंबुद्वीपमा वे सूर्यो उगवाना समये, मध्याह्नसमये अने आयमवाना समये सर्व स्थले उंचाइमां सरखा छे ? [उ०] हा, गौतम ! जंबुद्वीपमा रहेला वे सूर्यो उगवाना समये यावत् सर्वस्थले उंचाइमां सरखा छे.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! जो जंबुद्वीपमां वे सूर्यो उगवाना समये, मध्याह्नसमये अने आयमवाना समये यावद् उंचाइमा सरखा छे तो हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जंबुद्वीपमां वे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे, यावद् आयमवाना समये दूर छता पासे देखाय छे ? [उ०] हे गौतम ! लेस्याना (तेजना) प्रतिघातथी उगवाना समये दूर छता पासे देखाय छे, लेस्याना—तेजना अभितापथी मध्याह्न समये पासे छता दूर देखाय छे, तथा लेस्याना प्रतिघातथी आयमवाना समये दूर छता पासे देखाय छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के जंबुद्वीपमा वे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे, यावद् आयमवाना समये दूर छता पासे देखाय छे.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जंबुद्वीपमा वे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे, वर्तमान क्षेत्र प्रति जाय छे, के अनागत क्षेत्र प्रति जाय छे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत क्षेत्र प्रति जता नथी, वर्तमान क्षेत्र प्रति जाय छे, पण अनागत क्षेत्र प्रति जता नथी.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जंबुद्वीपमा वे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्रने प्रकाशे छे, वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे के अनागत क्षेत्रने प्रकाशे छे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत क्षेत्रने प्रकाशता नथी, वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे, अने अनागत क्षेत्रने प्रकाशता नथी.

३६. \* उगवाना अने आयमवाना समये द्रष्टाना स्थाननी अपेक्षाए सूर्ये दूर छे पण द्रष्टाने 'नजीक छे' एम प्रतीति थाय छे, द्रष्टा उगवा अने आयमवाना समये हजारो योजन दूर सूर्येने जुए छे, अने नजीकमा होय एम तेने लागे छे, पण मध्याह्नसमये द्रष्टाना स्थाननी अपेक्षाए सूर्ये नजीक छता पण तेने दूर होय एम लगे छे. द्रष्टा उदय अने अस्त समयनी अपेक्षाए मध्याह्नसमये नजीक सूर्येने जुए छे, केमके ते वखते मात्र आठमो योजननुं अन्तर छे, पण तेने उदय अने अस्तसमयनी अपेक्षाए दूर माने छे तेनुं कारण ( स. ३८ मां ) वताव्यु छे—टीका

३७. † समभूतल पृथिवीनी अपेक्षाए सूर्यो सर्वत्र आठसो योजन उंचा छे—टीका.

३९. ‡ अतीत क्षेत्र अतिक्रान्त करेल होवाथी ते तरफ जतो नथी, पण वर्तमान एटले ज्या जवाउं छे ते क्षेत्र तरफ जाय छे. वळी अनागत एटले ज्यां जवाशे ए क्षेत्र तरफ पण जतो नथी—टीका.

कर्मबन्धरहित अयोगी केवलीने परिपहो.

जंबुद्वीपमा सूर्यो दूर छतां किम पासे देखाय छे ?

सूर्यो सर्वत्र उंचाइमां सरखा छे ?

तेजना प्रतिघातथी दूर छतां पासे देखाय छे. तेजना अभितापथी पासे छतां दूर देखाय छे.

अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे ?—इत्यादि प्रश्न

अतीतक्षेत्रने प्रकाशे छे ?—इत्यादि प्रश्न-वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे.

४१. [प्र०] तं मंते ! किं पुट्टं ओमासंति, अपुट्टं ओमासंति ? [उ०] गोयमा ! पुट्टं ओमासंति, नो अपुट्टं ओमासंति, जाव नियमा छर्दिसि ।

४२. [प्र०] जंबुद्वीपे णं मंते ! द्वीपे सूरिया किं तीयं रोत्तं उज्जोचंति ? [उ०] पयं चव, जाव नियमा छर्दिसि, पयं तवंति, पयं ओमासंति, जाव नियमा छर्दिसि ।

४३. [प्र०] जंबुद्वीपे णं मंते ! द्वीपे सूरियाणं किं तीयं रोत्ते किरिया कज्जइ, पटुप्पमे सेसे किरिया कज्जइ, अणागप सेसे किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! नो तीयं रोत्ते किरिया कज्जइ, पटुप्पमे रोत्ते किरिया कज्जइ, नो अणागप सेसे किरिया कज्जइ ।

४४. [प्र०] सा मंते ! किं पुट्टा कज्जइ, अपुट्टा कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! पुट्टा कज्जइ, नो अपुट्टा कज्जइ, जाव नियमा छर्दिसि ।

४५. [प्र०] जंबुद्वीपे णं मंते ! द्वीपे सूरिया केवतियं रोत्तं उट्टं तवंति, केवतियं रोत्तं अट्टो तवंति, केवतियं तिरियं तवंति ? [उ०] गोयमा ! णं जोयणसयं उट्टं तवंति; अट्टारस जोयणसयाइं अट्टे तवंति, सीयालीसं जोयणसइस्साइ द्दोण्णि तेवट्टे जोयणसए पक्कवीसं च सट्टिमाए जोयणस्स तिरियं तवंति ।

४६. [प्र०] अंतो णं मंते ! माणुसुत्तरपत्तयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णयरत्त-तारास्सा ते णं मंते ! देवा किं उट्टोवचनगा ? [उ०] जहा जीवाभिगमे तदेव निरवसेसं जाव उट्टोसेणं छम्मासा ।

४७. [प्र०] याहिया णं मंते ! माणुसुत्तरस्स० ? [उ०] जहा जीवाभिगमे, जाव इंदट्टाणे णं मंते ! केवतियं कालं उवचाएणं विरहिए पणत्ते ? गोयमा ! जहएणं पयं समयं, उट्टोसेणं छम्मासा । सेवं मंते ! सेवं मंते ! चि ।

अट्टमसए अट्टमो उट्टेसो समत्तो ।

सृष्ट क्षेत्रने प्रकाशित करे छे

४१. [प्र०] हे भगवन् ! [ ते सूर्यो ] सूर्येला क्षेत्रने प्रकाशित करे छे के असूर्येला क्षेत्रने प्रकाशित करे छे ? [उ०] हे गौतम ! सूर्येला क्षेत्रने प्रकाशे छे पण असूर्येला क्षेत्रने प्रकाशित करना नथी; यावत् अवश्य छ दिशाने प्रकाशे छे.

अतीत क्षेत्रने उद्योतित करे छे ? इत्यादि.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमा वे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्रने उद्योतित करे छे ? इत्यादि. [उ०] पूर्वो पेटे जाणवुं, यावत् अवश्य छ दिशाने उद्योतित करे छे, ए प्रमाणे तपावे छे, यावत् अवश्य छ दिशाने प्रकाशे छे.

सूर्यो नी किना वर्तमान क्षेत्रमा कराय छे.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमा सूर्यो नी क्रिया शुं अतीत क्षेत्रमा कराय छे, वर्तमान क्षेत्रमा कराय छे के अनागत क्षेत्रमा कराय छे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत क्षेत्रमा क्रिया कराती नथी, वर्तमान क्षेत्रमा क्रिया कराय छे, पण अनागत क्षेत्रमा क्रिया कराती नथी.

सयं सृष्ट क्रियाने करे छे.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं [ ते सूर्यो ] सृष्ट क्रियाने करे छे के असृष्ट क्रियाने करे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सृष्ट क्रियाने करे छे, पण असृष्ट क्रियाने नथी करता, यावत् अवश्य छ दिशामा सृष्ट क्रियाने करे छे.

केट्टु क्षेत्र उंचे तपावे छे ?

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमा सूर्यो केट्टुं क्षेत्र उंचे तपावे छे, केट्टुं क्षेत्र नीचे तपावे छे अने केट्टुं क्षेत्र तिरियुं तपावे छे ? [उ०] हे गौतम ! सो योजन क्षेत्र उंचे तपावे छे, अट्टारसो योजन क्षेत्र नीचे तपावे छे. अने सूडताळीग हजार वसे त्रैसठ योजन तथा एक योजनना साठीया एकवीग भाग जेट्टुं क्षेत्र तिरियुं ( निरछु ) तपावे छे.

मनुष्योत्तर पर्वतनी अंदरना चन्द्रादि देवो शुं ऊर्ध्वलोकमा उत्पन्न थयेला छे ?

४६. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी अंदर जे चंद्रो, सूर्यो, ग्रहण, नक्षत्र अने तारास्स देवो छे, हे भगवन् ! ते शुं ऊर्ध्वलोकमा उत्पन्न थयेला छे ? [उ०] जे प्रमाणे \*जीवाभिगममूत्रमा कहुं छे तेम यावत् [ तेओनो उपपातविरहकाळ-उपजवानुं अने जघन्य एक समय अने ] यावत् उच्छ्रय छ मास छे'-सा सुधी वधुं जाणवुं.

मनुष्योत्तर पर्वतनी बशरना चन्द्रादि देवो.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी बहार जे चन्द्रादि देवो छे तेओ शुं ऊर्ध्वलोकमा उत्पन्न थयेला छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय, अने उच्छ्रयथी छ मास, [ अर्थात् एक इन्द्रना मरण पछी जघन्यथी एक समये अने उच्छ्रयथी छ मास तेने स्थाने बीजो इन्द्र उत्पन्न थाप छे तेथी तेट्टो काळ इन्द्रस्थान उपपात विरहित होय छे, ] हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे ].

अट्टम शतके अट्टम उद्देशक समाप्त.

## नवमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कइविहे णं भंते ! वंधे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे वंधे पन्नत्ते, तं जहा-पयोगबंधे य वीससाबंधे य ।

२. [प्र०] वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-सादीयवीससाबंधे अणादीयवीससाबंधे य ।

३. [प्र०] अणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअन्नमन्नअणाईयवीससाबंधे ।

४. [प्र०] धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सच्चबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे, नो सच्चबंधे । एवं अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि ।

५. [प्र०] धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सच्चद्धं । एवं अधम्मत्थिकाय, एवं आगासत्थिकाय वि ।

## नवमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! वन्ध केटला प्रकारनो कइयो छे ? [उ०] हे गौतम ! वन्ध वे प्रकारनो कइयो छे, ते आ प्रमाणे-प्रयोगवन्ध अने विस्रसावन्ध. वन्ध.

२. [प्र०] हे भगवन् ! विस्रसावन्ध केटला प्रकारनो कइयो छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारनो कइयो छे, ते आ प्रमाणे-सादि विस्रसावन्ध अने अनादि विस्रसावन्ध. विस्रसावन्ध

३. [प्र०] हे भगवन् ! अनादि विस्रसावन्ध केटला प्रकारनो कइयो छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनो कइयो छे, ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध, अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध अने आकाशास्तिकायनो पण अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध. अनादि विस्रसावन्ध

४. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध देशवन्ध छे के सर्ववन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशवन्ध छे, पण सर्ववन्ध नथी. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध जाणवो. एवी रीते आकाशास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध जाणवो. धर्मास्तिकायनो अनादि विस्रसावन्ध देशवन्ध.

५. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध कालथी कयां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्व काल सुधी होय छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसावन्ध जाणवो. अनादि विस्रसावन्ध काल.

४. \* धर्मास्तिकायना प्रदेशोनो वीजा प्रदेशो साथे परस्पर संबन्ध ते देशवन्ध, परन्तु तेनो सर्ववन्ध नथी, जो तेनो सर्ववन्ध होय तो एक प्रदेशमा वीजा सर्व प्रदेशोनो अन्तर्भाव थाय अने तेथी धर्मास्तिकाय एक प्रदेशरूप थाय—टीका.

६. [प्र०] सादीयधीसस्त्राबंधे णं भंने ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-बंधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परिणामपच्चइए ।

७. [प्र०] से किं तं बंधणपच्चइए ? [उ०] बंधणपच्चइए जं णं परमाणुपुग्गलाहुपण्णसिया-निपयसिया-जाय इसपय-सिया-संवेज्जपण्णसिया-असंरोज्जपण्णसिया-अणंतपण्णसियाणं रांधाणं वेमायनिडयाए, वेमायलुक्कयाए, वेमायनिडलुक्कयाए बंधणपच्चइए णं बंधे समुपज्जइ, जहत्तेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं अरंरोज्जं कालं । सेत्तं बंधणपच्चइए ।

८. [प्र०] से किं तं भायणपच्चइए ? [उ०] भायणपच्चइए जं णं जुदसुरा-जुदसुल-जुदतंतुल्लाणं भायणपच्चइए णं बंधे समुपज्जइ, जहत्तेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संगेज्जं कालं । सेत्तं भायणपच्चइए ।

९. [प्र०] से किं तं परिणामपच्चइए ? [उ०] परिणामपच्चइए जं णं अट्ठमाणं, अट्ठमरुक्कमाणं जहा ततियमण जाव अमोहाणं परिणामपच्चइए णं बंधे समुपज्जइ, जहत्तेणं पक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मात्ता । सेत्तं परिणामपच्चइए । सेत्तं सादीय-धीसस्त्राबंधे । सेत्तं धीसस्त्राबंधे ।

१०. [प्र०] से किं तं पयोगबंधे ? [उ०] पयोगबंधे तिविहे पत्तत्ते, तं जहा-अणाइए वा अपज्जवसिण, साईए वा अपज्जवसिण, साईए वा सपज्जवसिण । तत्थ णं जे नं अणाइए अपज्जवसिण से णं अट्ठमाणं जीयमअपणसाणं, तत्थ णं जे से तिण्हं तिण्हं अणाइए अपज्जवसिण, सेसाणं साईए । तत्थ णं जे से साइए अपज्जवसिण से णं निड्डाणं । तत्थ णं जे से साईए सपज्जवसिण से णं चउद्विहे पण्णत्ते, तं जहा-आलावणबंधे, अट्ठियावणबंधे, नरीरबंधे, सरीरपयोगबंधे ।

सादि विस्त्रसावन्ध- ६. [प्र०] हे भगवन् ! सादिविस्त्रसावन्ध केट्ठय प्रकाग्गो कापो छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकाग्गो कापो छे; ते आ प्रमाणे- १ \*बंधनप्रत्ययिक, २ भाजनप्रत्ययिक अने ३ परिणामप्रत्ययिक.

बन्धनप्रत्ययिक रूप- ७. [प्र०] हे भगवन् ! बंधनप्रत्ययिक [सादि बन्ध] केवा प्रकारे छे ? [उ०] द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, यावद् दशप्रदेशिक, सख्यातप्रदेशिक, अनंत्यातप्रदेशिक अने अनंतप्रदेशिक परमाणु पुद्गलरुक्कोनो निपम त्रिग्वता (चिक्राग) वडे, निपम रूक्षता वडे अने निपम त्रिग्व-रूक्षता वडे बन्धनप्रत्ययिक बन्ध थाय छे. ते जवन्थयी एक समय, अने उक्कट्ठयी अमएव काळ सुधी रहे छे. ए प्रमाणे बंधनप्रत्ययिक बन्ध कायो.

भाजनप्रत्ययिक रूप- ८. [प्र०] हे भगवन् ! भाजनप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारे होय ? [उ०] जूनी मडिरानो, जूना गोळनो अने जुना चोगानो भाजन प्रत्ययिक बन्ध थाय छे. ते जवन्थयी अन्तर्मुहूर्त अने उक्कट्ठ सख्यात काळ सुधी रहे छे. ए प्रमाणे भाजनप्रत्ययिक बन्ध कायो.

परिणामप्रत्ययिक रूप- ९ [प्र०] हे भगवन् ! परिणामप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारे छे ? [उ०] वादळाओनो, अश्रुक्षोनो जेम तृतीय शतकमां काग्गो, तेम यावद् अमोघोनो परिणामप्रत्ययिक बन्ध उत्पन्न थाय छे. ते जवन्थयी एक समय अने उक्कट्ठयी छ मास सुधी रहे छे, ए प्रमाणे परिणामप्रत्ययिकबन्ध, सादि विस्त्रसावन्ध अने विस्त्रसावन्ध कायो.

प्रयोगबन्ध १०. [प्र०] हे भगवन् ! प्रयोगबन्ध केवा प्रकारे छे ? [उ०] प्रयोगबन्ध त्रण प्रकाग्गो कापो छे, ते आ प्रमाणे- १ अनादि अपर्यवसित, २ सादि अपर्यवसित अने ३ सादि सपर्यवसित प्रयोगबन्ध. तेमा जे अनादि अपर्यवसितबन्ध छे ते जीवना आठ मध्यप्रदेशोनो होय छे, ते आठ प्रदेशोमां पण त्रण त्रण प्रदेशोनो जे बन्ध ते अनादि अपर्यवसित बन्ध छे. बाकीना सर्वप्रदेशोनो सादि मपर्यवसित (सान्त) बन्ध छे. तेमा सादि अपर्यवसित बन्ध सिद्धना जीव प्रदेशोनो छे सादिक मपर्यवसित बन्ध चार प्रकारनो कायो छे, ते आ प्रमाणे- १ आलापनबन्ध, २ आलीनबन्ध, ३ शरीरबन्ध अने ४ शरीरप्रयोगबन्ध.

६. \* १ त्रिग्वत्कादि गुणद्वारा द्विप्रदेशिक, यावद् अनन्तप्रदेशिक परमाणुओनो बन्ध थाय ते बन्धनप्रत्ययिक २ भाजन एट्ठे आधार, ते निमित्ते जे बन्ध थाय ते भाजनप्रत्ययिक ३ परिणाम एट्ठे रूपान्तर, ते निमित्ते जे बन्ध थाय ते परिणामप्रत्ययिक

८. † एक भाजनमा रहेय्यो जूनी मडिरा वट थाय छे अने जूना गोळ तथा जूना चोगानो पिंट थाय छे ते भाजनप्रत्ययिक बन्ध जाणयो—टीका.

९. ‡ भग द्वि. ख. श. ३ व. ७ पृ. ११२ सू ३

१०. \* प्रयोगबन्ध एट्ठे जीवना व्यापार वडे जीव प्रदेशोनो अने आदारिकादि शरीरमा पुद्गलोनो जे बन्ध थाय छे. तेमा चार भागा थाय छे. तेमा अर्धी बीजा भागाने छोटीने त्रण भागा लायु पडे छे तेमा असख्यातप्रदेशिक जीवना जे मध्य प्रदेशो छे तेनो अनादि अपर्यवसित बन्ध छे कारण के प्यारे जीव केवटि नमुदुघात करवते समग्र छेनेने व्यापीने रहे छे लारे पण ते तेवीज स्थितिमा रहे छे, पण बीजा जीव प्रदेशोमा विपरिवर्तन अतुं होवायी तेओनो अनादि अनन्त बन्ध नथी. तेनी स्थापना [ ] था चार प्रदेशोनो उपर बीजा चार प्रदेशो थानेला छे एवी रीते नमुदुघातयी आठ प्रदेशोनो बन्ध कहेली छे. ते आठ प्रदेशोमा पण कोट पण एक प्रदेशोनो तेनी पास रहेला जे प्रदेशो अने उपर के नीचे रहेला एक प्रदेश साधे एम त्रण त्रण प्रदेश साधे अनादि अपर्यवसित बन्ध छे—टीका.

‡ १ रज्जु बनेरेयी तृणादिनो बन्ध ते आलापन बन्ध २ एक पदार्थनो बीजा पदार्थनी साधे आठ बनेरेयी बन्ध यवो ते आलीनबन्ध. ३ नमुदुघात करवामा विनारित अने सकोषित जीवप्रदेशोमा सवन्धयी तैजसादि शरीर प्रदेशोनो सवन्ध ते शरीरबन्ध. जयवा नमुदुघात करवामा 'सकुचित धयेला आत्मप्रदेशोनो सवन्ध ते शरीरबन्ध' एम अन्य आचार्य माने छे ४ आदारिकादि शरीरमा व्यापारयी शरीरमा पुद्गलोनो ग्रहण करवाएप बन्ध ते शरीरप्रयोगबन्ध—टीका.

११. [प्र०] से किं तं आलावणबंधे ? [उ०] आलावणबंधे जं णं तणभाराण वा, कट्टभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलालभाराण वा, वेल्लभाराण वा वेत्तलता-घाग-वरत्त-रज्जु-वड्ढि-कुस-दम्भमादीएहिं आलावणबंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं आलावणबंधे ।

१२. [प्र०] से किं तं अल्लियावणबंधे ? [उ०] अल्लियावणबंधे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-लेसणाबंधे, उच्चयबंधे, समुच्चयबंधे, साहणणाबंधे ।

१३. [प्र०] से किं तं लेसणाबंधे ? [उ०] लेसणाबंधे जं णं कुट्टाणं, कोट्टिमाणं, खंभाणं, पासायाणं, कट्टाणं, चम्माणं, घडाणं, पडाणं, कडाणं लुरा-चिक्खल्ल-सिलेस-लक्ख-महुसित्थमाईएहिं लेसणाएहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं लेसणाबंधे ।

१४. [प्र०] से किं तं उच्चयबंधे ? [उ०] उच्चयबंधे जं णं तणरासीण वा, कट्टरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसर-सीण वा, भुसरसीण वा, गोमयरासीण वा, अवगररासीण वा उच्चत्तेणं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं उच्चयबंधे ।

१५. [प्र०] से किं तं समुच्चयबंधे ? [उ०] समुच्चयबंधे जं णं अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुक्खरिणी-दीहियाणं गुंजा-ल्लियाणं, सराणं, सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं, विलपंतियाणं; देवकुल-संभ-प्पव-थूम-खाइयाणं, परिहाणं, पागार-ट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाणं, पासाय घर-सरण-लेण-आवणाणं, सिंघाडग-तिथ-चउक्क-चच्चर-चउमुह-महापहमादीणं, छुहा-चिक्खल्ल-सि-लेस-समुच्चरणं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं समुच्चयबंधे ।

१६. [प्र०] से किं तं साहणणाबंधे ? [उ०] साहणणाबंधे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-देससाहणणाबंधे य सव्वसाहण-णाबंधे य ।

११. [प्र०] आलापन बन्ध केवा प्रकारनो क्खो ? [उ०] आलापन बन्ध घासना भाराओनो, लाकडाना भाराओनो, पादडाना भाराओनो, पलालना भाराओनो अने वेलाना भाराओनो नेतरनी वेल, छाल, वाधरी, दोरडा, वेल, कुश अने डाम आदिथी आलापनबन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी सख्यात काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे आलापनबन्ध क्खो.

आलापनबन्ध.

१२. [प्र०] आलीनबन्ध केवा प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] आलीनबन्ध चार प्रकारनो क्खो छे, ते आ प्रमाणे—१ श्लेपणाबन्ध, २ उच्चयबन्ध, ३ समुच्चयबन्ध अने ४ सहननबन्ध.

आलीनबन्ध.

१३. [प्र०] श्लेपणाबन्ध केवा प्रकारनो होय ? [उ०] शिखरोनो, कुट्टिमोनो ( फरस वंधीनो ) स्तंभोनो, प्रासादोनो, लाकडाओनो, चामडानो, घडाओनो, कपडाओनो अने सादडीओनो चूनावडे, कचरावडे, श्लेप-वज्रलेप-वडे, लाखवडे, मीण-इत्यादि श्लेपण द्रव्योवडे श्लेपणाबन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी सख्यातकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे श्लेपणाबन्ध क्खो.

श्लेपणाबन्ध.

१४. [प्र०] उच्चयबन्ध केवा प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] तृणराशिनो, काष्ठराशिनो, पत्रराशिनो, तुपराशिनो, सुसानो राशिनो, छाणना ढगलानो अने कचराना ढगलानो उच्चपणे जे बन्ध थाय छे ते उच्चयबन्ध छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्येयकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे उच्चयबन्ध क्खो.

उच्चयबन्ध.

१५. [प्र०] समुच्चयबन्ध केवा प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] कुवा, तळाव, नदी, द्रह, वापी, पुष्करिणी, दीर्घिका, गुंजालिका, सरोवरो, सरोवरनी श्रेणि, मोटा सरोवरनी पंक्ति, विलनी श्रेणि, देवकुल, सभा, परव, स्तूप, खाइओ, परिषो, किछाओ, कागराओ, चरिको, द्वार, गोपुर, तोरण, प्रासाद, घर, शरण, लेण ( गृहविशेष ) हाटो, शृंगाटकाकारमार्ग, त्रिकमार्ग, चतुष्कमार्ग, चत्वरमार्ग, चतुर्मुखमार्ग अने राजमार्गदिनो चुनाद्वारा, कचराद्वारा अने श्लेपना (वज्रलेपना) समुच्चय वडे जे वध थाय छे ते समुच्चयबन्ध. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी सख्येयकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे समुच्चयबन्ध क्खो.

समुच्चयबन्ध.

१६. [प्र०] सहननबन्ध केवा प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] सहननबन्ध वे प्रकारनो क्खो छे; ते आ प्रमाणे—\*देश सहनन बन्ध अने सर्वसहनन बन्ध.

सहननबन्ध.

१ सभा-पन्ध-थू-ग, सभा-पन्ध-थू-ड ।

१६. \* १ कोइ वस्तुना देशथी-अशथी कोइ वस्तुना देशनो-अशनो शक्यादिना अवयवोनी पेटे सहनन एटले परस्पर सघनरूप बन्ध ते देश-सहननबन्ध. २ क्षीरनीरादिनी पेटे सर्वात्मसंघनरूप वध ते सर्वसहननबन्ध—टीका.



१७. से किं तं देससाहणणाबंधे ? [उ०] देससाहणणाबंधे जं णं सगह-नह-जाण-जुग्ग-गिहि-गिहि-सीय-संभमाणी-लोही-लोहकजाह-कपुच्छय-आसण-सयण-भंभ-भंउमचोयगरणमार्हणं देससाहणणाबंधे समुप्यज्जइ, जहयेणं अंतोमुहुत्तं उक्खोलेवं संखेज्जं फालं । सेत्तं देससाहणणाबंधे ।

१८. [प्र०] से किं तं सद्यसाहणणाबंधे ? [उ०] सद्यसाहणणाबंधे मे णं रीगेदगमार्हणं । सेत्तं सद्यसाहणणाबंधे, सेत्तं साहणणाबंधे, सेत्तं अहियवणबंधे ।

१९. [प्र०] से किं तं सरीरबंधे ? [उ०] सरीरबंधे दुचिटं पण्णत्ते, तं जहा-पुद्गपभोगपचइए य पटुप्यप्रभोगपचइए य ।

२०. [प्र०] से किं तं पुद्गपभोगपचइए ? [उ०] पुद्गपभोगपचइए जं णं नेरदयाणं संसारवत्थारणं सद्यजीवाणं तय तय तेसु तेसु कारणेसु समोहणमाणं जीवपणसाणं बंधे समुप्यज्जइ । सेत्तं पुपपयोगपचइए ।

२१. [प्र०] से किं तं पटुप्यप्रभोगपचइए ? [उ०] पटुप्यप्रभोगपचइए जं णं केवल्लनाणिसस अणगारम्म केवल्लिसमुग्घाणं समोहयस्स ताथो समुग्घायाथो पडिनियत्तमाणस्स अनग मंधे वट्टमाणस्स तेयाकम्माणं बंधे समुप्यज्जइ, किं कारणं ? ताहे से पप्सा एगत्तीगया य भवंति । सेत्तं पटुप्यप्रभोगपचइए । सेत्तं सरीरबंधे ।

२२. [प्र०] से किं तं सरीरपभोगबंधे ? [उ०] सरीरपभोगबंधे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-ओरालियसरीरपभोगबंधे, वेउद्वियसरीरपभोगबंधे, आहारगसरीरपभोगबंधे. तेयासरीरपभोगबंधे, फम्मानसरीरपभोगबंधे ।

२३. [प्र०] ओरालियसरीरपभोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-पंचिदियओरालियसरीरपभोगबंधे, वेइंदियओरालियसरीरपभोगबंधे, जाव पंचिदियओरालियसरीरपभोगबंधे ।

देशसंहननबन्ध.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! देशसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] हे गौतम ! गाडा, स्थ. वान ( नाना गाडा ) \*सुग्गमन्ड गिहि ( हाथीनी अवाडी ), विहि ( पलाण ), शिविका, अने खन्दमानी ( पुरपप्रमाण वाहनविशेष ), तेमज लोडी, लोडाना वण्ण, कडडा, आसन, शयन, स्तंभो, भाड ( माटीना वासण ) पात्र अने नानाप्रकारना उपकरण-इतादि पदार्थोने जे नबन्ध थाय छे ते देशसंहननबन्ध छे ते जवन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उगुहथी नगयेय काल मुधी रहे छे. ए प्रमाणे देशसंहनन बन्ध वगो.

सर्वसंहननबन्ध.

१८. [प्र०] सर्वसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो कागो छे ? [उ०] हे गौतम ! दूध अने पाणी इत्यादिनो सर्वसंहनन बन्ध वगो छे. ए प्रमाणे सर्वसंहनन बन्ध कागो. ए रीते आलीनबंध पण कागो.

शरीरबन्ध.

१९. [प्र०] शरीरबन्ध केटला प्रकारनो कागो छे ? [उ०] शरीरबन्ध वे प्रकारनो कागो छे, ते आ प्रमाणे—१ पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक अने २ प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक.

पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध

२०. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक शरीरबन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] ते ते स्वले ते ते कारणोने लीचे समुद्घात करता नैरविको अने संसारावस्थावाळा सर्व जीवोना जीवप्रदेशोने जे बंध थाय छे ते पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध छे. ए प्रमाणे पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कागो.

प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिकबन्ध

२१. [प्र०] प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारनो कागो छे ? [उ०] केवल्लिसमुद्घात वडे समुद्घात करता अने ते समुद्घातथी पाछा फरता, वच्चे मंथानमा वर्तता केवल्लजानो अनगारना तैजस अने कार्मण शरीरनो जे बन्ध थाय ते प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध काहेवाय छे. तैजस अने कार्मण शरीरनो बन्ध थायी थाय छे ? ते वरुते ते आमप्रदेशो सघातने पावे छे. [ अने ते प्रदेशोने अनुसरीने तैजस अने कार्मणोने पण बन्ध थाय छे. ] ए प्रमाणे प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कागो, ए प्रमाणे शरीरबन्ध कागो.

शरीरप्रयोगबन्ध

२२. [प्र०] शरीरप्रयोग बन्ध केवा प्रकारे कागो छे ? [उ०] शरीरप्रयोग बन्ध पाच प्रकारनो कागो छे, ते आ प्रमाणे—१ औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, २ वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध, ३ आहारकशरीरप्रयोगबन्ध, ४ तैजसशरीरप्रयोगबन्ध अने ५ कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध

२३. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कागो छे ? [उ०] हे गौतम ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध पाच प्रकारनो कागो छे. ते आ प्रमाणे—एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, द्वीन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, चावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

१ -साणिया-लो-ना, ड। २-रत्याण क। ३-नियत्तेमा- द्र। ४ भवंति ग। ५ तेहदिय०, चतुरिदिय०, पंचदिय० ओरालिय० क।

१७. \* सुग्ग एटले गोइदेशमा प्रसिद्ध वे हाय प्रमाण वेदिकायुफ जपान—टीका.

१९ † १ पूर्वप्रयोग प्रयोग-वेदना वपायादि समुद्घातरूप जीवोने व्यापार, ते निमित्ते थयेलो जीवप्रदेशोने के तदाश्रित तैजस-कार्मण शरीरनो बन्ध ते पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध. २ वर्तमान काले केवली समुद्घातरूप जीवव्यापारी थयेलो तैजस-कार्मणोने शरीरनो बन्ध ते प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध.

२४. [प्र०] एर्गिदियओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! कर्त्तिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयएर्गिदियओरालियसरीररूपओगबंधे, एवं एणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीररस्स तहा भाणियधो, जाव पज्जात्तागम्भवकंतिमणुस्सपंचिदियओरालियसरीररूपओगबंधे य, अप्पज्जात्तागम्भवकंतिमणुस्स— जाव वंधे य ।

२५. [प्र०] ओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय—सजोग—सद्द्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीररूपओगनामकम्मस्स उदणं ओरालियसरीररूपओगबंधे ।

२६. [प्र०] एर्गिदियओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदणं ? [उ०] एवं चेव, पुढविकाइयएर्गिदियओरालियसरीररूपओगबंधे एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया, एवं वेइंदिया, एवं तेइंदिया, एवं चउरिंदिया ।

२७. [प्र०] तिरिक्खजोगियपंचिदियओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदणं ? [उ०] एवं चेव ।

२८. [प्र०] मणुस्सपंचिदियओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय—सजोग—सद्द्वयाए पमादपच्चया जाव आउयं च पडुच्च मणुस्सपंचिदियओरालियसरीररूपओगनामकम्मस्स उदणं ।

२९. [प्र०] ओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सद्धबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे वि, सद्धबंधे वि ।

३०. [प्र०] एर्गिदियओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सद्धबंधे ? [उ०] एवं चेव, एवं पुढविकाइया, एवं जाव— [प्र०] मणुस्सपंचिदियओरालियसरीररूपओगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सद्धबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे वि, सद्धबंधे वि ।

२४. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध; ए प्रमाणे ए अभिलापथी जेम \*'अवगाहनासस्थान' पदमा औदारिक शरीरनो भेद कह्यो छे तेम अहीं कहेवो; यावत् पर्यातगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध अने अपर्यातगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवनी सवीर्यता, सयोगता अने सद्व्यव्यताथी, प्रमादहेतुथी, कर्म, योग, (काययोग) भव अने आयुष्यने आश्रयी औदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं. पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध ए प्रमाणे जाणवो. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, तथा वेइन्द्रिय, त्रिन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध जाणवो.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] पूर्वे प्रमाणे जाणवुं.

पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध-मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्व्यव्यताथी, तेम प्रमादहेतुथी, यावत् आयुष्यने आश्रयी मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मनुष्यपंचेन्द्रिय-औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध देस के सर्वबन्ध छे ?

२९. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्धनो शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध पण छे अने सर्वबन्ध पण छे.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध-मनुष्य औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धनो शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध पण छे अने सर्वबन्ध पण छे.

१ -नामाकम्म- क, -नामाए कम्म- ड । २ -पयोग एवं क, पयोगबंधे वि एवं ड । ३ पमाद-जाव क । ४ नामाए ट ।

२४. \* प्रज्ञा० पद २१. प. ४०८-१ पं. १.

२५. † वीर्यान्तराय कर्मना क्षयोपशम वडे उत्पन्न थयेली शक्ति ते सवीर्यता, मनोजोगादिनो व्यापार ते सयोगता, तथाविध पुद्गलादि द्रव्य ते सद्व्यव्यता, प्रमाद, एकेन्द्रियजातिनाम वगेरे कर्म, योग-काययोगादि, तिर्यचादि भव अने तिर्यचादिकना आयुपना लीधे उदयप्राप्त औदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मथी औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे—टीका.

२९. ‡ जेम पृतादिकथी भरेली अने तपी गयेली कलाइमा नांखेलो अप्प (पुले) प्रथम समये पृतादिकने केवल प्रहण करे, अने यात्रीना समये प्रहण करे अने छोडे, तेम आ जीव ज्यारे पूर्वना शरीरने छोडीने वीजुं शरीर प्रहण करे खांरे प्रथम समये उत्पत्तिस्थानके रहैला शरीरयोग पुद्गलोंने केवल प्रहण करे छे, माटे आ सर्वबंध छे, खांर पछी द्वितीयादि समये (शरीरप्रायोग पुद्गलोंने) प्रहण करे छे अने छोडे छे माटे ते देशबन्ध छे, तेथी औदारिकशरीरनो देशबंध पण होय छे अने सर्वबन्ध पण होय छे—टीका.

३१. [प्र०] ओरालियसरीरप्ययोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सद्यबंधे पक्कं समयं, देस-  
बंधे जह्णेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं तिच्छि पलिओवमाइं समयऊणाइं ।

३२. एगिंदियओरालियसरीरप्ययोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सद्यबंधे पक्कं समयं, देस-  
बंधे जह्णेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइं समयऊणाइं ।

३३. [प्र०] पुढविदाइयएगिंदियपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सद्यबंधे पक्कं समयं, देसबंधे जह्णेणं खुद्दागमवग्गहणं तिसम-  
यऊणं, उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइं समयूणाइं; पवं सधेसि सद्यबंधो पक्कं समयं, देसबंधो जेसि नन्थि वेउच्चियसरीरं  
तेसि जह्णेणं खुद्दागमवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं जा जस्स टिती सा समयूणा कायदा । जेसि पुण अन्थि वेउच्चियसरीरं  
तेसि देसबंधो जह्णेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं जा जस्स टिती सा समयूणा कायदा, जाच मणुस्साणं देसबंधे जह्णेणं  
समयं, उक्कोसेणं तिच्छि पलिओवमाइं समयूणाइं ।

३४. [प्र०] ओरालियसरीरबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सद्यबंधनरं जह्णेणं खुद्दागमवग्गहणं  
तिसमयऊणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुढकोडिसमयाहियाइं; देसबंधनरं जह्णेणं पक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं  
सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं ।

३५. [प्र०] एगिंदियओरालियपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सद्यबंधनरं जह्णेणं खुद्दागमवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं  
वावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं; देसबंधनरं जह्णेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहत्तं ।

औदारिक शरीर-  
प्रयोगबन्धनो काल

३१. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्या सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्ध एक समय, अने  
देशबन्ध जवन्यथी एक समय, अने उच्छ्रष्ट एक समय न्यून त्रण पत्तोपम सुधी होय छे.

एकेन्द्रिय.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्या सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्ध एउसमय,  
अने देशबन्ध जवन्यथी एक समय, अने उच्छ्रष्ट एक समय न्यून वावीस हजार वर्ष सुधी होय छे.

पृथिवीकायिक.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध नबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्ध एक  
समय, अने देशबन्ध जवन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव पर्यन्त, अने उच्छ्रष्ट एक समय न्यून वावीस हजार वर्ष सुधी होय छे. ए  
प्रमाणे सर्वजीवोने सर्वबन्ध एक समय छे, अने देशबन्ध जेओने वैक्रियशरीर नथी तेओने जवन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव पर्यन्त  
होय छे, अने उच्छ्रष्टथी जेटली जेनी आयुष्यस्थिति छे, तेथी एक समय न्यून करवो. जेओने वैक्रियशरीर छे तेओने देशबन्ध जद  
एक समय, अने उच्छ्रष्टथी जेटलं जेनुं आयुष्य छे तेठठानांथी एक समय न्यून जाणवो, ए प्रमाणे यावद् मनुष्योने देशबन्ध जवन्यथी  
एक समय, अने उच्छ्रष्टथी एक समय न्यून त्रण पत्तोपम सुधी जाणवो.

औदारिक शरीर-  
बन्धना अन्तरनो  
काल.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिक शरीरना बन्धनुं अन्तर कालथी क्या सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर  
जवन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भवप्रहण पर्यन्त छे, अने उच्छ्रष्टथी त्रिसमयाधिक पूर्वकोटी अने तेत्तीस सागरोपम छे. अने देशबन्धनुं  
अन्तर जवन्यथी एक समय, अने उच्छ्रष्टथी त्रण समय अधिक तेत्तीस सागरोपम छे.

एकेन्द्रिय.

३५. [प्र०] एकेन्द्रियऔदारिकशरीरबन्धसंबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओना सर्वबन्धनुं अन्तर जवन्यथी त्रण समय  
न्यून क्षुल्लक भव पर्यन्त, अने उच्छ्रष्टथी समयाधिक वावीस हजार वर्ष सुधी होय छे. देशबन्धनुं अन्तर जवन्यथी एक समय, अने  
उच्छ्रष्टथी अतर्मुहूर्त सुधी छे.

१ समयूणाइं क । २ जस्स उक्कोमिया टि-क-व विनाऽन्यत्र । ३ -बंधतरे णं क विनाऽन्यत्र । ४ नि उच्छो-क । ५ समयऊणं क ।

३१. \* पुगना दृष्टान्तथी सर्वबन्ध एकसमय छे. अने प्यारे वायुकायिक के मनुष्यादि वैक्रिय शरीर करीने अने तेने छेडीने औदारिक शरीरनो  
एक समय सर्वबन्ध करे अने पुन तेनो देशबन्ध करी एउ समय पछी तुरतज मरण पामे ल्यारे जवन्यथी एक समय देशबन्ध होय छे औदारिकशरीर-  
वाळानी त्रण पत्तोपम उच्छ्रष्ट स्थिति छे, तेमा प्रथम समये तेथो सर्वबन्धक छे, अने पछी एक समय न्यून त्रण पत्तोपम सुधी देशबन्धक छे -टीका.

३३. † जे पृथिवीकायिक जीव त्रण समयनी विग्रहगति एउसत्र थयो छे ते त्रीजे नमये सर्वबन्धक छे, अने वाळोना समये क्षुद्रकमवप्रणा,  
पौताना जवन्य आयुषपर्यन्त देशबन्धक होय छे माटे ते त्रणनमयन्यून क्षुद्रकमवपर्यन्त जवन्यथी देशबन्धक होय एउ कथुं छे.-टीका.

३४. ‡ कोइ जीव मनुष्यादिगतिना अविग्रहगति ए आवी अने त्या प्रथम समये सर्वबन्ध बंधेने पूर्वकोटि वर्ष पर्यन्त लां रही तेत्तीस सागरोपमनी  
स्थितिवाळो नारक के सर्वांसिद्ध देव थाय, अने पछी ते त्रण समयनी विग्रहगति औदारिकशरीरधारी थाय, त्या विग्रहगतिना वे समय अनाहारक होय  
अने त्रीजे समये वे औदारिक शरीरनो सर्वबन्धक थाय, हवे तेमां विग्रहगतिना वे समय अनाहारक छे तेमाथी एक समय पूर्वकोटीना सर्वबन्धस्थाने प्रसिद्ध  
करीए तेथी पूर्वकोटी पूर्ण थट अने एक समय अधिक थयो. ए रीते सर्वबन्धनुं उच्छ्रष्ट अन्तर समयाधिक पूर्वकोटि अने तेत्तीस सागरोपम थाय छे.-टीका.

३६. [प्र०] पुढचिकाइयपंगिदियपुच्छा । [उ०] सद्यबंधंतरं जहेव पंगिदियस्स तहेव भाणियधं, देसबंधंतरं जहणेणं एकं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि समयया । जहा पुढचिकाइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयवज्जाणं, नवरं सद्यबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयाहिया कायद्या । वाउक्काइयाणं सद्यबंधंतरं जहणेणं खुड्ढागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं समयाहियाइं । देसबंधंतरं जहणेणं एकं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

३७. [प्र०] पंचिदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा । [उ०] सद्यबंधंतरं जहणेणं खुड्ढागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुधकोडी समयाहिया । देसबंधंतरं जहा पंगिदियाणं तहा पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साण चि निरवसेसं भाणियधं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

३८. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! पंगिदियत्ते, नोपंगिदियत्ते, पुणरवि पंगिदियत्ते पंगिदियओरालियसरीरप्यओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सद्यबंधंतरं जहणेणं दो खुड्ढाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरो-वंभेसहस्साइं संखेज्जवासमम्भहियाइं । देसबंधंतरं जहणेणं खुड्ढागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखे-ज्जवासमम्भहियाइं ।

३९. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! पुढचिकाइयत्ते, नोपुढचिकाइयत्ते, पुणरवि पुढचिकाइयत्ते पुढचिकाइयपंगिदियओरालियसरी-रप्यओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सद्यबंधंतरं जहणेणं दो खुड्ढाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं एवं चेव, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंता उस्सप्पिणी—ओसप्पिणीओ कालओ, खेसओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं

३६. [प्र०] पृथिवीकायिक एकेन्द्रियना औदारिकशरीरबन्धसंबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओना सर्वबन्धुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कहुं तेम कहेवुं; अने देशबन्धुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी त्रण समय सुधीनुं होय छे. जेम पृथ्वीकायिकने कहुं तेम वायुकायिक सिवाय यावत् चउरिन्द्रिय सुधीना जीवोने जाणवुं, पण उत्कृष्टथी सर्वबन्धुं अन्तर जेटली जेनी आयुष्य स्थिति होय तेटली एक समय अधिक करवी. ( अर्थात् सर्वबन्धुं अन्तर समयाधिक आयुष्यनी स्थिति प्रमाणे जाणवुं. ) वायुकायिकना सर्वबन्धुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी समयाधिक त्रण हजार वर्ष सुधी जाणवुं. तेओना देशबन्धुं अन्तर जघ-न्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त पर्यन्त जाणवुं.

३७. [प्र०] पंचेन्द्रियतिर्यचना औदारिक शरीरबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न [उ०] हे गौतम ! तेओना सर्वबन्धुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भवपर्यन्त, अने उत्कृष्टथी समयाधिक पूर्व कोटि होय छे. देशबन्धुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कहुं छे ते प्रकारे सर्व पंचेन्द्रिय तिर्यचोने जाणवुं. ए प्रमाणे मनुष्योने पण समप्र जाणवुं, यावत् उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त छे.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ जीव एकेन्द्रियपणामां होय, अने पछी ते एकेन्द्रिय सिवाय वीजी कोइ जातिमां जाय, अने पुनः एकेन्द्रियपणामां आवे तो एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धुं अन्तर कालथी केटलं होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी सर्वबन्धुं अन्तर त्रण समय न्यून वे क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी संख्याता वर्ष अधिक वे हजार सागरोपम छे. तथा देशबन्धुं अन्तर जघन्यथी एक समय अधिक क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी संख्यात वर्ष अधिक वे हजार सागरोपम छे.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ जीव पृथिवीकायपणामां होय, त्यांथी पृथिवीकाय सिवायना वीजा जीवोमा उत्पन्न थाय अने पुनः ते पृथिवीकायमा आवे तो पृथिवीकायिक एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धुं अन्तर केटलं होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धुं अन्तर जघन्यथी ए रीते त्रण समय न्यून वे क्षुल्लक भव पर्यन्त छे, अने उत्कृष्टथी कालनी अपेक्षाए अनन्तकाल—अनन्त

पंचेन्द्रिय तिर्यचना औदारिक शरीर-बन्धुं अन्तर.

एकेन्द्रियऔदारिक शरीरना प्रयोग बन्धु अन्तर.

पृथिवीकायिक-औदारिक शरीर-बन्धु अन्तर.

१ खुड्ढाग—उ । २ एवं चेव क । ३ ओसप्पिणी ओ का—क ।

३८. \* कोइ एकेन्द्रिय जीव त्रण समयनी विप्रहृगतिवडे उत्पन्न थाय, त्यां वे समय अनाहारक रहे अने त्रीजे समये सर्वबन्धु करे, पछी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव प्रमाण आयुष्य पूर्ण करी एकेन्द्रिय सिवाय वीजी जातिमा उत्पन्न थाय, त्या पण क्षुल्लक भवनी स्थिति पूर्ण करी पुन. अविप्रहृ गति वडे एकेन्द्रिय जातिमा उपजे अने प्रथम समये सर्वबन्धुक थाय, ल्यारे त्रण समय न्यून वे क्षुल्लक भव सर्वबन्धु जघन्य अन्तर होय. कोइ पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव श्रजुगतिथी उत्पन्न थाय अने प्रथम समये सर्वबन्धुक थाय त्या वावीश हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मरीने प्रसकायिकमा उत्पन्न थाय, त्यां पण सट्यातवर्षाधिक वे हजार सागरोपमनी उत्कृष्ट कायस्थितिने पूरी करी पुन एकेन्द्रियपणे उत्पन्न यइने सर्वबन्धुक थाय ल्यारे उपर कहेल्ल नवबंधु उच्छेद अन्तर थाय अर्हा सर्वबन्धना समय हीन एकेन्द्रियनी उत्कृष्ट भवस्थितिने प्रयकायनी कायस्थितिमा प्रक्षेप करीए तो पण सट्याता वर्षे ज याय, केमके सट्यातागा सख्यात मेद छे—टीका.

३९. † कालनी अपेक्षाए अनन्त काल छे—एटले अनन्त कालना समयोने उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयोथी अपहरता अनन्त उन्सर्पिणी अव-सर्पिणी थाय. क्षेत्रनी अपेक्षाए अनन्त लोक—एटले अनन्तकालना समयोने लोकाकाशाना प्रदेशो वडे अपहरता अनन्त लोक थाय. अर्ही वनसतिनी काय-स्थिति अनन्तकालनी होवाथी ते अपेक्षाए सर्वबन्धु उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल छे.—टीका.

પોગલપરિચ્છા આવલિયાણ અસંયેજાઝાગો । દેસવંધંતરં જહ્નણં રુદ્ધાગં મયગ્ગહણં મમયાદિયં, ઉકોસેણં યણંતં કાલં જાવ આવલિયાણ અસંયેજાઝાગો । જહા પુઠવિક્કાદયાણં પ્વં ઘણસ્સદ્કાદયાણં જાવ મણુસ્સાણં । ઘણસ્સદ્કાદયાણં દોષિ રુદ્ધાગં પ્વં ચેવ, ઉકોસેણં અસંયેજાઝા કાલં-અસંયેજાઝો ઉસણિણી-ઓસણિણીઝો કાલઝો, મેત્તઝો યસંયેજા ઝોગા, પ્વં દેસવંધંતરં પિ ઉકોસેણં પુઠવિક્કાલો ।

૪૦. [પ્ર૦] ણ્ણસિ ણં મંતે ! જીવાણં ધોરાલિયસરીરસ્સ દેસવંધગાણં, સદ્ધવંધગાણં, અર્થવંધગાણં ય કયરે કયરે- જાવ વિસેસાહિયા વા ? [ઉ૦] ગોયમા ! સદ્ધત્થોઘા જીવા ધોરાલિયસરીરસ્સ સદ્ધવંધગા, અર્થવંધગા વિસેસાહિયા, દેસવંધગા અસંયેજાગુણા ।

૪૧. [પ્ર૦] વેડઢિયસરીરપ્પઓગવંધે ણં મંતે ! કતિવિદ્દે પપ્પત્તે ? [ઉ૦] ગોયમા ! ઢુવિદે પપ્પત્તે, તં જહા-પ્પિન્દિયવે-ઉઢિયસરીરપ્પઓગવંધે ય પ્પંચેન્દિયવેડઢિયસરીરપ્પઓગવંધે ય ।

૪૨. [પ્ર૦] જહ્ પ્પિન્દિયવેડઢિયસરીરપ્પઓગવંધે કિં વાડક્કાદયપ્પિન્દિયસરીરપ્પઓગવંધે ય, ઘવાડકાદયપ્પિન્દિયસરીર-પ્પઓગવંધે ? [ઉ૦] પ્વં પ્પણં અમિલાવેણં જહા ધોગાહણપંસટાણે વેડઢિયસરીરમેદો તહા માણિયટ્ઠો, જાવ પજ્જાસવટ્ઠસિદ્ધ-અણુત્તરોવવાદ્યકપ્પાતીયવેમાણિયટ્ઠેવપંચિન્દિયવેડઢિયસરીરપ્પઓગવંધે ય, અપજ્જાસવટ્ઠસિદ્ધ- જાવ પ્પઓગવંધે ય ।

૪૩. [પ્ર૦] વેડઢિયસરીરપ્પઓગવંધે ણં મંતે ! કસ્સ કમ્મસ્સ ઉદ્ડપ્પણં ? [ઉ૦] ગોયમા ! ઘીરિય-સજોગ-સદ્ધયાણ જાવ આરયં વા લહ્હિ વા પઢુચ્ચ વેડઢિયસરીરપ્પઓગનામાણ કમ્મસ્સ ઉદ્ડપ્પણં વેડઢિયસરીરપ્પઓગવંધે ।

૪૪. [પ્ર૦] વાડક્કાદયપ્પિન્દિયવેડઢિયસરીરપ્પઓગપુચ્છા । [ઉ૦] ગોયમા ! ઘીરિય-સજોગ-સદ્ધયાણ પ્વં ચેવ જાવ લહ્હિ પઢુચ્ચ વાડક્કાદયપ્પિન્દિયવેડઢિય- જાવ વંધે ।

૪૫. [પ્ર૦] રયણપ્પમાપુઢવિનેરહ્યપંચિન્દિયવેડઢિયસરીરપ્પઓગવંધે ણં મંતે ! કસ્સ કમ્મસ્સ ઉદ્ડપ્પણં ? [ઉ૦] ગોયમા ! ઘીરિય-સજોગ-સદ્ધયાણ જાવ આરયં વા પઢુચ્ચ રયણપ્પમાપુઢવિ- જાવ વંધે, પ્વં જાવ અદ્દે સત્તમાણ ।

ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી છે, ક્ષેત્રથી અનન્તલોક-અન્તેય પુદ્ગલપરાવર્તે છે, અને તે પુદ્ગલપરાવર્તે આવલિકાના અસહ્યાતમા ભાગના (સમય) તુલ્ય છે. તથા ડેગવન્ધવંતું અન્તર જઘ્ન્યથી સમયાધિક ક્ષુદ્ધક ભવ, અને ઉત્કૃષ્ટથી અનન્ત કાલ, યાવત્ આવલિકાના અસહ્યાતમા ભાગના સમય તુલ્ય અસહ્ય પુદ્ગલપરાવર્તે છે. જેમ પૃથિવીકાયિકોને કર્તું તેમ વનસ્પતિકાયિક સિયાય વાકીના યાવદ્ મનુસ્ય સુવાંના જીવો માટે જાણવું. વનસ્પતિકાયિકોને સર્વવન્ધવંતું અન્તર જઘ્ન્યથી કાલની અપેક્ષા એ પ્રમાણે [ત્રણ સમય ન્યૂન] વે ક્ષુદ્ધક ભવ, અને ઉત્કૃષ્ટથી અસહ્યકાલ-અસહ્ય ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી સુધી છે, ક્ષેત્રથી અનન્ત લોક છે; ડેગવન્ધવંતું અન્તર જઘ્ન્યથી (સમયાધિક ક્ષુદ્ધક ભવ) જાણવું. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૃથિવીકાયના સ્થિતિકાલ (અસહ્ય ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી) સુધી જાણવું.

૪૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એ ઔદારિક શરીરના ડેગવન્ધવ, સર્વવન્ધક અને અવન્ધક જીવોમા કયા જીવો કોનાથી યાવદ્ વિદે-પાયિક છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! સૌથી યોદ્ધા જીવો ઔદારિક શરીરના સર્વવન્ધક છે, તેથી અવન્ધક જીવો વિશેષાયિક છે, અને તેથી ડેગવન્ધક જીવો અનહ્યાત ગુણ છે.

૪૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વૈક્રિયશરીરનો પ્રયોગવન્ધ કેટલા પ્રકારનો કણો છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! વે પ્રકારનો કણો છે, તે આ પ્રમાણે-પ્નેક્ટ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ અને પંચેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ.

૪૨. [પ્ર૦] જો એકેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ છે તો શું વાયુકાયિક એકેન્દ્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ છે કે વાયુકાયિક મિલ્લ એકેન્દ્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધ છે ? [ઉ૦] એ પ્રમાણે એ અમિલાપથી જેમ "અવગાહનાત્તસ્થાન" પદમા વૈક્રિય શરીરનો મેઢ કણો છે તેમ કહેવો યાવત્ પર્યાપ્તસર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તરોપપાતિક કાપાતીન વૈમાનિકાદેવ પંચેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ અને અપર્યાપ્ત સર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તરોપપાતિક-યાવદ્ વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ.

૪૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ કયા કર્મના ઉદયથી થાય છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! સર્વીર્યતા, સયોગતા અને સદ્ધવ્યતાથી યાવદ્ આયુષ્ અને લઢ્ઢિવને આશ્રયી વૈક્રિયશરીરપ્રયોગ નામકર્મના ઉદયથી વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ થાય છે.

૪૪. [પ્ર૦] વાયુકાયિક એકેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ સવન્ધે પ્રશ્ન. [ઉ૦] હે ગૌતમ ! સર્વીર્યતા, સયોગતા અને સદ્ધવ્યતાથી પૂર્વેનો પેટે યાવદ્ લઢ્ઢિવને આશ્રયી વાયુકાયિક એકેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગ નામકર્મના ઉદયથી યાવદ્ વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ થાય છે.

૪૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! રત્નપ્રમાપૃથિવીનૈરપ્રિકપંચેન્દ્રિયવૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ કયા કર્મના ઉદયથી થાય છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! સર્વીર્યતા, સયોગતા અને સદ્ધવ્યતાથી યાવદ્ આયુષ્યને આશ્રયી રત્નપ્રમાપૃથિવીનૈરપ્રિકપંચેન્દ્રિયશરીરપ્રયોગનામકર્મના ઉદયથી યાવદ્ વૈક્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધ થાય છે. એ પ્રમાણે યાવત્ નાંચે સાતમો નરકપૃથ્વી સુધી જાણવું.

૧ તં ચેવ ક્ક । ૨-૨-પ્પમથુદ્ધવિ- ક ।

\* ૪૨. પ્રજા૦ પટ ૨૧. પ. ૪૧૪-૨. પં ૫.

ઔદારિક શરીરના  
સર્વવન્ધક, ડેગવ-  
ન્ધક અને અવન્ધક  
અવન્ધક.

વૈક્રિયશરીરપ્રયોગ  
વન્ધ.

વૈક્રિયશરીરપ્રયોગ-  
વન્ધ કયા કર્મના  
ઉદયથી થાય છે ?

વાયુકાયિક એકેન્દ્રિય  
શરીરપ્રયોગવન્ધ.

નૈરપ્રિકવૈક્રિય  
શરીરપ્રયોગવન્ધ

४६. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिन्द्रियवेउद्वियसरीरपुच्छा । [उ०] गोयमा ! वीरिय० जहा वाउक्काइयाणं, मणुस्सपंचिन्द्रिय-  
वेउद्विय० एवं चेव । असुरकुमारभवनवासिदेवपंचिन्द्रियवेउद्विय० जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं, एवं जाव थणियकुमारा,  
एवं वाणमंतरा, एवं जोइसिया, एवं सोहम्मकप्पोवया वेमाणिया, एवं जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणियां, अणुत्तरो-  
ववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव ।

४७. [प्र०] वेउद्वियसरीरप्पओगवंधे णं भंते ! किं देसवंधे, सद्धवंधे ? [उ०] गोयमा ! देसवंधे वि, सद्धवंधे वि ।  
वाउक्काइयएगिन्द्रिय० एवं चेव, रयणप्पभापुढविनेरइया एवं चेव, एवं जाव अणुत्तरोववाइया ।

४८. [प्र०] वेउद्वियसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सद्धवंधे जहद्धेणं एक्कं समयं,  
उक्कोसेणं दो समयया । देसवंधे जहद्धेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ।

४९. [प्र०] वाउक्काइयएगिन्द्रियवेउद्वियपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सद्धवंधे एक्कं समयं, देसवंधे जहद्धेणं एक्कं समयं,  
उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

५०. [प्र०] रयणप्पभापुढविणेरइयपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सद्धवंधे एक्कं समयं, देसवंधे जहद्धेणं दसवाससहस्साइं  
तेसमयऊणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं समयूणं, एवं जाव अहे सत्तमा, नवरं देसवंधे जस्स जा जहद्धिया टिती सा निसम-  
यूणा कायद्धा, जाव उक्कोसिआ सा समयूणा । पंचिन्द्रियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं, असुरकुमार-  
नागकुमार० जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं; नवरं जस्स जा टिती सा भाणियद्धा, जाव अणुत्तरोववाइयाणं सद्धवंधे  
एक्कं समयं, देसवंधे जहद्धेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं तिसमऊणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ।

५१. [प्र०] वेउद्वियसरीरप्पओगवंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सद्धवंधंतरं जहद्धेणं एक्कं  
समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ— जाव आवलियाए असंखेज्जइमागो, एवं देसवंधंतरं पि ।

४६. [प्र०] तिर्यच्योनिक पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वीर्यता, सयोगता अने सद्रूप्यताथी  
पूर्ववत् जेम वायुकायिकोने कह्युं तेम जाणवुं. मनुष्य पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध पण ए प्रमाणे जाणवो. असुरकुमार भवनवासीदेव  
पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिकनी पेठे जाणवो. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. ए रीते वानव्यंतर,  
ज्योतिषिक, सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक यावद् अच्युत, अने प्रवेयक कल्पातीत वैमानिकोने जाणवुं. तथा अनुत्तरौपपातिककल्पातीत  
वैमानिकोने पण ए प्रमाणे जाणवो.

तिर्यच्योनिकवैक्रिय  
शरीरप्रयोगवन्ध.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरप्रयोगवन्धं शुं देशवन्धं छे के सर्ववन्धं छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देशवन्धं पण छे  
अने सर्ववन्धं पण छे. ए प्रमाणे वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धं तथा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धं जाणवो.  
ए प्रमाणे यावद् अनुत्तरौपपातिक देवो सुधी जाणवुं.

देशवन्धं अने सर्व-  
वन्धं

४८. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरप्रयोगवन्धं कालथी कयां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धं जघन्यथी एक समय, अने  
उत्कृष्टथी \*वे समय सुधी होय. तथा देशवन्धं जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी एक समय न्यून तेत्तीश सागरोपम सुधी होय.

वैक्रियशरीरप्रयोग  
वन्धकालं.

४९. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धं एक समय, अने देशवन्धं  
जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय छे.

वायुकायिक वैक्रिय  
शरीरप्रयोगवन्धसंबन्धे  
प्रश्नं.  
रत्नप्रभा नैरयिक  
वैक्रियशरीरप्रयोग  
वन्धं.

५०. [प्र०] रत्नप्रभानैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगवन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धं एक समय, अने देशवन्धं जघन्यथी  
त्रण समय उणा दशहजार वर्ष सुधी होय, तथा उत्कृष्टथी एक समय न्यून एक सागरोपम सुधी होय. ए प्रमाणे यावत् नीचे साननी  
नरकापृथ्वी सुधी जाणवुं. परन्तु देशवन्धने विषे जेनी जे जघन्य स्थिति होय तेने एक समय न्यून करवी, अने यावत् जेनी उत्कृष्ट स्थिति  
होय ते पण समय न्यून करवी. पञ्चेन्द्रिय तिर्यच अने मनुष्यने वायुकायिकनी पेठे जाणवुं. असुरकुमार, नागकुमार, यावद् अनुत्तरौपपा-  
तिक देवोने नारकनी पेठे जाणवो; परन्तु जेनी जे स्थिति (आयुष्य) होय ते कहेवी, यावद् अनुत्तरौपपातिकोने सर्ववन्धं एक समय,  
अने देशवन्धं जघन्यथी त्रण समय न्यून एकत्रीश सागरोपम सुधीनी होय छे, तथा उत्कृष्टथी एक समय न्यून तेत्तीश सागरोपम सुधीनी छे.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरना प्रयोगवन्धं अन्तर कालथी कयां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धं अन्तर  
जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल—अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, यावद् आवलिकाना असंज्ञानमा भागना समय तुन्य अनन्त  
पुद्गल परावर्तं सुधी होय छे. ए प्रमाणे देशवन्धं अन्तर पण जाणवुं.

वैक्रियशरीरप्रयोग  
वन्धं

१ -नेरइया एवं क विनाऽन्यत्र । २ -या जेवदा ल । ३ एवं चेव अणु- उ विनाऽन्यत्र । ४ सत्तमाए क-व विना । ५ समऊणा च ।  
६ जस्स जा उक्कोसा क-उ विनाऽन्यत्र । ७ -बंधंतरं णं क विनाऽन्यत्र ।

४८. \* वायुकायिकशरीर वैक्रियशरीर करतो प्रथम नमये सर्ववन्धक पश्चिने मरण पाणी देव के नारक धार त्तारे प्रथम मनने सर्ववन्ध करे, मटे  
वैक्रियशरीरप्रयोगवन्धने सर्ववन्ध उत्कृष्टथी वे समय होय तथा वायुकायिकशरीर वैक्रिय शरीर करतो प्रथम नमये सर्ववन्ध करी कीजे अन्तरे देशवन्धक  
याव धने तरत ज मरण पाणे मटे देशवन्ध जघन्यथी एक समय होय छे—टीका

૫૨. [પ્ર૦] ઘાટકાઠ્યવેડધિયસરીરપુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સહયંધનરં જહપ્રેણં ંતોમુહુત્તં, ડહોસેણં પદિત્રોવમ્મ અસંગેજહમાગં; ઇયં દેસવંધનરં પિ ।

૫૩. [પ્ર૦] તિરિક્કગજોણિયપંચિદિયવેડધિયસરીરમ્પયોગરંધનરં-પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સહયંધનરં જહપ્રેણં ંતો-મુહુત્તં, ડહોસેણં પુષ્કોટ્ટિપુહુત્તં; ઇયં દેસવંધનરં પિ, ઇયં મેણુમન્ન પિ ।

૫૪. [પ્ર૦] જીવસ્સ ણં મંતે ! ઘાટકાઠ્યવે, નોઝાઠકાઠ્યવે, પુણરયિ ઘાટકાઠ્યવે ઘાટકાઠ્યવેપંચિદિયવેડધિયપુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સહયંધનરં જહપ્રેણં ંતોમુહુત્તં, ડહોસેણં ંધનંતં વાલે-વણસ્સહકાલો, ઇયં દેસવંધનરં પિ ।

૫૫. [પ્ર૦] જીવસ્સ ણં મંતે ! રયણપ્પમાપુહવિનેરદ્યવે, ણોમ્યણપ્પમાપુહવિ-પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સહયંધનરં જહપ્રેણં દસવાસમહસ્સારં ંતોમુહુત્તમન્મહિયારં, ડહોસેણં વણસ્સહકાલો; દેસવંધનરં જહપ્રેણં ંતોમુહુત્તં, ડહોસેણં વાલે-વણસ્સહકાલો; ઇયં જાય ંદે સત્તમાણ, નયરં જા ડસ્સ ટિઠ્ઠા જહપ્રિયા યા સંહયંધનરં જહપ્રેણં ંતોમુહુત્તમ કાયણા, સેસં તં ચેવ । પંચિદિયતિરિક્કગજોણિય-મણુસ્માણ ય જહા ઘાટકાઠ્યવે; ડહુમ્માર-નાગમ્માર૦ જાય સહસ્સાર દેવાણં ણપિંસિ જહા રેયણપ્પમાપુહવિનેરદ્યવે, નયરં સહયંધનરં ડસ્સ જા ટિઠ્ઠા જહપ્રિયા યા ંતોમુહુત્તમન્મહિયા કાયણા, સેસં તં ચેવ ।

૫૬. [પ્ર૦] જીવસ્સ ણં મંતે ! આણયદેવવે, નોઝાણય-પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સહયંધનરં જહપ્રેણં અટ્ટાગ્સ સાગયો-

૫૨. [પ્ર૦] વાયુકાયિકના વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર સંઘ્ને પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વવન્ધનું અન્તર જવન્ધની અન્તર્મુહૂર્તિ, અને ડહુટ્ટથી પન્થોપમનો અસંગ્યાતમો ભાગ. ૯ પ્રમાણે દેશવન્ધનું અન્તર પણ જાણવું.

૫૩. [પ્ર૦] તિર્યંચયોનિક પંચેન્દ્રિયના વૈક્રિયશરીરના પ્રયોગવન્ધના અન્તર સંઘ્ને પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વવન્ધનું અન્તર જવન્ધની અન્તર્મુહૂર્તિ, અને ડહુટ્ટથી પૂનઃકોટ્ટિપૃથગ્વ (વેધી નર પૂર્વકોટ્ટી) સુધી હોય છે. ૯ પ્રમાણે દેશવન્ધનું અન્તર પણ જાણવું. ૯ રીતે મનુષ્યને પણ જાણવું.

૫૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કોઈ જીવ વાયુકાયિકપણામા હોય અને [મરિને] વાયુકાય સિવાય કોઈ જીવોમાં આત્મે વ્યવે, અને તે પુન. વાયુકાયપણામા આવે તે વાયુકાયિક વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર સંઘ્ને પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! તેના સર્વવન્ધનું અન્તર જવન્ધની અન્તર્મુહૂર્તિ, અને ડહુટ્ટથી અનન્તકાલ-વનસ્પતિકાલ હોય. ૯ પ્રમાણે દેશવન્ધનું પણ અન્તર જાણવું.

૫૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કોઈ જીવ રત્તપ્રમાપૃથિવોમાં નારક્કપણે ઉત્પન્ન થાય અને પછી રત્તપ્રમાપૃથિવો ડિવાયના ડિવાય, અને પુન. રત્તપ્રમા નરકમા આવે તે રત્તપ્રમાનૈરયિકના વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર સંઘ્ને પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વવન્ધનું અન્તર જવન્ધની અન્તર્મુહૂર્તિ અધિક દશ હજાર વર્ષ, અને ડહુટ્ટથી વનસ્પતિકાલપર્યન્ત હોય. તથા દેશવન્ધનું અન્તર જવન્ધની અન્તર્મુહૂર્તિ, અને ડહુટ્ટથી અનન્તકાલ-વનસ્પતિકાલ સુધી હોય. ૯ પ્રમાણે યાત્ ત્ નોંચે સાતમી નરકપૃથ્વી પર્યન્ત જાણવું. પરન્તુ નિદેશ ૯ છે કે જવન્ધની સર્વવન્ધનું અન્તર જે નારક્કની જેટલી જવન્ધ સ્થિતિ હોય તેટલી સ્થિતિ અન્તર્મુહૂર્તિ અધિક જાણવી. વાકીનું પૂર્વની પેટે જાણવું. પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિક અને મનુષ્યોને સર્વવન્ધનું અન્તર વાયુકાયિકનો પેટે જાણવું. જેમ રત્તપ્રમાના નૈરયિકોને કામું તેમ અસુર-કુમાર, નાગકુમાર, યાવત્ સહસ્સાર વેગોને પણ જાણવું, પરન્તુ વિશેષ ૯ છે કે તેના સર્વવન્ધનું અન્તર જેની જે જવન્ધ સ્થિતિ હોય તેને અન્તર્મુહૂર્તિ અધિક કરવી, વાકી સર્વે પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે જાણવું.

૫૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આનતદેવલોકમા દેવપણે ઉત્પન્ન થયેલો કોઈ જીવ ત્યાંથી [ચર્વા] આનત દેવલોક સિવાયના જીવોમાં ઉત્પન્ન થાય અને પાછો ફરીને ત્યાં આનત દેવલોકમા ઉત્પન્ન થાય તે આનતદેવ વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર સંઘ્ને પ્રશ્ન. [૩૦] હે

૧ મણુ સ્સાણ વિ ક । ૨-યંધનરં જ- ક વિનાઽન્વય । ૩ પ્પમગાણં ક ।

૫૨. \* ઔદારિકશરીરી વાયુકાયિક વૈક્રિયશરીરનો પ્રારંભ કરે અને પ્રથમ સમયે સર્વવન્ધક થઈ મરણ પામી પુનઃ વાયુકાયિક થાય, તેને અવર્તાત-વસ્થાના વૈક્રિય શક્તિ ઉત્પન્ન થતી નથી, તેથી તે અન્તર્મુહૂર્તિના પર્ણાંશ થઈને વૈક્રિયશરીર કરે ત્યારે સર્વવન્ધક થાય માટે સર્વવન્ધનું જવન્ધ અન્તર અન્તર્મુહૂર્તિ હોય. તથા ઔદારિક શરીરી વાયુકાયિક વૈક્રિય શરીર કરે તેના પ્રથમ સમયે સર્વવન્ધક થાય, ત્યાર પછી દેશવન્ધક થઈને મરણ પામી ઔદારિકશરીરી વાયુકાયિકમા પલ્થોપમનો સ્વસ્થાતમો ભાગ નિર્ગમન કરી અવર્ય વૈક્રિય શરીર કરે, ત્યા પ્રથમ સમયે સર્વવન્ધક થાય, માટે સર્વવન્ધનું વધોક અન્તર જાણવું.-ટીકા.

૫૫. † રત્તપ્રમાપૃથિવોનો નારક દશ હજાર વર્ષની સ્થિતિવાલો ઉત્પન્નિને પ્રથમ સમયે સર્વવન્ધક હોય છે, ત્યાર પછી ત્યાંથી ચર્વાને ગર્ભજ પંચેન્દ્રિયને વિષે અન્તર્મુહૂર્તિ રહીને પુનઃ રત્તપ્રમાપૃથિવો ઉત્પન્ન થાય, ત્યા પ્રથમ સમયે સર્વવન્ધક હોય, તેથી સર્વવન્ધનું વધોક જવન્ધ અન્તર હોય.-ટીકા.

વાયુકાયિક વૈક્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર

તિર્યંચયોનિક વૈક્રિય શરીર પ્રયોગવન્ધના અન્તર

વાયુકાયિક વૈક્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર

રત્તપ્રમાના નૈરયિક શરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર

અસુર-કુમાર, નાગ-કુમાર, યાવત્ સહસ્સાર વગેરેના વૈક્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર

આનતદેવલોક શરીરપ્રયોગવન્ધના અન્તર

वमाई वासपुहत्तमम्भहियाई, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो; देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—  
वणस्सइकालो; एवं जाव अच्चुए । नवरं जस्स जा टिती सा सैधबंधंतरं जहण्णेण वासपुहत्तमम्भहिया कायद्वा, सेसं तं चेव ।  
५७. [प्र०] गेवेज्जकप्पातीय—पुच्छ । [उ०] गोयमा । सधबंधंतरं जहन्नेण वावीसं सागरोवमाई—वासपुहत्तमम्भहियाई,  
उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ।

५८. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववाइय—पुच्छ । [उ०] गोयमा ! सधबंधंतरं जहन्नेणं एकतीसं सागरोवमाई  
वासपुहत्तमम्भहियाई, उक्कोसेणं संखेज्जाई सागरोवमाई । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाई सागरोवमाई ।

५९. [प्र०] एएस्ति णं भंते ! जीवाणं वेउद्वियसरीरस्स देसबंधगाणं, सधबंधगाणं, अवंधगाणं य कयरे कयरेहितो जाव वि-  
सेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सधत्योवा जीवा वेउद्वियसरीरस्स सधबंधगा, देसबंधगा असंखेज्जगुणा, अवंधगा अणंतगुणा ।

६०. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ।

६१. [प्र०] जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे ? [उ०] गोयमा !  
मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, नो अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे । एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इह्दिपत्त-  
पमत्तसंजयसम्मदिह्दिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगव्वकंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, णो अणिह्दिपत्तपमत्त० जाव  
आहारगसरीरप्पओगबंधे ।

६२. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय—सजोग—सहद्वयाए  
जाव लंदि च पडुच्च आहारगसरीरप्पओगणामाप कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पओगबंधे ।

गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी \*वर्षपृथक्त्व अधिक अटार सागरोपम, अने उत्कृष्ट अनंतकाल—वनस्पतिकालपर्यन्त होय. तथा देश-  
बन्धनु अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्ट अनंतकाल—वनस्पतिकाल होय. ए प्रमाणे यावद् अच्युत देवलोकपर्यन्त जाणतुं, परन्तु  
सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी जेनी जे स्थिति होय ते वर्षपृथक्त्व अधिक करवी. वाकी वधुं पूर्वनी पेठे जाणतुं.

५७. [प्र०] त्रैवैयक कल्पातीत वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनां अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी  
वर्षपृथक्त्व अधिक वावीश सागरोपम, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल—वनस्पतिकाल सुधी होय. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व  
अने उत्कृष्टथी वनस्पतिकाल जाणवो.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरोपपातिकदेवसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अधिक  
एकत्रीश सागरोपम, अने उत्कृष्टथी संख्यात सागरोपम छे. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्टथी संख्यात सागरोपम  
होय छे.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! ए वैक्रियशरीरना देशबंधक, सर्वबंधक अने अबंधक जीवोमा कया जीवो कया जीवोथी यावद्  
विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! वैक्रियशरीरना सर्वबंधक जीवो सौथी थोडा छे, तेथी देशबन्धको असंख्यातगुणा छे, अने तेथी  
अबंधको अनन्तगुणा छे.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरनो प्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनो कह्यो छे.

६१. [प्र०] जो (आहारकशरीरप्रयोगबन्ध) एक प्रकारनो कह्यो छे तो जुं ते मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध छे के मनुष्य-  
शिवाय वीजा जीवोने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे, पण मनुष्य शिवाय  
वीजा जीवोने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होतो नथी. ए प्रमाणे ए अभिलापथी 'अवगाहनासंस्थान' पदमा कह्या प्रमाणे यावद् ऋद्धिप्राप्त  
प्रमत्तसयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षना आयुपूत्राळा कर्मभूमिमा उत्पन्न थएला गर्भज मनुष्यने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे, पण ऋद्धिने  
अप्राप्त प्रमत्तसंयतने यावद् आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होतो नथी.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी होय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने  
सद्रव्यताथी यावद् लब्धिने आश्रयी आहारकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे.

१—पुहुत्तम—ग । २—अनुया क । ३—बंधतरे क । ४—पुहुत्त ग—ड । ५—भूमिगव्व—ग, भूमिगव्व—ड । ६—लंदि वा ड ।

५६. \* आनतकरपनो कोई देव अटार सागरोपमना आयुपवाळो उत्पत्तिने प्रथम समये सर्वबन्धक होय, अने त्याथी च्यवीने वर्षपृथक्त्व आयुपपर्यन्त  
मनुष्यमा रहीने पुनः तेज आनत कल्पमा उत्पन्न थईने प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, तेथी सर्वबन्धनु जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्व अधिक अटार सागरोपम  
जाणवु—टीका.

५८. † अनुत्तरोपपातिकने विषे उत्कृष्ट सर्वबंधान्तर अने देशबंधान्तर संख्याता सागरोपम छे, कारण के त्याथी च्यवीने अनन्तकाल समारमा  
अभ्रमण करतो नथी—टीका.

६१. ‡ प्रश्ना० पद. २१ प. ४२३-१. पं-११.

त्रैवैयककल्पातीत.

अनुत्तरोपपातिक.

अल्पबहुत्व.

आहारकशरीरप्रयोगबन्ध.

आहारकशरीरप्रयोगबन्ध मनुष्य के ते शिवाय वीजांने होय

आहारक शरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी होय ?



૬૩. [પ્ર૦] આહારગત્સરીરપ્પયોગવંધે નં મંતે ! કિં દેસવંધે સદ્વંધે ? [૩૦] ગોયમા ! દેસવંધે ત્રિ સદ્વંધે ત્રિ ।

૬૪. [પ્ર૦] આહારગત્સરીરપ્પયોગવંધે નં મંતે ! કાલ્કો કેવલ્પિરં દોષ ? [૩૦] ગોયમા ! સદ્વંધે પર્કે સમયં, દેસવંધે જહ્ણણેણં અંતોમુદ્ધતં, ઉદ્ગોત્તેણ ચિ અંતોમુદ્ધતં ।

૬૫. [પ્ર૦] આહારગત્સરીરપ્પયોગવંધંતરં નં મંતે ! કાલ્કો કેવલ્પિરં દોષ ? [૩૦] ગોયમા ! સદ્વંધંતરં જહ્ણણેણં અંતોમુદ્ધતં, ઉદ્ગોત્તેણં અપંતં કાલ્ક—અપંતાઓ ઉત્તપ્પિર્ણા—ઓત્તપ્પિર્ણાઓ કાલ્કો, સેત્તઓ અંપંતા યોયા—અપદ્ધપોગત્તપ્પિર્ણં દેસૂણં । પવં દેસવંધંતરં પિ ।

૬૬. [પ્ર૦] ઇપ્પસિ નં મંતે ! જીવાણં આહારગત્સરીરપ્પસ દેસવંધમાણં, સદ્વંધમાણં, અવંધમાણં ચ કચરં કચરંદોઠો જાવ વિલેસાહિયા ચા ? [૩૦] ગોયમા ! સદ્વંધોચા જીવા આહારગત્સરીરપ્પસ સદ્વંધમા, દેસવંધમા સેરેજ્જુણા, અવંધમા અપંતગુણા ।

૬૭. [પ્ર૦] તેયાસરીરપ્પયોગવંધે નં મંતે ! કતિવિદે પ્પણ્ણત્તે ? [૩૦] ! ગોયમા પંચવિદે પ્પણ્ણત્તે, તં જહા—પાંચવિદે । યાસરીરપ્પયોગવંધે, વેદંદિયતેયાસરીરપ્પયોગવંધે, જાવ પાંચંદિયતેયાસરીરપ્પયોગવંધે ।

૬૮. [પ્ર૦] પ્પગિદિયતેયાસરીરપ્પયોગવંધે નં મંતે ! કતિવિદે પ્પણ્ણત્તે ? [૩૦] પવં ઇપ્પણં અમિલાવેણં મેદો ડદ્ધા ધોગાહ-ણસંદાણે, જાવ પ્પજ્જાસદ્ધસિદ્ધઅણુત્તરોવવાચ્ચકાપાતીતંધેમાણિયદેવપાંચંદિયતેયાસરીરપ્પયોગવંધે ચ, અપ્પજ્જાસદ્ધસિદ્ધ-અણુત્તરોવવાચ્ચ ૦ જાવ વંધે ચ ।

૬૯. [પ્ર૦] તેયાસરીરપ્પયોગવંધે નં મંતે કસ્સ કમસ્સ ઉદ્ધપણં ? [૩૦] ગોયમા ! વીરિય—સજોગ—સદ્ધયાણં જાવ આડયં ચ પટુચ્ચ તેયાસરીરપ્પયોગનામાપ કમસ્સ ઉદ્ધપણં તેયાસરીરપ્પયોગવંધે ।

૭૦. [પ્ર૦] તેયાસરીરપ્પયોગવંધે નં મંતે ! કિં દેસવંધે, સદ્વંધે ? [૩૦] ગોયમા ! દેસવંધે, નો સદ્વંધે ।

દેશવન્ધ અને સર્વ-  
વન્ધ.

૬૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આહારકારીરપ્પયોગવન્ધ ચું દેશવન્ધ છે કે સર્વવન્ધ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! દેશવન્ધ પપ છે, અને સર્વવન્ધ પપ છે.

આહારકારીરપ્પ-  
યોગવન્ધનો કાલ્ક.

૬૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આહારકારીરપ્પયોગવન્ધ કાલ્કથી કયા સુધી હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેનો સર્વવન્ધ એક સમ્યક, તેને દેશવન્ધ જવન્ધથી અન્તર્મુદ્ધતં અને ઉત્કટથી પળ અંતર્મુદ્ધતં સુધી હોય છે.

અન્તર.

૬૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આહારકારીરના પ્રયોગવન્ધનું અંતર કાલ્કથી કેટલું હોય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેના સર્વવન્ધનું અંતર જવન્ધથી અંતર્મુદ્ધતં, અને ઉત્કટથી કાલ્કની અપેક્ષા અનંતકાલ્ક—અનંત ઉર્મ્મપિર્ણા અને અવત્તપિર્ણા હોય છે. ક્ષેત્રથી અનંતકાલ્ક-વન્ધનું અર્થપુદ્ગલ પરાવર્તન છે. ૧ પ્રમાણે દેશવન્ધનું અન્તર પળ જાણવું.

દેશવન્ધક, સર્વવન્ધક  
અને અપવન્ધક  
અન્તરવન્ધ.

૬૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આહારકારીરના દેશવન્ધક, સર્વવન્ધક અને અવંધક જીવોમાં કયા જીવો કયા જીવોથી યાવદ્ વિનેયં વિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સૌથી યોદા જીવો આહારકારીરના સર્વવંધક છે, તેથી દેશવંધક ન્ણ્યાત ગુણા છે, અને તેથી અવંધક જીવો અનન્તગુણા છે.

તૈજસશરીરપ્પયોગ-  
વન્ધ.

૬૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તૈજસશરીરપ્પયોગવંધ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે, તે જ પ્રમાણે—૧ એકેન્દ્રિય તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ, ૨ દ્વીન્દ્રિય તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ, ૩ ત્રીન્દ્રિય તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ, યાવત્ ૫ પંચેન્દ્રિય તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ.

એકેન્દ્રિય.

૬૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એકેન્દ્રિયતૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] ૧ અમિલાપથી ૧ પ્રમાણે જેમ \*અવગાહનાસંસ્થાન'માં મેદ કહ્યો છે તેમ અહીં પણ કહેવો, યાવદ્ પર્યાપ્ત સર્વાર્થસિદ્ધ અનુચરૌપપાતિકા કલ્પાતીત વૈમાનિકા દેવપચેન્દ્રિ-તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ અને અપર્યાપ્તસર્વાર્થસિદ્ધ અનુચરૌપપાતિકા યાવદ્ તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ છે.

યાવત્ પર્યાપ્તસર્વાર્થ-  
સિદ્ધ.

૬૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ કયા કર્મના ઉદયથી થાય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વાર્થના, સયોગના અને સદ્ધ્યનાથી યાવદ્ આયુષ્યને આશ્રયી તૈજસશરીરપ્પયોગનામકર્મના ઉદયથી તૈજસશરીરનો પ્રયોગવન્ધ થાય છે.

તૈજસ શરીરપ્પયો-  
ગવન્ધ હયા કર્મના  
ઉદયથી ?

૭૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તૈજસશરીરપ્પયોગવન્ધ ચું દેશવન્ધ છે કે સર્વવન્ધ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! દેશવન્ધ છે પણ સર્વવન્ધ નથી.

દેશવન્ધ કે સર્વવન્ધ ?  
સર્વવન્ધ નથી

૧ -પ્પયોગવંધંતરે ના-વં-હ ।

૬૮. \* પ્રજા ૦ પટ. ૨૧. પ. ૪૨૬-૧. પ. ૩.

७१. [प्र०] तेयासरीरप्पओगवंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए ।

७२. [प्र०] तेयासरीरप्पओगवंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं ।

७३. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं तेयासरीरस्स देसवंधगाणं, अवंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्धत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अवंधगा, देसवंधगा अणंतगुणा ।

७४. [प्र०] कम्मासरीरप्पओगवंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! अट्टविहे पण्णत्ते, तं जहा-नाणावर-णिज्जकम्मासरीरप्पओगवंधे, जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पओगवंधे ।

७५. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! नाणपडिणीययाए जाणणिपहवणयाए, णाणंतराएणं, णाणप्पदोसेणं, णाणच्चासोयणयाए, णाणविसंवादणाजोगेणं णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओ-गनामाए कम्मस्स उदएणं णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगवंधे ।

७६. [प्र०] दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! दंसणपडिणी-ययाए, एवं जहा णाणावरणिज्जं, नवरं दंसणनामं वेत्तद्धं, जाव दंसणविसंवादणाजोगेणं दंसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं जाव पओगवंधे ।

७७. [प्र०] सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, एवं जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा० जाव वंधे ।

७१. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगवन्ध कालथी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! तैजसशरीरप्रयोगवन्ध वे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-१ अनादि अपर्यवसित अने २ अनादि सपर्यवसित.

तैजसशरीरप्रयोग-  
वन्धनो काल.

७२. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर कालथी क्या सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! अनादि अपर्यवसित अने अनादि सपर्यवसित ए वन्धे प्रकारना तैजसशरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर नथी.

तैजसशरीरप्रयोग-  
वन्धनु अन्तर.

७३. [प्र०] हे भगवन् ! ए तैजसशरीरना देशवन्धक अने अवन्धक जीवोमा क्या जीवो क्या जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! तैजसशरीरना अवन्धक जीवो सौथी थोडा छे, तेथी देशवन्धक जीवो अनन्तगुण छे.

७४. [प्र०] हे भगवन् ! कार्मणशरीरप्रयोगवन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध, यावद् अन्तरायकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध.

कार्मणशरीर प्रयोग-  
वन्ध.

७५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध क्या कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञाननी प्रत्यनी-कताथी, ज्ञाननो अपलप करवाथी, ज्ञाननो अन्तराय-विघ्न करवाथी, ज्ञाननो प्रद्वेष करवाथी, ज्ञाननो अत्यन्त आशातना करवाथी, ज्ञानना विसंवादन योगथी अने ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

ज्ञानावरणीय कार्म-  
णशरीर प्रयोगवन्ध  
क्या कर्मना उदयथी  
थाय छे ?

७६. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध क्या कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शननी जेम प्रत्यनीकताथी-इत्यादि जेम ज्ञानावरणीयना कारणो कह्या छे तेम दर्शनावरणीय माटे जाणवा; परन्तु [ज्ञानावरणीयस्थाने] 'दर्शनावरणीय' कहिये, यावद् दर्शन विसंवादनयोगथी, तथा दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

दर्शनावरणीयकार्म-  
णशरीरप्रयोगवन्ध.

७७. [प्र०] हे भगवन् ! सातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध क्या कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राणीओ उपर अनुकम्पा करवाथी, भूतो उपर अनुकंपा करवाथी-इत्यादि जेम \*सत्तम शतकना दुःपमा उद्देगकमा कह्युं छे तेम कहिये, यावद् तेओने परिताप नहि उत्पन्न करवाथी, अने सातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी सातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

सातावेदनीय.

७८. [प्र०] असायावेयणिज्ज-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! परदुक्कणयाण, परसोयणयाण, जहा सत्तमसण दुँस्समाउद्दमए, जाव परियावणयाण असायावेयणिज्जकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

७९. [प्र०] मोहणिज्जकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिद्धकोट्टयाण, तिद्धमाणयाण, तिद्धमाययाण, तिद्धलोमयाण, तिद्धदंसणमोहणिज्जयाण, तिद्धचरित्तमोहणिज्जयाण मोहणिज्जकम्मासरीरप्ययोग० जाव पयोगबंधे ।

८०. [प्र०] नेरइयाउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! महारंभयाण, महापरिग्गहयाण, कुणिमाहारेणं, पंचिदियवहंणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्ययोगनामाए कम्मस्त उदणं नेरइयाउयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८१. [प्र०] तिरिम्पजोणियाउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! माइहयाण, नियडिहयाण, अलियवयणेणं, कूडतुल-कूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

८२. [प्र०] मणुस्साउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पगइमइयाण, पगइविणीययाण, साणुकोसणयाण, अमच्छरियाए मणुस्साउयकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

८३. [प्र०] देवाउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, चालतयोक्कमेणं, अकामनिज्जराए देवाउयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८४. [प्र०] सुमनामकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! काउजुययाण, भावुजुययाण, मासुजुययाण, अविस्वादन-जोगेणं सुमनामकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८५. [प्र०] अशुभनामकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कायधणुजुययाण, जाव विसंवायणाजोगेणं अशुभनामकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

असातावेदनीय.

७८. [प्र०] हे भगवन् ! असातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! वीजाने दु ख देवार्थी, वीजाने शोक उत्पन्न करवार्थी-इत्यादि जेम \*सप्तम शतकना दु पमा उद्देशकमा कथुं छे तेम यावद् वीजाने परिताप उपजाववार्थी अने असातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी असातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

मोहनीय.

७९. [प्र०] हे भगवन् ! मोहनीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तीत्रकोट्ट करवार्थी, तीत्र मान करवार्थी, तीत्र माया (कपट) करवार्थी, तीत्र लोभ करवार्थी, तीत्र दर्शनमोहनीयथी, तीत्र चारित्रमोहनीयथी तथा मोहनीयकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मोहनीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

नारकायुप.

८०. [प्र०] हे भगवन् ! नारकायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! महाआरम्भथी, महापरिग्रहथी, मन्कल करवार्थी, पंचेन्द्रिय जीवोनी वध करवार्थी तथा नारकायुपकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी नारकायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

तिर्यंचयोनिकायुप.

८१. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! मायिकपणाथी, कपटीपणाथी, खोटुं बोलवार्थी, खोटा तोला अने खोटां मापथी तथा तिर्यंचयोनिकायुपकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी तिर्यंचयोनिकायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

मनुष्यायुप.

८२. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रकृतिनी मद्रताथी, प्रकृतिना विनोतपणाथी, दयाळुपणाथी, अमन्सरिपणाथी तथा मनुष्यायुपकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मनुष्यायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

देवायुप.

८३ [प्र०] देवायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सरागसंयमथी, संयमासंयम-(देवाविरति)थी, अज्ञानतपकर्मथी, अकामनिज्जराथी तथा देवायुपकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी देवायुपकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

शुभनाम.

८४. [प्र०] शुभनामकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी सरलनाथी, भावनी सरलनाथी, भाषानी सरलनाथी अने योगना अविस्वादनपणाथी-एकताथी तथा शुभनामकर्मणशरीरप्रयोगनाम कर्मना उदयथी यावत् प्रयोगवन्ध थाय छे.

अशुभनाम.

८५. [प्र०] अशुभनामकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी वक्रताथी, भावनी वक्रताथी, भाषानी वक्रताथी, अने योगना विस्वादनपणाथी-भिन्नताथी अशुभनामकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी यावत् प्रयोगवन्ध थाय छे.

\* ७८. भग० सं. ३. श. ७. ड ६ पृ २०. सू १६.

१ दसमोद्देश-क विनाऽन्यत्र । २ -सरीरप्ययोगबंधे णं भंते पुच्छा क विनाऽन्यत्र ।

८६. [प्र०] उच्चागोयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जातिभ्रमदेणं, कुलभ्रमदेणं, बलभ्रमदेणं, रूपभ्रमदेणं, तवभ्रमदेणं, सुयभ्रमदेणं, लाभभ्रमदेणं, इस्सरियभ्रमदेणं उच्चागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८७. [प्र०] नीयागोयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जातिभ्रमदेणं, कुलभ्रमदेणं, बलभ्रमदेणं, जाव इस्सरियभ्रमदेणं नीयागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८८. [प्र०] अंतराद्यकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दाणंतराएणं, लाभंतराएणं, भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं, वीरियंतराएणं अंतराद्यकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदयणं अंतराद्यकम्मासरीरप्पयोगबंधे ।

८९. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सध्वबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे, णो सध्वबंधे, एवं जाव अंतराद्ययं ।

९०. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! डुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव, एवं जाव अंतराद्ययस्स ।

९१. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अणाद्ययस्स, एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव, एवं जाव अंतराद्ययस्स ।

९२. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं, अवंधगाणं य कयरे कयरे० जाव ? [उ०] अप्पावहुगं जहा तेयगस्स, एवं आउयवज्जं जाव अंतराद्ययस्स ।

९३. [प्र०] औउयस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सध्वत्योवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अवंधगा संखेज्जगुणा ।

८६. [प्र०] उच्चगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जातिमद न करवाथी, कुलमद न करवाथी बलमद न करवाथी, रूपमद न करवाथी, तपमद न करवाथी, श्रुतमद न करवाथी, लाभमद न करवाथी अने ऐश्वर्यमद न करवाथी, तथा उच्चगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी उच्चगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

उच्चगोत्र.

८७. [प्र०] नीचगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जातिमद करवाथी, कुलमद करवाथी, बलमद करवाथी, यावद् ऐश्वर्यमद करवाथी तथा नीचगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी नीचगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

नीचगोत्र.

८८. [प्र०] अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! दाननो अन्तराय करवाथी, लाभनो अन्तराय करवाथी, भोगनो अन्तराय करवाथी, उपभोगनो अन्तराय करवाथी अने वीर्यनो अन्तराय करवाथी तथा अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे.

अन्तराय.

८९. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्धं शुं देशवन्ध छे के सर्ववन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशवन्ध छे, पण सर्ववन्ध नथी. ए प्रमाणे यावद् अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगवन्धं सुधी जाणवुं.

ज्ञानावरणीयनो देशवन्ध के सर्ववन्ध ?

९०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्धं कालथी कया सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्धं वे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे—अनादि सपर्यवसित (सान्त) अने अनादि अपर्यवसित (अनन्त). ए प्रमाणे यावत् जेम तैजस शरीरनो स्थितिकाल कह्यो छे तेम अहीं पण कहेवो, ए प्रमाणे यावद् अन्तराय कर्मनो स्थितिकाल जाणवो.

ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्धं पनो बाल.

९१. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगवन्धं अन्तर कालथी कया सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! अनादि अनंत अने अनादि सात छे. जे प्रमाणे तैजसशरीरप्रयोगवन्धं अन्तर कह्युं (सू. ७२.) ते प्रमाणे अहीं पण कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगवन्धं अन्तर जाणवुं.

ज्ञानावरणीयकर्मणशरीर प्रयोगवन्धं अन्तर.

९२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्मना देशवन्धक अने अन्धक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] जेम तैजस शरीरं अल्पबहुत्व कह्युं (सू. ७३.) तेम अहीं पण जाणवुं. ए प्रमाणे आयुपकर्म शिवाय यावत् अन्तराय कर्म सुधी जाणवुं.

देशवन्धक अने अन्धक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ?

९३. [प्र०] आयुपकर्म संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आयुपकर्मना देशवन्धक जीवो सौथी थोटा छे, अने तेनाथी अवंधक जीवो संख्यातगुण छे.

आयुपकर्मना देशवन्धक अने अवंधक जीवो संख्यातगुण.

૯૪. [પ્ર૦] જસ્ત પં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત સદ્વંધે સે પં મંતે ! વેડદ્વિયમ્સરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ! [૩૦] ગોયમા ! નો વંધપ, અવંધપ ।

૯૫. [પ્ર૦] આહારગસરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો વંધપ, અવંધપ ।

૯૬. [પ્ર૦] તેયાસરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! વંધપ, નો અવંધપ ।

૯૭. [પ્ર૦] જદ્ વંધપ કિ દેસવંધપ સદ્વંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! દેસવંધપ, નો સદ્વંધપ ।

૯૮. [પ્ર૦] કમ્માસરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ? [૩૦] જદ્દેવ તેયગસ્ત, જાવ દેસવંધપ, નો સદ્વંધપ ।

૯૯. [પ્ર૦] જસ્ત પં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત દેસવંધે સે પં મંતે ! વેડદ્વિયમ્સરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો વંધપ, અવંધપ । પવં જદ્દેવ સદ્વંધેણં મણિયં તદ્દેવ દેસવંધેણ ચિ માણિયદ્દં જાવ કમ્મગસ્ત ।

૧૦૦. [પ્ર૦] જસ્ત પં મંતે ! વેડદ્વિયમ્સરીરસ્ત સદ્વંધે સે પં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો વંધપ, અવંધપ । આહારગસરીરસ્ત પવં ચેવ, તેયગસ્ત કમ્મગસ્ત ય જદ્દેવ ઓરાલિપ્પં સમં મણિયં તદ્દેવ માણિયદ્દં જાવ દેસવંધપ, નો સદ્વંધપ ।

૧૦૧. [પ્ર૦] જસ્ત પં મંતે ! વેડદ્વિયમ્સરીરસ્ત દેસવંધે સે પં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો વંધપ, અવંધપ । પવં જદ્દેવ સદ્વંધેણં મણિયં તદ્દેવ દેસવંધેણ ચિ માણિયદ્દં જાવ કમ્મગસ્ત ।

૧૦૨. [પ્ર૦] જસ્ત પં મંતે ! આહારગસરીરસ્ત સદ્વંધે સે પં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત કિ વંધપ, અવંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો વંધપ, અવંધપ । પવં વેડદ્વિયસ્ત ચિ, તેયા-કમ્માણં જદ્દેવ ઓરાલિપ્પં સમં મણિયં તદ્દેવ માણિયદ્દં ।

### શરીરવન્ધનો પરસ્પર સંવન્ધ.

૯૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જે જીવને ઔદારિકશરીરનો સર્વવન્ધ છે તે જીવ શું વૈક્રિયશરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે વન્ધક નથી; પણ અવન્ધક છે.

૯૫. [પ્ર૦] ઔદારિકશરીરનો સર્વવન્ધક શું આહારકશરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વન્ધક નથી, પણ અવન્ધક છે.

૯૬. [પ્ર૦] તૈજસશરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે તૈજસશરીરનો વન્ધક છે પણ અવન્ધક નથી.

૯૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જો તે (તૈજસ શરીરનો) વન્ધક છે તો શું દેશવન્ધક છે કે સર્વવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે દેશવન્ધક છે, પણ સર્વવન્ધક નથી.

૯૮. [પ્ર૦] કાર્મણશરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તૈજસ શરીરની પેટે યાવત્ કાર્મણશરીરનો દેશવન્ધક છે પણ સર્વવન્ધક નથી.

૯૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને ઔદારિકશરીરનો દેશવન્ધ છે તે જીવ શું વૈક્રિયશરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વન્ધક નથી, પણ અવન્ધક છે. એ પ્રમાણે જેમ સર્વવન્ધના પ્રસંગે કહ્યું, તેમ અહીં દેશવન્ધના પ્રસંગે પણ યાવત્ કાર્મણ શરીર સુધી કહેવું.

૧૦૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જે જીવને વૈક્રિયશરીરનો સર્વવન્ધ છે તે જીવ શું ઔદારિકશરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વન્ધક નથી, પણ અવન્ધક છે. એ પ્રમાણે આહારકશરીર માટે પણ જાણવું, તૈજસ અને કાર્મણ શરીરને જેમ ઔદારિક શરીરની સાથે કહ્યું તેમ વૈક્રિયશરીરની સાથે પણ કહેવું, યાવત્ દેશવન્ધક છે પણ સર્વવન્ધક નથી.

૧૦૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જે જીવને વૈક્રિયશરીરનો દેશવન્ધ છે તે જીવ શું ઔદારિક શરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વન્ધક નથી, પણ અવન્ધક છે. એ પ્રમાણે જેમ [વૈક્રિયશરીરના] સર્વવંધના પ્રસંગે કહ્યું તેમ અહીં દેશવન્ધના પ્રસંગે પણ યાવત્ કાર્મણશરીર સુધી કહેવું.

૧૦૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જે જીવને આહારકશરીરનો સર્વવન્ધ હોય તે જીવ શું ઔદારિકશરીરનો વન્ધક છે કે અવન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વન્ધક નથી, પણ અવન્ધક છે. એ પ્રમાણે વૈક્રિયશરીરને પણ જાણવું. અને જેમ તૈજસ અને કાર્મણ શરીરને ઔદારિક શરીર સાથે કહ્યું તેમ [આહારક શરીર સાથે પણ] કહેવું.

ઔદારિક શરીરના સર્વવન્ધ સાથે વૈક્રિયશરીરવન્ધનો સવન્ધ.

આહારક શરીરવન્ધનો સવન્ધ.

તૈજસશરીરનો સવન્ધ.

દેશવન્ધક કે સર્વવન્ધક ?

કાર્મણશરીરનો સવન્ધ.

ઔદારિક શરીરના દેશવન્ધ સાથે વૈક્રિય શરીરનો સવન્ધ.

વૈક્રિય શરીરના સર્વવન્ધ સાથે ઔદારિક શરીરનો સવન્ધ.

દેશવન્ધ સાથે ઔદારિક શરીરવન્ધનો સવન્ધ.

આહારક શરીરના સર્વવન્ધ સાથે ઔદારિક શરીરવન્ધનો સવન્ધ.

१०३. [प्र०] जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स० ? [उ०] एवं जहा आहा-

रगस्स सच्चबंधेण भणियं तथा देसबंधेण वि भाणियद्धं, जाव कम्मगस्स ।

१०४. [प्र०] जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अवंधए ? [उ०]

गोयमा ! बंधए वा, अवंधए वा ।

१०५. [प्र०] जइ बंधए किं देसबंधए, सच्चबंधए ? [उ०] गोयमा ! देसबंधए वा सच्चबंधए वा ।

१०६. [प्र०] वेउद्धियसरीरस्स किं बंधए, अवंधए ? [उ०] एवं चेव, एवं आहारगसरीरस्स वि ।

१०७. [प्र०] कम्मगसरीरस्स किं बंधए, अवंधए ? [उ०] गोयमा ! बंधए, नो अवंधए ।

१०८. [प्र०] जइ बंधए किं देसबंधए, सच्चबंधए ? [उ०] गोयमा ! देसबंधए, नो सच्चबंधए ।

१०९. [प्र०] जस्स णं भंते ! कम्मसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालियस्स० ? [उ०] जहा तेयगस्स वत्तद्धया

भाणिया तथा कम्मगस्स वि भाणियद्धा, जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधए, नो सच्चबंधए ।

११०. [प्र०] एएसि णं भंते ! सच्चजीवाणं ओरालिय-वेउद्धिय-आहारग-तेया-कम्मसरीरगणं देसबंधगणं सच्चबंधगणं

अबंधगणं य कयरे कयरोहिंते जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सच्चत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सच्चबंधगा, तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा । वेउद्धियसरीरस्स सच्चबंधगा असंखेज्जगुणा, तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा । तेया-कम्मगणं अबंधगा अणंतगुणा दोण्ह वि तुल्ला । ओरालियसरीरस्स सच्चबंधगा अणंतगुणा, तस्स चेव अवंधगा विसेसाहिया, तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा । तेया-कम्मगणं देसबंधगा विसेसाहिया; वेउद्धियसरीरस्स अवंधगा विसेसाहिया, आहारगसरीरस्स अवंधगा विसेसाहिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

### अट्टमसए नवमो उद्देशो समत्तो ।

१०३. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने आहारक शरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम आहारक शरीरना सर्वबन्ध साथे कहुं छे तेम देशबन्धनी साथे पण यावत् कार्मणशरीर सुधी कहेवुं.

१०४. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने तैजसशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक पण छे अने अबन्धक पण छे.

१०५. [प्र०] जो ते जीव [ औदारिक शरीरनो ] बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्वबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देशबन्धक पण छे अने सर्वबन्धक पण छे.

१०६. [प्र०] ते जीव शुं वैक्रियशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणहुं, ए प्रमाणे आहारक शरीर माटे पण जाणहुं.

१०७. [प्र०] ते जीव शुं कार्मण शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक छे, पण अबन्धक नथी.

१०८. [प्र०] जो [ कार्मण शरीरनो ] बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्वबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी.

१०९. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने कार्मणशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिकनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] जेम तैजसशरीरनी वक्तव्यता कही, तेम कार्मण शरीरनी पण वक्तव्यता कहेवी, यावत् तैजसशरीरनो देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी.

११०. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मणशरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धक एवा सर्व जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! १ सौथी थोडा जीवो आहारक शरीरना सर्वबन्धक छे, २ तेथी तेना देशबन्धक संख्यातगुणा छे, ३ तेथी वैक्रियशरीरना सर्वबन्धक असंख्यातगुणा छे, ४ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्यातगुणा छे, ५ तेथी तैजस अने कार्मण शरीरना अबन्धक जीवो अनंतगुण अने परस्पर तुल्य छे. ६ तेथी औदारिक शरीरना सर्वबन्धक जीवो अनंत गुण छे, ७ तेथी तेना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ८ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्येयगुणा छे, ९ तेथी तैजस अने कार्मण शरीरना देशबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, १० तेथी वैक्रिय शरीरना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ११ तेथी आहारक शरीरना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे [ एम कही भगवान् गौतम ! यावत् विहरे छे. ]

### अष्टम शतके नवम उद्देशक समाप्त.

आहारक शरीरना देशबन्ध साथे औदारिक शरीरनो सबन्ध तैजस शरीरना देशबन्ध साथे औदारिक शरीरनो सबन्ध औदारिक शरीरनो देशबन्धक के सर्वबन्धक ?

वैक्रियशरीरनो बन्धक के अबन्धक ?

कार्मण शरीरनो बन्धक के अबन्धक ?

देशबन्धक के सर्वबन्धक ?

कार्मण शरीरना देशबन्धक साथे औदारिक शरीरबन्धनो सबन्ध.

शरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनु अव्यवहार.

## दसमो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी, अन्नउत्थिया णं भंते ! एवं आदक्खंति, जाव एवं परुवेति—“एवं खलु १ सीलं सेयं, २ सुयं सेयं, ३ सुयं सेयं, सीलं सेयं;” से कहमेयं भंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवं आदक्खंति, जाव जे ते एवं आहंसु, मिच्छा ते एवं आहंसु; अहं पुण गोयमा ! एवं आदक्खामि, जाव परुवेमि—एवं खलु मय चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तं जहा—१ सीलसंपन्ने णामं एगे णो सुयसंपन्ने, २ सुयसंपन्ने नामं एगे नो सीलसंपन्ने, ३ एगे सीलसंपन्ने त्रि सुयसंपन्ने वि, ४ एगे णो सीलसंपन्ने नो सुयसंपन्ने । तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाय से णं पुरिसे सीलवं असुयवं; उचरण, अविनायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे देसाराहय पन्नत्ते । तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाय से णं पुरिसे असीलवं सुयवं; अणुवरण, विनायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे देसविराहय पन्नत्ते । तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाय से णं पुरिसे सीलवं सुयवं; उचरण, विनायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे सव्वाराहय पन्नत्ते । तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाय से णं पुरिसे असीलवं असुयवं; अणुवरण, अविण्णायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे सव्वविराहय पन्नत्ते ।

२. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! आराहणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—नाणा-राहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा ।

## दशम उद्देशक.

१. [प्र०] \*राजगृह नगरमा यावद् [ गौतम ] ए प्रमाणे वोच्या के हे भगवन् ! अन्यतीर्थिको ए प्रमाणे कहे छे, यावद् प्रमाणे प्ररूपे छे—“ए रीते खरेखर १ गौतम ज श्रेय छे, २ श्रुत ज श्रेय छे, ३ [ शीलनिरपेक्ष ज ] श्रुत श्रेय छे, अथवा [ श्रुतनिरपेक्ष ज ] शील श्रेय छे, तो हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होइ अके ? [उ०] हे गौतम ! ते अन्यतीर्थिको जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत् तेओर जे ए प्रमाणे कर्तुं छे ते तेओए मिथ्या कर्तुं छे. हे गौतम ! हुं वळी आ प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं, ए प्रमाणे में चार प्रकारना पुरुषो कर्ता छे, ते आ प्रमाणे—१ एक शीलसंपन्न छे पण श्रुतसंपन्न नथी, २ एक श्रुतसंपन्न छे पण शीलसंपन्न नथी, ३ एक शीलसंपन्न छे अने श्रुतसंपन्न पण छे, ४ एक शीलसंपन्न नथी तेम श्रुतसंपन्न पण नथी. तेमां जे प्रथम प्रकारनो पुरुष छे ते शीलवान् छे पण श्रुतवान् नथी. ते उपरत ( पापादिकथी निवृत्त ) छे, पण धर्मने जाणतो नथी. हे गौतम ! ते पुरुषने में देशाराधक कस्यो छे. तेमा जे बीजो पुरुष छे ते पुरुष शीलवाळो नथी, पण श्रुतवाळो छे. ते पुरुष अनुपरत ( पापथी अनिवृत्त ) छनां पण धर्मने जाणे छे. हे गौतम ! ते पुरुषने में देवविराधक कस्यो छे. तेमा जे त्रीजो पुरुष छे ते शीलवाळो छे अने श्रुतवाळो पण छे. ते पुरुष [ पापथी ] उपरत छे अने धर्मने जाणे छे. हे गौतम ! ते पुरुषने में सर्वाराधक कस्यो छे. तेमां जे चोथो पुरुष छे ते शीलथी अने श्रुतथी रहित छे, ते पापथी उपरत नथी अने धर्मथी अज्ञान छे. हे गौतम ! ए पुरुषने हुं सर्वविराधक कहुं छुं.

## आराधना.

२. [प्र०] हे भगवन् ! आराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी आराधना कही छे; ते आ प्रमाणे—१ ईशानाराधना, २ दर्शनाराधना अने ३ चारित्राराधना.

१. \* केटला एक अन्यतीर्थिको एम माने छे के शील—प्राणनिपातादि निरमणस्य क्रिया मात्र श्रेय छे, ज्ञानसुं कंड पण प्रयोजन नथी, केमने ते चेद्वारहित छे बीजा ज्ञानमात्रथी पटसिद्धि माने छे, चारण के ज्ञानरहित क्रियावाळने फलसिद्धि बर्ता नथी, तेथी तेओर कहे छे के श्रुत—ज्ञानज श्रेय छे. अन्न परसर निरपेक्ष श्रुत अने शीलथी धर्माध्यक्षिद्धि माने छे—एटले तेओर क्रियारहित ज्ञान, अथवा ज्ञानरहित क्रियाथी धर्माध्यक्षिद्धि माने छे, केमके बधेनांग प्रत्येक पुरुषनी पवित्रतासुं धारण छे. तेथी एम कहे छे के ३ शील अथवा ४ श्रुत श्रेय छे.—टीका.

२. † १ ईशानाराधना—योगनकाले अर्घ्यदान, निवेद्य, बहुमान—इत्यादि अष्टविध ज्ञानाचारसुं निरतिचारपणे परिपालन करसुं. २ दर्शनाराधना—दर्शन एटले सम्बन्ध, देना नि.शक्तिनादि आठ प्रकारना आचारसुं पालन करसुं. ३ चारित्राचार—निरतिचारपणे पंचसमित्तादि चारित्राचारसुं पालन.

‘श्रीरुद्र श्रेय छे’ इत्यादि अन्न तीर्थिकोसुं मन्त्रव्य.

‘शीलसंपन्न छे पा श्रुतसंपन्न नथी’—इत्यादि चतुर्भगी

देशाराधक.

देवविराधक.

सर्वाराधक.

सर्वविनायक.

नगनाना प्रकार.

३. [प्र०] णाणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-उक्कोसिया, मज्झिमा, अहण्णा ।

४. [प्र०] दंसणाराहणा णं भंते कतिविहा ? [उ०] एवं चेव तिविहा वि, एवं चरित्ताराहणा वि ।

५. [प्र०] जस्स णं भंते ! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा, जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? [उ०] गोयमा ! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा अजहच्चुक्कोसा वा; जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स णाणाराहणा उक्कोसा वा, जहन्ना वा, अजहन्नमणुक्कोसा वा ।

६. [प्र०] जस्स णं भंते उक्कोसिआ णाणाराहणा तस्स उक्कोसिआ चरित्ताराहणा, जस्सुक्कोसिआ चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिआ णाणाराहणा ? [उ०] जहा उक्कोसिआ णाणाराहणा य दंसणाराहणा य भणिया तथा उक्कोसिआ णाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणियद्वा ।

७. [प्र०] जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा, जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? [उ०] गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा, जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा; जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा ।

८. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति, जाव अंतं करेति ? [उ०] गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, जाव अंतं करेति; अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति, जाव अंतं करेति; अत्थेगतिए कप्पोवपसु वा कप्पातीपसु वा उचवज्जति ।

९. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं० ? [उ०] एवं चेव ।

१०. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता० ? [उ०] एवं चेव, नवरं अत्थेगतिए कप्पातीपसु उचवज्जति ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानाराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-उत्कृष्ट, मध्यम अने जघन्य. ज्ञानाराधना.

४. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनाराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] ए प्रमाणे त्रण प्रकारनी कही छे. ए रीते चारित्रा- दर्शनाराधना.  
राधना पण त्रण प्रकारनी जाणवी.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ? जे जीवने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ते जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट अने मध्यम दर्शनाराधना होय, वळी जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट, जघन्य अने मध्यम ज्ञानाराधना होय. उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट दर्शनाराधनानो सबन्ध.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने ज्ञाननी उत्कृष्ट आराधना होय तेने चारित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय ? जे जीवने चारित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय तेने ज्ञाननी उत्कृष्ट आराधना होय ? [उ०] जेम उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने दर्शनाराधनानो संबन्ध कह्यो तेम उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध कह्यो. उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट चारित्रा- राधनानो संबन्ध.

७. [प्र०] हे भगवन् ! जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय ? जेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय तेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट, जघन्य अने मध्यम चारित्राराधना होय. तथा जेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय तेने अवश्य उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय. उत्कृष्ट दर्शनाराधना अने उत्कृष्ट चारित्रा- राधनानो संबन्ध.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्कृष्ट ज्ञानाराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे ? [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीवो तेज भवमा सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे, केटलाक जीवो वे भवमा सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे; अने केटलाक जीवो कल्पोपपन्न देवलोकोमा अथवा कल्पातीत देवलोकोमा उत्पन्न थाय. उत्कृष्ट ज्ञानाराधना केटला भव पछी मोक्षे जाय ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्कृष्ट दर्शनाराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेटे जाणवुं. उत्कृष्ट दर्शनाराधना क्यारे मोक्षे जाय ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! उत्कृष्ट चारित्राराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी जीवो सिद्ध थाय ? [उ०] पूर्वनी पेटे जाणवुं, परन्तु केटलाक जीवो कल्पातीत देवोमां उत्पन्न थाय उत्कृष्ट चारित्राराधना क्यारे मोक्षे जाय ?



૧૧. [પ્ર૦] મજ્જિમિયં ણં મંતે ! ણાણારાહણં આરાહેત્તા કતિહિં ભવગ્ગહરોહિં સિજ્જતિ, જાવ અંતં કરેતિ ! [૩૦] ગોયમા ! અત્યેગતિય દોષ્ણેણં ભવગ્ગહરોણં સિજ્જહ, જાવ અંતં કરેતિ; તથાં પુણ ભવગ્ગહરણં નાહકમહ ।

૧૨. [પ્ર૦] મજ્જિમિયં ણં મંતે ! દંસણારાહણં આરાહેત્તાં ? [૩૦] એવં ચેવ, એવં મજ્જિમિયં ચરિત્તારાહણં પિ ।

૧૩. [પ્ર૦] જહન્નિયં ણં મંતે ! નાણારાહણં આરાહેત્તા કતિહિં ભવગ્ગહરોહિં સિજ્જતિ, જાવ અંતં કરેતિ ! [૩૦] ગોયમા ! અત્યેગતિય ત્થેણં ભવગ્ગહરોણં સિજ્જહ, જાવ અંતં કરેહ; સત્ત-ટ્ટ ભવગ્ગહરોણં પુણ નાહકમહ । એવં દંસણારાહણં પિ, એવં ચરિત્તારાહણં પિ ।

૧૪. [પ્ર૦] કતિવિહે ણં મંતે ! પોગ્ગલપરિણામે પન્નત્તે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહે પોગ્ગલપરિણામે પ્ણત્તે, તં જહા-વન્નપરિણામે, ગંધપરિણામે, રસપરિણામે, ફાસપરિણામે, સંઠાણપરિણામે ।

૧૫. [પ્ર૦] વન્નપરિણામે ણં મંતે ! કહ્વિહે પ્ણત્તે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહે પ્ણત્તે, તં જહા-કાલવન્નપરિણામે, જાવ સુક્કિલ્લવન્નપરિણામે । એવં પ્ણં અભિલાલેણં ગંધપરિણામે દુવિહે, રસપરિણામે પંચવિહે, ફાસપરિણામે અટ્ટવિહે ।

૧૬. [પ્ર૦] સંઠાણપરિણામે ણં મંતે ! કહ્વિહે પ્ણત્તે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહે પ્ણત્તે, તં જહા-પરિમંડલસંઠાણપરિણામે, જાવ આયતસંઠાણપરિણામે ।

૧૭. [પ્ર૦] એ મંતે ! પોગ્ગલત્થિકાયપ્પસે કિં દઘ્ઠં, દઘ્ઠદેસે, દઘ્ઠાઈં, દઘ્ઠદેસા; ઉદાહુ દઘ્ઠં ચ દઘ્ઠદેસે ય, ઉદાહુ દઘ્ઠં ચ દઘ્ઠદેસા ય, ઉદાહુ દઘ્ઠાઈં ચ દઘ્ઠદેસે ય, ઉદાહુ દઘ્ઠાઈં ચ દઘ્ઠદેસા ય ? [૩૦] ગોયમા ! સિય દઘ્ઠં, સિય દઘ્ઠદેસે; નો દઘ્ઠાઈં, નો દઘ્ઠદેસા, નો દઘ્ઠં ચ દઘ્ઠદેસે ય, જાવ નો દઘ્ઠાઈં ચ દઘ્ઠદેસા ય ।

૧૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્ઞાનની મધ્યમ આરાધનાને આરાધી કેટલા ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી જીવ સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વ દુઃખોનો અન્ત કરે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કેટલાક જીવો વે ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વદુઃખોનો નાશ કરે, પણ ત્રીજા ભવને અતિક્રમે નહીં.

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જીવ મધ્યમ દર્શનારાધનાને આરાધી કેટલા ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી સિદ્ધ થાય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પૂર્વનો પેઠે જાણવું. એ પ્રમાણે ચારિત્રની મધ્યમ આરાધનાને માટે જાણવું.

૧૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જઘ્ન્ય જ્ઞાનારાધનાને આરાધી જીવ કેટલા ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વદુઃખોનો અન્ત કરે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કેટલાક જીવ ત્રીજા ભવમા સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વદુઃખોનો અન્ત કરે, પણ સાત આઠ ભવથી વધારે નથી કરે. એ પ્રમાણે દર્શનારાધના અને ચારિત્રારાધના માટે પણ જાણવું.

### પુદ્ગલપરિણામ.

૧૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પુદ્ગલનો પરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે; તે આ પ્રમાણે,—વર્ણપરિણામ, ગન્ધપરિણામ, રસપરિણામ, સ્પર્શપરિણામ અને સંસ્થાનપરિણામ.

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વર્ણપરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—૧ કાલોવર્ણપરિણામ, યાવત્ ૫ શુક્લવર્ણપરિણામ. એ પ્રમાણે એ અભિલાપથી વે પ્રકારનો ગન્ધપરિણામ, પાંચ પ્રકારનો રસપરિણામ, અને આઠ પ્રકારનો સ્પર્શપરિણામ જાણવો.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સંસ્થાનપરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—૧ પરિમંડલ સંસ્થાનપરિણામ, યાવત્ ૫ આયત સંસ્થાનપરિણામ.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પુદ્ગલસ્થિકાયનો એક પ્રદેશ (પરમાણુ) ૧ શું દ્રવ્ય છે, ૨ દ્રવ્યદેશ છે, ૩ દ્રવ્યો છે, ૪ દ્રવ્યદેશો છે, ૫ અથવા દ્રવ્ય અને દ્રવ્યદેશ છે, ૬ અથવા દ્રવ્ય અને દ્રવ્યદેશો છે, ૭ અથવા દ્રવ્યો અને દ્રવ્યદેશ છે, ૮ કે દ્રવ્યો અને દ્રવ્યદેશો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે કયંચિદ્ દ્રવ્ય છે, કયંચિદ્ દ્રવ્યદેશ છે, પણ દ્રવ્યો નથી, દ્રવ્યદેશો નથી, દ્રવ્ય અને દ્રવ્યદેશ નથી, યાવત્ દ્રવ્યો અને દ્રવ્યદેશો નથી.

१८. [प्र०] दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा किं दधं, दधदेसे—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय दधं, सिय दधदेसे, सिय दध्वाइं, सिय दधदेसा; सिय दधं च दधदेसे य, नो दधं च दधदेसा य; सेसा पडिसेहेयवा ।
१९. [प्र०] तिन्नि भंते ! पोग्गलत्थिकायपयसा किं दधं दधदेसे—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय दधं, सिय दधदेसे, एवं सत्त भंगा भाणियवा, जाव सिय दध्वाइं च दधदेसे य, नो दध्वाइं च दधदेसा य ।
२०. [प्र०] चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा किं दधं—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय दधं, सिय दधदेसे; अट्ट वि भंगा भाणियवा, जाव सिय दध्वाइं च दधदेसा य; जहा चत्तारि भणिया एवं पंच, छ, सत्त, जाव असंखेजा ।
२१. [प्र०] अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा किं दधं ? [उ०] एवं चेव, जाव सिय दध्वाइं च दधदेसा य ।
२२. [प्र०] केवतिया णं भंते ! लोयागासपपसा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंखेजा लोयागासपपसा पन्नत्ता ।
२३. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स केवइया जीवपपसा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! जावतिया लोयागासपपसा, एगमेगस्स णं जीवस्स एवतिया जीवपपसा पणत्ता ।
२४. [प्र०] कैत्ति णं भंते ! कम्मपगडीओ पणत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मपगडीओ पणत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं, जाव अंतराइयं ।
२५. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कत्ति कम्मपगडीओ पणत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट, एवं सव्वजीवाणं अट्ट कम्मपगडीओ टावेयवाओ जाव वेमाणियाणं ।
२६. [प्र०] नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पणत्ता ।

१८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना वे प्रदेशो शुं द्रव्यं छे के द्रव्यदेश छे ? इत्यादि पूर्वोक्त प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कथंचित् द्रव्यं छे, २ कथंचित् द्रव्यदेश छे, ३ कथंचित् द्रव्यो छे, ४ कथंचित् द्रव्यदेशो छे, ५ कथंचित् द्रव्यं अने द्रव्यदेश छे, पण द्रव्यं अने द्रव्यदेशो नथी, वाकीना विकल्पो नो प्रतिषेध करवो. वे प्रदेशो.
१९. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना त्रण प्रदेशो शुं द्रव्यं छे, द्रव्यदेश छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ कथंचित् द्रव्यं छे, २ कथंचित् द्रव्यदेश छे, ए प्रमाणे सात भांगाओ कहेवा, यावत् कथंचित् द्रव्यो अने द्रव्यदेश छे, पण द्रव्यो अने द्रव्यदेशो नथी. त्रण प्रदेशो.
२०. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना चार प्रदेशो शुं द्रव्यं छे ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ कथंचित् द्रव्यं छे, २ कथंचित् द्रव्यदेश छे—इत्यादि आठ भागा कहेवा, यावत् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे, जेम चार प्रदेशो कहा तेम पांच, छ, सात यावद् असंख्येय प्रदेशो पण कहेवा. चार प्रदेशो.
२१. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना अनन्त प्रदेशो शुं द्रव्यं छे ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणेज जाणतुं, यावत् कथंचित् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे. अनन्त प्रदेशो.
२२. [प्र०] हे भगवन् ! लोकाकाशना प्रदेशो केटला कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्य प्रदेशो कहा छे. लोकाकाशना प्रदेशो.
२३. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवना केटला जीवप्रदेशो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! केटला लोकाकाशना प्रदेशो कहा छे तेटला एक एक जीवना प्रदेशो कहा छे. एक जीवना प्रदेशो.
२४. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटली कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—ज्ञाना-रणीय, यावद् अन्तराय. कर्मप्रकृति.
२५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ए प्रमाणे सर्वजीवोने यावद् वैमानिकोने आठ कर्मप्रकृतिओ कहेवीं. नैरयिकोने यावद् वैमानिकोने कर्मप्रकृति.
२६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मना केटला अविभाग परिच्छेदो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त \*अविभागपरिच्छेदो कहा छे. ज्ञानावरणीय कर्मना अविभाग परिच्छेद-

१ पुच्छा त्थेव क । २ पृतावतिया म । ३ कइविहा णं छ ।

२६. \* जेना केवलज्ञानिनी प्रज्ञावी पण विभाग न कल्पी शकाय एवा सूक्ष्म अशोने अविभागपरिच्छेद कहेवाव छे. ते कर्मपरमाणुओनी अपेक्षाए अथवा ज्ञानना जेतला अविभाग परिच्छेदोनुं आच्छादन करुं छे तेनी अपेक्षाए अनन्त छे.—टीका.

२७. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! पाणावरणिजस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता; एवं सङ्गजीवाणं, जाव-[प्र०] वेमाणियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता, एवं जहा पाणावरणिजस्स अविभागपलिच्छेदा भाणिया तदा अट्टुण्ण वि कम्मपगडीणं भाणियदा, जा वेमाणियाणं अंतराइयस्स ।

२८. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपप्से पाणावरणिजस्स कम्मस्स केवटिपहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेदिय-परिवेदिए ? [उ०] गोयमा ! सिय आवेदिय-परिवेदिए, सिय नो आवेदिय-परिवेदिए; जइ आवेदिय-परिवेदिए नियमा अणंतेहिं ।

२९. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपप्से पाणावरणिजस्स कम्मस्स केवटिपहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेदिय-परिवेदिए ? [उ०] गोयमा ! नियमं अणंतेहिं, जहा नेरइयस्स एवं जाव वेमाणियस्स. नवरं मणुसस्स जहा जीवस्स ।

३०. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपप्से दरिसणावरणिजस्स कम्मस्स केवटिपहिं ? [उ०] एवं जहेव पाणावरणिजस्स तहेव दंडगो भाणियदो जाव वेमाणियस्स; एवं जाव अंतराइयस्स भाणियधं, नवरं वेयणिजस्स, आयस्स, णामस्स, गोयस्स-एणंसि चउण्ण वि कम्माणं मणुसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियधं, सेसं तं चेव ।

३१. [प्र०] जस्स णं भंते ! पाणावरणिजं तस्स दरिसणावरणिजं, जस्स दंसणावरणिजं तस्स पाणावरणिजं ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं पाणावरणिजं तस्स दंसणावरणिजं नियमं अत्थि, जस्स णं दरिसणावरणिजं तस्स वि पाणावरणिजं नियमं अत्थि ।

३२. [प्र०] जस्स णं भंते ! पाणावरणिजं तस्स वेयणिजं, जस्स वेयणिजं तस्स पाणावरणिजं ? [उ०] गोयमा ! जस्स पाणावरणिजं तस्स वेयणिजं नियमं अत्थि, जस्स पुण वेयणिजं तस्स पाणावरणिजं सिय अत्थि, सिय नत्थि ।

नैरयिक- २७. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने ज्ञानावरणीयकर्मना अविभागपरिच्छेदो केटला कत्था छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त अविभागपरिच्छेदो कत्था छे. ए प्रमाणे सर्वजीवोने—जाणवुं; यावद् [प्र०] वैमानिको संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! अनन्त अविभागपरिच्छेदो कत्था छे. जेम ज्ञानावरणीय कर्मना अविभागपरिच्छेदो कत्था तेम आठे कर्मप्रकृतिना अविभागपरिच्छेदो अन्तरायकर्म पर्यन्त याम्बु वैमानिकोने कहेवा.

जीवनो एक एक प्रदेश केटला ज्ञानावरणीय कर्मना परिच्छेदोयी आवेदित छे ? २८. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवनो एक एक जीवप्रदेश ज्ञानावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो आवेदित-परिवेदित छे ? [उ०] हे गौतम ! कदाचित् आवेदित-परिवेदित होय, अने कदाचित् आवेदित-परिवेदित न होय। आवेदित-परिवेदित होय तो ते अवश्य अनन्त अविभागपरिच्छेदो वडे आवेदित-परिवेदित होय.

एक एक नैरयिकोने एक एक जीवप्रदेश २९. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिक जीवनो एक एक जीवप्रदेश ज्ञानावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो वडे आवेदित-परिवेदित होय ? [उ०] हे गौतम ! अवश्य ते अनन्त अविभागपरिच्छेदो वडे आवेदित-परिवेदित होय. जेम नैरयिको मटे कहुं तेम यावद् वैमानिकोने कहेवुं, परन्तु मनुष्यने जीवनी पेटे कहेवु.

दर्शनावरणीयना केटला परिच्छेदोयी वेदित छे ? ३०. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवनो एक एक जीव प्रदेश दर्शनावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो वडे आवेदित-परिवेदित होय ? [उ०] जेम ज्ञानावरणीय कर्मना संबन्धे दंडक कत्थो तेम अहीं पण यावद् वैमानिकने कहेवो, यावत् अन्तरायकर्म पर्यन्त कहेवुं. पण वेदनीय, आयुप्, नाम अने गोत्र—ए चार कर्मो मटे जेम नैरयिकोने कहुं तेम मनुष्योने कहेवुं, वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीयनो संबन्ध- ३१. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने शुं दर्शनावरणीय कर्म छे, जेने दर्शनावरणीय कर्म छे तेने शुं ज्ञानावरणीय कर्म छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने अवश्य दर्शनावरणीय होय छे, जेने दर्शनावरणीय छे तेने पण अवश्य ज्ञानावरणीय होय छे.

ज्ञानावरणीय अने वेदनीयनो संबन्ध- ३२. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ज्ञानावरणीय छे, तेने शुं वेदनीय होय छे, जेने वेदनीय छे तेने ज्ञानावरणीय होय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने अवश्य वेदनीय होय छे, अने जेने वेदनीय छे तेने ज्ञानावरणीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय.

२८. \* केवलजानिनी अपेक्षाए आवेदित-परिवेदित न होय, केनेके तेने ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण थयेलुं होवाथी ज्ञानावरणीयना अविभागपरिच्छेदो वडे तेना प्रदेशोने परिवेदित होवु नथी, अने इतर जीवोना प्रदेशो अनन्त अविभागपरिच्छेदोयी परिवेदित छे,—टीना.

३३. [प्र०] जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं, जस्स मोहणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं ? [उ०] गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ।

३४. [प्र०] जस्स णं भंते ! णाणावरणिज्जं तस्स आउयं ? [उ०] एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तहा आउएण वि समं भाणियधं, एवं नामेण वि, एवं गोएण वि समं; अंतराएण समं जहा दरिस्सणावरणिज्जेण समं तद्देव नियमं परोप्परं भाणियघाणि ।

३५. [प्र०] जस्स णं भंते ! दरिस्सणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं, जस्स वेयणिज्जं तस्स दरिस्सणावरणिज्जं ? [उ०] जहा णाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भणियं तहा दरिस्सणावरणिज्जं पि उवरिमेहिं छाहिं कम्मेहिं समं भाणियधं, जाव अंतराइएणं ।

३६. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं, जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? [उ०] गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ।

३७. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स आउयं ? [उ०] एवं एयाणि परोप्परं नियमं, जहा आउएण समं एवं नामेण वि गोएण वि समं भाणियधं ।

३८. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ।

३९. [प्र०] जस्स णं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं, जस्स णं भंते ! आउयं तस्स मोहणिज्जं ? [उ०] गोयमा जस्स मोहणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स पुण मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; एवं नामं गोयं अंतराइयं च भाणियधं ।

४०. [प्र०] जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दो वि परोप्परं नियमं, एवं गोत्तेण वि समं भाणियधं ।

३३. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने शु मोहनीय छे, जेने मोहनीय छे तेने ज्ञानावरणीय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने मोहनीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने मोहनीय छे तेने अवश्य ज्ञानावरणीय कर्म नथी. ।

ज्ञानावरणीय अने मोहनीय कर्मनो संवध.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने शु आयुप् कर्म छे ?-इत्यादि [उ०] जेम वेदनीय कर्म साथे कहुं तेम आयुपनी साथे पण कहेहुं. ए प्रमाणे नाम अने गोत्र कर्मनी साथे पण जाणहुं. जेम दर्शनावरणीय साथे कहुं तेम अन्तराय कर्म साथे अवश्य परस्पर कहेहुं.

ज्ञानावरणीय अने आयुपकर्मनो संवध.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! जेने दर्शनावरणीयकर्म छे तेने शु वेदनीय छे, जेने वेदनीय छे तेने दर्शनावरणीय छे ? [उ०] जेम ज्ञानावरणीय कर्म उपरना सात कर्मों साथे कहुं छे तेम दर्शनावरणीय कर्म पण उपरना छ कर्मों साथे कहेहुं, अने ए प्रमाणे यावद् अन्तराय कर्म साथे कहेहुं.

दर्शनावरणीय अने वेदनीयनो संवध.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय छे तेने शु मोहनीय छे, जेने मोहनीय छे तेने वेदनीय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने वेदनीय छे, तेने मोहनीय कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने मोहनीय छे तेने अवश्य वेदनीय छे.

वेदनीय अने मोहनीयनो संवध.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय छे तेने शु आयुप् कर्म होय ? [उ०] ए प्रमाणे ए वने परस्पर अवश्य होय. जेम आयुपनी साथे कहुं तेम नाम अने गोत्रनी साथे पण कहेहुं.

वेदनीय अने अन्तरायनो संवध.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय कर्म छे तेने शु अन्तराय होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने वेदनीय छे तेने अन्तराय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य वेदनीय कर्म होय.

वेदनीय अने अन्तरायनो संवध.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जेने मोहनीय छे तेने शु आयुप् होय, जेने आयुप् छे तेने शु मोहनीय होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने मोहनीय छे तेने अवश्य आयुप् होय, जेने आयुप्य छे तेने मोहनीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. ए प्रमाणे नाम, गोत्र अने अन्तरायकर्म कहेहुं.

मोहनीय अने आयुपनो संवध.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जेने आयुप् कर्म छे तेने नाम कर्म होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते वने परस्पर अवश्य होय, ए प्रमाणे गोत्र साथे पण कहेहुं.

आयुप अने नामकर्मनो संवध.

४१. [प्र०] जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अंतराइयं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अंतराइयं मिय अत्थिय, सिय नत्थिय; जस्स पुण अंतराइयं तस्स आउयं नियमं अत्थिय ।

४२. [प्र०] जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोयं, जस्स णं गोयं तस्स णं णामं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स णं णामं तस्स नियमा गोयं, जस्स णं गोयं तस्स नियमा नामं; दो वि एए परोण्णरं नियमा अत्थिय ।

४३. [प्र०] जस्स णं भंते ! णामं तस्स अंतराइयं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स नामं तस्स अंतराइयं सिय अत्थिय, सिय नत्थिय; जस्स पुण अंतराइयं तस्स णामं नियमा अत्थिय ।

४४. [प्र०] जस्स णं भंते ! गोयं तस्स अंतराइयं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स णं गोयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थिय, सिय नत्थिय; जस्स पुण अंतराइयं तस्स गोयं नियमं अत्थिय ।

४५. [प्र०] जीवे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? [उ०] गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘जीवे पोग्गली वि पोग्गले वि’ ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेणं दंडी, घट्टेणं घटी, पडेणं पटी, करेणं करी, एवामेवं गोयमा ! जीवे वि सोइंदिय-चिंत्तिय-धाणिय-जिंमिय-फासिदियाइं पडुइ पोग्गली, जीवं पडुइ पोग्गले; से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि’ ।

४६. [प्र०] नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणिए, नयरं जस्स जइ इंदियाइं तस्स वा वि माणियव्वाइं ।

४७. [प्र०] सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? [उ०] गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘जाव पोग्गले’ ? [उ०] गोयमा ! जीवं पडुइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले । सेवं भंते ! सेवं भंते ! चि ।

अट्टमसए दसमो उद्देशो समत्तो ।

समत्तं अट्टमं सयं ।

आयुष्कर्म अने अन्तराय कर्मनो संबन्ध.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! जेने आयुष् छे तेने अन्तराय कर्म होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने आयुष् छे तेने अन्तराय कटाच होय अने कटाच न होय, पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य आयुष् कर्म होय.

नामकर्म अने गोत्र कर्मनो संबन्ध.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जेने नाम कर्म छे, तेने शुं गोत्र कर्म होय, जेने गोत्र कर्म छे तेने नाम कर्म होय-प्रश्न. गौतम ! जेने नाम कर्म छे तेने अवश्य गोत्रकर्म होय; अने जेने गोत्रकर्म छे तेने अवश्य नामकर्म होय. ए वने कर्मो परस्पर अवश्य होय.

नामकर्म अने अन्तराय कर्मनो संबन्ध.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जेने नाम कर्म छे तेने शुं अंतराय कर्म होय, अने जेने अंतराय कर्म छे तेने शुं नाम कर्म होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने नामकर्म छे तेने अंतराय कटाच होय अने कटाच न होय, पण जेने अंतराय कर्म छे तेने अवश्य नामकर्म होय.

गोत्रकर्म अने अन्तराय कर्मनो संबन्ध.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! जेने गोत्रकर्म छे तेने शुं अंतराय कर्म होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने गोत्रकर्म छे तेने अन्तराय कर्म कटाच होय अने कटाच न होय, पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य गोत्रकर्म होय.

जीव पुद्गली के पुद्गल.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीव पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आ हेतुयी कहौ ओ के ‘जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे’ ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ ए पुरुष छत्रवडे छत्री, दंडवडे दंडी, घटवडे घटी, पटवडे पटी अने करवडे करी कहेवाय छे तेम जीव पण श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्राण्डिय, जिहेन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियने आश्रयी पुद्गली कहेवाय छे, अने जीवने आश्रयी पुद्गल कहेवाय छे. माटे हे गौतम ! ते हेतुयी पण कहेवाय छे के ‘जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे.’

नैरयिको पुद्गली के पुद्गल ?

४६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिक पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! ते पूर्वनी पेटे जाणहुं. ए प्रमाणे यावत् वैदिकाने पण कहेहुं, परन्तु तेमां जे जीवने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी.

सिद्धो पुद्गली के पुद्गल ?

४७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सिद्धो पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गली नयी, पण पुद्गल छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आ हेतुयी कहौ छे के सिद्धो यावत् पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवने आश्रयी [पुद्गल] कहुं छुं. ते हेतुयी एम कहेवाय छे के सिद्धो पुद्गली नयी, पण पुद्गल छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

अष्टम शतके दशम उद्देशक समाप्त.

## नवमं सयं

१. १ जंबुद्वीवे २ जोइस ३० अंतरदीवा ३१ असोच्च ३२ गंगेय ।  
३३ कुंडग्रामे ३४ पुरिसे णवमम्मि सतंमि चोत्तीसा ॥

पढमो उद्देशो ।

२. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समपणं मिहिला णामं पैगरी होत्था । वण्णओ । म्माणिमहे च्चेतिप । वण्णओ । सामी समोसडे, परिखा णिग्गता, जाव भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वेदासी-कहि णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे, किंसंठिण णं भंते ! जंबुद्वीवे दीवे ? [उ०] एवं जंबुद्वीवपन्नत्ती भाणियद्धा, जाव एवामेव सपुद्दावरेणं जंबुद्वीवे दीवे चोइस सलिला सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

इति नवमसए पढमो उद्देशो समत्तो ।

## नवम शतक.

१. [उद्देशक संग्रह-] १ जंबुद्वीप, २ ज्योतिष्क, ३-३० अठ्यावीश अन्तर्दीपो, ३१ असोच्चा, ३२ गंगेय, ३३ कुंडग्राम अने ३४ पुरुप-ए संबन्धे नवमा शतकमा चोत्रीश उद्देशको छे. [ १ जंबुद्वीप संबन्धे प्रथम उद्देशक छे, २ ज्योतिष्क देव संबन्धे वीजो उद्देशक छे, ३-३० अठ्यावीश अन्तर्दीपोना त्रीजाथी आरंभी त्रीश उद्देशको छे, ३१ असोच्चा-‘सांभळ्या शिवाय-धर्मने पामे’-इत्यादि विषे एकत्रीशमो उद्देशक छे, गंगेय अनगराना प्रश्न विषे वत्रीशमो उद्देशक छे, ब्राह्मणकुंडग्राम संबन्धे तेत्रीशमो उद्देशक छे, अने पुरुपने हणनार संबन्धे चोत्रीशमो उद्देशक छे. ]

## प्रथम उद्देशक.

२. ते काले-ते समये मिथिला नामे नगरी हती. वर्णन. त्या मणिभद्र चैत्य हतुं. वर्णन. त्यां महावीरस्वामी समोसर्था. पर्पट् [ वा-द्रवाने ] नीकळी. यावद् भगवान् गौतमे पर्युपासना करता आ प्रमाणे पूछुं-हे भगवन् ! जंबुद्वीप कये स्थळे छे ? हे भगवन् ! जंबुद्वीप कैवा आकारे रहेलो छे ? [ उ० ] अहीं \*जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति कहेवी, यावद् ‘जंबुद्वीप नामे द्वीपमा पूर्व अने पश्चिम चौद लाख अने छप्पन हजार नदीओ छे’ तेम कह्युं छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे [ एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे. ]

नवम शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१ सए चउत्तीसा ग-घ । २ नयरी ग-ङ । ३ माणभ-ख-ग-घ । ४ चेहए ग-घ-ङ । ५ वयासी ग-घ-ङ ।

२. \* जंबुद्वीप० प. १५. १-३०८. १.

## विशो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव पयं वैयासी-जंबुद्वीपे णं भंते ! द्वीपे केवड्या चंद्रा पमासिसु वा, पमासेति वा, पमासि-  
स्संति वा ? [उ०] एवं जहा जीवाभिगमे, जाव-“पंगं च सयसहस्सं तेत्तीसं चालु भये सहस्सार्दं । नय य सया पत्तासा तारा-  
गणकोडाकोडीणं” ॥ सोमं सोमिसु, सोमिति, सोमिस्संति ।

२. [प्र०] लवणे णं भंते ! समुद्दे केवड्या चंद्रा पमासिसु वा, पमासिति वा, पमासिस्संति वा ? [उ०] एवं जहा  
जीवाभिगमे, जाव ताराओ । ध्यायइसंडे, कालोदे, पुम्भरवरे, धम्मितरपुम्परडे, मणुस्सरंते-ण्णमु सधेसु जहा जीवाभिगमे,  
जाव-“एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं” ।

३. [प्र०] पुष्करोदे णं भंते ! समुद्दे केवड्या चंद्रा पमासिसु वा० ३ ? [उ०] पयं सधेसु द्वीप-समुद्देसु “जोतिसि-  
याणां भाणियधं, जाव सयंभूरमणे, जाव सोमं सोमिसु वा, सोमंति वा, सोमिस्संति वा । सेवं भंते !, सेवं भंते ! ति ।

नवमसए विशो उद्देशो समाप्तो ।

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा यावत् [ गौतम स्वामीए ] ए प्रमाणे प्रश्न कर्यो के-हे भगवन् ! जंबुद्वीप नानना द्वीपानां केटला चंद्रोए  
प्रकाश कर्यो, केटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करये ? [उ०] ए प्रमाणे जेम “जीवाभिगम सूत्रमा कर्णुं छे तेम जाणवुं, यावत्  
‘एक लाख, तेत्तीस हजार, नवसो ने पचास कोटाकोडि ताराना समुद्दे शोमा कतो, शोमा करे छे अने शोमा करशे’ ला सुवां जाणवुं.

२. [प्र०] हे भगवन् ! लवण समुद्रमां केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो, केटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करये ? [उ०] ए  
प्रमाणे जेम “जीवाभिगम सूत्रमा कर्णुं छे तेम तारानां हकीकत सूचीं सर्वं जाणवुं. धातकिखंड, कालोदवि, पुष्करवर द्वीप, अम्यंतर पुष्करार्थ  
अने मनुष्यक्षेत्रमा-ए, सर्वं स्थले जीवाभिगम सूत्रमां कथा प्रमाणे यावत् “एक चंद्रो परिवार कोटाकोटि तारागणो होय छे” ला सूचीं  
सर्वं जाणवुं.

३. [प्र०] हे भगवन् ! पुष्करोद समुद्रमा केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो ?—इत्यादि [उ०] ए रीते [ जीवाभिगम सूत्रमा कथा  
प्रमाणे ] सर्वं द्वीप अने समुद्रोमां ज्योतिष्कोनी हकीकत यावत् ‘सयंभूरमणसमुद्रमा छे यावत् शोम्या, शोमे छे अने शोमशे’ लां सुवां  
कहेवो. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, [ एम कही यावत् भगवान् गौतम विहारे छे. ]

नवम शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

१ वडासी क, वडामि ख । ० असा गायाया पूर्वाधि नादि क-ख-ड । ३ धायतिसं- क-ख । ४ -कोडिको- ल । ५ जोहमं भा-  
क-ख । ६ सयंभुर- क-ट ।

१. \* जीवा० प्रति. ३ ट. २ प. ३००-१. २. † जीवा० प्रति. ३ ट. २ प. ३०३-१. ३३५.-२. ३. ‡ जीवा० प्रति ३ ट. २ प. ३४८-  
१-३६७. २.

## तइओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वैयासी-कहि णं भंते ! दाहिणिह्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे पन्नत्ते ?  
 [उ०] गोयमा ! जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पद्ययस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपद्ययस्स पुरत्थिमिह्लाओ चरिमंताओ  
 लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थियमेणं तिन्नि जोयणसयाइं ओगाहित्ता पत्थ णं दाहिणिह्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे  
 पणत्ते । गोयमा ! तिन्नि जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं णं एगूणवन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पन्नत्ते । से णं  
 एगाए पउमवरवेइयाए एणेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खत्ते, दोण्ह वि पमाणं वन्नओ य एवं एणं कमेणं एवं  
 जहा जीवाभिगमे जाव 'सुद्धदंतदीवे,' जाव 'देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पणत्ता' समणाउसो ! । एवं अट्टावीसंपि अंतरदीवा  
 सएणं सएणं आयाम-विक्खंभेणं भाणियद्वा, नवरं दीवे दीवे उद्देसओ, एवं सधे वि अट्टावीसं उद्देसगां । सेवं भंते !, सेवं  
 भंते ! त्ति ।

नवमसयस्स तीसइमो उद्देसो समत्तो ।

## तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा [ भगवान् गौतमे ] यावत् ए प्रमाणे पृच्छुं—हे भगवन् ! दक्षिण दिशाना एकोरुक मनुप्यो नो एकोरुक  
 नामे द्वीप क्वां क्खो छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामना द्वीपमा आवेत्ता मंदरपर्वत ( मेरुपर्वत ) नी दक्षिणे चुल्ल ( क्षुद्र ) हिमवंत नामे  
 वर्षधर पर्वतना पूर्वना छेडाथी ईशान कोणमा त्रणसो योजन लवणसमुद्रमा गया पछी ए स्थळे दक्षिण दिशाना एकोरुक मनुप्यो नो एकोरुक  
 नामे द्वीप क्खो छे. हे गौतम ! ते द्वीपनी लंबाइ अने पहोव्वाइ त्रणसो योजन छे, अने तेनो परिक्षेप ( परिधि ) नवसो ओगण पचास  
 योजनथी काइक न्यून छे. ते द्वीप एक पन्नवरवेदिका अने एक वनखंडथी चारे वाजु विंटाएल छे. ए वनेत्तुं प्रमाण तथा वर्णन ए प्रमाणे ए  
 क्रम वडे जेम \*जीवाभिगमसूत्रमा क्खुं छे तेम यावत् 'सुद्धदंत द्वीप छे, यावद् हे आयुप्मान् श्रमण ! ए द्वीपना मनुप्यो मरीने देवगतिमा  
 उपजे छे' त्यासुधी जाणत्तुं. ए प्रमाणे पोत पोतानी लंबाइ, अने पहोव्वाइथी अठ्ठावीश अतट्टीपो कहेवा; परन्तु एक एक द्वीपे  
 एक एक उद्देशक जाणवो. ए प्रमाणे वधा मळीने अठ्ठावीश उद्देशको कहेवा. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम  
 क्खी भगवान् गौतम यावद् विहरे छे. ]

--अट्टावीश अन्त-  
द्वीपो

नवम शतके त्रीशमो उद्देशक समाप्त.

१ वदासि क-ख । २ एगूरु- क-ड । एगूरु- क-ख । ३ अयं पाठो नास्ति क-ख-ड । ४ एकोण- ग-घ, एषाव-ड । ५-परिगट्टिया ण  
 ग-घ । ६ -वीसं अ- घ,-वीस वि ड । ७ 'भाणिअव्वा' इत्यधिक पाठः ग-घ ।

१. \* जीवा० प्रति. ३ अ. १ पृ. १४४-२-१५६-१.



## एगतीसइमो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-असोचा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पन्निपयस्स वा, तप्पन्निपयसावगस्स वा, तप्पन्निपयसावियाए वा, तप्पन्निपयउवासगस्स वा, तप्पन्निपयउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? [उ०] गोयमा ! असोचा णं केवलिस्स वा जाव तप्पन्निपयउवासियाए वा अत्येगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्येगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘असोचा णं जाव नो लभेज्जा सवणयाए’ ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओचसमे कडे भवइ से णं असोचा केवलिस्स वा, जाव तप्पन्निपयउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए; जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओचसमे नो कडे भवइ से णं असोचा णं केवलिस्स वा जाव तप्पन्निपयउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-तं चेव जाव ‘नो लभेज्जा सवणयाए’ ।

२. [प्र०] असोचा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पन्निपयउवासियाए वा केवलं वोहिं बुज्जेज्जा ? [उ०] गोयमा ! असोचा णं केवलिस्स वा जाव अत्येगतिए केवलं वोहिं बुज्जेज्जा, अत्येगतिए केवलं वोहिं णो बुज्जेज्जा ! [प्र०] से केणट्टेणं

## एकत्रीशमो उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा यावत् [ भगवान् गौतमे ] आ प्रमाणे पृच्छुं—हे भगवन् ! केवलि पासेयी, \*केवलिना श्रवक पासेयी, केवलिनी श्राविका पासेयी, केवलिना उपासक पासेयी, केवलिनी उपासिका पासेयी, केवलिना पाक्षिक ( स्वयंबुद्ध ) पासेयी, केवलिना पाक्षिक श्रवक पासेयी, केवलिना पाक्षिकनी श्राविका पासेयी, केवलिना पक्षना उपासक पासेयी अने केवलिना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना जीवने केवलज्जानीए कहेला धर्मना श्रवणनो-ज्ञाननो लाभ थाय ? [उ०] हे गौतम ! केवलि पासेयी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना पण कोइ जीवने केवलिए कहेला धर्मश्रवणनो लाभ थाय अने कोइ जीवने लाभ न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहे छे के सामब्ब्या विना यावत् [ धर्म ] श्रवणनो लाभ न थाय ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे ज्ञानावर्णीय कर्मनो क्षयोपशम करेले छे ते जीवने केवलि पासेयी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना पण केवलिए कहेला धर्मश्रवणनो लाभ थाय, अने जे जीवे ज्ञानावर्णीय कर्मनो क्षयोपशम कर्यो नथी ते जीवने केवलि पासेयी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना केवलिए कहेला धर्मने सामब्ब्यानो लाभ न थाय. हे गौतम ! ते हेतुयी एम कहुं छे के, तेने यावत् ‘श्रवणने लाभ न थाय.’

२. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी [ धर्म ] सामब्ब्या विना कोइ जीव शुद्ध बोधि-सम्यग्दर्शनने अनुभवे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना पण कोइ जीव शुद्ध सम्यग्दर्शनने अनुभवे.

१. \* जेणे केवलज्जानीने स्वयं पृच्छुं छे, अथवा तेमनी पासेयी सामब्ब्युं छे ते केवलिश्रवक. केवलज्जानीनी उपासना करता केवलीए अन्वने कहेई जेणे सामब्ब्युं होय ते केवलिउपासक. केवलिनो पाक्षिक एट्टे स्वयंबुद्ध.-टीका.

† अहाँ श्रवण श्रुतज्ञानरूप जाणरुं, अर्थात् केवलज्जानीवगेरे पासेयी सामब्ब्या शिवाय कोइ जीवने धर्मनो बोध थाय, अन्यथा सामब्ब्या विना पोतानी मेले बोध पामेलाने श्रवण शरीरिचे थाय ?

भंते! जाव नो बुज्जेजा? [उ०] गोयमा! जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं वोहिं बुज्जेजा; जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं वोहिं णो बुज्जेजा; से तेणट्टेणं जाव णो बुज्जेजा ।

३. [प्र०] असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पद्यएजा? [उ०] गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्येगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पद्यएजा; अत्येगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पद्यएजा । [प्र०] से केणट्टेणं जाव नो पद्यएजा? [उ०] गोयमा! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पद्यएजा; जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव मुंडे भवित्ता जाव णो पद्यएजा, से तेणट्टेणं गोयमा! जाव नो पद्यएजा ।

४. [प्र०] असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलं वंभचेरवासं आवसेजा? [उ०] गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्येगतिए केवलं वंभचेरवासं आवसेजा, अत्येगतिए केवलं वंभचेरवासं नो आवसेजा । [प्र०] से केणट्टेणं भंते! एवं बुच्चइ—‘जाव नो आवसेजा’? [उ०] गोयमा! जस्स णं चरित्तावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं वंभचेरवासं आवसेजा; जस्स णं चरित्तावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो आवसेजा, से तेणट्टेणं जाव नो आवसेजा ।

५. [प्र०] असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेजा? [उ०] गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्येगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेजा; अत्येगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेजा । [प्र०] से

अने कोइ जीव शुद्ध सम्यग्दर्शनने न अनुभवे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, यावत् [शुद्ध सम्यग्दर्शनने] न अनुभवे? [उ०] हे गौतम! जे जीवे दर्शनावरणीय (दर्शनमोहनीय) कर्मनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना शुद्ध सम्यग्दर्शनने अनुभवे; अने जे जीवे दर्शनावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कर्यो नथी, ते जीव केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना शुद्ध सम्यग्दर्शनने न अनुभवे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कह्युं छे के—यावत् ‘सामब्ब्या विना शुद्ध सम्यक्त्वने अनुभवे नहि.’

बोधिनो हेतु.

६. [प्र०] हे भगवन्! केवली पासेयी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना पण कोइ जीव मुंड—दीक्षित यइने अगारवास—गृहवास—ल्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने—प्रब्रज्याने स्वीकारे? [उ०] हे गौतम! केवली पासेयी यावत् तेना पक्षनी उपासिका-पासेयी सामब्ब्या विना कोइ जीव मुंड यइने गृहवास ल्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने कोइ जीव मुंड यइ गृहवास ल्यजी अनगारिकपणाने न स्वीकारे. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के, ‘यावत् न स्वीकारे’? [उ०] हे गौतम! जे जीवे धर्मांतरायिक—चारित्र धर्ममा अन्तराप्रभूत—चारित्रावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना पण मुंड यइने अगारवास, ल्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने जे जीवे धर्मांतरायिक कर्मनो क्षयोपशम कर्यो नथी ते जीव केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना यावत् मुंड यइने यावत् न स्वीकारे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कह्युं छे के ‘यावत् न स्वीकारे.’

प्रब्रज्या-

७. [प्र०] हे भगवन्! केवली पासेयी, यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे? [उ०] हे गौतम! केवली पासेयी, यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना पण कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, अने कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के—‘यावत् ब्रह्मचर्यवासने धारण करे’? [उ०] हे गौतम! जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना पण शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, अने जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मनो क्षयोपशम नथी कर्यो ते जीव केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कह्युं छे के ‘यावत् ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे.’

ब्रह्मचर्य-

८. [प्र०] हे भगवन्! केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना कोइ जीव शुद्ध संयमवडे संयमयतना करे? [उ०] हे गौतम! केवली पासेयी यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना पण कोइ जीव शुद्ध संयमवडे \*संयमयतना करे, अने कोइ जीव न करे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, यावत् संयमयतना न करे? [उ०] हे गौतम! जे जीवे यतनावरणीय

संयम-

संयमनो हेतु-

१ आगाराओ घ-उ। २ केवलि- जाव क-ख।

५. \* अहिं संयम-चारित्रनो स्वीकार करीने तेना दोपने त्यागकरवारूप प्रयत्नविशेष करवो ते संयमयतना.

† चारित्रविषे वीर्ये प्रवृत्ति ते यतना, तेने आच्छादन करनार कर्म यतनावरणीय-वीर्यान्तराय कर्म-कहेवाय छे-टीका.

केणट्टेणं जाव नो संजमेजा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं जयणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेजा; जस्स णं जयणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो संजमेजा; से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव अत्येगतिए नो संजमेजा ।

६. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेजा ? [उ०] गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्येगतिए केवलेणं संवरेणं संवरेजा, अत्येगतिए केवलेणं जाव नो संवरेजा । [प्र०] से केणट्टेणं जाव नो संवरेजा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं अज्जवसाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलेणं संवरेणं संवरेजा; जस्स णं अज्जवसाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो संवरेजा, से तेणट्टेणं जाव नो संवरेजा ।

७. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पाडेजा ? [उ०] गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्येगतिए केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पाडेजा, अत्येगतिए केवलं आभिणिवोहियनाणं नो उप्पाडेजा । [प्र०] से केणट्टेणं जाव नो उप्पाडेजा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं आभिणिवोहियनाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पाडेजा; जस्स णं आभिणिवोहियनाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा, जाव केवलं आभिणिवोहियनाणं नो उप्पाडेजा; से तेणट्टेणं जाव नो उप्पाडेजा ।

८. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलि० जाव केवलं सुयनाणं उप्पाडेजा ? [उ०] एवं जहा आभिणिवोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तथा सुयनाणस्स वि भाणियव्वे; नवरं सुयणाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं ओहिणाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेजा, नवरं मणपज्जवणाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे ।

कर्म्मो क्षयोपशम कर्म्मो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना पण शुद्ध सयमवडे संयमयतना करे, अने जे जीवे यतनावरणीय कर्म्मो क्षयोपशम नथी कर्म्मो ते जीव केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना शुद्ध संयमवडे सयमयतना न करे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के, यावत् 'कोइ सयम न करे.'

सवर.

६. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सामब्ब्या विना कोइ जीव शुद्ध सवरवडे सवर-आस्रवणो रोध-करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना पण कोइ जीव शुद्ध संवरवडे आस्रवणे रोके, अने कोइ जीव शुद्ध सवरवडे आस्रवणे न रोके. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के- 'यावत् संवर न करे' ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे अव्यवसानावरणीय (भावचारित्रावरणीय) कर्म्मो क्षयोपशम कर्म्मो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना पण शुद्ध संवरवडे सवर-आस्रवणो रोध-करी शके, अने जे जीवे अव्यवसानावरणीय कर्म्मो क्षयोपशम नथी कर्म्मो ते जीव केवली पासेथी सामब्ब्या विना सवर न करी शके; माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के- 'यावत् 'सवर न करे'.

सवरनो हेतु-

आभिनिवोधिक  
ज्ञानआभिनिवोधिक  
ज्ञानो हेतु

७. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना कोइ जीव शुद्ध आभिनिवोधिक ज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी के यावत् तेनी उपासिका पासेथी सामब्ब्या विना पण कोइ जीव शुद्ध आभिनिवोधिक ज्ञान उपजावी शके, अने कोइ जीव शुद्ध आभिनिवोधिक ज्ञान न उपजावी शके. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के- 'यावत् न उपजावी शके' ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे आभिनिवोधिक ज्ञानावरणीय कर्म्मो क्षयोपशम कर्म्मो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना पण शुद्ध आभिनिवोधिकज्ञान उपजावी शके, अने जे जीवे आभिनिवोधिक ज्ञानावरणीय कर्म्मो क्षयोपशम कर्म्मो नथी ते जीव केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना शुद्ध आभिनिवोधिकज्ञान न उपजावी शके. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के- 'यावत् न उपजावी शके.'

अवधान.

८. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी यावत् सामब्ब्या विना कोइ जीव शुद्ध श्रुतज्ञान उत्पन्न करी शके ? [उ०] ए प्रमाणे जेम आभिनिवोधिकज्ञाननी हकीकत कहे, तेम श्रुतज्ञाननी पण जाणवी; परन्तु अहीं श्रुतज्ञानावरणीय कर्म्मो क्षयोपशम कहेवो. ए प्रमाणे शुद्ध अवधिज्ञाननी पण हकीकत कहेवी, पण लां अवधिज्ञानावरणीय कर्म्मो क्षयोपशम कहेवो, ए रीते शुद्ध मनःपर्यवज्ञान पण उत्पन्न करे, परन्तु मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्म्मो क्षयोपशम कहेवो.

अवधिज्ञान अने  
मन पर्यवज्ञान.

९. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पन्निपयउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाडेजा ? [उ०] एवं चेव, त्वरं केवलनाणावरणिजाणं कम्माणं यए भाणियध्दे, सेसं तं चेव, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—जाव केवलनाणं उप्पाडेजा ।

१०. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पन्निपयउवासियाए वा केवलपन्नत्तं धम्मं लमेजा सवणयाए, त्वलं वोहिं बुच्चेजा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पद्यएजा, केवलं वंमचेरवासं आवसेजा, केवलेणं संजमेणं जिमेजा, केवलेणं संवरेणं संवरेजा, केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पाडेजा, जाव केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेजा, केवलनाणं उप्पाडेजा ? [उ०] गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्येगतिए केवलपन्नत्तं धम्मं लमेजा सवणयाए, अत्येगतिए केवलपन्नत्तं धम्मं नो लमेजा सवणयाए; अत्येगइए केवलं वोहिं बुच्चेजा, अत्येगतिए केवलं वोहिं णो बुच्चेजा; अत्येगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पद्यएजा, अत्येगतिए जाव नो पद्यएजा, अत्येगतिए केवलं वंमचेरवासं आवसेजा, अत्येगतिए केवलं वंमचेरवासं नो आवसेजा; अत्येगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेजा, अत्येगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेजा, एवं संवरेण वि; अत्येगतिए केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पाडेजा, अत्येगतिए जाव नो उप्पाडेजा; एवं जाव मणपज्जवनाणं, अत्येगतिए केवलनाणं उप्पाडेजा, अत्येगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेजा । [प्र०] से णट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—असोच्चा णं तं चेव जाव अत्येगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेजा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, एवं चरित्तावरणिजाणं, जयणावरणिजाणं, अज्झवसाणावरणिजाणं, आभिणिवोहियणाणावरणिजाणं, जाव मणपज्जवनाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ; जस्स णं केवलनाणावरणिजाणं जाव यए नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलपन्नत्तं धम्मं नो लमेजा सवणयाए, केवलं वोहिं नो बुच्चेजा, जाव केवलनाणं नो उप्पाडेजा । जस्स णं णाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति, जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं, एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिजाणं कम्माणं यए कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलपन्नत्तं धम्मं लमेजा सवणयाए, केवलं वोहिं बुच्चेजा, जाव केवलनाणं उप्पाडेजा ।

९. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी [ सांभब्या विना कोइ जीव ] केवलज्ञानने उत्पन्न करी शके ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, परन्तु अहीं 'केवलज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षय' कहेवो. वाकी वधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुयी एम कहुं छे के 'यावत् केवलज्ञानने पण उत्पन्न करी शके.'

केवलज्ञान-

१०. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सांभब्या विना पण शुं कोइ जीव केवलज्ञानीए कहेला धर्मने श्रवण करे—जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे, मुड यइने अगारवास लजी शुद्ध अनगारिकापणाने स्वीकारे, शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, शुद्ध सयमवडे संयमयतना—करे, शुद्ध सवरवडे सवर—आसन्नवो रोध—करे, शुद्ध आभिनिवोधिकज्ञान उत्पन्न करे, यावत् शुद्ध मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध केवलज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेयी यावत् तेनी उपासिका पासेयी सांभब्या विना पण कोइ जीव केवलज्ञानीए कहेला धर्मने जाणे अने कोइ जीव केवलिए कहेला धर्मने न जाणे, कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव न करे; कोइ जीव मुड यइने अगारवास लजी शुद्ध अनगारपण स्वीकारे अने कोइ जीव न स्वीकारे; कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे अने कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे; कोइ जीव शुद्ध सयम वडे संयमयतना करे, अने कोइ जीव शुद्ध सयमवडे संयम न करे; ए प्रमाणे सवरने विपे पण जाणवुं, कोइ जीव शुद्ध आभिनिवोधिकज्ञानने उत्पन्न करे अने कोइ जीव यावत् न उत्पन्न करे, ए प्रमाणे यावत् मन पर्यवज्ञान सुधी जाणवुं, कोइ जीव केवलज्ञान उपजावे अने कोइ जीव केवलज्ञान न उपजावे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहे छे के—'धर्मने सांभब्या शिवाय ते प्रमाणे यावत् कोइ जीव केवलज्ञान न उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! १ जे जीव ज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, २ जेणे दर्शनावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, ३ जेणे धर्मांतराधिक कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, ४ ए प्रमाणे चारित्रावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, ५ यनावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, ६ अच्यवसानावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, ७ आभिनिवोधिकज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, यावत् १० मन पर्यवज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम नथी कर्यो, अने ११ जेणे केवलज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षय नथी कर्यो ते जीव केवलज्ञानी पासेयी यावत् सांभब्या विना केवलज्ञानीए कहेला धर्मने सांभब्याने प्राप्त न करे, अर्थात् न जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव न करे, यावत् केवलज्ञानने न उत्पन्न करे. तथा जे जीव ज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम कर्यो छे, जेणे दर्शनावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम कर्यो छे, जेणे धर्मांतराधिक कर्मोनी क्षयोपशम कर्यो छे, ए प्रमाणे यावत् जेणे केवलज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षय कर्यो छे ते जीव केवली पासेयी यावत् सांभब्या विना पण केवलिए कहेला धर्मने जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने यावत् केवलज्ञानने उत्पन्न करे.

धर्मबोध, शुद्धसम्यक्त्वनो अनुभव करे

केवलज्ञानितु यवत् सांभब्या विनाय कोइ क्षयोपशमने प्राप्त न करे तेनी हेतु—

११. तस्स णं भंते ! छट्ठंछट्ठेणं अणिविग्गत्तेणं तच्चोत्तममेणं उट्ठं वाहाओ पंगिज्जिय पंगिज्जिय सूत्तामिमुहस्स थायात्तण-भूमिप थायात्तेमाणस्स पंगतिभद्दयाप, पंगदउच्चसंतयाप, पंगतिपयणुकोह-माण-माया-लोमयाप, मिउमह्वमंपत्रयाप, अट्ठणायाप, भद्दयाप, विणीययाप, अन्नया कयावि सुभेणं अत्तवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विमुज्जमाणीहिं विमुज्जमाणीहिं तयावरणिजाणं कम्मणं यत्थोवत्समेणं ईहा-उपोह-मग्गणगवेत्तणं करेमाणस्स विग्गमे नामं अघाणे ममुत्तपज्ज, ने णं तेणं विग्गमनाणेणं समुत्तरेणं जहत्तेणं अंगुलस्स असंगेज्जतिमागं, उक्कोमेणं अस्संगेज्जाहं जोयणसहस्साहं जाणत्त, पामह; मे णं तेणं विग्गमनाणेणं समुत्तरेणं जीवे वि जाणत्त, अजीये वि जाणत्त, पाणंउत्थे, साग्गं, सपरिग्गहे, संत्तिलिम्पनाणे वि जाणत्त, विमुज्जमाणे वि जाणत्त, से णं पुत्तामेव सम्मत्तं पट्टिवज्जत्त, सम्मत्तं पट्टिवज्जित्ता ममणधम्मं रोणत्ति, समणधम्मं रोणत्ता चग्गित्तं पट्टिवज्जत्ति, चरित्तं पट्टिवज्जित्ता लिंणं पट्टिवज्जत्त, तस्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं पग्गिहायमाणेहिं पग्गिहायमाणेहिं मम्मदंसण-पज्जवेहिं परिवहमाणेहिं परिवहमाणेहिं से विग्गमे अघाणे सम्मत्तपरिग्गट्ठिण विग्गामेव ओही पगवत्तत्त ।

१२. [प्र०] से णं भंते ! कतिमु लेस्सासु होजा ? [उ०] गोयमा ! तिसु विमुद्धलेस्सासु होजा, तं जहा-तेउले-स्साप, पम्हलेस्साप, सुक्कलेस्साप ।

१३. [प्र०] से णं भंते ! कतिमु णाणेषु होजा ? [उ०] गोयमा ! तिसु आभिणिवोदियनाण-सुयणाण-ओहिनाणेषु होजा ।

१४. [प्र०] से णं भंते ! किं सजोगी होजा, अजोगी होजा ? [उ०] गोयमा ! सजोगी होजा, नो अजोगी होजा ।

१५. [प्र०] जइ सजोगी होजा, किं मणजोगी होजा, वइजोगी होजा, कायजोगी होजा ? [उ०] गोयमा ! मणजोगी वा होजा, वइजोगी वा होजा, कायजोगी वा होजा ।

१६. [प्र०] से णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होजा, अणागारोवउत्ते वा होजा ? [उ०] गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होजा, अणागारोवउत्ते वा होजा ।

१७. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि संघयणे होजा ? [उ०] गोयमा ! वइरोसहनारायसंघयणे होजा ।

केवलिप्रमुखना  
वचनेन साम्ब्या  
शिवाय सम्यक्त्वादि  
कने स्वीकारे.

विभंगज्ञाननी उत्प-  
त्ति.

सम्यग्दर्शननी प्राप्ति.

चारित्र्यनो स्वीकार.

अवधिज्ञाननी  
उत्पत्ति.  
लेख्या.

११. ते जीवने निरंतर छट्ट छट्टना तप करवापूर्वक सूर्यनी सामे उंचा हाय गर्वी राखीने आनापना भूमिमां आनापना लेता. प्रकृतिना भद्रपणाथी, प्रकृतिना उपशान्तपणाथी, स्वभावथी क्रोध, मान, नाया अने लोभ घणा ओछा थयेला होवाथी, अस्तंत मारुत-नन्तनाते प्राप्त थयेला होवाथी, आलीनपणाथी, भद्रपणाथी अने विनीतपणाथी अन्य कोइ दिवसे शुभ अव्यवसायवडे, शुभ परिणामवडे निशुद्ध लेख्याओवडे तदावरणीय (विभंगज्ञानावरणीय) कर्मोना क्षयोपशमथी, ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेपणा करता विभंग नामे अज्ञान उत्पन्न थाय छे. ते उत्पन्न थएट विभंगज्ञान वडे जघन्यथी अगुलनो असंख्यातमो भाग अने उन्कूट अनंत्येय हजार योजनोने जाणे छे अने डुर छे; उत्पन्न थएला विभंगज्ञान वडे ते जीवोने पण जाणे छे अने अजीवोने पण जाणे छे; पाखंडी, आरंभवाळा, परिग्रहवाळा अने मद्देगने प्राप्त थयेला जीवोने पण जाणे छे अने विशुद्ध जीवोने पण जाणे छे, ते विभंगज्ञानी पहेंलांज सम्यक्त्वेने प्राप्त करे छे; प्राप्त करी श्रमधर्म उपर रुचि करे छे, रुचि करी चारित्र्यने स्वीकारे छे. चारित्र्यने स्वीकारी लिंणवेपने स्वीकारे छे; पट्टी ते विभंगज्ञानिना मिथ्यात्वपर्यायी क्षीण यता यता अने सम्यग्दर्शन पर्यायो वधता वधता ते विभंग अज्ञान सम्यक्त्व युक्त थाय छे, अने शीघ्र अवधिरूपे परावर्तन पामे छे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ते अवधिज्ञानी जीव केटली लेख्याओमा होय ? [उ०] हे गौतम ! त्रण विशुद्ध लेख्याओमा होय. ते आ प्रमाणे—तेजोलेख्या, पद्मलेख्या अने शुद्धलेख्या.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ते [ अवधिज्ञानी ] जीव केटला ज्ञानोमा होय ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिवोविकज्ञान, श्रुतज्ञान अ अवधिज्ञान—ए त्रण ज्ञानोमां होय.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ते [ अवधिज्ञानी ] सयोगी (मनोयोगादिसहित) होय के अयोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सन्ने होय पण अयोगी न होय.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते सयोगी होय तो शुं मनयोगी होय, वचनयोगी होय के काययोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनयोगी होय, वचनयोगी होय अने काययोगी पण होय.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते साकार-ज्ञानउपयोगवाळो होय के अनाकार-दर्शनउपयोगवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते साकारउपयोगवाळो पण होय अने अनाकारउपयोगवाळो पण होय.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया संघयणमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वज्रकपमनाराचसंघयणवाळो होय.

१८. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होजा ? [उ०] गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अन्नयरे संठाणे होजा ।

१९. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होजा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसत्तिए होजा ।

२०. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि आउए होजा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्टवासाउए, उक्कोसेणं पुट्टकोडी-आउए होजा ।

२१. [प्र०] से णं भंते ! किं सवेदए होजा, अवेदए होजा ? [उ०] गोयमा ! सवेदए होजा, नो अवेदए होजा ।

२२. [प्र०] जइ सवेदए होजा किं इत्थिवेदए होजा, पुरिसवेदए होजा, पुरिस-नपुंसगवेदए होजा; नपुंसगवेदए होजा ? [उ०] गोयमा ! नो इत्थिवेदए होजा, पुरिसवेदए वा होजा, नो नपुंसगवेदए होजा, पुरिस-नपुंसगवेदए वा होजा ।

२३. [प्र०] से णं भंते ! किं सकसाई होजा अकसाई होजा ? [उ०] गोयमा ! सकसाई होजा, नो अकसाई होजा ।

२४. [प्र०] जइ सकसाई होजा से णं भंते ! कतिखु कसाएखु होजा ? [उ०] गोयमा ! चउखु संजलणकोह-साण-माया-लोभेसु होजा ।

२५. [प्र०] तस्स णं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पणत्ता ।

२६. [प्र०] ते णं भंते ! किं पसत्था, अप्पसत्था ? [उ०] गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ।

२७. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वट्टमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय- जाव विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसं-जोएइ; जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपयडीओ, तासिं च णं उवग्ग-

१८. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया संस्थानमा होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने छ संस्थानमानुं कोइ पण एक संस्थान होय.

सम्यान.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटली उंचाइवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यथी सात हाय अने उत्कृष्टथी पाचसो धनु-पनी उंचाइवाळो होय.

उंचाइ.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटला आयुपवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यथी काइक वधारे आठ वर्ष, अने उत्कृष्टथी पूर्वकोटिआयुपवाळो होय.

आयुप्

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते वेदसहित होय के वेदरहित होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वेदसहित होय पण वेदरहित न होय.

वेद.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वेदसहित होय तो शुं १ स्त्रीवेदवाळो होय, २ पुरुपवेदवाळो होय, ३ नपुंसकवेदवाळो होय के ४\* पुरुपनपुंसकवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्त्रीवेदवाळो न होय, पण पुरुपवेदवाळो होय; नपुंसकवेदवाळो न होय, पण पुरुपनपुंसकवेदवाळो होय.

पुरुपवेदादि.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते ( अवधिज्ञानी ) सकपायी होय के अकपायी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सकपायी होय, पण कपायरहित न होय.

कपाय.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते कपायवाळो होय तो तेने केटला कपायो होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने संज्वलनक्रोध, मान, माया अने लोभ-ए चार कपाय होय.

सज्वलनक्रोधादि.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! तेने केटला अघ्यवसायो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने असंख्याता अघ्यवसायो कहा छे.

अघ्यवसायो.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! ते अघ्यवसायो प्रशस्त होय के अप्रशस्त होय ? [उ०] हे गौतम ! प्रशस्त अघ्यवसायो होय, पण अप्र-शस्त न होय.

प्रशस्त अघ्यवनाय

२७. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( अवधिज्ञानी ) वृद्धि पामता प्रशस्त अघ्यवसायोवडे अनंत नारकना भवोथी पोताना आत्माने विमुक्त करे, अनंत तिर्यचोना भवोथी आत्माने विमुक्त करे, अनंत मनुष्यभवोथी आत्माने विमुक्त करे, अने अनंत देवभवोथी आत्माने विमुक्त करे. तथा तेनी जे आ नरकगति, तिर्यचगति, मनुष्यगति अने देवगति नामे चार उत्तर प्रकृतिओ छे, तेनी अने बीजी प्रकृतिओना आधारभूत अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करीने अप्रत्याख्यान कपायरूप क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, क्षय करीने प्रत्याख्यानवरण क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करी संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभनो

नारक, तिर्यच, देव अने मनुष्य भवोथी मुक्ति.

अनन्तानुबंध्यादि-कपायनो क्षय.

१ वट्टमाणेहिं घ ।

२२. \* लिंगानं छेद करवा वगैरेथी नपुंसक थयेलो-अर्थात् कृत्रिम नपुंसक थयेलो होय ते पुरुपनपुंसक कहेवाय छे-टीका.

हिए अणंताणुवंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेद, अणं० खवेदत्ता अपचन्नाणकसाण कोह-माण-माया-लोभे खवेद, अपच० खवेदत्ता पंचन्नाणावरणकोह-माण-माया-लोभे खवेद, पच० खवेदत्ता संजलणकोह-माण-माया-लोभे खवेद, संज० खवेदत्ता पंचविहं नाणा-वरणिजं, नवविहं ढरिसणावरणिजं, पंचविहं अंतराहयं, नालमत्याकडं च णं मोहणिजं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुच्चरणं अणुपविट्टुस्स अणंते अणुत्तरे निदाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुणे केवलवरणाण-दंसणे समुप्पये ।

२८. [प्र०] से णं भंते ! केवलपन्नत्तं धम्मं आघवेज वा, पन्नवेज वा, परूवेज वा ? [उ०] णो तिणट्टे समट्टे, णण्णत्थ एगण्णाएण वा, एगवागरणेण वा ।

२९. [प्र०] से णं भंते ! पद्दावेज वा, मुंटावेज वा ? [उ०] णो इणट्टे समट्टे, उचदेसं पुण करेजा ।

३०. [प्र०] से णं भंते ! सिज्जति, जाव अंतं करेति ? [उ०] हंता सिज्जति, जाव अंतं करेति ।

३१. [प्र०] से णं भंते ! किं उट्टं होजा, अहे होजा, तिरियं होजा ? [उ०] गोयमा ! उट्टं वा होजा, अहे वा होजा, तिरियं वा होजा; उट्टं होजमाणे सदावट-वियटावट-गंथावट-मालवंतपरियाप्पसु चट्टवेयटपप्पसु होजा; साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा होजा, पंडगवणे वा होजा; अहे होजमाणे गट्टाए वा, ढरीए वा होजा; साहरणं पडुच्च पायाले वा, भवणे वा होजा; तिरियं होजमाणे पन्नरससु कम्मभूमिसु होजा; साहरणं पडुच्च अट्टाज्जदीव-समुद-तदेक्खेसभाए होजा ।

३२. [प्र०] ते णं एगसमए णं केवतिया होजा ? [उ०] गोयमा ! जहणणेणं ण्णो वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं दस, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘असोच्चा णं केवलस्स वा जाव अत्येगतिए केवलपन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणयाए, अत्येगतिए असोच्चा णं केवलि० जाव नो लभेजा सवणयाए, जाव अत्येगतिए केवलनाणं उप्पाडेजा, अत्येगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेजा ।

क्षय करे, पटी पाच प्रकारे ज्ञानावरणीय कर्म, नव प्रकारे दर्शनावरणीय कर्म, पाच प्रकारे अंतगय कर्म, तथा मोहनीय कर्मने छे-दायेल मत्तकवाव्य ताडवृक्षना समान [क्षीण] करीने कर्म रजने विखेरी नाखनार अपूर्व कारणमा प्रवेश करेला एवा तेने अनंत, अनुत्तर, व्याघातरहित, आवरणरहित, सर्व पदार्थने ग्रहण करनार, प्रतिपूर्णा, श्रेष्ठ एवं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थाय छे.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! ते [केवलज्ञानी] केवलिए कहेल धर्मने कहे, जणावे अने प्ररूपे ? [उ०] हे गौतम ! ते ओंम योग्य नयी, परन्तु एक न्याय-उदाहरण अने एक [प्रश्ना] उत्तर शिवाय. [अर्थात् ते अश्रुत्वा केवली एक उदाहरण वा एक प्रश्न-उत्तर शिवाय धर्मनो उपदेश न करे.]

२९. [प्र०] हे भगवन् ! ते [केवली] कोइने प्रत्रया आपे, मुंढे-दीक्षा आपे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नयी, पण मात्र [‘अमुकनी पासे प्रत्रया ग्रहण करो’ एवो] उपदेश करे.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अश्रुत्वा केवलज्ञानी) सिद्ध थाय, यावत् सर्वं दु खोनो अंत करे ? [उ०] हा, सिद्ध थाय, यावत् सर्वं दु खोनो अन्त करे.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अश्रुत्वा केवलज्ञानी) ऊर्ध्वलोकमा होय, अधोलोकमा होय के तिर्यग् लोकमा होय ? [उ०] हे गौतम ! ते ऊर्ध्वलोकमा पण होय, अधोलोकमा पण होय अने तिर्यग् लोकमा पण होय. जो ते ऊर्ध्वलोकमा होय तो शब्दापाति, विकटार्थ पाति, गंधापाति, अने माल्यवंत नामे वृत्तवैताव्य पर्वतोमा होय. तथा सहरणने आश्रयी सौमनस्ववनमा के पांडुकवनमा होय. जो ते अधोलोकमा होय तो गर्ता-अधोलोकग्रामादिमा के गुफामा होय, तथा सहरणने आश्रयी पातालकलशमा के भवनमा (भवनवासि देगेण रहेटाणमा) होय, जो ते तिर्यग्लोकमा होय तो ते पंदर कर्मभूमिमा होय, अने सहरणने आश्रयी अदी द्वीप अने समुद्रोना एक भागमा होय.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अश्रुत्वा केवलज्ञानी] एक समये केटला होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्ययी एक, वे, त्रण अने उक्कटथयी दस होय. माटे हे गौतम ! ते हेतुयी एम कह्युं छे के, केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना कोइ जीवने केवलिए कहेल धर्म-श्रवणनो लाभ थाय अने केवली पासेयी सामब्ब्या शिवाय कोइ जीवने केवलप्रणीत धर्म श्रवणनो लाभ न थाय, यावत् कोइ जीव केवलज्ञानने उत्पन्न करे अने कोइ जीव केवलज्ञानने न उत्पन्न करे.

३३. सोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? [उ०] गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा, जाव अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं, एवं जा चेव असोच्चाए वत्तद्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियद्वा, नवरं अभिलावो 'सोच्चे'त्ति, सेसं तं चेव निवरसेसं, जाव जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं यओवसमे कडे भवति, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा, जाव उवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं वुज्जेज्जा, जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।

३४. [प्र०] तस्स णं अट्टमंअट्टमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइमइयाए, तद्देव जाव गवेसणं करेमाणस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं ओहिनाणेणं समुप्पत्तेणं जट्टप्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जातिभागं, उच्चोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ ।

३५. [प्र०] से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! छसु लेसासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए, जाव सुकलेस्साए०

३६. [प्र०] से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा; तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिवोहियनाण—सुयनाण—ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होज्जमाणे आभिणिवोहियनाण—सुयणाण—ओहिणाण—मणपज्जवणाणेसु होज्जा ।

३७. [प्र०] से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? [उ०] एवं जौगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउयं च पयाणि सद्याणि जहा असोच्चाए तद्देव भाणियद्वाणि ।

३८. [प्र०] से णं भंते ! किं सवेदए ? पुच्छा [उ०] गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ।

३३. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी [ धर्म ] साभळीने कोइ जीव केवलिप्ररूपित धर्म प्राप्त करे ? [उ०] हे गौतम ! केवलज्ञानी पासेयी यावत् साभळीने कोइ जीव केवलिप्ररूपित धर्मने प्राप्त करे अने कोइ जीव न करे. ए प्रमाणे यावत् 'असोच्चा'नी जे वक्तव्यता छे ते ज वक्तव्यता 'सोच्चा' ने पण कहेवी. परन्तु अही, 'सोच्चा' एवो पाठ कहेवो. बाकी सर्व पूर्वे कला प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे जीवे मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मोने क्षयोपशम कर्यो छे, अने जे जीवे केवलज्ञानावरणीय कर्मोने क्षय कर्यो छे ते जीवने केवली पासेयी यावत् तेनी उपासिका पासेयी केवलीए कहेल धर्मनो लाभ थाय, अने ते शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे, यावत् केवलज्ञानने प्राप्त करे.

केवलदि पासेयी धर्म साभळीने कोइ धर्मने पामे अने कोइ न पामे इत्यादि.

३४. ( केवलज्ञानी वगैरे पासेयी धर्म साभळीने सम्यग्दर्शनादि जेने प्राप्त थयेल छे एवा ) तेने निरन्तर अट्टम तप करवा वडे आत्माने भावित करता, प्रकृतिनी भद्रतायी तेमज यावत् मार्गनी गवेपणा करता अवधिज्ञान उत्पन्न थाय छे. अने ते उत्पन्न थएल अवधिज्ञान वडे जघन्ययी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्टयी अलोकने विषे लोकप्रमाण असंख्य खंडोने जाणे छे अने जुए छे.

केवत्याभिप्रायेयी धर्म अवन कर्तने सम्यग्दर्शनादिपुरुष जीवने अवधिज्ञाना दिनी प्राप्ति.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! ते [ अवधिज्ञानी ] जीव केटली लेस्याओमा वर्ततो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते \*छ ए लेस्यामा वर्ततो होय छे, ते आ प्रमाणे—कृष्णलेस्या, यावत् शुक्कलेस्या.

लेस्या-

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ते [ अवधिज्ञानी ] केटला ज्ञानमा वर्ततो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते त्रण के चार ज्ञानमा होय. जो त्रण ज्ञानमा होय तो आभिनिवोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानमा होय, जो चार ज्ञानमा होय तो ते आभिनिवोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानमा होय.

ज्ञान

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ते [ अवधिज्ञानी ] सयोगी होय के अयोगी होय ? [उ०] पूर्वे कला प्रमाणे योग, उपयोग, सघयण, सस्थान, उंचाइ, अने आयुप् ए वधा जेम 'असोच्चा' ने कला ( सू० १२-२० ) तेम अहीं कहेवा.

योग

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( अवधिज्ञानी ) शुं वेदसहित होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! वेदसहित होय के वेदरहित पण होय.

वेद-

१ जघेव क-ख । २ सधेव क-ख । ३ जोगोवओ- ग-घ-ङ ।

३५ \*यद्यपि त्रण प्रशस्त एवी भावलेस्यानां ज ज्ञान प्राप्त थाय छे, तो पण द्रव्यलेस्यानी अपेक्षाए छ ए लेस्यामां तं अवधिज्ञानी होय छे.—टी.च.



३९. [प्र०] जइ अवेदप होजा किं उचसंतवेदप होजा, खीणवेदप होजा ? [उ०] गोयमा ! नो उचसंतवेदप होजा, खीणवेदप होजा ।

४०. [प्र०] जइ सवेदप होजा किं इत्थीवेदप होजा, पुरिसवेदप होजा, नपुंसगवेदप होजा, पुरिस-नपुंसगवेदप होजा ? [उ०] गोयमा ! इत्थीवेदप वा होजा, पुरिसवेदप वा होजा, पुरिस-नपुंसगवेदप वा होजा ।

४१. [प्र०] से णं भंते ! किं सकसाई होजा, अकसाई होजा ? [उ०] गोयमा ! सकसाई वा होजा, अकसाई वा होजा ।

४२. [प्र०] जइ अकसाई होजा किं उचसंतकसाई होजा, खीणकसाई होजा ? [उ०] गोयमा ! नो उचसंतकसाई होजा, खीणकसाई होजा ।

४३. [प्र०] जइ सकसाई होजा से णं भंते ! कतिमु कसापसु होजा ? [उ०] गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा पकम्मि वा होजा । चउसु होजमाणे चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होजा, तिसु होजमाणे तिसु-संजलणमाण-माया-लोभेसु होजा, दोसु होजमाणे दोसु-संजलणमाया-लोभेसु होजा, पगम्मि होजमाणे पगम्मि-संजलणलोभे होजा ।

४४. [प्र०] तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंयंजा; एवं जहा असोचाप तद्देव जाव केवलवरणाण-दंसणे समुप्पज्जइ ।

४५. [प्र०] से णं भंते ! केवलपन्नत्तं धम्मं आयवेज वा, पन्नवेज वा, परूवेज वा ? [उ०] हंता, आयवेज वा, पन्नवेज वा, परूवेज वा ।

४६. [प्र०] से णं भंते ! पद्यावेज वा, मुंडावेज वा ? [उ०] हंता, गोयमा ! पद्यावेज वा, मुंडावेज वा ।

४७. [प्र०] तस्स णं भंते ! सिस्ता वि पद्यावेज वा, मुंडावेज वा ? [उ०] हंता, पद्यावेज वा, मुंडावेज वा ।

उपशातवेद के क्षीणवेद होय ?

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित होय तो शुं ते उपशातवेदवाळो होय के क्षीणवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशात-वेदवाळो न होय, पण क्षीणवेदवाळो होय.

स्त्रीवेदादि

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित होय तो शुं ते स्त्रीवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय, नपुंसकवेदवाळो होय के पुरुष-नपुंसकवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय के पुरुषनपुंसकवेदवाळो पण होय.

नक्रपायी के अक्रपायी ?

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्जानीं) शुं सकपायी होय के अक्रपायी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सकपायी होय के अक्रपायी पण होय.

उपशान के क्षीणकपायी ?

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते अक्रपायी होय तो शुं उपशातकपायी होय के क्षीणकपायी होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशान-कपायी न होय, पण क्षीणकपायी होय.

केटला कपायो होय ?

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जो सकपायी होय तो ते केटला कपायोमा होय ? [उ०] हे गौतम ! ते चार कपायोमा, त्रण कपायोमा, वे कपायोमा के एक कपायमा होय. जो चार कपायोमा होय तो संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभमा होय. जो त्रण कपायोमा होय तो संज्वलन मान, माया अने लोभमा होय. जो वे कपायोमा होय तो संज्वलन माया अने लोभमा होय. अने जो एक कपायमा होय तो एक संज्वलन लोभमा होय.

अध्यवसायो.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! तेने केटला अध्यवसायो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने असंख्यात अध्यवसायो कहा छे. ए प्रमाणे जेम 'असोच्चा' ने कह्युं (सु. २५) तेम यावत् 'तेने श्रेष्ठ केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थाय छे' त्या सुधी कहेवु.

धर्मोपदेश.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवलज्ञानीं) केवलिए कहेला धर्मने कहे, जणावे, प्ररूपे ? [उ०] हा, गौतम ! ते किवल्लिप्रवस वर्मने ) कहे, जणावे, अने प्ररूपे.

प्रव्रज्या आपे.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! ते कोइने प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! ते प्रव्रज्या आपे-दीक्षा आपे.

तेना शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! तेना (सोच्चा केवलज्ञानीं) शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! तेना शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे-दीक्षा आपे.

४८. [प्र०] तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि पद्दावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] हंता, पद्दावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ।  
 ४९. [प्र०] से णं भंते ! सिज्जति, बुज्जति, जाव अंतं करेद ? [उ०] हंता, सिज्जति, जाव अंतं करेति ।  
 ५०. [प्र०] तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्जंति, जाव अंतं करेति ? [उ०] हंता, सिज्जंति, जाव अंतं करेति ।  
 ५१. [प्र०] तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि सिज्जंति, जाव अंतं करेति ? [उ०] एवं चेव जाव अंतं करेति ।  
 ५२. [प्र०] से णं भंते ! किं उद्दं होज्जा ? [उ०] जहेव असोच्चाप, जाव तदेकदेसभाए होज्जा ।  
 ५३. [प्र०] ते णं भंते ! एगसमए णं केवइया होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एको वा, दो वा, तिमि वा, उक्को-  
 सेणं अट्टसयं, से तेण्डुणं गोयमा ! एवं बुच्चति-‘सोच्चा णं केवलस्स वा, जाव केवल्लिउवासियाए वा, जाव अत्थेगतिए  
 ण्वलनानं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनानं णो उप्पाडेज्जा’ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

### नवमसए एगतीसइमो उद्देशो समत्तो ।

४८. [प्र०] हे भगवन् ! तेना प्रशिष्यो पण प्रत्रय्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! प्रत्रय्या आपे, दीक्षा आपे.

प्रशिष्यो पण  
प्रत्रय्या आपे.  
सिद्ध धाय.

४९. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( सोच्चा केवली ) सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखो अन्त करे ? [उ०] हा गौतम ! ते सिद्ध  
 थाय, यावत् सर्व दुःखो नाश करे.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! तेना शिष्यो पण सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखो अन्त करे ? [उ०] हा, गौतम ! सिद्ध थाय, यावत् सर्व  
 दुःखो नाश करे.

शिष्यो पण  
सिद्ध धाय.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! तेना प्रशिष्यो पण सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखो अन्त करे ? [उ०] ए प्रमाणे यावत् सर्व दुःखो  
 अनिरंतरे.

प्रशिष्यो पण  
सिद्ध धाय.

५२. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( सोच्चा केवली ) शुं ऊर्वलोकमा होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम ‘असोच्चा’ केवली सर्वे कहुं ( सू.  
 ३१.) ते प्रमाणे जाणवु, यावत् [ अढी द्वीप समुद्र के ] तेना एक भागमा होय.

शु ऊर्वलोकमा होय  
इत्यादि.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( सोच्चा केवली ) एक समयमा केटला होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक समयमा जघन्यथी एक, वे के  
 त्रण होय, अने उक्कटथी एक सो आठ होय. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के, ‘केवली पासेयी यावत् केवल्लिनी उपासिका-  
 पासेयी साम्भीने यावत् कोइ जीव केवल्लज्ञानने उपजावे अने कोइ जीव केवल्लज्ञानने न उपजावे.’ हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् !  
 ते एमज छे. [ एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे. ]

एकमयमा  
सख्या.

### नवम शतके एकत्रीशमो उद्देशक समाप्त.

## वत्तीसइमो उद्देशो.

१. तेषां कालेणं तेषां समणं वाणियग्गामे णामं नयरे ह्येत्था, । वचओ । वृत्तिपलासए चेइए । सामी समोसडे । परिखा निग्गया । धम्मो कहियो । परिखा पड्डगया । तेषां कालेणं तेषां समणं पासावच्चिजे गंगेए णामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छट, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वेदासी-

२. [प्र०] संतरं भंते ! नेरइया उववज्जति, निरंतरं नेरइया उववज्जति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जति ।

३. [प्र०] संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जति, निरंतरं असुरकुमारा उववज्जति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जति; एवं जाव थणियकुमारा ।

४. [प्र०] संतरं भंते ! पुढविक्काटया उववज्जति, निरंतरं पुढविक्काटया उववज्जति ? [उ०] गंगेया ! नो संतरं पुढविक्काटया उववज्जति, निरंतरं पुढविक्काटया उववज्जति; एवं जाव वणस्सट्ठकाटया, वेदंदिआ जाव वेमाणिया पने जहए जेउया ।

५. [प्र०] संतरं भंते ! नेरइया उववज्जति, निरंतरं नेरइया उववज्जति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जति; एवं जाव थणियकुमारा ।

## वत्तीसइमो उद्देशक.

वाणियग्गाम

गणिवना प्रओ

नैरयिको नान्तर के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ?

असुरकुमार

पृथिवीकायिको. वेदन्द्रियो यावत् वेमानिको.

नैरयिको अने यावत् न्वनित्तुमारु सा-न्तर अने निरन्तर च्यवन

१. ते काले, अने ते समये वाणियग्गाम नामे नगर हतुं. वर्णन. वृत्तिपलासा नामे चैत्त हतुं. श्रीमदावीर स्वामी समवसर्पा. पर्यट् वाटया निकळी. धर्मोपदेश कर्यो. पर्यट् विसर्जित थइ. ते काले-ते समये श्रीपार्वप्रसुना शिष्य गागेय नामे अनगार ज्या श्रमण भगवान् महावीर विराजमान हता त्या आठ्या, आठ्याने श्रमण भगवंत महावीरनी पामे थोडे दूर वेसीने तेणे श्रमण भगवंत महावीरने ए प्रमाणे करुं-

२. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको सातर (अन्तरसहित) उत्पन्न थाय छे के निरन्तर (अन्तर शिवाय) उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गागेय ! नैरयिको सातर पण उत्पन्न थाय छे अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारो सातर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गागेय ! असुरकुमारो सातर पण उत्पन्न थाय छे, अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तानिकुमारो सुधी जाणवुं.

४. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गागेय ! पृथिवीकायिक जीवो सान्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक जीवो सुधी जाणवुं. वेदन्द्रिय जीवोथी मांडी यावत् वेमानिको नैरयिकोनी पठे (सू० २) जाणवा.

५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको सातर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? [उ०] हे गागेय ! नैरयिको सातर पण च्यवे छे अने निरन्तर पण च्यवे छे ए प्रमाणे यावत् स्तानिकुमार सुधी जाणवुं.

१ अयं पाठो नास्ति च । २ -पलासे चे-घ-ट । ३ -गच्छत्ता ग-घ-ड । ४ वयासी ग-घ-ट । ५ सांतर क-ख । ६ उववट्ट-घ ।

२. \* जे उत्पत्तिमा समयादिकालतु अन्तर-व्यवधान होय ते मान्तर कहेवाय छे तेमा एकेन्द्रियो प्रतिममय उत्पन्न थता होवाथी तेओ नान्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरन्तर उपजे छे. ते शिवाय वीजा जीवोनी उत्पत्तिमा अन्तरनी सम्य होवाथी तेओ सान्तर अने निरन्तर-ए बने प्रकार उपजे छे —दीक्षा.

६. [प्र०] संतरं भंते ! पुढविकाइया उव्वट्ठंति—पुच्छा । [उ०] गंगेया ! णो संतरं पुढविकाइया उव्वट्ठंति, निरंतरं पुढविकाइया उव्वट्ठंति; एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं, निरंतरं उव्वट्ठंति ।

७. [प्र०] संतरं भंते ! वेइंदिया उव्वट्ठंति, निरंतरं वेइंदिया उव्वट्ठंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि वेइंदिया उव्वट्ठंति, निरंतरं पि वेइंदिया उव्वट्ठंति, एवं जाव वाणमंतरा ।

८. [प्र०] संतरं भंते ! जोइसिया चयंति—पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति; एवं जाव वेमाणिया वि ।

९. [प्र०] कइविहे णं भंते ! पवेसणए पन्नत्ते ? [उ०] गंगेया ! चउद्विहे पवेसणए पन्नत्ते, तं जहा—नेरइयपवेसणए, १तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ।

१०. [प्र०] नेरइयपवेसणए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? [उ०] गंगेया ! सत्तविहे पन्नत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए, जाव अहेसत्तमापुढविनेरतियपवेसणए ।

११. [प्र०] एगे णं भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

१२. [प्र०] दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुय-

६. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिक जीवो सातर च्यवे छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! पृथिवीकायिक जीवो निरंतर च्यवे छे पण सातर च्यवता नथी. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक जीवो सान्तर च्यवता नथी, पण निरन्तर च्यवे छे.

पृथिवीकायिकादिउ  
सान्तर के निरन्तर  
च्यवन

७. [प्र०] हे भगवन्! वेइन्द्रिय जीवो सातर च्यवे छे के निरंतर च्यवे छे ? [उ०] हे गागेय ! वेइन्द्रिय जीवो सांतर पण च्यवे छे अने निरन्तर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वानव्यन्तर सुधी जाणवुं.

वेइन्द्रियादि.

८. [प्र०] हे भगवन्! ज्योतिपिक देवो सांतर च्यवे छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! ज्योतिपिक देवो सांतर पण च्यवे छे अने निरन्तर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक देवो सुधी जाणवुं.

ज्योतिपिक,

९. [प्र०] हे भगवन्! \*प्रवेशनक (उत्पत्ति) केटला प्रकारे कहेल छे ? [उ०] हे गागेय ! प्रवेशनक चार प्रकारे कहां छे. ते आ प्रमाणे—१ नैरयिकप्रवेशनक, २ तिर्यचयोनिप्रवेशनक, ३ मनुष्यप्रवेशनक अने ४ देवप्रवेशनक.

प्रवेशनक

१०. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गागेय ! सात प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे—१ रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, यावद् ७ अध.सप्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनक.

नैरयिकप्रवेशनक

११. [प्र०] हे भगवन्! एक नारक जीव नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो शुं १ रत्नप्रभापृथिवीमा होय, २ शर्कराप्रभापृथिवीमां होय के यावद् ७ अध.सप्तमपृथिवीमां होय ? [उ०] हे गागेय ! ते १ रत्नप्रभापृथिवीमां पण होय, यावद् ७ अध.सप्तमपृथिवीमां पण होय.

एक नैरयिक

१२. [प्र०] हे भगवन्! वे नारको नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करता शुं रत्नप्रभापृथिवीमां उत्पन्न थाय के यावद् अध.सप्तमपृथिवीमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गागेय ! ते वने १ रत्नप्रभापृथिवीमां होय, के यावद् ७ अध.सप्तमनरकपृथिवीमां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक वालुकाप्रभापृथिवीमां होय. यावत् एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक अध.सप्तमनरकपृथिवीमां होय. [३ एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक पंकप्रभापृथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक धूमप्रभापृथिवीमां होय ५ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःप्रभापृथिवीमां होय.

वे नैरयिक.

१ तिरियजो— ग-घ ।

९ \* कीची गतिमाथी च्यवीने विजातीय गतिमा जीवनो प्रवेश-उत्पाद यवो ते प्रवेशनक कहेवाय छे —टीका

११ † अहीं एक नारकना रत्नप्रभादि सात पृथिवीने आश्रयी सात विकल्प थाय छे.

१२ ‡ वे नारकोना अठ्ठावीश विकल्पो थाय छे तेमा एक एक पृथिवीमा वने नारकोनी उत्पत्तिने आश्रयी सात भागा थाय छे, तथा वे पृथिवीने विषे एक एक नारकनी उत्पत्ति वडे द्विकसयोगी एकवीश भागा थाय छे

¶ मूल सूत्रपाठमा नहि आपेला भंगो थावा [ ] कोष्टरुनी अदर आपेला छे अहीं त्रीजा भंगथी माडी दृष्टा भंगसुधीना भंगो आप्या छे.

प्यभाए होजा, जाव अहवा एगे सकारप्यभाए पगे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे वालुयप्यभाए एगे पंरूपभाए होजा; एवं जाव अहवा एगे वालुयपभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । एवं एगेकत पुठनी छट्टेयघा, जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ।

१३. [प्र०] तिति भंते ! नेरुय्या नेरुय्यपवेसणणं पचिसमाणा किं रयणपभाए होजा, जाव अहेसत्तमाए होजा ? [उ०] गंगेया ! रयणपभाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणपभाए दो सकारपभाए होजा, जाव अहवा एगे रयणपभाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणपभाए एगे सकारपभाए होजा, जाव अहवा दो रयणपभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे सकारपभाए दो वालुयपभाए होजा; जाव अहवा एगे सकारपभाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो सकारपभाए एगे वालुयपभाए होजा, जाव अहवा दो सकारपभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । एवं जहा सकारपभाए वत्तवथा भणिया, तहा सहपुठवीणं भाणियधं, जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ।

६ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमा होय अने एक तम.तम प्रभापृथिवीमा होय. ए रीते रत्नप्रभा साथे छ विकल्प थाय छे.] १ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमा होय अने एक वालुकाप्रभापृथिवीमा होय यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामा होय अने एक अथ सप्तम नरकपृथिवीमा होय. [२ एक शर्कराप्रभापृथिवीमा होय अने एक पकप्रभापृथिवीमा होय, ३ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमा होय अने एक धूमप्रभापृथिवीमा होय, ४ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमा होय अने एक तम.प्रभापृथिवीमा होय, ५ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमा होय अने एक तम तमापृथिवीमा होय. ए प्रमाणे पाच विकल्प शर्कराप्रभा साथे थाय छे.] १ अथवा एक वालुकाप्रभामा होय अने एक पंरूपभामा होय. [२ अथवा एक वालुकाप्रभामा होय अने एक धूमप्रभामा होय, ३ अथवा एक वालुकाप्रभामा होय अने एक तम.प्रभामा होय.] ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक वालुकाप्रभामा होय अने एक अथ.सप्तम नरकपृथिवीमा होय. ए प्रमाणे आगल आगउर्ना एक एक पृथिवी छोटी देग, यावत् एक तमामा होय अने एक अथ.सप्तम नरकमा होय. [एटले वालुकाप्रभा साथे चार विकल्प थाय छे. १ अथवा एक पंरूपभामा होय अने एक धूमप्रभामा होय. २ अथवा एक पकप्रभामा होय अने एक तम.प्रभामा होय, ३ अथवा एक पंरूपभामा होय अने एक तम-तमामा होय. ए रीते पकप्रभा साथे त्रण विकल्प थाय छे. १ अथवा एक धूमप्रभामा होय अने एक तम.प्रभामा होय, २ अथवा एक धूम-प्रभामा होय अने एक तम.तमामा होय. ए प्रमाणे धूमप्रभा साथे वे विकल्प थाय छे. १ अथवा एक तम प्रभामा होय अने एक तमत्तम-प्रभामा होय. ए रीते तम.प्रभा साथे एक विकल्प थाय छे\*]

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेगनकवडे प्रवेग करता त्रण नैरयिको शु रत्नप्रभामा होय के यावत् अथ.सप्तम पृथिवीमा होय [उ०] हे गंगेय ! ते त्रण नैरयिको १ रत्नप्रभामा पण होय अने यावत् ७ अथ.सप्तम पृथिवीमा पण होय. १ अथ.सप्तम रत्नप्रभामा अने वे शर्कराप्रभामा होय. यावत् ६ एक रत्नप्रभामा होय अने वे अथ सप्तम नरकमा होय. [ए प्रमाणे १-२ ना रत्न.प्रभा साथे अनुक्रमे वीजी नरकपृथिवीओनो सयोग करना छ विकल्प थाय.] १ अथवा वे रत्नप्रभामा अने एक शर्कराप्रभामा होय. यावत् ६ वे रत्नप्रभामा होय अने एक अथ सप्तम नरकपृथिवीमा होय [ए प्रमाणे २-१ ना वीजा छ विकल्पो थाय.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामा अने वे वालुकाप्रभामा होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामा अने वे अथ सप्तम नरकमा होय. [ए रीते १-२ ना पाच विकल्प थाय.] १ अथवा वे शर्कराप्रभामा अने एक वालुकाप्रभामा होय. यावत् ५ अथवा वे शर्कराप्रभामा अने एक अथ.सप्तम पृथिवीमा होय [ए प्रमाणे २-१ ना पाच विकल्प थाय.] जेम शर्कराप्रभानी वक्तव्यता करी तेम साते पृथिवीओनी कहेवी. [ते आ प्रमाणे-१ एक वालुकाप्रभामा अने वे पकप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक वालुकाप्रभामा अने वे तमत्तमापृथिवीमा होय. एवी रीते १-२ ना चार विकल्प थाय. १ अथवा वे वालुकाप्रभामा होय अने एक पंरूपभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ४ वे वालुकाप्रभामा होय अने एक तमत्तमामा होय. ए प्रमाणे २-१ ना चार विकल्प थाय. १ अथवा एक पकप्रभामा होय अने वे धूमप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ३ एक पंरूप-भामा होय अने वे तम.तमाप्रभामा होय. ए रीते १-२ ना त्रण विकल्प थाय. १ अथवा वे पंरूपभामा होय अने एक धूमप्रभामा होय, ए प्रमाणे यावत् ३ वे पंरूपभामा होय अने एक तमत्तमामा होय. ए रीते २-१ ना त्रण विकल्प थाय. १ अथवा एक धूमप्रभामा होय अने वे तम.प्रभामा होय. २ अथवा एक धूमप्रभामा होय अने वे तमत्तमाप्रभामा होय. एम १-२ ना वे विकल्पो थाय. १ अथवा वे धूमप्रभामा होय अने एक तम प्रभामा होय. २ अथवा वे धूमप्रभामा होय अने एक तमत्तमां होय. एम २-१ ना वे विकल्प थाय. १ अथवा एक तम.प्रभामा होय अने वे तम.तमाप्रभामा होय.] यावत् १ अथवा वे तम.प्रभामा होय अने एक तमत्तमाप्रभामा होय. [एम १-२, २-१ ना वे विकल्प थाय.]

१२ \* ए प्रमाणे वे नैरयिकोने आशयी द्विकसयोगी ६-५-४-३-२-१ भागा मळीने एस्वीय भागओ थाय छे, तेनी साथे एकसयोगी सात भागा मेळवता बुल अश्यादीय भागा थाय छे.

१३. † त्रणे नैरयिको रत्नप्रभादि साते नरकपृथिवीमा उत्पन्न थाय, माटे त्रण नैरयिकोने आशयी एरुसयोगी सात विकल्पो थाय छे

† त्रण नैरयिकोने द्विकसयोगी १-२ अने २-१-ए वे विकल्प थाय छे तेमा १-२ ना रत्नप्रभानी साथे वीजी वधी पृथिवीओनो अनुक्रमे योग करता थाय, अने तेवी रीते २-१ ना पण छ विकल्पो मळीने चार विकल्पो थाय शर्कराप्रभा नावे पाच पाच मळीने दश, वालुकाप्रभा साथे आठ, पक-छ, धूमप्रभा साथे चार, अने तम प्रभा साथे वे-ए प्रमाणे द्विकसयोगी वेंताळीय भागाओ थाय छे

† नैरयिको  
विकल्पो  
द्विकसयोगी वेंता  
लीय विकल्पो.



एगो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगो वाळुयप्पमाए एगो तमाए एगो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगो पंकप्यमाए एगो धूमप्यमाए एगो तमाए होजा; अहवा एगो पंकप्यमाए एगो धूमप्यमाए एगो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगो पंकप्यमाए एगो तमाए एगो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगो धूमप्यमाए एगो तमाए एगो अहेसत्तमाए होजा ।

१४. [प्र०] चत्तारि मंते ! नेरदया नेरदयपवेसणणं पविसमाणा किं रयणप्यमाए होजा ?—पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्यमाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा ।

अहवा एगो रयणप्यमाए तिन्नि सक्करप्यमाए होजा; अहवा एगो रयणप्यमाए तिन्नि वाळुयप्पमाए होजा; एवं जाव अहवा एगो रयणप्यमाए तिन्नि अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्यमाए दो सक्करप्यमाए होजा; एवं जाव अहवा दो रयणप्यमाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा तिन्नि रयणप्यमाए एगो सक्करप्यमाए होजा; एवं जाव अहवा तिन्नि रयणप्यमाए एगो अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगो सक्करप्यमाए तिन्नि वाळुयप्पमाए होजा; एवं जहेच रयणप्यमाए उवरिमाहिं समं चारियं तह्हा सक्करप्यमाए वि उवरिमाहिं समं चारियदं; एवं पक्केकाए समं चारियदं, जाव अहवा तिन्नि तमाए एगो अहेसत्तमाए होजा ६३ ।

अहवा एगो रयणप्यमाए एगो सक्करप्यमाए दो वाळुयप्पमाए होजा; अहवा एगो रयणप्यमाए एगो सक्करप्यमाए दो पंकप्यमाए होजा; एवं जाव एगो रयणप्यमाए एगो सक्करप्यमाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगो रयणप्यमाए दो सक्करप्यमाए

अने एक अथ सप्तम नरकमा होय. [एम पंक० साथे त्रण विकल्प यथा.] १ अथवा एक धूमप्रभामा एक तम.प्रभामा अने एक अथ.सप्तम नरकमा होय. [धूम० साथे एक विकल्प यथा. १५-१०-६-३-१-ए वथा मळीने त्रिकसंयोगी पात्रीम विकल्प यथा. ए प्रमाणे त्रण नैरयिकोने आश्रयी एक सयोगी ७, द्विकसंयोगी ४२, अने त्रिकसंयोगी ३५ मळीने कुळ ८४ विकल्प यथा छे.]

१४. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता चार नैरयिको शु रत्नप्रभामा होय ?—इत्यादि प्रश्न [उ०] हे गागेय ! ते चारे १ रत्नप्रभामा पण होय, अने यावत् ७ अथःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [ए प्रमाणे एकसंयोगी सात विकल्प यथा.]

१ अथवा एक रत्नप्रभामा अने त्रण शर्कराप्रभामा होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा अने त्रण वाळुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा एक रत्नप्रभामां अने त्रण अथःसप्तम पृथिवीमा होय. [एम १-३ ना छ विकल्प यथा.] १ अथवा वे रत्नप्रभामा अने वे शर्कराप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा वे रत्नप्रभामा अने वे अथःसप्तम पृथिवीमा होय. [ए प्रमाणे वीजी रीते २-२ ना छ विकल्प यथा.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामा अने एक शर्कराप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा त्रण रत्नप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभामा उपरनी नरकपृथिवीओ साथे संचार (योग) करीं तेम शर्कराप्रभामा पण उपरनी नरकपृथिवीओ साथे संचार करवो. एवी रीते एक एक नरक पृथिवीओ साथे योग करवो. यावत् अथवा त्रण तमां अने एक अथःसप्तम नरकमा होय.

१ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा अने वे वाळुकाप्रभामा होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा अने वे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने वे अथःसप्तम नरकपृथिवीमा होय. [ए रीते १-१-२ ना

१ वाळुयाए ङ । २ पंकाए ङ । ३ धूमाए ङ । ४ जाव अहवा ए-ए ।

१४ \* चार नैरयिकमा १-३, २-२, ३-१-ए प्रमाणे द्विकयोगी त्रण निकल्प थाय छे तेमा रत्नप्रभा नाथे वानीनी पृथिवीओनो योग करता १-३ ना छ भागा, ए प्रमाणे २-२ ना छ, अने ३-१ ना छ-ए रीते अटार भागा थाय छे. शर्कराप्रभानी साथे ते प्रमाणे त्रण विकल्पना ५-५-५ मळीने पदर विकल्प थाय छे. एम वाळुकाप्रभानी नाथे ४-४-४ मळीने चार विकल्प, पंकप्रभानी नाथे ३-३-३ मळीने नव विकल्प, धूमप्रभानी साथे २-२-२ मळीने छ विकल्प अने तम.प्रभानी नाथे १-१-१ मळीने त्रण विकल्प-सर्व मळीने द्विकसंयोगी ६३ विकल्प थाय छे तेमा रत्नप्रभामा अटार भागाओ उपर मूळ अनुवादमं कथा छे. ए प्रमाणे शर्कराप्रभा साथे आगळनी पृथिवीओनो योग करता १-३ ना पाच विकल्प थाय छे. जेम के ए शर्करामा अने त्रण वाळुकामां होय. ए रीते २-२ ना पण पाच विकल्प थाय छे. जेम के वे शर्करामा अने वे वाळुकामा होय. ते प्रमाणे ३-१ ना पण पाच विकल्प थाय जेम के त्रण शर्करामा अने एक वाळुकामां होय आ रीते शर्कराप्रभामा पंदर विकल्प थाय वाळुकाप्रभा नाथे पंकप्रभादि पृथिवीओनो योग करता चार विकल्पो थाय, तेने पूर्वीक त्रण विकल्प साथे गुणता वार विकल्प थाय. तेमज पंकप्रभा साथे धूमप्रभादिनो योग करतां त्रण विकल्प थाय, तेने पूर्वीक त्रण विकल्प साथे गुणता नव विकल्प थाय. धूमप्रभा नाथे तम प्रभादिनो योग करता वे विकल्प थाय, तेने त्रण विकल्प साथे गुणतां छ विकल्प थाय. तम प्रभा साथे तम तम प्रभानो योग करता एक विकल्प थाय, तेने पूर्वीना त्रण विकल्प साथे गुणतां त्रण विकल्प थाय. ए रीते आगळनी पृथिवीओनो योग करता उपर कथा प्रमाणे रत्नप्रभामा १८, शर्करामा १५, वाळुकामा १२, पंकप्रभामा ९, धूमप्रभामा ६, अने तम प्रभामा ३ विकल्पो मळीने चार नैरयिकमा द्विकसंयोगी त्रैसठ विकल्पो (भाग्यो) थाय छे.

† चार नैरयिकमा त्रिकसंयोगी १०५ विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे—चार नैरयिकमा १-१-३, १-२-१ अने २-१-१-ए त्रण विकल्प थाय छे. हवे रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभा साथे वाळुकाप्रभादि आगळनी नरकपृथिवीओनो योग करता पाच भागा थाय छे, तेने पूर्वीक त्रण विकल्प साथे गुणता पंदर भागा थाय एज प्रकारे त्रणे विकल्पोना रत्नप्रभा अने वाळुकाप्रभा ए वनेनो वानीनी वीजी पृथिवीओ साथे सयोग करतां कुळ वार विकल्प थाय, रत्नप्रभा अने

चार नैरयिको.

द्विकसंयोगी त्रैसठ विकल्पो.

त्रिकसंयोगी विकल्पो.

एग्रे वालुयप्पभाए होजा; एवं जाव अहवा एग्रे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एग्रे अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए होजा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होजा, एवं जाव अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होजा । एवं एएणं गमएणं जहा तिण्हं तियंसंजोगो तहा भाणियच्चो; जाव अहवा दो धूमप्पभाए एग्रे तमाए एग्रे अहेसत्तमाए होजा १०५ ।

अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए एग्रे पंकप्पभाए होजा १; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए एग्रे धूमप्पभाए होजा २; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए एग्रे तमाए होजा ३; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए एग्रे अहेसत्तमाए होजा ४; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे पंकप्पभाए एग्रे धूमप्पभाए होजा ५, अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे पंकप्पभाए एग्रे तमाए होजा ६; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे पंकप्पभाए एग्रे अहेसत्तमाए होजा ७; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे धूमप्पभाए एग्रे तमाए होजा ८; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे धूमप्पभाए एग्रे अहेसत्तमाए होजा ९; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे सक्करप्पभाए एग्रे तमाए एग्रे अहेसत्तमाए होजा १०; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए एग्रे पंकप्पभाए एग्रे धूमप्पभाए होजा ११; अहवा एग्रे रयणप्पभाए एग्रे वालुयप्पभाए एग्रे पांच विकल्प थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा वे शर्कराप्रभामा अने एक वालुकाप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ५ एक रत्नप्रभामा वे शर्कराप्रभामा अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमा होय. [ एम १-२-१ ना पाच विकल्प थया. ] अथवा वे रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा अने एक वालुकाप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ५ वे रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमा होय. [ ए रीते २-१-१ ना पाच विकल्प थया, अने त्रणे विकल्पना मळीने पदर विकल्पो थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामां अने वे पंकप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा अने वे अधःसत्तम पृथिवीमा होय. ए प्रमाणे ए पाठवडे जेम त्रण नैरयिकनो त्रिकसंयोग कह्यो तेम चार नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कह्यो. यावत् अथवा १०५ वे धूमप्रभामा एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमा होय.

१ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा अने एक पंकप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामा अने एक धूमप्रभामा होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा अने एक तमः-पंकप्रभामां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमा होय. [ चार विकल्प थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक धूमप्रभामा होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तमःप्रभामा होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [ त्रण विकल्प थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तमःप्रभामा होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक अधःसत्तम पृथिवीमा होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक तमःप्रभामा अने एक अधःसत्तम पृथिवीमा होय. [ ए त्रण विकल्प थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक धूमप्रभामा होय २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक तमःप्रभामा होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामा अने एक अधः सत्तम नरकमा होय. [ त्रण विकल्प थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तमःप्रभामा होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक अधःसत्तम पृथिवीमा होय [ वे विकल्प थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक तमःप्रभामा अने एक अधःसत्तम पृथिवीमा होय. [ एक विकल्प थयो. ] १

चतु सनेगी  
३५ निकल्पो-

१ घ विनाऽन्यत्र जाव अ- । २ तियासंजो- क, तियजो- घ । ३ एव जाव अहवा ङ । ४ अहेसत्तमाए हो- ङ ।

पंकप्रभा ए चनेनो वाकीनी नरकपृथिवी साये संयोग करवाथी नव विकल्पो याय, रत्नप्रभा अने धूमप्रभा ए चनेनो वाकीनी पृथिवीओ साये संयोग करता छ विकल्पो थाय, तथा रत्नप्रभा अने तम प्रभा ए चनेनो तम तमःप्रभा साये संयोग करता त्रण विकल्प याय ए प्रमाणे रत्नप्रभाना संयोगवाळा १५, १२, ९, ६ अने ३ विकल्पो मळीने हुळ पीत्ताळीश विकल्पो याय छे वळी पूर्वोक्त त्रण विकल्पाना शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभानो वाकीनी पृथिवीओ साये संयोग करवाथी त्रार विकल्प थाय, तेज प्रमाणे शर्कराप्रभा अने पंकप्रभानो वाकीनी पृथिवीओ साये संयोग करता नव विकल्पो याय, शर्करा अने धूमप्रभानो वाकीनी पृथिवीओ साये संयोग करता छ विकल्प थाय, शर्कराप्रभा अने तम प्रभानो तम तम प्रभा साये संयोग करता त्रण विकल्पो याय १२-९-६-३ ए नव विकल्पो मळीने शर्कराप्रभाना संयोगवाळा कुल त्रीश विकल्पो याय छे हवे पूर्वोक्त त्रण विकल्पाना गालुका अने पंकप्रभानो वीजी पृथ्वीओ नाथे संयोग करता नव विकल्प थाय छे वालुका अने धूमप्रभानो वीजी पृथ्वीओ साये संयोग करता छ विकल्पो याय छे, वालुका अने तम प्रभानो तम तम प्रभा साये संयोग करता त्रण विकल्प थाय छे ९-६-३ ए वधा मळीने वालुकाप्रभाना संयोगवाळा अटार विकल्पो याय छे पंकप्रभा अने धूमप्रभानो वीजी पृथ्वीओ नाथे संयोग करता पूर्वोक्त त्रण विकल्पना छ विकल्पो थाय छे, पंकप्रभा अने तम प्रभानो तम तम प्रभा साये संयोग करता त्रण विकल्पो थाय छे. सर्व मळीने पंकप्रभाना संयोगवाळा नव विकल्पो थाय छे. हवे धूमप्रभा, तम प्रभा तथा तम तम प्रभानो संयोग करता पूर्वोक्त त्रण विकल्प नाथे वीजा त्रण विकल्प थाय छे. ए प्रकारे ४५, ३०, १८, ९, ३-ए वधा मळीने एकसो ने पाच विकल्प थाय छे.



पंकप्यभाण एने तमाए होजा १२ अहवा एने रयणप्यभाण एने वालुयप्यभाण एने पंकप्यभाण एने अहेसत्तमाए होजा १३; अहवा एने रयणप्यभाण एने वालुयप्यभाण एने धूमप्यभाण एने तमाए होजा १४; अहवा एने रयणप्यभाण एने वालुयप्यभाण एने धूमप्यभाण एने अहेसत्तमाए होजा १५; अहवा एने रयणप्यभाण एने वालुयप्यभाण एने तमाए एने अहेसत्तमाए होजा १६; अहवा एने रयणप्यभाण एने पंकप्यभाण एने धूमप्यभाण एने तमाए होजा १७; अहवा एने रयणप्यभाण एने पंकप्यभाण एने धूमप्यभाण एने अहेसत्तमाए होजा १८; अहवा एने रयणप्यभाण एने पंकप्यभाण एने तमाए एने अहेसत्तमाए होजा १९; अहवा एने रयणप्यभाण एने धूमप्यभाण एने तमाए एने अहेसत्तमाए होजा २०; अहवा एने सङ्करप्यभाण एने वालुयप्यभाण एने पंकप्यभाण एने धूमप्यभाण होजा २१। एवं जहा रयणप्यभाण उवग्गिमाओ पुढ्ढयीओ चारियाओ तहा सङ्करप्यभाण चि उवग्गिमाओ चारियाओ जाव अहवा एने सङ्करप्यभाण एने धूमप्यभाण एने तमाए एने अहेसत्तमाए होजा ३०। अहवा एने वालुयप्यभाण एने पंकप्यभाण एने धूमप्यभाण एने तमाए होजा ३१; अहवा एने वालुयप्यभाण एने पंकप्यभाण एने धूमप्यभाण एने अहेसत्तमाए होजा ३२; अहवा एने वालुयप्यभाण एने पंकप्यभाण एने तमाए एने अहेसत्तमाए होजा ३३; अहवा एने वालुयप्यभाण एने धूमप्यभाण एने तमाए एने अहेसत्तमाए होजा ३४; अहवा एने पंकप्यभाण एने धूमप्यभाण एने तमाए एने अहेसत्तमाए होजा ३५।

१५. [प्र०] पंच भंते ! नेरडया नेरडप्यवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्यभाण होजा-पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाण वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा ।

अहवा एने रयणप्यभाण चत्तारि सङ्करप्यभाण होजा; जाव अहवा एने रयणप्यभाण चत्तारि अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्यभाण तित्ति सङ्करप्यभाण होजा; एवं जाव अहवा दो रयणप्यभाण तित्ति अहेसत्तमाए होजा । अहवा तित्ति

अथवा एक रत्नप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक अध सत्तम पृथिवीमा होय. [ वे विकल्प थया. ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक पंकप्रभामा एक तम प्रभामा अने एक अध सत्तम नरकमा होय. [ एक विकल्प थयो ] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तम प्रभामा अने एक अध ममम नरकमा होय. [ एक विकल्प थयो. ए प्रमाणे वया मळीने रत्नप्रभामा संयोगवाळा ४-३-३-३-२-१-२-१-१-वीथ विकल्प थया. ] १ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक धूमप्रभामा होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभापृथिवीनो वीजी उपरनी पृथिवीओ साथे सचार (योग) कर्यो, तेम शर्कराप्रभा पृथिवीनो पण वीजी वधी उपरनी पृथिवीओ साथे योग करवो, "यावत् १० अथवा शर्कराप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तमामा अने एक अध सत्तम नरकमा होय. [ शर्कराणा संयोगवाळा दश विकल्प थया. ] १ एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक अध सत्तम पृथिवीमा होय ३ अथवा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा एक तम प्रभामा अने एक अध सत्तम पृथिवीमा होय. ४ अथवा एक वालुकाप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तमामा अने एक अध सत्तम नरकमा होय. [ ए प्रमाणे वालुकाप्रभामा संयोगवाळा चार विकल्प थया. ] १ अथवा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तम प्रभामा अने एक अध सत्तम नरकमा होय. [ ए प्रमाणे २०-१०-४-१ मळीने चतु संयोगी पात्रीथ विकल्प थया. अने सर्व मळीने चार नैरयिकने आश्रयी एकसंयोगी ७, द्विकसंयोगी ६३, त्रिकसंयोगी १०५ अने चतु संयोगी ३५ वया मळीने वसो दस विकल्पो थाय छे. ]

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पाच नैरयिको नैरयिकप्रवेगनवडे प्रवेग करता छुं रत्नप्रभामा होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! १ रत्नप्रभामा पण होय, अने यावत् ७ अध सत्तम पृथिवीमां पण होय. [ ए प्रमाणे एक संयोगी सात विकल्प थया. ]

\* १ अथवा एक रत्नप्रभामा अने चार शर्कराप्रभामा होय. यावत् ६ अथवा एक रत्नप्रभामा अने चार अध सत्तम नरकमां होय. [ ए प्रमाणे 'एक अने चार' विकल्पना रत्नप्रभा साथे वीजी पृथ्वीओनो योग करता छ भागा थाय. ] १ अथवा वे रत्नप्रभामा अने

१ संचारिया-ट । २ उचारिय-ड । ३ ग-घ-ङ विना मान्यत्र ।

\* १८ शर्कराप्रभामा संयोगवाळा वीजाधी माहीने दशमा विकल्प सुधी आ प्रमाणे-२ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक तम प्रभापृथिवीमा होय ३ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय (त्रण विकल्प थया) १ एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय २ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय ३ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय (त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय. २ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय ३ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तम प्रभामा होय (ए त्रण विकल्प थया.) अथवा १० एक शर्कराप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तमामां अने एक तमप्रभामा होय

\* १५ पाच नैरयिकना द्विकसंयोगी १-४, २-३, ३-२, ४-१-ए चार विकल्प थाय छे, तेने रत्नप्रभामा द्विकसंयोगी छ विकल्प साथे गुणतां चौवीथ भागा थाय शर्कराप्रभामा उपरनी पृथिवीओ साथे द्विकसंयोगी पाच विकल्प थाय, तेने पूर्वोक्त चार विकल्प साथे गुणता वीथ भागा थाय तेवी रीते

पाच नैरयिक

द्विकसंयोगी  
८ विकल्पो.

रयणप्पभाए ढो होजा; एवं जाव अहेसत्तमाए होजा । अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होजा; एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होजा । एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि समं चारेयद्वाओ; जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा; एवं एक्केकाए समं चारेयद्वाओ, जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होजा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होजा; एवं जाव त्रण शर्कराप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा वे रत्तप्रभामां अने त्रण अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [ ए रीते 'वे ने त्रण' विकल्पना छ भागा थया. ] १ अथवा त्रण रत्तप्रभामा अने वे शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ त्रण रत्तप्रभामां अने वे अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [ ए रीते 'त्रण ने वे' विकल्पना छ भागा थया. ] १ अथवा चार रत्तप्रभामा अने एक शर्कराप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा चार रत्तप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमा पण होय. [ एम 'चार ने एक' विकल्पना छ, अने वधा मळीने रत्तप्रभामा संयोगवाळा चोवीश विकल्प थया. ] १ अथवा एक शर्कराप्रभामा अने चार वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्तप्रभानी साथे वीजी उपरनी नरक पृथिवीओनो योग कर्यो, तेम शर्कराप्रभानी साथे उपरनी नरक पृथिवीओनो संयोग करवो. यावत् २० अथवा चार शर्कराप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. ए प्रमाणे [ वालुकाप्रभा वगैरे ] एक एक पृथिवीनी साथे योग करवो. यावत् अथवा चार तमामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमा होय.

१ \*अथवा एक रत्तप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्तप्रभामां एक शर्कराप्रभामा अने त्रण अधःसत्तम पृथिवीमा होय. [ ए प्रमाणे 'एक एक ने त्रण' विकल्पने आश्रयी पाच भागा थया. ] १ अथवा एक

त्रिकसंयोगी  
२१० विकल्पो.

१ दोभि ङ । २ संचारि- ङ । ३ उच्चारिय- ङ ।

वालुकाप्रभामा उपरनी पृथिवीओ साथे चार विकल्प थाय, तेने उपर कहेला चार विकल्प साथे गुणता सोल विकल्प थाय. पंकप्रभामा धूमप्रभादि पृथिवीओ साथे त्रण विकल्प थाय, तेने पूर्वना चार विकल्पे गुणता चार विकल्प थाय. धूमप्रभानी साथे तम प्रभादिनो योग करता वे विकल्प थाय, तेने पूर्वना चार विकल्पे गुणता आठ विकल्प थाय. तम प्रभा साथे तमतमानो योग करतां पूर्वना चार विकल्पना चार विकल्पो थाय. ए रीते २४, २०, १६, १२, ८ अने ४-ए वधा मळीने द्विकसंयोगी ८४ विकल्पो थाय छे.

\* १५. पाच नैरयिकना त्रिकसंयोगी छ विकल्प थाय छे, जेमके-१-१-३, १-२-२, २-१-२, १-३-१, २-२-१, ३-१-१. हवे सात नरकना त्रिकसंयोगी पात्रीश भंगो थाय छे, ते त्रयेकनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पने जोडता पांच नारकोने आश्रयी त्रिकसंयोगी बसो ने दश भागा थाय छे.

१ रत्तप्रभा,	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा.	९ रत्तप्रभा,	वालुकाप्रभा,	तम तमःप्रभा.
२ " "	" "	पंकप्रभा.	१० " "	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
३ " "	" "	धूमप्रभा.	११ " "	" "	तम प्रभा.
४ " "	" "	तमःप्रभा.	१२ " "	" "	तमःतमःप्रभा.
५ " "	" "	तमःतम प्रभा.	१३ " "	धूमप्रभा,	तम प्रभा.
६ " "	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	१४ " "	" "	तम तम प्रभा.
७ " "	" "	धूमप्रभा.	१५ " "	तम प्रभा,	" "
८ " "	" "	तमःप्रभा.			

आ पंदर भागाओने पूर्वोक्त छ विकल्पो साथे जोडता रत्तप्रभामा संयोगवाळा नेहुं विकल्पो थाय छे.

१ शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	६ शर्कराप्रभा,	पंकप्रभा,	तमःप्रभा.
२ " "	" "	धूमप्रभा.	७ " "	" "	तम तम प्रभा.
३ " "	" "	तमःप्रभा.	८ " "	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
४ " "	" "	तमःतम प्रभा.	९ " "	" "	तम तमःप्रभा.
५ " "	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	१० " "	तम प्रभा,	तम तम प्रभा.

आ दश भागाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करवाधी शर्कराप्रभामा संयोगवाळा साठ विकल्पो थाय छे.

१ वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	४ वालुकाप्रभा,	धूमप्रभा,	तम प्रभा.
२ " "	" "	तमःप्रभा.	५ " "	" "	तम तमःप्रभा.
३ " "	" "	तमःतमःप्रभा.	६ " "	तम प्रभा,	" "

आ छ भागाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करता वालुकाप्रभामा संयोगवाळा छत्रीश विकल्पो थाय छे.

१ पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तम प्रभा.	३ पंकप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतम प्रभा.
२ " "	" "	तमःतम प्रभा.			

आ त्रण भांगाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो संयोग करता पंकप्रभामा संयोगवाळा अटार विकल्पो थाय छे.

१ धूमप्रभा, तम प्रभा, तम तम प्रभा.  
आ छेत्ता भागानी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करता धूमप्रभामा संयोगवाळा छ विकल्पो थाय छे. ९०, ६०, ३६, १८, अवे ६-ए वधा मळीने पांच नैरयिकोने आश्रयी त्रिकसंयोगी बसो दस विकल्पो थाय छे.

અહવા ણે રચણપ્પમાણ દો સઙ્કરપ્પમાણ દો અદ્દેસત્તમાણ હોજા. અહવા ડો રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ દો વાલુયપ્પમાણ હોજા, પર્વં જાવ અહવા દો રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ દો અદ્દેસત્તમાણ હોજા. અહવા ણે રચણપ્પમાણ તિત્થિ સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ હોજા; પર્વં જાવ અહવા ણે રચણપ્પમાણ તિત્થિ સઙ્કરપ્પમાણ ણે અદ્દેસત્તમાણ હોજા. અહવા દો રચણપ્પમાણ દો સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ હોજા, પર્વં જાવ અદ્દેસત્તમાણ. અહવા તિત્થિ રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ હોજા; પર્વં જાવ અહવા તિત્થિ રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ ણે અદ્દેસત્તમાણ હોજા. અહવા ણે રચણપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ તિત્થિ પંકપ્પમાણ હોજા. પર્વં ણણં કામેણં જાત ચડણં તિયાસંજોગો મણિતો તદ્દા પંચણ્હ તિ તિયાસંજોગો માણિયલ્લો; નવરં તત્થ ણ્ણો સંચારિત્થ, ઇહ દોત્થિ, સેસં તં ચેવ, જાવ અહવા તિત્થિ ધૂમપ્પમાણ ણે તમાણ ણે અદ્દેસત્તમાણ હોજા.

અહવા ણે રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ દો પંકપ્પમાણ હોજા; પર્વં જાવ અહવા ણે રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ દો અદ્દેસત્તમાણ હોજા. અહવા ણે રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ દો વાલુયપ્પમાણ ણે પંકપ્પમાણ હોજા; પર્વં જાવ અદ્દેસત્તમાણ. અહવા ણે રચણપ્પમાણ દો સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ ણે પંકપ્પમાણ હોજા; પર્વં જાવ અહવા ણે રચણપ્પમાણ દો સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ ણે અદ્દેસત્તમાણ હોજા. અહવા દો રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ ણે પંકપ્પમાણ હોજા; પર્વં જાવ અહવા દો રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ ણે વાલુયપ્પમાણ ણે અદ્દેસત્તમાણ હોજા. અહવા ણે રચણપ્પમાણ ણે સઙ્કરપ્પમાણ ણે પંકપ્પમાણ દો ધૂમપ્પમાણ હોજા;

રત્તપ્રમામા વે ચર્કરાપ્રમામા અને વે વાલુકાપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૫ અથવા એક રત્તપ્રમામા વે ચર્કરાપ્રમામા અને વે અધ.સત્તમ નરકમા હોય. [ 'એક વે વે' ના વિકલ્પને આશ્રયી ૧ પાંચ ભંગ થયા. ] ૧ અથવા વે રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા અને વે વાલુકાપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૫ અથવા વે રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા અને વે અધ:સત્તમ નરકમા હોય. [ 'વે એક વે' વિકલ્પને આશ્રયી ૧ પાંચ ભંગ થયા. ] ૧ અથવા એક રત્તપ્રમામા ત્રણ ચર્કરાપ્રમામા અને એક વાલુકાપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૫ અથવા એક રત્તપ્રમામા ત્રણ ચર્કરાપ્રમામા અને એક અધ:સત્તમમા હોય. [ 'એક ત્રણ એક' ને આશ્રયી પાંચ ભંગ થયા. ] ૧ અથવા વે રત્તપ્રમામા વે ચર્કરાપ્રમામા અને એક વાલુકાપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૫ વે રત્તપ્રમામા વે ચર્કરાપ્રમામા અને એક અધ.સત્તમમા હોય. [ 'વે વે એક' ને આશ્રયી પાંચ ભંગ થયા. ] ૧ અથવા ત્રણ રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા અને એક વાલુકાપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૫ અથવા ત્રણ રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા અને એક અધ:સત્તમમા હોય. [ 'ત્રણ એક એક' ની અપેક્ષા ૫ પાંચ ભંગ થયા. ] (૩૦). ૧ અથવા એક રત્તપ્રમામા એક વાલુકાપ્રમામા અને ત્રણ પંકપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે ૧ ક્રમથી જેમ ચાર નૈરયિકોનો ત્રિકલ્પયોગ કાલો તેમ પાંચ નૈરયિકોને પાંચ ત્રિકલ્પયોગ કહેવો, પરન્તુ ત્યાં એકનો સંચાર કરાવ છે, અહીં વેનો સંચાર કરવો. ચાકી સર્વે પૂર્વોક્ત જાણુ; યાવત્ અથવા ત્રણ ધૂમપ્રમામા એક તમામા અને એક અધ.સત્તમ નરકમા હોય. (૨૧૦).

૧ અથવા એક રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા એક વાલુકાપ્રમામા અને વે પંકપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૪ અથવા એક રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા એક વાલુકાપ્રમામા અને વે અધ:સત્તમ પૃથિવીમા હોય. [ ૧ ચાર વિકલ્પ થયા. ] ૧ અથવા એક રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા વે વાલુકાપ્રમામા અને એક પંકપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૪ એક રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા વે વાલુકાપ્રમામા અને એક અધ.સત્તમ નરકપૃથિવીમા હોય. [ ૪ ભંગ. ] ૧ અથવા એક રત્તપ્રમામા વે ચર્કરાપ્રમામા એક વાલુકાપ્રમામા અને એક પંકપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૪ અથવા એક રત્તપ્રમામા વે ચર્કરાપ્રમામા એક વાલુકાપ્રમામા અને એક અધ:સત્તમ નરકપૃથિવીમા હોય. [ ૪ ભંગ. ] ૧ અથવા વે રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા એક વાલુકાપ્રમામા અને એક પંકપ્રમામા હોય. ૧ પ્રમાણે યાવત્ ૪ અથવા વે રત્તપ્રમામા એક ચર્કરાપ્રમામા એક

\* ચતુ સયોગી વિકલ્પોની રીતિ ધા પ્રમાણે છે—પાંચ નૈરયિકોના ચતુ સયોગ '૧-૧-૧-૨' '૧-૧-૨-૧' '૧-૨-૧-૧' ૨-૧-૧-૧ એક પ્રકારે ધાય છે. તેને સાત નરકના ચતુ સયોગી પાંચીશ ભંગોની સાથે જોડતા ૧૪૦ વિકલ્પો ધાય છે તે આ પ્રમાણે—

૧	રત્તપ્રમા,	ચર્કરાપ્રમા,	વાલુકાપ્રમા,	પંકપ્રમા.	૧૧	રત્તપ્રમા,	વાલુકાપ્રમા,	પંકપ્રમા,	ધૂમપ્રમા.
૨	"	"	"	ધૂમપ્રમા.	૧૨	"	"	"	તમાપ્રમા.
૩	"	"	"	તમાપ્રમા.	૧૩	"	"	"	તમા:તમાપ્રમા.
૪	"	"	"	તમા તમાપ્રમા.	૧૪	"	"	ધૂમપ્રમા,	તમાપ્રમા.
૫	"	"	પંકપ્રમા,	ધૂમપ્રમા.	૧૫	"	"	"	તમા તમાપ્રમા.
૬	"	"	"	તમાપ્રમા	૧૬	"	"	તમાપ્રમા,	"
૭	"	"	"	તમા તમાપ્રમા.	૧૭	"	પંકપ્રમા,	ધૂમપ્રમા,	તમાપ્રમા.
૮	"	"	ધૂમપ્રમા,	તમાપ્રમા.	૧૮	"	"	"	તમા તમાપ્રમા.
૯	"	"	"	તમા તમાપ્રમા.	૧૯	"	"	તમાપ્રમા,	"
૧૦	"	"	તમાપ્રમા,	તમા:તમાપ્રમા.	૨૦	"	ધૂમપ્રમા,	"	"

આ વીંશ ભંગોની સાથે પૂર્વોક્ત ચાર વિકલ્પોનો સંયોગ કરતાં રત્તપ્રમાના સંયોગવાદ્ય એવી વિકલ્પો ધાય છે.

एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणियो तथा पंचण्ह वि चउक्कसंजोगो भाणियच्चो, नवरं अच्चहियं एगो संचारेयच्चो, एवं जाव अहवा दो पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होजा १; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होजा २; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा ३; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होजा ४; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा ५; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ६; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होजा ७; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा ८; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए

वालुकाप्रभामा अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय. [४ भंग.] १ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामा अने वे धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम चार नैरयिकोनो चतुःसंयोग क्रहो, तेम पाच नैरयिकोनो पण चतुःसंयोग कहेवो. परन्तु अहीं एकनो अधिक उचार (योग) करवो. ए प्रमाणे यावत् अथवा वे पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तमामा अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय.

अथवा १ एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा अने एक तमःप्रभामा होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामा यावत् एक पंकप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामा अने एक तमःप्रभामा होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामा एक धूमप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. ६ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक तमःप्रभामा अने एक अधःसत्तम नरकमा होय. ७ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तमःप्रभामां होय. ८ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामां

पंचसंयोगी २१  
विकल्पो.

१ शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा.	६ शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, तम प्रभा, तम तमःप्रभा.
२ " " " तमःप्रभा.	७ " पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा.
३ " " " तमःतम प्रभा.	८ " " " तम तम प्रभा.
४ " " धूमप्रभा, तमःप्रभा.	९ " " तमःप्रभा, "
५ " " " तमःतम प्रभा.	१० " धूमप्रभा, " "

आ दस भंगो साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनो संयोग करवाथी शर्कराप्रभाना संयोगवाळा चालीस विकल्पो थाय छे.

१ वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा.	३ वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, तमःप्रभा, तमःतमःप्रभा.
२ " " " तम तम प्रभा.	४ " धूमप्रभा, " "

आ चार भगोनी साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनो संयोग करवाथी वालुकाप्रभाना संयोगवाळा सोळ विकल्पो थाय छे.

पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तम तम प्रभा.
--------------------------------------------

आ एक भंग साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनो संयोग करवाथी पंकप्रभाना संयोगवाळा चार भागा थाय छे. एटले ८०, ४०, १६ अने ४ ए वधा मळीने पाच नारकोना चतु संयोगी एकसो चालीस विकल्पो थाय छे.

पाच संयोगी विकल्पो दर्शावे छे—पाच नैरयिकोनो पाचसंयोगी १-१-१-१-१ ए प्रमाणे एकज विकल्प थाय छे, तेथी ते द्वारा सात नरकपृथिवीना पाच संयोगी २१ विकल्पो थाय छे. ते आ प्रमाणे—

१ रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा.	९ रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, पंकप्रभा, तमःप्रभा, तमःतम प्रभा.
२ " " " " तम प्रभा,	१० " " धूमप्रभा, " "
३ " " " " तम तमःप्रभा.	११ " वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा.
४ " " " धूमप्रभा, तमःप्रभा.	१२ " " पंकप्रभा, " तमःतम प्रभा.
५ " " " " तमःतम प्रभा.	१३ " " " तम प्रभा, "
६ " " " तमःप्रभा, " "	१४ " " धूमप्रभा " "
७ " " पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा.	१५ " पंकप्रभा, " " "
८ " " " तम तम प्रभा.	

पूर्वोक्त एक विकल्पना योगे रत्नप्रभाना संयोगवाळा उपर कहेला पंदर विकल्पो थाय छे.

१ शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा.	४ शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तम तम प्रभा.
२ " " " " तम तमःप्रभा.	५ " पंकप्रभा, " " "
३ " " " तम प्रभा, " "	

पूर्वोक्त एक विकल्पना योगे शर्कराप्रभाना संयोगवाळा उपरना पांच विकल्प थाय छे.

१ वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तम तमःप्रभा.
-----------------------------------------------------------

ए प्रमाणे वालुकाप्रभाना संयोगवाळा एक विकल्प थाय छे. १५, ५ अने १-ए वधा मळीने पचसंयोगी एकवीस विकल्पो थाय छे. ७, ८४, २१०, १४०, अने २१ ए सर्व मळीने पाच नैरयिकना कुल चारसो ने बासठ विकल्पो थाय छे.

होजा ९; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तैमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १०; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होजा ११; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुय-प्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १२; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्प-भाए एगे तैमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १३; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १४; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा १५; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होजा १६; अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेस-त्तमाए होजा १७, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १८; अहवा एगे सक्क-रप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १९; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा २०; अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा २१ ।

१६. [प्र०] छन्मते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होजा-पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच संक्करप्पभाए होजा; अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होजा; जाव अहवा एक धूमप्रभामा अने एक अध.सत्तम नरकमां होय. ९ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामां एक तम.प्रभामा अने एक तम.तम:प्रभामां होय. १० अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तम प्रभामां अने एक अध:सत्तम नरकमा होय. ११ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक तमामां होय. १२ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामा एक धूमप्रभामा अने एक अध.सत्तम नरकमा होय. १३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामा एक पंकप्रभामां एक तम.प्रभामां अने एक अध.सत्तममां होय. १४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामा एक तम.प्रभामा अने एक अध.सत्तममा होय. १५ अथवा एक रत्नप्रभामा एक पंकप्रभामा यावत् एक अध.सत्तममा होय. १६ अथवा एक शर्कराप्र-भामां एक वालुकाप्रभामा यावत् एक तमामा होय. १७ अथवा एक शर्कराप्रभामा यावत् एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अध:-सत्तममा होय. १८ अथवा एक शर्कराप्रभामा यावद् एक पंकप्रभामां एक तमामां अने एक अध:सत्तममा होय. १९ अथवा एक शर्करा-प्रभामा एक वालुकाप्रभामा एक धूमप्रभामा एक तमामां अने एक अध सत्तममा होय. २० अथवा एक शर्कराप्रभामा एक पंकप्रभामा यावत् एक अध.सत्तममा होय. २१ अथवा एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अध:सत्तममा होय.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! छ नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता तुं रत्नप्रभामा होय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गाणेय ! तेओ १ रत्नप्रभामां पण होय, ७ यावत् अध.सत्तम पृथिवीमा पण होय. [ एक संयोगी सात विकल्प थया. ]

१ \*अथवा एक रत्नप्रभामां अने पाच शर्कराप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां अने पांच वालुकाप्रभामां पण होय. यावत् ६

१ धूमाए ग । २ तमाए क । ३ धूमप्पभाए घ, तमाए क-ङ । ४ रतणप्प- क । ५ -प्पभाए वा हो- घ-ङ ।

\* १६. द्विकसयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे-छ नैरयिकोना द्विकसयोगी पाच विकल्पो थाय छे-२-४, ३-३, ४-२, १-५ अने ५-१. ए पाच विकल्पोने सात नरकना द्विकसयोगी एकवीस मंगोनी साथे गुणता १०५ मंगो थाय छे. ते आ प्रमाणे—

१	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा.	४	रत्नप्रभा,	धूमप्रभा.
२	"	वालुकाप्रभा.	५	"	तम.प्रभा.
३	"	पंकप्रभा	६	"	तम तम प्रभा.

ए छ मंगोनी साथे पूर्वोक्त पाच विकल्पोने गुणवाथी रत्नप्रभाना संयोगवाळा त्रीस विकल्प थाय छे.

१	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा.	४	शर्कराप्रभा,	तम प्रभा.
२	"	पंकप्रभा.	५	"	तम तम प्रभा.
३	"	धूमप्रभा.			

ए पाच मंगो साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणता शर्कराप्रभाना संयोगवाळा पचीस विकल्प थाय छे.

१	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	३	वालुकाप्रभा,	तम प्रभा.
२	"	धूमप्रभा.	४	"	तम.तम प्रभा.

ए चार मंगोनी साथे पूर्वोक्त पाच विकल्पोने गुणतां वालुकाप्रभाना संयोगवाळा वीज विकल्पो थाय छे.

१	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	३	पंकप्रभा,	तम तम प्रभा.
२	"	तम प्रभा.			

ए त्रण मंगोनी साथे पूर्वोक्त पाच विकल्पोने गुणाकार करवाथी पंकप्रभाना संयोगवाळा पंदर विकल्प थाय छे.

१	धूमप्रभा,	तम प्रभा.	२	धूमप्रभा,	तम.तम प्रभा.
---	-----------	-----------	---	-----------	--------------

ए वे मंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां धूमप्रभाना संयोगवाळा दस विकल्प थाय छे.

१	तम प्रभा,	तम तम प्रभा.
---	-----------	--------------

ए एक भागा साथे पूर्वोक्त पाच विकल्पोने गुणतां तम:प्रभाना संयोगवाळा पाच विकल्प थाय छे. ए ववा ३०-२५-१५-१०-५ मळीने छ नैर-यिकोना द्विकसयोगी एकसोने पाच विकल्पो थाय छे.

एगो रयणप्पभाए पंच अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होजा; जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होजा । अहवा तिन्नि रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए, एवं एएणं कमेणं जहा पचण्हं दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियद्यो, नवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयद्यो, जाव अहवा पंच तमाए एगो अहेसत्तमाए होजा ।

अहवा एगो रयणप्पभाए एगो सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होजा; अहवा एगो रयणप्पभाए एगो सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होजा, एवं जाव अहवा एगो रयणप्पभाए एगो सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होजा, एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणियो तहा छण्ह वि भाणियद्यो, नवरं एक्को अहिओ उच्चारेयद्यो, सेसं तं चेव । चउक्कसंजोगो वि तहेव, पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयद्यो, जाव पच्छिमो भंगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगो पंकप्पभाए एगो धूमप्पभाए एगो तमाए एगो अहे-  
त्तमाए होजा ।

अहवा एगो रयणप्पभाए एगो सक्करप्पभाए जाव एगो तमाए होजा, अहवा एगो रयणप्पभाए जाव एगो धूमप्पभाए एगो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगो रयणप्पभाए जाव एगो पंकप्पभाए एगो तमाए एगो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगो रयण-  
प्पभाए जाव एगो वालुयप्पभाए एगो धूमप्पभाए जाव एगो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगो रयणप्पभाए एगो सक्करप्पभाए एगो

अथवा एक रत्नप्रभामां अने पाच अधःसत्तम पृथिवीमा होय. १ अथवा वे रत्नप्रभामां अने चार शर्कराप्रभामा होय. यावद् ६ अथवा वे रत्नप्रभामा अने चार अधःसत्तम पृथिवीमा होय. १ अथवा त्रण रत्नप्रभामा अने त्रण शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रम वडे जेम पाच नैरयिकोनो द्विकसंयोग कह्यो तेम छ नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्तु अहीं एक अधिक गणवो. यावत् १०५ अथवा पाच तमामा अने एक अधःसत्तम नरकमा होय.

\* १ एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा अने चार वालुकाप्रभामा होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने चार पंकप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा अने चार अधःसत्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभामा वे शर्कराप्रभामा अने त्रण वालुकाप्रभामा होय. ए प्रमाणे ए क्रमयी जेम पाच नैरयिकोनो त्रिकसंयोग कह्यो तेम छ नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कहेवो, परन्तु विशेष ए छे के तेमा एक नैरयिक अधिक कहेवो, अने वाक्की वधुं पूर्ववत् जाणवुं.

† ते प्रमाणे छ नारकोनो चतुःसंयोग अने पंचसंयोग पण जाणवो. परन्तु तेमा एक नैरयिक अधिक गणवो. यावत् छेड्यो भंग-  
अथवा वे वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामा एक तमःप्रभामा अने एक तमःतमःप्रभामा होय.

‡ १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामा यावत् एक तमामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा यावत् एक धूमप्रभामा अने एक अधःसत्तम नरकमा होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामा यावत् एक पंकप्रभामा एक तमामा अने एक अधःसत्तममा होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामा यावत् एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामा यावत् एक अधःसत्तम नरकमा होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामां

त्रिकसंयोगी  
निकल्पो.

चतु संयोग अने  
पंचसंयोग.

छसंयोगी निरुक्तो.

१ सक्कराए ग । २ दुयसं-ड । ३ तियसं-ड । ४ अब्भहिओ ड । ५ पंचकसं-क ।

\* १६. त्रिकसंयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे-छ नैरयिकोना १-१-४, १-२-३, २-१-३, १-३-२, २-२-२, ३-१-२, १-४-१, २-३-१, ३-२-१, अने ४-१-१ ए प्रमाणे त्रिकसंयोगी दश विकल्पो थाय छे हवे सात नरकपृथिवीना त्रिकसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे, ते पाच नैरयिकोनो त्रिकसंयोगी विकल्प प्रसंगे ( पृ. १४५ ) दर्शाव्वा छे. तेनी साथे उपर कहेला दश विकल्पोने गुणता ३५० भंगो थाय छे.

† छ नैरयिकना चतु संयोगी दश विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे-१-१-१-३, १-१-२-२, १-२-१-२, २-१-१-२, १-१-३-१, १-२-२-१, १-३-१-१, २-२-१-१, ३-१-१-१ हवे रत्नप्रभादि सात नरकना चतु संयोगी पात्रीश विकल्पो थाय छे, ते पाच नैरयिकना चतु संयोगी ...ओना कथन प्रसंगे ( पृ १४६. ) दर्शाविला छे, तेनी साथे उपर कहेला दश विकल्पोने गुणता छ नैरयिकना चतु संयोगी ३५० भागाओ थाय छे.

छ नैरयिकना पंचसंयोगी पाच विकल्पो थाय छे—१-१-१-१-३, १-१-१-२-१, १-१-२-१-१, १-२-१-१-१, २-१-१-१-१. हवे जे सात नरकपृथिवीना पंचसंयोगी एकवीश विकल्पो थाय छे ते ( पृ. १४७ ) दर्शाविला छे तेने उपर कहेला पाच विकल्पो साथे गुणता छ नैरयिकोना सात नरकपृथिवीने आश्रयी पाचसंयोगी १०५ विकल्पो थाय छे.

१ रत्नप्रभा, शर्करा०, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूम०, तम प्रभा.	५ रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा, तमःतमःप्रभा.
२ " " " " " तम तम प्रभा	६ " वालुकाप्रभा, " " " "
३ " " " " तमःप्रभा, "	७ शर्कराप्रभा, " " " "
४ " " " " धूमप्रभा, "	

ए प्रमाणे छ नैरयिकोनो छसंयोगी एकज विकल्प थाय छे. ते द्वारा सात नरक पृथिवीना छ संयोगी सात विकल्प थाय छे. ए प्रमाणे छ नैरयिकोना एक संयोगी ७, द्विकसंयोगी १०५, त्रिकसंयोगी ३५०, चतुःसंयोगी ३५०, पंचसंयोगी १०५, अने छ संयोगी ७ सर्वे मळी ९२४ विकल्पो थाय छे.

पंकप्यभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वालुयप्यभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे सकरप्यभाए एगे वालुयप्यभाए, जाव एगे अहेसत्तमाए होजा ।

१७. [प्र०] सत्त मंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छ । [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्यभाए छ सकरप्यभाए होजा । एवं एणं कमेणं जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियद्यं, नवरं एगो अम्महियो संचारिज्जइ, सेसं तं चेव । तियासंजोगो, वैउक्कसंजोगो, पंचसंजोगो, छक्कसंजोगो य छण्हं जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियद्यं, नवरं एक्कओ अम्महियो संचारय्यो, जाव छंक्कसंजोगो । अहवा दो सकरप्यभाए एगे वालुयप्यभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा ।

१८. [प्र०] अट्ट मंते ! नेरतिया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छ । [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्यभाए सत्त सकरप्यभाए होजा । एवं दुयासंजोगो, जाव छंक्कसंजोगो य जहा सत्तण्हं मणितो तहा अट्टण्ह वि भाणियद्यो, नवरं एक्कओ अम्महियो संचारय्यो, सेसं तं चेव, जाव छंक्कसंजोगस्स । अहवा तिथि

एक पंकप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमा होय. ६ अथवा एक रत्नप्रभामा एक वालुकाप्रभामा यावत् एक अधःसत्तम नरकमा होय. ७ अथवा एक शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा यावत् एक अधःसत्तम नरकमा होय.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सात नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता [ शुं रत्नप्रभामा होय ? ] इत्यादि सवन्वे प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! [ ते साते नैरयिको ] रत्नप्रभामा पण होय अने यावद् अधःसत्तम नरकपृथिवीमा पण होय. [ एक संयोगी सात विकल्प थया. ]

\* अथवा एक रत्नप्रभामा अने छ शर्कराप्रभामा होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम छ नैरयिकोने द्विकसंयोग काणो तेम सात नैरयिकोने पण जाणयो. पण विशेष ए छे के एक नैरयिकोने अधिक संचार करवो, वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम छ नैरयिकोने त्रिकसंयोग, चतुसंयोग, षडसंयोग अने पट्णसंयोग कवो तेम सात नैरयिकोने पण जाणयो; परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकोने अधिक संचार करवो, यावत् पट्णसंयोग—‘अथवा वे शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमा होय’ लामुवी जाणवुं [ सत्तसंयोगी एक विकल्प— ] अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा यावत् एक अधःसत्तम नरकमा होय.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! आठ नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! १ रत्नप्रभामा पण होय, यावद् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय. §

अथवा १ ‘एक रत्नप्रभामा अने सात शर्कराप्रभामा होय.’ ए प्रमाणे जेम सात नैरयिकोने \* द्विकसंयोग, † त्रिकसंयोग, ‡ चतुष्कसंयोग,

१ रत्न-क । २ चट्टासं-क । ३ पंचासं-क । ४ छक्कासं-क । ५ छक्कसं-क । ६ छक्कासं-क । ७ छक्कसं-क ।

१७. \* सात नैरयिकोने द्विकसंयोगी छ विकल्प थाय छे, जेम के, १-६, २-५, ३-४, ४-३, ५-२, ६-१. ते छ विकल्पवडे पूर्वे कहेला सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश भागाने गुणता सात नैरयिकोने द्विकसंयोगी १२६ भागा थाय छे.

† सात नैरयिकोने त्रिकसंयोगी पंदर विकल्पो थाय छे—१-१-५, १-२-४, २-१-४, १-३-३, २-२-३, ३-१-३, १-४-२, २-३-२, ३-२-२, ४-१-२, १-५-१, २-४-१, ३-३-१, ४-२-१, ५-१-१. हवे सात नरक पृथिवीना त्रिकसंयोगी ३५ विकल्पो पूर्वे ( पृ० १४१. ) जणाव्या छे, तेनी साथे उपर कहेला पटर विकल्पोने गुणता ५२५ भंगो थाय छे

‡ सात नैरयिकोना चतुसंयोगी १-१-१-४ इत्यादि वीग विकल्पो थाय छे, तेने पूर्वे जणावेल ( पृ० १४२. ) सात नरक पृथिवीना चतुसंयोगी पात्रीश भागा साथे गुणता ७०० विकल्पो थाय छे.

§ सात नैरयिकोना पंचसंयोगी १-१-१-१-३ इत्यादि पंदर विकल्पो थाय छे, तेने सात नरकना पूर्वे जणावेल ( पृ० १४७. ) पंचसंयोगी एकवीश भागाने विकल्पोनी साथे गुणता ३१५ विकल्पो थाय छे.

¶ सात नैरयिकोना षडसंयोगी १-१-१-१-१-२ इत्यादि छ विकल्प थाय छे तेने पूर्वे कहेला ( पृ० १४९. ) सात नरकपृथिवीना छसंयोगी सात विकल्पोनी साथे गुणता ४२ विकल्पो थाय छे.

सातसंयोगी एठ विकल्पने सात नरकपृथिवी साथे गुणता सात विकल्प थाय छे. ७-१२६-५२५-७००-३१९-४२-१ सर्वे मळीने सात नैरयिकोना १७१६ विकल्पो थाय छे.

१८. § ए प्रमाणे आठ नैरयिकोना एक संयोगी सात विकल्पो थया

\*\* आठ नैरयिकोना १-७ इत्यादि द्विकसंयोगी सात विकल्प थाय छे, तेने पूर्वे कहेला ( पृ. १३९. सू. १२ ) सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश भागाने साथे गुणता १४७ भागा थाय छे.

†† आठ नैरयिकोना १-१-६ इत्यादि त्रिकसंयोगी एकवीश विकल्पो थाय छे. तेने पूर्वे जणावेल ( पृ० १४१. ) सात नरकना त्रिकसंयोगी पात्रीश भागाने साथे गुणता ७३५ विकल्पो थाय छे.

‡‡ आठ नैरयिकोना १-१-१-५ इत्यादि चतुसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे. तेने पूर्वे कहेला ( पृ० १४३. ) सात नरकना चतुसंयोगी ३५ भागाने साथे गुणता १२२५ विकल्पो थाय छे.

संकरप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा । एवं संचारेयदं, जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे संकरप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा ।

१९. [प्र०] नव भंते ! नेरतिया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होजा; जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ट संकरप्पभाए होजा । एवं दुयासंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा अट्टण्हं भणियं तहा नवण्हं पि भाणियदं, नवरं एकेको अब्भहिओ संचारेयदो, सेसं तं चैव । पच्छिमो आलावगो—अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे संकरप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा ।

२०. [प्र०] दस भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होजा; जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्पभाए नव संकरप्पभाए होजा । एवं दुयासंजोगो जाव सत्तसंजोगो य जहा

\* पंचसंयोग अने पट्टसंयोग कह्यो तेम आठ नैरयिकोने पण कहेवो. परन्तु विशेष ए के एक एक नैरयिकोने अधिक संचार करवो. वाकी वधुं छसयोग सुची पूर्व प्रमाणे जाणतुं. [ छेल्लो विकल्प— ] अथवा त्रण शर्कराप्रभामा एक वालुकाप्रभामा यावत् एक अधःसप्तम नरकमा होय.

यावत् पट्टसंयोगी विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक तमामा अने वे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामा यावत् वे तमामा अने एक अधःसप्तम पृथिवीमा होय. ए प्रमाणे सर्वत्र संचार करवो. यावत् ७ अथवा वे रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा यावत् एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ ए प्रमाणे ७, १४७, ७३५, १२२५, ७३५, १४७ अने ७. ए वधा मळीने आठ जीवने आश्रयी ३००३ विकल्पो थाय छे. ]

सप्तसंयोगी विकल्प

१९. [प्र०] हे भगवन् ! नव नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता जुं रत्नप्रभामा होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! ते नव नैरयिको १ रत्नप्रभामा होय, अने ए प्रमाणे यावत् ७ अधःसप्तम पृथिवीमा पण होय.†

नव नैरयिको.

अथवा 'एक रत्नप्रभामां अने आठ शर्कराप्रभामां पण होय' इत्यादि आठ नैरयिकोने जेम †द्विकसंयोग [ †त्रिकसंयोग, \*३ चतुष्कसंयोग, ††पंचकसंयोग, ††पट्टसंयोग, ] यावत् †‡सप्तकसंयोग. कह्यो तेम नव नैरयिकोने पण कहेवो. परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकोने अधिक संचार करवो. वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणतुं. तेनो छेल्लो भागो—अथवा त्रण रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमा होय.

द्विकसंयोगी विकल्पो.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! दश नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता जुं १ रत्नप्रभामा होय के यावत् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां होय ? [उ०] हे गागेय ! ते दश नैरयिको १ रत्नप्रभामा पण होय, अने ए प्रमाणे यावत् ७ अधःसप्तम पृथिवीमा पण होय.‡‡

दश नैरयिको.

\* १८. आठ नैरयिकोना १-१-१-१-५ इत्यादि पंचसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे, तेने सात नरकना पंचसंयोगी २१ भागानी साथे गुणता ७३५ विकल्पो थाय.

† आठ सख्याना छसंयोगी १-१-१-१-३ इत्यादि २१ विकल्पो थाय छे, तेने पूर्वे कहेला ( पृ. १४९. ) सात नरकना छसंयोगी सात भागा साथे गुणता १४७ विकल्पो थाय.

‡ आठ सख्याना सात संयोगी सात विकल्प थाय छे, तेने सात नरकना सात संयोगी एक विकल्पनी साथे गुणता सात भंग थाय. एप्रमाणे ७-१४७-७३५-१२२५-७३५-१४७-७ सर्व मळीने आठ नैरयिकोना सात नरकने आश्रयी ३००३ भागा थाय छे.

१९. † नव नैरयिकोना आश्रयी एक संयोगी सात विकल्पो थया

†† नव सख्याना द्विकसंयोगी आठ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश विकल्पनी साथे गुणता १६८ भागा थाय छे.

‡ नव संख्याना १-१-७ इत्यादि त्रिकसंयोगी २८ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना त्रिकसंयोगी पात्रीश विकल्पनी साथे गुणता ९८० भागा थाय छे.

\*\* नव सख्याना चतुष्कसंयोगी १-१-१-६ इत्यादि ५६ विकल्प थाय, तेने सात नरकना चतु संयोगी ३५ विकल्प साथे गुणता १९६० भागा थाय छे.

†† नव सख्याना १-१-१-१-५ इत्यादि पंचसंयोगी ७० विकल्पो थाय, तेने सात नरकना पंचसंयोगी एकवीश भागा साथे गुणता १४७० विकल्पो थाय छे.

‡‡ नव संख्याना पट्टसंयोगी १-१-१-१-४ इत्यादि ५६ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना छसंयोगी सात विकल्पनी साथे गुणतां ३९२ भागा थाय छे.

‡‡ नव सख्याना सप्तसंयोगी १-१-१-१-१-३ इत्यादि २८ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना सप्तसंयोगी एक विकल्पनी साथे गुणतां २८ भागा थाय छे. ए प्रमाणे ७-१६८-९८०-१९६०-१४७०-३९२-२८ मळीने पाच हजारने पाच विकल्पो थाय छे.

‡‡ २०. दश नारकना एक योगी सात विकल्प थाय.



नवणहं; नवरं एकेको अन्महिओ संचारेयदो, सेसं तं चव । अपच्छिमआलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पमाए एगे सक्करप्पमाए जाव एगे अहेसत्तमाए होजा ।

२१. [प्र०] संखेजा मंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणणं पविसमाणा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पमाए वा होजा; जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए होजा; एत्रं जाव अहवा एगे रयणप्पमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए होजा; एत्रं जाव अहवा दो रयणप्पमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा तिन्नि रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए होजा । एवं एणं कमेणं एकेको संचारेयदो, जाव अहवा दस रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए होजा । एवं जाव अहवा दस रयणप्पमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा संखेजा

द्विकसयोगादि  
विकल्पो

अथवा एक रत्नप्रभामा अने नव शर्कराप्रभामां होय—इत्यादि "द्विकसंयोग [तथा त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग, पंचकसंयोग, षट्कसंयोग] यावत् सप्तकसंयोग जेम नव नारकनो कखो तेम दस नैरयिकनो पण जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकन अधिक संचार करवो. वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. तेनो छेडो भंग—अथवा चार रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामा यावत् एक अथ.सप्तम नरकमा होय.

सख्यातनैरयिको.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामा होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] गांगेय ! "सख्याता नैरयिको १ रत्नप्रभामा पण होय अने यावत् ७ अथ.सप्तम पृथिवीमा पण होय. [ एक संयोगी सात विकल्प यथा.

द्विकसयोगी  
विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां होय अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ एक रत्नप्रभामा होय अने संख्याता अथ सप्तम पृथिवीमा पण होय. [ छ विकल्प यथा. ] १ अथवा वे रत्नप्रभामां अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ वे रत्नप्रभामा अने संख्याता अथ सप्तम पृथिवीमा पण होय. [ छ विकल्प यथा. ] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामा अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ।

\* दश सख्याना १-९ इत्यादि द्विकयोगी नव विकल्पो थाय, तेने सात नरकना द्विकसयोगी एकत्रीश भागा साथे गुणता १८९ विकल्पो थाय छे.

† दश सख्याना १-१-८ इत्यादि त्रिकयोगी ३६ विकल्पो थाय छे. तेनी साथे सात नरकना द्विकसयोगी पांजीश विकल्पने गुणता १९६ भांगा थाय छे.

‡ दश सख्याना चतुष्कयोगी १-१-१-७ इत्यादि ८४ विकल्पो थाय, तेनी साथे सात नरकना ३५ भागाने गुणता २९४० भांगा थाय छे.

§ दशसख्याना पंचयोगी १-१-१-१-६ इत्यादि १२६ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना पंचसयोगी एकवीश भागानी साथे गुणता २६४ भागा थाय छे.

¶ दशसख्याना षट्कयोगी १-१-१-१-१-५ इत्यादि १२६ विकल्पो थाय छे, तेनी साथे सात नरकना छसंयोगी सात विकल्पनेनी सां गुणतां ८८२ भागा थाय छे.

§ दश सख्याना सप्तयोगी १-१-१-१-१-१-४ इत्यादि ८४ विकल्पो थाय. अने सात नरकनो सप्तसंयोगी एकज भागो थाय छे, माटे एक साथे गुणता पण ८४ भागा थाय छे. ए प्रमाणे ७-१८९-१२६०-२९४०-२६४६-८८२-८४ सर्वे मळीने दश नैरयिकना ८००८ विकल्पो थाय छे.

२१ \*\* अहिं अग्यारथी माहीने श्रीपंथेहलिका सुधीनी संख्याने संख्याता जाणवा. तेमां एकयोगी सात ज विकल्प थाय छे. द्विकसंयोगना सख्याता वे विभाग करता एक अने संख्याता, वे अने संख्याता, यावत् दश अने संख्याता—ए रीते दश विकल्प, तथा 'सख्याता' अने संख्याता मळीने अगीयार विकल्प थाय छे अने ते विकल्पो उपरनी रत्नप्रभादि पृथिवी साथे एकथी आरंभी संख्यात सुधीना अगीयार पदनो संचार करवाथी अने नीचेनी शर्कराप्रभादि सां केवळ 'संख्यात'पदनो संचार करवाथी थाय छे. एथी विपरीत उपरनी पृथिवी साथे 'संख्यात'पदनो अने नीचेनी पृथिवी साथे एकादि पदनो संचार करवाथे जे भागा थाय ते अहिं विवक्षित नथी अर्थात्—एक रत्नप्रभामा अने संख्याता शर्कराप्रभामां, एक रत्नप्रभामा अने संख्याता बालुकप्रभामां होय—इत्यादि विकल्प करवा, पण संख्याता रत्नप्रभामा अने एक शर्कराप्रभामा, संख्याता रत्नप्रभामां अने एक बालुकप्रभामा होय—इत्यादि विकल्पो न करवा, केनके पूर्वना सूत्रो आवज क्रम विवक्षित छे. आगळना सूत्रोमा दश वगेरे राशिओना वे भाग करी एकादि लघु संख्याओने पूर्वे मूळी छे, अने नवादि मोटी संख्याओने पठी मूळ छे, अर्थात् 'एक रत्नप्रभामा अने नव शर्कराप्रभामा'—ए प्रमाणे कहुं छे. पण 'नव रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामा'—एवा कोइ विकल्पो जणाव्या नथी. प्रमाणे अहिं पण उपरनी नरकपृथिवी साथे एकादि संख्यानो, अने नीचेनी नरकपृथिवी साथे संख्यातराशिओ संचार करवो. तेना पाछ्छनी नरकपृथिवी माथेनी संख्यातराशिमाथी एकादि संख्याने ओठी करवामा आवे तोपण संख्यात राशिनुं संख्यातपणुं कायम रहे छे. तेमां रत्नप्रभामां साथे एकथी आरंभ संख्यात सुधीना अगीयार पदनो अने वाकीनी पृथिवीओ साथे अनुक्रमे 'संख्यात'पदनो संचार करता छसठ भागा थाय छे—

एक.	सख्याता.	एक.	संख्याता.
१ रत्न०	शर्करा०	४ रत्न०	धूम०
२ "	बालुका०	५ "	तमा०
३ "	पंक०	६ "	तमतमा०

आ प्रमाणे वे अने संख्याता—इत्यादि दश विकल्पना बीजा साठ भागा मळीने रत्नप्रभामा संयोगवाळा ६६ भागा जाणवा. शर्कराप्रभामां वाकीन नरकपृथिवीओ साथे योग करता पांच विकल्प थाय, तेने पूर्वोक्त अगीयार विकल्प साथे गुणता शर्कराप्रभामा संयोगवाळा ५५ विकल्पो थाय छे. ते प्रकां बालुकप्रभामां सुम्माळीस, पंकप्रभामा वेनीश, धूमप्रभामा चावीश अने तम.प्रभामा अगीयार विकल्पो थाय छे. वधा मळीने द्विकसयोगी बसोने एकत्री विकल्प थाय छे.

र्यणप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए होजा, जाव अहवा संखेजा र्यणप्पभाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे सक्कर-  
प्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा, एवं जहा र्यणप्पभा उवरिमपुढवीहिं समं चारिया एवं सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहिं  
समं चारेयद्वा, एवं एकेका पुढवी उवरिमपुढवीहिं समं चारेयद्वा; जाव अहवा संखेजा तमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा ।  
अहवा एगे र्यणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा; अहवा एगे र्यणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेजा  
पंकप्पभाए होजा, जाव अहवा एगे र्यणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे र्यणप्पभाए दो  
सक्करप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा; जाव अहवा एगे र्यणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा  
एगे र्यणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा; एवं एणं कमेणं एकेको संचारेयद्वा; अहवा एगे र्य-  
णप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा; जाव अहवा एगे र्यणप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए संखेजा

माणे ए क्रमथी एक एक नैरयिकानो अधिक सचार करवो. यावत् १ अथवा दस रत्नप्रभामा अने संख्याता शर्कराप्रभामा होय. ए प्रमाणे  
यावद् ६ अथवा दस रत्नप्रभामा अने संख्याता अधःसत्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा संख्याता रत्नप्रभामा अने संख्याता शर्कराप्रभामां  
होय. ए प्रमाणे यावद् ६ अथवा संख्याता रत्नप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तम पृथिवीमा होय. १ अथवा एक शर्कराप्रभामा अने  
संख्याता वालुकामा होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभापृथिवीनो वीजी पृथिवी साथे योग कर्यो तेम शर्कराप्रभा पृथिवीनो पण उपरनी वधी  
पृथिवीओ साथे योग करवो. ए प्रकारे एक एक पृथिवीनो उपरनी पृथिवीओ साथे योग करवो. यावद् अथवा संख्याता तम प्रभामा अने  
संख्याता अधःसत्तम नरकमां पण होय. [ ए प्रमाणे द्विकसंयोगी विकल्पो थया. ]

१ \*अथवा एक रत्नप्रभामा एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने  
संख्याता पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तम पृथिवीमा होय. अथवा एक

त्रिकसंयोगी  
विकल्पो.

१-प्पभाए ज- ग-घ । २-पुढवीएहिं ग-घ । ३ पुढवीएहिं ग-घ ।

\* त्रिसंयोगमां 'रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा'-ए प्रथम त्रिकयोग छे. अने तेमा 'एक, एक अने संख्याता' ए प्रथम विकल्प छे तेमां  
प्रथम पृथिवीमा एक जीव अने त्रीजी पृथिवीमां संख्याता जीव स्थापीने अने वीजी पृथिवीमां अनुक्रमे संख्याना विन्यासमा वेधी माडीने दस सुधीनी  
संख्यानो तथा संख्यातपदनो योग करवाथी पूर्वना विकल्पनी साथे मळीने अग्रीधार विकल्पो थाय छे. लार वाद वीजी अने त्रीजी पृथिवीमा 'संख्यात'पद  
अने प्रथम पृथिवीमा वेधी माडीने संख्यातपद सुधी सचार करतां दश विवल्प थाय छे. सर्वे मळीने एकवीश विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे—

रत्नप्रभा.	शर्कराप्रभा.	वालुका संख्याता	रत्नप्रभा.	शर्कराप्रभा. संख्याता	वालुका संख्याता.
१.	१	१	११.	१	१
२.	१	२	१२.	२	२
३.	१	३	१३.	३	३
४.	१	४	१४.	४	४
५.	१	५	१५.	५	५
६.	१	६	१६.	६	६
७.	१	७	१७.	७	७
८.	१	८	१८.	८	८
९.	१	९	१९.	९	९
१०.	१	१०	२०.	१०	१०
			२१.	संख्याता.	१

ते एकवीश विकल्पोनी साथे सात नरकपृथिवीना त्रिकसंयोगी पात्रीश पदोनो गुणाकार करवाथी त्रिकसंयोगी नातसो ने पात्रीश विकल्पो थाय छे.  
आदिनी चार नरकपृथिवीवडे प्रथम चतुष्कसंयोग थाय छे तेमा प्रथमनी त्रण पृथिवीमा 'एक एक अने चौथी पृथिवीमा संख्याता'-ए प्रमाणे प्रथम  
विकल्प थाय छे. लार वाद पूर्वोक्त क्रमथी त्रीजी पृथिवीमा वेधी माडीने संख्यातपदोनो सचार करता वीजा दश विकल्पो थाय छे एम नीजी तथा प्रथम  
पृथिवीमां पण वेधी माडीने संख्यातपदोनो सचार करतां वीश विकल्पो थाय, अने वधा मळीने एत्रोश विकल्प थाय. ते एकत्रीश विकल्पोनी साथे नात  
नरकना चतुष्कयोगी पात्रीश पदोनो गुणाकार करतां चतु संयोगी एक हजार पचाशी विकल्पो थाय छे.

आदिनी पाच पृथिवीसाथे प्रथम पंचसंयोग थाय छे, अने तेमां आदिनी चार पृथिवीमा 'एक एक अने पाचनी पृथिवीमा संख्याता'-ए प्रथम  
विकल्प थाय, लार वाद पूर्वोक्त क्रमथी चौथी नरकपृथिवीमा अनुक्रमे वेधी माडीने संख्यात पद सुधी सचार करवो ए रीते आदिनी त्रीजी, वीजी अने  
प्रथम पृथिवीमां पण सचार करवो. एम वधा मळीने पंचसंयोगी एकतालीश विकल्पो थाय छे तेनी साथे सात नरकपृथिवीना पंचसंयोगी एकत्रीश पदोनो  
गुणाकार करवाथी आठसोने एकसठ विकल्पो थाय छे.

पद्मसंयोगमा पूर्वोक्त क्रमथी एकावन विकल्पो थाय छे, अने तेनी साथे सात नरकना पद्मयोगी सात पदोनो गुणाकार करवाथी दससोने सत्तावन  
विकल्पो थाय छे.

सातसंयोगमा तो पूर्वोक्त भावनाथी एकसठ विकल्प थाय छे. ए प्रमाणे संख्यात नैरयिकोने आश्रयी ७, २३१, ७३५, १०८५, ८६१, ३५७ तथा  
६१-वधा मळीने ३३३७ विकल्पो थाय छे.

अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए संखेजा वालुयप्पमाए होजा; जाव अहवा दो रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा तिदि रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए संखेजा वालुयप्पमाए होजा, एवं एणं कमेणं प्फेज्जो रयणप्पमाए संचारेयधो; जाव अहवा संखेजा रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए संखेजा वालुयप्पमाए होजा; जाव अहवा संखेजा रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्पमाए एगे वालुयप्पमाए संखेजा पंक्कप्पमाए होजा; जाव अहवा एगे रयणप्पमाए एगे वालुयप्पमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्पमाए दो वालुयप्पमाए संखेजा पंक्कप्पमाए होजा; एवं एणं कमेणं नियासंजोगो, चंडक्कसंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा वसण्हं तहेव भाणियधो । पच्छिमो आलावगो सत्तसंजोगरस-अहवा संखेजा रयणप्पमाए संखेजा सक्करप्पमाए जाव संखेजा अहेसत्तमाए होजा ।

२२. [प्र०] असंखेजा भंते ! नेरहया नेरहयप्पवेसणएणं पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पमाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्पमाए असंखेजा सक्करप्पमाए होजा, एवं दुयासंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा संखेजाणं भाणियो तहा असंखेजाण वि भाणियधो, नवरं 'असंखेजाओ' अम्महियो भाणियधो, सेसं तं चैव, जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलावगो-अहवा असंखेजा रयणप्पमाए असंखेजा सक्करप्पमाए जाव असंखेजा अहेसत्तमाए होजा ।

२३. [प्र०] उक्कोसेणं भंते ! नेरहया नेरहयप्पवेसणएणं पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सद्ये वि ताव रयणप्पमाए होजा, अहवा रयणप्पमाए य सक्करप्पमाए य होजा, अहवा रयणप्पमाए य वालुयप्पमाए य होजा; जाव अहवा रयणप्पमाए य अहेसत्तमाए य होजा, अहवा रयणप्पमाए य सक्करप्पमाए य वालुयप्पमाए य होजा; एवं जाव अहवा रयणप्पमाए य सक्करप्पमाए य अहेसत्तमाए य होजा, अहवा रयणप्पमाए वालुयप्पमाए पंक्कप्पमाए य होजा; जाव अहवा रयणप्पमाए वालुयप्पमाए रत्तप्रभामा वे शर्कराप्रभामा अने संख्याता वालुकाप्रभामा होय. अथवा एक रत्तप्रभामां वे शर्कराप्रभामा अने नंल्याता अधःसत्तमपृथिवीमा होय. अथवा एक रत्तप्रभामा त्रण शर्कराप्रभामा अने संख्याता वालुकाप्रभामा होय. ए प्रमाणे ए क्रमयी एक एक नैरयिकनो संचार करवो; अथवा एक रत्तप्रभामा नंल्याता शर्कराप्रभामा अने नंल्याता वालुकाप्रभामा होय. यावद् अथवा एक रत्तप्रभामा नंल्याता वालुकाप्रभामा अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमा होय. अथवा वे रत्तप्रभामा संख्याता शर्कराप्रभामा अने संख्याता वालुकाप्रभामा होय. यावद् अथवा वे रत्तप्रभामा संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमा होय. अथवा त्रण रत्तप्रभामा संख्याता शर्कराप्रभामा अने संख्याता वालुकाप्रभामा होय. ए प्रमाणे ए क्रमयी रत्तप्रभामा एक एकनो संचार करवो. यावत् अथवा संख्याता रत्तप्रभामा संख्याता शर्कराप्रभामा अने संख्याता वालुकाप्रभामा होय. यावद् अथवा संख्याता रत्तप्रभामा नंल्याता शर्कराप्रभामा अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमा होय; अथवा एक रत्तप्रभामा एक वालुकाप्रभामा अने संख्याता पंक्कप्रभामा होय. यावद् अथवा एक रत्तप्रभामा एक वालुकाप्रभामा अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमा होय. अथवा एक रत्तप्रभामा वे वालुकाप्रभामा अने संख्याता पंक्कप्रभामा होय. ए प्रमाणे ए क्रमयी त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग, यावत् सत्तकसंयोग जेम वस नैरयिकनो कलो तेम कहेवो. तेनो छेज्जो आलापक-अथवा नंल्याता रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामा अने यावत् संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमा होय.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्तप्रभामा होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! १ रत्तप्रभामा पण होय अने यावत् ७ अधःसत्तमपृथिवीमां पण होय. \* १ अथवा एक रत्तप्रभामा अने अनंख्याता शर्कराप्रभामा होय. ए प्रमाणे जेम संख्याता नैरयिकनो द्विकसंयोग, यावत् सत्तकसंयोग कखो तेम असंख्यातानो पण कहेवो. पण विशेष ए के अहिं 'असंख्याता' पद कहेवुं. वाकी वहुं तेज प्रमाणे जाणवुं, यावत् छेज्जो आलापक-अथवा असंख्याता रत्तप्रभामां असंख्याता शर्कराप्रभामा यावत् असंख्याता अधःसत्तमपृथिवीमा पण होय.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता नैरयिको उत्कृष्टपदे शुं रत्तप्रभामा होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! १ सर्व नैरयिको उत्कृष्टपदे रत्तप्रभामा होय. [द्विकसंयोगी छ विकल्प-] १ अथवा रत्तप्रभामा अने शर्कराप्रभामां होय. अथवा रत्तप्रभा अने वालुकाप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावद् अथवा ६ रत्तप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमा पण होय. [त्रिकसंयोगी १५ विकल्प-] १ अथवा रत्तप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभामा होय. ए प्रमाणे यावद् ५ रत्तप्रभा शर्कराप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमा होय. ६ अथवा रत्तप्रभा वालुकाप्रभा अने पंक्कप्रभामां पण होय. यावद् १० अथवा रत्तप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमा होय.

१ सक्करप्पमाए छ । २ चटक्कासं-क । ३ सत्तासं-क । ४ सत्तासं-क ।

\* असंख्याता नैरयिकनो आश्रयी एकयोगादि विकल्पो आ प्रमाणे छे—७, २५२, ८०५, ११९०, १४५, ३९२, ६७-वचा मळीने ३६५६ विकल्पो याव छे.

असरयान  
नैरयिको

द्विकसंयोगादि  
विकल्पो

उत्कृष्टप्रवेशनक  
द्विकसंयोग  
त्रिकसंयोग

भाए अहेसत्तमाए य होजा; अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होजा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणितो तथा भाणियद्धं जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होजा । अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होजा; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होजा; जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होजा; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होजा; एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कगसंजोगो भणितो तथा भाणियद्धं, जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होजा । अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होजा १, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होजा २; अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तमाए य होजा ३; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होजा ४, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तथा भाणियद्धं; जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होजा; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होजा १; अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होजा २, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होजा ३; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होजा ४; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होजा ५; अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए होजा ६; अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होजा ७ ।

२४. [प्र०] एयस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयप्पवेसणगस्स सक्करप्पभापुढवि- जाव अहे सत्तमापुढविनेरइयप्पवे- ङ्गणगस्स कयरे- कयरे जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया । सद्धत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयप्पवेसणए, तमापुढविनेरइयप्पवेसणए असंखेज्जगुणे; एवं पडिलोमगं जाव रयणप्पभापुढविनेरइयप्पवेसणए असंखेज्जगुणे ।

२५. [प्र०] तिरिक्खजोणियप्पवेसणए णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ? [उ०] गंगेया ! पंचविहे पत्तत्ते, तं जहा-एग्गिदिय-तेरिक्खजोणियप्पवेसणए, जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियप्पवेसणए ।

१ अथवा रत्नप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभाने मुक्या शिवाय त्रण नैरयिकोनो त्रिकसयोग कह्यो तेम अहीं कहेवुं. यावद् १५ अथवा रत्नप्रभा, तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामा पण होय.

[चतुःसंयोगी २० विकल्प-] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामा होय. २ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने धूमप्रभामा होय. यावत् ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमा पण होय. ५ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामा होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभाने मुक्या शिवाय जेम चार नैरयिकोनो चतुष्कसयोग कह्यो छे तेम अहीं कहेवो. यावद् २० अथवा रत्नप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामा होय.

[पंचसंयोगी १५ विकल्प-] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामा होय. २ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने तम प्रभामां होय. ३ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमा होय. ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा धूमप्रभा अने तमःप्रभामा होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभाने छोड्या शिवाय जेम पाच नैरयिकोनो पंचसयोग कह्यो तेम कहेवो. यावद् १५ अथवा रत्नप्रभा पंकप्रभा यावद् अधःसत्तमपृथिवीमा होय.

[पट्कसयोगी छ विकल्प-] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा यावत् धूमप्रभा अने तमःप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा यावद् धूमप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमा होय. ३ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा यावत् पंकप्रभा तमःप्रभा अने अधःसत्तम पृथिवीमा होय. ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां होय. ५ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा पंकप्रभा यावद् अधःसत्तमपृथिवीमा होय. ६ अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा यावद् अधःसत्तमपृथिवीमा होय. [सप्तसंयोगी १ विकल्प-] अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा, यावद् अधःसत्तमपृथिवीमा होय. [ए रीते उक्कट्ट पदना १-६-१५-२०-१५-६-१ मळी ६४ विकल्पो थाय छे.]

२४. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, यावद् अधःसत्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनकमा कया प्रवेशनको कया प्रवेशनकोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गागेय ! सौथी अल्प अधःसत्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनक छे, तेना करता तमापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक असल्येयगुण छे. ए प्रमाणे विपरीत क्रमथी यावत् रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक असंख्यातगुण छे.

तिर्यचयोनिकप्रवेशनक.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यचयोनिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गागेय ! पाच प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे एकेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक, यावत् पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक.

चतु संयोग.

पंचसंयोग.

पट्कसयोग.

सप्तसंयोग.

नैरयिकप्रवेशनक  
अत्यवदुल्ल.तिर्यचयोनिक  
प्रकार.

२६. [प्र०] एगे भंते ! तिरिक्खजोणिय तिरिक्खजोणियपवेसणणं पविसमाणे किं पंगिदिण्णु होजा, जाव पंचिदिण्णु होजा ? [उ०] गंगेया ! पंगिदिण्णु वा होजा, जाव पंचिदिण्णु वा होजा ।

२७. [प्र०] दो भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छ । [उ०] गंगेया ! पंगिदिण्णु वा होजा, जाव पंचिदिण्णु वा होजा अहवा एगे पंगिदिण्णु होजा एगे वेण्दिण्णु होजा, एवं जहा नेरय्यपवेसणण, तहा तिरिक्खजोणियपवेसणण वि भाणियथे जाव असंजेजा ।

२८. [प्र०] उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छ । [उ०] गंगेया ! सध्वे वि ताव पंगिदिण्णु होजा, अहवा पंगिदिण्णु वा वेण्दिण्णु वा होजा । एवं जहा नेरतिया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयदा । पंगिदिण्णु अमुयंतरेणु दुया संजोगो, तियासंजोगो, चैडवसंजोगो, पंचसंजोगो उचउंजिऊण भाणियथो, जाव अहवा पंगिदिण्णु वा, वेण्दिण्णु वा पंचिदिण्णु वा होजा ।

२९. [प्र०] पयस्स णं भंते ! पंगिदिण्णुतिरिक्खजोणियपवेसणणस्स, जाव पंचिदिण्णुतिरिक्खजोणियपवेसणणस्स कयरे कयरे— जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया ! सध्वथोवे पंचिदिण्णुतिरिक्खजोणियपवेसणण, चउरिदिण्णुतिरिक्खजोणियपवेसणण विसेसाहिय, वेण्दिण्णु विसेसाहिय, वेण्दिण्णु विसेसाहिय, पंगिदिण्णुतिरिक्खजोणियपवेसणण विसेसाहिय ।

३०. [प्र०] मणुस्सपपवेसणण णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गंगेया ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा— संमुच्छिममणुस्सपपवेसणण, गन्धवकंतियमणुस्सपपवेसणण य ।

३१. [प्र०] एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपपवेसणणणं पविसमाणे किं संमुच्छिममणुस्सेणु होजा, गन्धवकंतियमणुस्सेणु होजा ? [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेणु वा होजा, गन्धवकंतियमणुस्सेणु वा होजा ।

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एक तिर्यचयोनिक जीव तिर्यचयोनिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करतो शुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय ? [उ०] हे गागेय ! \* १ एक तिर्यचयोनिक जीव एकेन्द्रियमां होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियमां पण होय ।

२७. [प्र०] हे भगवन् ! वे तिर्यचयोनिक जीवो संवन्वे प्रश्न. [उ०] हे गागेय ! १ एकेन्द्रियोमां पण होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियोमां पण होय. अथवा एक एकेन्द्रियमां अने एक वेण्दिण्णुमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकप्रवेशनकमां कथुं तेम तिर्यचयोनिकप्रवेशनकमां यावत् असंख्येय तिर्यचयोनिको सुधी कहेंवुं.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यचयोनिको उत्कृष्टपणे [ शुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय ? ] ए प्रश्न. [उ०] गागेय ! ते वधा एकेन्द्रियोमां होय. अथवा एकेन्द्रियो अने वेण्दिण्णुमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकोतो नचार कथुं तेम तिर्यचयोनिकोतो पण सचार करवो. एकेन्द्रियोने मुन्या सिवाय द्विकस्योग, त्रिकस्योग, चतुष्कस्योग अने पंचजनयोग उपयोगपूर्वक कहेंवे यावत् अथवा एकेन्द्रियोमां वेण्दिण्णुमां यावत् पंचेन्द्रियोमां पण होय.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक, यावत् पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनकमां कथुं प्रवेशनक कोनाथी याव विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गागेय ! पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक सौधी अल्प छे, तेथी चउरिदिण्णुतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे तेना करता त्रीन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, तेना करता वेण्दिण्णुतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, अने तेना एकेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे.

### मनुष्यप्रवेशनक.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यप्रवेशनक केटला प्रकारे कथुं छे ? [उ०] हे गागेय ! वे प्रकारे कथुं छे, ते आ प्रमाणे—संमुच्छिममनुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमनुष्यप्रवेशनक.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करतो एक मनुष्य शुं समूर्च्छिम मनुष्योमां होय के गर्भज मनुष्योमां होय [उ०] हे गागेय ! ते समूर्च्छिम मनुष्योमां पण होय अने गर्भज मनुष्योमां पण होय.

१-२ वेण्दिण्णु क । ३ चउकासं- क । ४ पंचासं- क ।

२६. \* यद्यपि अहि 'एक जीव एकेन्द्रियमां उत्पन्न थाय' एम कथुं, तेमां ए विचारणीय छे के एकेन्द्रियोमां एक जीव कदापि उत्पन्न यतो नथी, पर प्रतिमय अनन्त जीवो उत्पन्न थाय छे, तोपण विजातीय देवादिमवधी नीकळीने जे एकेन्द्रियमां उत्पन्न थाय ते प्रवेशनक कहेवाय छे, ते अपेक्षाए एक जीव ५ एवमे प्रवेशनक एटले जे पिजातीय नवधी आवीने पिजातिमां उत्पन्न थाय सजातीय जीव सजातिमा आवीने उत्पन्न थाय, ते तो तेमा प्रविष्टज माटे ते प्रवेशनक न कहेवाय हवे एन जीव अनुक्रमे एकेन्द्रियादि पाच स्थळे आवी उत्पन्न थाय हारे तेना पाच विक्रमो थाय. वे जीवो पण एक ५-स्थळे साथे उत्पन्न थाय तो पण पाच ज विक्रमो थाय, अने द्विक्रमयोगी दश विक्रमो थाय, हवे त्रणथी मावीने असंख्यात तिर्यचयोनिकोशुं प्रवेशनक नैरयिकप्रवेशनकनी पेठे जाणुं, परन्तु नारको सात नरकपृथिवीमा उत्पन्न थाय अने तिर्यचो एकेन्द्रियादि पाच स्थानकोमा उत्पन्न थाय, माटे भागानी सरया निभिन्न थाय, ते बुद्धिमाने स्वय विचारी लेवा यद्यपि अही धनन्त एकेन्द्रियो उत्पन्न थाय छे, परन्तु उपर वतावेळुं प्रवेशनकनुं लक्षण असंख्यात जीवोमा यदी शक्ये छे माटे असंख्यात सुधी प्रवेशनक जाणुवुं.

एक तिर्यचयोनिक.

वे तिर्यचयोनिको.

यावत् अमख्याता तिर्यचो

उत्कृष्ट तिर्यच योनिकप्रवेशनक

तिर्यचयोनिक- प्रवेशनकारपत्रद्वय.

एक मनुष्य

३२. [प्र०] दो भंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होजा, गन्भवकंतियमणुस्सेसु वा होजा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु वा होजा एगे गन्भवकंतियमणुस्सेसु वा होजा, एवं एएणं कमेणं जहा नेरइयपवे-  
नणए तहा मणुस्तपवेसणए वि भाणियधे, जाव दस ।

३३. [प्र०] संखेजा भंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होजा, गन्भवकंतियमणुस्सेसु वा होजा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होजा संखेजा गन्भवकंतियमणुस्सेसु वा होजा; अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होजा संखेजा गन्भवकंतियमणुस्सेसु होजा; एवं एकेकं उंस्सारितेसु जाव अहवा संखेजा संमुच्छिममणुस्सेसु होजा संखेजा गन्भवकंतियमणुस्सेसु होजा ।

३४. [प्र०] असंखेजा भंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सधे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होजा । अहवा असंखेजा संमुच्छिमणुस्सेसु एगे गन्भवकंतियमणुस्सेसु होजा; अहवा असंखेजा संमुच्छिममणुस्सेसु दो गन्भवकंतियमणु-  
स्सेसु होजा; एवं जाव असंखेजा संमुच्छिममणुस्सेसु होजा संखेजा गन्भवकंतियमणुस्सेसु होजा ।

३५. [प्र०] उक्कोसा भंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सधे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होजा, अहवा समु-  
च्छिममणुस्सेसु य गन्भवकंतियमणुस्सेसु वा होजा ।

३६. [प्र०] एयस्त णं भंते ! संमुच्छिममणुस्तपवेसणगस्त गन्भवकंतियमणुस्तपवेसणगस्त य कयरे कयरे— जाव वेसेसाहिया ? [उ०] गंगेया ! सध्वथोवे गन्भवकंतियमणुस्तपवेसणए, संमुच्छिममणुस्तपवेसणए असंखेजगुणे ।

३७. [प्र०] देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ? [उ०] गंगेया ! चउधिहे पन्नत्ते, तं जहा—भवनवासिदेवपवे-  
सणए, जाव वेमाणियदेवपवेसणए ।

३८. [प्र०] एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होजा, वाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिएसु होजा ? [उ०] गंगेया ! भवणवासीसु वा होजा, वाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिएसु वा होजा ।

३२. [प्र०] हे भगवन् ! वे मनुष्यो मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करता—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! वे मनुष्यो संमूर्च्छिम मनु-  
ष्योमा पण होय अने गर्भज मनुष्योमा पण होय. अथवा एक संमूर्च्छिम मनुष्यमा होय अने एक गर्भजमनुष्यमा होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी  
प्रेम नैरयिकप्रवेशनक कह्युं तेम मनुष्यप्रवेशनक पण यावद् दश मनुष्यो सुधीं कहेहुं.

वे मनुष्यो.

दश मनुष्यो.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता मनुष्यो मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करता—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! तेओ संमूर्च्छिम  
मनुष्यमा पण होय अने गर्भज मनुष्यमा पण होय. अथवा एक संमूर्च्छिम मनुष्योमा होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमा होय. अथवा वे  
संमूर्च्छिम मनुष्योमा होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमा होय. ए प्रमाणे एक एक वधारता यावद् अथवा संख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमा अने  
संख्याता गर्भज मनुष्योमा होय.

संख्याता मनुष्यो.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता मनुष्यो संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते वधा संमूर्च्छिम मनुष्योमा होय. अथवा असंख्याता  
संमूर्च्छिम मनुष्योमा होय अने एक गर्भज मनुष्योमा होय. अथवा असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमा होय अने वे गर्भज मनुष्योमा होय. ए  
माणे यावत् असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमा होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमा होय.

असंख्याता मनुष्यो

३५. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यो उक्कटपणे [कया प्रवेशनकमा होय ?] ए संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते वधाय सम-  
ूर्च्छिम मनुष्योमा होय. अथवा संमूर्च्छिम मनुष्यो अने गर्भज मनुष्योमा पण होय.

उक्कट मनुष्य-  
प्रवेशनक.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! समूर्च्छिममनुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमनुष्यप्रवेशनकमा कयुं प्रवेशनक कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ?  
[उ०] हे गांगेय ! सौथी अल्प गर्भजमनुष्य प्रवेशनक छे, अने संमूर्च्छिम मनुष्यप्रवेशनक असख्येयगुण छे.

मनुष्यप्रवेशनक  
अल्पवहुत्व.

### देवप्रवेशनक.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! देवप्रवेशनक केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गांगेय ! चार प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—१  
भवनवासिदेवप्रवेशनक, यावद् ४ वैमानिकदेवप्रवेशनक.

देवप्रवेशनक  
प्रकार.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! एक देव देवप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो शुं भवनवासिमा होय, वानव्यंतरमा होय, ज्योतिषिकमा होय के  
वैमानिकमा होय ? [उ०] हे गांगेय ! १ भवनवासिमा होय, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिकमा पण होय.

एक देव.

३९. [प्र०] दो भंते ! देवा देवपवेशनपणं० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! भवणवासीसु वा होजा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिपसु वा होजा । अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होजा, एवं जहा निरिक्खजोणियपवेशणण तहा देवपवेशणणं वि भाणियवे, जाव असंखेज्ज त्ति ।

४०. [प्र०] उज्जेसा भंते ! पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सद्ये वि ताव जोइसियसु होजा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होजा, अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होजा, अहवा जोइसिय-वेमाणिपसु य होजा, अहवा जोइसियसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होजा, अहवा जोइसियसु य भवणवासीसु य वेमाणिपसु य होजा, अहवा जोइसियसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिपसु य होजा ।

४१. [प्र०] प्यस्त णं भंते ! भवणवासिदेवपवेशनगस्स, वाणमंतरदेवपवेशनगस्स, जोइसियदेवपवेशनगस्स, वेमाणिय-देवपवेशनगस्स य कयरं कयरं- जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया ! सद्यत्थोवे वेमाणियदेवपवेशणण, भवणव सिदेवपवेश असंखेज्जगुणे, वाणमंतरदेवपवेशणण असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेशणण संखेज्जगुणे ।

४२. [प्र०] प्यस्त णं भंते ! नेरइयपवेशनगस्स तिरिक्खजोणिय० मणुस्स० देवपवेशनगस्स य कयरं कयरं- जा विसेसाहिए वा ? [उ०] गंगेया ! सद्यत्थोवे मणुस्सपवेशणण, नेरइयपवेशणण असंखेज्जगुणे, देवपवेशणण असंखेज्जगुणे तिरिक्खजोणियपवेशणण असंखेज्जगुणे ।

४३. [प्र०] संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति, संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं अरु कुमारा उववज्जंति, जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति, संतरं नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति, जाव संतरं वाणमंतरा उववज्जंति निरंतरं वाणमंतरा उववज्जंति, सांतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति, सांतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति, जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति; नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, एवं जाव चणस्सइकाइया, सेसा जहा नेरइया, जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं

वे देवो.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! वे देवो देवप्रवेशनकण्डे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गंगेय ! ते वे देवो १ भवनवासिमा होय, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिकमां पण होय. अथवा एक भवनवासिमा होय अने एक वानव्यंतरमां होय. ए प्रमाणे जेम तिर्यचयोनिकप्रवेशनक क्युं छे तेम देवप्रवेशनक पण यावद् असंख्याता देवो सुवी जाणवुं.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! देवो उच्छ्रयणे [ कया प्रवेशनकमां होय ? ]-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गंगेय ! ते ववा ज्योतिष्कमां होय अथवा ज्योतिष्क अने भवनवासिमा होय. अथवा ज्योतिष्क अने वानव्यंतरमा होय. अथवा ज्योतिष्क अने वैमानिकमा होय. ज्योतिष्क, भवनवासी अने वानव्यंतरमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी अने वैमानिकमा होय. अथवा ज्योतिष्क, वानव्यंतर अने वैमानिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी, वानव्यंतर अने वैमानिकमा होय.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासिदेवप्रवेशनक, वानव्यंतरदेवप्रवेशनक, ज्योतिष्कदेवप्रवेशनक अने वैमानिकदेवप्रवेशनकमां कयं प्रवेशनक कया प्रवेशनकथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गंगेय ! वैमानिकदेवप्रवेशनक सांथी अल्प छे, तेना करतां अन्गव्येयगुं. भवनवासिदेवप्रवेशनक छे, तेथी असंख्येयगुण वानव्यंतरदेवप्रवेशनक छे, अने तेनाथी ज्योतिष्कदेवप्रवेशनक संख्यातगुण छे.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनक, तिर्यचयोनिकप्रवेशनक, मनुष्यप्रवेशनक अने देवप्रवेशनकमां कयं प्रवेशनक कया प्रवेशनकथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गंगेय ! सांथी अल्प मनुष्यप्रवेशनक छे, तेथी नैरयिकप्रवेशनक असंख्यात गुण छे, तेना करता असंख्यातगुण देवप्रवेशनक छे अने तेनाथी असंख्यातगुण तिर्यचयोनिकप्रवेशनक छे.

उत्पाद अने उद्धर्तना.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर ( अन्तरसहित ) उत्पन्न थाय छे के निरन्तर ( अन्तररहित ) उत्पन्न थाय छे ? असुरकुमारो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? यावत् वैमानिक देवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? नैरयिको सान्तर उद्धर्त छे-नीकळे छे के निरन्तर उद्धर्त छे ? यावत् वानव्यंतरो सांतर उद्धर्त छे के निरन्तर उद्धर्त छे ? ज्योतिष्को सान्तर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? अने वैमानिको सान्तर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? [उ०] हे गंगेय ! नैरयिको सान्तर उत्पन्न थाय छे अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे. यावत् सानिनकुमारो सान्तर अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. पृथिवीकायिको सान्तर उत्पन्न थता नथी पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् वनरपतिकायिको पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. तथा वाकीना वधा जीवो नैरयिकोनी पेटे सान्तर

१ सांतरं सर्वत्र क । २ उववज्जंति सर्वत्र य, कचित् क; 'उववज्जंति' कपुसके बहुश. पाठः समुपलभ्यते ।

नैरयिकोनी  
सान्तर अने  
निरन्तर उपाद  
अने उद्धर्तना

देवप्रवेशनकं  
असंख्येयगुण

सर्वं प्रवेशनकं  
असंख्येयगुण

३२

पि वेमाणिया उववज्जंति; संतरं पि नेरइया उव्वट्ठंति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्ठंति, एवं जाव थणियकुमारा । नो संतरं पुढ-  
विकाइया उव्वट्ठंति निरंतरं पुढविकाइया उव्वट्ठंति, एवं जाव वणस्सइकाइया, सेसा जहा नेरइया, नवरं जोइसिय—वेमाणिया  
चयंति अभिलावो, जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति निरंतरं पि वेमाणिया चयंति ।

४४. [प्र०] संतो भंते ! नेरइया उववज्जंति, असतो भंते ! नेरइया उववज्जंति ? [उ०] गंगेया ! सतो नेरइया उवव-  
ज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति; एवं जाव वेमाणिया ।

४५. [प्र०] सतो भंते ! नेरइया उव्वट्ठंति, असतो नेरइया उव्वट्ठंति ? [उ०] गंगेया ! सतो नेरइया उव्वट्ठंति, नो असतो  
नेरइया उव्वट्ठंति, एवं जाव वेमाणिया, नवरं जोइसिय—वेमाणिएसु चयंति भाणियच्चं ।

४६. [प्र०] सओ भंते ! नेरइया उववज्जंति, असतो भंते नेरइया उववज्जंति; सतो असुरकुमारा उववज्जंति, जाव  
मत्तो वेमाणिया उववज्जंति, असतो वेमाणिया उववज्जंति; सतो नेरतिया उव्वट्ठंति, असतो नेरइया उव्वट्ठंति; सतो असुरकु-  
मारा उव्वट्ठंति, जाव सतो वेमाणिया चयंति, असतो वेमाणिया चयंति ? [उ०] गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असओ  
नेरइया उववज्जंति, सओ असुरकुमारा उववज्जंति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जंति; जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति, नो  
असतो वेमाणिया उववज्जंति; सतो नेरतिया उव्वट्ठंति, नो असतो नेरतिया उव्वट्ठंति; जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो  
असतो वेमाणिया चयंति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चति—सतो नेरतिया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति;  
जाव सओ वेमाणिया चयंति, नो असओ वेमाणिया चयंति ? [उ०] से पूर्णं गंगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं  
सासए लोए बुइए अणादीए अणचयग्गे, जहा पंचमसए, जाव 'जे लोक्क से लोए', से तेणट्टेणं गंगेया ! एवं बुच्चइ—जाव  
सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति ।

४७. [प्र०] सयं भंते ! एवं जाणह, उदाहु असयं, असोच्चा एते एवं जाणह, उदाहु सोच्चा; 'सतो नेरइया उववज्जंति,  
नो असतो नेरइया उववज्जंति; जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असओ वेमाणिया चयंति' ? [उ०] गंगेया ! सयं एते एवं

अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. यावद् वैमानिको पण सान्तर अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. नैरयिको सान्तर अने निरन्तर उद्वर्ते छे. ए  
प्रमाणे यावद् स्तान्तिकुमारो जाणवा. पृथिवीकायिको सान्तर उद्वर्तता नथी पण निरन्तर उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिको पण  
जाणवा. वाकीना वधा जीवो नैरयिकोनी पेटे सान्तर अने निरन्तर उद्वर्ते छे. पण विशेष ए छे के 'ज्योतिपिको अने वैमानिको च्यवे छे'  
इम पाठ कहेवो. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सान्तर अने निरन्तर च्यवे छे.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! सद्-विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असद्-अविद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे  
गागेय ! सद्-विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे, पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक पर्यन्त जाणवुं.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे के अविद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे ? [उ०] हे गागेय ! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते  
छे पण अविद्यमान नैरयिको उद्वर्तता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. विशेष ए छे के ज्योतिष्क अने वैमानिकोमां 'च्यवे छे'  
इयो पाठ कहेवो.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे ? सद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे के  
असद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे ? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे के असद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे ? सद् नैरयिको  
उद्वर्ते छे के असद् नैरयिको उद्वर्ते छे ? सद् असुरकुमारो उद्वर्ते छे के असद् असुरकुमारो उद्वर्ते छे ? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको च्यवे  
छे के असद् वैमानिको च्यवे छे ? [उ०] हे गागेय ! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. सद् असुरकुमारो  
उत्पन्न थाय छे पण असद् असुरकुमारो उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे पण असद् वैमानिको उत्पन्न थता  
नथी. सद् नैरयिको उद्वर्ते छे पण असद् नैरयिको उद्वर्तता नथी. यावद् सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी. [प्र०]  
हे भगवन् ! एम गा हेतुथी कहे छो के सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् सद् वैमा-  
निको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी ? हे भगवन् ! शुं ते निश्चित छे ? [उ०] हे गागेय ! खरेखर पुरुपादानीय अर्हत् श्रीपा-  
र्शनाथे "लोकने शाश्वत, अनादि अने अनन्त कह्यो छे—" इत्यादि \*पाचमा शतकमा कह्यो प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे अवलोको शकाय—  
जाणी शकाय ते लोक, ते हेतुथी हे गागेय ! एम कहुं छे के, सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! आप स्वयं आ प्रमाणे जाणो छो, के अस्वयं जाणो छो ? सांभळ्या शिवाय ए प्रमाणे जाणो  
छो अथवा सांभळीने जाणो छो के 'सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी, यावत् सद्

विद्यमान नैरयिको  
उत्पन्न थाय छे  
के अविद्यमान ?

सद् नैरयिको  
उद्वर्ते छे के असद् ?

सद् नैरयिकादिना  
उत्पाद अने उद्वर्तना-  
सवन्धे प्रश्न.

सद् नैरयिकादिना  
उत्पाद अने उद्व-  
र्तनानो हेतु

आप स्वयं जाणो छो  
के अस्वयं जाणो छो ?



जाणामि, नो असयं, असोच्चा एते एयं जाणामि, नो सोच्चा 'मतो नेरइया उववजंति, नो असतो नेरइया उववजंति; जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति' । [प्र०] से केणट्टेणं भंते! एवं बुच्चति—तं चैव, जाव 'नो अमतो वेमाणिया चयंति' ? [उ०] गंगेया! केवली णं पुंरत्थियेणं मियं पि जाणट्ट, अमियं पि जाणट्ट; दाहिणेणं एवं जहा संहदेसए, जाव निव्वुडे नाणे केवल्लिस्स; से तेणट्टेणं गंगेया! एवं बुच्चट्ट 'तं चैव जाव नो अमतो वेमाणिया चयंति' ।

४८. [प्र०] सयं भंते! नेरइया नेरइयसु उववजंति, असयं नेरइया नेरइयसु उववजंति? [उ०] गंगेया! सयं नेरइया नेरइयसु उववजंति, नो असयं नेरइया नेरइयसु उववजंति [प्र०] से केणट्टेणं भंते! एवं बुच्चट्ट—जाव उववजंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्ममारियत्ताए, कम्मगुरुसंमारियत्ताए, अरुमाणं कर्माणं उदएणं, अरुमाणं कर्माणं विवागेणं, अरुमाणं कर्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइयसु उववजंति, नो असयं नेरइया नेरइयसु उववजंति; से तेणट्टेणं गंगेया! जाव उववजंति ।

४९. [प्र०] सयं भंते! असुरकुमारा० पुच्छा । [उ०] गंगेया! सयं असुरकुमारा जाव उववजंति, नो असयं असुरकुमारा जाव उववजंति । [प्र०] से केणट्टेणं तं चैव जाव उववजंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मोवसमेणं, कम्मविगतीए, कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए; सुमाणं कर्माणं उदएणं, सुमाणं कर्माणं विवागेणं, सुमाणं कर्माणं फलविवागेणं सयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववजंति, नो असयं असुरकुमारा जाव उववजंति; से तेणट्टेणं जाव उववजंति, एवं जाव अणियकुमारा ।

५०. [प्र०] सयं भंते! पुढविक्काइया० पुच्छा । [उ०] गंगेया! सयं पुढविक्काइया जाव उववजंति, नो असयं पुढविक्काइया जाव उववजंति । [प्र०] से केणट्टेणं जाव उववजंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्ममारियत्ताए, कम्मगुरुसंमारियत्ताए सुभा—सुमाणं कर्माणं उदएणं, सुभा—सुमाणं कर्माणं विवागेणं, सुभा—सुमाणं कर्माणं फलवैमानिको च्ये छे, पण असद् वैमानिको च्यवता नथी? [उ०] हे गागेय! हुं ए वयुं स्वयं जाणुं छुं, पण असयं (वीजानी सहायथी) जाणतो नथी. वळी सामब्ब्या विना आ प्रमाणे जाणुं छुं, पण सामब्बिने जाणतो नथी के 'सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे, पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी, यावत् सद् वैमानिको च्ये छे, पण असद् वैमानिको च्यवता नथी.' [प्र०] हे भगवन्! एम आ हेतुथी कहो छो के, 'हुं स्वयं जाणुं छुं—इत्यादि पूर्वोक्त यावत् असद् वैमानिको च्यवता नथी? [उ०] हे गागेय! केवलजानी पूर्वमा मित (मर्यादित) पण जाणे, अने अमित (अमर्यादित) पण जाणे, तथा दक्षिणमां पण ए प्रमाणे जाणे. ए प्रमाणे जेम \*शब्द उद्देशकमा कखुं छे तेम जाणुं, यावत् 'किवल्लिनुं ज्ञान निरावरण होय छे,' माटे हे गागेय! ते हेतुथी एम कहुं छुं के 'हुं स्वयं जाणुं छुं—इत्यादि यावत् असद् वैमानिको च्यवता नथी.'

४८. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको नैरयिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे के असयं उत्पन्न थाय छे. [उ०] हे गागेय! नैरयिको नैरयिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण असयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम आ हेतुथी कहो छो के 'स्वयं यावत् उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गागेय! कर्मना उदयथी, कर्मना गुरुपणाथी, कर्मना मारेपणाथी, कर्मना अत्यन्त मारेपणाथी, अशुभ कर्मोना उदयथी, अशुभ कर्मोना विपाकथी अने अशुभ कर्मोना फल—विपाकथी नैरयिको नैरयिकोमा स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण नैरयिको नैरयिकोमा असयं उत्पन्न थता नथी, ते हेतुथी हे गागेय! एम कहेवाय छे के यावत् 'तेओ स्वयं उत्पन्न थाय छे.'

४९. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारो स्वयं [असुरकुमारपणे उत्पन्न थाय छे?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय! असुरकुमारो स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण असयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम आ हेतुथी कहो छो के तेओ 'स्वयं यावत् उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गागेय! कर्मना उदयथी, [अशुभ] कर्मना उपजमथी, अशुभ कर्मना अभावथी, कर्मनी विगोविथी, कर्मनी विशुद्धिथी, शुभ कर्मोना उदयथी, शुभ कर्मोना विपाकथी अने शुभ कर्मोना फल—विपाकथी असुरकुमारो असुरकुमारपणे स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण असुरकुमारो असुरकुमारपणे असयं उत्पन्न थता नथी. माटे हे गागेय! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, यावत् 'उत्पन्न थाय छे.' ए प्रमाणे यावत् स्तानितकुमारो सुवी जाणुं.

५०. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गागेय! पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे पण असयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम आ हेतुथी कहो छो के 'पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गागेय! कर्मना उदयथी, कर्मना गुरुपणाथी, कर्मना भारथी, कर्मना अत्यन्त भारथी, शुभ अने अशुभ कर्मोना उदयथी, शुभ अने अशुभ

१-पुरच्छिमेणं घ-उ । २ सगहुदे-क-ग-व-उ ।

४७ \* भग० २ अ. ६ उ. ४ पृ. १७०.

नैरयिको स्वय उपजे छे के असय उपजे छे?

असुरकुमारो.

पृथिवीकायिको.

विवागेणं सयं पुढविक्काइया जाव उववज्जंति, नो असयं पुढविक्काइया जाव उववज्जंति, से तेणट्टेणं जाव उववज्जंति । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । से तेणट्टेणं गंगेया ! एवं बुच्चति-सयं वेमाणिया जाव उववज्जंति, नो असयं जाव उववज्जंति ।

५१. तप्पभित्ति च णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं पच्चमिजाणइ सव्वण्णुं, सव्वदरिसिं । तए णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, २ करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहवइयं, एवं जहा कालासवेसियपुत्तो तद्देव भाणियद्वं, जाव सव्वदुक्खवप्पहीणे । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

नवमसए गंगेयो वृत्तीसइमो उद्देशो समत्तो ।

कर्मोना विपाकथी, अने शुभाशुभ कर्मोना फलविपाकथी पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण यान्ना अस्वयं उत्पन्न यता नथी. माटे हे गांगेय ! ते हेतुथी एम कहुं छुं के-यावत् 'पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे.' ए प्रमाणे यावत्-मनुष्यो सुधी जाणवुं. जेम असुरकु-मारोने कहुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिपिक अने वैमानिको सवन्वे कहेवुं. माटे हे गांगेय ! ते हेतुथी एम कहुं छुं के-यावत् 'वैमानिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न यता नथी.'

५१. लार पछी श्रीगांगेय अनगार श्रमणं भगवान् महावीरने सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी जाणे छे. लारवाद ते गांगेय अनगार श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार आदक्षिणा प्रदक्षिणा करे छे, करीने वांटे छे, नमे छे; वांटीने, नमीने तेणे एम कहुं के-हे भगवन् ! तमारी पासे चार महाव्रत धर्मथी पांच महाव्रतधर्मने ग्रहण करवा इच्छुं छुं. ए प्रमाणे वधुं \*कालासवेसिक पुत्रनी पेटे-यावत् ते 'सर्वदुःखथी मुक्त थया' त्यां सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.

गांगेय भगवान् महा-  
वीरने सर्वज्ञ माने छे  
अने दीक्षा ग्रहण  
करी निर्वाण पासे छे

नवम शतके वृत्तीशमो गांगेय उद्देशक समाप्त.

## तेत्तीसइमो उद्देशो.

१. [प्र०] तेषं कालेणं, तेषं समएणं माहणकुंडगामे नयरे होत्या । वन्नओ । बहुसालए चेतिए । वन्नओ । तत्थ णं माहणकुंडगामे नयरे उसमदत्ते नामं माहणे परिवसइ; अहे, दिचे, विचे, जाव अपरिभूए; रिउधेद-जलुधेद-सामवेद-अर-  
धणवेद- जहा चंदओ, जाव अनेसु य बहुसु वंमन्नएसु सुपरिनिट्टिए समणोवासए अंमिगयजीवाऽजीवे, उवलद्धपुण्ण-पाव, जाव  
अप्याणं भावेमाणे विहरइ । तस्स णं उसमदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्या, सुकुमालपाणि-पाया, जाव  
पियदंसणा, सुरुवा समणोवासिया अंमिगयजीवा-जीवा, उवलद्धपुत्र-पावा जाव विहरइ । तेषं कालेणं, तेषं समएणं  
सामी समोसहे । परिसा जाव पज्जुवासति । तेषं णं से उसमदत्ते माहणे इमीसे कहाए उवलद्धट्टे समाणे हट्ट-जाव हिंए।  
जेणेव देवाणंदा माहणी तेषेव उवागच्छति, उवागच्छिता देवाणंदां माहणी एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं  
महावीरे आदिगरे, जाव सच्चणू, सच्चदरिसी, आगासगएणं चक्रेणं जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूचं  
जाव विहरति । तं मंहाफलं खलु देवाणुप्पिए ! तंहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अंमि-  
गमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए, एगस्स वि आयरियस्स धंमियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण  
विउलस्स अट्टस्स गहणयाए; तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो, जाव पज्जुवासामो; एवं  
णं इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ । तए णं सा देवाणंदा माहणी उसम-

## तेत्तीसमो उद्देशक.

१. ते काले, ते समये ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. बहुशालक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरमा  
ऋषभदत्त नामे ब्राह्मण रहैतो हतो. ते आल्य-धनिक, तेजस्वी, प्रसिद्ध अने यावत् अपरिभूत-कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो. वळी ते  
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्वणवेदमां निपुण अने \*त्कंदक तापसनी पेटे यावत् ब्राह्मणोना बीजा घणा नयोमा कुशल हतो. ते  
श्रमणोनी उपासक, जीवाजीव तत्त्वेने जाणनार, पुण्य-पापने ओळखनार अने यावत् आम्हाने भावित करतो विहरतो हतो. ते ऋषभदत्त  
ब्राह्मणने देवानंदा नामे ब्राह्मणी स्त्री हती. तेना हाय पग सुकुमाल हता, यावत् तेनुं दर्शन प्रिय हतुं अने तेनुं रूप सुन्दर हतुं. वळी  
श्रमणोनी उपासिका [ देवानंदा ] जीवाजीव अने पुण्यपापने जाणती विहरती हती. ते काले, ते समये महावीरस्वामी समोसर्था. पर्यल यावत्  
पर्युपासना करे छे. सार पळी ते ऋषभदत्त ब्राह्मण श्रमण भगवान् महावीरना आगमननी आ वात जाणीने खुश थयो, यावत् उल्लसित  
हृदयवाळो ययो, अने ज्यां देवानंदा ब्राह्मणी हती त्या आव्यो. त्या आवीने तेणे देवानंदा ब्राह्मणीने आ प्रमाणे कहुं के-हे देवानुप्रिये !  
ए प्रमाणे अहीं तीर्थनी आदि करनार यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर आकाशमा रहेल्य चक्रवडे यावत् सुखपूर्वक विहार  
करता बहुशालक नामे चैत्यमा योग्य अवग्रहने ग्रहण करीने यावत् विहरे छे. हे देवानुप्रिये ! यावत् तेवा प्रकारना अर्हत् भगवंतना नाम  
-गोत्रना पण श्रवणथी मोहुं फल प्राप्त थाय छे, तो वळी तेओना अंमिगमन ( सामा जत्तुं ), वंदन, नमन, प्रतिप्रच्छन अने पर्युपासन कर-  
वाथी फल थाय तेमां शुं कहेहुं ? तथा एक पण आर्थ अने वार्षिक सुवचनना श्रवणथी मोहुं फल थाय छे, तो वळी विपुल अर्थने ग्रहण  
करवावडे महाफल थाय तेमां शुं कहेहुं ? माटे हे देवानुप्रिये ! आपणे जइए अने श्रमण भगवंत महावीरने वन्दन-नमन करीए, यावत्  
तेमनी पर्युपासना करीए. ए आपणने आ भवमा तथा परभवमा हित, सुख, सगता, निःश्रेयस अने शुभ अनुबंधने माटे यत्रे. ज्यारे ते

१ - गामे णामं न- ड । २ अहिग- क । ३ तते णं क । ४ हिदए क । ५ महफलं क । ६ जाव तथा- ग-घ । ७ अरिहं-ग-घ ।  
८ एवं णे इ- क, एवं णो इ- ड ।

वृत्तेण माहणेण एवं बुक्ता समाणी हट्ट- जाव हिदयां, करयल- जाव कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्टं विणएणं पडि-  
सुणेइ ।-

२. तए णं से उसभदत्ते माहणे कोडुंविद्यपुरिसे सद्दावेइ, कोडुंविद्यपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वैयासी-खिप्पामेव भो देवा-  
णुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिगेहिं, जंबूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्टेहिं, रययामयघंटा-  
सुत्तरज्जुयपवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं, नीलुप्पलकयामेलएहिं, पवरसोणजुवाणएहिं णाणामणि-रयणवंदियाजालपरिगयं,  
सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिमित्तं, पवरलक्खणोववेयं धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता  
मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं एवं बुक्ता समाणा हट्ट- जाव हियया, करयल-  
एवं सामी तहत्ताणाए विणएणं वयणं जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त- जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्टवेत्ता  
जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

३. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए, जाव अप्पमहग्गधाभरणालंकियसरीरे सातो गिहातो पडिणिक्खमति, पडिणि-  
क्खमत्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं  
दूरुडे । तए णं सा देवाणंदा माहणी अंतो अंतोउरंसि ण्हाता; कयवलिकम्मा, कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता, किंच वर-  
गादपत्तणेउर-मणिमेहला-हंररचित-उचियकडग-खुंढाग-एकावली-कंठसुत्त-उरत्थगेवेज-सोणिसुत्तग-णाणामणि-रयण-  
भूसणचिराइयंगी, चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया, दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा, सच्चोतुयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचंदणवंदित्ता,  
वराभरणभूसितंगी, कालागरुधूपधूविया, सिरिसमाणवेसा, जाव अप्पमहग्गधाभरणालंकियसरीरा, वट्टहिं खुजाहिं, चिलाति-

ऋपभदत्त ब्राह्मणे देवानदा ब्राह्मणीने ए प्रमाणे कहुं ल्यारे ते खुश थइ, अने यावत् उल्लसितहृदयवाळी थईने पोताना करतलने यावत्  
मस्तके अंजलिरूपे करी ऋपभदत्त ब्राह्मणा ए कयनने विनयपूर्वक स्वीकारे छे.

२. ल्यारवाद ते ऋपभदत्त ब्राह्मण पोताना कौटुंबिक पुरुपोने बोलावे छे, बोलावीने तेओने तेणे आ प्रमाणे कहुं के—हे देवानु-  
प्रियो ! जलदी चालवावाळा, प्रशस्त अने सदशरूपवाळा, समान खरी अने पुच्छवाळा, समान उगेला शिगडावाळा, सोनाना कलाप-आ-  
भरणोथी युक्त, चालवामां उत्तम, रूपानी घंटडीओथी युक्त, सुवर्णमय सुतरनी नाथवडे वाघेला, नील कमळना शिरेपेचवाळा वे उत्तम  
शुवान वळ्दोथी युक्त; अनेक प्रकारनी मणिमय घंटडीओना समूहथी व्याप्त, उत्तम काष्ठमय धोसरु अने जोतरनी वे दोरीओ उत्तम रीते  
जेमां गोठवेळी छे एवा; प्रवरलक्षणयुक्त, धार्मिक, श्रेष्ठ यान-रयने तैयार करी हाजर करो अने आ मारी आज्ञा पाछी आपो'. ज्यारे ते  
ऋपभदत्त ब्राह्मणे ते कौटुंबिक पुरुपोने एम कहुं ल्यारे तेओए खुश थइ यावत् आनंदितहृदयवाळा थइ, मस्तके करतलने जोडी एम कहुं  
के—हिं स्वामिन् ! ए प्रमाणे आपनी आज्ञा मान्य छे'. एम कही विनयपूर्वक वचनने स्वीकारी जलदी चालवावाळा वे वळ्दोथी जोडेला,  
यावत् धार्मिक अने प्रवर यानने ( रयने ) शीघ्र हाजर करीने यावत् आज्ञाने पाछी आपे छे.

३. ल्यारवाद ते ऋपभदत्त ब्राह्मण ज्ञान करी यावत् अल्प अने महामूल्यवाळां आभरणोथी पोताना शरीरने अलंकृत करी पोतान  
घरथी बहार निकळे छे. बहार निकळीने जे ठेकाणे बहारनी उपस्थान शाला छे, अने ज्या धार्मिक यानप्रवर छे त्या आवीने ते रय  
उपर चढे छे. ल्यारवाद ते देवानंदा ब्राह्मणी अंदर अंतःपुरमा ज्ञान करी, वलिकर्म—पूजा करी, कौतुक—( मपीतिलक ) मंगल अने  
प्रायश्चित्त करी, पगमां पहरेला सुंदर नूपुरं, मणिनी कंदोरो, हार, पहरेलां उचित कडा, वींटीओ, विचित्रमणिमय एकावली ( एकसर-  
वाळा ) हार, कंठसूत्र, छातीमां रहेला त्रैवेयक ( लांवा हार ), कटीसूत्र, अने विचित्रमणि तथा खोना आभूषणथी शरीरने सुशोभित करी,  
उत्तम चीनांशुक वस्त्रने पहरी, उपर सुकुमाल रेशमी वस्त्रने ओढी, वधी ऋतुना सुगंधी पुष्पोथी पोताना केशने गुंथी, कपालमा चंदन लगावी,  
उत्तम आभूषणथी शरीरने शणगारी, कालागरुना धूपवडे सुगंधित थइ, लक्ष्मीसमानवेशवाळी, यावत् अल्प अने बहुमूल्यवाळा आभरणोथी  
शरीरने अलंकृत करी, घणी कुञ्ज दासीओ, चिलतदेशनी दासीओ, यावत् अनेक देश विदेशथी आवीने एकठी थयेली, पोताना देशना  
पहरेवेश जेवा वेशने धारण करनारी, इंगितवडे—आकृतिवडे—चिन्तित अने इष्ट अर्थने जाणनारी, कुशल अने विनयवाळी दासीओना  
परिवारसहित, तेमज पोताना देशनी दासीओ, खोजाओ, वृद्ध कंचुकिओ अने मान्य पुरुपोना वृन्द साथे ते देवानंदा पोताना अंत पुरथी  
निकळे छे. निकळीने ज्या बहारनी उपस्थान शाला छे अने ज्या धार्मिक यान प्रवर ( श्रेष्ठ रथ ) उभो छे त्या आवे छे. आवीने यावत् ते  
धार्मिक उत्तम रथ उपर चढे छे. ल्यारवाद ते ऋपभदत्त ब्राह्मण देवानंदा ब्राह्मणीनी साथे धार्मिक अने श्रेष्ठ यान ( रथ ) उपर चढीने  
पोताना परिवारनी साथे ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी निकळे छे. निकळीने जे स्थळे बहुशालक चैत्य छे त्या आवे छे. लां

१ हियया ग-घ-ङ । २ सद्दावियत्ता ग-घ । ३ वदास्ति क । ४ परित्रि ग-घ-ङ । ५-यल-जाव ङ । ६ तहत्ति भाणा-ग-घ । ७ स-  
याओ ङ । ८ -क्खमट्टहा ङ । ९ किंते क, किंचि ग । १० हारविराइअ-ग । ११ रट्टअ-ए-क, खट्टुय ङ । १२-पुरुधूव-ग-घ ।

યાહિં, ધાંણાદેસ-વિદેસપરિપિંડિયાહિં, સદેસનેઘન્યગદિયવેસાહિં, ડંગિત-ચિતિત-પતિયવિયાણિયાહિં, કુસલાહિં, વિર્ણીયાહિં, ચેડિયાચક્રવાલ-વરિસધર-થેરકંચુદ્વજ-મહત્તરગવંદપરિનિલ્લતા અંતેડરાઓ નિગ્ગચ્છતિ, નિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણ-સાલા, જેણેવ ધમ્મિપ જાણપ્પવરં તેણેવ ઉવાગચ્છદ્દ, ઉવાગચ્છિત્તા જાવ ધમ્મિયં જાણપ્પવરં દુરુદ્ધા । તપ્પ ણં સે ઉસમ્મદત્તે માહણે દેવાણંદાપ્પ માહણીપ્પ સહિં ધમ્મિયં જાણપ્પવરં દુરુદ્ધે સમાણે ણિયગપરિયાલસંપરિવુદે માહણકુંડગ્ગામં નગરં મજ્જમંજ્જેણં નિગ્ગ-ચ્છદ્દ; નિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ વહુસાલપ્પ ચેદ્દપ્પ તેણેવ ઉવાગચ્છદ્દ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા હંત્તાદીપ્પ તિત્થકરાતિસપ્પ પાસદ્દ, પાસિત્તા ધમ્મિયં જાણપ્પવરં ટવેદ્દ, ટવિત્તા ધમ્મિયાઓ જાણપ્પવરાઓ પંચોરુદ્ધ, પંચોરુદ્ધિત્તા સમણં ભગવં મહાવીરં પંચવિદ્દેણં અભિગ-મેણં અભિગચ્છતિ, તં જહા-સચ્ચિત્તાણં દ્વઘાણં વિડસરણયાપ્પ, એવં જહા વિતિયસપ્પ, જાવ તિવિદ્દાપ્પ પજ્જુવાસણયાપ્પ પજ્જુવા-સત્તિ । તપ્પ ણં સા દેવાણંદા માહણી ધમ્મિયાઓ જાણપ્પવરાઓ પંચોરુદ્ધ, ધ૦ ૨ પંચોરુદ્ધિત્તા વહુદ્ધિં સુજ્ઞાહિં, જાવ મહત્તરગ-વંદપરિનિલ્લતા સમણં ભગવં મહાવીરં પંચવિદ્દેણં અભિગમેણં અભિગચ્છદ્દ, તં જહા-સચ્ચિત્તાણં દ્વઘાણં વિડસરણયાપ્પ, અચ્ચિત્તાણં દ્વઘાણં અવિમોચણયાપ્પ, વિણયોણયાપ્પ ગાયલટ્ટીપ્પ, ચમરુપ્પાસે અંજલિપગ્ગદ્દેણં, મણસ્સ એગ્ગીભાવકરણેણં; જેણેવ સમણે મગ્ગદ્દે, મહાવીરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્દ, ઉવાગચ્છિત્તા સમણં ભગવં મહાવીરં તિરુવુત્તો આયાહિણ-પયાહિણં કરેદ્દ, કરિત્તા વંદદ્દ, નમંસદ્દ, વંદિત્તા નમંસિત્તા ઉસમદત્તં માહણં પુરુઓ કદ્દુ દ્વિયા ચેવ સપરિવારા સુસ્સુસમાણી, ણમંસમાણી ઐભિમુહા વિણણં પંજ-લિડડા જાવ પજ્જુવાસદ્દ ।

૪. તપ્પ ણં સા દેવાણંદા માહણી આગયપ્પહયા, પપ્પુયલોચના, સંવરિયવલયવાદા, કંચુયપરિનિલ્લત્તિયા ધારાહયક-લંવગં પિવ સમૂસવિયરોમકૂવા સમણં ભગવં મહાવીરં અણિમિસાપ્પ દિટ્ટીપ્પ દેહમાણી દેદ્દમાણી ચિટ્ટતિ ।

૫. [પ્ર૦] મંતે ! ત્તિ ભગવં ગોયમે સમણં ભગવં મહાવીરં વંદત્તિ, ણમંસતિ, વંદિત્તા, ણમંસિત્તા એવં વયાસી-કિં ણં મંતે ! એસા દેવાણંદા માહણી આગયપ્પહયા, તં ચેવ જાવ રોમકૂવા દેવાણુપ્પિયં અણિમિસાપ્પ દિટ્ટીપ્પ દેહમાણી ૨ ચિટ્ટતિ ? [૩૦] ગોયમાદિ ! સમણે ભગવં મહાવીરે ભગવં ગોયમં એવં વયાસી-એવં ચલુ ગોયમા ! દેવાણંદા માહણી મમં અમ્મગા, અહં ણં દેવાણંદાપ્પ માહણીપ્પ અત્તપ્પ, તપ્પ ણં સા દેવાણંદા માહણી તેણં પુદ્ધપુત્તસિણેહરણેણં આગયપ્પહયા, જાવ સમૂસવિયરોમકૂવા મમં અણિમિ-સાપ્પ દિટ્ટીપ્પ દેહમાણી ૨ ચિટ્ટદ્દ । તપ્પ ણં સમણે ભગવં મહાવીરે ઉસમદત્તસ્સ માહણસ્સ દેવાણંદાપ્પ માહણીપ્પ તીસે ય મદ્દતિ મહાલિયાપ્પ ઇસિપરિસાપ્પ જાવ પરિસા પડિગયા ।

આથી તૌર્થકરના છત્રાવિક અતિશયોને જુએ છે; જોઈને ધાર્મિક શ્રેષ્ઠ રથને ઊભો રાખે છે. ઊભો રાખી તેના ઉપરથી નીચે ઉતરે છે. ઉતરીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસે પાંચ પ્રકારના અભિગમવડે જાય છે. તે આ પ્રમાણે—‘સચિત્ત દ્રવ્યોનો લ્યાગ કરવો’—‘શ્લાદિ’ વીજ શતકમા કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ ત્રણ પ્રકારની ઉપાસનાવડે ઉપાસે છે. તે દેવાનંદા ત્રાહણી પળ ધાર્મિક યાનપ્રવરથી નીચે ઉતરે છે, ઉતરી ઘળી કુબ્જદાસીઓના યાવત્ માન્ય પુરુષના સમૂહથી પરિવૃત્ત થઈને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસે પાંચ પ્રકારના અભિગમવડે જાય છે. તે ૩ પ્રમાણે—૧ સચિત્ત દ્રવ્યનો ( ફલ્યાદિનો ) લ્યાગ કરવો. ૨ અચિત્ત દ્રવ્યનો ( આમરણાદિનો ) લ્યાગ નહિ કરવો, ૩ વિનયથી શરીરને અનત કરવું, ૪ ભગવંતને ચક્રુથી જોતાં અંજલિ કરવી. અને ૫ મનની એકાગ્રતા કરવી. એ પાંચ અભિગમ વડે આ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર તં લ્યા આવે છે. લ્યા આવીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા કરે છે. કરીને વાદે છે, નમે છે. વાદી અને નમી ઋપમદત્ત ત્રાહણને આગળ કરી પોતાના પરિવારસહિત ઊભી રહીને શુશ્રૂષા કરતી, નમતી અભિમુખ રહીને વિનયવડે હાથ જોડી યાવત્ ઉપાસના કરે છે

૪. ત્યારવાદ તે દેવાનંદા ત્રાહણીને પાનો ચલ્લો—તેના સ્તનમાથી દૂધની ધારા છૂટી, તેના લોચનો આનંદાશ્રુથી મિના થયાં, તેનું હર્ષથી એકદમ ફુલતી સુજાઓને તેના કાઢાઓએ રોકી, [ હર્ષથી શરીર પ્રપુલ્હિત થતાં ] તેનો કંચુક વિસ્તીર્ણ થયો, મેઘની ધારાથી વિકસિ થયેલા કાંદવપુષ્પની પેટે તેના રોમકૂપ ઊભાં થયા, અને તે શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને અનિમિષ દૃષ્ટિથી જોતી જોતી ઊભી રહી.

૫ [પ્ર૦] ત્યારે ‘ભગવન્’ ! એમ કહી ભગવાન્ ગૌતમ શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વાદે છે, નમે છે. વાદીને—નમીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું—‘હે ભગવન્ ! આ દેવાનંદા ત્રાહણીને પાનો કેમ ચલ્લો, અર્થાત્ તેના સ્તનમાથી દૂધની ધારા કેમ વહુટી શ્લાદિ પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ તેને રોમાંચ કેમ થયો ? અને દેવાનુપ્રિય તરફ અનિમિષ નજરે જોતી જોતી કેમ ઊભી છે ? [૩૦] ‘હે ગૌતમ !’ એમ કહી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે ભગવંત ગૌતમને આ પ્રમાણે કહ્યું—‘હે ગૌતમ ! એ પ્રમાણે ચેરેચર આ દેવાનંદા ત્રાહણી મારી માતા છે, હું દેવાનંદા ત્રાહણીનો પુત્ર છું. માં તે દેવાનંદા ત્રાહણીને પૂર્વના પુત્રવેદાનુપ્રિયથી પાનો ચલ્લો, અને તેના રોમકૂપ ઊભા થયા, અને મારી સામું અનિમિષ નજરથી જોતી ઊભી છે ત્યારવાદ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે ઋપમદત્ત ત્રાહણ, દેવાનંદા ત્રાહણી અને અલંત મોટી ઋપિ પર્યદને ધર્મ કહ્યો. યાવત્ પર્યદ પાછી ગદ

દેવાનંદાના સ્તનમાંથી  
દૂધની ધાર કેમ છૂટી ?

પુત્રના લેહથી દૂધની  
ધાર છૂટી.

૧ દેસીહિં ગ-ઘ । ૨-યાહિ ય ચે- ગ-ઘ । ૩ છત્તાતીપ્પ ક । ૪ -લ્લમ્ ક । ૫-સુદી ક । ૬ કલ્લપુક્કમં પિ વ ડ ।  
૭ -ણુપ્પિય કવિનાડચ્ચ । ૮ વદાસિ ક । ૯ -પણ્ણયા ક ।

૩. \* ભગ. સં. ૧ શ. ૨ ઠ. ૫ ટ. ૨૫૬.

६. तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट-तुट्टे उट्टाप उट्टेइ, २ उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वदासी—एवमेयं भंते !, तहमेयं भंते ! जहा खंदओ, जाव से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थियं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्ला-संलंकारं ओमुयइ, सय- २ ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्टियं लोयं करेति, २ करित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं, जाव नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण थ, एवं एएणं कमेणं जहा खंदओ तहेव पवइओ, जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्झइ, जाव वहुहिं चउत्थ-छट्ट-ट्टम-दसम- जाव विचित्तेहिं तवोकम्मोहिं अप्पाणं भावेमाणे वहुइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, २ पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेति, २ झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, २ छेदित्ता जस्सट्टाप कीरति नग्गभावो जाव तमट्ठं आराहेइ, २ आराहेत्ता जाव सब्बदुक्खप्पहीणे ।

७. तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टा तुट्टा समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं, जाव नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते, तहमेयं भंते ! एवं जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्मं आइक्खियं । तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पट्ठावेति, सयमेव पट्ठावित्ता सयमेव अज्ज-चंदणाए अज्जाए सीसिणिच्चाए दलयइ । तए णं सा अज्जचंदणा अज्जादेवाणंदामाहणिं सयमेव पट्ठावेति, सयमेव मुंडावेति, सयमेव सेहावेति । एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं पयारुवं धम्मियं च उवदेसं संमं संपडिवज्जइ, तमाणाए तैहा गच्छइ, जाव संजमेणं संजमति । तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्झइ, सेसं तं चेव, जाव सब्बदुक्खप्पहीणा ।

८. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पंचत्थिमेणं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नयरे होत्था । चन्नओ । तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारो परिवसइ, अट्टे, दित्ते, जाव अपरिभूते, उट्ठिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं

६. लारपछी ते ऋपभदत्त ब्राह्मण श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मने सांभळी, हृदयमां धारण करी खुश थयो, तुष्ट थयो, अने तेणे उभा थइने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, यावत् नमस्कार करी आ प्रमाणे कहूं—'हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.'—इत्यादि 'स्कंदक तापसना प्रकरणमां कह्या प्रमाणे यावत् 'जे तमे कहो छो ते एमज छे' एम कही ते [ऋपभदत्त ब्राह्मण ] ईशान दिशा तरफ जाय छे, त्या जइने पोतानी मेळे आभरण, माला अने अलंकारने उतारे छे, उतारीने पोतानी मेळे पंचमुष्टिक लोच करे छे. लोच करीने ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत् नमी तेणे आ प्रमाणे कहूं के—'हे भगवन् ! जरा अने मरणथी आ लोक चोतरफ प्रज्वलित थयेलो छे, हे भगवन् ! आ लोक अस्यन्त प्रज्वलित थयेलो छे, हे भगवन् ! लोक चोतरफ अने अस्यन्त प्रज्वलित थयेलो छे.—ए प्रमाणे ए क्रमथी 'स्कंदकतापसनी पेठे तेणे प्रत्रय्या लीधी, यावत् सामायिकादि अगीयार अंगोतुं अध्ययन करे छे, यावद् घणा उपवास, छट्ट, अट्टम अने दशम यावद् विचित्र तपकर्म वडे आत्माने भावित करतो ते घणा वरस सुधी साधुपणाना पर्यायने पाळे छे. पाळीने मासिकी सलेखनावडे आत्माने वासित करीने साठ भक्तोने अनशन कारवावडे व्यतीत करीने जेने माटे नग्नभाव-निर्ग्रन्थपणानो स्वीकार कर्यो हतो, यावत् ते निर्वाणरूप अर्थने आराधे छे, ते अर्थने आराधी लार वाद यावत् सर्वदु खथी मुक्त थाय छे.

ऋपभदत्ते प्रत्रय्या लीधी.

७. हवे ते देवानंदा ब्राह्मणी श्रमण भगवत महावीरनी पासे धर्मने सांभळी, हृदयमां अवधारी आनन्दित अने सतुष्ट थइ, अने श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत् नमस्कार करी आ प्रमाणे बोली—'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,'—ए प्रमाणे ऋपभदत्तनी जेम यावत् तेणे भगवंत कथित धर्म कह्यो. लारवाद श्रमण भगवान् महावीर पोते देवानंदा ब्राह्मणीने दीक्षा आपे छे, दीक्षा आपीने पोते आर्यचंदना नामे आर्याने शिष्यापणे सोपे छे. लारवाद ते आर्यचंदना आर्यो पोतेज ते देवानंदा ब्राह्मणीने दीक्षा आपे छे, स्वयमेव मुंडे छे, स्वयमेव शिक्षा आपे छे. ए प्रमाणे देवानंदा ऋपभदत्त ब्राह्मणीने पेठे आर्यचंदनाना आ आवा प्रकारना धार्मिक उपदेशने सम्यक् प्रकारे स्वीकार करे छे, अने तेनी आज्ञा प्रमाणे वतें छे, यावत् संयमवडे प्रवतें छे. लारपछी देवानंदा आर्या आर्यचंदना आर्यानी पासे सामायिकादि अगीयार अंगोतुं अध्ययन करे छे. वाकीतुं पूर्व प्रमाणे जाणतुं, यावत् ते [ देवानंदा ] सर्वदुःखथी मुक्त थाय छे.

देवानदानी प्रत्रय्या-

८. हवे ते ब्राह्मणकुंडग्राम नगरनी पश्चिम दिशाए ए स्थळे क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगर हुतुं. वर्णन. ते क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरमां जमालि नामनो क्षत्रियकुमार रहतो हतो. ते आढ्य--धनिक, तेजस्वी अने यावद् जेनो पराभव न थइ शके एवो ( समर्थ ) हतो. ते पोताना

क्षत्रियकुंडग्राम. जमालिनु वर्णन.

१ कमेणं इमं ज- ग-घ । २ -हेत्ता तएण से ग-घ । ३ हट्ट-तुट्टा ग-घ । ४ -णंदं मा- ग-घ । ५ तह घ-ड । ६ पच-च्छिमेणं ड ।

६. \* भग. सं. १ श. २ उ. १ पृ. २३८. † भग. सं. १ श. २ उ. २ पृ. २३९-२४२.

सुगुणमन्थर्षिर्ह दक्षीसन्निवसेति पाठोपति पाणाविह्वरन्तरणीसंपडोर्हि उच्यतश्चिज्जमाणे उच्यतश्चिज्जमाणे, उच्यतश्चिज्जमाणे उच्यगिज्जमाणे, उच्यगिज्जमाणे उच्यल्लिज्जमाणे, उच्यल्लिज्जमाणे, पाठस-यासारस-सरद-हेमंत-वसंत-गिर्मपज्जते छप्पि उऊ जहाविमवेणं माण-माणे, पाठं गालेमाणे. इहे सट-फरिस-रस-स्व-गंधे पंचविदे माणुस्सए कामभोगे पच्चणु-न्मवमाणे विहरति । तप णं खत्ति-यत्तुं उग्गामे नयरे निचात्त-त्रिक-चउर-चउर-जाव वरुजणसहे इ वा जहा उचवाइए जाव एवं पचवेइ, एवं परुवेइ, एवं एत्तु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे, जाव सव्वण्णु सउदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स यहिया बहुसालए जेएए नशापडिस्सं जाव विरगति । तं महएकलं सलु देवाणुप्पिया ! तहास्सयाणं धैरहंताणं भगवंताणं जहा उचवाइए, जाव एणानिमुदे गन्निपकुंडग्गामं नयरे मज्जंमज्जेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए जेएण. एवं जहा उचवाइए. जाव निज्जिहाए पच्चुवात्सणयाए पेच्चुवात्सति । तप णं तस्स जमाडिस्स सत्तियकुमारस्स तं मह-यात्तणसदं वा जाव जणनप्रियायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयं एयास्से अज्जत्तियए जाव समुप्पज्जित्था- “किं णं अज्ज सत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, संडमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा, पागमहे इ वा, जन्पमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, इहमहे इ वा, पच्चयमहे इ वा, हस्समहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूममहे इ वा, जं णं षट् पय्ये उग्गा, भोगा, गउत्ता, इक्कग्गा, णाता, कोरद्धा, सत्तिया, सत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता, जहा उचवाइए, जाव संग्घयाइएभित्तये प्हाया, कयजलिकम्मा जहा उचवाइए, जाव निग्गच्छंति” एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता कंसुइज्जपुरिसं सहापति, कं० २ सहावित्ता एवं वदासी-फिणं देवाणुप्पिया ! अज्ज सत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, जाव निग्गच्छंति । तप णं से पंचुइज्जपुरिसं उमालिणा सत्तियकुमारं एवं बुत्ते समाणे हट्ट-तुट्टे समणस्स भगवधो महावीरस्स धागमणगहि-यजिणिच्छए करयल-जमालि सत्तियकुमारं जएणं विजणणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी-णो सलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, जाव निग्गच्छंति; एवं सलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगवं महावीरे जाव सव्वण्णु,

उत्तम प्रमद उपर जेमा मृदगो धाने छै एवा, अने अनेक प्रकारनी सुंदर युवतिओवडे भजवाता बरीदा प्रभारना नाटकोवडे ( नृत्यने एनुमारे ) हत्तपाट्टि अद्वयने नचायतो २, स्तुति करानो २, अत्यन्त सुख करानो २ प्रावृप्, बर्षा, शरद, हेमंत, वसंत, अने ग्रीष्म पर्यन्त ए छए ऋतुओगं पौत्राना वैन प्रमाणे सुखनो अनुभव करानो २, समयने गाळनो, मनुष्यसंनवी पांच प्रकारना इष्ट शब्द, स्पर्श, स्मृ, रूप अने गन्धरूप कामभोगेने अनुभवतो गिहरे छे. स्वारवाद क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क अने चत्वरमां कान् वणा भगवनेनो कोटगह यतो हतो-इत्यादि औपपातिक सूत्रमां कथा प्रमाणे कहेहुं; यावत् वणां माणसो परस्पर ए प्रमाणे नयति छे, कान् ए प्रमाणे प्रग्ने छे के-हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर तीर्थनी आदिना करनारा, यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर आ ज्ञापयकुंडग्राम नामे नगरनी बहार बहुगाल नामना चैत्यमा यथायोग्य अवग्रहने प्रहण करी यावत् विहरे छे, तो हे देवानुप्रियो ! तेना प्रकरणा अर्हत् भगवतना नामगोत्रना श्रवणमात्रधी पण मोहं फल थाय छे”-इत्यादि औपपातिक सूत्रने अनुसारे वर्णन करुं. कान् ने जनमद एक शिवा तरफ जाव छे, अने क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी बहार निकळे छे, निकळीने वनां श्रवणकुंडग्राम नामे नगर छे, अने एनां बहुशारक चैत्य छे एनां आवे छे. ए प्रमाणे वसुं औपपातिक सूत्रने अनुसारे कहेहुं, यावत् वनां प्रकरणी पदुमना करे छे. स्वार पटी ते वणा मनुष्यना शब्दने यावत् जनना कोलाहलने सांभळीने अने अत्रवारीने क्षत्रियकुमार जमा-णि मन्त्रं अज प्रकरानो आ विचार यावत् उयल ययो-‘शुं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे, स्कन्दनो उत्सव छे, वसुंधरीनो उत्सव छे, नागनो उत्सव छे, वदोनो उत्सव छे, भूतनो उत्सव छे, कृानो उत्सव छे, नय्यनो उत्सव छे, नदीनो उत्सव छे, इन्द्रनो उत्सव छे, परिको उत्सव छे, वृक्षनो उत्सव छे, ईश्वरनो उत्सव छे या स्मृनो उत्सव छे, के जेथी ए वथा उपरुत्तना, भोगुत्तना, सान्धुत्तना, इन्द्रुत्तना, इन्द्रुत्तना अने कुर्वंशना धर्मियो, क्षत्रियपुत्रो, भटो, अने मटपुत्रो, इत्यादि औपपातिकसूत्रने अनुसारे कहेहुं, यावत् सार्धंजा प्रहण कय करी, क्षत्रिय ( पूजा ) करी इत्यादि औपपातिकसूत्रमां वर्णन कथा प्रमाणे यावत् बहार निकळे छे ! ए प्रमाणे कहे छे. विचार करिने जग्गि कंसुगिने बोधने छे, बोधनीने तेने आ प्रमाणे कान्-हि देवानुप्रिय ! शुं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे के यावत् आ वनां नगर बहार निकळे छे ! एवरे ते जमाडि नामना क्षत्रियकुमार ते कंसुकि पुरपने ए प्रमाणे कहे कथे ने हविर् अने संतुष्ट भवो, अने ते श्रमण भगवान् महावीरना आगमननो निश्चय करीने छाप जोडी जमाडि नामे क्षत्रियकुमारने उव अने शिव तो कथे छे. वसुंधरीने तेने आ प्रमाणे कान्-हि देवानुप्रिय ! आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे-इत्यादि कथा प्रमाणे कहे छे, एम नयी, पण हे देवानुप्रिय । ए प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर यावत् सर्वज्ञ, सर्वदर्शी

१ अर्हं-अ. १। २ शिवायु. ३। ३ पदुमपद. ४। ४ वसुं-क-उ। ५-वसुंधरी-व। ६-नामोणं-व-उ। ७-विचिचि. ८-गणपति-उ।  
 ९-संज्ञा-व. १-३। १०-वसुंधरी-व. ५-२। ११-संज्ञा-व. ५-३। १२-संज्ञा-व. ५-३।

संज्ञदरिंसी माहणकुंडंगामस्स णयरस्स वंदिथा बहुसाले चेरए अंहापडिरुवं उगंहां जाव विहरति । तए णं एए वंहेवे उगंहां भोगा, जाव अप्पेगइया वंदणवत्तिरं जाव निग्गच्छति । तए णं से जेमाली खत्तियकुमारे, कंचुइपुरिसस्स अंतियं पयं अट्टं सोच्चा, निसम्म हट्ट-तुट्ट- जाव कोडुंविपुण्डरिसे सदावेह, को० २ सदावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंविपुण्डरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेण एवं जुत्ता समाणा जाव पच्चप्पिणंति ।

९. तए णं से जमालियखत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता ण्हाते कयवलिकम्मं जाव उववाइए परिसावन्नओ तहा भाणियघं, जाव चेंदणोकिन्नगायसरारे संधालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, मज्जण० २ पडिनिक्खमिक्का जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला, जेणेव चाउग्घंटं आसरहं तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं डुरूहइ, चाउग्घंटं २ डुरूहित्ता सकोरण्टमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महयाभडचडकरपहकरवंदपरिक्खित्ते, खत्तियकुंडंगामे नगरे मज्झंमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडंगामे नयरे, जेणेव बहुसाले चेरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, तुरए निगिण्णित्ता रहं ठवेइ, रहं ठवेत्ता र्हाओ पंचोरुहति, पंचोरुहित्ता पुप्फ-तंबोला--SSउहमादियं व्हाहणाओ.य विसज्जेति, वा० २ विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, एग० करित्ता आयंते, चोक्खे, परमसुइभूए, अंजलिमउलियंहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, ति० २ करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि० जाव धम्मकहा, जाव परिसा पडिगया ।

१०. तए णं से जमालिखत्तियकुमारे समणस्स भगवंओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, निसम्म हट्ट-तुट्ट जाव हियए उट्टाए उट्टेइ, उ० २ उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता, एवं वयासी-सइहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एव-

ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरनी वहार बहुशाल नामे चैल्यमां ययायोग्य अवग्रह ग्रहण करीने यावत् विहरे छे. तेयी ए उग्रकुलना, भोगकुलना क्षत्रियो-इत्यादि यावत् केटलक वांदवा माटे नीकळे छे. ल्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार कंचुकि पुरुष पासेयी ए वातने साभळी, हृदयमां अवधारी हर्षित अने सतुष्ट थई, कौटुंबिक पुरुषोने वोलावे छे, वोलावीने तेणे आ प्रमाणे कहुं के-हे देवानुप्रियो ! तमे शीघ्र चारघंटा-वाळा अश्वरथने जोडीने हाजर करो अने हाजर करीने आ मारी आज्ञा पाछी आपो. ल्यारवाद जमालि क्षत्रियकुमारे ए प्रमाणे कहुं एटळे ते कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे अमल करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपे छे.

९. ल्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार ज्या स्नानगृह छे त्या आवे छे, त्या आवीने स्नान करी, तेणे वलिकर्म ( पूजा ) कर्तुं-इत्यादि यावत् जेम \* औपपातिकसूत्रमा पर्पदानं वर्णन कर्तुं छे तेम अहि जाणुं, यावत् चंदनथी जेना शरीरे विलेपन करायेछं छे एवो ते जमालि सर्व अलंकारथी विभूषित थई स्नानगृहथी वहार निकळे छे. वहार निकळीने ज्या वहार उपस्थानशाला छे, अने ज्या चारघंटावाळो अश्वरथ उभो छे त्या आवे छे. त्यां आवीने ते चारघंटावाळा अश्वरथ उपर चढे छे. चढीने माथा उपर धारण कराता कोरटपुप्पनी माळावाळा छत्रसहित, महान् योधाओना समूहथी विंटायेलो ते क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागथी वहार निकळे छे. निकळीने ज्या ब्राह्मणकुंडग्राम नगर आवेछं छे, अने ज्या बहुशाल नामे चैल्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने घोडाओने रोके छे, अने रथने उभो राखे छे. रथने उभो राखी, रथथी नीचे उतरे छे. उतरीने पुप्प, तांबूल, आयुधादि तथा उपानहनो ( पगरखानो ) त्याग करे छे. त्याग करीने एक सळंग-वस्त्रुं उत्तरासंग करे छे. करीने कोगळो करी चोक्खा अने परम पवित्र यईने अंजलिघडे वे हाथ जोडीने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्या आवे छे, त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् त्रिविध पशुपासनाथी उपासे छे. ल्यारपछी श्रमण भगवंत महावीर जमालि नामे क्षत्रियकुमारने अने ते अत्यन्त मोटी ऋषि पर्पदाने यावत् धर्मोपदेश करे छे. यावत् ते पर्पद् [ धर्मोपदेश श्रवण करीने ] पाछी गई.

१०. ल्यारवाद ते जमालि नामे क्षत्रियकुमार श्रमण भगवान् महावीरनी पासेयी धर्मने साभळी, हृदयमा अवधारीने हर्षित अने संतुष्टहृदयवाळो ययो, अने यावत् उभो थईने श्रमण भगवंत महावीरनी त्रण वार प्रदक्षिणा करी, वंदन-नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे कहुं-हे भगवन् ! हुं निर्ग्रथना प्रवचननी श्रद्धा करुं छुं, हे भगवन् ! हुं निर्ग्रथना प्रवचन उपर विश्वास करुं छुं, हे भगवन् ! हुं निर्ग्रथना

१ अहारुवं छे । २ जमालियस-ग-घ । ३ कंचुइज्ज ग-घ-उ । ४ चंदणोखिण्णगा-क, चंदणाकिन्नगा-घ, चंदणोखिन्नगा-छ । ५ -रुभति क । पाहणाउ य वि-क, ६ वाणहीओ य ग, वाणहाउ य ड । ७ अंतियं क । ८ वदासि क ।

९. \* औपपातिक प ६४-२.



મેયં મંતે !, તદ્દમેયં મંતે !, અવિતદ્દમેયં મંતે !, અસંદિહમેયં મંતે !, જાવ સે જદ્દેયં તુચ્ચે વદ્દદ્, જં નવરં દેવાણુપ્પિયા !  
અમ્માપિયરો આપુચ્છામિ, તપ્પ ણં અહં દેવાણુપ્પિયાણં અંતિયં મુંડે ભવિત્તા ઈગારાઓ અણગારિયં પદ્ધયામિ । અહામુહં દેવાણુ-  
પ્પિયા ! મા પડિવંધં ।

૧૧. તપ્પ ણં સે જમાલી સત્તિયકુમારે સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં ઇવં વુત્તે સમાણે હટ્ઠ-તુટ્ઠે સમણં ભગવં મહાવીરં  
તિક્ખુત્તો જાવ નમંસિત્તા તામેવ ચાઉગ્ગંદં આસરહં દુરુદ્દેહ, દુરુહિત્તા સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયાઓ વહુસાલાઓ  
ચેદ્દયાઓ પડિનિન્નમ્મદ, પડિનિન્નમિત્તા સકોરંટં જાવ ધરિજ્જમાણે ણં મહયામહચ્ચટગર- જાવ પરિન્નિચ્ચત્તે, જેણેવ સત્તિયકુ-  
ડગામે નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા સત્તિયકુડગામં નયરં મહ્જંમહ્જેણં, જેણેવ સપ્પ ગેદ્દે, જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણ-  
સાલા તેણેવં ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા તુરપ્પ નિગિણ્ણદ્, નિગિણ્ણિત્તા રહં ઉવેદ્, ઉવિત્તા રહ્થો પંચોરુદ્દ, રહ્થો પંચોરુહિત્તા  
જેણેવ અન્નિતરિયા ઉવટ્ટાણસાલા, જેણેવ અમ્મા-પિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા અમ્મા-પિયરો જપ્પં વિજપ્પં વદ્ધાવેદ્, જ  
જપ્પં ૨ વદ્ધાવિત્તા ઇવં વયાસી-ઇવં સલ્લુ અમ્મ-તાઓ ! મપ્પ સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં ધમ્મે નિસંતે; સે વિ ય  
મે ધમ્મે ઇચ્છિપ્પ, પડિચ્છિપ્પ, અમિરુદ્દપ્પ । તપ્પ ણં તં જમાલિ સત્તિયકુમારં અમ્મા-પિયરો ઇવં વયાસી-ધપ્પે સિ ણં તુમં જાયા !  
કપ્પય્થે સિ ણં તુમં જાયા !, કપ્પયુત્તે સિ ણં તુમં જાયા !, કપ્પલમ્પણે સિ ણં તુમં જાયા ! જં ણં તુમે સમણસ્સ ભગવઓ  
મહાવીરસ્સ અંતિયં ધમ્મે નિસંતે, સે વિ ય ધમ્મે ઇચ્છિપ્પ, પડિચ્છિપ્પ, અમિરુદ્દપ્પ ।

૧૨. તપ્પ ણં સે જમાલિસત્તિયકુમારે અમ્મા-પિયરો દોષં પિ ઇવં વયાસી-ઇવં સલ્લુ મપ્પ અમ્મ-તાઓ ! સમણસ્સ ભગ-  
વઓ મહાવીરસ્સ અંતિય ધમ્મે નિસંતે, જાવ અમિરુદ્દપ્પ । તપ્પ ણં અહં અમ્મ-તાઓ ! સંસારમહાવિગ્ગે, મીતે કમ્મ-જરા-  
મરણેણં, તં ઇચ્છામિ ણં અમ્મ-તાઓ ! તુચ્ચેદ્દિ અન્નપુત્તાપ્પ સમાણે સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં મુંડે ભવિત્તા  
ઈગારાઓ અણગારિયં પદ્ધઇત્તપ્પ ।

પ્રવચન ઉપર રુચિ કરું છું, અને હે ભગવન્ ! નિર્ગ્રંથના પ્રવચનાનુસારે વર્તવાને તૈયાર થયો છું. વહી હે ભગવન્ ! જે તમે ઉપદેશો છો તે  
નિર્ગ્રંથ પ્રવચન એમ જ છે, હે ભગવન્ ! તેમજ છે. હે ભગવન્ ! સલ્ય છે, હે ભગવન્ ! અસંદિગ્ધ ( નિશ્ચિન ) છે, પરન્તુ હે દેવાનુપ્રિય !  
મારા માતા પિતાની રજા માર્ગીને હું આપ દેવાનુપ્રિયની પાસે મુંડ-દીક્ષિત થઈ ગૃહવાસનો લાગ કરી અનગારિકપણાને સ્વીકારવા ઇચ્છું છું.  
હે દેવાનુપ્રિય ! જેમ સુખ ઉપજે તેમ કરો, પ્રતિવંધ ન કરો.'

૧૧. જ્યારે શ્રમણ ભગવંત મહાવીરે જમાલિને એ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તે પ્રસન્ન અને સતુષ્ટ થઈ શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને ણગવાર  
પ્રવક્ષિણા કરી યાવત્ નમસ્કાર કરીને ચારવંટાવાળા અશ્વરથ ઉપર ચઢે છે, ચઢીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસેથી અને વહુશાલક  
ચૈલ્લથી નીકળે છે. નીકળીને માથે વરાતા યાવત્ કોરંટપુષ્પની માલાવાળા છત્રસહિત, મોટા સુમટોના સમૂહથી વીંટાયલો તે જમાલિ જ્યાં  
ક્ષત્રિયકુડગ્રામ નામે નગર છે ત્યાં આવે છે. આવીને ક્ષત્રિયકુડગ્રામ નામે નગરની મધ્યભાગમાં થઈને જે સ્થલે પોતાનું ઘર છે અને જ્યાં વહા-  
રની ઉપસ્થાનશાલા છે ત્યાં આવે છે. ત્યાં આવીને ઘોડાઓને રોકીને રથને ઉભો રાખે છે. ઉભો રાખીને રથથી નીચે ઉતરે છે. ઉતરીને જ્યાં  
અંદરની ઉપસ્થાનશાલા છે, ત્યાં માતા-પિતા (વેઠા) છે ત્યાં આવે છે, આવીને માતા-પિતાને જય અને વિજયથી વધાવે છે. વધાવીને તે  
જમાલિ આ પ્રમાણે કહ્યું-હે માતા પિતા ! એ પ્રમાણે મેં શ્રમણ ભગવંત મહાવીર પાસેથી ધર્મ સામઙ્ગ્યો છે, તે ધર્મ મને ઇષ્ટ છે,  
અલ્યન્ત ઇષ્ટ છે, અને તેમા મારી અમિરુચિ થઈ છે. ત્યારપછી તે જમાલિ કુમારને તેના માતા પિતા, આ પ્રમાણે કહ્યું-હે પુત્ર ! તું ધન્ય  
છે, હે પુત્ર ! તું કૃતાર્થ છે, હે પુત્ર ! તું કૃતપુણ્ય છે અને હે પુત્ર ! તું કૃતલક્ષણ છે કે જે તે શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસેથી ધર્મને  
સામઙ્ગ્યો છે, અને તે ધર્મ તને પ્રિય છે, અલ્યન્ત પ્રિય છે અને તેમાં તારી અમિરુચિ થઈ છે.'

જમાલિ.

૧૨. પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારે વીજીવાર પળ પોતાના માતા-પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે માતા-પિતા ! એ પ્રમાણે મેં  
શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસેથી ધર્મ સામઙ્ગ્યો છે, યાવત્ તેમાં મારી અમિરુચિ થઈ છે. તેથી હે માતા-પિતા ! હું સંસારના મયથી ઉદ્દિગ્ધ  
થયો છું, જન્મ જરા અને મરણથી મય પામ્યો છું, તેથી હે માતા-પિતા ! તમારી આજ્ઞાથી હું શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસે દીક્ષા લેઈને,  
ગૃહવાસનો લાગ કરી, અનગારિકપણાને ગ્રહણ કરવા ઇચ્છું છું.

૧૩. તપ ણં સા જમાલિસ્સ ચત્તિયકુમારસ્સ માતા તં અણિદ્દં, અકંતં, અપ્પિયં, અમણુદં, અમણામં, અસુયપુદં ગિરં સોઘા, નિસમ્મ, સેયાગયરોમકૂચપગલંતવિલીણગત્તા, સોગમરપવેવિયંગમંગી, નિત્તેયા, દીણ-વિમળવયણા, કરયલમલિયત્ત કમલમાલા, તક્ષણબોલુગ્ગદુલ્લસરીરલાયન્નસુન્નિચ્છાયા, ગયસિરીયા, પલિઠિલભૂસણ-પડંતરુપ્પિણયસંચુન્નિયધવલવલય-પ્વમદ્દુત્તરિજ્ઞા, મુચ્છાવસણદ્દુચેતગરુદ્દં, સુકુમાલવિક્કિન્નેકેસહલ્યા, પરંસુણિકત્ત ઘ ચંપગલયા, નિવ્વત્તમહે ઘ ઇંદલદ્દી, વિમુ-ક્કસંધિયંધણા કોટ્ટિમતલંસિ ધસત્તિ સદ્દંગેહિં સંનિવહિયા । તપ ણં સા જમાલિસ્સ ચત્તિયકુમારસ્સ માયા સંસંભમોવત્તિયાપ તુરિયં કંચનાભિંગારમુહવિણિગ્ગયસીયલવિમલજલધારપેરિસિચ્ચમાણનિદ્વાવિયગાયલદ્દી, ઉચ્ચેવય-તાલિયંટ-વીયગ્ગજણિયવા-ણં, સંકુલિણં અંતેરરપરિજ્ઞેણં આસાસિયા સમાણી, રોયમાણી, કંદમાણી, સોયમાણી, વિલવમાણી જમાલિં ચત્તિયકુમારં एवं વયાસી-તુમં સિ ણં જાયા ! અમ્હં ઇમે પુત્તે ઇદ્દે, કંતે, પિપ્પ, મણુન્ને, મણામે, થેજ્જે, વેસાસિપ્પ, સંમતે, વહુમપ્પ, અણુમપ્પ મેંડકરંડગસમાણે, રયણે રયણબ્ભૂપ્પ, ઝીવિવ્વસવિયે, હિંધેયનંદિજ્ઞણે, ઉંવેરપુપ્પમિવ દુલ્લભે સવણયાપ્પ, કિમંગ ! પુણ પાસ-થેયાપ્પ; તં નો ચલ્લુ જાયા ! અમ્હે ઇચ્છામો તુચ્ચં ચ્ચણમવિ વિપ્પયોગં, તં અચ્છાહિ તાવ જાયા ! જાવ તાવ અમ્હે જીવામો, તથો પચ્છા અમ્હેહિં કાલગપ્પહિં સમાણેહિં પરિણંયવચ્ચે, વહ્ધિયકુલવંસતંતુકજ્જમ્મિ નિરવચચ્ચે સમણસ્સ ભગવઓ મઠાવીરસ્સ અંતિયં મુંડે ભવિત્તા આગારાઓ અણગારિયં પઘ્ગહિસિ ।

૧૪. તપ ણં જમાલી ચત્તિયકુમારે અમ્મા-પિયરો एवं વયાસી-તઠા વિ ણં તં અમ્મ-તાઓ ! જં ણં તુચ્ચે મમ एवं વદ્દહ, તુમં સિ ણં જાયા ! ઇમ્હં ઇમે પુત્તે ઇદ્દે કંતે ચેવ, જાવ પઘ્ગહિસિ; एवं ચલ્લુ અમ્મ-તાઓ ! માણુસ્સપ્પ ભવે અણેગજાઙ્ગ-જરા-મરણ-રોગ-સારીર-માણસપકામદુચ્ચ-વેયણ-વસણસતોવદ્ધવામિભૂપ્પ, અધુપ્પ, અણિતિપ્પ, અસાસપ્પ, સંચ્ચમ્મરાગસરિસે, જલચુચ્ચુદસમાણે, કુસમ્મજલ્લવિંદુસન્નિમે, સુવિણગદંસણોચમે, વિજ્જુલયાચંચલે, અણિથે, સડ્ડણ-પડ્ડણ-વિદ્ધંસણધમ્મે, પુદ્ધિં વા પચ્છા વા અવસ્સ વિપ્પજહિયવ્વે ભવિસ્સદ્દ; સે કેસ ણં જાણદ્દ અમ્મતાઓ ! કે પુદ્ધિં-ગમણયાપ્પ, કે પચ્છા ગમણયાપ્પ ? તં ઇચ્છામિ ણં અમ્મ-તાઓ ! તુચ્ચેહિં અચ્ચમ્મણુન્નાપ્પ સમાણે સમણસ્સ જાવ- પઘ્ગહિત્તપ્પ ।

૧૩. ત્યારવાદ જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની માતા અનિદ્દ, અકાંત, અપ્રિય, અમનોહ, મનને ન ગમે તેવી અને પૂર્વે નહીં સાંભળેલી એવી વાણીને સાંભળી અને અવધારીને રોમકૂપથી ફરતા પરસેવાથી મીના શરીરવાળી થઈ, શોકના ભારથી તેનાં અંગો અગ કંપવા લાગ્યાં, તે નેસ્તેજ થઈ, તેનું મુખ દીન અને શોકાતુર થયું, કરતલવડે ચોળાયેલી કમલમાલાની પેટે તેનું શરીર તત્કાલ ગ્દાન અને દુર્બલ થયું. તે લાવણ્યશૂન્ય, પ્રમારહિત અને શોભાવિનાની થઈ ગઈ. તેના આભૂષણો ઢીલાં થઈ ગયા, અને તેથી તેના નિર્મલ વલયો પડી ગયા અને માંગીને ચૂર્ણ થઈ ગયા. તેનું ઉત્તરીય વસ્ત્ર શરીર ઉપરથી સરી ગયું, અને મૂર્છાવડે તેનું ચૈતન્ય નષ્ટ થયું હોવાથી તે ભારે શરીરવાળી થઈ ગઈ. તેનો સુકુમાલ કેશપાશ વિખરાઈ ગયો. કુહાડીના ધાથી છેદાણી ચંપકલતાની પેટે અને ઉત્સવ પૂરો થતા ઇન્દ્રધ્વજદંડની જેમ તેનાં તંધિવંધનો શિથિલ થઈ ગયાં, અને તે પરસવંધી ઉપર સર્વ અગોવડે 'ધસ્' દઢને નીચે પડી ગઈ. ત્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની માતાના શરીરને [વાસીવડે] વ્યાકુલચિત્તે ત્યારથી ઢબાતા સોનાના કલશના મુખથી નીકળેલી શીતલ અને નિર્મલ જલધારાના સિંચનવડે લ્પ્થ કર્યું, અને તે ઉલ્કેપક (વાસના વનેલા), તાલવૃંત (તાડના પાદડાના વનેલા) પંખા અને વીંજણાના જલવિન્દુસહિત પવનવડે અંતઃ-પુરના માણસોથી આશ્વાસનને પ્રાપ્ત થઈ. રોતી, આક્રંદન કરતી, શોક કરતી અને વિલાપ કરતી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની માતા પ્રમાણે કહેવા લાગી-હિ જાત ! તું અમારે ઇદ્દ, કાત, પ્રિય, મનોહ, મન ગમતો, આધારભૂત, વિશ્વાસપાત્ર, સંમત, વહુમત, અનુમત, આમરણની પેટી જેવો, રક્તસ્વરૂપ, રક્તના જેવો, જીવિતના ઉત્સવ સમાન અને હૃદયને આનંદજનક એકજ પુત્ર છો, વળી ઉત્તરાના પુષ્પની પેટે તારા નામનું શ્રવણ પણ દુર્લભ છે, તો તારું ટર્ઘન દુર્લભ હોય એમા શું કહેવું ? માટે હે પુત્ર ? ચરેચર અમે તારો એક ક્ષણ પણ વિયોગ ઇચ્છતા નથી. તેથી હે પુત્ર ! જ્યા સુધી અમે જીવીએ છીએ ત્યાંસુધી તું રહે. અને અમે કાલગત થયા પછી વૃદ્ધાવસ્થામા કુલવંશતન્તુની વૃદ્ધિ કરીને નિરપેક્ષ એવો તું શ્રમણ ભગવંત મહાવીરનો પાસે દીક્ષા પ્રહણ કરી ગૃહવાસનો ત્યાગ કરી અનગારિકપણાને સ્વીકારજે.'

૧૪. ત્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા-પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-“હિ માતા-પિતા ! હમણા મને જે તમે પ્રમાણે કહ્યું કે-હે પુત્ર ! તું અમારે ઇદ્દ તથા કાત એક પુત્ર છો-ઇત્યાદિ યાવત્ અમારા કાલગત થયા પછી તું પ્રવ્રજ્યા લેજે.” પણ હે માતા-પિતા ! પ્રમાણે ચરેચર આ મનુષ્યભવ અનેક જન્મ, જરા, મરણ અને રોગરૂપ શારીર અને માનસિક દુઃખોની અલ્પવંત વેદનાથી અને સંકટો વ્યસનોથી પીડિત, અમુચ, અનિત્ય, અને અશાશ્વત છે, તેમ સધ્યાના રંગ જેવો, પાણીના પરપોટા જેવો, ડામની અપી ઉપર રહેલા જલવિન્દુ જેવો, સ્વપ્નદર્શનના સમાન, વિજળીની પેટે ચંચલ અને અનિત્ય છે. સડવું, પડવું અને નાશ પામવો એ તેનો ધર્મ છે. પહેલા કે પછી તેનો અવશ્ય ત્યાગ કરવાનો છે, તો હે માતા-પિતા ! તે કોણ જાણે છે કે-કોણ પૂર્વે જશે, અને કોણ પછી જશે ? માટે હે માતા-પિતા ! હું તમારી અનુમતિથી શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસે યાવત્ પ્રવ્રજ્યા પ્રહણ કરવાને ઇચ્છું છું.

૧ નિયત ઘ-ગ-ઘ-હ । ૨-મોવત્તિયાપ્પ ગ-ઘ-હ । ૩-પરિસિચ્ચમાણ-ગ । ૪-જીવિયવસ્સવિપ્પ હ । ૫-હિયયાનંદિ-વ, હિયનદિ-ટ । ૬-પુપ્પં પિય ક-ટ । ૭-જણયવઓ ક-ટ । ૮-અમ્હે ક ।  
૨૨ મ૦ ૬૦

જમાલિની માતાની  
શબ્દા-

જમાલિ-

૧૫. તપ ણં તં જમાલિં ચત્તિયકુમારં અમ્મા-પિયરો एवं वयासी-इमं च ते जाया ! सररीरं पंचिसिद्धरूच-लक्षण-चंजणगुणोववेयं, उत्तमवल-धीरीय-सत्तजुत्तं, विष्णाणवियफखणं, संसोहगगुणसंसुस्सियं अभिजायमहक्खमं, विविहवाहि-रोगरहियं, निरुवहय-उदत्त-लट्टं, पंचिदियपट्टपढमजोघणत्थं, अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाया ! नियग-सररीररूच-सोहग-जोघणगुणे, तथो पच्छा अणुभूय नियगसररीररूच-सोहगजोघणगुणे अम्हेहिं कालगपहिं समाणेहिं परिणयवये, वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जमि निरवयवरो समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडं भवित्ता आगाराओ अणगा-रियं पवइहिसि ।

૧૬. તપ ણં સે જમાલી ચત્તિયકુમારે અમ્મા-પિયરો एवं वयासी-तदा चि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुम्मे ममं एवं चदह-इमं च णं ते जाया ! सररीरं तं चेव जाव पवइहिसि; एवं एल्लु अम्म-याओ ! माणुस्सगं सररीरं दुक्खाययणं, विवि-हवाहिसियसंनिकेतं, अट्टियकट्टियं, छिरा-ण्हारुजालओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियमंडं व दुच्चलं, असुइसंकिलिट्टं, अणिट्टवियसद्ध-कालसंठप्पयं, जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुंधिं वा पच्छा वा अवस्सं विप्पजहियद्धं भविस्सइ; से के स णं जाणति अम्मयाओ ! के पुंधिं तं चेव जाव पवइत्तप ।

૧૭. તપ ણં તં જમાલિં ચત્તિયકુમારં અમ્મા-પિયરો एवं वयासी—इमाओ य ते जाया ! विपुलकुलवालियाओ सरिसि-याओ, सरित्तयाओ, सरिद्ययाओ, सरिसलवन्न-रूच-जोघणगुणोववेयाओ, सरिसर्पहितो कुलेहितो आणिएल्लियाओ कलाकु-सल-सद्धकाललालिय-सुहोचियाओ, महवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुल-मिय-महुरमणिय-विहसिय-विप्पेनिखयगति-विलास-चिट्टियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ, विसुद्धकुल-वंससंताणतंतुवद्धण-प्पगम्भवयभाविणीओ, मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ट तुज्ज गुणवल्लहाओ, उत्तमाओ, निधं भावाणुरत्तसद्धंगसुंदरीओ भारि-याओ; तं भुंजाहि ताव जाया ! एताहिं सद्धिं चिउले माणुस्सए कामभोगे, तथो पच्छा भुत्तभोगी, विसयचिगयवोच्छिन्नको-उहल्ले अम्हेहिं कालगपहिं जाव पवइहिसि ।

માત-પિતા.

૧૫. ત્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારને તેના માતા પિતા આ પ્રમાણે કહ્યું કે—‘હે પુત્ર ! આ તારું શરીર ઉત્તમ રૂપ, લક્ષણ, વ્યંજન (મસ, તલ વગેરે) અને ગુણોથી યુક્ત છે, ઉત્તમ વલ, વીર્ય અને સત્ત્વસહિત છે, વિજ્ઞાનમાં વિચક્ષણ છે, સૌભાગ્ય ગુણથી ઉન્નત છે, કુલીન છે, અલ્યન્ત સમર્થ છે, અનેક પ્રકારના વ્યાધિ અને રોગથી રહિત છે, નિરુપહત, ઉદાત્ત, અને મનોહર છે, પટ્ટ (ચતુર) એવી પાંચ ઈન્દ્રિયોથી યુક્ત અને ઊગતી યુવાવસ્થાને પ્રાપ્ત થયેલું છે, અને આ શિવાય વીજા અનેક ઉત્તમ ગુણોથી ભરપૂર છે. માટે હે પુત્ર ! જ્યાં સુધી તારા પોતાના શરીરમાં રૂપ, સૌભાગ્ય તથા યૌવનાદિ ગુણો છે ત્યાં સુધી તેનો તું અનુભવ કર, અને અનુભવ કરી અમો કાલગત થયા પછી વૃદ્ધાવસ્થામાં કુલવંશરૂપ તન્તુની વૃદ્ધિ કરીને નિરપેક્ષ એવો તું શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પાસે દીક્ષા લઈને ગૃહવાસનો ત્યાગ કરી અન-ગારિકપણાને સ્વીકારજે.

જમાલિ.

૧૬. ત્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા-પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—‘હે માતા-પિતા ! તે વરોચર છે, પણ જે તમે મને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—‘હે પુત્ર ! આ તારું શરીર [ ઉત્તમરૂપ, લક્ષણ વ્યંજન અને ગુણોથી યુક્ત છે ] ઇત્યાદિ યાવત્ [ અમારા કાલગત થયા પછી ] તું દીક્ષા લેજે.’ પણ આ રીતે તો હે માતા-પિતા ! ચરેચર આ મનુષ્યનું શરીર દુઃખનું ઘર છે, અનેક પ્રકારના સેંકડો વ્યાધિઓનું સ્થાન છે, અસ્થિરૂપ લાકડાનું વનેલું છે, નાડીઓ અને સ્નાયુના સમૂહથી અલ્યન્ત વિટાણ છે, માટીના વાસણની પેટે દુર્બલ છે, અશુ-ચિથી ભરપૂર છે, જેનું શુશ્રૂષા કાર્ય હમેશા ચાલુ છે. જીર્ણ મૃતક અને જીર્ણ ઘરની પેટે સડવું, પડવું અને નાશ પામવો—આ તેના સહજ ધર્મો છે. વઢી આ શરીર પહેલાં કે પછી અવશ્ય ડોહવાનું છે. તો હે માતા-પિતા ! તે કોણ જાણે છે કે કોણ પહેલાં [ જશે અને કોણ પછી જશે. ? ] ઇત્યાદિ.

માતા-પિતા.

૧૭. ત્યારપછી તેના માતા-પિતા આ પ્રમાણે કહ્યું કે—‘હે પુત્ર ! આ તારે આઠ સ્ત્રીઓ છે, તે વિશાલ કુલમાં ઉત્પન્ન થયેલી અને વાઝાઓ છે, તે સમાન ત્વચાવાળી, સમાન ઉમરવાળી, સમાન લાવણ્ય, રૂપ અને યૌવનગુણથી યુક્ત છે; વઢી તે સમાન કુલથી આણેલી, કાલમાં કુશલ, સર્વકાલ લાલિત અને સુખને યોગ્ય છે; તે માર્દવગુણથી યુક્ત, નિપુણ, વિનયોપચારમાં પંડિત અને વિચક્ષણ છે, સુંદર મિત, અને મધુર વોલવામાં, તેમજ હાર્ય, વિપ્રેક્ષિત, (કટાક્ષ દષ્ટિ), ગતિ, વિલાસ અને સ્થિતિમા વિશારદ છે, ઉત્તમ કુલ અને શીલથી સુશોભિત છે, વિશુદ્ધ કુલરૂપ વંશતંતુની વૃદ્ધિ કરવામાં સમર્થ યૌવનવાળી છે; મનને અનુકૂલ અને હૃદયને ઇષ્ટ છે; વઢી ગુણો વડે પ્રિય અને ઉત્તમ છે, તેમજ હમેશાં ભાવમાં અનુરક્ત અને સર્વ અંગમા સુંદર છે. માટે હે પુત્ર ! તું આ સ્ત્રીઓ સાથે મનુષ્યસંવર્ધી વિશાલ કામભોગોને ભોગવ અને ત્યાર પછી શુક્તભોગી થઈ વિપયની ઉત્સુકતા દૂર થાય ત્યારે અમારા કાલગત થયા પછી યાવત્ તું દીક્ષા લેજે.’

૧૮. તપ ણં સે જમાલી ચત્તિયકુમારે અમ્મા-પિયરો एवं चयासी-तहा चि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुच्चे मम एवं वयह-इमाओ ते जाया ! विपुलकुल- जाव पवइहिसि; एवं खलु अम्म-याओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुर्द, असात्तया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा, उचार-पासवण-खेल-सिवाणग-वंत-पित्त-पूय-सुव-सोणिय-समुच्चवा, अमणुच्चदुरुव-सुत्त-पूइय-पुरिसपुत्ता, मयगंधुस्सास-असुभनिस्सासउद्धेयणगा, वीमत्त्या, अप्पकाटिया, लहसगा, कलमलाहियासदुक्कवहुजणसाहारणा, परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्जा, अनुद्वजणणिसेविया, सदा साहुगरद्वणिजा, अणंतसंसारवद्धणा, कहुगफलविवागा चुडल्लिच्च अमुच्चमाणदुग्गानुवंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा; से के स णं जाणइ अम्म-याओ ! के पुद्धि गमणयाए के पच्छा ? तं इच्छामि णं अम्म-याओ ! जाव पवइत्तए ।

૧૯. તપ ણં તં જમાલિ ચત્તિયકુમારં અમ્મા-પિયરો एवं वयासी-इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहुदिरत्ते य, सुवत्ते य, कंसे य, दूसे य, विउलधण-कणग- जाव संतसारसावण्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुल-वंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, परिभापउं, तं अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए इद्धि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहयकल्लाणे, वहियकुलवंस- जाव पवइहिसि ।

૨૦. તપ ણં સે જમાલી ચત્તિયકુમારે અમ્મા-પિયરો एवं वयासी-तहा चि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुच्चे मम एवं वदह-इमं च ते जाया ! अज्जग-पज्जग- जाव पवइहिसि; एवं खलु अम्म-याओ ! हिरत्ते य, सुवत्ते य, जाव सावण्जे अग्गિસાહિપ, ચોરસાહિપ, રાયસાહિપ, મચ્ચુસાહિપ, દાહ્યસાહિપ, અગ્ગિસામન્ને જાવ દાહ્યસામન્ને, અધુવે, અણિતિપ, અસાસપ, પુદ્ધિ વા પચ્છા વા અવસ્સ વિપ્પજહિયવે ભવિસ્સહ, સે કેસ ણં જાણइ તં ચેવ જાવ પવइत्तए ।

૨૧. તપ ણં તં જમાલિ ચત્તિયકુમારં અમ્મા-યાઓ જાહે નો સંચારંતિ વિસયાણુલોમાર્હિ વહાઈ આવવળાહિ ય, પદ-ચળાહિ ય, સન્નવળાહિ ય, વિન્નવળાહિ ય ઘાઘવેત્તપ ઘા, પન્નવેત્તપ ઘા, સન્નવેત્તપ ઘા, વિન્નવેત્તપ ઘા, તાહે વિસયપડિક્કલાઈ

૧૮. ત્યારપછી તે જમાલિ નામે ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે માતા-પિતા ! હમણા તમે જે મને કાનું કે-હે પુત્ર ! તારે વિશાલ કુલમાં [ ઉત્પન્ન થયેલી આ આઠ સ્ત્રીઓ છે ]-ઇત્યાદિ યાવત્ તું દીક્ષા લેજે, તે ઠીક છે. પણ હે માતા-પિતા ! આ પ્રમાણે ચરેચર મનુષ્યસંવન્ધી કામભોગો અશુભિ અને અશાશ્વત છે; યાત, પિત્ત, શ્લેષ્મ, વીર્ય અને લોહીને ધરવાવાળા છે; વિષ્ટા, મૂત્ર, શ્લેષ્મ, નાસિકાનો મેલ, વમન, પિત્ત, પરુ, શુક્ર અને શોણિતથી ઉત્પન્ન થયેલાં છે; વઠ્ઠી તે અમનોજ, ચરાચ મૂત્ર અને દુર્ગન્ધી વિષ્ટાથી ભરપુર છે; મૃતકના જેવી ગંધવાળા ઉચ્છ્વાસથી અને અશુભ નિઃશ્વાસથી ઉદ્દેગને ઉત્પન્ન કરે છે, વીમલ્લ, અલ્પકાલસ્થાયી, દલકા, અને કલમલ-(શરીરમાં રહેલ એક પ્રકારના અશુભ દ્રવ્ય)ના સ્થાનરૂપ હોવાથી દુઃખરૂપ અને સર્વ મનુષ્યોને સાધારણ છે; શારીરિક અને માનસિક અત્યંત દુઃખવડે સાધ્ય છે; અજ્ઞાન જનથી સેવાણ છે; સાધુ પુરુષોથી હમેશા નિંદનીય છે; અનંત સસારની વૃદ્ધિ કરનારા છે, પરિણામે કટુકાફલવાળા છે, વલ્ગતા ઘાસના પૂલ્કની પેટે ન મુકી શકાય તેવા દુઃખાનુવધી અને મોક્ષમાર્ગના નિવ્રત્ત છે. વઠ્ઠી હે માતા-પિતા ! તે કોણ જાણે છે કે કોણ પહેલાં જશે અને કોણ પછી જશે ? માટે હે માતા-પિતા ! હું યાવત્ દીક્ષા લેવાને ઇચ્છું છું.’

૧૯. ત્યારપછી તે જમાલિ નામે ક્ષત્રિયકુમારને તેના માતા-પિતા આ પ્રમાણે કહ્યું કે ‘હે પુત્ર ! આ અર્ચા (પિતામહ), પર્યા (પ્રપિતામહ) અને પિતાના પર્યા-(પ્રપિતામહ-) થકી આવેલું ઘણું હિરણ્ય, સુવર્ણ, કામ્ય, વજ્ર, વિપુલ વન, કનક યાવત્ સારભૂત દ્રવ્ય વિદ્યમાન છે, અને તે તારે સાત પેઢી સુધી પુષ્કલ દાન દેવાને પુષ્કલ ભોગવવાને અને વહેંચવા માટે પૂરતું છે. માટે હે પુત્ર ! મનુષ્ય-સંવન્ધી વિપુલ ઋદ્ધિ અને સન્માનને ભોગવ, અને ત્યારપછી સુખનો અનુભવ કરી, અને કુલવંશને વધારી યાવત્ તું દીક્ષા લેજે.’

૨૦. ત્યારવાદ જમાલિ નામે ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા-પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે માતા-પિતા ! તમે જે આ પ્રમાણે કાનું કે, હે પુત્ર ! આ હિરણ્યાદિ દ્રવ્ય તારા પિતામહ અને પ્રપિતામહથી યાવત્ આવેલું છે, ઇત્યાદિ યાવત્ તું દીક્ષા લેજે આ ઠીક છે, પણ હે માતા-પિતા ! આ પ્રમાણે ચરેચર તે હિરણ્ય, સુવર્ણ, યાવત્ સર્વ સારભૂત દ્રવ્ય અગ્નિને સાધારણ છે, ચોરને સાધારણ છે, રાજાને સાધારણ છે, મૃત્યુને સાધારણ છે, દાયાલ (ભાયાત) ને સાધારણ છે, અગ્નિને સામાન્ય છે, યાવત્ દાયાલને સામાન્ય છે. વઠ્ઠી તે અધુન, અનિરા, અને અશાશ્વત છે. પહેલાં કે પછી તે અવસ્ય છોડવાનું છે, તો કોણ જાણે છે કે પહેલાં કોણ જશે અને પછી કોણ જશે ? ઇત્યાદિ યાવત્ હું પ્રત્યજ્યા લેવાને ઇચ્છું છું.’

૨૧. ત્યારે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારને તેના માતા પિતા નિપયને અનુકૂલ ઘણી ઠક્કિઓ, પ્રતિષ્ઠિઓ, નંત્રિષ્ઠિઓ અને નિપિઓથી કહેવાને, જળાવવાને, સમજાવવાને, મિનવવાને સમર્થ ન થયા ત્યારે તેઓ નિપયને પ્રતિકૂટ, અને સમયને નિપે નય અને ઉદ્દેગ કરનારી

ગમાલિ.

મનુષ્યસંવન્ધી  
કામભોગો અશુભિ  
અને અશાશ્વત છે  
સ્વાદિ.

માતા-પિતા.

પિત્રકાન્થિને વન-  
ભોગ વત-દાનદિ.

વઠ્ઠી.

પિત્રકાન્થિને વન-  
અને અશાશ્વત છે.

મનુષ્ય-વિપ.

संज्ञमभ्युद्येयणकराहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा एवं वयासी-पवं मलु जाया ! निगंधे पावयणे सचे, अणुत्तरे, केवळे जहा आवस्तप, जाव सवदुक्काणं अंतं करंति । अहीव एगंतविट्टीए, रुरो इव एगंतघाराए, लोहमया जवा चांययवा, वालुयाकवले इव निस्साए, गंगा वा महानदी पठिसोयगमणयाए, महामुहो वा भुयाहिं दुत्तरो; तिन्त्यं कमियधं, गच्यं लंयेयधं, असि-धारं वतं चरियधं । नो मलु कण्ठ जाया ! समणाणं निगंधाणं अहाकम्मिए इ वा, उहेसिण इ वा, मिस्सजाए इ वा, अल्लोयए इ वा, पृष्टए इ वा, कीते इ वा, पामिघे इ वा, अछेजे इ वा, अणिसहे इ वा, अमिहसे इ वा, कंतारमचे इ वा, दुम्मिदगमसे इ वा, गिलाणमचे इ वा, वडलियामसे इ वा, पाणुणमसे इ वा, सेजायरपिंटे इ वा, रायपिंटे इ वा, मूलमोयणे इ वा, कंदमोयणे इ वा, फलमोयणे इ वा, वीयमोयणे इ वा, हरियमोयणे इ वा भुत्तए वा पायए वा । तुंमं सि च णं जाया ! सुत्तसमुच्चिए, णो चैव णं दुत्तसमुच्चिए. नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं रुहा, नालं पिवासा, नालं चोर, नालं वाळा, नालं वंसा, नालं मसगा, नालं वाहय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाहए विविहगेगायंके, परिस्तहोचसंगे उट्टिणे अहियासेत्तए । तं नो मलु जाया ! अन्हे उ इच्छामो तुंमं एणमचि विषयोणं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अन्हे जीयामो; तथो पच्छे, अन्हेहि जाव पद्धहिसि,

२२. तए णं से जमाली सत्तियजुमारो अम्मा-पियरो एवं वयासी-तदा वि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुम्मे ममं एवं चदह, एवं खलु जाया ! निगंधे पावयणे सचे, अणुत्तरे, केवळे तं चैव जाव पद्धहिसि; एवं मलु अम्मयाओ ! निगंधे पावयणे कीवाणं. कायरारं, कापुरिसाणं, इहल्लोगपडिवज्जाणं, परल्लोगपरमुहाणं, विसयतिसियाणं दुण्णुचरे पागयजणस्त; धीरस्त. निच्छियस्त, ववसियस्त नो खलु एत्वं किंचि वि दुकरं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्म-याओ ! तुम्मेहि अम्मणु-

एवी उक्तिश्रीं समजायता आ प्रमाणे कए के हि पुत्र ! ए प्रमाणे खरेखर निश्रंथ प्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वितीय छे. इत्यादि आवश्यक सूत्रा का प्रमाणे यावत् ते सर्व दुःखो नो नाश करनारं छे. परन्तु ते सर्पनीं पेटे एकान-निश्चिन्तश्रियाळुं, अलानां पेटे एकान धारवाळुं, खोदाना जवने चाववानां पेटे दुष्कर, अने वेळुना कोळीयानी पेटे नि.खाद छे, वडी ते गंगा नदीना साने प्रवाहे जवानी पेटे, अने वे हायथी समुद्र तरवाना जेवुं ते प्रवचनतुं अनुपालन मुक्केछे. तीव्या रज्जुगादि उपर चालवाना जेवुं [दुष्कर] छे, मोटी शिलाने उचकवा खोखर छे अने तरवारनी धारा समान बननुं आचरण करवनुं छे. हे पुत्र ! श्रमण निश्रंथोने १ आध्यात्मिक, २ औद्योगिक, ३ मिश्रजात, ४ अव्यवहारक, ५ पूनिकृत, ६ क्रीत, ७ प्रामित्य, ८ अच्छेय, ९ अवि.सुष्ट, १० अम्या-हत, ११ कानारमक्त, १२ दुर्मिन्नमक्त, १३ ग्लानमक्त, १४ वार्दिकामक्त, १५ प्रायुष्कामक्त, १६ अम्यातरपिंड अने १७ गजपिंड, तेमज मूलनुं भोजन, कंदनुं भोजन, फलनुं भोजन, वीजनुं भोजन अने हरित-(खोलीवनरयनि) तुं भोजन खानुं के पीनुं कल्पनुं नथी. वडी हे पुत्र ! तुं सुखने योग्य छे पण दुःखने योग्य नथी. तेमज टाट, तटका, सुख, तरंग, चोर, धावद, दास अने मच्छरना उपद्रवोने, तथा वातिक, पैत्तिक, श्लेष्मिक अने सन्निपातजन्य विविध प्रकारना रोगो अने तेना दुःखोने, तेमज परीरह अने उपसर्गोने सहवाने तुं समर्थ नथी. माटे हे पुत्र ! इने तारो विवोग एक क्षण पण इच्छता नथी; तेथी प्यासुधी अने जीविण खानुची तुं रहे अने अमार कालगत थया पछी यावत् तुं वीक्षा लेजे.

२२. त्यारपछी ते जमालि नामे अत्रियजुमारो पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कए के—हि माता-पिता ! तने मने जे ए प्रमाणे कए के—हे पुत्र ! निश्रंथप्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वितीय छे—इत्यादि यावत् अमारा कालगत थया पछी तुं वीक्षा लेजे. ते ठीक छे, पण हे मात-पिता ! ए प्रमाणे खरेखर निश्रंथ प्रवचन हींव-मन्दशक्तिवाद्या, कायर अने हडका पुरपोने, तथा आ लोकनां आसक्त, परल्लेकधी पराङ्मुख एवा विपदनी लृप्णावाद्या सामान्य पुरपोने (तेनुं अनुपालन) दुष्कर छे; पण धीर, निश्चिन्त अने प्रयत्नवान् पुरपोने तेनुं अनुपालन जरा पण दुष्कर नथी. माटे हे माता-पिता ! हुं तमारी अनुमतिथी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावत् वीक्षा लेवाने,

१ समुहे इ वा न, समुहे च्वा व, समुहे च्च ट । २ मिस्साजा-ह । ३ रज्जोरए ग-व-ट । ४ तुंमं च णं ग-व । ५ जाव अ-ट । ६ अन्हेहि कालगएहि-ट ।

२१. \* “इणमेव निगंधं पावयणं सचं, अणुत्तरं, केवलियं, पटिपुत्तं नैवाटयं, संसुद्धं, सगगतं, तिद्धिमगं, सुत्तिसगं, निज्जाणमगं, निज्जाणमगं अविट्ठं, अविचंधि, सच्चदुक्खपहीणमगं । इयं पिट्ठा जांवा सिज्जाति, सुज्जाति, सुचति, पटिनिध्यावति, नव्वदुत्तलानमंनं करति” ।

(आवश्यकप्रतिक्रमण सूत्र-३०-३३.)

अर्थ—आज निश्रंथप्रवचन सत्य, अनुत्तर, अद्वितीय, परिपूर्ण, न्याययुक्त, शुद्ध, शाल्यने कापनार, निश्चिन्त, सुकिसागं, निर्याणमार्गं, अने निर्याणमार्गरूप छे. तेमज ते अमलरहित, निरन्तर अने सन्तुं खना नाशनुं कारण छे. तेनानां तएर थयेला जीवो सिद्ध थाय छे, बुद्ध थाय छे, मुक्त थाय छे, निर्वोणने प्राप्त थाय छे अने सर्वदुःखो नो नाश करे छे.

† साधुओने पिंडना बेंतालीश दोषो होय छे. सोळ चहुमदोष, सोळ उत्यादनदोष. अने दश एणगादोष. तेनां आध्यात्मिकदि सोळ चहुमदोषो छे. तेनानां आध्यात्मिकधीं मार्गोने अम्याहत सुधीना दश दोषो छे. जुओ-प्रवचनसारोखर गाया. ५६५.

आप समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पच्चइत्तए। तए णं-तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिक्कलाहि य वहुंहि आवघणाहि य, पन्नवणाहि य आवघित्तए वा, जाव विन्नवित्तए वा, ताहे अकामाहं चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमन्नित्था।

२३. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंविपपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुंडग्गामं नयरं सन्निभतरवाहिरियं आसिय-संमज्जि-ओवलित्तं जहा उववाइए, जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुंविपपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं, महग्घं, महरिहं विपुलं निक्खमणाभिसेयं उवट्टवेह। तए णं ते कोडुंविपपुरिसा तहेव जाव पच्चप्पिणंति। तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्टसएणं सोवण्णिण्याणं कलसाणं, एवं जहा रायप्पसेणइजे, जाव अट्टसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सद्धिद्धिए जाव महया रवेणं महया महया निक्खमणाभिसेणेणं अंभिसिंचंति।

२४. म० २ अंभिसिंचित्ता करयल- जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति, ज० २ वद्धावित्ता एवं वयासी-भण जाया ! किं देमो, किं पयच्छामो, किणा वा ते अट्टो ? तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी-इच्छामि णं अम्म-याओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं चं पडिग्गहं चं आणित्तं कासवगं च सदाविउं। तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुंविपपुरिसे सदावेइ, को० २ सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सयसहस्सेणं कुत्तियावणाओ रयहरणं चं पडिग्गहं चं आणेह, सयसहस्सेणं कासवगं सदावेह। तए णं ते कोडुंविपपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं बुत्ता समाणा हंडु-तुट्ट-करयल- जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं, तहेव जाव कासवगं सदावेंति। तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंविपपुरिसेहिं सदाविप समाणे हंडुए तुट्टे णहाए कयवलिकम्मे जाव सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव

इच्छुं छुं. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिता विपयने अनुकूल तथा विपयने प्रतिकूल एवी घणी उक्तिओ, प्रज्ञप्तिओ, सज्ञप्तिओ अने विनतिओयी कहेवाने यावत् समजाववाने शक्तिमान् न तथा ल्यारे वगर इच्छाए तेओए जमालि क्षत्रियकुमारने दीक्षा लेवानी अनुमति आपी.

दीक्षानुमति.

२३. ल्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुपोने वोलाव्या. अने वोलावीने एम कहुं के—'हे देवानुप्रियो ! शीघ्र आ क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वहार अने अदर पाणीथी छटकाव करावो, वाळीने साफ करावो, अने लीपावो'—इत्यादि जेम औपपातिक सूत्रमां कहुं छे तेम करीने यावत् ते कौटुंबिक पुरुपो आज्ञा पाछी आपे छे. ल्यारवाद फरीने पण जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुपोने वोलाव्या, अने वोलावीने आ प्रमाणे कहुं के—'हे देवानुप्रियो ! जल्दी जमालि क्षत्रियकुमारने महार्थ, महामूल्य, महापूज्य अने मोटो दीक्षानो अभिपेक तैयार करो.' ल्यारवाद ते कौटुंबिक पुरुपो कह्या प्रमाणे करीने आज्ञा पाछी आपे छे. ल्यारवाद जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिता उत्तम सिंहासनमा पूर्व दिशा सन्मुख वेसारे छे, अने वेसारीने एकसो आठ सोनाना कलशोथी-इत्यादि राजप्रश्नीयसूत्रमा कह्या प्रमाणे यावत् एकसोने आठ माटीना कलशोथी सर्व ऋद्धिवडे यावद् मोटा शब्दवडे मोटा २ निष्क्रमणाभिपेकथी तेनो अभिपेक करे छे.

जमालिनी दीक्षा.

२४. अभिपेक कर्था बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता-पिता हाथ जोडी यावत् तेने जय अने विजयथी वधावे छे. वधावीने तेओए आ प्रमाणे कहुं के—'हे पुत्र ! तं कहे के तने अमे शुं दइए, शुं आपीए, अथवा तारे काइ प्रयोजन छे ? ल्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कहुं के—हे माता-पिता ! हुं कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र मंगाववा तथा एक हजामने वोलाववा इच्छुं छुं. ल्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुपोने वोलाव्या अने वोलावीने कहुं के—'हे देवानुप्रियो ! शीघ्र आपणा खजानामांथी त्रण लाख (सोनेया) ने लइने तेमाथी वे लाख (सोनेया) वडे कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र लावो, तथा एक लाख सोनेया आपीने एक हजामने वोलावो. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए ते कौटुंबिक पुरुपोने ए प्रमाणे आज्ञा करी ल्यारे तेओ खुश थया, तुष्ट थया, अने हाथ जोडीने यावत् पोताना स्वामीनु वचन स्वीकारीने तुरतज खजानामांथी त्रण लाख सुवर्णमुद्रा लइने यावत् हजामने वोलावे छे, ल्यारवाद जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुपो द्वारा वोलावेले ते हजाम खुश थयो, तुष्ट थयो,

१ बहुहिं य आ-ग-ट। २ अकामए चे-ग। ३ अट्टसयाणं ड। ४-सिंचइ ग-घ। ५ वा क। ६-वा क। ७-णुप्पिये। ८ बुत्ते समाणे ड। ९-वुट्टा घ। १० हट्टवुट्टे क।

२३. \* औपपातिक प. ६१-२.

† राजप्रश्नीय प. १००-१, पं ८.

२४. ‡ कु-प्रथिवी, त्रिक-त्रण, आपण-दाट, खर्ग, मृत्यु अने पातालरूप त्रण लोकमा रहेली वस्तुने मळवाना स्थान-दाटने कुत्रिकापण कहे छे—टीका.

ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ- જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ પિયરં જળ્લણં વિજણ્ણં વહ્લાવેદ્દ; જ૦ ૨ વહ્લાવિત્તા ઇવં વયાસી-સંદિસંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! જં મ્મ કરણિજ્ઞં ? ત્વ ણં સે જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ પિયા તં કાસવગં ઇવં વયાસી-તુમં દેવાણુપ્પિયા ! જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ પરેણં જત્તેણં ચરુરંગુલ્લવ્વજ્જે 'નિન્નમ્મણપાઓગે અગ્ગકેસે કપ્પેદ્દિ । ત્વ ણં સે કાસવે જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ પિરુણા ઇવં યુત્તે સમાણે દટ્ટ-તુટ્ટ- કરયલ- જાવ ઇવં સ્મામી ! નહ્હત્તાણાવ વિણ્ણણં વયણં પહ્હિસુણેદ્દ, પહ્હિસુણિત્તા સુરમિણા ગંધોદ્દપ્પણં હત્થ-પાદે પન્નગાલેદ્દ, પન્નગાલિત્તા સુજાણ અટ્ટપડ્ડાણ પોત્તીપ મુહં વંચદ્દ, મુહં વંધિત્તા જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ પરેણં જત્તેણં ચરુરંગુલ્લવ્વજ્જે 'નિન્નમ્મણપાઓગે અગ્ગકેસે કપ્પેદ્દ । ત્વ ણં સા જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ માયા હંસલન્નમ્મણેણં પેટ્ઠસાટ્ઠણં અગ્ગકેસે પટ્ઠિચ્છદ્દ, અ૦ ૨ પટ્ઠિચ્છિત્તા સુરમિણા ગંધોદ્દપ્પણં પન્નગાલેદ્દ, સુરમિ૦ ૨ પન્નગાલિત્તા અગ્ગેદ્દિ ધરેદ્દિ ગંધેદ્દિ, મહેદ્દેદ્દિ અચ્ચેતિ, અગ્ગેદ્દિ૦ ૨ અચ્ચિત્તા મુદ્દે વરથે વંચદ્દ, સુ૦ ૨ વંધિત્તા રયણકરંડગંસિ પન્નિરવવતિ, પન્નિરવવિત્તા હાર-વારિધાર-સિંહુવાર-છિન્નમુત્તાવલિપ્પગાસાટ્ઠં મુયવિયોગદ્દસદ્દાદ્દ અંસુદ્દં વિણ્ણિ-મ્મુયમાણી ૨ ઇવં વયાસી-ઇસ ણં અહ્હં જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ વહ્હસુ તિદ્દીમ્મુ ય પઘ્ણીસુ ય ઉસ્સવેસુ ય જન્નેસુ ય્થ છ્ણેસુ ય અપચ્છિમે દરિસણે ભવિસ્સત્તીતિ કટ્ટ ઠેસીસગમૂલે ઠવેતિ ।

૨૫. ત્વ ણં તસ્સ જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ અમ્મા-પિયરો 'દોઢં પિ ઉત્તરાવહ્મણં સીદ્ધાસણં રયાવેંતિ, દોઢં પિ ૨ રયાવિત્તા જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ સેયી-પીયર્પદ્દિ ફલસેદ્દિ ઠ્ઠાવેંતિ, સેયા૦ ૨ ઠ્ઠાવિત્તા પમ્હલ્લમુકુમાલાણ સુરમીપ ગંધકાસાર્ણે ગાયાદ્દ લ્હદ્દેતિ, પ૦ ૨ લ્હદ્દિત્તા સરસેણં ગોસીસચંદ્રણેણં ગાયાદ્દ અણ્ણિલંપતિ, સ૦ ૨ અણ્ણિલંપિત્તા નાસાનિ-સ્સાસવાયવોજ્જં, ચન્નગુહરં, ચન્ન-ફરિસલુત્તં, હયલાલાપેલવાડિતિરેગં, ધવલં, ફળગગચિત્તંતકમ્મં, મહરિદ્દં, હંસલન્નમ્મણપટ્ઠસાટ્ઠં પરિદ્દિતિ, પરિદ્દિત્તા હારં પિણેદ્દેતિ, પિણદ્દિત્તા અદ્ધહારં પિણેદ્દેતિ, પિણદ્દિત્તા ઇવં જહ્હા સૂરિયામસ્સ અલંકારો તદ્દેવ જાવ ચિત્તં રયણસંકહ્હકલં મરુટં પિણિદ્દેતિ; કિં વરુણા ? ગંધિમ-વેદ્દિમ-પુરિમ-સંવાતિમેણં ચરુરિદ્દેણં મહેણં કપ્પરુક્કસગં પિવ અલંકિય-ચિમ્મુસિયં કરેંતિ । ત્વ ણં સે જમાલિસ્સ રાત્તિયકુમારસ્સ પિયા કોટુંચિયપુરિસે સદ્દાવેદ્દ, સદ્દાવિત્તા ઇવં વયાસી-ચિપ્પામેવ ભો દેવાણુપ્પિયા ! અણેગરંસસયસણિવિદ્દં, લીલદ્દિયસાલમંજિયાગં જહ્હા રાયપ્પસેણદ્દે વિમાણવણ્ણઓ, જાવ મણિ-

ન્યાયો, અને વલિકર્મ (દેવપૂજા) કરી, યાવત્ તેણે પોતાનું ગરી રાજગાયું, અને પછી ત્યાં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારનો પિતા છે ત્યાં તે આવે છે. આવીને હાથ જોડીને જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતાને જય અને વિજયથી વધાવે છે; વધાવ્યા પછી તે હજામ આ પ્રમાણે બોલ્યો-કે-‘હે દેવાનુપ્રિય ! જે મારે કરવાનું હોય તે કરમાવો’. ત્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતાને તે હજામને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે દેવાનુપ્રિય ! જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના અલ્પન્ત યત્નપૂર્વક ચાર અંગુલ મૂકીને નિષ્ક્રમણ (દીક્ષાને) યોગ્ય આગળના વાલ કાપી નાલ. ત્યાર-પછી જ્યારે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતાને તે હજામને ૧ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તે સુગ વયો, તુષ્ટ વયો અને હાથ જોડીને ૧ પ્રમાણે બોલ્યો-‘હે સ્વામિન્ ! આજ્ઞા પ્રમાણે કરીશ’ એમ કહીને વિનયથી તે વચનનો સ્વીકાર કરે છે. સ્વીકાર કરીને સુગંધી ગંધોદકથી હાથ પગને ધુવે છે, ધોઈને શુદ્ધ આટ પડવાલા વહ્નથી મોટાને વાંધી અલંત યત્નપૂર્વક જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના નિષ્ક્રમણ યોગ્ય અગ્રકેશો ચાર આંગળ મૂકીને કાપે છે. ત્યાર પછી જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની માતા હંસના જેવા શ્વેત પટશાટકથી તે અગ્રકેશોને ગ્રહણ કરે છે. ગ્રહણ કરીને તે કેશોને સુગંધી ગંધોદકથી ધુવે છે. ધોઈને ઉત્તમ અને પ્રધાન ગંધ તથા માલાચડે પૂજે છે. પૂજીને શુદ્ધ વહ્નવડે વાંધે છે. વાંધીને રક્તના કરંડિયામા મૂકે છે. ત્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારનો માતા હાર, પાળીનો ધારા, સિંદુવારના પુષ્પો અને વટી ગળી મોતીનો માલ જેવા પુત્રના વિયોગથી દુઃસહ આંસુ પાડતી આ પ્રમાણે બોલી કે-આ કેશો અમારા માટે વળી તિથિઓ, પવંળીઓ, ઉત્સવો, યજ્ઞો, અને મહોત્સવોમા જમાલિકુમારના વારંવારં ઢર્ઢનરૂપ થશે’ એમ ધારી તેને ઓઝીકાના મૂલમા મૂકે છે.

૨૫. ત્યાર વાટ તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના માતા-પિતા પુનઃ ઉત્તર દિશા સન્મુખ વીજું સિંહાસન મૂકાવે છે. મૂકાવીને પરિવાર જમાલિ, ક્ષત્રિયકુમારને સોના અને રૂપાના કલશો વડે ન્હવરાવે છે. ન્હવરાવીને સુરમિ, ઢગાવાલી અને સુકુમાલ સુગંધી ગંધકાપાય (ગન્ધપ્રધાન-લાલ) વહ્ન વડે તેના અગોને લ્હે છે, અને અંગોને લ્હીને સરસ ગોશીર્ષ ચદનવડે ગાત્રનુ વિલેપન કરે છે. વિલેપન કરીને નાસિકાના નિઃશ્વાસના વાયુથી ડહી જાય ઇવં હલકું, આલ્કને ગમે તેવું સુંદર, વર્ણ અને સ્પર્શથી સંયુક્ત, ઘોડાનો લાલ કરતા પળ વધારે નરમ, ધોલું, સોનાના કસવી છેડાવાલું, મહામૂલ્યવાલું, અને હંસના ચિહ્નયુક્ત ઇવં પટશાટક (રેશમી વહ્ન) પહેરાવે છે. પહેરાવીને હાર અને અર્ધહારને પહેરાવે છે. ૧ પ્રમાણે જેમ ‘સૂર્યામના અલંકારતું વર્ણન કરેલું છે તેમ અહિં કરલુ, યાવત્ વિચિત્ર રત્નોથી જહેલ્લ ઉત્કૃષ્ટ મુકુટને પહેરાવે

૧-પઓગે ગ-ઘ-ઙ । ૨ પલિકપ્પેદ્દિ ઘ । ૩ તદ્દત્તાણા વિ-ફ । ૪-પવોને ગ-ઘ-ઙ । ૫ પહ્હિસા-ગ । ૬ ચમરેદ્દિ ક । ૭ સુદ્ધવ-રથેણં ઘ, સુદ્દેણં વરથેણં ઙ । ૮-વારિધારા ગ-ઘ । ૯ ઓસીસગ-ગ । ૧૦ દોઢં ઉત્ત-ક । ૧૧ સીયાપી-ક-ઘ, સેયપી-ઙ । ૧૨ નાદ્દેતિ ગ-ઘ । ૧૩ નાદ્દેતા ગ-ઘ । ૧૪ પિણિદ્દેતિ, પિણિદ્દિત્તા ક । ૧૫ -ણદ્દેતિ, -નદ્દેતા ક ।

ચંચળધંટિયાજાલપરિક્ષિત્તં પુરિસસહસ્સંવાહિર્ણિ સીયં ઉવદુવેહ, ઉવદુવેત્તા મમ પ્રયમાણત્તિયં પચ્ચપ્પિણહ । તપ્પં તે કોહું-  
 વિયપુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ । તપ્પં તે જમાલી સ્વત્તિયકુમારે કેસાલંકારેણં, વત્થાલંકારેણં, મલ્લાલંકારેણં, આમરણા-  
 લંકારેણં ચઙ્ગિહેણં અલંકારેણં અલંકારિય સમાણે પહિપુચ્ચાલંકારે સીહાસણાઓ અન્નુદ્દેહ, સિહાસણાઓ અન્નુદ્ધિત્તા સીયં  
 અણુપ્પદાહિણીકરેમાણે સીયં દુરુહહ, દુરુહિત્તા સીહાસણવરંસિ પુરત્થાઽમિમુહે સન્નિસન્ને । તપ્પં તે સ્સ જમાલિસ્સ સ્વત્તિય-  
 કુમારંસ્સ માતા પ્પહાયા, કય—(વલિકમ્મા) જાવ—સરીરા હંસલક્ષણં પહસાડગં ગ્પહાય સીયં અણુપ્પદાહિણીકરેમાણી  
 સીયં દુરુહહ, સીયં દુરુહિત્તા જમાલિસ્સ સ્વત્તિયકુમારંસ્સ દાહિણે પાસે મદ્દાસણવરંસિ સન્નિસન્ને । તપ્પં તે સ્સ જમાલિસ્સ-  
 સ્વત્તિયકુમારંસ્સ અમ્મધાતી પ્પહાયા, જાવ—સરીરા રયહરણં પહિગ્ગહં ચ ગ્પહાય સીયં અણુપ્પદાહિણીકરેમાણી સીયં દુરુ-  
 હહ, સીયં દુરુહિત્તા જમાલિસ્સ સ્વત્તિયકુમારંસ્સ વામે પાસે મદ્દાસણવરંસિ સન્નિસન્ને । તપ્પં તે સ્સ જમાલિસ્સ સ્વત્તિય-  
 કુમારંસ્સ પિટ્ઠઓ પ્પગા વરતરુણી સિંગારાગારચારુવેસા સંગયગય— જાવ રૂવ—જોદ્ધણ—વિલાસકલિયા સુંદરથળ— હિમ્મ-  
 રયય—કુમુદ—કુંદે—દુપ્પગાલં સકોરંટમહ્લદામં ધવલં આયવત્તં ગ્પહાય સલીલં ઉંચરિ ધારેમાણીઓ ધારેમાણીઓ ચિટ્ઠિતિ ।  
 તપ્પં તે સ્સ જમાલિસ્સ ઉમ્મઓ પાસિં દુવે વરતરુણીઓ સિંગારાગારચારુ— જાવ—કલિયાઓ, ણાણામણિ—કણગ—રયણ—  
 વિમલમહરિહતવણિજ્જુ—જ્જલવિચિત્તદંડાઓ, ચિલ્હિયાઓ, સંલં—ક—કુંદે—દુ—દગરય—અમયમહિય—ફેણુજસન્નિકાસાઓ ધવ-  
 લાઓ ચામરાઓ ગ્પહાય સલીલં વીયમાણીઓ વીયમાણીઓ ચિટ્ઠિતિ । તપ્પં તે સ્સ જમાલિસ્સ સ્વત્તિયકુમારંસ્સ ઉંત્તરપુર-  
 ત્થિમેણં પ્પગા વરતરુણી સિંગારાગાર— જાવ—કલિયા સેતં રયયામયં વિમલસલિલપુણં મત્તગયમહામુહાકિતિસમાણં  
 મિંગારં ગ્પહાય ચિટ્ઠિતિ । તપ્પં તે સ્સ જમાલિસ્સ સ્વત્તિયકુમારંસ્સ દાહિણપુરત્થિમેણં પ્પગા વરતરુણી સિંગારાગાર— જાવ  
 —કલિયા ચિત્તકળગદંડં તાલવેંટં ગ્પહાય ચિટ્ઠિતિ । તપ્પં તે સ્સ જમાલિસ્સ સ્વત્તિયકુમારંસ્સ પિયા કોહુંવિયપુરિસે સદ્દાવેદ્ધ  
 કો ૨ સદ્દાવિત્તા ઇવં વયાસી—સ્થિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! સરિસયં, સરિત્તયં, સરિદ્ધયં, સરિસલાવન્ન—રૂવ—જોદ્ધણ—  
 ગુણોવવેયં, પ્પગામરણ—વસણગહિયનિજ્જોયં કોહુંવિયવરતરુણસહસ્સં સદ્દાવેદ્ધ । તપ્પં તે કોહુંવિયપુરિસા જાવ પહિસુણિત્તા  
 સ્થિપ્પામેવ સરિસયં, સરિત્તયં, જાવ સદ્દાવેંતિ । તપ્પં તે કોહુંવિયપુરિસા જમાલિસ્સ સ્વત્તિયકુમારંસ્સ પિડ્ડણા કોહુંવિ-  
 યપુરિસેહિં સદ્દાવિયા સમાણા હદ્ધુ—તુદ્ધુ—પ્પહાયા, કયવલિકમ્મા, કયકોડય—મંગલ—પાયચ્છિત્તા, પ્પગામરણ—વસણગહિય-

છે. વધારે શું કહેવું? પણ પ્રંથિમ—ગુંથેલી, વેદ્ધિમ—વીંટેલી, પૂરિમ—પૂરેલી અને સંઘાતિમ—પરસ્પર સઘાત વડે તૈયાર થયેલી ચારે  
 પ્રકારની માઝાઓ વડે કલ્પવૃક્ષની પેઠે તે જમાલિ કુમારને અલંકૃત—વિભૂષિત કરે છે. ત્યાર વાદ તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતા  
 કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવે છે. અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે—‘હે દેવાનુપ્રિયો! શીત્ર સેકહો સ્તંભોવડે સહિત લીલાપૂર્વક  
 પુતળીઓથી યુક્ત—સ્વ્યાદિ રાજપ્રશ્રીયસૂત્રમા વિમાનતું વર્ણન કર્યું છે તેવી યાવત્ મળિરત્નની ઘંટિકાઓના સમૂહ યુક્ત, હજાર  
 પુરુષોથી ડંચકી શકાય તેવી શીવિકા—પાલ્લીને તૈયાર કરો અને તૈયાર કરીને મારી આજ્ઞા પાછી આપો.’ ત્યારવાદ તે કૌટુંબિક પુરુષો યાવત્  
 આજ્ઞાને પાછી આપે છે. ત્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમાર કેસાલંકાર, વજ્રાલંકાર માલ્યાલંકાર અને આમરણાલંકાર ૫ ચાર પ્રકારના  
 અલંકારથી અલંકૃત થઈ પ્રતિપૂર્ણ અલંકારથી વિભૂષિત થઈ સિંહાસનથી ઉઠે છે. ઊઠીને તે શિવિકાને પ્રદક્ષિણા દર્શને તેના ઉપર ચઢે છે.  
 ચઢીને ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર પૂર્વ દિશા સન્મુખ વેસે છે. ત્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની માતા જ્ઞાન કરી વલિકર્મ કરી યાવત્  
 શરીરને અલંકૃત કરી, હંસના ચિહ્નવાળા પટશાટકને લઈ શિવિકાને પ્રદક્ષિણા કરી તેના ઉપર ચઢે છે; અને ચઢીને તે જમાલિ ક્ષત્રિય-  
 કુમારને જમણે પહલે ઉત્તમ મદ્દાસન ઉપર વેઠી. પછી જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની ધાવમાતા જ્ઞાન કરી યાવત્ શરીરને ગ્ણગારી રજોહરણ  
 અને પાત્રને લઈ તે શિવિકાને પ્રદક્ષિણા કરી તેના ઉપર ચઢે છે, અને ચઢીને જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારને ડાવે પહલે ઉત્તમ મદ્દાસન  
 ઉપર વેઠી. ત્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની પાછળ મનોહર આકાર અને સુંદર પહેરવેશવાળી, સંગતગતિવાળી યાવત્ રૂપ અને  
 ધૈયનના વિલાસથી યુક્ત, સુંદર સ્તનવાળી એક યુવતી હિમ, રજત, કુમુદ, મોગરાનું ફુલ અને ચંદ્રસમાન કોરંટકપુષ્પની માઝાયુક્ત, ધોલું  
 છત્ર હાથમા લઈ તેને લીલાપૂર્વક ધારણ કરતી ઊભી રહે છે. ત્યારપછી તે જમાલિને વને પહલે શૃંગારના જેવા મનોહર આકારવાળી  
 અને સુંદર વેપવાળી ઉત્તમ વે યુવતી સ્ત્રીઓ યાવત્ અનેક પ્રકારના મણિ, કનક, રત્ન અને વિમલ, મહામૂલ્ય તપનોય (રક્ત સુવર્ણ—)  
 થી વનેલા, ઉજ્જવલ વિચિત્ર દંડવાળા, દીપતા, શંખ, અંક, મોગરાના ફુલ, ચંદ્ર, પાણીના વિન્દુ અને મથેલ અમૃતના ફીણના સમાન  
 ધોળા ચામરોને ગ્રહણ કરી લીલાપૂર્વક વીંજતી ઊભી રહે છે. પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની ઉત્તરપૂર્વ દિશા પ શૃંગારના ગૃહ જેવી ઉત્તમ  
 વેપવાળી યાવત્ એક ઉત્તમ સ્ત્રી શ્વેત રજતમય, પવિત્ર પાણીથી ભરેલા અને ઉન્મત્ત હસ્તીના મોટા મુખના આકારવાળા કલશને ગ્રહણ  
 કરીને યાવત્ ઊભી રહે છે. ત્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની દક્ષિણપૂર્વે શૃંગારના ગૃહરૂપ ઉત્તમ વેપવાળી યાવત્ એક ઉત્તમ સ્ત્રી

૧ ઉવધરેમાણી ૨ હ । ૨ વીદમાણીઓ ૨ ક । ૩-પુરચ્છિમેણં ગ-ઘ હ । ૪ સેત-રયયામ- ગ-ઘ ।

\* જુઓ-રાજપ્રશ્રીય પ. ૨૬-૨ પં. ૯.



निज्जोया जेणेव जमालिस्स सत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छिता करयल— जाव वज्जवेत्ता पयं वयासी—संदिंसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अट्ठेहिं करणिजं । तप णं से जमालिस्स सत्तियकुमारस्स पिया तं कोटुं वियवर- तरुणसहस्सं पि एवं वयासी—तुंभे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयवलिकम्मा जाव—गहियनिज्जोग्गा जमालिस्स सत्तियकुमा- रस्स सीयं परिचहत् । तप णं ते कोटुं वियपुरिस्ता जमालिस्स सत्तियकुमारस्स जाव पट्टिमुणित्ता ण्हाया जाव —गहिय- निज्जोग्गा जमालिस्स सत्तियकुमारस्स सीयं परिचहंति । तप णं तस्स जमालिस्स सत्तियकुमारस्स पुग्गिसहस्सवाहिंणि सीयं दुरुद्धस्स समाणस्स तप्पहमयाप श्मे अट्ट—ट्ट मंगलगा पुरओ अट्टाणुपुट्ठीए संपट्टियाः तं जहा—सोन्विय—सिरिवच्छ— जाव—दप्पणा; तदाणंतरं च णं पुत्तकलसंभिगारं जहा उववापट्ट, जाव—गगणतलमणुलिहंती पुरओ अट्टाणुपुट्ठीए संपट्टिया, एवं जहा उववापट्ट तद्देव भाणियधं, जाव—आलोयं च करेमाणा जयजयसहं च पउंजमाणा पुरओ अट्टाणुपुट्ठीए संपट्टिया । तदाणंतरं च णं वद्देव उग्गा भोग्गा जहा उववापट्ट जाव महापुरिसवग्गुरापारिन्निवत्ता, जमालिस्स सत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अट्टाणुपुट्ठीए संपट्टिया ।

२६. तप णं से जमालिस्स सत्तियकुमारस्स पिया ण्हाया कयवलिकम्मा जाव—विभूतिप हत्थियन्तंधवरगए सकोरंट- मह्ज्जामेणं छत्तेणं धरिज्जनाणेणं सेयवरचामराहिं उट्टुधमाणीहिं उट्टुधमाणीहिं हय—गय—रह—पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिचुट्टे, मह्हायभउचडगर— जाव—परिन्निवत्ते जमालिस्स सत्तियकुमारस्स पिट्टओ अणुगच्छत् । तप णं तस्स जमालिस्स सत्तियकुमारस्स पुरओ महं आसा, आसवरा, उमथो पासि णागा, णागग्ग, पिट्टओ रहा, रहसंगेही । तप णं से जमाली सत्तियकुमारे अट्टुग्गताभिगारे, परिगहियतालिचंटे, ऊसवियसेतछत्ते, पवीश्यसेतचामरसालवीयणाए, सद्धिहीए जाव णादितरवेणं, तयाणंतरं च णं वद्देव लंठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुंन्ययग्गाहा, जाव वीणीग्गाहा; नयाणंतरं च णं अट्टसयं

विचित्र सोनाना टंटवाळा विजणाने लदने उमी रहे छे, पट्टी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोला- वीने आ प्रमाणे कायुं के—हि देवानुप्रियो ! शीत्र सरखा, समानवचावाळा, समानउमवाळा, समानलवण्य, रूप अने र्वावन गुण- युक्त, अने एक सरखा आभरण अने वस्त्ररूप परिकरवाळा एक हजार उत्तम युवान कौटुंबिक पुरुषोने बोलावो' । पट्टी ते कौटुंबिक पुरु- पोए यावत् पोनाना स्वामीनुं वचन स्वीकारीने जल्दी एक सरखा अने सरखी त्वचावाळा यावत् एक हजार पुरुषोने बोलाव्या. त्वारपट्टी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोद्वारा बोलावेल्या ते कौटुंबिक पुरुषो हर्षित अने तुष्ट थया. स्नान करी, वलिकर्म ( पूजा ) करी, कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करी, एकसरखा धरेणा अने वस्त्ररूप परिकरवाळा धरिने तेओ ज्यां जमालि क्षत्रियकुमारना पित छे त्या आवे छे. आर्याने हाथ जोडी यावत् वधावी तेओए आ प्रमाणे कायुं के—हि देवानुप्रियो ! जे कार्य अमारे करवानु होय ते परमावो.' पट्टी ते जमालिकुमारना पिताए ते हजार कौटुंबिक उत्तम युवान पुरुषोने आ प्रमाणे कायुं के—हि देवानुप्रियो ! स्नान करी, वलिकर्म करी अने यावत् एक सरखा आभरण अने वस्त्ररूपपरिकरवाळा तमे जमालि क्षत्रियकुमारनी शिबिकाने उपाडो.' पट्टी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पितानुं वचन स्वीकारी स्नान करेला यावत् सरखो पहेरवेप धारण करेला ते कौटुंबिक पुत्रो जमालि क्षत्रियकुमारनी शिबिका उपाडे छे. पट्टी ज्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमार हजार पुरुषोथी उपाडेली शीबिकामा वेठो त्वारे सौ पहेला आ आठ आठ मंगळो आगळ अनुक्रमे चाल्या. ते आ प्रमाणे १ स्वस्तिक, २ श्रीवस्त, यावत् ८ दर्पण. ते आठ मंगळ पट्टी पूर्ण कळग चाल्यो— इत्यादि\* औपपातिकसूत्रमा कक्षा प्रमाणे यावत् गगन तलनेो स्पर्श करती एवी वैजयंती—ध्वजा आगळ अनुक्रमे चाली—इत्यादि †औपपातिकसूत्रमां कक्षा प्रमाणे यावत् जय जय शब्दनेो उच्चार करता तेओ आगळ अनुक्रमे चाल्या. त्वारपट्टी घणा उग्रकुलमा उत्पन्न थयेला, भोगकुलमा उत्पन्न थयेला पुरुषो औपपातिकसूत्रमां कक्षा प्रमाणे यावत् मोटा पुरुषो रूपी वागुराथी वींटायेला जमालि क्षत्रियकुमारनी आगळ, पाळळ अने पडखे अनुक्रमे चाल्या.

२६. त्वारपट्टी ते जमालिकुमारना पिता स्नान करी, वलिकर्म करी यावत् विभूषित थड हाथीना उत्तम स्कंध उपर चडी, कोरंट, पुष्पनी माळा युक्त, [ मस्तके ] धारण कराता छत्रसहित, वे श्वेत चामरोथी वींजाता २, घोडा, हाथी, रथ अने प्रवर योधाओ सहित चतुरंगिणी सेना साथे परिचूत थड, मोटा सुमटना वृन्दथी यावत् वींटायेला जमालि क्षत्रियकुमारनी पाळळ चाले छे, त्वारपट्टी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी आगळ मोटा अने उत्तम घोडाओ, अने वने पडखे उत्तम हाथीओ, पाळळ रथो अने रथनो समूह चाल्यो. त्वार वाद ते जमालिकुमार सर्व ऋद्धिसहित यावत् वादित्रना शब्दसहित चाल्यो. तेनी आगळ कळग अने तालवृत्तने लडने पुरुषो चालता हाता, तेना उपर उंचे श्वेत छत्र धारण करायुं हतुं, अने तेना पडखे श्वेत चामर अने नाना पंखाओ वींजाता हाता. त्वार पट्टी केटलाक लाक-

१ तुंभे ण व-ड । २ पासाओ य क-ग । ३ कय-जाव क-ड । ४-कुमारस्स । ५ -नीयणीए ग-घ-ट । ६ तपपंतरं क । ७-ग्गाहा ग-ड ।

\* औपपा. प. ६९-१

† औपपा. प. ६९-१

गयाणं, अट्टसयं तुरयाणं, अट्टसयं रद्धानं; तदाणंतरं च णं लउड-असि-फौतहत्थाणं वहुणं पायत्ताणीणं पुरओ संपट्टियं; तयाणंतरं च णं वहवे राईसर-तलवर-जाव सत्यवाहप्पभियओ पुरओ संपट्टिया सत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्जंमज्जेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्य गमणाए ।

२७. तए णं तस्स जमालिस्स सत्तियकुमारस्स सत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्जंमज्जेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तिय-च-उक्क- जाव पहेसु वहवे अत्यत्तिया, जहा उववाइए, जाव अभिनंदिता य अभित्युणंता य एवं वयासी-‘जय जय णंदा ! धम्मेणं, जय जय णंदा ! तवेणं, जय जय णंदा ! भइं ते अम्मगेहिं णाण-दंसण-चरित्तमुत्तमेहिं, अजियाइं जिंणाहिं इंदियाइं, जीयं च पालेहिं समणधम्मं; जियविग्घो चि य वसाहिं तं देव ! सिद्धिमज्जे, णिंहाणाहिं य राग-दोसमहे तवेणं धित्तिधणियवद्धकच्चे, महाहिं य अट्ट कम्मसत्तू द्धाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो हराहिं आराहणपडागं च धीर ! तेलोकरंगमज्जे, पावय वित्ति-भिरमणुत्तरं केवलं च णाणं, गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धमग्गेणं अकुडिलेणं, हंता परीसहचमूं, अभिमविय गामकंदकोवसग्गाणं, धम्मं ते अविग्घमत्थुत्ति कट्टु अभिनंदंति य अभियुणंति य ।

तए णं से जमाली सत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पिच्छिजमाणे पिच्छिजमाणे एवं जहा उववाइए कुणिओ, जाव णिग्गच्छति; णिग्गच्छिता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता छत्तादीए तित्तयगरा-तिसए पासइ, पासिता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सियाओ पंडोरुहइ । तए णं तं जमालिं सत्तियकुमारं अम्मा-पियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु मंते ! जमाली सत्तियकुमारे अहं एगे पुत्ते इट्ठे कंते, जाव किमंग ! पुण पासणयाए, से जहा णामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा, जाव सईहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जळे संबुट्ठे णोऽवल्लिप्पति पंकरपणं,

डीवाळा, भालावाळा, यावत् पुस्तकवाळा यावत् वीणावाळा पुरुपो चाल्या. ल्यारपछी एकसो आठ हाथी, एकसो आठ घोडा अने एकसो आठ रथो चाल्या, ल्यारपछी लाकडी, तरवार अने भालाने ग्रहण करी मोट्टु पायदळ आगळ चाल्युं, ल्यारपछी घणा युवराजो, धनिको, तलवरो, यावत् सार्थवाह प्रमुख आगळ चाल्या. यावद् क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वच्चे यइने ज्या ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्या बहुशालक चैत्य छे अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्या जवानो विचार कर्यो.

२७. ल्यारपछी क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वचोवच निकळता ते जमालि क्षत्रियकुमारने शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क यावत् मार्गोमा घणा धनना अर्थिओए, कामना अर्थिओए-इत्यादि \* औपपातिकमूत्रमां क्ख्हा प्रमाणे यावत् अभिनंदन आपता, स्तुति करता आ प्रमाणे काणुं के-‘हे नद-आनन्ददायक ! तारो धर्म वडे जय थाओ, हे नन्द ! तारो तपवडे जय थाओ, हे नन्द ! तारुं भद्र थाओ, अभद्र-अशुद्धित अने उत्तम ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वडे अजित एवी इन्द्रियोने तुं जित, अने जीतिने श्रमण धर्मनुं पाळन कर. हे देव ! विज्ञोने जीती तुं सिद्धिगतिमां निवास कर. धैर्यरूप कच्छने मजबूत बांधीने तपवडे रागद्वेषरूप मळोनो घात कर. उत्तम शुक्र ध्यानवडे अष्टकर्मरूप शत्रुनु मर्दन कर. वळी हे धीर ! तुं अग्रमत्त थइ त्रणलोकस्वरूप रंगमंडप मध्ये आराधनापताकाने ग्रहण करी निर्मळ अने अनुत्तर एवा केवलज्ञानने प्राप्त कर, अने जिनवरे उपदेशेळ सरळ सिद्धिमार्गवडे परमपदरूप मोक्षने प्राप्त कर. परीपहरूप सेनाने हर्णीने इन्द्रियोने प्रतिकूल उपसर्गोनो पराजय कर. तने धर्ममा अविघ्न थाओ’-ए प्रमाणे तेओ अभिनंदन आपे छे अने स्तुति करे छे.

ल्यारवाद ते जमालि क्षत्रियकुमार हजारो नेत्रोनी मालाओधी वारंवार जोवातो-इत्यादि † औपपातिकमूत्रमा कूणिकता प्रन्ने काणुं के तेम अहि जाणवुं, यावत् ते [ जमालि ] नीकळे छे. नीकळीने ज्या ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्यां बहुशाल नामे चैत्य छे त्या आवे छे. त्या आवीने तीर्थकरना छत्रादिक अतिशयोने जुए छे, जोइने हजार पुरुपोधी वहन करानी ते शिविकाने उर्मी राखे छे. उर्मी राखीने ते शिविका थकी नीचे उतरे छे. ल्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारने आगळ करी तेना माता-पिता ज्या श्रमण भगवान् महावीर छे त्या आवे छे. त्या आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् ननी तेओ आ प्रमाणे बोल्या के-‘हे भगवन् ! ए प्रमाणे खरेखर आ जमालि क्षत्रियकुमार अमारे एक इष्ट अने प्रिय पुत्र छे, जेनुं नाम श्रवण पण दुर्ढम छे, तो दर्शन दुर्ढम एत नेमां शुं कोइवु ? जेम कोइ एक कम्मळ, पम, यावत् सहस्रपत्र काठवमा उत्पन्न थाय, अने पाणीमा वचे, तोपण ते पज्जनी गजधी तेम जटना कणवी लेपातुं नधी; ए प्रमाणे आ जमालि क्षत्रियकुमार पण कामथकी उत्पन्न थयो छे अने भोगोथी वृद्धि पाम्यो छे, तो पण ते कामरजधी

१ संपट्टिया क-उ । २ जाव णादित्तरेणे सत्तिय-ग-घ । ३ -तिग्ग-उ । ४ अभिगरेहिं न । ५ जिंणाइ ग-उ । ६ पिहए क । ७ -वद्धकच्छो क । ८ -वाहिणीं सीयं घ । ९ -रुसनि क । १० -रुच्छइ न-घ-उ । ११ पदनमहस्स-ग-घ ।

पोऽवलिप्पद् जलरपणं, एवामेव जमाली चि खत्तियकुमारे कामेहि जाय, भोगेहि संबुद्धे णो विलिप्पद् कामरपणं, णो विलिप्पद् भोगरपणं, णो विलिप्पद् मित्त-णाइ-णियगसयण-संबंधिपरिजणेणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुद्धिगे भीए जम्मण-मरणेणं; देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पँद्वतेति; तं पर्यं णं देवाणुप्पियाणं अम्हे सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसभिक्खं ।

२८. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालि खत्तियकुमारं एवं वयासी-अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं । तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं बुत्ते समणे हट्ट-तुट्टे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिमागं अवक्कमड, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्ला-लंकारं ओमुयइ । तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडपणं आभरण-मल्ला-लंकारं पडिच्छति, आ० २ पडिच्छित्ता हार-चारि-त्रा-विणिम्मयमाणी विणिम्मयमाणी जमालि खत्तियकुमारं एवं वयासी-घडियवं जाया ! जइयवं जाया ! परिक्रमियवं जाया ! अस्सि च णं अट्टे, णो पैमापतवं ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिंसं पाउब्भूया तामेव दिंसं पडिगया ।

२९. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पंचमुद्धियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, एवं जहा उसमदत्तो तहेव पद्धथो; नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धि तहेव जाव सामाइयमाइयाहिं एक्कारस अंगाइ अहिज्झइ, सा० २ अहिज्झित्ता वहुहिं चउत्थ-छट्ट-ट्टम-जाव -मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोक्कम्मोहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

३०. तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं मंते ! तुच्चेहिं अम्भणुत्ताए समणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धि वहिया जणवयविहारं विहरित्तए । तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स पयमट्टं णो आढाइ, णो

अने भोगरज्जयी लेपातो नथी, तेमज मित्र, ज्ञाति, पोताना स्वजन, सवन्धी अने परिजनथी पण लेपातो नथी. हे देवानुप्रिय ! आ जमालि क्षत्रियकुमार संसारना भयथी उद्विग्न थयो छे, जन्म मरणथी भयभीत थयो छे, अने देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड-दीक्षित थइनै अगारवासथी अनगारिकपणाने स्वीकारवाने इच्छे छे. तो देवानुप्रियने अमे आ शिष्यरूपी भिक्षा आपीए छीए. तो हे देवानुप्रिय ! अप्र आ शिष्यरूप भिक्षानो स्वीकार करो'.

२८. ल्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ते जमालि क्षत्रियकुमारने आ प्रमाणे कहुं के-हि देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो, प्रतिबन्ध न करो'. ज्यारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि क्षत्रियकुमारने ए प्रमाणे कहुं ल्यारे ते हर्षित थइ, तुष्ट थइ, यावत् श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् नमस्कार करी, उत्तरपूर्व दिशा तरफ जाय छे. जइने पोतानी मेळे आभरण, माला अने अलंकार उतारे छे. पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हंसना चिह्वाळा पटशाटकथी आभरण, माला अने अलंकारोने ग्रहण करे छे, ग्रहण करीने हार अने पाणीनी धारा जेवा आसु पाडती २ तेणे पोताना पुत्र जमालिने आ प्रमाणे कहुं के-हि पुत्र ! सयमने विपे प्रयत्न करजे, हे पुत्र ! यत्न करजे, हे पुत्र ! पराक्रम करजे, सयम पाळवामा प्रमाद न करीश. ए प्रमाणे (कहीने) ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता-पिता श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे; वादी अने नमीने जे दिशाथी तेओ आब्या हत्ता ते दिशाए पाछा गया.

२९. ल्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार पोतानी मेळे पंच मुष्टिक लोच करे छे, करीने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे ल्या आवे छे, आवीने \*रूपमदत्त ब्राह्मणनी पेटे तेणे प्रत्रज्या लीधी. परन्तु जमालि क्षत्रियकुमारे पाचसो पुरुषो साथे प्रत्रज्या लीधी-इत्यादि सर्व जाणवुं. यावत् ते जमालि अनगार सामायिकादि अगीआर अगोने भणे छे. भणीने घणा चतुर्थ भक्त, छट्ट, अट्टम, अने यावत् मासार्थ तथा मासक्षमणरूप विचित्र तपकर्मवडे आत्माने भावित करता विहरे छे.

३०. ल्यार वाद अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगार ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे ल्या आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे. वादी अने नमीने तेणे आ प्रमाणे कहुं के-हि भगवन् ! तमारी अनुमतिथी हुं पांचसे अनगारनी साथे वहा-रना देओमा विहार करवाने इच्छुं छुं.' ल्यारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो आदर न कर्यो, स्वीकार न कर्यो,

१ पव्वइत्तए छु । २ -तव्वत्ति क-ड । ३-वंदइ णमंसइ ग-घ । ४-५ दिसिं ग-घ । ६ खत्तिए घ । ७ उवागच्छित्ता एवं ग-घ-ड । ८ जाव सव्वं सा-घ ।

परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्टइ । तए णं से जमाली अणगारे समणे भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी-इच्छामि णं मंते ! तुम्हेहि अम्मणुत्ताए समाणे पंचंहि अणगारसएहिं सद्धिं जाव विहरित्तए । तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि एयमट्टं णो आढाइ, जाव तुसिणीए संचिट्टइ । तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ, बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पंचंहि अणगारसएहिं सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरइ ।

३१. तेणं कालेणं, तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था, वण्णओ; कोट्टए चेइए, वन्नओ, जाव वणसंडस्स । तेणं कालेणं, तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, वन्नओ । पुण्णभइ चेइए, वन्नओ, जाव पुढविसिलापट्टओ । तए णं ते जमाली अणगारे अन्नया कयाइं पंचंहि अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुद्वाणुपुद्धिं चरमाणे, गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव ठावत्थी नयरी, जेणेव कोट्टए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरुवं उग्गहं ओगिण्हइ, अ० २ ओगिण्हित्ता जंजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं पुद्वाणुपुद्धिं चरमाणे, जाव सुहंसुहेणं वेहरमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभइ चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुवं उग्गहं ओगिण्हति, अ० २ ओगिण्हित्ता संजमेणं, तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

३२. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य, विरसेहि य, अंतेहि य, पंतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइकंतेहि य, पमाणाइकंतेहि य, सीपहि य पाण-भोयणेहिं अन्नया कयाइं सरीरंगंसि विउले रोगातंके पाउअभूए, उज्जले, विउले, पगाढे, ककसे, कडुए, चंडे, दुक्खे, दुग्गे, तिद्धे, दुरहियासे । पित्तज्वरपरिगतसरीरे, दाहबुक्कंतिए या वि विहरइ । तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अग्निभूए समाणे समणे णिग्गंथे सद्दावेति, स० २ सद्दावित्ता एवं वयासी-तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! मम सेज्जासंथारणं संथरह । तए णं ते समाणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स पैतमट्टं विणएणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासंथारणं संथरंति । तए णं से जमाली अणगारे वलियतरं वेदणाए अग्निभूए समाणे दोच्चं पि समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावित्ता दोच्चं पि एवं वयासी-मम णं देवाणुप्पिया ! सेज्जासंथारणं णं किं कडे, कज्जइ ?<sup>१</sup>

परन्तु मौन रखा. ल्यार पछी ते जमालि अनगारे श्रमण भगवंत महावीरने वीजी वार, व्रीजी वार पण ए प्रमाणे कहुं के-हि भगवन् ! तमारी अनुमतिथी हुं पाचसो साधु साथे यावत् विहार करवाने इच्छुं हूं. पछी श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो वीजी वार, व्रीजी वार पण आदर न कर्यो, यावत् मौन रखा. ल्यारवाद जमालि अनगार श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे. वादीने-नमीने श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने बहुगाल नामे चैलथी नीकळे छे, नीकळीने पांचसो साधुओनी साथे वहारना देशोमां विहार करे छे.

३१. ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. \*वर्णन. त्यां कोष्ठक नामे चैल हतुं । वर्णन यावत् वनखंड मुथी जाणतुं. ते काले अने ते समये चंपा नामे नगरी हती, वर्णन. पूर्णभद्र चैल हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. हवे अन्य कोड दिवसे ते जमालि अनगार पाचसो साधुओना परिवारनी साथे अनुक्रमे विहार करता, एक गामथी वीजे गाम जता ज्या श्रावस्ती नामे नगरी छे, अने ज्यां कोष्ठक चैल छे त्या आवे छे. त्यां आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करीने समय अने तपवडे आत्माने भावित करता विहरे छे. ल्यारवाद अन्य कोई दिवसे श्रमण भगवान् महावीर अनुक्रमे विचरता यावत् सुखपूर्वक विहार करता ज्या चंपानगरी छे, अने ज्यां पूर्णभद्र चैल छे त्यां आवे छे, आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी समय अने तपवडे आत्माने भावित करता विचरे छे.

३२. हवे अन्य कोड दिवसे ते जमालि अनगारने रसरहित, विरस, अन्त, प्रान्त, रुक्ष ( लुखा ) तुच्छ, कालातिक्रात, ( मुख वरसनी काल बीती गया पछी ) प्रमाणातिक्रात ( प्रमाणथी वधारे के ओछा ) शीत पान-भोजनथी शरीरमा मोटो व्याधि पेदा ययो, ते व्याधि अत्यन्त दाह करनार, विपुल, सलत, कर्कश, कटुका, चंड, ( भयंकर ) दुःखरूप, कष्टसाध्य, तीव्र अने असह्य हतो, तेनु शरीर पित्तज्वरथी व्यास होवाथी ते दाहयुक्त हतो. हवे ते जमालि अनगार वेदनाथी पीडित थयेलो पोताना श्रमण निर्ग्रथोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कहुं के-हि देवानुप्रियो ! तमे मारे सुवा माटे संस्तारक ( शय्या ) पाथरो'. ल्यारवाद ते श्रमण निर्ग्रथो जमालि अनगारनी आ वातनो विनयपूर्वक स्वीकार करे छे, स्वीकारीने जमालि अनगारने सुवा माटे संस्तारक पाथरे छे ज्यारे ते जमालि अनगार अत्यत वेदनाथी व्याकुल थयो ल्यारे फरीथी श्रमण निर्ग्रथोने बोलाव्या अने बोलावीने फरीथी तेणे आ प्रमाणे कहुं के-हि देवानुप्रियो ! मारे माटे

श्रावस्ती नगरी.  
कोष्ठक चैल चंपा  
नगरी, पूर्णभद्रचैल-  
श्रावस्ती  
कोष्ठकचैल

१ कयालि घ । २ तुज्जे णं घ-ट । ३ अयमट्ट घ-ड । \* एवं वुत्ते समाणे समाणा निग्गंथा एवं वित्ति-भो सामी ! कीरइ' इत्यधिक.  
पाठः ग-घ ।

३१. \* सुओ उववाइअ चंपानगरीनु वर्णन. प. १-१.

† सुओ उववाइअ पूर्णभद्रचैलनु वर्णन. प. ४-२.

तते णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी—णो खलु देवाणुप्पिया णं सेज्जासंथारए कडे, कज्जए । तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारुवे अज्जत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—जं णं समणे भगवं महावीरे एवं आइअए, जाव एवं परुवेइ—एवं खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरीए, जाव निज्जरिज्जमाणे णिज्जिणे, तं णं मिच्छा; इमं च णं पच्चक्खमेव दीसए सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए; जमहा णं सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए तमहा चलमाणे वि अचलिए, जाव निज्जरिज्जमाणे वि अणिज्जिणे, एवं संपेहेइ, संपेहिता समणे णिग्गंथे सद्दावेइ, सम० २ सद्दाचित्ता एवं वयासी—जं णं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं आइअए, जाव परुवेइ—एवं खलु चलमाणे चलिए, तं चेव सधं जाव णिज्जरमाणे अणिज्जिणे । तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवं आइअएमाणस्स जाव परुवेमाणस्स अथे-गईया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तिरंति, रोयंति, अथेगईया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं नो सद्दहंति, नो पत्तिरंति, नो रोयंति । तथ णं जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तिरंति, रोयंति ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति; तथ णं जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एवं अट्ठं णो सद्दहंति, णो पत्तिरंति, णो रोयंति ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ, कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिन्त्ता पुद्दाणुपुट्ठि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुत्तभइ चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति; उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिमखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

३३. तए णं से जमाली अणगारे अघ्नया कयावि ताओ रोगायंकाओ विप्पमुके, हँट्टे जाए, अरोए वलियसरीरे, साव-थीओ नयरीओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिन्त्ता पुद्दाणुपुट्ठि चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभइ चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरस्सामंते टिआ समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं वद्धे अंतैवासी समणा णिग्गंथा

संस्तारक कर्णे छे के कराय छे ?' लार पछी ते श्रमण निर्भ्रन्योए जमालि अनगारने एम कहुं के—'देवानुप्रियने माटे शय्यान्संस्तारक कर्णे नथी, पण कराय छे'. लार पछी ते जमालि अनगारने आ आवा प्रकारनो संकल्प उत्पन्न थयो के—'श्रमण भगवंत महावीर जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, चालतुं होय ते चालतुं कहेवाय, उदीरातुं होय ते उदीरातुं कहेवाय, यावत् निर्जरातुं होय ते निर्जरातुं कहेवाय, ते मिय्या छे. कारण के आ प्रत्यक्ष देखाय छे के, शय्या संस्तारक करानो होय त्या सुधी ते करायो नथी, पयरातो होय त्या सुधी ते पयरायो नथी, जे कारणथी आ शय्या—संस्तारक करानो होय त्यां सुधी ते करायो नथी, पयरातो होय त्यां सुधी ते पयरायेयो नथी, ते कारणथी चालतुं होय त्या सुधी ते चलित नथी, पण अचलित छे; यावत् निर्जरातुं होय त्या सुधी ते निर्जरातुं नथी पण अनिर्जरातुं छे' ए प्रमाणे विचार करे छे. विचार करीने ते जमालि अनगार श्रमण निर्भ्रयोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कहुं—'हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवंत महावीर जे आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के—खरेखर ए प्रमाणे "चालतुं ते चलित कहेवाय"—इत्यादि, पूर्ववत् सर्व कहेतुं, यावत् निर्जरातुं होय ते निर्जरातुं नथी, पण अनिर्जरातुं छे.' प्यारे जमालि अनगार ए प्रमाणे कहेता हता, यावत् प्ररूपणा करता हता, ल्यारे केटलाएक श्रमण निर्भ्रन्यो ए वातने श्रद्धापूर्वक मानता हता, तेनी प्रतीति करता हता, रुचि करता हता, अने केटलाक श्रमण निर्भ्रन्यो ए वात मानता न होता, तथा तेनी प्रतीति अने रुचि करता न होता. तेमा जे श्रमण निर्भ्रयो ते जमालि अनगारना आ मन्तव्यनी श्रद्धा करता हता, प्रतीति करता हता अने रुचि करता हता तेओ ते जमालि अनगारने आश्रयी विहार करे छे. अने जे श्रमण निर्भ्रयो जमालि अनगारना ए मन्तव्यमा श्रद्धा करता न होता, प्रतीति करता न होता अने रुचि करता न होता तेओ जमालि अनगारनी पासेथी कोष्ठक चैल्य थकी वहार नीकळे छे, अने वहार नीकळीने अनुक्रमे विचरता, एक गामथी वीजे गाम विहाइ करता ज्यां चंपा नगरी छे, ज्या पूर्णभद्र चैल्य छे, अने ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे त्या आवे छे. आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करे छे, करीने वादे छे, नमे छे, अने वांदां—नमीने श्रमण भगवंत महावीरनी निश्राए विहार करे छे.

३३. लार पछी कोइ एक दिवसे ते जमालि अनगार पूर्वोक्त रोगना दुःखथी विमुक्त थयो, हृष्ट, रोगरहित अने वलवान् शरीर-वाळो थयो. अने श्रावस्ती नगरीथी अने कोष्ठक चैल्यथी वहार नीकळी अनुक्रमे विचरता ग्रामानुग्राम विहार करता ज्या चंपानगरी छे, ज्यां पूर्णभद्र चैल्य छे, अने ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे त्या आवे छे. आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी अत्यन्त दूर नहि तेम अत्यन्त पासे नहि, तेम उभा रहीने श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कहुं—'जेम देवानुप्रियना घणा शिष्यो श्रमण निर्भ्रन्यो वृद्धस्स

छउमत्या भवेत्ता छउमत्यावक्कमणेणं अवक्कंता, णो खलु अहं तहा छउमत्ये भवित्ता छउमत्यावक्कमणेणं अवक्कंते; अहं णं उप्पन्नानाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिवक्कमणेणं अवक्कंते ।

३४. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी-नो खलु जमाली ! केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा थंभंसि वा थूमंसि वा आवरिज्जइ वा णिवारिज्जइ वा; जदि णं तुमं जमाली ! उप्पन्नानाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिवक्कमणेणं अवक्कंते, तौ णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि-सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ! सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ? । तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संक्खि कंखिए जाव कलुससमावन्ने जाए या वि होत्या, णो संचायति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खं आइक्खित्तए, तुसिणीए संविट्ठइ ।

३५. 'जमालि'त्ति समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी-अत्थि णं जमाली ! ममं वहवे अंतेवासी णणा णिगंथा छउमत्या, जे णं पभू एयं वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव णं एयप्पगारं भासं भासित्तए, जहा तुमं । सासए लोए जमाली ! 'जं ण कदायि णासि, ण कैयाइ ण भवति, ण कैयाइ ण भविस्सइ; भुवि च, भवइ य, भवि-सइ य; धुवे, णितिए, सासए, अक्खए, अद्यए, अवट्ठिए णिच्चे । असासए लोए जमाली ! 'जं ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओस्सप्पिणी भवइ । सासए जीवे जमाली ! जं न कयायि णासि, जाव णिच्चे । असासए जीवे जमाली ! जं णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ।

३६. तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवतो महावीरस्स एवं आइक्खमाणस्स, जाव एवं परुवेमाणस्स एयं णं नो सइहति, णो पत्तियइ, णो रोएइ; एयमट्ठं असइहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे दोच्चं पि समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, दोच्चं पि आयाए अवक्कमित्ता वइहिं असम्भावुच्चावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च रं च तदुभयं च बुग्गाहेमाणे, बुप्पाएमाणे वइइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं

इने छन्नस्थ विहारथी विहरी रखा छे; पण हुं तेम छन्नस्थ विहारथी विहरतो नथी. हुं तो उत्पन्न थयेल ज्ञान अने दर्शन धारण करनारो हिंन्, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरु छुं.

३४. ल्यारपछी भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के-हि जमालि ! खरेखर ए प्रमाणे केवलिनुं ज्ञान के दर्शन गैतपी स्तंभथी के स्तूपथी आवृत्त थतुं नथी, तेम निवारित थतुं नथी. हे जमालि ! जो तुं उत्पन्न थयेल ज्ञान, दर्शनने धारण करनार थइन्, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरे छे तो आ वे प्रश्नो उत्तर आप. [प्र०] हे जमालि ! १ लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? हे जमालि ! २ जीव शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? ल्यारे भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने पूर्व प्रमाणे पूछ्युं ल्यारे ते कित्त अने काक्षित थयो, यावद् कलुपितपरिणामवाळो थयो. ल्यारे ते (जमालि) भगवंत गौतमना प्रश्नो काइ पण उत्तर आपवा समर्थ न थयो ल्यारे तेणे मौन धारण कर्युं.

भगवान् गौतमना जमालिने प्रश्नो

लोक शाश्वत छे के अशाश्वत ? जीव शाश्वत छे के अशाश्वत ? जनात्ति उत्तर आपवा असमर्थ थयो.

३५. पछी श्रमण भगवान् महावीरे 'हे जमालि !' एम कहीने ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के-हि जमालि ! मारे घणा श्रमण निर्रंथ शिष्यो छन्नस्थ छे, तेओ मारी पेठे आ प्रश्नो उत्तर आपवा समर्थ छे. पण जेम तुं कहे छे तेम 'हुं सर्वज्ञ अने जिन हुं' एवी भाषा तेओ बोलता नथी. हे जमालि ! लोक शाश्वत छे, कारण के 'लोक कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि लोक नथी' एम नथी, अने 'कदापि लोक नहि हशे' एम पण नथी. परन्तु लोक हतो, छे अने हशे. ते ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षत, अव्यय, अवस्थित थने नित्य छे. वळी हे जमालि ! लोक अशाश्वत पण छे, कारण के अवसर्पिणी थइने उत्सर्पिणी थाय छे. उत्सर्पिणी थइने अवसर्पिणी थाय छे. हे जमालि ! जीव शाश्वत छे, कारण के ते 'कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि नथी' एम नथी अने, 'कदापि नहि हशे' एम पण नथी, जीव यावद् नित्य छे. वळी हे जमालि ! जीव अशाश्वत पण छे, कारण के नैरयिक थइने तिर्यचयोनिक्क थाय छे, तिर्यच-योनिक्क थइने मनुष्य थाय छे, अने मनुष्य थइने देव थाय छे.

भगवान् महावीर-ना उत्तरो.

लोक शाश्वत छे

लोक अशाश्वत छे जीव शाश्वत छे जीव अशाश्वत छे

३६. ल्यारपछी ते जमालि अनगार आ प्रमाणे कहेता, यावद् ए प्रकारे प्ररूपणा करता श्रमण भगवान् महावीरनी आ वातनी प्रदा करतो नथी, प्रतीति करतो नथी, रुचि करतो नथी, अने आ वाचतनी अश्रद्धा करतो, अप्रतीति करतो अने अरुचि करतो पोते वीजी शर पण श्रमण भगवंत महावीर पासैथी नीकळे छे. नीकळीने घणा असद्-असत्य भावने प्रकट करवा वडे अने मिथ्यान्वना अभिनिवेश वडे पोताने, परने तथा वन्नेने भ्रान्त करतो अने मिथ्याज्ञानवाळा करतो घणा वरस सुची श्रमण पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिकस्त-

झुसेइ, झुसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, तीसं २ छेदेत्ता तस्सं द्वाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्टितीएसु देवकिच्चिसिएसु देवेसु देवकिच्चिसियत्ताए उववत्ते ।

३७. [प्र०] तए णं भगवं गोयमे जमालि अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एयं वयासी-एयं खलु देवानुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे, से णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववत्ते ? [उ०] गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एयं वयासी-एयं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं तदा मम एयं आइस्सवमाणस्स ४ एयं अट्ठं णो सदहइ ३, एयं अट्ठं असइहमाणे ३ दोच्चं पि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, दोच्चं २ अवक्कमित्ता वइहिं असव्भाबुब्भावणाहिं तं चेव जाव देवकिच्चिसियत्ताए उववत्ते ।

३८. [प्र०] कतिचित्ता णं भंते ! देवकिच्चिसिया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिचित्ता देवकिच्चिसिया पण्णत्ता, तं जहा-तिपलिओवमट्टिइया, तिसागरोवमट्टिइया, तेरससागरोवमट्टिइया ।

३९. [प्र०] कहिं णं भंते ! तिपलिओवमट्टिइया देवकिच्चिसिया परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पि जोइसियाणं, हिंदिं सोहम्मी-साणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्टितिया देवकिच्चिसिया परिवसंति ।

४०. [प्र०] कहिं णं भंते ! तिसागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पि सोहम्मी-साणाणं कप्पाणं, हिंदिं सर्णकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिसागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया परिवसंति ।

४१. [प्र०] कहिं णं भंते ! तेरससागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया देवा परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पि वंमलोस्स कप्पस्स हिंदिं लंतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया देवा परिवसंति ।

लेखनावडे आत्माने-शरीरने कृश करीने अनशनवडे ग्रीश भक्तोने पूरा करी ते पापस्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय मरण समये काल करीने लान्तक देवलोकने विषे तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवोमां किल्बिपिक देव पणे उत्पन्न थयो.

३७. पछी ते जमालि अनगारने कालगत थयेला जाणीने भगवान् गौतम ज्या श्रमण भगवान् महावीर छे त्या आवे छे. आवेने श्रमण भगवान् महावीरने वादे छे, नमे छे. वादी-नर्माने ते आ प्रमाणे बोल्या के-हे भगवन् ! ए प्रमाणे देवानुप्रिय एवा आपनो अतेवासी कुशिय जमालि नामे अनगार हतो, ते काळ समये काळ करीने क्या गयो-क्या उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतमादि ! ए प्रमाणे करीने श्रमण भगवंत महावीरे भगवान् गौतमने आ प्रमाणे करुं के-हे गौतम ! मारो अतेवासी कुशिय जमालि नामे अनगार हतो ते व्जारे हं ए प्रमाणे वहेता हनो, यावत् प्ररूपणा करतो हतो ल्यारे ते आ वाचतनी श्रद्धा करतो नहोतो, प्रतीति के रुचि करतो नहोतो. आ वाचतनी श्रद्धा, प्रतीति के रुचि न करतो फरीथी मारी पासेथी नीकळीने घणा असद्धूत-मिव्या भावोने प्रकट करवावडे-इत्यादि यावत् किल्बिपिकदेवपणे उत्पन्न थयो छे.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! किल्बिपिक देवो केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारना किल्बिपिक देवो कइया छे. ते आ प्रमाणे-त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा, त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा अने तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवो कये ठेकाणे रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्योत्पिकदेवोनी उपर अने सौधर्म अने ईशानदेवलोकनी नीचे त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवो रहे छे.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवो कयां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म अने ईशान देवलोकनी उपर तथा सनखुमार अने माहेन्द्र देवलोकनी नीचे त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवो रहे छे.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवो कया रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ब्रह्मलोकनी उपर अने वातक कल्पनी नीचे तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवो रहे छे.

४२. [प्र०] देवकिविसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिविसियत्ताए उववत्तारो भवन्ति ? [उ०] गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, संघपडिणीया; आयरिय-उवज्झायपडिणीया अयस-करा, अवन्नकरा, अकित्तिकरा, वह्हिं असम्भाउव्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेशेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा, वुष्पाएमाणा वह्हिं वासाइं सामन्नपरियागं पाउरंति, पाउणिन्ता तस्स द्वाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे कालकिच्चा अन्नयरेसु देवकिविसिएसु देवकिविसियत्ताए उववत्तारो भवन्ति; तं जहा-तिपलिभोवमट्टितिएसु वा, तिसागरोवमट्टितिएसु वा, तेरससागरोवमट्टितिएसु वा ।

४३. [प्र०] देवकिविसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिईक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता क्किं गच्छंति, क्किं उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! जाव चत्तारि पंच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति, वुज्झंति, जाव अंतं करंति; अत्येगइया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसारकंतारं अणुपरियट्टंति ।

४४. [प्र०] जमाली णं भंते ! अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे, तुच्छाहारे, अरसजीवी, विरसजीवी, जाव तुच्छजीवी, उवसंतजीवी, पसंतजीवी, विवित्तजीवी ? [उ०] हंता, गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, जाव विवित्तजीवी ।

४५. [प्र०] जति णं भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, जाव विवित्तजीवी कक्खा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्टितिएसु देवकिविसिएसु देवेसु देवकिविसियत्ताए उववत्ते ? [उ०] गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए; आयरिय-उवज्झायपडिणीया अयसकारए, अवन्नकारए, जाव

४२. [प्र०] हे भगवन् ! किल्बिपिक देवो क्या कर्मना निमित्ते किल्बिपिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवो आचार्यना प्रत्यनीक ( द्वेषी ), उपाध्यायना प्रत्यनीक, कुलप्रत्यनीक, गणप्रत्यनीक अने सधना प्रत्यनीक होय, तथा आचार्य अने उपाध्यायना अयश करनारा, अवर्णवाद करनारा अने अकीर्ति करनारा होय, तथा घणा असत्य अर्थने प्रगट करवाथी अने मिथ्या प्रदाप्रहथी पोताने, परने अने वन्नेने भ्रान्त करता, दुर्वोध करता, घणा वरस सुधी साधुपणाने पाळे, अने पाळीने ते अकार्य स्थानतुं आलोचन के प्रतिक्रमण करी सिवाय मरणसमये काल करीने कोइ पण किल्बिपिक देवोमा किल्बिपिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ते आ प्रमाणे—त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळामां, त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळामा, के तेर सागरोपमनी स्थितिवाळामा. [ उत्पन्न थाय. ]

क्या कर्मणी किल्बि-  
पिकदेव पणे  
उपजे ?

४३. [प्र०] हे भगवन् ! ते किल्बिपिक देवो आयुष्यनो क्षय यवाथी, भवनो क्षय यवाथी, स्थितिनो क्षय यवाथी, तरत ते देवलोकथी व्यवीने क्या जाय-क्या उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते किल्बिपिक देवो नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना चार के पांच भवो करी, एटलो संसार भ्रमण करीने ल्यारपणी सिद्ध थाय, बुद्ध थाय अने यावद् दुःखोनो नाश करे. अने केटलक किल्बिपिक देवो तो अनादि, अनंत अने दीर्घमार्गवाळा चारगति ससाराटवीमां भन्था करे.

किल्बिपिक देवो  
मरीने क्या उपजे ?

४४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जमालि नामे अनगार रसरहित आहार करतो, विरसाहार करतो, अंताहार करतो, प्राताहार करतो, रूक्षाहार करतो, तुच्छाहार करतो, अरसजीवी, विरसजीवी, यावत् तुच्छजीवी, उपशांतजीवनवाळो, प्रशांतजीवनवाळो, पवित्र अने एकान्त जीवनवाळो हतो ? [उ०] हे गौतम ! हा, जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी यावद् पवित्रजीवनवाळो हतो.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जो जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी अने यावद् पवित्र जीवनवाळो हतो तो हे भगवन् ! ते जमालि अनगार मरणसमये काल करीने खतक देवलोकमां तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिपिक देवोमा किल्बिपिक देवपणे केम उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! ते जमालि अनगार आचार्यनो अने उपाध्यायनो प्रत्यनीक हतो, तथा आचार्य अने उपाध्यायनो अयश कर-नार अवर्णवाद करनार हतो यावद् ते [ मिथ्या अभिनिवेश वडे पोताने, परने अने उभयने भ्रान्त करतो ] दुर्वोध करतो, यावत् घणा

१ इमे आय-क-ड । २ -देवत्ताए क-ड ।

४३. \* यद्यपि 'किल्बिपिक मरीने क्या उत्पन्न थाय?' ए प्रश्नना उत्तरमां नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना चार पांच भवप्रहण करीने मोक्षे जाय' एम कछु छे, ते सामान्य कथन छे. अन्यथा देव अने नारक मरीने देव के नारक न थाय, परन्तु बुरत तो मनुष्य के तिर्यंचमा उत्पन्न यहुने पडी नारक के देवमा उत्पन्न थाय. -टीका



बुप्पाएमाणे, जाव वहुइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेइं तीसं २ छेइंत्ता तस्स द्वाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किञ्चा लंतए कप्पे जाव उववन्ने ।

४६. [प्र०] जमाली णं भंते ! देवत्ताओ देवलोगाओ आउक्खपणं जाव कहिं उववज्जिहिति ? [उ०] गौयमा ! चत्ता पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्ठित्ता तथो पच्छा सिज्झिहिति, जाव अंतं कौहिति । भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

नवमसए तेत्तीसइमो उद्देशो समत्तो ।

वरस सुधी श्रमणपणाने पाळीने अर्धमासिक संलेखना वडे शरीरने कृश करीने त्रीश भक्तोने अनशन वडे पूरा करीने ते स्थान आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय काळसमये काळ करीने लांतक कल्पमां यावद् उत्पन्न थयो.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! ते जमालि नामे देव देवपणाथी, देवलोकथी पोताना आयुपनो क्षय थया वाद यावत् क्यां उत थये ? [उ०] हे गौतम ! तिर्यचयोनिक, मनुष्य, अने देवना चार पाच भवो करी-एट्ठो संसार भमी-ल्यार पछी ते सिद्ध थये, यावत् दुःखोनो नाश करशे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम कही भगवंत गौतम यावत् विहरे छे. ]

नवम शते तेत्तीसमो उद्देशक समाप्त.

## चोत्तीसइमो उद्देशो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी-पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ, नोपुरिसं हणइ ? [उ०] गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-पुरिसं पि हणइ, जाव नोपुरिसे वि हणइ ? [उ०] गोयमा ! तरस णं एवं भवइ-एवं खलु अहं एगं पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिसं हणमाणे अणेने जीवे हणइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-पुरिसं पि हणइ, जाव नोपुरिसे वि हणइ ।

२. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! आसं हणमाणे किं आसं हणइ, नोआसे वि हणइ ? [उ०] गोयमा ! आसं पि हणइ, नोआसे वि हणइ । [प्र०] से केणट्टेणं ? [उ०] अट्टो तहेव, एवं हरिथ, सीहं, वग्घं जाव चित्तलंगं । \*एए सधे इक्कमा ।

३. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे किं अन्नयरं तसं पाणं हणइ, नोअन्नतरे तसे पाणे हणइ ? [उ०] गोयमा ! अन्नयरं पि तसं पाणं हणइ, पोअन्नयरे वि तसे पाणे हणइ । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-अन्नयरं पि तसं पाणं, नोअन्नयरे वि तसे पाणे हणइ [उ०] गोयमा ! तरस णं एवं भवइ-एवं खलु अहं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे अणेने जीवे हणइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! तं चेव । एए सधे वि पक्कमा ।

## चोत्रीशमो उद्देशक.

१. [प्र०] ते काले-ते समये राजगृह नगरमा [ भगवान् गौतमे ] यावत् ए प्रमाणे पुच्छुं के-हे भगवन् ! कोइ पुरुप पुरुपनो घात करतो शुं पुरुपनो ज घात करे के नोपुरुपनो घात करे ? [उ०] हे गौतम ! पुरुपनो पण घात करे अने नोपुरुपनो ( पुरुप शिवाय बीजा जीवोनो ) पण घात करे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी करो छो के-पुरुपनो घात करे अने यावत् नोपुरुपनो पण घात करे ? [उ०] हे गौतम ! ते घात करनारना मनमा तो एम छे के-‘हु एक पुरुपने हणुं हूं’, पण ते एक पुरुपने हणतो बीजा अनेक जीवोने हणे छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं हूं छे के ते पुरुपने पण हणे अने यावत् नोपुरुपने पण हणे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! अन्नने हणतो कोइ पुरुप शुं अन्नने हणे के नोअन्नोने ( अन्न शिवाय बीजा जीवोने ) पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ते अन्नने पण हणे अने नोअन्नोने पण हणे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी करो छो ? [उ०] हे गौतम ! उत्तर पूर्ववत् जाणवो. ए प्रमाणे हस्ती, सिंह, वाघ तथा यावत् चिह्लक संवन्धे पण जाणवुं. ए वधानो एक सरसो पाठ जाणवो.

३. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ पुरुप कोइ एक त्रस जीवने हणतो शुं ते त्रस जीवने हणे के ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ते कोइ एक त्रस जीवने पण हणे, अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहां छो के ‘ते कोइ एक त्रस जीवने हणे अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे’ ? [उ०] हे गौतम ! ते हणनारना मनमा ए प्रमाणे होय छे के ‘हुं कोइ एक त्रस जीवने हणुं हूं’, पण ते कोइ एक त्रस जीवने हणतो ते शिवाय बीजा अनेक त्रस जीवोने हणे छे. माटे हे गौतम ! इत्थादि पूर्ववत् जाणवुं. ए वधाना एक सरस पाठ कहेना.

४. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! इस्सि हणमाणे किं इस्सि हणइ, नोइस्सि हणइ ? [उ०] गोयमा ! इस्सि पि हणइ नोइस्सि पि हणइ । [प्र०] से कणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जाव नोइस्सि पि हणइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं रालु अहं एमं इस्सि हणामि, से णं पमं इस्सि हणमाणे अणंते जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं निक्खेधो ।

५. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे, नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! निर्यमं ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे; एवं आसं, एवं जाव चिंत्तलगं, जाव अहवा चिंत्तलावेरेण य नोचिंत्तलावेरेहि य पुट्ठे ।

६. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! इस्सि हणमाणे किं इस्सिवेरेणं पुट्ठे, नोइस्सिवेरेणं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! निर्यमं ताव इस्सिवेरेण य नोइस्सिवेरेहि य पुट्ठे ।

७. [प्र०] पुंढविकाइए णं भंते ! पुंढविकाइयं चैव आणमइ वा, पाणमति वा, उरससति वा, नीससइ वा ? [उ०] हंता, गोयमा ! पुंढविकाइए पुंढविकाइअं चैव आणमति वा, जाव नीससति वा ।

८. [प्र०] पुंढविकाइए णं भंते ! आउक्काइयं आणमं(म)ति, जाव नीमसं(स)ति वा ? [उ०] हंता, गोयमा ! पुंढविकाइए चैव आउक्काइयं आणमं(म)ति, जाव नीमसं(स)ति वा; एवं तेउक्काइयं, वाउक्काइयं, एवं वणस्सइक्काइयं ।

९. [प्र०] आउक्काइए णं भंते ! पुंढविकाइयं आणमति वा, पाणमति वा ? [उ०] एवं चैव ।

४. [प्र०] हे भगवन् ! ऋषिने हणतो कोइ पुरुष शु ऋषिने एणे के ऋषि शिवाय वीजाने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ऋषिने हणे अने ऋषि शिवाय वीजाने पण हणे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के यावद् ऋषि शिवाय वीजाने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ते हणनारना मनमा एम होय छे के 'हं एक ऋषिने हणुं छुं', पण ते एक ऋषिने हणतो 'अनंत जीवोने हणे छे. ते हेतुथी एम कहेवाय छे—इत्यादि उपसंहार जाणवो.

५ [प्र०] हे भगवन् ! कोइ पुरुष वीजा पुरुषने हणतो शु पुरुषना वैरथी वन्धाय के नोपुरुषना ( पुरुष शिवाय वीजा जीवोना ) वैरथी वन्धाय ? [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य पुरुषना वैरथी वन्धाय, १ अथवा नोपुरुषना वैरथी वन्धाय, २ अथवा पुरुषना वैरथी अने नोपुरुषना वैरोथी वन्धाय. ए प्रमाणे अश्वसवन्धे अने यावत् चिह्नलक सवन्धे पण जाणवुं. यावत् अथवा चिह्नलकना वैरथी अने नोचिह्नलकना वैरोथी वन्धाय.

६. [प्र०] हे भगवन् ! ऋषिनो वध करनार पुरुष शुं ऋषिना वैरथी वन्धाय के नोऋषिना वैरथी वन्धाय ? [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य ऋषिना वैरथी अने नोऋषिना वैरोथी वन्धाय.

७. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हे गौतम ! हा, पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके.

८. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अप्कायिकने आणप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हा, गौतम ! पृथिवीकायिक अप्कायिकने आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे, यावत् मूके. ए प्रमाणे अग्निकाय, वायुकायिक अने वनस्पतिकायिकसंघे प्रश्नो करवा.

९. [प्र०] हे भगवन् ! अप्कायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] ए रीते पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

१ अणंता जीवा क-ग-उ । २ नियमा घ, नियमणं ङ । ३ चिह्नलगं ग-घ-उ । ४-५ चिह्नलगवे- ग-घ-उ । ६ नियमा घ । ७-काइया ग-घ-उ । ८-कायं घ । ९-संति पाणमंति वा उरससंति नीससंति वा ग-घ-उ । १०-संति वा ग-घ-उ । ११-संति वा क-ग-घ-उ ।

४. \* "ऋषिनो वध करनार कोइ पुरुष ऋषिने हणे अने ते शिवाय वीजा जीवोने पण हणे" ते सवन्धे टीकाकार आ प्रमाणे खुलासे करे छे— "ऋषिनो हणनार पुरुष ऋषिनो घात करता ते शिवाय वीजा अनन्त जीवोने घात करे, कारण के ऋषि जीवतो होय तो अनेक प्राणिओने प्रतिबोध करे, अने तेओ प्रतिबोध पानीने अनुक्रमे मोक्षे जाय, मुक्त जीवो तो अनन्त जीवोना अहिंसक छे, अने ते अनन्त जीवोनी अहिंसामा ऋषि कारण छे माटे ऋषिनो वध करनार तेनी अने वीजा अनन्त जीवोनी हिंसा करे छे."—टीका.

५. † पुरुषने हणनार पुरुषे पुरुषनो घात करेलेो होवाथी तेना पापथी ते अवश्य वन्धाय, पण ज्यारे ते तेम करता वीजा कोइ एक प्राणीनी हिंसा करे ल्यारे ते नोपुरुषवैरथी पण वन्धाय, अने अनेक प्राणिओनी हिंसा करे तो नोपुरुषवैरोथी वन्धाय.

६. ‡ ऋषिनो घात करनार पुरुष ऋषिना वैरथी अने नोऋषिना वैरोथी वन्धाय. आ पक्षमा आ एकज भंग जाणवो.

१०. [प्र०] आउक्काइयं णं भंते ! आउक्काइयं चैव आणमति वा ? [उ०] एवं चैव; एवं तेउ—वाउ—वणस्सइकाइयं ।

११. [प्र०] तेउक्काइयं णं भंते ! पुढविक्काइयं आणमति वा ? [उ०] एवं, जाव वणस्सइकाइयं णं भंते ! वणस्सइकाइयं चैव आणमति वा ? [उ०] तहेव ।

१२. [प्र०] पुढविक्काइयं णं भंते ! पुढविक्काइयं चैव आणममाणे वा, पाणममाणे वा, ऊससमाणे वा, णीससमाणे वा कइकिरिप ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिप, सिय चउकिरिप, सिय पंचकिरिप ।

१३. [प्र०] पुढविक्काइयं णं भंते ! आउक्काइयं आणममाणे वा ? [उ०] एवं चैव; एवं जाव वणस्सइकाइयं, एवं आउक्काइयण वि सङ्घे वि भाणियद्वा, एवं तेउक्काइयण वि, एवं वाउक्काइयण वि । जाव [प्र०] वणस्सइकाइयं णं भंते ! वणस्सइकाइयं चैव आणममाणे वा—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिप, सिय चउकिरिप, सिय पंचकिरिप ।

१४. [प्र०] वाउक्काइयं णं भंते ! रुवखस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिप ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिप, सिय चउकिरिप, सिय पंचकिरिप; एवं कंदं, एवं जाव [प्र०] वीयं पचालेमाणे वा पुच्छा ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिप, सिय चउकिरिप, सिय पंचकिरिप । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

नवमसए चोत्तीसइमो उद्देशो समत्तो ।

## नवमं सयं समत्तं ।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अष्कायिक जीव अष्कायिकने आनप्राणरूपे—श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] पूर्वं प्रमाणे जाणतुं. ए प्रमाणे तेजःकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय संबन्धे पण जाणतुं.

११. [प्र०] हे भगवन् ! अग्निकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे—श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? ए प्रमाणे यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे—श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] उत्तर पूर्ववत् जाणतुं.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे—श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कदाच\* त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पाचक्रियावाळो होय.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अष्कायिकने आनप्राणरूपे—श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो [केटली क्रियावाळो होय ?] [उ०] इत्यादि पूर्वं प्रमाणे जाणतुं. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक संबन्धे पण जाणतुं. तथा ए प्रमाणे अष्कायिकनी साथे सर्व पृथिवीकायादिकनो संबन्ध कहेवो. तेज प्रकारे तेज.कायिक अने वायुकायिकनी साथे सर्वनो संबन्ध कहेवो. यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे—श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो [अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ?] [उ०] हे गौतम ! ते कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पाचक्रियावाळो पण होय.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! वायुकायिक जीव वृक्षना मूलने कपावतो के पाडतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो होय, कदाच चारक्रियावाळो होय अने कदाच पांचक्रियावाळो पण होय. ए प्रमाणे यावत् कंद संबन्धे जाणतुं. ए प्रमाणे यावत् [प्र०] वीजने कपावतो—इत्यादि संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पाचक्रियावाळो होय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

नवमशते चोत्रीशमो उद्देशक समाप्त.

## नवम शतक समाप्त.

१२. \* पृथिवीकायिकादि जीव पृथिवीकायिकादिने श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करता ज्यारे तेने पीडा उत्पन्न न करे ल्यारे तेने कायिकी इत्यादि त्रण क्रिया होय, ज्यारे पीडा करे ल्यारे पारितापनिक्की सहित चार क्रिया, अने घात करे ल्यारे प्राणातिपातिनीयुक्त पाच क्रिया होय.—टीकाकार.

१४. † वृक्षना मूलने कपावतुं के पाडतुं ते नदीना काठा उपर रहेला वृक्षोना मूल पृथ्वीथी ढंकायेला न होय ल्यारे समवे छे.—टीकाकार

अष्कायिक अष्कायिकने ग्रहण करे अने मूके ?

तेज कायिक पृथिवीकायिकने ग्रहण करे अने मूके ?

पृथिवीकायिका दिकने क्रियाओ.

वायुकायिकने क्रिया.

## दसमं सयं

१. १ 'दिसि २ संवुडअणगारे ३ आयह्ठी ४ सामहत्थि ५ देवि ६ सभा ।

७-२८ उत्तरअंतरदीवा दसमम्मि सयंमि चउत्तीसा ॥

२. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-किमियं भंते ! 'पाँडीणा'ति पवुच्चइ ? [उ०] गोयमा ! जीवा चैव अजीवा चैव ।

३. [प्र०] किमियं भंते ! 'पाँडीणा'ति पवुच्चइ ? [उ०] गोयमा ! एवं चैव; एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उद्दा, एवं अहो वि ।

४. [प्र०] कति णं भंते ! दिसाओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! दस दिसाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-१ पुरत्थिमा, २ पुरत्थिमदाहिणा, ३ दाहिणा, ४ दाहिणपच्चत्थिमा, ५ पच्चन्थिमा, ६ पच्चत्थिमुत्तरा, ७ उत्तरा, ८ उत्तरपुरत्थिमा, ९ उद्दा, १० अहो ।

## दशम शतक.

१. [उद्देशक संप्रह-] १ दिशा, २ संवृत अनगार, ३ आत्मरुद्धि, ४ श्यामहस्ती, ५ देवी, ६ सभा अने ७-३४ उत्तर दिशाना अन्तरद्वीपो-ए सवन्धे दशमां गतकमां चोत्रीग उद्देशको छे. [ १ दिशा संबंधे प्रथम उद्देशक, २ संवृत (संवरयुक्त) अनगारादि विषे चीजो उद्देशक, ३ आत्म रुद्धि-पोतानी शक्ति-थी देवो देवावासोने उल्लंघन करे'-इत्यादि संबन्धे चीजो उद्देशक, ४ श्यामहस्ति नामे श्रीमहावीरना शिष्यना प्रश्न संबन्धे चोथो उद्देशक, ५ देवी-चमरादि इन्द्रनी अप्रमहिपी-संबन्धे पांचमो उद्देशक, ६ सभा-सुधर्मा समा-संबंधे छट्टो उद्देशक अने ७-३४ उत्तर दिशाना अठ्ठावीस अन्तरद्वीपो संबन्धी सातथी चोत्रीग उद्देशको छे. ]

## प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावत् आ प्रमाणे वोल्या-हे भगवन् ! आ पूर्वदिशा ए शुं कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ते \*जीवरूप अने अजीवरूप कहेवाय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! आ पश्चिम दिशा ए शुं कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे दक्षिण दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्वदिशा, अने अधोदिशा सवन्धे पण जाणवुं.

४. [प्र०] हे भगवन् ! केटली दिशाओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! दश दिशाओ कही छे; ते आ प्रमाणे-१ पूर्व, २ पूर्वदक्षिण (अग्नि कोण), ३ दक्षिण, ४ दक्षिणपश्चिम (नैर्ऋत कोण), ५ पश्चिम, ६ पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण), ७ उत्तर, ८ उत्तरपूर्व (ईशान कोण), ९ ऊर्ध्व अने १० अधो दिशा.

१ दिस सं-ग । २ चोत्तीसा क । ३ पाहूणात्ति ग । ४ पडीगात्ति घ । ५ दाहिणाप-ग ।

२. \* प्राची पेटे पूर्व दिशा जीवरूप छे, केमके ला एकन्द्रियादिक जीवो रहेला छे, अने पुद्गलास्तिकाय वगेरे अजीव पदार्थ रहेला छे माटे अजीवरूप पण छे.-टीका.

५. [प्र०] एयासि णं भंते ! ईसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पप्रत्ता ? [उ०] गोयमा ! दस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा-१ इंदा २ अग्गेयी ३ जमा य नेरुई चारुणी य वायघ्वा । सोमा ईसाणी य विमला य तमा य धोद्धवा ।

६. [प्र०] इंदा णं भंते ! दिसा किं १ जीवा, २ जीवदेसा, ३ जीवपपसा, ४ अजीवा, ५ अजीवदेसा, ६ अजीवप-देसा ? [उ०] गोयमा ! जीवा वि, तं चेव जाव अजीवपपसा वि । जे जीवा ते णियमा एगिंदिया, वेइंदिया, जाव पंचिंदिया, अण्णिंदिया । जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा, जाव अण्णिंदियदेसा । जे जीवपपसा ते एगिंदियपपसा वेइंदियपपसा, जाव अण्णिंदियपपसा । जे अजीवा ते डुविहा पप्रत्ता, तं जहा-रूविअजीवा य अरूविअजीवा य । जे रूविअजीवा ते चउड्विहा पप्रत्ता; तं जहा-पंधा, खंधेसा, खंधपपसा, परमाणुपोगला । जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पप्रत्ता, तं जहा-१ नोधम्म-त्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पपसा, ३ नोधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, ४ अधम्मत्थिकायस्स पपसा, ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, ६ आगासत्थिकायस्स पपसा, ७ अद्दासमए ।

७. [प्र०] अग्गेयी णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपपसा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! १ णोजीवा जीवदेसा वि, २ जीवपपसा वि; १ अजीवा वि, २ अजीवदेसा वि, ३ अजीवपपसा वि । जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा । १ अहवा एगिंदियदेसा य वेइंदियस्स देसे, २ अहवा एगिंदियदेसा य वेइंदियस्स देसा य, ३ अहवा एगिंदियदेसा य वेइंदियाण य देसा । १ अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स देसे अ । एवं चेव तियमंगो भाणियवो । एवं जाव अण्णिंदियाणं तियमंगो । जे जीवपपसा ते नियमा एगिंदियपपसा । अहवा एगिंदियपपसा य वेइंदियस्स पपसा, अहवा एगिंदियपपसा य

५. [प्र०] हे भगवन् ! ए दश दिशाओना केटळं नाम कक्षां छे ? [उ०] हे गौतम ! दश नाम कक्षां छे. ते आ प्रमाणे-१ \*ऐन्द्री (पूर्व), २ आग्नेयी (अग्नि कोण), ३ याम्या (दक्षिण), ४ नैर्ऋती (नैर्ऋतकोण), ५ वारुणी (पश्चिम), ६ वायव्या, ७ सोम्या (उत्तर), ८ ऐशानी (ईशान कोण), ९ विमला (उर्ध्व दिशा), अने १० तमा (अधो दिशा). ए दिशाना नामो अनुक्रमे जाणयां.

दिशाओना दश नाम.

६. [प्र०] हे भगवन् ! ऐन्द्री (पूर्व) दिशा शुं १ जीवरूप छे, २ जीवना देशरूप छे के जीवना प्रदेशरूप छे ? अथवा १ अजीवरूप छे, २ अजीवना देशरूप छे के ३ अजीवना प्रदेशरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे यावत् अजीवप्रदेशरूप पण छे. तेमां जे जीवो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय, यावत् पंचेन्द्रिय, तथा अनिन्द्रिय (सिद्धो) छे. जे जीवना देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, यावद् अनिन्द्रिय-मुक्तजीवना देशो छे. जे जीवप्रदेशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना प्रदेशो छे, वेइन्द्रियजीवना प्रदेशो छे, यावद् अनिन्द्रिय (मुक्त) जीवना प्रदेशो छे. बळी जे अजीवो छे ते वे प्रकारना कक्षा छे, ते आ प्रमाणे-एक रूपिअजीव अने अरूपिअजीव. तेमां जे रूपिअजीवो छे ते चार प्रकारना कक्षा छे, ते आ प्रमाणे-१ स्कंध, २ स्कव देश, ३ स्कंधप्रदेश अने ४ परमाणु पुद्गल. तथा जे अरूपिअजीवो छे ते सात प्रकारना कक्षा छे, ते आ प्रमाणे-१ नोअधर्मास्ति कायरूप धर्मास्ति कायनो देश, २ धर्मास्ति कायना प्रदेशो, ३ नोअधर्मास्ति कायरूप अधर्मास्ति कायनो देश, ४ अधर्मास्ति कायना प्रदेशो, ५ नो आकाशास्ति कायरूप आकाशास्ति कायनो देश, ६ आकाशास्ति कायना प्रदेशो, अने ७ अद्दासमय (का०).

ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे इत्यादि.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आग्नेयी दिशा (अग्नि कोण) शुं १ जीवरूप छे, २ जीवदेशरूप छे के ३ जीवप्रदेशरूप छे-इत्यादि प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ नोजीवरूप जीवना देश अने २ जीवना प्रदेशरूप छे, ३ अजीवरूप छे, ४ अजीवना देशरूप छे अने ५ अजीवना प्रदेशरूप पण छे. तेमा जे जीवना देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने इन्द्रियजीवनो देश छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने वेइन्द्रियना देशो छे, ३ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने वेइन्द्रियोना देशो छे. ४ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने श्रीन्द्रियनो देश छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे अहिं त्रण विकल्पो जाणवा. ए प्रमाणे यावद् अनिन्द्रिय सुधी त्रण विकल्पो-भागा कहेवा. तेमा जे जीवना प्रदेशो छे. ते अवश्य एकेन्द्रियोना प्रदेशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने वेइन्द्रियना प्रदेशो छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने वेइन्द्रियोना प्रदेशो छे. ए प्रमाणे सर्वत्र प्रथम भांगा सिवाय वे भांगा जाणवा, ए प्रमाणे यावद्

आग्नेयी दिशा.

१ दससं ग । २ धोघग्वा ग । ३-गिंदियस्स देसा क । ४-देसा, घ । ५-गिंदियस्स दे-घ ।

५. \* ऐन्द्र तेनो स्वामी छे, माटे ते ऐन्द्री दिशा कहेवाय छे, ए प्रमाणे अग्नि, यम, नैर्ऋति, परुण, वायु, सोम अने ईशान देतो स्वामी होरायी आग्नेयी गगेरे तेना गुणनिपुत्र नामो छे. प्रकाशयुक्त होवायी रूपे दिशाने विमला अने अन्धकारयुक्त होवायी अथो दिशाने तमा कहेवाय छे.—टीका.

६. † प्राचीदिशा अरंत धर्मास्ति कायरूप नधी, परन्तु तेना देश अने अर्धक्यात प्रदेशारु छे, माटे ते नोअधर्मास्ति कायरूप छे. ए प्रमाणे ते नोअधर्मास्ति कायरूप छे.—इत्यादि पण जाणवुं.

७. ‡ आग्नेयी दिशा जीवरूप नधी, कारणके दरेक विदिशाओनो व्यास एक प्रदेशरूप छे, अने दूध प्रदेशनो बीपनो समावेश पदो नधी, देसके तेनी अवगाहना अस्तरप्रदेशात्मक छे.—टीकाकार.

વેદવિદ્યાણ ય પપ્સા । एवं आशुविरहियो जाव आणिविद्याणं । जे अजीवा ते उविहा पप्रत्ता, तं जहा-रुविअजीवा य अरुविअजीवा य । जे रुविअजीवा ते चउद्विहा पप्रत्ता, तं जहा-संधा, जाव परमाणुपोगला । जे अरुविअजीवा ते सत्तविहा पप्रत्ता, तं जहा-१ नोधम्मन्थिकाप धम्मन्थिकायरस देसे, २ धम्मन्थिकायरस पपसा, एवं अहम्मन्थिकायरस वि, जाव ६ आगासत्थिकायरस पपसा, ७ अद्धासमप । विदिसासु नन्थि जीवा; देसे भंगो य होइ सव्वत्थ ।

૮. [પ્ર૦] જમા ણં મંતે ! દિસા કિં જીવા ? [૩૦] જહા ટ્વા તદેવ નિરવસેસા । નેર્ટ ય જહા અગ્ગેયી । વારુણી જહા ઇંદા । વાયદ્વા જહા અગ્ગેયી । સોમા જહા ઇંદા । ઈસાણી જહા અગ્ગેયી । વિમલાપ જીવા જહા અગ્ગેયીપ । અજીવા જહા ઇંદા । एवं तमाप वि, नवरं अरुवी छविहा, अद्धासमयो न भवति ।

૯. [પ્ર૦] કતિ ણં મંતે ! સરીરા પળ્ણત્તા ? [૩૦] ગોયમા ! પંચ સરીરા પળ્ણત્તા, તં જહા-૧ ઓરાલિપ, જાવ ૫ કમ્મપ ।

૧૦. [પ્ર૦] ઓરાલિયસરીરે ણં મંતે ! કતિવિદે પપ્પત્તે ? [૩૦] પવં ઓગાહણાસંટાણં નિરસેસં માણિયદ્ધં, જાવ, 'અર્ણ', વહુગંતિ । સેવં મંતે !, સેવં મંતે ! ત્તિ ।

### દસમસપ પદમો ઉદ્દેસો સમત્તો ।

અનિન્દ્રિય સુધી જાણવું. હવે જે અર્જીવો છે તે વે પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—રુપિઅર્જીવ અને વીજા અરુપિઅર્જીવ. જે રુપિઅર્જીવો છે તે ચાર પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—૧ સ્કંધો, યાવત્ ૪ પરમાણુપુદ્ગલો. તથા જે અરુપિઅર્જીવો છે તે સાત પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—૧ નોધર્માસ્તિકાયરુપ ધર્માસ્તિકાયનો વેગ, ૨ ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો; ૫ પ્રમાણે અધર્માસ્તિકાય સંવન્ધે પળ જાણવું; યાવત્ આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશો અને અદ્દાસમય. વિદિશાઓમા જીવો નથી, માટે મર્વત્ર વેગનિપયક માંગો જાણવો.

૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! યામ્યા ( દક્ષિણ ) દિશા શું જીવરુપ છે—ઇલ્યાદિ પૂર્વવત્ પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! જેમ ઇન્દ્રી દિશા સંવન્ધે કહ્યું ( મૃ. ૬ ) તેમ સર્વે અહીં જાણવું. જેમ આગ્રેયી દિશા મન્ધવે કહ્યું ( મૃ. ૭ ) તે પ્રમાણે નેર્ટતી દિશા માટે જાણવું. જેમ ઇન્દ્રી દિશા સંવન્ધે કહ્યું તેમ વારુણી ( પશ્ચિમ ) દિશા માટે જાણવું. વાયવ્યદિશાને આગ્રેયીની પેટે જાણવું. ઇન્દ્રીની પેટે સોમ્યા અને આગ્રેયીની પેટે ઇશાની દિશા જાણવી. તથા વિમલા—ઊર્ધ્વદિશા—માં જેમ આગ્રેયીમા જીવો કહ્યા તેમ જીવો અને ઇન્દ્રીમા અર્જીવો કહ્યા તેમ અર્જીવો જાણવા. ૫ પ્રમાણે તમા—અધોદિશા—ને વિષે પળ જાણવું, પરન્તુ વિષેય ૫ છે કે, તમા દિશામા અરુપિઅર્જીવો છ પ્રકારના છે, કારણ કે લાં અદ્દાસમય ( કાલ ) નથી.

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શરીરો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! શરીરો પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—૧ ઔદારિક, [૨ વૈક્રિય, ૩ આહારક, ૪ તૈજસ] યાવત્ ૫ કાર્મણ.

૧૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ઔદારિક શરીર કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! અહિં સર્વે 'અવગાહનાન્નસ્યાન' પદ અલ્પ-વહુલ સુધી કહેવું. હે મગવન્ ! તે ઇમજ છે, ૫ મગવન્ ! તે ઇમજ છે, [ ૫મ કહી યાવત્ મગવાન્ ગૌતમ વિહરે છે ]

### દશમશતે પ્રથમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

૧-સંટાણપદે નિ-પ ।

૮. \* સમયનો વ્યવહાર ગતિમાન્ સૂર્યના પ્રકાશ ઉપર અવલંબિત છે, તે ( ગતિમાન્ સૂર્યનો પ્રકાશ ) તમાને વિષે નથી માટે લાં અદ્દાસમય ( કાલ ) નથી વ્યયપિ વિમલાને વિષે પળ ગતિમાન્ સૂર્યનો પ્રકાશ નહિ હોવાથી સમયના વ્યવહારનો સંભવ નથી, તો પળ મેલપવેતના સ્ફટિકકાવને વિષે ગતિમાન્ સૂર્યના પ્રકાશનો સંસ્પન્ધ થાય છે, તેથી લાં સમયવ્યવહાર હોઈ શકે છે.—ટીકાકાર.

૧૦. † પ્રશ્ન પદ. ૨૧. પ. ૪૦૭. ૨-૪૩૩. ૨.

## बीओ उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एव वयासी-संबुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रुवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रुवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रुवाइं अवलोपमाणस्स, उइं रुवाइं आलोपमाणस्स, अहे रुवाणि आलोपमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! संबुडस्स णं अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा जाव तस्स णं णो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-जाव संपराइया किरिया कज्जति ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा० एवं जहा सत्तमसए पढमो-इसए जाव से णं उस्सुत्तमेव रीयति से तेणट्टेणं जाव से संपराइया किरिया कज्जइ ।

२. [प्र०] संबुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रुवाइं निज्झायमाणस्स जाव तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? पुच्छा [उ०] गोयमा ! संबुड० जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ ? [उ०] जहा सत्तमे सए सत्तमोइसए, जाव से णं अहासुत्तमेव रीयति से तेणट्टेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ।

३. [प्र०] कइविहा णं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सीया, उस्सिणा, सीतोस्सिणा; एवं जोणीपयं निरसेसं भाणियधं ।

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [ गौतम ] ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! वीचिमार्गमां-कपायभावमां-रहीने आगळ रहेला रूपोने जोता, पाछळना रूपोने देखता, पडखेना रूपोने अवलोकता, ऊंचेना रूपोने आलोकता अने नीचेना रूपोने अवलोकता सवृत (संवरयुक्त) अनगारने शु ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! वीचिमार्गमा (कपायभावमा) रहीने यावत् रूपोने जोता संवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के सवृत अनगारने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया होय तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे-इत्यादि \*सतम शतकना प्रथम उद्देशकमा कइया प्रमाणे यावत् 'ते संवृत अनगार सूत्र विरुद्ध वर्ते छे' ल्यासुची कहेवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! अवीचिमार्गमा-अकपायभावमा-रहीने आगळना रूपोने जोता, यावत् अवलोकता सवृत अनगारने शु ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! यावत् अकपायभावमां रहीने आगळ रूपोने जोता यावत् ते सवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे, पण सांपरायिकी क्रिया न लागे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के ते अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे पण सांपरायिकी क्रिया न लागे ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया छे तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे-इत्यादि जेम सतम शतकना प्रथम उद्देशकमां (उ० १. सू० १८) कहुं छे तेम अही पण यावत् 'ते अनगार सूत्रानुसारे वर्ते छे' ल्यासुची कहेवुं, हे गौतम ! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागती नथी.

३. [प्र०] हे भगवन् ! योनि केटल प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! योनि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे- †शीत, उप्पण अने शीतोप्पण. ए प्रमाणे अहीं समग्र †योनिपद कहेवुं.

कपायभावमां रहेला सवृत साधुने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया लागे !

अकपायभावमां रहेला साधुने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया लागे !  
ऐर्यापथिकी अथवा सांपरायिकी क्रियानो हेतु.

योनि.

१. \* भग. ख. ३. घ. ७ उ. १ घ. ५ सू. १८.

३. † प्रज्ञा. पद ९ प. २२४. २-२२७.



४. [प्र०] कइविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जइहा—सीया, उसिणा, सीओसिणा । एवं वेयणापयं निरवसेसं भाणियद्धं, जाव [प्र०] 'नेरइया णं भंते ! किं दुवखं वेयणं वेदंति, सुहं वेयणं वेदंति, अदुवखमसुहं वेयणं वेदंति ? [उ०] गोयमा ! दुवखं पि वेयणं वेदंति, सुहं पि वेदणं वेदंति, अदुवखमसुहं पि वेयणं वेदंति' ।

५. मासियं णं भंते ! भिवखुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठे काप, चियत्ते देहे—एवं मासिया भिवखुपडिमा निरवसेसा भाणियद्वा, जहा दसाहिं, जाव 'आराहिया भवइ' ।

६. भिवखू य अन्नयरं अकिच्चट्टाणं पडिसेवित्ता से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय—पडिकंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा, से णं तरस ठाणस्स आलोइय—पडिकंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । भिवखू य अन्नयरं अकिच्चट्टाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—'पच्छा वि णं अहं चरिमकालसमयंसि पयस्स ठाणस्स आलोपरसामि, जाव पडिकमिस्सामि, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय—पडिकंते जाव नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय—पडिकंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । भिवखू य अन्नयरं अकिच्चट्टाणं पडिसेवित्ता तरस णं एवं भवइ—'जइ ताव समणोवासगा वि कालं मासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, किमंग ! पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणंपि नो लभिस्सामि'त्ति कट्ठु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय—पडिकंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा; से णं तस्स ठाणस्स आलोइय—पडिकंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

### दसमसए वीओ उद्देशो समत्तो ।

४. [प्र०] हे भगवन् ! वेदना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! वेदना त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे— शीत, उष्ण अने शीतोष्ण. ए प्रमाणे अहीं संपूर्ण \*वेदनापद कहेहुं. यावत्—[प्र०] 'हे भगवन् ! नैरयिको शु दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक वेदना वेदे छे के सुख—दुःख शिवाय वेदना वेदे छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक वेदना वेदे छे अने सुखदुःख सिवाय पण वेदना वेदे छे.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे अनगारे मासिक भिक्षु प्रतिमाने खीकारेली छे, अने हंमेशां शरीरना ममत्वनो ल्याग कर्यो छे—देहनो ल्याग कर्यो छे—इत्यादि मासिक भिक्षु प्रतिमानो संपूर्ण विचार अहि दशाश्रुत रकंधमा वताव्या प्रमाणे यावत् [ वारमी प्रतिमा ] 'आराधी होय छे' ल्यांसुधी जाणवो.

६. जो ते भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थानने सेवीने अने ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन तथा प्रतिक्रमण कर्या विना काल करे तो तेने आराधना थती नथी, परन्तु जो ते ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करीने काल करे तो तेने आराधना याय छे. वळी कदाच कोइ भिक्षुए अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्तुं होय, पछी तेना मनमा एम विचार थाय के 'हुं मारा अतकालना समये ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन करीश, यावत् तपरूप प्रायश्चित्तनो खीकार करीश,' ल्यार पछी ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या विना मरण पामे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करी काल करे तो तेने आराधना याय छे. वळी कोइ भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन करी पछी मनमा एम विचारे के, 'जो श्रमणोपासको पण मरणसमये कर्णी करीने कोइ एक देवलोकमा देवपणे उत्पन्न थाय छे, तो शुं हुं अणपन्निकदेवपणुं पण नहि पामुं,' एम विचारिने ते अकृत्यस्थाननुं आलोच के प्रतिक्रमण कर्या विना जो काल करे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते अकृत्यस्थानने आलोची तथा प्रतिक्रमी पछी काल तो तेने आराधना थाय छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, [ एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे. ]

### दशमशते द्वितीय उद्देशक समाप्त.

१ जाव द-घ, जहा दसा जा-ड । २ चरम-घ । ३ पडिवजित्तामि घ । ४ अन्नपन्निय-ग-घ ।

५. \* प्रज्ञा० पद ३५ प ५५३. २—५५७.

## ततीओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-आइह्वीए णं भंते ! देवे जाव चत्तारि, पंच देवाचासंतराईं वीतिकंते, तेण परं परिह्वीए ? [उ०] हंता, गोयमा ! आयह्वीए णं तं चेव, एवं असुरकुमारे वि । नवरं असुरकुमारावासंतराईं, सेसं तं चेव । एवं एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एवं चाणमंतरे, जोइस-वेमाणिए, जाव तेण परं परिह्वीए ।
२. [प्र०] अप्पह्वीए णं भंते ! देवे से मह्हियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीइवपज्जा ? [उ०] णो इणट्टे समट्टे ।
३. [प्र०] समिह्वीए णं भंते ! देवे सेमह्वीयस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीइवपज्जा ? [उ०] णो इणट्टे समट्टे; पमत्तं पुणं वीइवपज्जा ।
४. [प्र०] से णं भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ? [उ०] गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहेत्ता पभू ।
५. [प्र०] से भंते ! किं पुं विमोहित्ता पच्छा वीइवपज्जा, पुं विमोहित्ता पच्छा विमोहेत्ता ? [उ०] गोयमा ! पुं विमोहित्ता पच्छा वीइवपज्जा, णो पुं विमोहित्ता पच्छा विमोहेत्ता ।

## तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा [ भगवान् गौतम ] यावत् आ प्रमाणे बोल्या के-हे भगवन् ! शुं देव पोतानी शक्तिवडे यावत् चार पाच देवावासोने उल्लंघन करे, अने ल्यारपछी वीजानी शक्तिवडे उल्लंघन करे ? [उ०] हा, गौतम ! पोतानी शक्तिवडे चार पाच देवावासोनुं उल्लंघन करे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे असुरकुमार संवन्धे पण जाणवुं, परन्तु ते आत्मशक्तियी असुरकुमारोना आवासोनुं उल्लंघन करे. बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए रीते आ अनुक्रमथी यावत् स्तनितकुमार, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक सुधी जाणवुं. 'तेओ यावत् चार पांच देवावासोनुं उल्लंघन करे अने ल्यारपछी आगळ परनी शक्तियी उल्लंघन करे' सासुधी जाणवुं.
२. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो देव महर्दिक-महा शक्तिवाळ्या देवनी वच्चे थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! हे अर्थ योग्य नथी. [ अर्यात् ते वचोवच थइने न जाय. ]
३. [प्र०] हे भगवन् ! समर्दिक-समानशक्तिवाळो-देव समानशक्तिवाळ्या देवनी वच्चे थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. पण जो ते प्रमत्त (असावधान) होय तो तेनी वच्चे थइने जाय.
४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, के विमोह पमाड्या सिवाय जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, पण विमोह पमाड्या सिवाय न जइ शके.
५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते देव पहेला विमोह पमाडीने पछी जाय के पहेलां जइने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय, पण पहेला जइने पछी विमोह न पमाडे.

राजगृह नगर  
देव आत्मशक्तिधी  
चार पांच देवावा  
सोने उल्लंघने ?

अल्पशक्ति देव मह  
र्दिक देवनी वचोवच  
थइने जाय ?

समर्दिक देव सम  
र्दिक देवनी वचोवच  
थइने जाय ?

मोह पमाडीने  
जइ शके के ते शि  
वाय जाय ?

मोह पमाडीने जइ  
के जइने मोह पमाडे ?

६. [प्र०] महिद्वीप णं भंते ! देवे अप्पहियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीइवण्जा ? [उ०] हंता, वीइवण्जा ।

७. [प्र०] 'से भंते ! किं चिमोहत्ता पभू, अचिमोहेत्ता पभू ? [उ०] गोयमा ! विमोहेत्ता वि पभू, अचिमोहेत्ता वि पभू ।

८. [प्र०] से भंते ! किं पुट्ठिं विमोहत्ता पच्छा वीइवण्जा, पुट्ठिं वीइवण्जा पच्छा विमोहेत्ता ? [उ०] गोयमा ! पुट्ठिं वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवण्जा, पुट्ठिं वा वीइवण्जा पच्छा विमोहेत्ता ।

९. [प्र०] अप्पहिय णं भंते ! असुरकुमारे महहियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्जेणं वीइवण्जा ? [उ०] णो इण्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेण वि तिन्नि आलावगा भाणियघ्ठा जहा ओहियणं देवेणं भणिया । एवं जाव थणियकुमारेणं, वाणमं-तर-जोइसिय-वेमाणियणं एवं चेव ।

१०. [प्र०] अप्पहिय णं भंते ! देवे महहियाए देवीए मज्झमज्जेणं वीइवण्जा ? [उ०] णो इण्ठे समट्ठे ।

११. [प्र०] समहिय णं भंते ! देवे समहियाए देवीए मज्झमज्जेणं० ? [उ०] एवं तहेव देवेण य देवीए य दंडओ भाणियघ्ठो, जाव वेमाणियाए ।

१२. [प्र०] अपहिया णं भंते ! देवी महहियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं० ? [उ०] एवं एत्तो वि ततियो दंडओ भाणियघ्ठो, जाव [प्र०] 'महहिया वेमाणिणी अप्पहियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्जेणं वीइवण्जा ? [उ०] हंता, वीइवण्जा' ।

१३. [प्र०] अप्पहिया णं भंते ! देवी महहियाए देवीए मज्झमज्जेणं वीइवण्जा ? [उ०] णो इण्ठे समट्ठे । एवं समहिया देवी समहियाए देवीए तहेव, महहिया वि देवी अप्पहियाए देवीए तहेव, एवं एक्के तिन्नि तिन्नि आलावगा

६. [प्र०] हे भगवन् ! महर्द्धिक-महाशक्तिवाळो देव अल्पशक्तिवाळो देवनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं ते अल्पशक्तिवाळो देवने विमोह पमाडीने जइ शके के विमोह पमाट्या विना जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! विमोह पमाडीने पण जइ शके अने विमोह पमाट्या विना पण जइ शके.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं पूर्वे विमोह पमाडीने पछी जाय के पूर्वे जाय अने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते महर्द्धिक देव पहेल्या विमोह पमाडीने पछी जाय, के पहेल्या जइने पछी विमोह पमाडे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो असुरकुमार महाशक्तिवाळो असुरकुमारनी वचोवच थइने जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नयी. ए प्रमाणे सामान्य देवनी पेठे असुरकुमारना पण \*त्रण आलापक कहेवा. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुची कहेहुं, तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोने पण ए प्रमाणे कहेहुं.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो देव महाशक्तिवाळी देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नयी; अर्थात् न जाय.

११. [प्र०] हे भगवन् ! समानशक्तिवाळो देव समानशक्तिवाळी देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पूर्वनी पेठे देवनी साथे देवीनी दंडक कहेवो, यावत् वैमानिक सुची जाणहुं.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळी देवी महाशक्तिवाळो देवनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! न जाय, ए प्रमाणे अहीं त्रीजो दंडक पूर्व प्रमाणे कहेवो, यावत्-[प्र०] 'हे भगवन् ! महाशक्तिवाळी वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाळो वैमानिक देवनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय.'

१३. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळी देवी मोटी शक्तिवाळी देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ नयी. ए प्रमाणे समानशक्तिवाळी देवीनी समानशक्तिवाळी देवी साथे, तथा महाशक्तिवाळी देवीनी अल्पशक्तिवाळी देवी साथे ते प्रमाणे आलापक कहेवा, अने ए रीते एक एकना त्रण त्रण आलापक कहेवा. यावत्-[प्र०] 'हे भगवन् ! मोटीशक्तिवाळी वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाळी

१ से णं भं-घ । २-कुमारे वि घ । ३-कुमारणं घ । ४ देवीण य ग-घ ।

९. \* १ अल्पर्द्धिक साथे महर्द्धिक, २ समर्द्धिक साथे समर्द्धिक, अने महर्द्धिक साथे अल्पर्द्धिकना-त्रण आलापक जाणवा.

માણિયતા, જાવ—[પ્ર૦] 'મહાદિયા ણં મંતે ! યેમાણિર્ણી અવ્યદિયાઈ યેમાણિર્ણીય મગવન્નુપર્મન્વાભિવ્યક્તિત ? [ઉ૦] જિંત, યેમાણિ-  
વ્યક્તિત । મ્મા મંતે ! કિં વિમોહિત્તા પમ્મુ ? તોય જાવ 'પુર્ણિ યા યોદ્યદ્દત્તા વ્યક્તિ વિમોહિત્તા' । ય્મ વ્યક્તિતિ વેદ્યમા ।

૧૪. [પ્ર૦] આન્વસ્મ ણં મંતે ! ધાયમાણન્નર કિં : 'સ્તુ સ્તુ'ચિ કરેતિ ? [ઉ૦] મોયમા ! આન્વસ્મ ણ ધાયમાણન્નર દિય-  
વન્નર ય જાવન્નર ય ધંતય પ્લય ણં કૈવલ્યય નામં યાઈ સ્વસુચ્છર, જેણં આન્વસ્મ ધાયમાણન્નર 'સ્તુ સ્તુ'ચિ કરેતિ ।

૧૫. [પ્ર૦] મદ મંતે ! આન્વદન્નમામો, મદન્નમામો, ચિદ્દિન્નમામો, નિમિદ્દિન્નમામો, તુયદ્દિન્નમામો, "આમંતર્ણી આણર્ણી  
વાયર્ણી તદ્દ પુચ્છર્ણી ય પપ્પવર્ણી । પચ્ચન્નર્ણી માન્સા માન્સા દ્ધચ્છાણુન્નોમા ય ॥ અણભિગ્ગહિયા માન્સા માન્સા ય અભિગ્ગહમિ  
મોલ્લપ્પા । સંસલયકરર્ણી માન્સા વોયદ્દમધોયદ્દા ધંચ" ॥ વજ્જવર્ણી ણં ઇસા માન્સા, ન ઇસા માન્સા મોન્સા ? ઠંતા, મોયમા !  
આન્વદન્નમામો, તેં વોય જાવ ન ઇસા માન્સા મોન્સા । સંચં મંતે !, સંચં મંતે ! ત્તિ ।

દસમે મળ તર્દઓ ઉર્દમો સમતો ।

ધૈમાનિક ધેર્વાની વચોચ્ચ યદને જાવ ' [ઉ૦] ઠા, મીતમ ! જાવ; યાન્ત્—[પ્ર૦] 'હે મગવન્ ! હું તે મહામહિમારી છેડી વિદે'—વગર્ણને  
જદ રાવે [ કે. વિમોહ પમાલ્યા વિના જદ થતે ! યર્ણી પદેલ્લં વિમોહ પમાલે, અને વર્ણી જાવ કે પદેલ્લ જાવ અને વર્ણી વિમોહ પમાલે !  
[ઉ૦] હે મીતમ ] પૂર્વ પ્રમાણે જાણતુ, યાન્ત્ 'હું જાવ અને વર્ણીથી વિમોહ પમાલે' રવાં સુર્ણી કરેતું. ૫ પ્રમાણે ૫ "ચાર રસકા કરેતમ.

જા ૩૦ ૧-૩૦  
કેડી ૩૫ ૩૬ ૩૭ ૪  
૫ ૬.

૧૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ય્યારે વોડો દોડતો હોય ત્યારે તે 'સ્તુ સ્તુ' શબ્દ વોમ કરે છે ! [ઉ૦] હે મીતમ ! ય્યારે વોડો દોડતો  
હોય છે ત્યારે દરમ અને યજ્ઞ ( લીન્દર )—ની વધે કર્વદ્દનામે વાયુ ઉત્પન્ન થાય છે, અને તેથી વોડો દોડતો હોય છે ત્યારે તે 'સ્તુ સ્તુ'  
શબ્દ કરે છે,

જા ૩૧ ૩૨ ૩૩ ૩૪  
૩૫ ૩૬ ૩૭ ૩૮  
૩૯ ૪૦ ૪૧ ૪૨  
૪૩ ૪૪ ૪૫ ૪૬  
૪૭ ૪૮ ૪૯ ૫૦  
૫૧ ૫૨ ૫૩ ૫૪  
૫૫ ૫૬ ૫૭ ૫૮  
૫૯ ૬૦ ૬૧ ૬૨  
૬૩ ૬૪ ૬૫ ૬૬  
૬૭ ૬૮ ૬૯ ૭૦  
૭૧ ૭૨ ૭૩ ૭૪  
૭૫ ૭૬ ૭૭ ૭૮  
૭૯ ૮૦ ૮૧ ૮૨  
૮૩ ૮૪ ૮૫ ૮૬  
૮૭ ૮૮ ૮૯ ૯૦  
૯૧ ૯૨ ૯૩ ૯૪  
૯૫ ૯૬ ૯૭ ૯૮  
૯૯ ૧૦૦

૧૫. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! 'અમે આધય કરીશું, યચન કરીશું, ઉમા ર્ણીશું, યેર્ણીશું, ( વયર્ણી ) અગ્ગેદ્દશું—હ્લાદિ વગ્ગ \*  
"૧ આમંવર્ણી, ૨ આણર્ણી, ૩ વાચર્ણી, ૪ પ્રચ્છર્ણી, ૫ પ્રગ્ગવર્ણી, ૬ પ્રત્તાવર્ણી, ૭ દન્ડાણુન્નોમા, ૮ અભિગ્ગહિયા, ૯ અભિગ્ગહિયા, ૧૦  
સંસલયકરર્ણી, ૧૧ વ્યાજ્ઞા, અને ૧૨ અવ્યાજ્ઞા ભાગ છે." તેમાંની વા પ્રગ્ગવર્ણી ભાગ કરેતમ ! અને ૫ નામ મુદ્ધા ( વચ્છર ) ન વર્ણે-  
વાય ! [ઉ૦] હે મીતમ ! 'આધય કરીશું'—હ્લાદિ માય પૂર્વેવત્ કરેતમ, પણ મુદ્ધા ભાગ ન કરેતમ. હે મગવન્ ! તે વ્ચ્છર ણે, હે  
મગવન્ ! તે વ્ચ્છર છે. [ ૫મ વર્ણી મગવન્ મીતમ યાન્ત્ વિદે છે. ]

દશમશને તૃતીય ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

## चतुर्थ उद्देशक.

१. तेणं कालेणं, तेणं समएणं वाणियग्गामे नयरे होत्या, वण्णओ । दूतिपलासए चेश्प । सामी समोसटे । जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं, नेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठं अंतेवासी इंदुभूर्इ नामं अणगारे, जाव उहुंजाणू जाव विहरति । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नामं अणगारे पगइम-  
इय, जहा रोहे, जाव उहुंजाणू जाव विहरइ । तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसटे जाव उट्टाप उट्टेइ, उट्टित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तियखुत्तो जाव पज्जवासमाणे षवं वयासी ।

२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा ? [उ०] हंता, अत्थि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एयं बुच्चइ—‘चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा’ ? [उ०] तायत्तीसगा देवा एयं यल्लु सामहत्थी—तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंयुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नामं नयरी होत्या । वन्नओ । तय णं कायं-  
दीए नयरीए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति, अट्ठा, जाव अपरिभूता अभिगयजीवाजीवा, उवल्लपुण्ण-  
पावा, वन्नओ, जाव विहरंति । तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुंविं उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा, संवि-  
ग्गविहारी मवित्ता, तओ पच्छा पासत्था, पासत्थविहारी, ओसत्ता, ओसत्तविहारी, कुसीला, कुसीलविहारी, अट्ठाच्छंदी,  
अट्ठाच्छंदविहारी च्हइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति । पाउणिच्चा अट्ठमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसंति, अत्ताणं

## चतुर्थ उद्देशक.

१. ते काले—ते समये वाणियग्राम नामे नगर हत्तुं. वर्णन. त्या दूतिपलाज नामे चैल्य हत्तुं. त्या भगवान् महावीर स्वामी समोसर्पा.  
परिपद् धर्मोपदेश श्रवण करीने पाछी गइ. ते काले—ते समये श्रमण भगवंत महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामे अनगार यावद् ऊर्ध्व-  
जानु (जेना टीचण उभा छे एवा) यावद् विहरे छे. ते काले—ते समये श्रमण भगवान् महावीरना शिष्य श्यामहस्ती नामे अनगार हता.  
जे रौह नामे अनगारनी पेटे भद्रप्रकृतिना यावद् ऊर्ध्वजानु विहरता हता. त्यार पछी श्रद्धावाळा ते श्यामहस्ती अनगार यावत् उभा वइने  
ज्यां भगवान् गौतम छे त्यां आवे छे, आवीने भगवान् गौतमने त्रणवार प्रदक्षिणा करी, वंदी, नमी अने पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इन्द्र चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हा, चमरेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप ज्ञा हेतुयी कहो छो के असुरकुमारना इन्द्र चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे श्यामहस्ती ! ते त्रायस्त्रिंशक देवो जे संवन्ध आ प्रमाणे छे—ते काले—ते समये आ जंबूद्वीपमा, भारतवर्षमा काकंदी नामे नगरी हती, वर्णन. ते काकंदी नगरीमा परस्स सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासक गृहपतिओ रहेता हता, जेओ धनिक, यावत् अपरिभूत (जेने परामव न यइ जके एवा समर्थ हता, जीवाजीवने जाणनारा, अने पुण्य पापना ज्ञाता तेओ यावद् विहरे छे. त्यारपछी ते परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश . . . गोपासक

असेत्ता तीसं भक्ताइं अणसणाए छेदंति, छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय—पडिकंता कालमासे कालं किञ्चा चमरस्स असुर-  
रिंदस्स असुरकुमाररञ्चो तायत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना ।

३. [प्र०] जप्पभिइं च णं भंते ! ते कायंदगा तायत्तीसं सहाया गाहावईं समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुर-  
कुमाररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना तप्पभिइं च णं भंते ! एवं बुच्चइ—‘चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररञ्चो तायत्तीसगा  
देवा ? तए णं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं बुत्ते समाणे संकिए, कंखिए, वित्तिगिच्छिए उट्टाए उट्टेइ । उट्टाए  
उट्टित्ता सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ । तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं  
महावीरं वंदइ, नमंसइ । वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयाली—

४. [प्र०] अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररञ्चो तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] हंता, अत्थि । से  
केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—एवं तं चेव सव्वं भाणियच्चं, जाव ‘तप्पभिइं च णं एवं बुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो  
तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] णो इणट्टे समट्टे, गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररञ्चो तायत्तीसगाणं देवाणं  
सासए नामधेज्जे पण्णत्ते; जं न कयाइं नासी, न कयाइ न भवइ, ण कयाइ ण भविस्सई, जाव णिच्चे अट्ठोच्छित्तिनयट्टयाए,  
अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति ।

५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरञ्चो तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] हंता, अत्थि ।  
[प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘वलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] एवं खल्लु गोयमा !  
णं कालेणं, तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विभेले णामं सन्निवेसे होत्था । वच्चओ । तत्थ णं विभेले सन्निवेसे  
तहा चमरस्स जाव उववन्ना । [प्र०] जप्पभिइं च णं भंते ! विभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावईं समणोवासगा वलिस्स  
वइरोयणिंदस्स सेसं तं चेव जाव निच्चे अट्ठोच्छित्तिणयट्टयाए, अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति ।

गृहपतिओ पूर्वे उग्र, उग्रविहारी ( उग्रचर्यावाळा ) \* संविग्र अने सविग्रविहारी हता, पण पाळ्ळथी पासत्था, पासत्थविहारी ( पास-  
त्थानी चर्यावाळा ) अवसन्न, अवसन्नविहारी, कुशील, कुशीलविहारी, यथाछंद, अने यथाछंदविहारी थईने तेओ घणा वरससुवी श्रमणो-  
पासकना पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिक सखेलनावळे आत्माने सेवीने त्रीश भक्तीने अनशनपणे व्यतीत करीने ते प्रमादस्थानहुं  
आलोचन अने प्रतिक्रमण कर्या विना काल समये काल करी तेओ असुरेंद्र, असुरकुमार राजा चमरना त्रायखिंशकदेवपणे उत्पन्न थया.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारथी मांडीने ते काकंदीना रहेनारा अने परस्पर सहाय करनारा, तेत्रीश श्रमणोपासको असुरेंद्र, असुर-  
ारराजा चमरना त्रायखिंशकदेवपणे उत्पन्न थया त्यारथी एम कहेवाय छे के असुरेंद्र, असुरकुमारराजा चमरने त्रायखिंशक देवो छे ?  
भर्यात् ते पूर्वे त्रायखिंश देवो न होता ? ) ज्यारे ते श्यामहस्ती अनगारे भगवंत गौतमने ए प्रमाणे कहुं, त्यारे भगवान् गौतम शंकिंत,  
क्षित अने अत्यन्त संदिग्ध थया, अने तेओ उभा थईने ते श्यामहस्ती अनगारानी साथे ज्यां श्रमण भगवान् महावीर हता त्या आवे छे  
। आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वादी अने नमीने आ प्रमाणे वोल्या—

४. [प्र०] हे भगवन् ! असुरेंद्र, असुरकुमारना राजा चमरने त्रायखिंशक देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् !  
प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के ते चमरने त्रायखिंशक देवो छे ?—इत्यादि पूर्वे कहेलो त्रायखिंशक देवोनो सर्व संबन्ध कहेवो, यावत्  
कदीना रहेनारा श्रमणोपासको त्रायखिंशकदेवपणे उत्पन्न थया छे त्यारथी शुं एम कहेवाय छे के चमरने त्रायखिंशक देवो छे ? ( ते पूर्वे  
नहोता ? ) [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ योग्य नथी, पण असुरेंद्र असुरकुमारना राजा चमरना त्रायखिंशक देवोना नामो शाश्वत कव्वा  
जेथी तेओ कदी न हता एम नथी, कदी न हशे एम नथी, कदी नथी एम पण नथी. यावत् [ तेओ नित्य छे, अव्युच्छित्तिनय-  
द्रव्यार्थिकनय—) नी अपेक्षाए अन्य च्ये छे अने अन्य उत्पन्न थाय छे. [ पण तेओनो विच्छेद थतो नथी. ]

५. [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेन्द्र, वैरोचनराजा वलिने त्रायखिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए  
ते आप शा हेतुथी कहो छो के वैरोचनेन्द्र वलिने त्रायखिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! वलिना त्रायखिंशक देवोनो संबन्ध आ  
णे छे—ते काले—ते समये जंबुद्दीपना भारतवर्षमा विमेल नामे संनिवेश ( कत्त्वो ) हतो. वर्णन ते विमेल सन्निवेशमा परस्पर सहाय करनारा  
त्रीश श्रमणोपासको रहेता हता. इत्यादि जेम चमरेन्द्रना संबन्धे कहुं तेम अहां पण जाणवुं. यावत् तेओ त्रायखिंशकदेवपणे उत्पन्न थया.  
त्यारथी मांडीने ते विमेल संनिवेशना परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको वैरोचनेन्द्र वलिना त्रायखिंशकदेवपणे उत्पन्न  
था—इत्यादि पूर्वोक्त सर्व हकीकत यावत् ‘तेओ नित्य छे, अव्युच्छित्तिनयनी अपेक्षाए अन्य च्ये छे अन्य उत्पन्न थाय छे’ त्यासुवी जाणवी.

२. \* सविग्र-मोक्ष मेळववा तत्पर थयेला, अथवा ससारथी भयभीत थयेला, सविग्रविहारी-मोक्षने अनुकूल चर्यावाळा.

† ज्ञानादिथी बाळ ते पासत्था, हमेशा पासत्थाना आचारवाळा ते पासत्थविहारी. अवसन्न-थाकी गयेला, आळसथी सम्यक् अनुष्ठानने बरोबर नहि  
रनारा, अर्थात् जन्मथी मांडीने सिथीलचारी. कुशील-ज्ञानादि आचारनी विराधना करनारा, हमेशा ज्ञानादिआचारना विराधक ते कुशीलविहारी. यथाछन्द-  
गमने परतत्र नहि होवथी खच्छन्दी, अने हमेशा खच्छन्दी ते यथाछन्दविहारी.—टीका.

वलीन्द्रने त्रायखिं-  
शक देवो.  
हेतु

६. [प्र०] अतिय णं भंते ! धरणस्स णागकुमारिंदस्स णागकुमारण्णो नायत्तीमगा देवा २ ? [उ०] हंता अतिय । [प्र०] से केणट्टेणं जाव तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] गोयमा । धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमारण्णो नायत्तीसगाणं देवाणं साराण नामधेजे पण्णत्ते, जं न कयाई नासी, जाव अत्ते चयंति, अत्ते उवचजंति । एवं भूयाणंदस्स वि, एवं जाव महाघोमस्स ।

७. [प्र०] अतिय णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स, देवरत्तो पुच्छ । [उ०] हंता अतिय । [प्र०] से केणट्टेणं जाव नायत्ती-सगा देवा २ ? [उ०] एवं गल्लु गोयमा । तेणं कालेणं, तेणं समण्णं इहेव जंयुईपे ईपे भारदे वासे पलासण नामं सधियेमे होत्था । वधयो । तन्ध णं पलासण सधियेमे नायत्तीमं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरंति । तण णं ते नायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुंदि पि पच्छा वि उग्गा, उग्गविहारी, संविग्गा, संविग्गविहारी वई चासाई समणोवासनापरियागं पाउणिच्चा मासियाण संलेहणाण अच्चाणं ब्रूसंति, भ्रुग्गिच्चा म्मट्टं भत्ताई अणसणाप छेदंति, छेदिच्चा आलोश्य-पडिकंता, समाधिपत्ता फालमासे फालं किच्चा जाव उववत्ता । जप्पमिदं च णं भंते ! पालासिगा नायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा, सेसं जहा चमरस्स जाव अत्ते उवचजंति ।

८. [प्र०] अतिय णं भंते ! ईसाणस्स ० ? [उ०] एवं जहा सक्कस्स, नवरं चंपाण णयरीण जाव उववत्ता । जप्पमिदं च णं भंते ! चंपिच्चा नायत्तीसं सहाया, सेसं तं चेष, जाव अत्ते उवचजंति ।

९. [प्र०] अतिय णं भंते ! सणकुमारस्स देविंदस्स देवरत्तो पुच्छ । [उ०] हंता अतिय । [प्र०] से केणट्टेणं ? [उ०] जहा धरणस्स तदेव, एवं जाव पाणयस्स, एवं अद्युयस्स, जाव अत्ते उवचजंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! च्चि ।

### दसमसण चउत्यो उद्देशो समत्तो ।

६. [प्र०] हे भगवन् ! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के धरणेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणना त्रायस्त्रिंशक देवोना नामो शायत कया छे, जेथी तेओ कदापि न हत्ता एम नथी, कदापि नथी एम नथी, अने कदापि न हजे एम पण नथी. यावत् अन्य च्ये छे अने अन्य उपजे छे. ए प्रमाणे भूतानंद अने यावत् महाघोष इन्द्रना त्रायस्त्रिंशक देवो नद्वय पण जाणवुं.

७. [प्र०] हे भगवन् ! देवेंद्र देवराज शक्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हा गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप श हेतुथी कहो छो के देवेंद्र देवराज शक्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! शक्रना त्रायस्त्रिंशक देवोना सवन्ध आ प्रमाणे छे—ते काले—ते समये आ जंबूद्वीपना भारतवर्षमां पलाशक नामे संनिवेश हत्तो. वर्णन. ते पलाशक नामे संनिवेशमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासको रहेता हत्ता—इत्यादि जेम चमर संवन्धे कहुं ते प्रमाणे यावत् तेओ विचरे छे. ल्यारपल्ली परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपति श्रमणोपासको पहेलां अने पछी उग्र, उग्रविहारी, सनिग्र अने संविग्रविहारी यइने घणा वर्ष सुधी श्रमणोपासकरुपर्यायने पाडीने मासिन संलेखनावडे आत्माने सेवे छे, सेवीने साठ भत्तो अनशन वडे व्यतीत करीने आलोचन, प्रतिक्रमण करीने समाधिने प्राप्त थाय छे, अने मरणसमये काळ करी यावत् त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. प्यारथी आरंभाने पलाशक संनिवेशना निवासी परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको शक्रना त्रायस्त्रिंशकपणे उत्पन्न थया इत्यादि सर्वं वृत्तान्त चमरेन्द्रना प्रमाणे यावत् 'अन्य छे च्ये छे अ' अन्य उत्पन्न थाय छे' ल्यासुधी जाणवो.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ईशान इंद्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] शक्रनी पेठे ईशानेन्द्रने पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के गृहपतिओ श्रमणोपासको पलाशक संनिवेशने वडले चंपानगरीमां उत्पन्न थयेलां छे. 'प्यारथी चंपाना निवासी त्रायस्त्रिंशकपणे उत्पन्न इत्यादि पूर्वोक्त सर्वं वृत्तान्त यावत् 'अन्य उपजे छे' ल्यासुधी जाणवो.

९. [प्र०] हे भगवन् ! देवोना राजा देवेंद्र सनकुमारने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के सनकुमार देवेंद्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम धरणेन्द्र सवन्धे कहुं ते प्रमाणे जाणवुं, ए रीते यावत् प्राणतथी मांडीने अच्युतपर्यन्त यावत् 'बीजा उत्पन्न थाय छे' ल्यासुधी कहेवु. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे एमज ते एमज छे. [ एम कही भगवान् गौतम विहरे छे. ]

## पंचमओ उद्देशो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे । गुणसिलए चेइए । जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं, गं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स वहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना, कुलसंपन्ना, जहा अट्टमे सए सत्तमुद्दे-ए जाव विहरंति । तए णं ते थेरा भगवंतो जायसङ्गा, जायसंसया, जहा गोयमसामी, जाव पज्जुवासमाणा एवं वयासी—

२. [प्र०] चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररओ कति अगमहिंसीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! पंच अगमहिंसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ काली, २ रायी, ३ रयणी, ४ विज्जु, ५ मेहा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ट-ट्ट देवीसहस परिवारो पन्नत्तो ।

३. [प्र०] पभू णं भंते ! ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं अट्ट-ट्ट देवीसहस्साइं परिवारं विउच्चित्तए ? [उ०] एवामेव सपु-एवरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा, सेत्तं तुडिप ।

४. [प्र०] पभू णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारया चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहा-एंसि तुडिपणं सद्धिं दिवाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? [उ०] णो इणट्टे समट्टे । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-ओ पभू चमरे असुरिंदे चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए ? [उ०] अज्जो ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररओ चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुगएसु वहुओ जिणसकहाओ

## पंचम उद्देशक.

१. ते काले—ते समये राजगृह नामे नगर हत्तुं, अने त्या गुणसिल नामे चैल हत्तुं. [श्रमण भगवान् महावीर समोसर्या.] यावत् नूमा [धर्मश्रवण करीने] पाछी गइ. ते काले—ते समये श्रमण भगवान् महावीरना घणा शिष्यो पूज्य स्थविरो जातिसंपन्न—इत्यादि जेम आठमा शतकना सातमा \*उद्देशकमां कहुं छे तेम यावत् विहरे छे. स्यार पछी ते स्थविर भगवंतो जाणवानी श्रद्धावाळा यावत् सगयवाळा ईने गौतमखामीनी पेटे पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या.

राजगृह नगर गुण-शीलचैल.

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरने केटली अग्रमहिपीओ (पट्टराणीओ) कही छे ? [उ०] हे आर्यो ! चमरने पाच पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—काली रायी, रजनी, विद्युत् अने मेधा. तेमानी एक एक देवीने आठ आठ हजार देवी-परिवार कहाओ छे.

चमरेन्द्रने अग्रमहि-पीओ.

३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते एक एक देवी आठ आठ हजार देवीओना परिवारने विकुर्ववा समर्थ छे ? [उ०] हे आर्यो ! हा, ए पूर्वीपर वधी मळीने [पाच पट्टराणीओनो परिवार] चालीश हजार देवीओ छे अने ते त्रुटिक (वर्ग) कहेवाय छे.

अग्रमहिपीओनो परिवार

४. [प्र०] हे भगवन् ! असुरेन्द्र अने असुरकुमारो नो राजा चमर पोतानी चमरचंचा नामनी राजधानीमां सुधर्मा सभामां चमर नामे अर्थासनामा वेसी ते त्रुटिक (छीओना परिवार) साथे भोगववा लायक दिव्यभोगोने भोगववाने समर्थ छे ? [उ०] हे आर्यो ! ए अर्थ गेय नयी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कही छे के चमरचंचा राजधानीमा ते असुरेन्द्र अने असुरकुमारो राजा चमर दिव्य भोगोने भोगववा समर्थ नयी ? [उ०] हे आर्यो ! असुरेन्द्र अने असुरकुमारना राजा चमरनी चमरचंचा नामनी राजधानीमा सुधर्मा

चमरेन्द्र पोतानी सभामां देवीओ माये भोगो भोगववा म-मने छे ? हेछु.



सन्निविश्वत्ताथो चिद्वृत्ति; जाथो णं चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररत्तो अत्तेसिं च बहूणं असुरकुमारणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाथो, वंदणिज्जाथो, नमंसणिज्जाथो, पूयणिज्जाथो, सक्कारणिज्जाथो, सम्माणणिज्जाथो, कल्लणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासणिज्जाथो भवति, तेसिं पणिहाए नो पभू, से तेणट्टेणं अज्जो ! एवं बुच्चइ-‘नो पभू चमरे असुरिदे जाव चमरचंचाए जाव विहरित्तए । [प्र०] पभू णं अज्जो ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए, समाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणंसि चउसट्टीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए जाव अत्तेसिं च बहूणं असुरकुमारेहिं देवेहिं य, देवीहिं य सद्धिं संपरिखुडे महयाहय- जाव भुंजमाणे विहरित्तए ? [उ०] केवलं परियारिहीए, नो चेव णं मेहुणवत्तियं ।

५. [प्र०] चमरस्स णं भंते ! असुरिदस्स असुरकुमाररत्तो सोमस्स महारत्तो कति अग्गमहिंसीथो पन्नत्ताथो ? [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीथो पन्नत्ताथो, तं जट्ठा-१ कणगा, २ कणगलता, ३ चित्तगुत्ता, ४ वसुंधरा । तत्थ णं पगमेगाए देवीए पगमेगंसि देवीसहस्सं परिवारे पण्णत्ते [प्र०] पभू णं ताथो पगमेगाए देवीए अन्नं पगमेगं देवीसहस्सं परियारि विउच्चित्तए ? [उ०] एवामेव सपुञ्जवरेणं चत्तारि देवीसहस्सा । सेत्तं तुडिए ।

६. [प्र०] पभू णं भंते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररत्तो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, समाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि तुडिणं ? [उ०] अवसेसं जट्ठा चमरस्स, नवरं परिवारो जट्ठा सूरियामस्स, सेसं तं चेव, जाव णं चेव णं मेहुणवत्तियं ।

७. [प्र०] चमरस्स णं भंते ! जाव रत्तो जमस्स महारत्तो कति अग्गमहिंसीथो पन्नत्ताथो ? [उ०] एवं चेव, नवरं जमाए रायहाणीए, सेसं जट्ठा सोमस्स, एवं वरुणस्स वि, नवरं वरुणाए रायहाणीए; एवं वेत्समणस्स वि, नवरं वेत्समणाए रायहाणीए; सेसं तं चेव, जाव मेहुणवत्तियं ।

नामे सभामा माणवक चैल्लस्तंभने विपे वज्रमय अने गोल-वृत्त डारडामां नाखेला जिनना घणा अस्थिओ ( हाडकाओ ) छे, जे असुरे अने असुरकुमारना राजा चमरने तथा वीजा घणा असुरकुमार देवोने अने देवीओने अर्चनीय, वंदनीय, नमस्कार करवा योग्य, पूजवा योग्य, सक्कार करवा योग्य अने समान करवा योग्य छे, तथा कल्याण अने मंगलरूप देव चैल्लनीं पेटे उपासना करवा योग्य छे, माटे जिनना अस्थिओना ग्रणिधानमा [ सनिधानमा ] ते असुरेद पोतानी राजधानीमां यावत् [ भोगो भोगववा ] समर्थ नथी. तेथी हे आर्यो एम कहैयाय छे के चमर असुरेद यावत् चमरचंचा राजधानीमा यावत् [ ते देवीओ साथे दिव्य भोगो ] भोगववा समर्थ नथी. पण हे आर्यो ! ते असुरेद असुरकुमारराजा चमर चमरचंचा नामे राजधानीमा, सुधर्मा सभामा, चमरनामे सिंहासनमा बेसी चोसठ हजार सामाणिय देवो, त्रायस्त्रिंशक देवो, अने वीजा घणा असुरकुमार देवो तथा देवीओ साथे परिचुत थइ मोटा अने निरन्तर थता नाट्य, गीत, वादित्रोना शब्दो वडे केवल परिवारनी ऋद्धिथी भोगो भोगववा समर्थ छे, परन्तु मैथुननिमित्तक भोगो भोगववा समर्थ नथी.

५. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरना [ लोकपाल ] सोम महाराजाने केटली पट्टराणी कही छे ? [उ०] हे आर्यो ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-कनका, कनकलता, चित्रगुता अने वसुंधरा. एा एके देवीने एक एक हजार देवीनो परिवार छे. तेओमानी एक एक देवी एक एक हजार हजार देवीना परिवारने विकुर्वी शके छे. ए प्रमाणे पूर्वापर वधी मट्टीने चार हजार देवीओ थाय छे. ते त्रुटिक ( देवीओनो वर्ग ) कहैयाय छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरना [ लोकपाल ] सोम नामे महाराजा पोतानी सोमा ना राजधानीमा सुधर्मा सभामां सोमनामे सिंहासनमा बेसी ते त्रुटिक ( देवीओना वर्ग ) साथे भोग भोगववा समर्थ छे ? [उ०] चमरना कहुं छे ते सर्व अहीं पण जाणवुं. परन्तु तेनो परिवार \*नूर्याभिनो पेटे जाणवो. अने वाकीचुं सर्वे पूर्व प्रमाणे कहेंवुं, यावत् हे साथे पोतानी सोमा राजधानीमा मैथुननिमित्तक भोग भोगववा समर्थ नथी.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते चमरना [ लोकपाल ] यम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्यो ! पूर्व जाणवुं. विशेष ए छे के [ यम लोकपालन ] यमा नामे राजधानी छे. वाकी वधुं सोमनी पेटे जाणवुं. तथा ए प्रमाणे वरुणना तंन जाणवुं, परन्तु तेने वरुणा राजधानी छे. ते प्रमाणे वैश्रमणने पण जाणवुं परन्तु तेने वैश्रमणा राजधानी छे. वाकी सर्वे पूर्व प्रमाणे, यावत् ‘तेओ मैथुननिमित्ते भोग भोगववा समर्थ नथी.’

८. [प्र०] वलिस्त णं भंते ! वइरोयणिंदस्स पुच्छ । [उ०] अज्जो ! पांच अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-१ सुभा, २ निखुंभा, ३ रंभा, ४ निरंभा, ५ मदणा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ट-ट्टु, सेसं जहा चमरस्स, नवरं वलिचंचाए राय-  
हाणीए, परिवारो जहा मोउद्देसए सेसं तं चेव, जाव मेहुणवत्तिंयं ।

९. [प्र०] वलिस्त णं भंते ! वइरोयणिंदस्स, वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ । तं जहा-१ मीणगा, २ सुभद्दा, ३ विजया, ४ असणी । तत्थ णं एगमेगाए देवीए, सेसं जहा चमरसोमस्स एवं जाव वेसमणस्स ।

१०. [प्र०] धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररत्तो कति अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! छ अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-१ इला, २ सुक्का, ३ सतारा, ४ सोदामिणी, ५ इंदा, ६ घणविज्जुया । तत्थ णं एगमेगाए देवीए छ देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।

११. [प्र०] पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं छ छ देविसहस्साइं परियारं विउच्चित्तए ? [उ०] एवामेव सपुद्दावरेणं च्तीसाइं देविसहस्साइं, सेत्तं तुडिप । [प्र०] पभू णं भंते ! धरणे ० ? [उ०] सेसं तं चेव, नवरं धरणए रायहाणीए, धर-  
सि सीहासणंसि, सओ परिवारो, सेसं तं चेव ।

१२. [प्र०] धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स लोणपालस्स कालवालस्स महारत्तो कति अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-१ असोगा, २ विमला, ३ सुप्पभा, ४ सुदंसणा । तत्थ णं एगमेगाए, अवसेसं जहा चमरलोणपालाणं । एवं सेसाणं तिण्ह वि ।

१३. [प्र०] भूयारिंदस्स भंते ! पुच्छ । [उ०] अज्जो ! छ अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-१ रूया, २ रूयंसा, ३ सुरूया, ४ रूयगावती, ५ रूयकंता, ६ रूयप्पभा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए० अवसेसं जहा धरणस्स ।

८. [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेन्द्र वलिने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! पांच पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे सुभा, निखुंभा, रंभा, निरंभा अने मदना. तेमानी एक एक देवीने आठ आठ हजार देवीओनो परिवार होय छे-इत्यादि सर्व चमरेन्द्रनी जाणवुं; परन्तु वलि नामे इन्द्रने वलिचंचा नामे राजधानी छे. अने तेनो परिवार तृतीय शतकना प्रथम उद्देशकमा कछा प्रमाणे जाणवो, बाकी सर्व पूर्वप्रमाणे जाणवुं. यावत् ते मैथुननिमित्ते भोग भोगववा समर्थ नथी.

वलिने अग्र-  
महिपीओ.

९. [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराजा वलिना [ लोकपाल ] सोम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-मेनका, सुभद्दा, विजया अने अशनी. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगैरे वधुं मरना सोम नामे लोकपालनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वैश्रमण सूची जाणवुं.

वलिना लोकपाल  
सोमने अग्रमहि-  
पीओ.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! नागकुमारना इन्द्र अने नागकुमारना राजा धरणने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-इला, सुक्का, सतारा, सौदामिनी, इन्द्रा अने घनविद्युत्. तेमां एक एक देवीने छ छ हजार देवी-  
ओनो परिवार कछो छे.

धरणेन्द्रने अग्र-  
महिपीओ.

११. [प्र०] हे भगवन् ! तेमानी एक एक देवी अन्य छ छ हजार देवीओना परिवारने विकुर्वी शके ? [उ०] तेओ पूर्वे कछा प्रमाणे पूर्वापर सर्व मळीने छत्रीश हजार देवीओने विकुर्ववा समर्थ छे. ए प्रमाणे ते त्रुटिक ( देवीओनो समूह ) कछो. [प्र०] हे भगवन् ! धरणेन्द्र पोतानी धरणा नामे राजधानीमां धरण नामे सिंहासनमा वेसी पोताना परिवार देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे इत्यादि ? बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं, [ अर्थात् मैथुननिमित्ते त्या भोग भोगववा समर्थ नथी. ]

धरणेन्द्रनी देवी-  
ओनो परिवार-

१२. [प्र०] हे भगवन् ! नागकुमारना इन्द्र धरणना लोकपाल कालवाल नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! चार पट्टराणीओ कही छे; ते आ प्रमाणे-अशोका, विमला, सुप्रभा अने सुदर्शना. तेमा एक एक देवीनो परिवार वगैरे चमरना कपालोनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे बाकीना त्रणे लोकपालो संवन्धे जाणवुं.

धरणना लोकपाल  
कालवालने अग्र-  
महिपीओ.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! भूतानेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! छ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-रूपा, मीणगा, सुरूपा, रूपकावती, रूपकाता अने रूपप्रभा. तेमा एक एक देवीनो परिवार इत्यादि सर्व धरणेन्द्रनी पेटे जाणवुं.

भूतानेन्द्रने  
अग्रमहिपीओ.

१४. [प्र०] भूयाणंदस्स णं भंते ! नागचित्तस्स पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-  
१ सुणंदा, २ सुमदा, ३ सुजाया, ४ सुमणा । तत्थ णं एगमेगाए० अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं । एवं सेसाणं तिण्ह वि  
लोगपालाणं । जे दाहिणिण्हा इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं । उत्तरिण्हाणं इंदाणं  
जहा भूयाणंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं, नवरं इंदाणं सधेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि  
य सरिसणाग्गाणि, परिवारो जहा तदए सए पढमे उद्देसए । लोगपालाणं सधेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणाग्ग-  
णाणि, परिवारो जहा चमरस्स लोगपालाणं ।

१५. [प्र०] कालस्स णं भंते ! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिंसीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! चत्तारि  
अग्गमहिंसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ कमला, २ कमलप्पमा, ३ उप्पला, ४ सुदंसणा । तत्थ णं एगमेगाए देवीण एगमेगं  
देविसहस्सं, सेसं जहा चमरलोगपालाणं । परिवारो तहेव, णवरं कालाए रायहाणीए, कालंसि सीहासणंसि, सेसं तं  
चेव, एवं महाकालस्स वि ।

१६. [प्र०] सुरूवस्स णं भंते ! भूतिंदस्स भूतरओ पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पन्नत्ताओ, तं  
जहा—१ रूववई, २ वहरूवा, ३ सुरूवा, ४ सुमगा । तत्थ णं एगमेगाए, सेसं जहा कालस्स । एवं पडिरूवस्स वि ।

१७. [प्र०] पुण्णभदस्स णं भंते ! जन्मिंदस्स पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पन्नत्ताओ; तं जहा-  
१ पुत्ता, २ वहुपुत्तिया, ३ उत्तमा, ४ तारया । तत्थ णं एगमेगाए, सेसं जहा कालस्स । एवं माणिभदस्स वि ।

१८. [प्र०] भीमस्स णं भंते ! रत्तसिंदस्स पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-  
१ पडमा, २ पडमावती, ३ कणगा, ४ रयणप्पमा । तत्थ णं एगमेगाए, सेसं जहा कालस्स । एवं महार्भीमस्स वि ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! भूतानेन्द्रना लोकपाल नामजित्ते केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ  
कही छे. ते आ प्रमाणे—सुनंदा, सुमदा, सुजाता अने सुमना. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे वधुं चमरेन्द्रना लोकपालोनी पेटे जाणवुं  
ए प्रमाणे वाकी रहेल त्रणे लोकपालोना संवन्धे जाणवुं. जे दक्षिण दिशिना इन्द्रो छे तेओने धरणेन्द्रनी पेटे (सू. १०.) जाणवुं, अने  
तेओना लोकपालोने पण धरणेन्द्रना लोकपालोनी पेटे जाणवुं. तथा उत्तर दिशिना इन्द्रोने भूतानेन्द्रनी पेटे (म. १३.) जाणवुं. तेओना  
लोकपालोने पण भूतानेन्द्रना लोकपालोनी पेटे जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के सर्व इन्द्रोनी राजधानीओ अने सिंहासनो इन्द्रना सम  
नामे जाणवा. अने तेओनो परिवार तृतीय शतकना प्रथम उद्देशकमा कक्षा प्रमाणे समजवो. तथा वधा लोकपालोना राजधानीओ अने  
सिंहासनो पण तेओना समान नामे जाणवा. अने तेओनो परिवार चमरेन्द्रना लोकपालोना परिवारनी पेटे जाणवो.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पिशाचना इंद्र अने पिशाचना राजा कालने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार  
पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—कमला, कमलप्रभा, उत्पला अने सुदर्शना. तेमानी एक एक देवीने एक एक हजार देवीनो परिवार  
छे, वाकी वधुं चमरना लोकपालोनी पेटे जाणवुं, अने परिवार पण तेज प्रमाणे जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के काला नामे राजधानी  
अने काल नामे सिंहासन जाणवुं. तथा वाकी वधुं पूर्वे कक्षा प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे महाकालसवधे पण जाणवुं.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! भूतना इन्द्र अने भूतना राजा सुरूपने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्ट  
राणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—रूपवती, वहरूपा, सुरूपा, अने सुमगा. तेमा एक एक देवीनो परिवार वगेरे कालेन्द्रनी पेटे जाण  
अने एज प्रमाणे प्रतिरूपेन्द्र संवधे पण जाणवुं.

१७ [प्र०] हे भगवन् ! यक्षना इन्द्र पूर्णभद्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे.  
आ प्रमाणे—पूर्णा, बहुपुत्रिका, उत्तमा अने तारका. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे कालेन्द्रनी पेटे जाणवुं, अने ए प्रमाणे  
संवन्धे पण जाणवुं.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! राक्षसना इंद्र भीमने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे,  
प्रमाणे—पद्मा, पद्मावती, कनका अने रत्नप्रभा. तेमा एक एक देवीनो परिवार वगेरे सर्व कालेन्द्रनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे महार्भी  
संवन्धे पण जाणवुं.

१९. [प्र०] किन्नरस्स णं भंते ! पुच्छा । अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ वड्डसा, २ क्रेतुमती, ३ रतिसेणा, ४ रड्ढिपिया । तत्थ णं, सेसं तं चेव, एवं किंपुरिसस्स वि ।

२०. [प्र०] सण्पुरिसस्स णं पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ रोहिणी, २ नवमिया, ३ हिरी, ४ पुप्फवती । तत्थ णं पग्गेगाए, सेसं तं चेव, एवं महापुरिसस्स वि ।

२१. [प्र०] अतिकायस्स णं पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ भुयंगा, २ भुयगवती, ३ महाकच्छा, ४ फुडा । तत्थ णं सेसं तं चेव, एवं महाकायस्स वि ।

२२. [प्र०] गीयरइस्स णं पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ सुधोसा, २ विमला, ३ सुस्सरा, ४ सरस्सईपं । तत्थ णं सेसं तं चेव । एवं गीयजसस्स वि । सर्वेसि एएस्सिं जहा कालस्स, नवरं सरिसनामिओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेसं तं चेव ।

२३. [प्र०] चंद्रस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ चंद्रप्पमा, २ दोसिणाभा, ३ अच्चिमाली, ४ पमंकरा । एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पमा, २ आयवाभा, ३ अच्चिमाली, ४ पमंकरा । सेसं तं चेव, जाव नो चेव णं मेहुणवत्तिं ।

२४. [प्र०] इंगालस्स णं भंते ! महग्गहस्स कति अग्गमहिस्सीओ पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पण्णाओ, तं जहा—१ विजया, २ वैजयंती, ३ जयंती, ४ अपराजिया । तत्थ णं पग्गेगाए देवीए सेसं तं चेव चंद्रस्स, नवरं गालवड्डसए विमाणे, इंगालांसि सीहासणांसि, सेसं तं चेव, एवं वियालगस्स वि । एवं अट्टासीतीए वि महागहाणं णियधं, जाव भावकेउस्स, नवरं वड्डसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेसं तं चेव ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! किन्नरेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे अवतंसा, केतुमती, रतिसेना अने रतिप्रिया. तेओना एक एकनो परिवार वगरे वधुं क्खा प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे किंपुरेन्द्र संबन्धे ण जाणवुं.

किन्नरेन्द्रने अग्र-  
महिपीओ.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! सत्पुरेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—रोहिणी, नवमिका, ही अने पुष्पवती: तेमां एक एकनो परिवार वगरे वधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे महापुरेन्द्र संबन्धे ण जाणवुं.

सत्पुरेन्द्रने अग्र-  
महिपीओ.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! अतिकारेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—भुजंगा, भुजगवती, महाकच्छा अने स्फुटा. तेमा एक एकनो परिवार वगरे वधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे महाकायेन्द्र संबन्धे ण जाणवुं.

अतिकारेन्द्रने  
अग्रमहिपीओ.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! गीतरतीन्द्रने केटली पट्टराणीओ होय छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ होय छे, ते आ प्रमाणे—सुधोपा, विमला, सुस्सरा अने सरस्वती. तेमा एक एकनो परिवार वगरे वधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे गीतयज्ञ इन्द्र संबन्धे ण जाणवुं. आ सर्व इन्द्रने वाकीतुं सर्व कालेन्द्रनी पेटे जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, राजधानीओ अने सिंहासनो इन्द्रना समान नामे जाणवा, वाकी सर्व पूर्वनी पेटे जाणवुं.

गीतरतीन्द्रने  
अग्रमहिपीओ.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिष्कना इन्द्र अने ज्योतिष्कना राजा चन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—चन्द्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिमाली अने प्रमंकरा—इत्यादि जेम जीवाभिगमसूत्रमां ज्योतिष्कना उद्देश्यमां कहुं छे तेम जाणवुं. सूर्यसंबन्धे ण वधुं तेमज जाणवुं. सूर्यने चार पट्टराणीओ छे, ते आ प्रमाणे—सूर्यप्रभा, आतपाभा, अर्चिमाली प्रमाणे अंकरा—इत्यादि सर्व पूर्वोक्त कहेवुं, यावत् तेओ पोतानी राजधानीमा सिंहासनने विपे मैथुननिमित्ते भोगो भोगवी शकता नथी.

चन्द्रने अग्रम-  
हिपीओ.

प्रमाणे हे २४. [प्र०] हे भगवन् ! अंगार नामना महाग्रहने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—विजया, वैजयंती, जयती अने अपराजिता. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगरे वधुं चन्द्रनी पेटे जाणवुं परन्तु विशेष ए छे के, अंगारावतंसकनामना विमानमा अने अंगारक नामना सिंहासनने विपे यावत् मैथुननिमित्ते भोगो भोगवता नथी. वाकी सर्व पूर्ववत् प्रमाणे तथा ए प्रमाणे यावत् व्याल नामे ग्रहसंबन्धे ण जाणवुं. एम अठ्याशी महाग्रहो माटे यावत् भावकेतु ग्रह सुवी कहेवुं. परन्तु ए छे के, अवतंसको अने सिंहासनो इन्द्रना समान नामे जाणवा. वाकी वधुं पूर्वप्रमाणे जाणवुं.

अंगारग्रहने  
अग्रमहिपीओ.

१. सुभगा क । २ भुयग-घ ।  
२. जीवाभि० प्र० ३ उ० २ प० ३८३-१.

૨૫. [પ્ર૦] સક્કસ્સ ણં મંતે ! દેવિંદસ્સ દેવરત્તો પુચ્છા । [ઉ૦] અજ્જો ! અટ્ટ અગ્ગમહિસીઓ પત્તત્તાઓ, તં જહા—૧ પપ્પમા, ૨ સિવા, ૩ સેયા, ૪ અંજૂ, ૫ અમલા, ૬ અચ્છરા, ૭ નવમિયા, ૮ રોહિણી । તત્થ ણં યગમેગાપ દેવીય સોલસ સોલસ દેવીસહસ્સા પરિવારો પળ્લપ્પત્તો । [પ્ર૦] પમ્મૂ ણં તાઓ યગમેગા દેવી અન્નાઈ સોલસ સોલસ દેવિસહસ્સાઈ પરિયારં વિઝવિત્તપ્પ ? [ઉ૦] ય્વામેવ સપુલાવેરેણં અટ્ટાવીસુત્તરં દેવિસયસહસ્સં પરિયારં વિઝવિત્તપ્પ, સેત્તં તુહિપ્પ ।

૨૬. [પ્ર૦] પમ્મૂ ણં મંતે ! સક્કે દેવિંદે દેવરાયા સોહમ્મે કળ્પે, સોહમ્મવડેંસપ વિમાણે, સમાપ્પ સુહમ્માપ્પ, સક્કંસિ સીહાસણંસિ તુહિપ્પણં સંદ્ધિ, સેસં જહા ચમરસ્સ, નવરં પરિયારો જહા મોહસેય ।

૨૭. [પ્ર૦] સક્કસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરત્તો સોમસ્સ મહારણ્ણો કતિ અગ્ગમહિસીઓ પુચ્છા । [ઉ૦] અજ્જો ! ત્ત્તારિ-અગ્ગમહિસીઓ પત્તત્તાઓ, તં જહા—૧ રોહિણી, ૨ મદ્દના, ૩ ત્તિત્તા, ૪ સોમા । તત્થ ણં યગમેગા, સેસં જહા ચમરલોગપા-લાણં, નવરં સયંપમે વિમાણે, સમાપ્પ સુહમ્માપ્પ, સોમંસિ સીહાસણંસિ, સેસં તં ચેવ, યવં જાવ-વેસમળસ્સ, નવરં વિમાણાઈ જહા તતિયસપ્પ ।

૨૮. [પ્ર૦] ઈસાણસ્સ ણં મંતે ! પુચ્છા । [ઉ૦] અજ્જો ! અટ્ટ અગ્ગમહિસીઓ પત્તત્તાઓ, તં જહા—૧ કળ્પહા, ૨ કળ્પહર, ૩ રામા, ૪ રામરક્ષિયા, ૫ વસુ, ૬ વસુગુત્તા, ૭ વસુમિત્તા, ૮ વસુંધરા । તત્થ ણં યગમેગાપ સેસં જહા સક્કસ્સ ।

૨૯. [પ્ર૦] ઈસાણસ્સ ણં મંતે ! દેવિંદસ્સ સોમસ્સ મહારત્તો કતિ અગ્ગમહિસીઓ પુચ્છા । [ઉ૦] અજ્જો ! ત્ત્તારિ-અગ્ગમહિસીઓ પત્તત્તાઓ । તં જહા—૧ પુહવી, ૨ રાઈ, ૩ ર્યણી, ૪ વિજ્જૂ । તત્થ ણં, સેસં જહા સક્કસ્સ લોગપાલાણં, ય જાવ વરુણસ્સ, ણવરં વિમાણા જહા ચરુત્થસપ્પ, સેસં તં ચેવ, જાવ નો ચેવ ણં મેહુણવત્તિયં । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ

### દસમસપ્પ પંચમો ઉદ્દેસો સમત્તો ।

૨૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવના ઇન્દ્ર દેવના રાજા શક્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને આઠ પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે—પદ્મા, શિવા, શ્રેયા, અંજુ, અમલા, અપ્સરા, નવમિકા અને રોહિણી. તેમાંની એક એક દેવીનો સોઢ સોઢ હજાર દેવીઓનો પરિવાર હોય છે. તેમાંની એક એક દેવી વીજી સોઢ સોઢ હજાર દેવીઓના પરિવારને વિકૃત્વી શકે છે. એ પ્રમાણે પૂર્વાપર મઠ્ઠીને એક લાલ અને અઠ્યાવીશ હજાર દેવીઓના પરિવારને વિકૃત્વવા સમર્થ છે. એ પ્રમાણે ત્રુટિક ( દેવીઓનો સમૂહ ) કહ્યો.

૨૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્ર સૌધર્મ દેવલોકમા સૌધર્મીવતંસક વિમાનમાં સુધર્મા સમાને વિપે અને શક્ર નામ સિંહાસનમાં વેસી તે ત્રુટિક ( દેવીઓના સમૂહ ) સાથે ભોગ ભોગવવા સમર્થ છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! વાકી સર્વ ચમરેન્દ્રની પેઠે જાણવું પરન્તુ વિશેષ એ છે કે તેનો પરિવાર \*તૃતીયશતકના પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવો.

૨૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રના ( લોકપાલ ) સોમ નામે મહારાજાને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે—રોહિણી, મદના, ચિત્રા અને સોમા. તેમા એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે ચમરેન્દ્રના લોકપાલોની પેઠે જાણવો, પરન્તુ વિશેષ એ છે કે સ્વયંપ્રભ નામે વિમાનમા, સુધર્મા સમામા અને સોમ નામના સિંહાસનમા વેસીને મૈથુનનિમિત્તે દેવીઓના સાથે ભોગ ભોગવવા સમર્થ નથી—ઇત્યાદિ સર્વ પૂર્વવત્ જાણવું. એ પ્રમાણે યાવદ્ વૈશ્રમણ સુધી જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે તેમના વિમાનો \*તૃતીયશતકમા કહ્યા પ્રમાણે કહેવાં.

૨૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ઈશાનેન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને આઠ પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે કૃષ્ણા, કૃષ્ણરાજિ, રામા, રામરક્ષિતા, વસુ, વસુગુપ્તા, વસુમિત્રા અને વસુંધરા. તેમા એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે વધું શક્રની પેઠે જાણવું.

૨૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનના [ લોકપાલ ] સોમ નામે મહારાજાને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે—પૃથિવી, રાત્રી, રજની, અને વિકૃત્. તેમા એક એકનો પરિવાર વગેરે શક્રના લોકપાલોની પેઠે જાણવું. એ પ્રમાણે યાવત્ વરુણ સુધી જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે િચોયા શતકમા કહ્યા પ્રમાણે કાદેવા, વાકી વધું પૂર્વની પેઠે જાણવું. યાવત્ તે મૈથુનનિમિત્તે [ રાજધાનીમા પોતાના સિંહાસન ઉપર વેસીને ] ભોગ ભોગવતા ભગવન્ ! તે એમજ છે, હે ભગવન્ ! તે એમજ છે.

### દશમ શતે પંચમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

## छट्ठओ उद्देशो ।

१. [प्र०] कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरणो सभा सुहम्मा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स षड्यस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए एवं जहा रायणप्पसेणइज्जे, जाव पंच वडेंसगा पणत्ता, तं जहा—१ असोगविडेंसए, जाव मज्जे ५ सोहम्मवडेंसए । से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, “एवं जह सूरियाभे तहेव माणं, तहेव उचवाओ । सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स ॥ अलंकारअच्चणिया तहेव जाव आय-एक्ख ति” दो सागरोवमाइं ठिती ।

[प्र०] सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया केमहिद्धिए, जाव केमहासोक्खे । [उ०] गोयमा ! महिद्धिए, जाव महासोक्खे । से णं तत्थ वत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं जाव विहरइ, एवं महिद्धिए जाव महासोक्खे सक्के देविंदे देवराया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

## दसमसए छट्ठओ उद्देशो समत्तो ।

### षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्रनी सुधर्मा नामे सभा कयां कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबुद्वीप नामे द्वीपमां मेरु पर्वतनी दक्षिणे आ रत्नप्रभापृथिवीना [ बहु सम अने रमणीय भूमिभागनी उंचे घणा कोटाकोटि योजन दूर सौधर्म नामे देवलोकने विपे ] इत्यादि \*‘रायपसेणीय’ सूत्रमां कहा प्रमाणे यावत् पांच अवतंसक विमानो कहा छे, ते आ प्रमाणे—अशोकावतंसक, यावत् वच्चे सौधर्मावतंसक छे. ते सौधर्मावतंसक नामे महा विमाननी लंबाई अने पहेळाई साढा बार लाख योजन छे. शक्रतुं प्रमाण, उपपात ( उपजहुं ), भमिपेक, अलंकार अने अर्चनिका ( पूजा )—इत्यादि यावत् आत्मरक्षको \*सूर्याभ देवनी पेठे जाणवा. तेनी स्थिति ( आयुप ) वे सागरोमनी छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र केवी महाऋद्धिवाळो छे, केवा महासुखवाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते महा-वाळो यावत् महासुखवाळो वत्रीश लाख विमानोनी खामी थइने यावद् विहरे छे, ए प्रमाणे महाऋद्धिवाळो अने महासुखवाळो ते प्रमाणे अदेवराज शक्र छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [ एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे. ]

### दशम शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

अ १. —महिद्धिया —क । २ —सोवसा क ।

ते १. \*जुओ अवतंसकविमानतुं वर्णन रायप० प० ५९. † जुओ रायप० प० ९७-११२.

छे. म १

सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कहि णं भंते! उत्तरिद्धाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? [उ०] एवं जहा ज तहेव निरवसेसं, जाव सुद्धदंतदीवो त्ति । एए अट्टावीसं उद्देशगा भाणियद्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरि

दसमसए सत्तमादि चोत्तीसइमपज्जन्ता अट्टावीसं उद्देशा समत्ता ।

समत्तं दसमं संयं ।

उद्देशक ७-३४.

१. [प्र०] हे भगवन्! उत्तरमां रहेनारा एकोरुक मनुप्योनो एकोरुक नामे द्वीप कये स्यळे कहो छे ? [उ०] हे गौतम जी ममूत्रमा कया प्रमाणे सर्व द्विपो संवन्धे यावत् सुद्धदंतद्वीप खुधी कहेवुं. ए प्रमाणे प्रत्येक द्वीप संवन्धे एक एक उद्देशक कहेवं अट्टावीस उद्देशको कहेवा. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. [ एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे. ]

दशम शते ७-३४ उद्देशको समाप्त.

दशम शतक समाप्त.

## एकारसं सयं ।

उत्पल सालु पलासे कुंभी नाली य पउम कन्नीय ।  
नलिन सिव लोग काला-लभिय दंस दो य एकारे ॥

पढमो उद्देशो ।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पञ्जुवासमाणे एवं वयासि-[प्र०] उत्पले णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] गोयमा ! एगजीवे, णो अणेगजीवे । तेण परं जे अत्रे जीवा उववज्जंति तेणं णो एगजीवे, अणेगजीवे ।

## एकादश शतक.

१. [उद्देश संग्रह—] १ उत्पल, २ शाळक, ३ पलाश, ४ कुंभी, ५ नाडीक, ६ पद्म, ७ कर्णिका, ८ नलिन, ९ शिवराजर्षि, १० लोक, ११ काल, अने १२ आलभिक—ए संवन्धे अगीयारमा शतकमा वार उद्देशको छे. [उत्पल—अमुक जातना कमल—संवन्धे यम उद्देशक, शाळक—उत्पलकन्द—संवन्धे वीजो उद्देशक, पलाश—खाखरा—ना वृक्ष संवन्धे त्रीजो उद्देशक, कुंभी वनस्पति संवन्धे चोयो उद्देशक, नाडीक वनस्पति संवन्धे पाचमो उद्देशक, पद्म—अमुक जातना कमल—विपे छट्टो उद्देशक, कर्णिका संवन्धे सातमो उद्देशक, लन—अमुक प्रकारना कमल—संवन्धे आठमो उद्देशक, शिवराजर्षि संवन्धे नवमो उद्देशक, लोकने विपे दशमो उद्देशक, कालसंवन्धे अगीआरमो उद्देशक, अने आलभिक—आलभिकानगरीमा करेला प्रश्न—संवन्धे बारमो उद्देशक.—ए प्रमाणे अगीयारमा शतकमा वार उद्देशको छे. ]

## \* प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] ते काले—ते समये राजगृह नगरने विपे पर्युपासना करता [गौतम] आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! उत्पल शुं एक जीवा छे के अनेकजीववाळु छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक जीववाळुं छे, पण अनेक जीववाळुं नथी. ल्यार पछी ज्यारे ते उत्पलने अनेक जीवो—जीवाश्रित पादडा वगेरे अवयवो—उगे छे ल्यारे ते उत्पल एक जीववाळुं नथी, पण अनेक जीववाळुं छे.

उत्पल,  
उत्पल एकजीवी  
के अनेक जीवी छे

प्रथम उद्देशकार्थसंग्रह गाथा—“१ उववाओ २ परिमाण ३ अवहार—४ चत्त ५ वन्ध ६ वेद्वे य । ७ उदए ८ उदीरणाए ९ लेसा १० दिट्ठी य मे य ॥ १२ जोयु—१३ वओगे १४ वन्न—१५ रसमाहं १६ ऊसासने १७ य आहारे । १८ विरहं १९ किरिया २० वन्धे २१ सज्ज—२२ कसायि—२३ वन्धे य ॥ २५ सन्नि—२६ विय—२७ अणुवन्धे २८ संवेहा—२९ हार—३० ठिह—३१ समुग्वाए । ३२ चयण ३३ मूलादीसु य उववाओ णं ॥”

प्रथम उद्देशकार्थसंग्रह गाथा—१ उपपात, २ परिमाण, ३ अपहार, ४ उचाई, ५ जानावरणादिकर्मनो वन्ध, ६ वेदक, ७ उदय, ८ उदीरणा, ९ लेसा, १० दृष्टि, ११ मिश्रदृष्टि अने मिथ्यादृष्टि, १२ ज्ञान, १३ योग, १४ उपयोग, १५ वर्ण, १६ रसादि १७ उच्छ्वाराक, १८ आहार, १९ विरति, २० क्रिया, २१ कसाय, २२ कपाय, २३ क्षीवेदादि, २४ समुद्घात, २५ सन्नि, २६ इन्द्रिय, २७ अणुवन्ध, २८ संवेध, २९ आहार, ३० स्थिति, ३१ उपपात, ३२ चयन, अने ३३ सर्व जीवोको मूलादिमा उपपात—एरीते प्रथम उद्देशकमा ३३ द्वारो जणाल्या छे.



३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कथोद्धितो उचवज्जंति ? किं नेररुद्धितो उचवज्जंति, तिरि० मणु० देवेद्धितो उचवज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरतिणद्धितो उचवज्जंति, तिरिक्कजोणिणद्धितो वि उचवज्जंति मणुस्सेद्धितो० देवेद्धितो वि उचवज्जंति । एवं उचवाओ भाणिअओ जहा वक्कंतीए वणस्सइकाइयाणं जाव ईसाणेति ।

४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा एगसमए णं केवइया उचवज्जंति ? [उ०] गोयमा ! जइएणं एओ वा दो वा निप्रि वा, उओसेणं संखेजा वा असंखेजा वा उचवज्जंति ।

५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा समए २ अवहीरमाणा २ केवतिकालेणं अवहीरंति ? [उ०] गोयमा ! ते णं असंखेजा समए २ अवहीरमाणा २ असंखेजाहिं उस्तप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो केव णं अवइया सिया ।

६. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिआ सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! जइएणं अंगुलस्स असंखेजइ भागं, उओसेणं सातिरेणं जोयणसइस्सं ।

७. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वंधगा अवंधगा ? [उ०] गोयमा ! नो अवंधगा, वंधु वा, वंधगा वा । एवं जाव अंतराइअस्स ।

८. [प्र०] नवरं आउअस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! १ वंधए वा, २ अवंधए वा, ३ वंधगा वा, ४ अवंधगा वा, ५ अहवा वंधएअ अवंधए अ, ६ अहवा वंधए अ अवंधगा य, ७ अहवा वंधगा य अवंधए अ, ८ अहवा वंधगा य अवंधगा य । एते अइ मंगा ।

९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा अवेदगा ? [उ०] गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वेदगा वा । एवं जाव अंतराइअस्स ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! [ उत्पलमां ] ते जीवो कयांथी आवीने उपजे छे—शुं नैरयिकथी, तिर्यचथी, मनुष्यथी के देवथी आ उपजे छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो नैरयिकथी आवीने उपजता नथी, पण तिर्यचथी, मनुष्यथी के देवथी आवीने उपजे छे. ते प्रज्ञापनासूत्रां व्युत्क्रातिपदमा कह्युं छे ते प्रमाणे वनस्पतिकायिकोमां यावत् ईशान टेवलोक सुधीना जीवो नो उपपात कह्यो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो [ उत्पलमां ] एक समयमां केटला उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्थी एक, वे के अने उत्कृष्टथी संख्यात के असंख्याता जीवो एक समयमा उत्पन्न थाय.

५. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो समये समये काटवामा आवे तो केटले काले ते पूरा काढी शकाय ? [उ०] गौतम ! जो ते जीवो समये समये असंख्य काटवामा आवे, अने ते असंख्य उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काल सुधी काटवामा आवे पण ते पूरा काढी शकाय नहीं.

६. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पलना जीवोनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जवन्थी—ओठामा ओठ अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली, अने उत्कृष्ट कईक अधिक हजार योजन होय छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो शुं ज्ञानावरणीय कर्मना वंधक छे के अवंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानावरणीय कर्मना अवंधक नथी, पण वन्धक छे. अथवा एक जीव वंधक छे अने अनेक जीवो पण वंधक छे. ए प्रमाणे यावद् अंतराय संबंधे पण जाणहुं.

८. [प्र०] परन्तु आयुपकर्मना संबंधे प्रश्न करवो. [ हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो आयुपकर्मना वंधक छे के अवंधक छे ? ] [उ०] हे गौतम ! १ [ उत्पलनो ] एक जीव वंधक छे, २ एक जीव अवंधक छे, ३ अनेक जीवो वंधक छे, ४ अनेक अवंधक छे, ५ अथवा एक वंधक अने एक अवंधक छे, ६ अथवा एक वंधक अने अनेक अवंधक छे, ७ अथवा अनेक एक अवंधक छे, ८ अथवा अनेक वंधक अने अनेक अवंधक छे. ए प्रमाणे ए आठ भागा जाणवा.

९. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना वेदक छे के अवेदक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नथी, पण एक जीव वेदक छे अथवा अनेक जीवो अवेदक छे. ए प्रमाणे यावद् अनराय कर्म सुधी जाणहुं.

३. \* प्रजा० पद ६ प० २०४.

७. † उत्पलने प्रारम्भमा न्यारे एकज पादहुं होय छे ल्यारे तेमा एक जीव होवाथी एक जीव ज्ञानावरणीयादि कर्मनो वन्धक कहेवाय छे, अनेक पादवा थाय छे ल्यारे तेमा अनेक जीवो होवाथी अनेक जीवो वन्धक कहेवाय छे.—टीका.

१०. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा ? [उ०] गोयमा ! सायावेदप वा, असायावेयप वा अट्ट भंगा ।

११. [प्र०] ते णं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई अणुदई ? [उ०] गोयमा ! णो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा । एवं जाव अंतराइअस्स ।

१२. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा अणुदीरगा ? [उ०] गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरप वा, उदीरगा वा । एवं जाव अंतराइअस्स । नवरं वेयणिज्जा—उपसु अट्ट भंगा ।

१३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसा, नीललेसा, तेउलेसा ? [उ०] गोयमा ! कण्हलेसे वा, जाव तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा । अहवा कण्हलेसे य नीललेस्से य, एवं एए दुयासंजोग—तिर्या-  
—चउक्कसंजोगेणं असीती भंगा भवंति ।

१४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? [उ०] गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, नो मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा ।

१५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी वा, अन्नाणिणो वा ।

१६. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? [उ०] गोयमा ! णो मणजोगी, णो वयजोगी, यजोगी वा, कार्यजोगिणो वा ।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो साताना वेदक छे के असाताना वेदक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो ज्ञाना वेदक छे अने असाताना पण वेदक छे. अहीं पूर्व प्रमाणे आठ भांगा कहेवा.

११. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो ज्ञानावरणीय कर्मना उदयवाळा छे के अनुदयवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नावरणीयकर्मना अनुदयवाळा नथी, पण एक जीव उदयवाळा छे अथवा अनेक जीवो उदयवाळा छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म छे जाणवुं.

ज्ञानावरणीयादि कर्मनो उदय.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना उदीरक छे के अनुदीरक छे ? [उ०] हे गौतम ! अनुदीरक नथी, पण एक जीव उदीरक छे, अथवा अनेक जीवो उदीरक छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म सुधी जाणवुं परन्तु ए छे के वेदनीयकर्म अने आयुपकर्ममां पूर्ववत् (सू० ८) आठ भांगा कहेवा.

उदीरक.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो कृष्णलेस्यावाळा, नीललेस्यावाळा, कापोतलेस्यावाळा के तेजोलेस्यावाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! एक जीव कृष्णलेस्यावाळा, यावत् एक तेजोलेस्यावाळा होय, अथवा अनेक जीवो कृष्णलेस्यावाळा, नीललेस्यावाळा, कापोतलेस्यावाळा अने तेजोलेस्यावाळा होय, अथवा एक कृष्णलेस्यावाळा अने एक नीललेस्यावाळा होय. ए प्रमाणे द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग छे चतुष्कसंयोग वडे सर्व मळीने एंशी भांगा कहेवा.

देश्या.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो सम्यग्दृष्टि छे, मिथ्यादृष्टि छे, के सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे ? [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि नथी, सम्यग्मिथ्यादृष्टि नथी, पण एक जीव मिथ्यादृष्टि छे, अथवा अनेक जीवो मिथ्यादृष्टिओ छे.

दृष्टि-सम्यग्दृष्टि छे के मिथ्यादृष्टि ?

१५. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! ते ज्ञानी नथी, पण एक प्रमाणे अथवा अनेक अज्ञानीओ छे.

ज्ञान-ज्ञानी के अज्ञानी ?

१६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो मनयोगी, वचनयोगी के काययोगी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ मनयोगी वचनयोगी नथी, पण एक काययोगी छे अथवा अनेक काययोगीओ छे.

योग-मनयोगी वचनयोगी के काययोगी ?

\* उत्पल वनस्पतिकामिक होवाथी तेमां प्रथमनी चार देश्याओ होय छे. एकयोगे एक जीवना चार तथा अनेक जीवोना चार भागा मळीने १६ भांगा थाय छे. द्विकसंयोगमां एक अने अनेकनी चउभंगी थाय छे. कृष्णादि चार देश्याना छ द्विकसंयोग थाय छे, तेने पूर्वोक्त चउभंगी साथे त्रिकोगी चोवीस विकल्पो थाय छे. चार देश्याना त्रिकयोगी आठ विकल्प थाय छे, तेने पूर्वोक्त चउभंगी साथे गुणतां त्रिकसंयोगी घत्रीय त्रिकोगी चउ संयोगे सोळ विकल्पो थाय छे, सर्व मळीने एंशी भांगा थाय छे.  
२७ भ० सू०

૧૭. [પ્ર૦] તે પં મંતે ! જીવા કિં સાગારોવડતા, આણાગારોવડતા ? [ઉ૦] ગોયમા ! સાગારોવડત્તે વા, અણાગારોવડત્તે વા અદ્દ મંગા ।

૧૮. [પ્ર૦] તેસિ પં મંતે ! જીવાણં સરીરગા કતિવદ્દા, કતિગંધા, કતિરસા, કતિફાસા પદ્મતા ? [ઉ૦] ગોયમા ! પંચવદ્દા, પંચરસા, દુગંધા અદ્દફાસા પદ્મતા । તે પુણ અપ્પણા અવદ્દા, અગંધા, અરસા, અફાસા પદ્મતા ।

૧૯. [પ્ર૦] તે પં મંતે ! જીવા કિં ઉસ્સાસગા, નિસ્સાસગા, ણોડસ્સાસનિસ્સાસગા ? [ઉ૦] ગોયમા ! ઉસ્સાસપ વા, નિસ્સાસપ વા, ણોડસ્સાસનિસ્સાસપ વા; ઉસ્સાસગા વા, નિસ્સાસગા વા, ણોડસ્સાસનિસ્સાસગા વા; અદ્દવા ઉસ્સાસપ ય, અદ્દવા નિસ્સાસપ ય, ણોડસ્સાસનિસ્સાસપ ય, અદ્દવા નિસ્સાસપ ય ણોડસ્સાસનિસ્સાસપ ય; અદ્દવા ઉસ્સાસપ ય નિસ્સાસપ ય ણોડસ્સાસનિસ્સાસપ ય । અદ્દ મંગા । ય્પ છદ્દીસં મંગા મવંતિ ।

૨૦. [પ્ર૦] તે પં મંતે ! જીવા કિં આહારગા અણાહારગા ? [ઉ૦] ગોયમા ! ણો અણાહારગા, આહારપ વા, અણાહારપ વા એવં અદ્દ મંગા ।

૧૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શું તે [ઉત્પલ્લના] જીવો સાકાર ઉપયોગવાઝા છે કે અનાકાર ઉપયોગવાઝા છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! એક જીવ સાકાર ઉપયોગવાઝો છે, અથવા એક જીવ અનાકારઉપયોગવાઝો છે-દ્વ્યાટિ પૂર્વે પ્રમાણે ( સૂ૦ ૮ ) આઠ ભાગા કહેવા.

૧૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! તે [ઉત્પલ્લના] જીવોના ઝર્ગરો કેટલા વર્ણવાઝાં, કેટલા ગંધવાઝાં, કેટલા રસવાઝાં અને કેટલા સ્પર્શવાઝાં કહ્યા છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! પાંચ વર્ણવાઝાં, પાંચ રસવાઝાં, બે ગંધવાઝાં અને આઠ સ્પર્શવાઝાં કહ્યા છે. અને જીવો પો વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ રહિત છે.

૧૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શું તે [ઉત્પલ્લના] જીવો ઉચ્છ્વાસક (શ્વાસ લેનાર) છે, નિઃશ્વાસક (શ્વાસ મૂકનાર) છે કે અરુચ્છ્વાસક-નિઃશ્વાસક (શ્વાસ નહિ લેનાર અને નહિ મૂકનાર) હોય છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! \*૧ કોઈ એક ઉચ્છ્વાસક છે, ૨ કોઈ એક નિઃશ્વાસક છે, અને ૩ કોઈ એક અરુચ્છ્વાસક-નિઃશ્વાસક પણ છે. ૪ અથવા અનેક જીવો ઉચ્છ્વાસક છે, ૫ અનેક નિઃશ્વાસક છે અને ૬ અનેક અરુચ્છ્વાસક-નિઃશ્વાસક પણ છે. ૧-૪ અથવા એક ઉચ્છ્વાસક, અને એક નિઃશ્વાસક છે, ૧-૫ અથવા એક ઉચ્છ્વાસક અને એક અરુચ્છ્વાસક-નિઃશ્વાસક છે, ૧-૬ અથવા એક નિઃશ્વાસક અને એક અરુચ્છ્વાસક-નિઃશ્વાસક છે, ૧-૮ અથવા એક ઉચ્છ્વાસક અને એક નિઃશ્વાસક અને એક અરુચ્છ્વાસક-નિઃશ્વાસક છે.-૧ પ્રમાણે આઠ ભાગા કરવા. ૧ સર્વે મઢીને છઠ્ઠીશ ભાગા થાય છે.

૨૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શું તે [ઉત્પલ્લના] જીવો આહારક છે કે અનાહારક છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! તેઓ સઘઢા અનાહાર નથી, પણ એક આહારક છે, અથવા એક અનાહારક છે.-દ્વ્યાટિ આઠ ભાગા અર્હાં કહેવા.

૧૯. \* એક અને અનેકના એકત્વ યોગે છ માંગા, દ્વિક્રયોગે ચાર ભાગા, અને ત્રિક્રયોગે આઠ માંગા થાય છે. તેમાં એકત્વ યોગે છ માંગા કહેલું દ્વિક્રયોગે ચાર માંગા આ પ્રમાણે-

	ઉ નિ.	ઉ. અનુ.	નિ. અનુ.
૧-એક	૧-૧	૧-૧	૧-૧
	૧-૨	૧-૨	૧-૨
૨-અનેક	૨-૧	૨-૧	૨-૧
	૨-૨	૨-૨	૨-૨

ત્રિક્રયોગે આઠ માંગા થાય છે, તે આ પ્રમાણે-

ઉ.	નિ.	અનુ.
૧.	૧.	૧.
૧.	૧.	૨.
૧.	૨.	૧.
૧.	૨.	૨.
૨.	૧.	૧.
૨.	૧.	૨.
૨.	૨.	૧.
૨.	૨.	૨.

અથા મઢીને ૨૬ માંગા થાય છે.

२१. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं विरता, अविरता, विरताविरता ? [उ०] गोयमा ! नो विरता नो विरयाविरया, अविरेण वा अविरेया वा ।

२२. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया अकिरिया ? [उ०] गोयमा ! णो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा ।

२३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा अट्टविहबंधगा ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहबंधप वा, अट्टविहबंधप वा । अट्ट भंगा ।

२४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता, परिग्गहसन्नोवउत्ता ? [उ०] गोयमा ! आहारसन्नोवउत्ता वा असीती भंगा ।

२५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसायी, माणकसायी, मायाकसायी, लोमकसायी ? [उ०] असीती भंगा ।

२६. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा ? [उ०] गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिदगा, नपुंसगवेदप वा, नपुंसगवेदगा वा ।

२७. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं इत्थिवेदबंधगा, पुरिसवेदबंधगा, नपुंसगवेदबंधगा ? [उ०] गोयमा ! इत्थिवेदबंधप , पुरिसवेदबंधप वा, नपुंसगवेदबंधप वा छवीसं भंगा ।

२८. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं सत्ती, असत्ती ? [उ०] गोयमा ! णो सत्ती, असत्ती वा असत्तिणो वा ।

२९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सइंदिया अणंदिया ? [उ०] गोयमा ! णो अणंदिया, सइंदिए वा, सइंदिया वा ।

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो सर्वविरति छे, अविरति छे के विरताविरत (देशविरति) छे ? [उ०] हे तम ! ते सर्वविरति नथी, विरताविरत (देशविरति) नथी, पण एक जीव अविरति छे, अथवा अनेक जीवो अविरति छे.

सर्वविरति, अविरति के देशविरति छे ?

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो शुं सक्रिय छे के अक्रिय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अक्रिय नथी पण तेमांनो एक सक्रिय छे अथवा अनेक जीवो सक्रिय छे.

सक्रिय के अक्रिय ?

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे के आठ प्रकारे कर्मना बंधक छे ? [उ०] हे तम ! ते जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे, अथवा आठ प्रकारे बंधक छे. अहीं आठ भांगा कहेवा.

सातविधबंधक के अष्टविधबंधक ?

२४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, भयसंज्ञाना उपयोगवाळा, मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा, के परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा छे—इत्यादि \*एंशी भांगा कहेवा.

आहारदि संज्ञाओ.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो क्रोधकपायवाळा, मानकपायवाळा, मायाकपायवाळा के लोमकपायवाळा छे ? [उ०] गौतम ! अहीं पण एंशी भांगा कहेवा.

कपाय.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदवाळा, पुरुषवेदवाळा के नपुंसकवेदवाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदवाळा नथी, पुरुषवेदवाळा नथी, पण एक जीव नपुंसकवेदवाळो के अनेक नपुंसकवेदवाळा होय.

वेद.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदना बंधक, पुरुष वेदना बंधक के नपुंसक वेदना बंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदना बंधक, पुरुषवेदना बंधक अथवा नपुंसकवेदना बंधक छे. अहीं पण छवीशा भांगा कहेवा.

वेदना बंधक.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलजीवो संज्ञी छे के असंज्ञी छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संज्ञी नथी, एक असंज्ञी छे, अथवा संज्ञीओ छे.

संज्ञी के असंज्ञी ?

२९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलजीवो इंद्रियसहित छे के इंद्रियरहित छे ? [उ०] हे गौतम ! ते इंद्रियरहित नथी, पण इंद्रियवाळो छे, अथवा अनेक जीवो इंद्रियवाळा छे.

संन्द्रिय के अन्द्रिय ?

\* ऐश्याद्वारनी पेठे अहीं पण एंशी भागा कहेवा. जुओ सू० १३ उं टीप्पन.

† अहीं पण एक अने अनेकना उच्छ्वासकादिनी पेठे छवीशा भांगा कहेवा. जुओ सू० १९ उं टीप्पन.

३०. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवेत्ति कालतो केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंस रेज्जं कालं ।

३१. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गति रागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंरोज्जाइं भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंरोज्जं कालं, पवतियं कालं सेवेज्जा—पवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।

३२. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे, आउजीवे० [उ०] पयं चयं, पयं जहा पुढविजीवे भणिए तहा, जाव घाउ जीवे भाणियधे ।

३३. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे से वणस्सज्जजीवे, से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवदयं कालं सेवेज्जा—केवदयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं तरकालं, पवदयं कालं सेवेज्जा, पवदयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।

३४. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे वेइंदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवदयं कालं सेवेज्जा—केवदयं कालं गति रागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संरोज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संरोज्जं कालं, पवतियं कालं सेवेज्जा—पवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं तेइंदियजीवे, चउरिंदियजीवे वि ।

३५. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचेदियतिरियपज्जेणियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति पुच्छा । [उ०] गोयमा भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ताइं, उक्कोसेणं पुधकोटि पुहुत्तं, पवतियं कालं सेवेज्जा—पवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं मणुस्सेण वि समं जाव पवतियं कालं गतिं करेज्जा ।

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव उत्पल्लपणे कालधी क्यांमुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यधी अंतर्मुहूर्तं सुधी अ उत्कृष्टधी असंख्य काल सुधी रहे.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव पृथिवीनायिकमा आवे, अने फरीधी पाछो उत्पल्लमा आवे—ए प्रमाणे केटलो काल सेवे—केटलो काल सुधी गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यधी वे भव अने उत्कृष्टधी असंख्यात भव सुधी गमनागमन करे, कालनी अपेक्षाए जघन्यधी वे अंतर्मुहूर्तं, अने उत्कृष्टधी असंख्यकाल; एटलो काल सेवे—एटलो काल गमनागमन करे.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव अष्ठाधिकपणे उपजे अने फरीधी ते पाछो उत्पल्लमा आवे, ए प्रमाणे केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम पृथिवीना जीव संवन्धे (सू० ३१) कथुं तेम यावत् वायुना जीव सुधी काहेवुं.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव वनस्पतिमा आवे, अने ते फरीधी उत्पल्लमा आवे ए प्रमाणे केटलो काल सेवे—केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यधी वे भव, अने उत्कृष्टधी अनंत भव सुधी गमनागमन करे. ए अपेक्षाए जघन्यधी वे अंतर्मुहूर्तं, अने उत्कृष्टधी अनंत काल—वनस्पतिकाल पर्यन्त, एटलो काल सेवे—एटलो काल गमनागमन करे.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव वेइन्द्रियमा आवे, अने ते फरीधी उत्पल्लपणे उपजे; ए प्रमाणे ते केटलो काल सेवे केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यधी वे भव, उत्कृष्टधी सख्याता भवो; तथा कालनी अपेक्षाए जघन्यधी वे अंतर्मुहूर्तं, अने उत्कृष्टधी संख्यातो काल; एटलो काल सेवे—एटलो काल गमनागमन करे. ए प्रमाणे त्रीन्द्रियपणे, वेइन्द्रियजीवपणे गमनागमन करवामा पूर्ववत् काल जाणवो.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पल्लो जीव पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकपणे उपजे अने ते फरीधी उत्पल्लपणे उपजे, एम वे गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यधी वे भव, उत्कृष्टधी आठ भवो, कालनी अपेक्षाए जघन्यधी वे अंतर्मुहूर्तं, उत्कृष्टधी पूर्वकोटिपृथक्त्व; एटलो काल सेवे—एटलो काल गमनागमन करे. ए प्रमाणे उत्पल्लो जीव मनुष्य साथे पण यावत् ए गमनागमन करे.

३६. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारंति ? [उ०] गोयमा ! द्द्वओ अणंतपदेसियाइं द्द्वाइं, एवं जहा आहारु-  
इसप वणस्सइकाइयाणं आहारो तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारंति । णवरं नियमा छद्धिसिं सेसं तं चेव ।

३७. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं टिई पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! जहत्तेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस  
वाससहस्साइं ।

३८. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ समुग्घाया पन्नत्ता । तं जहा-  
वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ।

३९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घापणं किं समोहता मरंति, असमोहता मरंति ? [उ०] गोयमा ! समो-  
ता वि मरंति, असमोहता वि मरंति ।

४०. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्ठित्ता कहिं गच्छंति-कहिं उव्वज्जंति ? किं नेरइपसु उव्वज्जंति, तिरिक्ख-  
णिणसु उव्वज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्ठणाए वणस्सइकाइयाणं तथा भाणियच्चं ।

४१. [प्र०] अहं भंते ! सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकंदत्ताए, उप्पलनाल-  
ए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकन्नियत्ताए, उप्पलथिभुगत्ताए उव्वन्नपुट्ठा ? [उ०] हन्ता, गोयमा ! असर्ति,  
टुवा अणंतखुत्तो । सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति ।

### पढमो.उप्पलउद्देशओ समत्तो ।

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो कया पदार्थनो आहार करे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो द्रव्यथी अनन्तप्रदेशिक  
व्योनो आहार करे, इत्यादि सर्व "आहारक उद्देशकमां वनस्पतिकायिकोनो आहार कह्यो छे ते प्रमाणे यावत् तेओ सर्वात्मना-सर्व  
देशोए आहार करे छे," त्यां सुधी कहेहुं, परन्तु एटलो विशेष छे के तेओ अवश्य छए दिशीनो आहार करे छे, बाकी वहुं पूर्व  
माणे जाणवुं.

आहार.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवोनी स्थिति (आयुष) केटला काल सुधी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मु-  
ः, अने उक्कट्ठथी दस हजार वर्षनी स्थिति कही छे.

आयुष.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवोने केटला समुद्घातो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण समुद्घातो कहा छे,  
आ प्रमाणे-वेदनासमुद्घात, कपायसमुद्घात अने मारणातिकसमुद्घात.

समुद्घात

३९. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो मारणातिक समुद्घात वडे समवहत (समुद्घातने प्राप्त) थइने मरे, के असमवहत  
समुद्घातने प्राप्त थया शिवाय) मरे ? [उ०] हे गौतम ! ते समवहत थइने पण मरे अने असमवहत थइने पण मरे.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो मरीने तरत क्यां जाय ?-क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, तिर्यचयोनि-  
मा उत्पन्न थाय, मनुष्योमां उत्पन्न थाय के देवोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्रना व्युक्तातिपदमां उद्वर्तना प्रकरणमां  
वसपतिकायिकोने कहा प्रमाणे अहीं पण कहेहुं.

च्यवन.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! सर्व प्राणो, सर्व भूतो, सर्व जीवो अने सर्व सत्त्वो उत्पलना मूलपणे, कंदपणे, नालपणे, पांदखापणे, केस-  
णे, कर्णिकापणे अने थिभुग (पांदडातुं उत्पत्ति स्थान) पणे पूर्व उत्पन्न थया छे ? [उ०] हा, गौतम ! जीवो अनेकवार अथवा अनन्त-  
पूर्व उत्पन्न थया छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे.

सर्व जीवोतुं ए  
पणे उपजइं

### एकादश शते प्रथम उत्पलोद्देशक समाप्त.

\* प्रज्ञा० पद २० उ० १ प० ४९८-५०५.

† समुद्घात माटे लुओ प्रज्ञा० पद ३६ प० ५५८.

‡ प्रज्ञा० पद ६ प० २०४.

## वीओ उद्देशो.

१. [प्र०] सालुय णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] गौयमा ! एगजीवे । एवं उप्पलुहेसगवत्तद्यया अपरिसेसा भाणियद्वा जाव 'अणंतखुत्तो'; नवरं सरीरोगाहणा जह्मेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं, उक्कोसेणं घणुपुहुत्तं । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

## वीओ उद्देशो समाप्तो ।

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांडडावाळो शाद्धक (उत्पलकन्द) शुं एक जीववाळो छे के अनेक जीववाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक जीववाळो छे, ए प्रमाणे उत्पलोद्देशकनी सघळी वक्तव्यता कहेवी, यावद् 'अनन्तवार उत्पल यया छे.' परन्तु विशेष ए छे के, शाद्धकना शरीरनी अवगाहना जवन्त्ययी अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली, अने उत्कृष्ट घनुपपृथक्त्व छे, वाकी वधुं पूर्ववत् जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

## एकादशशते द्वितीयोद्देशक समाप्त.

## तईओ उद्देशी ।

१. [प्र०] पलासे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] एवं उप्पलुद्देसगवत्तघया अपरिसेसा भाणि-  
। नवरं सरीरोगाहणा जहनेणं अंगुलस्से असंखेज्जभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहुत्ता, देवा एएसु चेव न उव्वज्जति ।  
२. [प्र०] लेसासु ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसे, नीललेसे, काउलेसे ? [उ०] गोयमा ! कण्हलेसे वा नीललेसे  
काउलेसे वा छवीसं भंगा । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

## तईओ उद्देशी समत्तो ।

## तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! पलाशवृक्ष [प्रारंभमां] एक पादडावालो होय लारे शुं एक जीववालो होय के अनेक जीववालो होय ?  
[उ०] हे गौतम ! \*उत्पलउद्देशकनी वधी वक्तव्यता अही कहेवी. परन्तु विशेष ए छे के, पलाशना शरीरनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलनो  
असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट गाउपृथक्त्व छे. वली देवो च्यवीने ए पलाशवृक्षमा उत्पन्न थता नथी.

२. [प्र०] लेस्याद्वारमां हे भगवन् ! शुं पलाशवृक्षना जीवो कृष्णलेस्यावाळा, नीललेस्यावाळा के कापोतलेस्यावाळा होय ? [उ०]  
हे गौतम ! ते कृष्णलेस्यावाळा, नीललेस्यावाळा के कापोतलेस्यावाळा होय, ए प्रमाणे †छवीश भांगा कहेवा. वाकी वधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.  
हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

## एकादश शते तृतीय उद्देशक समाप्त.

१. \* भग० खं० ३ श० ११ उ० १ सू० १.

२. † अहिं एक अने अनेकना चच्छ्वासकादिनी पेठे २६ भांगा जाणवा. जुवो भग० खं० ३ श० ११ उ० १ सू० १९ सुं टीप्पन.



## चउत्यौ उद्देशी ।

१. [प्र०] कुंमिप णं मंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] एवं जहा पलासुद्देसए तहा माणियवे । नवरं द्वितीः जह्नेणं अंतोसुहृत्तं, उक्कोसेणं वासपुद्दुत्तं । सेसं तं चेव । सेवं मंते ! सेवं मंते ! चि ।

## चउत्यौ उद्देशी समत्तो ।

## चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांडवावाळो कुंमिकं (वनस्पतिविशेष) शुं एक जीववाळो होय के अनेकजीववाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे \*पलाशोद्देशकमां कदा प्रमाणे वधुं कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के कुंमिकली स्थिति (आयु) जवन्वयी अंतर्मुहूर्ती, अने उत्कृष्ट वर्पपृथक्त्व—वे वर्पयी नव वर्प—सुर्वांनी होय छे. वाकी वधुं पूर्ये कदा प्रमाणे जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

## एकादशशते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

पंचमो उद्देशो ।

१. नालिप णं भंते ! प्रगपत्तप कि एगजीचे अणेगजीचे ? [उ०] एवं कुंभिउद्देशगवत्तद्वया निरवसेसं भाणियन्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

पंचमो उद्देशो समाप्तो ।

पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एकपांदडावाळो नाडिक (वनस्पतिविशेष) शुं एक जीववाळो छे के अनेकजीववाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! कुंभिक उद्देशकनी (उ० ४ सू० १) वधी वक्तव्यता अहीं कहेवी. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

नाडिक

एकादश शते पंचम उद्देशक समाप्त.

छट्टो उद्देशो ।

१. [प्र०] पउमे णं मंते ! एगपत्तए किं एगजीचे, अणेगजीचे ? [उ०] एवं उप्पलुद्देशगवत्तद्वया निरवसेसा भाणियद्वा ।  
सेवं मंते ! सेवं मंते ! त्ति ।

छट्टो उद्देशो समत्तो ।

पष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पादजावालं पन्न शु एक जीववालं होय के अनेक जीववालं होय ? [उ०] हे गौतम ! उत्पल उद्देश  
कमा (उ० १ मू० १) कखा प्रमाणे वर्युं कहेषुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते पष्ठ उद्देशक समाप्त.

## सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कश्चिद् पणं भंते ! एगपत्तप किं एगजीवे, अणेगजीवे ? [उ०] एवं चेव निरवसेसं भाणियधं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

## सत्तमो उद्देशो समत्तो ।

## सप्तम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांदडावाळी कर्णिका शुं एक जीववाळी छे के अनेक जीववाळी छे ? [उ०] हे गौतम ! बधुं पूर्वे अमाणे कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. कर्णिका

एकादश शते सप्तम उद्देशक समाप्त.

अष्टमो उद्देशो ।

१. [प्र०] नलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगर्जावे, अणेगर्जावे ? [उ०] एव चैव निरवसेसं जावं 'अर्णतंयुत्तो' । सेवं भंते ! सेवं भंते ! चि ।

अष्टमो उद्देशो समाप्तो ।

अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एकपत्रवाळं नलिन (कमलविशेष) शुं एकजीववाळं छे के अनेकजीववाळं छे ? [उ०] हे गौतम ! ए वधुं पूर्व प्रमाणे (उ० १ सू० १) यावत् 'सर्वे जीवो अनंतवार उत्पन्न थया छे' लांसुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते अष्टम उद्देशक समाप्त.

## नवमो उद्देशो ।

१. तेषां कालेषां तेषां समेषां हस्तिनापुरे णामं णगरे होत्या । चन्नओ । तस्स णं हस्तिनापुरस्स नगरस्स बहियो उत्तरपुरत्थिमे दिस्सिभागे एत्थ णं सहसंववणे णामं उज्जाणे होत्या । संबोदुयपुप्फ-फलसमिद्धे, रम्मे, णदणवणसोत्तिप्पगासे, सुहसीतलच्छाप, मणोरमे, सादुप्फले, अकंटप, पासोदीए, जाव-पंडिरूवे । तत्थ णं हस्तिनापुरे णगरे सिवे नामं रायां होत्या । महयाहिमवंतं चन्नओ । तस्स णं सिवस्स रत्तो धारिणी णामं देवी होत्या । सुकुमालं चन्नओ । तस्से णं सिवस्स रत्तो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभदे णामं कुमारं होत्या । सुकुमालं जहा सूरियकंते, जावप-चुवेक्खमाणे २ विहरेति ।

२. तए णं तस्स सिवस्स रत्तो अन्नया कया वि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चित्तेमाणस्स अयमेयारूवे अज्जत्थिए जाव समुप्पज्जित्था--'अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं जहा तामलिस्स, जाव-पुत्तेहिं व्हामि, पस्सहिं व्हामि, रज्जेणं व्हामि, एवं रट्ठेणं, वलेणं, वाहणेणं, कोसेणं, कोट्टागारेणं, पुरेणं, अंतेउरेणं व्हामि; विपुलधण-कणग-रयणं जाव संतसारसावपज्जेणं अतीव २ अभिवह्वामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं उच्चेहमाणे विहरामि? तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं व्हामि, तं चेव जाव अभिवह्वामि, जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्ठंति, तावता मे सेयं कल्लं पादुप्पभाताए जाव जलंते सुवहं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुयं तंघियं तावसमंडगं घडावेत्ता सिवभदं कुमारं रज्जे टावेत्ता तं सुवहं लोही-लोहकडाह-कडु-

## नवम उद्देशक.

१. ते काले-ते समये हस्तिनापुर नामे नगर हतुं. वर्णन. ते हस्तिनापुर नगरनी बहार उत्तरपूर्व दिशामा-ईशानकोणमां-सह-साम्रवन नामे उद्यान हतुं. ते उद्यान सर्व ऋतुना पुष्प अने फलथी समृद्ध, रम्य अने नंदनवन समान हतुं. तेनी छाया सुखकारक अने शीतल हती, ते मनोहर, स्वादिष्टफलवाळुं, कंटकरहित, प्रसन्नता आपनार, यावत् प्रतिरूप-सुन्दर-हतुं. ते हस्तिनापुर नगरमा शिव नामे राजा हतो, ते मोटा हिमाचल पर्वतनी पेटे (सर्व राजाओमा) श्रेष्ठ हतो, [इत्यादि राजानुं वर्णन कहेवुं.] ते शिव राजाने धारिणी नामे पट्टराणी हती, तेना हाय पग सुकुमाल हता, [इत्यादि स्त्रीनुं वर्णन कहेवुं]. ते शिवराजाने धारिणी राणीथी उत्पन्न थयेले शिवभद्र नामे पुत्र हतो, तेना हाय पग सुकुमाल हता-इत्यादि कुमारनुं वर्णन सूर्यकांत राजकुमारनी पेटे\* कहेवुं. यावत् ते कुमार [राज्य, राष्ट्र, सैन्या-दिने] जोतो जोतो विहरे छे.

अवनरण.  
हस्तिनापुर.

शिवराजा.  
शिवभद्रपुत्र.

२. हवे कोइ एक दिवसे शिवराजाने पूर्वरात्रिना पाछला भागमां राज्यकारभारनो विचार करता आ आनो अय्यवसाय-संकल्प उत्पन्न थयो के मारा पूर्व पुण्यकर्मानो प्रभाव छे, इत्यादि †तामलि तापसनी पेटे कहेवुं, जे यावत् हुं पुत्रोवडे, पशुओवडे, राज्यवडे, राष्ट्र-वडे, बलवडे, वाहनवडे, कोशवडे, कोष्टागारवडे, पुरवडे अने अन्तःपुरवडे वृद्धि पामुं छुं. बळी पुष्कळ धन, कनक, रत्न यावत् सारभूत द्रव्यवडे अतिशय अलंत वृद्धि पामुं छुं, तो शुं हवे हुं मारा पूर्व पुण्यकर्मानो फलरूप एकान्त सुखने भोगवतो ज विहरं? ते माटे ज्यासुची हुं हिरण्ययी वृद्धि पामुं छुं, यावत् पूर्वे कदा प्रमाणे वृद्धि पामुं छुं, ज्यासुची सामंत राजाओ मारे तावे छे, त्यासुची मारे-काले प्रातःकाले

शिवराजानो मंत्र.

१. \* सूर्यकान्तकुमारनुं वर्णन जुओ राजप्र० प० ११५.

२. † तामलि तापसना सकल्पनुं वर्णन जुओ भग० खं० २ श० ३ उ० १ पृ० २५.

च्छुयं तंविद्यं तावसमंडगं गहाय जे इमे गंगाकुले वाणपत्या तावसा भवंति, तं जहा-होत्तिया, पोत्तिया, जहा उववाइए जाव-कट्टुसोहियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति, तत्थ णं जे ते दिसापोकपी तावसा तेसि अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोकिय-तावसत्ताए पद्धत्तए । पद्धत्ते वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिगहं अभिगिण्हिहस्सामि-‘कप्पइ मे जावजीवाए छट्टं-छट्टं’ अणिन्विच्छेणं दिसाचक्रवालेणं तत्रोकम्मेणं उट्टं वाहायो पगिज्जिय २ जाव विहरित्तए’ त्ति कट्टु एवं संपेहेति ।

३. संपेहेत्ता कहुं जाव जलंते सुवहुं लोही-लोह० जाव घडावेत्ता कोहुंविद्यपुरिसं सहावेइ, सहावेत्ता एवं वयासि-‘खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! हत्थिनागपुरं णगरं सन्मितर-वाहिरियं आसिय०’ जाव तमाणत्तियं पद्धप्पिणंति । तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोहुंविद्यपुरिसे सहावेति, सहावेत्ता एवं वयासि-‘खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिवमइस्स कुमारस्स महत्थं ३ विडलं रायाभिसेयं उवट्टवेह’ । तए णं ते कोहुंविद्यपुरिसा तहेव उवट्टवेति । तए णं से सिवे राया अणेगणना-यग-दंडनायग० जाव-संधिपालसद्धिं संपरिखुडे सिवमइं कुमारं सीहासनवरंसि पुरत्थामिमुहं णिसियावेति । णिसियावेत्ता अट्टसएणं सोवन्नियाणं फलसाणं जाव-अट्टसएणं भोमेज्जाणं फलसाणं सद्धिणीए जाव-रवेणं महया २ रायाभिसेयेणं अन्ति-सिंचति । म० २ पम्हलसुकुमालए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति । पम्हल० २ सरखेणं गोसीसेणं एवं जहेव जमा-लिस्स अलंकारो तहेव जाव-कप्परनगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेति । करित्ता करयल० जाव-कट्टु सिवमइं कुमारं जएणं विजएणं वडावेति । जएणं० २ ताहिं इट्टाहिं कंताहिं पियाहिं जहा उववाइए कृणियस्स जाव-परमाउं पालयाहि, इट्टजणसंपरिखुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स अघेसि च वहणं गामा-गर-णगर० जाव विहराहि’ ति कट्टु जयजयसइं पउंजति । तए णं से सिवमइे कुमारे राया जाते । महया हिमवंत० वन्नओ जाव-विहरइ ।

४. तए णं से सिवे राया अन्नया कयाइं सोमणंसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तंसि विपुलं असण-पाण-खा-इम-साइमं उवक्खडावेति । उवक्खडावेत्ता मित्त-णाइ-नियग० जाव-परिजणं रायाणो य सत्तिया आमंतेति । आमंतेत्ता तत्रो

सूर्य देदीप्यमान थये छते घणी लोहीओ, लोहना कडाया, कडछा अने त्रावाना वीजा तापसना उपकरणोने घडावीने शिवभद्र कुमारने राज्यमां स्थापीने घणी लोहीओ, लोहना कडाया, कडछा अने त्रावाना तापसना उपकरणो लउने, जे आ गंगाने काठे वानप्रस्थ तापसो रहे छे, ते आ प्रकारे-अग्निहोत्री, पौतिक-ब्रह्म धारण करनारा-इत्यादि “उववाइअ” सूत्रमा कखा प्रमाणे यावत्-वेओ काष्टी शरीरने तपावता विचरे छे, ते तापसोमा जे तापसो दिशाप्रोक्षक (पाणी वडे दिशाने पूजी फल पुष्पादि ग्रहण करनारा) छे, तेओनी पासे मारे मुंड थइने दिक्प्रोक्षकतापसपणे प्रत्रय्या अंगीकार करवी श्रेय छे, प्रत्रय्या ग्रहण करीने हुं आ आवा प्रकारनो अभिग्रह ग्रहण करीम, ते आ प्रकारे-यावजीव निरंतर छट्ट छट्ट करवाथी विक्कचक्रवाल तपकर्म वडे उंचा हाय राखीने रहेहुं मने कल्पे-ए प्रमाणे ते शिवराजा विचारे छे .

३. ए प्रमाणे विचारिने आवती काले प्रात.काले सूर्य देदीप्यमान छते, अनेक प्रकारना लोही, कटाया वगेरे तापसना उपकरणो तैयार करावी पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे तेओने आ प्रमाणे कहुं-हे देवानुप्रियो ! गीम आ हस्तिनापुर नगरनी वाहेर अने अंदर जल छट्टकावी साफ करावो-इत्यादि यावत् तेम करी तेओ तेनी आज्ञाने पाछी आपे छे. लारपछी ते शिवराजा फरीने पण ते कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कहुं-हे देवानुप्रियो ! गीम शिवभद्र कुमारना महाअर्थवाळा यावत् विपुल राज्याभिषेकनी तैयारी करो. लारवाद ते कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे यावत् राज्याभिषेकनी तैयारी करे छे, लारपछी ते शिवराजा अनेक गणनायक, दंडनायक, यावत् संधिपालना परिवारयुक्त शिवभद्र कुमारने उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशा सन्मुख वेसाडे छे, वेसाडीने एकसो साठ सोनाना कलशोवडे, यावत् एकसो आठ माटीना कलशोवडे, सर्व ऋद्धिथी यावत् वाटिनादिकना शब्दोवडे मोटा राज्याभिषेकथी अभिषेक करे छे. लारपछी पापण जेवा सुकुमाल अने सुगंधि गंधवल्खवडे तेनां शरीरने साफ करे छे, साफ करीने सरस गोशीर्षचंदन वडे लेप करी यावत् जेम जमालिनुं वर्णन कयुं छे तेम कल्पवृक्षनी पेटे तेने अलंकृत-विभूषित करे छे. लारपछी हाय जोडी शिवभद्र कुमारने जय अने विजयथी वधावे छे; वधावीने इष्ट, कान्त, प्रिय वाणीवडे आशीर्वाद आपता औपपातिक सूत्रमां कोणिक राजा संसुवे कखा प्रमाणे तेओए कहुं-यावत् तुं दीर्घायुपी या, अने इष्ट जनना परिवारयुक्त हस्तिनापुर नगर अने वीजा अनेक ग्राम, आकर तथा नगरोतुं स्वामिपुं भोगव-इत्यादि कहीने तेओ जय जय शब्द बोले छे. लार वाद ते शिवभद्र कुमार राजा थयो, ते मोटा हिमाचलनी पेटे सर्व राजाओमा मुख्य थइने यावत् विहरे छे, अही शिवभद्रराजातुं वर्णन करहुं.

४. लारपछी ते शिवराजा अन्य कोई दिवसे प्रशस्त तिथि, करण, दिवस अने नक्षत्रना योगमां विपुल अशन, पान, खादिम अने खादिम वस्तुओने तैयार करावे छे, तैयार करावी मित्र, ज्ञाति, यावत् पोताना परिजनने, राजाओने अने क्षत्रियोने आमन्त्रण करे

२. \* तापसोतुं वर्णन जुओ उववाइअ प० ९०-१

३. † जमालिनु वर्णन जुओ मग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १७४.

‡ कोणिकतुं वर्णन जुओ उववाइअ प० ७३-१.

पच्छा ण्हाए जाव—सरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त—णाति—नियगसयण० जाव—परिजणेणं रापहि य खत्तिपहि य सद्धिं विपुलं असण—पाण—खाइम—साइमं एवं जहा तामली जाव—सकारेति, संमाणेति । सकारेत्ता संमाणेत्तां तं मित्त—णाति० जाव—परिजणं रायाणो य खत्तिप य सिवभइं च रायाणं आपुच्छइ । आपुच्छित्ता सुवहुं लोही—लोहकडाह—कडुच्छुयं जाव—भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव तेसि अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापो—क्खियतावसत्ताए पव्वइए । पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिगहं अभिगिण्हति—‘कप्पइ मे जावञ्जीवाए छट्ठं’ तं चेव जाव अभिगहं अभिगिण्हति, अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

५. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडप तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता किडिणसंकाइयगं गिण्हति, गिण्हित्ता पुरत्थियं दिसं पोक्खेति, पुरत्थियमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवे रायरिसी, अभिरक्खित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि यं भूलाणि य तथाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य वीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ’ त्ति कट्टु पुरत्थियं दिसं पसरति, पुर० २ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव—हरियाणि य ताइं गेण्हति, गिण्हित्ता किडिणसंकाइयं भरेइ, किडि० २ दग्धे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हति, गिण्हित्ता जेणेव सए उडप तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किडिणसंकाइयगं ठवेति, किडि० २ वेदिं वहेति, वे० २ उचलेवण—संमज्जणं करेइ, उ० २ दग्ध—कलसाहत्थगए जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छति, तेणेव० २ गंगामहानदीं ओगाहेति, गंगा० २ जलमज्जणं करेइ, जल० २ जलकीडं करेइ, जल० २ जलामिसेयं करेति, जला० २ आयंतं चोक्खे परमसुइभूए देवय—पितिकयकज्जे दग्ध—कलसाहत्थगए गंगाओ महानदीओ पच्चुत्तरइ, गंगाओ० २ जेणेव सए उडप तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० २ दग्धेहि य कुसेहि य वालुयापहि य वेतिं रपति, वेतिं रपत्ता सररणं अराणिं महेति, सर० २ अग्गि पाडेति, २ अग्गि संयुक्केइ, २ समिहाकट्टाइं पक्खिवइ, समिहा० २ अग्गि उज्जालेइ, अग्गि० २ “अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे । [तं जहा—] सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जा भंडं कमंडलुं ॥ दंडदारं तह-

३, आमन्त्रण करी ल्यार वाद स्नान करी यावत् शरीरने अलंकृत करी भोजनवेलाए भोजनमंडपमा उत्तम सुखासन उपर वेसी मित्र, ज्ञाति अने पोताना खजन यावत् परिजन साथे तथा राजा अने क्षत्रियो साथे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम भोजन करी \*तामलि-तापसनी पेटे यावत् ते शिवराजा वधाओनो सत्कार करे छे, सन्मान करे छे, सत्कार अने सन्मान करीने मित्र, ज्ञाति, पोताना खजन, यावत् परिजननी तथा राजाओ, क्षत्रियो अने शिवभद्र राजानी रजा मागे छे. रजा मागीने अनेक प्रकारना लोढी, लोढाना कडायां, कडछा यावत् तापसना उचित उपकरणो लइने गंगाने काठे जे आ वानप्रस्थ तापसो रहे छे—इत्यादि सर्व पूर्ववत् जाणवुं, यावत् ते दिशाप्रोक्षक तापसनी पासे दीक्षित थई दिशाप्रोक्षकतापसरूपे प्रत्रय्या ग्रहण करी प्रत्रजित थइने ते आ प्रकारनो अभिग्रह धारण करे छे—‘मारे याव-जीव निरंतर छट्ट छट्टनो तप करवो कल्पे’—इत्यादि पूर्ववत् अभिग्रह ग्रहण करीने प्रथम छट्ट तपनो स्वीकार करी विहरे छे.

शिवराजपिनो  
अभिग्रह-

५. ल्यारवाद प्रथम छट्ट तपना पारणाना दिवसे ते शिव राजर्षि आतापना भूमिधी नीचे आवे छे, नीचे आवीने वल्कलना वस्त्र पहरी ज्या पोतानी झुपडी छे त्यां आवे छे, त्यां आवी किडिन ( वासनुं पात्र ) अने कावडने ग्रहण करे छे, ग्रहण करी पूर्व दिशाने प्रोक्षित करी ‘पूर्व दिशाना सोम महाराजा धर्मसाधनमां प्रवृत्त थएला शिव राजर्षिनुं रक्षण करो, अने पूर्व दिशामा रहेला कंद, मूल, छाल, पादडा, पुष्प, फल, बीज अने हरित—लीली वनस्पतिने लेवानो अनुज्ञा आपो’—एम कही ते शिव राजर्षि पूर्व दिशा तरफ जाय छे, जइने त्या रहेला कंद, यावत्—लीली वनस्पतिने ग्रहण करीने पोतानी कावड भरे छे. ल्यार पछी दर्भ, कुश, समिध—काष्ठ अने झाडनी खाखाने मरडी पाद-सोपाने ले छे, लेइने ज्या पोतानी झुपडी छे त्या आवे छे, आवीने कावडने नीचे मुके छे, मूकीने वेदिकाने प्रमाणित करे छे; पछी वेदि-ताने [ छाण पाणीवडे ] लीपी शुद्ध करे छे. ल्यारवाद डाम अने कलशने हाथमा लइ ज्या गंगा महानदी छे, त्या आवीने गंगा महा-नदीमा प्रवेश करे छे, प्रवेश करी डुवकी मारे छे, जलक्रीडा करे छे, अने स्नान करे छे, पछी आचमन करी चोक्खा थइ—परम पवित्र थइ देवता अने पितृकार्य करी डाम अने पाणीनो कलश हाथमा लइ गंगा महानदीयी बहार नीकलीने ज्या पोतानी झुपडी छे त्या आवे छे, आवीने डाम, कुश अने वालुका वडे वेदिने बनावे छे, बनावी मथनकाष्ठवडे अरणिने बसे छे, घसीने अग्नि पाडे छे, पाडीने अग्निने सळगावे छे, पछी तेमा समिधना काष्ठेने नाखी ते अग्निने प्रचलित करे छे, अने अग्निनी दक्षिण वालुए आ सात वस्तुओ मुके छे, ते आ प्रमाणे—“१ सकथा ( उपकरणविशेष ), २ वल्कल, ३ दीप, ४ शय्याना उपकरण, ५ कमंडल, ६ दंड अने ७ आत्मा ( पोते ). ए सर्वेने

४. \* तामलितापसनु वर्णन जुओ भग० सं० २ श० ३ उ० १ पृ० २६.

† गंगाने किनारे रहेता तापसोनु वर्णन जुओ उवाइअ प० ९०-१.



ડપ્પાળં અદ્દે તાર્દ સમાદદ્દે ।” મહુણા ય ઘણ્ણ ય તંદુલેદ્દિ ય ઝાંગિ મુણદ્, ઝાંગિ મુજિસ્તા ચરં સાદ્દેદ્, ચરં સાદ્દેદ્દા ચાં વમ્સસ્તદેવં કરેદ્, વાંલિં ૨ અતિદિપ્પયં કરેદ્, અતિદિં ૨ તથો પચ્છા અપ્પણા આદારમાદારેદિ ।

૬. તપ્પ ણં સે સિવે રાયરિસી દોષ્ઠં છટ્ટપ્પમમણં ઉવસંપલ્લિત્તા ણં વિહરદ્ । તપ્પ ણં સે સિવે રાયરિસી દોષ્ઠે છટ્ટપ્પમ-મણપારણગંસિ આયાવણભૂમીઓ પષ્ઠોરુદ્દ, આયાવણ ૨ ઇવં જહ્ઠા પદ્મપારણગં, નવરં દ્વાદિણગં દિસં પોપ્પગંતિ, દ્વાદિણ ૨ દ્વાદિણાપ્પ દિસાપ્પ જમે મહારાયા પન્થાણે પત્થિયં સેસં તં ચેવ આદારમાદારેદ્ । તપ્પ ણં સે સિવે રાયરિસી તથ્ઠં છટ્ટપ્પમમણં ઉવસંપલ્લિત્તા ણં વિહરતિ । તપ્પ ણં સે સિવે રાયરિસી સેસં તં ચેવ નવરં પચ્છિમાપ્પ દિસાપ્પ વરુણે મહારાયા પન્થાણે પત્થિયં સેસં તં ચેવ જાય આદારમાદારેદ્ । તપ્પ ણં સે સિવે રાયરિસી ચરુત્થં છટ્ટપ્પમમણં ઉવસંપલ્લિત્તા ણં વિહરદ્, તપ્પ ણં સે સિવે રાયરિસી ચરુત્થછટ્ટપ્પમમણ ૨ ઇવં તં ચેવ, નવરં ઉત્તરદિસં પોપ્પગં, ઉત્તરાણ દિસાપ્પ વેનમણે મહારાયા પન્થાણે પત્થિયં અભિરપ્પાડ સિવં, સેસં તં ચેવ જાય—તઓ પચ્છા અપ્પણા આદારમાદારેદ્ ।

૭. તપ્પ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ છટ્ટંછટ્ટેણં ધનિધ્ધિચ્છેણં દિસાચક્રવાલેણં જાય—આયાવેમાણસ્સ પગ્ગમ્મદ્દયાપ્પ જાય—વિળીયયાપ્પ અથ્થવા કયા યિ તયાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં રાઘોવસમેણં ઈદ્દા—પોદ્દ—મગ્ગણ—ગવેસણં કરેમાણસ્સ વિચ્છંમે નામં અદ્દાણે સમુપ્પદ્દે । સે ણં તેણં વિચ્છંમનાણેણં સમુપ્પદ્દેણં પાસદ્દ ઈસિંસ લોપ્પ સત્ત દીપ્પે સત્ત સમુદ્દે, તેણ પરં ન જાણતિ ન પાસતિ ।

૮. તપ્પ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ અયમેવારુવે અમ્મત્થિય્પ જાય સમુપ્પલ્લિત્થા—‘અત્થિય ણં મમં અદ્દસેસે નાણ—દંસણે સમુપ્પદ્દે, ઇવં ચલ્લુ ઈસિંસ લોપ્પ સત્ત દીવા સત્ત સમુદ્દા, તેણ પરં વોચ્છિન્ના દીવા ય સમુદ્દા ય, ઇવં સંપદ્દેદ્, ઇવં ૨ આયાવણભૂમીઓ પષ્ઠોરુદ્દ, આ ૨ વાગલવત્થનિયત્થે જેણેવ સપ્પ ઉદ્દપ્પ તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, તેણેવ ૨ સુવહું લોદ્દી—લોદ્દકડાદ્—કડુચ્છુયં જાય—મંડગં ફિદ્ધિણસંકાર્દયં ચ મેણદ્દ, ૨ જેણેવ હત્થિણાપુરે નગરે જેણેવ તાવસાવસદ્દે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, તેણેવ ૨ મંડનિક્કલેવં કરેદ્, મંડ ૨ હત્થિણાપુરે નગરે સિંઘાડગ—તિગ ૨ જાય—પહેસુ ચલ્લુ જણસ્સ ઇવમાદ્દમ્મદ્, જાય—ઇવં પરુવેદ્—‘અત્થિય ણં દેવાણુપ્પિયા ! મમં અત્થિસેસે નાણ—દંસણે સમુપ્પદ્દે, ઇવં ચલ્લુ ઈસિંસ લોપ્પ જાય દીવા ય સમુદ્દા ય’ । તપ્પ ણં તસ્સ

‘એકા કરે છે.’ પછી મધ, ઘી અને ચોલા વડે અગ્નિમાં હોમ કરે છે, હોમ કરીને ચરુ—ત્રલિ તૈયાર કરે છે, અને વલિયી વૈશ્વદેવની પૂજા કરે છે, સ્વાસ્થ્ય અતિથિની પૂજા કરી તે શિવ રાજર્ષિ પોતે આહાર કરે છે.

૬. સ્વાસ્થ્ય તે શિવરાજર્ષિ પરીવાર છટ્ટ તપ કરીને વિહરે છે, પછી તે શિવરાજર્ષિ આતાપનાભૂમિથી ઉતરી વલ્કલનું વસ પહેરે છે, ઇલાદિ વધું પ્રથમ પારણાની પેટે જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે ધીજા પારણા વખતે દક્ષિણ દિશાને પ્રોક્ષિત કરે—પૂજે, તેમ કરીને એમ કહે કે ‘દક્ષિણ દિશાના (લોકપાલ) યમ મહારાજા પ્રસ્થાન—પરલોકસાધન—મા પ્રવૃત્ત થયેલા શિવરાજર્ષિનું રક્ષણ કરો’ ઇલાદિ સર્વે પૂર્વવત્ કહેવું, યાવત્ પોતે આહાર કરે છે. પછી તે શિવરાજર્ષિ ધીજા છટ્ટ તપને સ્વીકારી વિહરે છે, તેના પારણાની વધી હત્કિત્તન પૂર્વને પેટે જાણવી, પરન્તુ વિશેષ એ છે કે, પશ્ચિમ દિશાનું પ્રોક્ષણ—પૂજન—કરે, અને એમ કહે કે પશ્ચિમ દિશાના (લોકપાલ) વરુણ મહારાજા પ્રસ્થાન—પરલોક સાધનમા પ્રવૃત્ત થયેલા શિવ રાજર્ષિનું રક્ષણ કરો, વાકી વધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. યાવત્ સ્વાસ્થ્ય પછી તે આહાર કરે. પછી તે શિવરાજર્ષિ ચોથા છટ્ટના તપને સ્વીકારી વિહરે છે—ઇલાદિ પૂર્વવત્ જાણવું. પરન્તુ (ચોથે પારણે) ઉત્તર દિશાને પૂજે છે, અને એમ કહે છે કે ‘ઉત્તર દિશાના (લોકપાલ) વૈશ્વમણ મહારાજા ધર્મસાધનમાં પ્રવૃત્ત થયેલા શિવરાજર્ષિનું રક્ષણ કરો, વાકી વધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ સ્વાસ્થ્ય પછી પોતે આહાર કરે છે.

૭. એ પ્રમાણે નિરંતર છટ્ટ છટ્ટના તપ કરવાથી દિવચક્રવાલ તપ કરતા, યાવત્ આતાપના લેના તે શિવરાજર્ષિને પ્રકૃતિની મદ્દ અને યાવત્ વિનિતતાથી અન્ય કોઈ દિવસે તેના આવરણભૂત કર્મોના ક્ષયોપશમ થવાથી ઈદ્દા, અપોહ, માર્ગા અને ગવેષણ કરતા વિભંગ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું. પછી તે ઉત્પન્ન થયેલા તે વિભંગજ્ઞાન વડે આ લોકમા સાત દ્વીપો અને સાત સમુદ્રો જુદા છે, તે પછી આગળ જાગતી નથી, કે જોતા નથી.

૮. સ્વાસ્થ્ય તે શિવરાજર્ષિને આ આવા પ્રકારનો અધ્યવસાય ઉત્પન્ન થયો કે, ‘મને અતિગયવાલું જ્ઞાન અને દર્શન ઉત્પન્ન થયું છે. અને એ પ્રમાણે આ લોકમા સાત દ્વીપ અને સાત સમુદ્રો છે, અને સ્વાસ્થ્ય દ્વીપો અને સમુદ્રો નથી’—એમ વિચારે છે, વિચારીને આતાપના ભૂમિની વધી ઉતરે છે, અને વલ્કલના વસ્ત્રો પહેરી જ્યાં પોતાની શુંપડી છે ત્યાં આવી અનેક પ્રકારના લોદ્દી, લોદ્દાના કડાયા અને કડાયા વાળી વીજા ઉપકરણો અને કાવડને પ્રહણ કરે છે, અને જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર છે અને જ્યાં તાપસોતું યાવત્ આશ્રમ છે ત્યાં આવે છે, આશ્રમ ઉપકરણ વગેરેને મૂકે છે, અને હસ્તિનાપુર નગરમાં શૃંગાટક, ત્રિક, યાવત્ રાજમાર્ગોમા ઘણા માણસોને એમ કહે છે, યાવત્ એમ પ્રરુપે છે કે, ‘હે દેવાણુપ્પિયો ! મને અતિગયવાલું જ્ઞાન અને દર્શન ઉત્પન્ન થયું છે, અને આ લોકમા એ પ્રમાણે સાત દ્વીપો અને સાત સમુદ્રો છે.



૧૨. [પ્ર૦] અતિથિ ણં મંતે ! લવણસમુદ્દે દ્વાદ્વાદં સવપ્રાદં પિ અવપ્રાદં પિ સર્ગંધ્રાદં અગંધ્રાદં પિ સરસાદં પિ અરસાદં પિ સપાસાદં પિ અપાસાદં પિ અન્નમન્નવપ્રાદં અન્નમન્નવપ્રુદાદં જાવ-વ્રડત્તાણ ચિદ્વૃત્તિ ? [૩૦] દંતા અતિથિ ।

૧૩. [પ્ર૦] અતિથિ ણં મંતે ! ધાયદસંટે દીવે દ્વાદ્વાદં સવપ્રાદં પિ પ્વં ચેવ, પ્વં જાવ-સયંભૂરમણસમુદ્દે ? [૩૦] જાવ દંતા અતિથિ ।

૧૪. તપ ણં સા મહતિમહાલિયા મહત્ત્વપરિસા સમણસ્સ ભગવથો મહાવીરસ્સ અંતિયં પ્યમટ્ટં સોઘા, નિસમ્મ દટ્ટ-તુટ્ટા સમણં ભગવં મહાવીરં વંદ્ધ નમંસદ્ધ, ચંદિત્તા નમસિત્તા જામંવ દિસં પાડ-મ્મૂયા તામંવ દિસં પડિગયા ।

૧૫. તપ ણં હત્થિણાપુરે નગરે સિંવાડગં જાવ-પહેસુ વહુજણો અન્નમન્નસ્સ પ્વમાદન્નપદ્ધ, જાવ પરુવેદ્ધ-જદ્ધે 'દેવાણુપ્પિયા ! સિવે રાયરિસી પ્વમાદન્નપદ્ધ, જાવ પરુવેદ્ધ-અતિથિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! મમં અતિસેસે નાણં જાવ-સમુદ્દા ય', તે નો ણુદ્દે સમદ્દે, સમણે ભગવં મહાવીરે પ્વમાદન્નપદ્ધ, જાવ પરુવેદ્ધ-પ્વં મલુ પ્યસ્સ સિવસ્સ રાયરિમિન્ન છટ્ટંછટ્ટેણં તં ચેવ જાવ-મંડનિન્નેવેવં કરેદ્ધ, મંડનિન્નેવેવં કરેત્તા હત્થિણાપુરે નગરે સિંવાડગં જાવ-સમુદ્દા ય । તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિ-સિસ્સ અંતિયં પ્યમટ્ટં સોઘા નિસમ્મ જાવ-સમુદ્દા ય તણ્ણં મિચ્છા, સમણે ભગવં મહાવીરે પ્વમાદન્નપદ્ધ-પ્વં મલુ જંબુહીવા-દીયા દીવા લવણાદીયા સમુદ્દા તં ચેવ જાવ અસંપેજ્ઞા દીવસમુદ્દા પદ્ધત્તા સમણાસસો !

૧૬. તપ ણં સે સિવે રાયરિસી વહુજણસ્સ અંતિયં પ્યમટ્ટં સોઘા નિસમ્મ સંકિપ્પ કંરિણ ધિતિગિચ્છિપ્પ મેદ્ધસમાવદ્ધે વલ્લુસસમાવદ્ધે જાપ્પ યાવિ હોત્થા । તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ સંકિયસ્સ કમ્પિયસ્સ જાવ-કલુસસમાવદ્ધસ્સ સે વિભગે અન્નાણે સિપ્પામેવ પરિવહિપ્પ ।

૧૭. તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ અયમેયાત્ત્વે અન્નતિથિય જાવ સમુપ્પજિન્થા-‘પ્વં મલુ સમણં ભગવં મહાવીરે આદિગરે તિલ્થગરે જાવ-સદ્ધન્નુ સવ્વટ્ઠરિસી આગાસગણં ચ્ચેણં જાવ સહસંવવણે ઉજ્જાણે અદ્ધાપડિત્ત્વં જાવ વિદ્ધરદ્ધ, ત મદ્દા ફલં જલુ તદ્દાહવાણં અરહંતાણં ભગવંતાણં નામગોયસ્સ જહ્ઠા ઉવપાદ્ધપ્પ જાવ-મહ્ઠ્ઠવણ, તં ગચ્છામિ ણં સમણં ભગવં મહાવીરે વંદામિ જાવ પ્પજ્ઞાસામિ, પ્પયં ણે દ્ધમ્મવે ય પરમ્મવે ય જાવ મવિસ્સદ્ધત્તિક્કદ્ધુ પ્પયં સંપેદેતિ ।

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! લવણ સમુદ્રમા વર્ણવાળા, વર્ણવિનાના, ગંધવાળા, ગંધ વિનાના, રસવાળા, રસવિનાના, સ્પર્શવાળા ને સ્પર્શ વિનાના દ્રવ્યો અન્યોન્ય વદ્ધ, અન્યોન્ય સ્પૃષ્ટ, યાવત્ અન્યોન્ય સવદ્ધ છે ? [૩૦] હૈ ગૌતમ ! હા, છે.

૧૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વાતકિચંડમા અને એ પ્રમાણે યાવત્ સ્વયંભૂરમણ નમુદ્રમા વર્ણવાળા ને વર્ણગહિત ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત દ્રવ્યો પરસ્પર સવદ્ધ છે ઇત્યાદિ યાવત્ ? [૩૦] હૈ ગૌતમ ! હા, છે ત્યા સુધી જાણવું.

૧૪. સ્વારવાદ તે ઊલ્લન્ત મોટી અને મહત્વયુક્ત પરિપદ્ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પાસેથી એ અર્થ સાંભળી અને અવધારી દષ્ટ તુરં યદ્ શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વાઢી નમી જે ડિગામાથી આવી હતી તે ડિગામા ગઢ.

૧૫. સ્વારવાદ હસ્તિનાપુર નગરમા ઝૂંગાટક યાવત્ વીજા માર્ગોમા ઘણા માણસો પરસ્પર આ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્ પ્રરૂપે છે કે હે દેવાણુપ્રિયો ! શિવરાજપિ જે એમ કહે છે-યાવત્ પ્રરૂપે છે-‘હે દેવાણુપ્રિયો ! મને અતિશયવાલું જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું છે, યાવત્ વીજા દ્વીપ-સમુદ્રો નથી;’ તે તેનું કથન યથાર્થ નથી. શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર એ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્ પ્રરૂપે છે કે-હટ્ટ હટ્ટના તપને નિરતર કરતા શિવરાજપિ પૂર્વે કદા પ્રમાણે યાવત્ પોતાના ઉપકરણો મૂકીને હસ્તિનાપુર નામના નગરમા ઝૂંગાટક યાવત્ વીજા માર્ગોમા એ પ્રમાણે કહે છે-યાવત્ સાત દ્વીપ-સમુદ્રો છે, વીજા નથી. સ્વારવાદ તે શિવરાજપિની પાસે એ વાત સાંભળીને અવધારીને ઘણા માણસો એમ કહે છે-‘શિવરાજપિ જે કહે છે કે માત્ર સાત દ્વીપ સમુદ્રો છે’ તે મિત્થા છે, યાવત્ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર એ પ્રમાણે કહે છે કે-‘હે આયુષ્મન્ શ્રમણ જંબૂદ્વીપાદિ દ્વીપો અને લવણાદિ સમુદ્રો એક સરસા આકારે છે-ઇત્યાદિ પૂર્વે કદા પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ અસત્યાતા દ્વીપ-સમુદ્રો કદા છે.’

૧૬. સ્વાર વાદ તે શિવરાજપિને ઘણા માણસો પાસેથી એ વાતને સાંભળીને અને અવધારીને શક્તિ, ક્ષાન્તિ, સદિગ્ધ, અનિશ્ચિત અને કલુપિત માવને પ્રાપ્ત થયા, અને શંકિત, ક્ષાન્તિ, સદિગ્ધ, અનિશ્ચિત અને કલુપિત માવને પ્રાપ્ત થયેલા શિવરાજપિનું વિભંગ નામે અજાત તરતજ નાચ પામ્યું.

૧૭. સ્વાર પછી તે શિવરાજપિને આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ યાવત્ ઉત્પન્ન થયો-‘એ પ્રમાણે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ધર્મની આદિ કરનારા, તીર્થંકર, યાવત્ સર્વજ્ઞ અને સર્વદર્શી છે, અને તેઓ આકાશમા ચાલતા વર્મચક્રવદ્ધે યાવત્ સહસ્રાન્નવન નામે ઉચાનમ્મ યયાયોગ્ય અવગ્રહ ગ્રહણ કરી યાવત્ વિહરે છે. તો તેવા પ્રકારના અરિહંત ભગવંતોના નામગોત્રનું શ્રવણ કરવું તે મદા ફલ્લવાલું છે, તે અભિગમન વદ્ધનાદિ માટે તો શું કહેવું ?-ઇત્યાદિ \*ઔપપાતિક મૂત્રમા કદા પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ એક આર્ય ધાર્મિક સુવચનનું શ્રવણ કરવું મદા ફલ્લવાલું છે, તો તેના વિપુલ અર્થનું અવધારણ કરવા માટે તો શું કહેવું ? તેથી હું શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરની પાસે જાઉં, વાટું અને નમું, યાવત્ તેઓની પર્યુપાસના કરું, એ મને આ ભવમા અને પરમ્મમા યાવત્ શ્રેયને માટે યશે’ એમ વિચારે છે.

१८. एवं २ ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसति, ता० २ सुवहुं लोही—लोहकडाह० जाव किट्ठिणसंकातिगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता तावसावसहाभो पडिनिक्खमति, ताव० २ पडिवडियवि-  
भंने हत्थिणागपुरं नगरं मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंववणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नञ्चासन्ने नाइदूरे जाव— पंजलिउडे पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे खिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालि-  
याए० जाव—आणाए आराहए भवइ ।

१९. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, निसम्म जहा खंदओ, जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ, २ सुवहुं लोही—लोहकडाह० जाव—किट्ठिणसंकातिगं एगंते पडेइ, ए० २ सयमेव पंचमु-  
ट्टियं लोयं करेति, सयमे० २ समणं भगवं महावीरं एवं जहेव उसभदत्ते तहेव पवइओ, तहेव इक्कारस अंगाइं अट्ठिज्जति, हिच सधं जाव—सधदुक्खप्पहीणे ।

२०. [प्र०] ‘भंते’त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जीवा णं भंते ! सेज्जमाणा कयरंमि संघयणे सिज्जंति ? [उ०] गोयमा ! वयरोसभणारायसंघयणे सिज्जंति । एवं जहेव उववाइए तहेव “संघ-  
णं संठाणं उच्चत्तं आउयं च परिवसणा” । एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियघा, जाव—“अघावाहं सोक्खं अणुहोति रासयं सिद्धा” ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ सिवो समत्तो ।

### एकारसए नवमो उद्देशो समत्तो ।

१८. ए प्रमाणे विचार करी ज्यां तापसोनी मठ छे त्यां आवे छे. आवी तापसोना मठमां प्रवेश करी घणी लोढी, लोढाना कडाया यावत् कावड वगरे उपकरणोने लेइ तापसोना आश्रमथी नोकळे छे. नोकळीने विभंगज्ञानरहित ते शिवराजर्षि हस्तिनापुर नगरनी वचो-  
रंख थईने ज्यां सहस्राश्रवण नामे उद्यान छे, ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवान् महावीरने त्रण वार दक्षिणा करीने वादे छे अने नमे छे. वांदी अने नमीने तेओथी वहु नजीक नहीं अने वहुदूर नहीं तेम उभा रही यावत् हाय जोडी ते शिवराजर्षि श्रमण भगवंत महावीरनी उपासना करे छे. ल्यार वाद ते शिवराजर्षिने अने मोटामा मोटी पर्पदने श्रमण भगवंत महावीर, मेकशा कहे छे. अने यावत् ते शिवराजर्षि आज्ञाना आराधक थाय छे.

शिवराजर्षिनु महा-  
वीरस्वामी पासे  
आगमन

१९. पछी ते शिवराजर्षि श्रमण भगवान् महावीरनी पासेथी धर्मने साभळी अने अवधारी \*स्कंदकना प्रकरणमा कहा प्रमाणे यावत् ईशान कोण तरफ जइ घणी लोढी, लोढाना कडाया यावत् कावड वगरे तापसोचित उपकरणोने एकात जग्याए मूके छे. मूकीने गौतानी मेळे पंच मुष्टि लोच करी, श्रमण भगवंत महावीर पासे †ऋषभदत्तनी पेठे प्रव्रज्यानी स्वीकार करे छे, अने ते प्रमाणे अग्यार गोलुं अध्ययन करे छे, तथा एज प्रमाणे यावत् ते शिवराजर्षि सर्व दुःखथी मुक्त थाय छे.

शिवराजर्षिनी वीक्षा

२०. ‘हे भगवन् ! एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे अने नमे छे, वादी अने नमीने भगवंत गौतमे आ माणे वृच्छुं—[प्र०] “हे भगवन् ! सिद्ध यथा जीवो कया संघयणमा सिद्ध थाय ? [उ०] हे गौतम ! जीवो वज्ररूपभनाराच सघयणमा सिद्ध थाय”—इत्यादि ‡औपपातिकसूत्रमा कहा प्रमाणे “संघयण, सस्थान, उंचाइ, आयुष, परिवसना (वास)”—अने ए प्रमाणे आखी सिद्धिगंडिका कहेथी; यावत् अव्यावाध (दु.खरहित) आश्रित सुखने सिद्धो अनुभवे छे. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज एम कही यावद् विहरे छे.

### एकादश शते शिवनामे नवम उद्देशक समाप्त.

१९ \* जुओ भग० खं० १ श० २ उ० १ पृ० २३८.

† ऋषभदत्तनी प्रव्रज्या जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६५.

२० ‡ सिद्धना स्वरूपसुं वर्णन जुओ औपपा० प० ११२-१.

§ औपपातिक सूत्रने अन्ते सिद्धना स्वरूपसुं वर्णन करनार “कहिं पडिह्या सिद्धा०” इत्यादि चावीश गायाना प्रकरणने सिद्धिगंडिका कहे छे.

## दसमो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिह्ने जाव-एवं घयासी-कतिविह्ने णं भंते ! लोप पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउद्विह्ने लोप पन्नत्ते, तंजहा-द्वल्लोप, खेत्तलोप, काललोप, भावलोप ।
२. [प्र०] खेत्तलोप णं भंते ! कतिविह्ने पणत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिदिह्ने पन्नत्ते, तंजहा-१ अहोलोयपेत्तलोप २ तिरियलोयपेत्तलोप, ३ उह्लोयखेत्तलोप ।
३. [प्र०] अहोलोयपेत्तलोप णं भंते ! कतिविह्ने पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविह्ने पन्नत्ते, तंजहा-र्यणप्यभापुढवि अहोलोयपेत्तलोप, जाव-अहेसत्तमापुढविअहोलोयपेत्तलोप ।
४. [प्र०] तिरियलोयपेत्तलोप णं भंते ! कतिविह्ने पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जविह्ने पन्नत्ते, तंजहा-जंजुदीवि दिवि तिरियलोयपेत्तलोप, जाव-सयंभूरमणसमुद्दे तिरियलोयपेत्तलोप ।
५. [प्र०] उह्लोगखेत्तलोप णं भंते ! कतिविह्ने पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पन्नरसविह्ने पन्नत्ते, तंजहा-सोहम्मकप्पण्णं लोपपेत्तलोप, जाव-अच्चुयउह्लोप, गेवेज्जविमाणउह्लोप, अनुत्तरविमाण० ईसिपम्मारपुढविउह्लोपेत्तलोप ।
६. [प्र०] अहोलोयपेत्तलोप णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! तप्पागारसंठिए पन्नत्ते ।

## दशम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा [ गौतम ] यावद् आ प्रमाणे वोल्या-हे भगवन् ! लोक केटला प्रकारनो कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक चार प्रकारनो कखो छे, ते आ प्रमाणे-१ द्रव्यलोक, २ क्षेत्रलोक, ३ काललोक अने ४ भावलोक.
२. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! ऋण प्रकारनो कखो छे, ते आ प्रमाणे-१ अधोलोकक्षेत्रलोक, २ तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक अने ३ ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक.
३. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! सात प्रकारनो कखो छे, ते आ प्रमाणे-१ रत्नप्रभापृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक, यावत् ७ अधःसप्तमपृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक.
४. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्य प्रकारनो कखो छे, ते आ प्रमाणे-जंजुदीपतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक, यावत् स्वयंभूरमणसमुद्रतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक.
५. [प्र०] हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! पंदर प्रकारनो कखो छे, ते आ प्रमाणे-१ सौवर्मकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, यावत् १२ अच्युतकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १३ प्रैवेयकविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १४ अनुत्तरविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक अने १५ ईपय्यागारपृथिवीऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक.
६. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक केया संस्याने छे ? [उ०] हे गौतम ! अधोलोक त्रापाने आकारे छे.

७. [प्र०] तिरियल्लोयखेत्तलोयं णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! झल्लरिसंठिए पन्नत्ते ।

८. [प्र०] उह्लोयखेत्तलोय-पुच्छा [उ०] उह्लुमुह्गाकारसंठिए पन्नत्ते ।

९. [प्र०] लोयं णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सुपइह्गसंठिए लोयं पन्नत्ते, तज्जहा-हेट्ठा विच्छिन्ने, मज्जे संखित्ते, जहा संत्तमसए पदमुद्देसए जाव अंतं करेति ।

१०. [प्र०] अलोयं णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए पन्नत्ते ।

११. [प्र०] अह्लोयखेत्तलोयं णं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपपसा ? [उ०] एवं जहा इदा दिसा तद्देव निरवसेसं भाणियच्चं, जाव-अद्दासमय ।

१२. [प्र०] तिरियल्लोयखेत्तलोयं णं भंते ! किं जीवा० ? [उ०] एवं चेव, एवं उह्लोयखेत्तलोयं वि, नवरं अरूवी विहा, अद्दासममो नत्थिं ।

१३. [प्र०] लोयं णं भंते किं जीवा० ? [उ०] जहा वितियसए अत्थियउद्देसए लोयागासे, नवरं अरूवी सत्तविहा, जाव-अहम्मत्थिकायस्स पपसा, नोआगासत्थिकाय, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायपपसा, अद्दासमय, सेसं तं चेव ।

१४. [प्र०] अलोयं णं भंते ! किं जीवा० ? [उ०] एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तद्देव निरवसेसं जाव-अणंतभागूणे ।

७. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक कैवा संस्थाने छे ? [उ०] हे गौतम ! ते झालरने आकारे छे.

तिर्यग्लोकनु  
संस्थान.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक कैवा आकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! उभा मृदंगने आकारे छे.

ऊर्ध्वलोकनु  
सस्थान.

९. [प्र०] हे भगवन् ! लोक कैवा आकारे संस्थित छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक सुप्रतिष्ठकने आकारे संस्थित छे, ते आ प्रमाणे-  
“नीचे पहाँलो, मध्यभागमा संक्षिप्त-संकीर्ण”-इत्यादि सातमा शतकना प्रथम उद्देशकमां क्हा प्रमाणे कहेहुं. [ ते लोकने उत्पन्न ज्ञान दर्शनने धारण करनारा केवलज्ञानी जाणे छे अने स्यार पछी सिद्ध थाय छे ] यावद् ‘सर्व दुःखोनो अन्त करे छे’.

लोकनु सस्थान.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक कैवा आकारे क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! अलोक पोला गोळाने आकारे क्हा छे.

अलोकनु सस्थान.

११. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक शुं जीवरूप छे, जीवदेशरूप छे, जीवप्रदेशरूप छे इत्यादि ? [उ०] हे गौतम ! जेम ऐन्द्री दिशा संबन्धे क्हुं छे ते प्रमाणे सर्व अहि जाणहुं, यावद् ‘अद्दासमय ( काल ) रूप छे’.

अधोलोक जीव-  
रूप छे इत्यादि प्रश्न.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोक शुं जीवरूप छे इत्यादि ? [उ०] पूर्ववत् जाणहुं. ए प्रमाणे ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक संबन्धे पण णहुं; परन्तु विशेष ए छे के ऊर्ध्वलोकमा अरूपी द्रव्य छ प्रकारे छे, कारण के ला अद्दा समय नथी.

तिर्यग्लोक जीव-  
रूप छे इत्यादि.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! लोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] वीजा शतकना अस्तित्त्वउद्देशकमां लोकाकाशने विषे क्हुं छे ते णे अहिं जाणहुं. परन्तु विशेष ए छे के अहि अरूपी सात प्रकारे जाणवा, यावद् ४ ‘अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ नोआकाशास्तिकाय-  
प, आकाशास्तिकायानो देश, ६ आकाशास्तिकायाना प्रदेशो अने ७ अद्दासमय. बाकी पूर्वे क्हा प्रमाणे जाणहुं.

लोक जीवरूप छे  
इत्यादि.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] जेम अस्तिकायउद्देशकमां अलोकाकाशने विषे क्हुं छे ते प्रमाणे अहिं जाणहुं, यावत् ते [ सर्वाकाशना ] ‘अनन्तमा भाग न्यून छे’.

अलोकाकाश जीव-  
रूप छे इत्यादि

९ \* लोकनुं सस्थान जुओ भग० ख० ३ श० ७ उ० १ पृ० २.

११ † जुओ ऐन्द्रीदिशासंबन्धे प्रश्न भग० खं० ३ श० १० उ १. पृ० १८९.

१३ ‡ भग० खं० १ श० २ उ० १० पृ० ३१०. सू० ६६.

१३ † १ धर्मास्तिकाय, २ धर्मास्तिकायना प्रदेशो, ३ अधर्मास्तिकाय, ४ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ आकाशास्तिकायानो देश, ६ आकाशास्तिकायाना देशो, अने ७ काल—ए अरूपीना सात प्रकार छे. तेमा प्रथम धर्मास्तिकाय छे. कारण के ते सपूर्ण लोकने विषे विद्यमान छे. धर्मास्तिकायानो देश वी, केमके लोकमा अखंड धर्मास्तिकाय छे. तथा धर्मास्तिकायाना प्रदेशो छे, कारण के धर्मास्तिकाय ते प्रदेशोना समुदायरूप छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायाना ग वे मेद जाणवा. आकाशास्तिकाय नथी, कारण के लोकमा तेनो एक भाग छे, अने तेथीज आकाशास्तिकायानो देश छे. आकाशास्तिकायाना प्रदेशो छे. या काल द्रव्य छे.—सीका.

१४ ‡ भग० खं० १ श० २ उ० १० पृ० ३१० सू० ६७.

૧૫. [પ્ર૦] અદ્દેલોગરોત્તલોગસ્ત્ત ણં મંતે ! ણમ્મિ આગાસપપ્પમે કિં જીવા, જીવદેસ્તા, જીવપ્પપ્પમા, ખજીવા, અજીવદેસ્તા, અજીવપ્પપ્પમા ? [ઉ૦] ગોયમા ! નો જીવા, જીવદેસ્તા યિ, જીવપ્પપ્પમા યિ, અજીવા યિ, ખજીવદેસ્તા યિ, અજીવપ્પપ્પમા યિ । જે જીવદેસ્તા તે નિયમા ૧ ણમ્મિદિયદેસ્તા, ૨ અદ્દવા ણમ્મિદિયદેસ્તા ય વેદ્દિયસ્સ દેમે, ૩ અદ્દવા ણમ્મિદિયદેસ્તા ય વેદ્દિયાણ ય દેસ્તા । ણમ્ મહ્હિલ્લવિરદ્દિઓ જાવ-પંચિદ્દિપ્પમ્મુ, જાવ-અદ્દવા ણમ્મિદિયદેસ્તા ય ણમ્મિદિયદેસ્તા ય । જે જીવપ્પપ્પમા તે નિયમા ૧ ણમ્મિદિયપ્પપ્પમા, ૨ અદ્દવા ણમ્મિદિયપ્પપ્પમા ય વેદ્દિયસ્સ પ્પપ્પમા, ૩ અદ્દવા ણમ્મિદિયપ્પપ્પમા ય વેદ્દિયાણ ય પ્પપ્પમા, ણમ્ આદ્દહલ્લવિરદ્દિઓ જાવ પંચિદ્દિપ્પમ્મુ, ણમ્મિદિપ્પમ્મુ તિયગંગો । જે અજીવા તે દુધિદ્દા પપ્પત્તા, તંજદ્દા-રૂવી અજીવા ય અરૂવી અજીવા ય । રૂવી તદ્દેવ, જે અરૂવી અજીવા તે પંચવિદ્દા પ્પપ્પત્તા, તંજદ્દા-૧ નોધમ્મત્થિકાપ્પ ધમ્મત્થિકાપ્પસ્સ દેસે, ૨ ધમ્મત્થિકાપ્પસ્સ પ્પપ્પસે, ણમ્ ૪ અદ્દમ્મત્થિકાપ્પસ્સ યિ, ૫ અજ્જાસમ્પ ।

૧૬. [પ્ર૦] તિરિયલોગરોત્તલોગસ્સ ણં મંતે ! ણમ્મિ આગાસપ્પપ્પમે કિં જીવા ? [ઉ૦] ણમ્ જદ્દા અદ્દેલોગરોત્તલોગસ્સ તદ્દેવ, ણમ્ ઉદ્દેલોગરોત્તલોગસ્સ યિ, નવરં અજ્જાસમ્મઓ નત્થિ, અરૂવી ચ્ચદ્દિદ્દા । લોગસ્સ જદ્દા અદ્દેલોગરોત્તલોગસ્સ ણમ્મિ આગાસપ્પપ્પસે ।

૧૭. [પ્ર૦] અલોગસ્સ ણં મંતે ! ણમ્મિ આગાસપ્પપ્પસે પુચ્છા [ઉ૦] ગોયમા ! નો જીવા, નો જીવદેસ્તા, તં ચંચ જાવ અણંતેદ્દિ અગુરુલ્લહુયગુણેદ્દિ સંજુત્તે સદ્દાગાસસ્સ અણંતમાગૂણે ।

૧૮. દ્દવ્વઓ ણં અદ્દેલોગરોત્તલોપ્પ અણંતારં જીવદ્દદ્દાદ્દ, અણંતારં અજીવદ્દદ્દાદ્દ, અણંતા જીવાજીવદ્દદ્દા । ણમ્ તિરિયલોગરોત્તલોપ્પ યિ, ણમ્ ઉદ્દેલોગરોત્તલોપ્પ યિ । દ્દવ્વઓ ણં અલોપ્પ ણેવત્થિ જીવદ્દદ્દા, નેવત્થિ અજીવદ્દદ્દા, નેવત્થિ જીવાજીવદ્દદ્દા, ણમે

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અધોલોકક્ષેત્રલોકના એક આકાશપ્રદેશમાં શું ૧ જીવો, ૨ જીવના દેશો, ૩ અજીવો, ૪ અજીવોના દેશો અને ૫ અજીવના પ્રદેશો છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જીવો નથી, પણ જીવોના દેશો, જીવોના પ્રદેશો, અજીવો, અજીવના દેશો અને અજીવના પ્રદેશો છે. તેમા લ્યા જે જીવોના દેશો છે તે અવ્યય ૧ એકેન્દ્રિયજીવોના દેશો છે ૨ અથવા એકેન્દ્રિય જીવોના દેશો અને વેદ્દિય જીવોના દેશ છે, ૩ અથવા એકેન્દ્રિય જીવોના દેશો અને વેદ્દિયોના દેશો છે. એ પ્રમાણે \*મધ્યમ મંગરહિત વાત્તીના વિવ્રલ્પે યાવદ્ અનિન્દ્રિયો-સિદ્ધો સત્ત્વ્વે જાણવા. યાવદ્ 'એકેન્દ્રિયોના દેશો અને અનિન્દ્રિયોના દેશો' છે, તથા લ્યા જે જીવોના પ્રદેશો છે તે અવ્યય એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રદેશો છે, ૧ અથવા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રદેશો અને એક વેદ્દિય જીવોના પ્રદેશો છે, ૨ અથવા એકેન્દ્રિય જીવોના પ્રદેશો અને વેદ્દિયોના પ્રદેશો છે. એ પ્રમાણે યાવત્ પંચેન્દ્રિય અને અનિન્દ્રિયો સત્ત્વ્વે પ્રયમ મંગ શિવાય ત્રણ ભાગા જાણવા તથા લ્યા જે અજીવો છે તે વે પ્રકારના કાયા છે. તે આ પ્રમાણે-રૂપિઅજીવ અને અરૂપિઅજીવ. તેમા રૂપિઅજીવો પૂર્વ પ્રમાણે જાણવા અને જે અરૂપિઅજીવો છે તે પાચ પ્રકારના કાયા છે, તે આ પ્રમાણે-૧ નોધર્માસ્તિકાયા ધર્માસ્તિકાયાનો દેશ, ૨ ધર્માસ્તિકાયાનો પ્રદેશ, એ પ્રમાણે ૪ અધર્માસ્તિકાયા સત્ત્વ્વે પણ જાણવું. અને ૫ અજ્જા સમય.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! નિર્વ્યલોકક્ષેત્રલોકના એક આકાશ પ્રદેશમાં શું જીવો છે ? ક્યાદિ [ઉ૦] જેમ અધોલોકક્ષેત્રલોકના સત્ત્વ્વે કહ્યું તેમ અહીં વધું જાણવું. એ પ્રમાણે ઊર્વ્વલોકક્ષેત્રલોકના એક આકાશ પ્રદેશને વિષે પણ જાણવું, પરન્તુ વિશેષ એ છે કે, લ્યા અજ્જાસમય નથી, માટે અરૂપી ચાર પ્રકારના છે, લોકના એક આકાશ પ્રદેશમા અધોલોકક્ષેત્રલોકના એક આકાશ પ્રદેશમા જેમ કહ્યું છે તેમ જાણવું.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અલોકના એક આકાશ પ્રદેશ સત્ત્વ્વે પ્રશ્ન. [ઉ૦] હે ગૌતમ ! લ્યા 'જીવો નથી, જીવ દેશો નથી' ક્યાદિ પૂર્વની પેઠે [ સ્. ૧૪ ] કહેવું, યાવત્ અલોક અનન્ત અગુરુલ્લહુગુણોથી સંયુક્ત છે અને સર્વાકાશના અનંતમા ભાગે ન્યૂન છે.

૧૮ [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દ્રવ્યથી અધોલોકક્ષેત્રલોકમા અનન્ત જીવ દ્રવ્યો છે, અનંત અજીવ દ્રવ્યો છે અને અનંત જીવાજીવ દ્રવ્યો છે. એ પ્રમાણે તિર્વ્યલોકક્ષેત્રલોકમા તથા ઊર્વ્વલોકક્ષેત્રલોકમા પણ જાણવું. દ્રવ્યથી અલોકમા જીવ દ્રવ્યો નથી, અજીવ દ્રવ્યો નથી અને જીવાજીવ દ્રવ્યો નથી, પણ એક અજીવદ્રવ્યનો દેશ છે, યાવત્ સર્વાકાશના અનંતમા ભાગે ન્યૂન છે. કાલથી અધોલોકક્ષેત્રલોક કોઈ

૧૫ \* ય૦ ૧૦ ઉ૦ ૧ પ્રદર્શિત એકેન્દ્રિય જીવોના દેશો અને વેદ્દિય જીવોના દેશો-એ મધ્યમ ભાગે હોતો નથી, કારણકે એક આકાશપ્રદેશમાં એક વેદ્દિય જીવોના ઘણા દેશો સમન્વિત નથી

† નોધર્માસ્તિકાયા-અધોલોકના એક આકાશપ્રદેશમા સપૂર્ણ ધર્માસ્તિકાયા નથી. પણ તેનો દેશ અને પ્રદેશ હોય છે તેથી તેને નોધર્માસ્તિકાયા કહેલ છે.

अजीवद्वदेसे जाव सद्वागासअणंतभागूणे । कालओ णं अहेल्लोयखेत्तलोए न कयाइ नासि, जाव निच्चै, एवं जाव अलोणे । भावओ णं अहेल्लोयखेत्तलोए अणंता वन्नपज्जवा, जहा खंदप, जाव अणंता अगुरुयल्लहुयपज्जवा, एवं जाव लोए । भावओ णं अलोए नेवत्थि वन्नपज्जवा, जाव नेवत्थि अगुरुयल्लहुयपज्जवा, एगे अजीवद्वदेसे, जाव अणंतभागूणे ।

१९. [प्र०] लोए णं भंते ! के महालए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! अयन्नं जंबुद्वीवे दीवे सव्वदीव० जाव—परिक्खेवेणं । तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिद्धिया जाव—महेसवखा जंबुद्वीवे दीवे मंदरे पव्व मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठेज्जा, अहेणं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि वलिपिंडे गहाय जंबुद्वीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु वहियाऽभिमुद्दीओ ठिच्चा ते चत्तारि वलिपिंडे जमगसमगं वहिरामिमुद्दे पक्खिखेज्जा, पभू णं गोयमा ! ताओ एगमेगे देवे ते चत्तारि वलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए एगे देवे उक्काभिमुद्दे पयाते, एवं दाहिणाभिमुद्दे, एवं पच्चत्थाभिमुद्दे, एवं उत्तराभिमुद्दे, एवं उह्वाभि० एगे देवे अहोभिमुद्दे पयाए, तेणं कालेणं तेणं समएणं चाससहस्साउए दारए पयाए, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, णो चेव णं जाव संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिज्जा पहीणा भवंति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए वहुए अगएवहुए ? गोयमा ! गए वहुए नो अगए वहुए, गयाउ से अगए असंखेज्जइभागे, अगयाउ से गए असंखेज्जगुणे, लोए णं गोयमा ! ए महालए पन्नत्ते ।

२०. [प्र०] अलोए णं भंते ! के महालए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! अयणं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खभेणं, जहा खंदप, जाव—परिक्खेवेणं । तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिद्धिया तहेव जाव—संपरिक्खित्ता णं संचिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तियाओ अट्ठ वलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु

दिवस न हतो एम नथी, यावत् निल्ल छे. ए प्रमाणे यावत् अलोक जाणयो. भावथी अधोलोकक्षेत्रलोकमा 'अनंत वर्ण पर्यवो छे'—इत्यादि जेम स्कंदकना अधिकारमां कहुं छे तेम जाणतुं, यावद् अनंत अगुरुलघुपर्यवो छे. ए प्रमाणे यावत् लोक सुधी जाणतुं. भावथी अलोकमां वर्णपर्यवो नथी, 'यावत् अगुरुलघुपर्यवो नथी, पण एक अजीवद्रव्यनो देश छे अने ते सर्वाकाशना अनंतमा भागे न्यून छे.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! लोक केटलो मोटो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आ जंबूद्वीप नामे द्वीप सर्व द्वीपो अने समुद्रोनी अभ्यं र छे, यावत् परिधि युक्त छे. ते काले—ते समये महार्धिक अने यावत् महासुखवाळा छ देवो जंबूद्वीपमा मेरुपर्वतने विपे मेरुपर्वतनी वल्लिकाने चारे तरफ बाँटाइने उभा रहे, अने नीचे मोटी चार दिक्कमारीओ चार वलिपिंडने ग्रहण करीने जंबूद्वीपनी चारे दिशामा बहार मुख राखीने उभी रहे, पछी तेओ ते चारे वलिपिंडने एक साथे वाहेर फेंके, तोपण हे गौतम ! तेमानो एक एक देव ते चार वलिपिंडने धिची उपर पड्या पहेला शीघ्र ग्रहण करवा समर्थ छे. हे गौतम ! एवी गतिवाळा ते देवोमांयी एक देव उत्कृष्ट यावद् त्वरित देवगतिवडे पूर्व दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक दक्षिण दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक पश्चिम दिशामा, एक उत्तर दिशामा, एक ऊर्ध्व दिशामां भने एक देव अधोदिशामा गयो. हवे ते काले, ते समये हजार वर्षना आयुपवाळो एक वाळक उत्पन्न थयो, ल्यार पछी ते वाळकना अतापिता मरण पाय्या, तोपण तेटला वखत सुधी पण ते गएला देवो लोकना अतने प्राप्त करी शकता नथी. ल्यार वाद ते वाळकनु आयु-क्षीण थयु—पूरु थयुं, तोपण ते देवो लोकान्तने प्राप्त करी शकता नथी. पछी ते वाळकना अस्थि अने मज्जा नाश पाय्या, तोपण ते लोकना अतने पामी शकता नथी, ल्यार वाद सात पेढी सुधी तेना कुलवंश नष्ट थया, तोपण ते देवो लोकातने प्राप्त करी शकता पछी ते वाळकनुं नामगोत्र पण नष्ट थयुं तोपण ते देवो लोकना अंतने पामी शकता नथी. [प्र०] जो एम छे तो हे भगवन् ! ते जोए ओळंगेलो मार्ग घणो छे के ओळंग्या विनानो मार्ग घणो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देवो वडे ओळंगायेळ—गमन करायेळ—क्षेत्र वधारे छे, पण नहि ओळंगायेळ—नहि गमन करायेळ क्षेत्र वधारे नथी. गमन करायेळ क्षेत्री नहि गमन करायेळ क्षेत्र असल्यातमा भागे छे. अने नहि गमन करायेळ क्षेत्री गमन करायेळ क्षेत्र असल्यात गुण छे. हे गौतम ! लोक एटलो मोटो कह्यो छे.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक केटलो मोटो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! 'आ मनुष्यक्षेत्र लंबाई अने पडोळाइमा पीस्ताळीइ

लोकनो निस्तार.

अलोकनो निस्तार.

१८ \* जुओ स्कंदकना अधिकारमा लोकना स्वरूपनु वर्णन भग० ख० १ श० २ उ० १ पृ० २३५

† चार स्पर्शवाळा पुद्गलस्पर्शो तथा अरूपी द्रव्यमा अगुरुलघु पर्यायो होय छे, अने ते द्रव्यो अलोकमा नहि होवाथी त्या अगुरुलघुपर्यायो नथी—टीका.

१९ † प्रण लात, सोल हजार, वसो सत्त्यावीश योजन, त्रण कोश, एकसो अठ्यावीश धनुष अने कंदक अधिक साडा तेर आगळ—एटली जंबूद्वीपनी परिधि छे—टीका.



वि विदिसासु बहियामिमुहीओ ढिच्चा ते अट्ट वलिपिंडे जमगसमगं बहियामिमुहीओ प्रन्निवचेजा, पभू णं गोयमा ! तयो एग-  
मेगे देवे ते अट्ट वलिपिंडे धरणिदलमसंपत्ते पिप्पामेव पडिसाहरित्तप; ते णं गोयमा ! देवा ताए उकिट्टाप जाव देवगईए  
लोगंते ढिच्चा असव्मावपट्टवणाए एगे देवे पुरच्छामिमुहे पयाए, एगे देवे दाहिणपुरच्छामिमुहे पयाए, एवं जाव—उत्तरपु-  
रच्छामिमुहे, एगे देवे उद्धामिमुहे, एगे देवे अहोमिमुहे पयाए । तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाए ।  
तए णं तस्स दारगस्स अस्मापियरो पहीणा भवंति, नो अेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति, तं चेव जाव—तेसि णं देवाणं  
किं गए बहए अगए बहए ? गोयमा ! नो गए बहए अगए बहए, गयाउ से अगए अणंतगुणे, अगयाउ से गए अणंतमागे,  
अलोए णं गोयमा ! एमहालए पन्नते ।

२१. [प्र०] लोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपपसे जे एगिंदियपपसा जाव—पंचिंदियपपसा अणिंदियपपसा अन्नमन्न-  
वच्चा, अन्नमन्नपुट्टा, जाव—अन्नमन्नसममरघडत्ताए चिट्ठंति ? अत्थि णं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पा-  
यंति, छविच्छेदं वा करंति ? [उ०] णो तिण्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—लोगस्स णं एगंमि आगासपपसे  
एगिंदियपपसा जाव चिट्ठंति, णत्थि णं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आवाहं वा जाव करंति ?, [उ०] गोयमा ! से जहानामए  
जट्टिया सिया सिंगारागारचाखेसा, जाव—कलिया रंगट्टाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि वचीसइविहस्स नट्टस्स  
अन्नयरं नट्टविहं उवदंसेजा, से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिसाए दिट्ठीए सच्चओ समंता समभिलोपंति? हंता  
संभिलोपंति, ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सच्चओ समंता संनिपडियाओ ?, हंता सच्चिपडियाओ, अत्थि णं  
गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आवाहं वा वावाहं वा उप्पायंति, छविच्छेदं वा करंति ?, णो तिण्ठे समट्ठे ।  
अहवा सा नट्टिया तासि दिट्ठीणं किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पायंति, छविच्छेदं वा करेइ ? णो तिण्ठे समट्ठे । ताओ वा  
दिट्ठीओ अन्नमन्नाए दिट्ठीए किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पायंति, छविच्छेदं वा करंति ?, णो तिण्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं  
गोयमा ! एवं बुच्चइ—तं चेव जाव छविच्छेदं वा करंति ।

लाख योजन छे—इत्यादि जेम \*स्कंदकना अधिकारमां कहुं छे तेम जाणवुं, यावत् ते परिवियुक्त छे. ते काले—ते समये दस महर्षिक  
देवो पूर्वनी पेठे ते मनुष्य लोकनी चारे बाजु वीटाइने उभा रहे. तेनी नीचे मोटी आठ टिकुमारीओ आठ वलिपिंडने छेदने मानुपोत्तर  
पर्वतनी चारे दिशामां अने चारे विदिशामां बाह्यामिमुख उमी रहे अने ते आठ वलि पिंडने छेदने एकज साथे मानुपोत्तर पर्वतनी बाहे-  
रनी दिशामां फेंके, तो हे गौतम ! तेमानो कोई पण एक देव ते आठ वलिपिंडोने पृथिवी उपर पत्था पहेलं शीघ्र संहरवा समर्थ छे.  
गौतम ! ते देवो उच्छट्ट, यावद् स्वरित देवगतिथी लोकना अतमा उभा रही असत् कल्पना वडे एक देव पूर्व दिशा तरफ जाय, एक ते  
दक्षिणपूर्व तरफ जाय, अने ए प्रमाणे यावत् एक देव पूर्व तरफ जाय, ब्रह्मी एक देव ऊर्ध्व दिशा तरफ जाय, अने एक देव अधोदि-  
तरफ जाय, ते काले—ते समये लाख वर्षना आयुपवाव्य एक बालकनो जन्म थाय, पछी तेना मातापिता मरण पसे तोपण ते देवो अलो-  
कना अन्तने प्राप्त करी शकता नथी—इत्यादि पूर्वे कहेलुं. अही कहेलुं. यावत् [प्र०] हे भगवन् ! ते देवोनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे  
नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु नथी, पण नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे. ग-  
करायेला क्षेत्र करना नहि गमन करायेलुं क्षेत्र अनन्तगुण छे, अने नहि गमन करायेला क्षेत्र करता गमन करायेलुं क्षेत्र अनंतमे भागे छे  
हे गौतम ! अलोक एटलो मोटो कह्यो छे.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमा जे एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो छे, यावत् पंचेन्द्रियना प्रदेशो अने अ-  
न्द्रियना प्रदेशो छे ते शुं वधा परस्पर बद्ध छे, अन्योऽन्य स्पृष्ट छे, यावद् अन्योन्य संबद्ध छे ? वळी हे भगवन् ! ते वधा परस्पर एक  
बीजाने काइ पण आवाधा ( पीडा ) व्यावाधा ( विघेप पीडा ) उत्पन्न करे, तथा अवयवनो छेद करे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ ययार्थ  
नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कटो छे के लोकना एक आकाशप्रदेशमां जे एकेन्द्रियना प्रदेशो यावत् रहे छे, अ-  
ते परस्पर एक बीजाने काइ पण आवाधा वा व्यावाधा करता नथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम शृंगारना आकार सहित सुन्दर वेपवाळी अ-  
संगीतादिने विषे निपुणतावाळी कोई एक नर्तकी होय अने ते सेंकडो अथवा लाखो माणसोथी भरेला रंगस्थानमा वजीश प्रकारना नाच-  
मातुं कोई एक प्रकारतुं नाच्य देखाडे तो हे गौतम ! ते प्रेक्षको शुं ते नर्तकीने अनिमेष दृष्टिथी चोतरफ जुए ? हा, भगवन् ! जुए. तो  
हे गौतम ! ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओ शुं ते नर्तकीने विषे चारे बाजुथी पडेली होय छे ? हा, पडेली होय छे. हे गौतम ! प्रेक्षकोनी ते दृष्टिओ  
ते नर्तकीने काइ पण आवाधा वा व्यावाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? हे भगवन् ! ए अर्थ योग्य नथी. अथवा ते  
नर्तकी ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओने कंड पण आवाधा के व्यावाधा उत्पन्न करे अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? ए अर्थ ययार्थ नथी. अथवा  
ते दृष्टिओ परस्पर एक बीजो दृष्टिओने काइपण आवाधा के व्यावाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? ए अर्थ ययार्थ नथी.  
अर्थात् न करे, ते हेतुथी एम कहेवाप छे के पूर्वोक्त यावत् अवयवनो छेद करता नथी.

२२. [प्र०] लोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपए जहन्नपए जीवपएसाणं, उक्कोसपए जीवपएसाणं, सच्चजीवाण य कयरे कयरे० जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सवत्थोवा लोगस्स एगंमि आगासपएसे जहन्नपए जीवपएसा, सच्चजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपएसा विसेसाहिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

एकारससए दसमीहेसो समत्तो ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्यपदे रहेला जीवप्रदेशो, उक्कष्टपदे रहेला जीवोमां कोण कोना करतां यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्य पदे रहेला जीवप्रदेशो सीयो धौडा छे, तेना करतां सर्व जीवो असंख्यात गुण छे, अने ते करतां पण उक्कष्ट पदे रहेला जीवप्रदेशो विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, एम कही [ भगवान् गौतम ] यावद् विहरे छे.

प्रदेशमां  
उक्कष्ट  
पदे रहेला जीव प्र-  
देशो तथा सर्व जी-  
वोनु अरूपबद्धाव.

एकादश शते दशम उद्देश समाप्त.

## एकारसमो उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं तेणं समणं वाणियगामे णामं नगरे होत्था, वपन्नो । दृतिपलासप च्चेइप, वपन्नो । जाव-पुढवि-सिलापट्टो । तत्थ णं वाणियगामे नगरे सुदंसणे णामं सेट्टी परिवसइ, अट्टे, जाव-अपरिभूण समणोवासप अभिगयजीवा-जीवे जाव-विहरइ । सामी समोसडे, जाव-परिसा पञ्जुवासइ । तप णं से सुदंसणे सेट्टी इमीसे कदाप लद्धे समणे हट्ट-तुट्टे णहाप कय-जाव-पायच्छिचे सधालंकारविभूसिप साओ गिहाओ पटिनिक्कमइ, साओ २ सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं मइयापुरिसवगुरापरिक्कित्ते वाणियगामं नगरं मज्जे-मज्जेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव दृतिपलासे च्चेइप जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उचागच्छइ । नेणेव ० २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तंजहा-सच्चित्ताणं द्वाणं ० जहा उसमदत्तो, जाव-तिविहाप पञ्जुवासणाप पञ्जुवासइ । तप णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्टिस्स तीसे य मइतिमहालयाप जाव-आराहप भवइ । तप णं से सुदंसणे सेट्टी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोधा, निसम्म हट्ट-तुट्टं उट्टाप उट्टेइ, उट्टाप ० २ -त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव-नमंसित्ता एवं वयासी—

२. [प्र०] इद्विहे णं भंते! काले पन्नत्ते? [उ०] सुदंसणा! चउद्धिहे काले पन्नत्ते, तंजहा-१ पमाणकाले, २ अट्ट उनिद्धत्तिकाले, ३ मरणकाले, ४ अद्धाकाले ।

## अगीयारमो उद्देशक.

१. ते काले, ते समये वाणियग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. दृतिपलासप चैत्य हतु. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते वाणि-व्यग्राम नगरमां सुदर्शन नामे शेठ रहेतो हतो; ते आद्य-वर्णन, यावत् अपरिभूत-कोइथी पराभव न पामे तेवो, जीवा-जीव तत्त्वतो जाण-नार श्रमणोपासक हतो. त्या महावीर स्वामी समवसर्या. यावत् पर्यट्-जनसमुदाये पर्युपासना करे छे. लार वाद महावीर स्वामी आज्यानी आ-वात सांभळी सुदर्शन शेठ हर्षित अने संतुष्ट थया, अने स्नान करी, बलिकर्म यावत् मंगलरूप प्रायश्चित्त करी, सर्व अलंकारथी विभूषित-थइ, पोताना घेरथी बहार नीकळे छे, बहार नीकळीने माथे धारण कगता कोरटकपुष्पनी माळ्यावाळा छत्र सहित पगे चालीने घण-मनुष्योना समुदायरूप वागुरा-बन्धनथी विंटायेला ते सुदर्शन शेठ वाणियग्राम नगरनी वचोवच थईने नीकळे छे. नीकळीने ज्या दृतिप-लास चैत्य छे, अने ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे त्या आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पाच प्रकारना अभिगभव-जाव छे, ते अभिगमो आ प्रमाणे छे-१ 'सचित्त द्रव्योने ल्याग करवो'-इत्यादि जेम "ऋषभदत्तना प्रकरणमा कळुं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत् ते सुदर्शन शेठ त्रण प्रकारनी पर्युपासना वडे पर्युपासे छे. लार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ते सुदर्शन शेठने अने ते मोटामा मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत् ते सुदर्शन शेठ आराधक थाय छे. लार पछी सुदर्शन शेठ श्रमण भगवंत महावीर पासेयी धर्म सांभळी अने अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थइ उभा थाय छे, उभा थईने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, यावद् नमस्कार करी-तेणे आ प्रमाणे पूछ्यु—

२. [प्र०] हे भगवन्! काल केठला प्रकारनो कळो छे? [उ०] हे सुदर्शन! काल चार प्रकारनो कळो छे; ते आ प्रमाणे-१ प्रमाणकाल, २ यथायुर्निर्वात्तिकाल, ३ मरणकाल अने ४ अद्धाकाल.

३. [प्र०] से किं तं पमाणकाले ? [उ०] पमाणकाले दुविहे पन्नत्ते, तं-जहा-दिवसप्यमाणकाले, राइप्यमाणकाले य । चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवइ । उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ।

४. [प्र०] जदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति, तदा णं कतिभागमुहुत्त-भागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति ? जदा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवह्माणी २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? [उ०] सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तदा णं वावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । जदा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तथा णं वावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिवह्माणी २ उक्कोसिया अद्धपंचम-मुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति ।

५. [प्र०] कदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स राईए वा पोरिसी भवइ, कदा वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? [उ०] सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवाल-समुहुत्ता राई भवइ तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ । जदा णं उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्तिया राई भवति, जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ।

६. [प्र०] कदा णं भंते ! उक्कोसिए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, कदा वा उक्को-सिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवति, जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ? [उ०] सुदंसणा ! आसाढपुत्तिमाए उक्कोसिए अट्टार-समुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । पोसस्स पुत्तिमाए णं उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति ? [उ०] हन्ता, अत्थि ।

८. [प्र०] कदा णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति ? [उ०] सुदंसणा ! चित्ता-सोयपुत्तिमासु णं पत्थ णं

३. [प्र०] हे भगवन् ! प्रमाणकाल केटला प्रकारे छे ? [उ०] प्रमाणकाल वे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-दिवसप्रमाणकाल रने रात्रीप्रमाणकाल, अर्थात् चार पौरुपीना-प्रहरनो दिवस थाय छे, अने चार पौरुपीनी रात्री थाय छे. अने उत्कृष्ट-मोटामा मोटी सांडा चार मुहूर्तनी पौरुपी दिवसनी, अने रात्रिनी थाय छे. तथा जघन्य-न्हानामा न्हानो पौरुपी दिवस अने रात्रिनी त्रण मुहूर्तनी थाय छे.

प्रमाणकाल.

४. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे दिवसे के रात्रीए साडा चार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुपी होय छे ल्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग घटती घटती दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुपी थाय ? अने ज्यारे दिवसे के रात्रीए त्रण मुहूर्तनी न्हानामा न्हानो पौरुपी होय छे ल्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग वधती वधती दिवस अने रात्रीनी साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुपी थाय ? [उ०] हे सुदर्शन ! ज्यारे दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुपी होय छे ल्यारे ते मुहूर्तना एकसो वावीशमा भाग जेटली घटती घटती दिवस अने रात्रीनी जघन्य त्रण मुहूर्तनी पौरुपी थाय छे, अने ज्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुपी होय छे ल्यारे मुहूर्तना एकसो वावीशमा भाग जेटली वधती वधती दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुपी थाय छे.

५. [प्र०] हे भगवन् ! क्यारे दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुपी होय, अने क्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुपी होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! ज्यारे अट्टारमुहूर्तनो मोटो दिवस होय अने वार मुहूर्तनी न्हानो रात्री होय ल्यारे साडाचार मुहूर्तनी दिवसनी उत्कृष्ट पौरुपी होय छे, अने रात्रीनी त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुपी होय छे. तथा ज्यारे अट्टारमुहूर्तनी मोटी रात्री होय अने वार मुहूर्तनो न्हानो दिवस होय ल्यारे साडा चार मुहूर्तनी रात्रिनी उत्कृष्ट पौरुपी होय छे, अने त्रण मुहूर्तनी दिवसनी जघन्य पौरुपी होय छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अट्टार मुहूर्तनो मोटो दिवस, अने वार मुहूर्तनी न्हानो रात्री क्यारे होय ? तथा अट्टार मुहूर्तनी मोटी रात्री अने वार मुहूर्तनो न्हानो दिवस क्यारे होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! आपाढपूर्णिमाने विपे अट्टार मुहूर्तनो मोटो दिवस होय छे, अने वार मुहूर्तनी न्हानो रात्री होय छे. तथा पोपमासनी पूर्णिमाने समये अट्टार मुहूर्तनी मोटी रात्री अने वार मुहूर्तनो न्हानो दिवस होय छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! दिवस अने रात्री ए वने सरखा होय ? [उ०] हा, होय.

८. [प्र०] क्यारे ( दिवस अने रात्री ) सरखा होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! ज्यारे चैत्री पूनम अने आसो मासनी पूनम होय ल्यारे

दिवसा य राईओ य समा चैव भवन्ति, पन्नरसमुद्रुत्ते दिवसे पन्नरसमुद्रुत्ता राई भवद् । चउभागमुद्रुत्तभागूणा चउमुद्रुत्ता दिवसस्त वा राईण वा पौरिसी भवद् । सेत्तं पमाणकाले ।

९. [प्र०] से किं तं अहाउनिघत्तिकाले ? [उ०] अहाउनिघत्तिकाले जन्नं नेरइण्ण वा तिरिक्काजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निघत्तियं सेत्तं पालेमाणे अहाउनिघत्तिकाले ।

१०. [प्र०] से किं तं मरणकाले ? [उ०] जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ सेत्तं मरणकाले ।

११. [प्र०] से किं तं अद्धाकाले ? [उ०] अद्धाकाले अणेगविहं पन्नत्ते । से णं समयट्टयाय आवलियट्टयाय जाव-उस्तप्पिणीट्टयाय । एस णं सुदंसणा ! अद्धादोहारच्छेदेणं छिन्नमाणी जादे विभागं नो ह्यधमागच्छइ सेत्तं समय । समयट्टयाय असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा 'आवलिय' त्ति पबुच्चइ । संखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउइसप जाव-सागरोवमस्त उ एगस्त भवे परिमाणं ।

१२. [प्र०] एणहि णं मंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयणं ? [उ०] सुदंसणा ! एणहिं पलिओवम-सागरोवमेहिं नेरइय-तिरिक्काजोणिय-मणुस्त-देवाणं आउयारं मविजंति ।

१३. [प्र०] नेरइयाणं मंते ! केवइयं कालं टिईं पन्नत्ता ? [उ०] एयं टिइपइं निरवसेसं नाणियधं जाव-अजहन्नमणुओ-सेणं तेत्तीसं सागरोवमारं टिति पन्नत्ता ।

१४. [प्र०] अन्धिय णं मंते ! एणसि पलिओवमसागरोवमाणं यणति वा अचचणति वा ? [उ०] हन्ता, अन्धिय ।

१५. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एयं बुच्चइ 'अन्धिय णं एणसि णं पलिओवम-सागरोवमाणं जाव-अचचणति वा' ? [उ०] एयं खलु सुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समयणं हत्तिणागपुरे नामं नगरे होन्था, वन्नओ । सट्टसंघणे उज्जाणे, वन्नओ । तत्थ णं हत्तिणागपुरे नगरे वले नामं राया होत्था, वन्नओ । तस्त णं वलस्त रओ पभावई णामं देवी होन्था । सुकुमाल० वन्नओ, जाव-विहरइ । तए णं सा पभावई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसिगंसि वासघरंसि अंभितरओ सच्चिकम्मो, चाहिरओ

दिवस अने रात्री ए वन्ने सरखा होय छे. ल्यारे पंदर मुहुर्तनो दिवस होय छे अने पंदर मुहुर्तना रात्री होय छे. अने ते दिवस अने रात्रीनो मुहुर्तना चोथा माने न्यून चार मुहुर्तना पीरपी होय छे. ए प्रमाणे प्रमाणकाल कइयो.

९. [प्र०] हे भगवन् ! यथायुर्निर्घृत्तिकाल केवा प्रकारे कहेलो छे ? [उ०] जे कोट नैरयिक, निर्यचयोनिक, मनुष्य के देवे पो जेहु आयुष्य बांध्यु छे ते प्रकारे तेनुं पालन करे ते यथायुर्निर्घृत्तिकाल कहैवाय छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! मरणकाल ए शुं छे ? [उ०] (ज्यारे) शरीरयो जीवनो अथवा जीवयी शरीरनो वियोग थाप (ल्यारे) । मरणकाल कहैवाय छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! अद्धाकाल ए केटला प्रकारे छे ? [उ०] अद्धाकाल अनेक प्रकारनो कइयो छे, समयरूपे, आवलिकारूपे अने यावद् उत्सर्पिणीरूपे. हे सुदर्शन ! कालना वे भाग करवा छतां ज्यारे तेना वे भाग न ज धइ अके ते काल समयरूपे समय क वाय छे. असह्येय समयोनो समुदाय मज्जायी एक आवलिका थाय छे. संख्यान आवलिकानो [एक उच्छ्वास] थाय छे-इत्यादि वधुं शालि उद्देशकमां कइया प्रमाणे यावत् सागरोपमना प्रमाण सुची जाणवुं.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ए पल्योपम अने सागरोपमरूपं शुं प्रयोजन छे ? [उ०] हे सुदर्शन ! ए पल्योपम अने सागरोपम वडे नैरयिक, निर्यचयोनिक, मनुष्य तथा देवोनो आयुपोनुं माप करवामां आवे छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोनो स्थिति (आयुष) केटला काल सुचीनो कही छे ? [उ०] अही असंपूर्ण स्थितिपद कहेवुं, यावद् 'पर्याप्त सर्वायसिद्ध देवोनो' लच्छुट नहि अने जवन्थ नहि एवां तेवीश सागरोपमनो स्थिति कही छे' ल्यां सुची जाणवुं.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ए पल्योपम तथा सागरोपमनो क्षय के अपचय थाय छे ? [उ०] हा, थाय छे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुयी कहो छो के पल्योपम अने सागरोपमनो यावत् अपचय थाय छे ? [उ०] हे सुदर्शन ! ए प्रमाणे खरेखर ते काले, ते समये हत्तिनागपुर नामे नगर हतुं. वर्णन. ल्या सट्टसाम्नवन नामे उद्यान हतुं. वर्णन. ते हत्तिनागपुर नगरमां वल नामे राजा हतो. वर्णन. ते वल राजाने प्रभावतो नामे राणी हती. तेना हाय पग सुकुमाल हता-इत्यादि वर्णन जाणवुं. यावत् ते विहरती हती. ल्यार वाद अन्य कोइ पण दिवसे तेवा प्रकारना, अंदर चित्रवाळा, बहारपी घोळेला, घसेला अने सुंवाअ करेला, जेने

दूमिय-घट्ट-मट्टे, विचिचत्तउल्लोग-चिल्लियतले, मणि-रयणपणासियंधयारे, बहुसम-सुविभक्तदेसभाए, पंचवन्न-सरस-सुरभि-  
मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए, कालागुरुपवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्कधूवमधमघंतगंधुदुयाभिरामे, सुगंधि-वरगंधिप, गंधवट्टिभूए तंसि  
तारिसगंसि सयणिजंसि सालिगणवट्टिए, उभओविच्चोयणे, दुहओ उन्नए, मज्जे णय-गंभीरे, गंगापुलिनवालुयउद्दालसालिसए,  
उवचिय-खोमिय-दुगुल्लपट्टपडिच्छायणे, सुविरइयरयत्ताणे, रत्तंसुयसंबुए, सुरस्मे, आइणग-रूय-वूर-णवनीय-तूलफासे,  
सुगंधवरकुसुम-बुन्न-सयणोवयारकलिए, अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्त-जागरा ओहीरमाणी २ अयमेयारूवं ओरालं, कल्लणं,  
सिवं, धन्नं, मंगल्लं, सस्सिरियं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा ।

१६. हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-द्वगरय-रययमहासेल-पंडुरतरोरुरमणिज्ज-पेच्छणिज्जं, थिर-लट्ट-पउट्ट-  
वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ट-विसिट्ट-तिवखदाढाविडंविद्यमुहं, परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइअसोभंतलट्टउट्टं, रत्तुप्पलपत्तमउअं-  
सुकुमालतालुजीहं, मूसागयपवरकणगताविअभावत्तायंत-वट्ट-तडिविमलसरिसनयणं, विसालपीवरोहं, पडिपुत्रविपुलखंधं,  
मिउविसयसुट्टमलयखण-पसत्थ-विच्छिन्न-कैसरसडोवसोभियं, ऊसिय-सुनिग्गिय-सुजाय-अप्फोडिअलंगूलं, सोमं, सोमा-  
कारं, लीलायंतं, जंभायंतं, नहयलाओ ओवयमाणं, निययवयणमतिवयंतं, सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा ।

१७. तए णं सा पभावती देवी अयमेयारूवं ओरालं जाव-सस्सिरियं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी इट्ट-  
तुट्ट-जाव-हियया धाराहयकलंबवुप्फगं पिव समूसियरोमकूवा तं सुविणं ओगिण्हति, ओगिण्हत्ता सयणिज्जाओ अब्बुट्टेइ,  
सय० २ अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंविद्याए रायहंससरिसीए गइए जेणेव वलस्स रत्तो सयणिजे तेणेव उचागच्छइ, तेणेव०  
२ वलं रायं ताहं इट्टाहं कंताहं पियाहं मणुत्ताहं मणामाहं ओरालाहं कल्लणाहं सिवाहं धन्नाहं मंगल्लाहं सस्सिरि-  
याहं मिय-महुर-मंजुलाहं गिराहं संलवमाणी २ पडिवोहेति, पडि० २ वलेणं रत्ता अब्भणुत्ताया समाणी नाणामणि-  
रयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि णिसीयति, णिसियित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया वलं रायं ताहं इट्टाहं कंताहं  
जाव-संलवमाणी २ एवं वयासी—

उपरनो भाग विविध चित्रयुक्त अने नीचेनो भाग सुशोभित छे एवा, मणि अने रत्नना प्रकाशथी अंधकाररहित, बहु समान अने सुविभक्त  
भागवाळा, मुकेला पांच वर्णना सरस अने सुगंधी पुप्पपुंजना उपचार वडे युक्त, उत्तम कालागुरु, कीन्दरु अने तुरुक्क-शिलारसना धू-  
ची चोतरफ फेलायेला सुगंधना उद्भवथी सुंदर, सुगंधि पदार्थोथी सुवासित थयेला, सुगंधि द्रव्यनी गुटिका जेवा ते वासधरमा तकीयास-  
त्त, माथे अने पगे ओशीकावाळी, वने वाजुए उंची, वचमा नमेली अने विशाल, गगाना किनारानी रेतीना अवदाल सरखी ( अलंत  
पल ), भरेला क्षौमिक-रेशमी दुकूलना पट्टथी आच्छादित, रजस्वणथी ( उडती धूळने अटकावनार वखथी ) टंकायेली, रक्तांशुक-  
रदानी सहित, सुरम्य, आजिनक ( एक जातनुं चामडांनुं कोमळ वख ), रू, वरु, माखण अने आकडाना रूना समान स्पर्शवाळी,  
गंधि उत्तम पुप्पो, चूर्ण, अने बीजा शयनोपचारथी युक्त एवी शय्यामां कंडक सुती अने जागती निद्रा लेती लेती प्रभावती देवी अर्ध-  
ीना समये आ एवा प्रकारना, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगलकारक अने शोभा युक्त महास्वप्ने जोइने जागी.

शय्या.

महास्वप्ने जोइ  
प्रभावती जागी.

सिंहनुं वर्णन.

सिंहने स्वप्ना  
जोइने जागी.

१६. मोतीना हार, रजत, क्षीरसमुद्र, चंद्रना किरण, पाणीना विंदु अने रूपाना मोटा पर्वत जेवा धोळा, विशाल, रमणीय अने  
नीय, स्थिर अने सुंदर प्रकोष्ठवाळा, गोळ, पुष्ट, सुश्लिष्ट, विशिष्ट, अने तीक्ष्ण दाढोवडे फाडेल्या मुखवाळा, संस्कारित उत्तम कमलना  
वा कोमळ, प्रमाणयुक्त अने अत्यन्त सुशोभित ओष्ठवाळा, राता कमलना पत्रनी जेम अलंत कोमळ ताळु अने जीभवाळा, मूषामां रहेला,  
प्रिथी तपावेल अने आवर्त करता उत्तम सुवर्णना समान वर्णवाळी गोळ अने विजळीना जेवी निर्मळ आखवाळा, विशाल अने पुष्ट जंघा-  
ळा, सपूर्ण अने विपुल रकंधवाळा, कोमळ, विशद-स्पष्ट, सूक्ष्म, अने प्रशस्त, लक्षणवाळी विस्तीर्ण कैसरानी छटाथी सुशोभित, उंचा  
पेला, सारीरीते नीचे नमावेल, सुन्दर अने पृथिवी उपर पछाडेल पृच्छाथी युक्त, सौम्य, सौम्य आकारवाळा, लीला करता, वगासां खाता  
ने आकाश थकी उतरी पोताना मुखमा प्रवेश करता सिंहने स्वप्ना जोइ ते प्रभावती देवी जागी.

१७. स्यार वाद ते प्रभावती देवी आ आवा प्रकारना उदार यावत् शोभावाळा महास्वप्ने जोइने जागी अने हर्षित तथा सतुष्ट  
दयवाळी थई, यावत् मेघनी धारथी विकसित थयेला कदंबकना पुप्पनी पेठे रोमांचित थयेली [ प्रभावती देवी ] ते स्वप्नुं स्मरण करे  
इ, स्मरण करीने पोताना शयनथी उठी त्वराविनानी, चपलतरहित, संभ्रमविना, विलंबरहित पणे राजहंससमान गतिवडे ज्यां वल-  
जातुं शयनगृह छे त्या आवे छे, आधीने इष्ट, कात, प्रिय, मनोज्ञ, मनगमती, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगल्य, सौन्दर्ययुक्त, मित,  
धुर अने मंजुल-कोमळ वाणीवडे बोलती २ ते वल राजाने जगाडे छे. स्यार वाद ते वल राजानी अनुमतिथी विचित्र मणि अने रत्नोनी  
चना वडे विचित्र भद्रासनमा वेसे छे. सुखासनमां वेठेली स्वस्थ अने शान्त थएली ते प्रभावती देवीए इष्ट, प्रिय, यावत् मधुर वाणीथी  
बोलतां २ आ प्रमाणे कहुं—

वलराजाना शयन-  
गृह तरफ आवे छे.

૧૮. एवं खलु अहं देवाणुष्विया ! अत्र तंसि तारिसंगंसि सयणिजंसि सार्लिगण० तं चैव जाव-नियगययणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुष्विया ! पयस्स ओरालस्स जाव-महासुविणस्स के मन्ने कल्लापे फलविचिचिसेसे भविस्सइ ? तप णं से बले राया पमावइए देवीए अंतियं पयमट्टं सोच्चा निसम्म हट्ट-तुट्ट० जाव-हयदियए धाराहयनीयसु-रभिकुसुमचंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हत्ता इहं पविस्सइ, इहं पविसित्ता अप्पणो सामा-विपणं महपुवपणं बुद्धिविजाणेणं तस्स सुविणस्स अथोग्गहणं करेइ, तस्स० २-त्ता पमावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव-मंगल्लाहिं मिय-महुर-सस्सिरि० संलवमाणे २ एवं वयासी—

૧૯. ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लापे णं तुमे जाव-सस्सिरीए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, आरोग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाप-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, अन्धलामो देवाणुष्विया ! भोगलामो देवाणुष्विया ! पुत्तलामो देवाणु-ष्विया ! रत्तलामो देवाणुष्विया ! एवं खलु तुमं देवाणुष्विया ! णवण्हं मासाणं वट्टपडिपुत्राणं अद्धमाणराइदियाणं विड्ढंताणं अम्हं कुलकेउं, कुलदीवं, कुलपद्ययं, कुलवडंसयं, कुलतिलगं, कुलकित्तिकरं, कुलनंदिकरं, कुलजसकरं, कुलाधारं, कुलपायवं, कुलविवद्वणकरं, सुकुमालपाणि-पायं, अहीणपडिपुत्रपंचिन्द्रियसरीरं, जाव-सस्सिलोमाकारं, कंतं, पियदंसणं, सुखं, देवकुमार-स्समप्पमं दारगं पयाहिसि ।

૨૦. से वि य णं दारए उम्मुक्कवालमावे चिन्नायपरिणयमित्ते जोद्धणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विकंतं विवियन्न-विडलवल-वाहणे रत्तवई राया भविस्सइ । तं उराले णं तुमे जाव-सुमिणे दिट्ठे, आरोग-तुट्ठि० जाव-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पमावति देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव-चग्गुहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुवूहति । तप णं सा पमावती देवी बलस्स रत्तो अंतियं पयमट्टं सोच्चा निसम्म हट्ट-तुट्ट० करयल० जाव एवं वयासी—‘पयमेयं देवाणुष्विया ! तहमेयं देवाणुष्विया ! अवित्तहमेयं देवाणुष्विया ! असंदिद्धमेयं देवाणुष्विया ! इच्छियमेयं देवाणुष्विया ! पडिच्छियमेयं देवाणुष्विया ! इच्छियपडिच्छि-यमेयं देवाणुष्विया ! से जहेयं तुज्जे वदहत्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता वलेणं रत्ता अम्मणुत्ताया समाणी णाणामणि-रयणमत्तिचित्ताओ महासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अनुरियमचवल० जाव गतीए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव

૧૮. हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर में आज ते तेवा प्रकारनी अने तकियावाळी शय्यामा [ सुतां जागतां ] इत्यादि पूर्वोक्त जाणहुं, यावत् मारा पोताना मुखमा प्रवेग करता सिंहने स्वप्नमां जोडने जागी. तो हे देवानुप्रिय ! ए उदार यावत् महास्वप्नं वांजुं सुं कल्याणकारक फल अथवा वृत्तिविशेष थये ? त्यार पछी ते बल राजा प्रभावती देवी पासैथी आ वान सांमळी, अवधारी हर्षित, तुम यावत् आल्हादयुक्त हृदयवाळी थयो, मेघनी धाराथी विकसित थयेला सुगंधि कटंत्र पुष्पनी पेटे जेनुं शरीर रोमांचित थयेछे हे अने रोमराजी उर्मी थयेली छे, एवो बलराजा ते स्वप्नो अवग्रह-सामान्य विचार-करे छे, पछी ते स्वप्नसंवन्धी ईहा ( विशेष विचार ) करे छे. तेम करीने पोताना स्वाभाविक, मतिपूर्वक बुद्धिविज्ञानथी ते स्वप्नमा फलनो निश्चय करे छे. पछी इष्ट, कांत, यावत् मंगलयुक्त, तामित, मधुर अने शोभायुक्त वाणीथी संलाप करता २ ते बल राजाए आ प्रमाणे कयुं—

૧૯. हे देवी ! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी ! तमे कल्याणकारक स्वप्न जोयुं छे, यावत् हे देवी ! तमे शोभायुक्त स्वप्न जोयुं छे, तथा हे देवी ! तमे आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष, कल्याण अने मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे. हे देवानुप्रिये ! तेथी अर्थनो लाभ थये हे देवानुप्रिये ! भोगनो लाभ थये, हे देवानुप्रिये ! पुत्रनो लाभ थये, हे देवानुप्रिये ! राज्यनो लाभ थये, हे देवानुप्रिये ! खरेखर तमे नव मास संपूर्ण थया बाद साडा सात दिवस बिल्ला पछी आपणा कुलमा च्चजसमान, कुलमा दीवासमान, कुलमा पर्वतसमान, कुलमा शेखरसमान, कुलमा तिलकसमान, कुलनो कीर्ति करनार, कुलने आनंद आपनार, कुलनो जय करनार, कुलमा आधारभूत, कुलमा वृद्धसमान, कुलनो बुद्धिकरनार, सुकुमाल हायपगवाळ, खौडरहित अने संपूर्ण पंचेन्द्रिययुक्त शरीरवाळ, यावत् चंद्रसमान सौम्यआकाशवाळ, प्रिय, जेनुं दर्शन प्रिय छे एवा, सुन्दररूपवाळ, अने देवकुमार जेवी कानिवाळ पुत्रने जन्म आपजो.

૨૦. अने ते बालक पोतानुं बालकपणुं मूकी, विज्ञ अने परिणत-मोटो थईने युवावस्थाने पानी शूर, वीर, पराक्रमी, विस्तीर्ण अने विपुल बल तथा बाहनवाळो, राज्यनो धणी राजा थये. हे देवी ! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी ! तमे आरोग्य, तुष्टि अने यावत् मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे—एम कही ते बल राजा इष्ट यावत् मधुर वाणीथी प्रभावती देवीनी वीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे प्रशंसा करे छे. त्यार बाद ते प्रभावती देवी बल राजानो पासैथी ए पूर्वोक्त वात सामळीने, अवधारीने हर्षवाळी अने सतुष्ट थइ हाय जोडी आ प्रमाणे बोली—‘हे देवानुप्रिय ! तमे जे कहो छो ते एज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय ! तेज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय ! ए सत्य छे, हे देवानुप्रिय ! ए संदेहरहित छे, हे देवानुप्रिय ! मने इच्छित छे, हे देवानुप्रिय ! ए में स्वीकारेछे, हे देवानुप्रिय ! ए मने इच्छित अने स्वीकृत छे’ एम कही स्वप्नो सारी रीते स्वीकार करे छे, स्वीकार करीने बल राजानो अनुमतिथी अनेक जातना-मणि अने रत्नानी

ઉવાગચ્છદ્ર, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા સયણિજ્ઞંસિ નિસીયતિ, નિસીદ્ધતા એવં વયાસી—‘મા મે સે ઉત્તમે પહાણે મંગલ્હે સુવિણે અર્ષેહિં પાવસુમિણેહિં પડિહમ્મિસ્સદ્’ ત્તિ કઠ્ઠુ દેવ—ગુરુજણસંવદ્ધાહિં પસત્થાહિં મંગલ્લાહિં ઘમ્મિયાહિં કહ્વાહિં સુવિણજાગરિયં વડ્ડિજાગરમાણી ૨ વિહરતિ ।

૨૧. તપ ણં સે વલે રાયા કોહુંવિયપુરિસે સદ્ધાવેદ, સદ્ધાવેત્તા એવં વયાસી—‘સ્થિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! અજ્ઞ સવિ- સેસં વાહિરિયં ઉવટ્ટાણસાલં ગંધોદયસિત્ત—સુદ્ધ—સંમજ્જિઓ—વલિત્તં સુગંધવરપંચવપ્પુફોવયારકલિયં કાલાગુરુપવર—કુંદુ- રુક્કં જાવ—ગંધવટ્ઠિભૂયં કરેહ ય કરાવેહ ય, કરેત્તા કરાવેત્તા સીહાસણં રપ્પહ, સીહાસણં રયાવેત્તા મમેતં જાવ—પચ્ચપ્પિણહ । તપ ણં તે કોહુંવિયં જાવ—પડિસુણેત્તા સ્થિપ્પામેવ સવિસેસં વાહિરિયં ઉવટ્ટાણસાલં જાવ—પચ્ચપ્પિણંતિ ।

૨૨. તપ ણં સે વલે રાયા પચ્ચસકાલસમયંસિ સયણિજ્ઞાઓ અબ્બુદ્દેહ, સયં ૨ —ત્તા પાયપીઠાઓ પચ્ચોરુહદ્, પાયં ૨ —હિત્તા જેણેવ અટ્ટણસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, અટ્ટણસાલં અણુપવિસદ્, જહા ઉવવાદપ્પ તહેવ અટ્ટણસાલા તહેવ મજ્જણઘરે જાવ —સસિધ્ધ પિયવંસણે નરવદ્ મજ્જણઘરાઓ પડિનિક્કમ્મદ્, પડિનિક્કમ્મિત્તા જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છિદ્, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા સીહાસણવરંસિ પુરત્થાભિમુદ્દે નિસીયદ્ નિસીદ્ધતા અપ્પણો ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાપ્પ અટ્ટ મહાસણાદ્ સેયવત્થપચ્ચુત્થુયાદ્ સિદ્ધત્થગકયમંગલોવયારાદ્ રયાવેદ, રયાવેત્તા અપ્પણો અટ્ટુરસ્તામંતે ણાણામણિરયણમંડિયં, અહિયપેચ્છ- ગિજ્ઞં, મહ્ગ્ધ—વરપટ્ટણુગ્ગયં, સળ્હપટ્ટવહુમ્મિત્તસયચિત્તતાણં, ઈહામિય—ઉસમં જાવ—મત્તિમિત્તં, અર્ધિમત્તરિયં જવણિયં અંછાવેદ, અંછાવેત્તા નાણામણિ—રયણમત્તિચિત્તં અત્થરય—મડયમસૂરગોત્થયં, સેયવત્થપચ્ચુત્થુયં, અંગસુહફાસુયં, સુમડયં પમાવતીપ દેવીપ મહાસણં રયાવેદ, રયાવેત્તા કોહુંવિયપુરિસે સદ્ધાવેદ, સદ્ધાવેત્તા એવં વયાસી—

૨૩. ‘સ્થિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! અટ્ટંગમહાનિમિત્તસુત્ત—ત્થધારણ, વિવિહસત્થકુસલે, સુવિણલક્ષણપાઠપ્પ સદ્ધાવેદ’ તપ ણં તે કોહુંવિયપુરિસા જાવ—પડિસુણેત્તા વલસ્સ રત્તો અંતિયાઓ પડિનિક્કમ્મદ્, પડિનિક્કમ્મિત્તા સિગ્ધં તુરિયં ચવલં ચંડં વેદ્યં હત્થિયણપુરં ણગરં મજ્જંમજ્જેણં જેણેવ તેસિં સુવિણલક્ષણપાઠગાણં ગિહાદ્ તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા તે સુવિ-

રચના વડે વિચિત્ર એવા મદ્રાસનથી ઉઠે છે, ઉઠીને ત્વરા વિના, ચપલતારહિત યાવદ્ ગતિ વડે [ તે પ્રભાવતી દેવી ] જ્યાં પોતાની શય્યા છે ત્યાં આવી શય્યા ઉપર વેસે છે, વેસીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું—‘આ મારું ઉત્તમ, પ્રધાન અને મંગલરૂપ સ્વપ્ન વીજા પાપસ્વપ્નોથી ન હણાઓ’ એમ કહીને તે પ્રભાવતી દેવી દેવ અને ગુરુ સવન્ધી, પ્રશસ્ત, મંગલરૂપ અને ધાર્મિક કથાઓવડે સ્વપ્ન જાગરણ કરતી કરતી વિહરે છે.

૨૧. ત્યાર વાદ તે વલ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવી આ પ્રમાણે કહ્યું—હે દેવાનુપ્રિયો ! આજે તમે જલ્દી વહારની ઉપસ્થા- ને સવિશેષપણે ગંધોદકવડે છાટી, વાઢી અને છાણથી લીંપીને સાફ કરો. તથા સુગંધી અને ઉત્તમ પાચ વર્ણના પુષ્પોથી શણગારો, વાઢી ઉત્તમ કાલાગુરુ અને કીંદરુના ધૂપથી યાવદ્ ગંધવર્તિભૂત—સુગંધી ગુટિકા સમાન કરો, કરાવો, અને ત્યારપછી ત્યાં સિંહાસન મૂકાવો, સિંહાસન મૂકાવીને આ મારી આજ્ઞા યાવત્ પાછી આપો.’ ત્યાર વાદ તે કૌટુંબિક પુરુષો યાવત્ આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરી તુરંતજ સવિશેષપણે વહારની ઉપસ્થાન શાલને સાફ કરીને યાવત્ આજ્ઞા પાછી આપે છે.

૨૨. ત્યાર વાદ તે વલ રાજા પ્રાતઃકાલ સમયે પોતાની શય્યાથી ઉઠીને પાદપીઠથી ઉતરી જ્યાં વ્યાયામશાળા છે ત્યાં આવે છે. આવીને વ્યાયામશાળામાં પ્રવેશ કરે છે, ત્યાર પછી તે જ્ઞાનગૃહમાં જાય છે. વ્યાયામશાળા અને જ્ઞાનગૃહનું વર્ણન \*ઔપપાતિક સૂત્રમાં આ પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ ચંદ્રની પેટે જેનું દર્શન પ્રિય છે એવો તે વલ નરપતિ જ્ઞાનગૃહથી વહાર નીકળે છે, વહાર નીકળીને જ્યાં જ્ઞાનગૃહની ઉપસ્થાનશાળા છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને પૂર્વદિશા સન્મુખ ઉત્તમ સિંહાસનમાં વેસે છે. ત્યાર વાદ પોતાનાથી ઉત્તરપૂર્વદિશામાં જ્ઞાન કોણમાં ધોળા વસ્ત્રથી આચ્છાદિત અને સરસવ વડે જેનો મંગલોપચાર કરેલો છે એવા આઠ મદ્રાસનો મૂકાવે છે. ત્યાર વાદ પોતાની ધોળા ધોળા દૂર અનેક પ્રકારના મણિ અને રત્નથી સુશોભિત, અધિક દર્ગનીય, કીમતી, મોટા શહેરમાં વનેલી, સૂક્ષ્મ સૂતરના સેંકડો કારી- રીવાળા વિચિત્રતાળાવાળી, તથા ઈહામૃગ અને વલ્લદ વગેરેની કારીગરીથી વિચિત્ર એવી અંદરની જવનિકાને—પડદાને યાવત્ વડે છે, યાવત્ વડે [ જવનિકાની અંદર ] અનેક પ્રકારના મણિ અને રત્નોની રચના વડે વિચિત્ર, ગાદી અને કોમળ ગાલમસૂરીયાથી ઢંકાયેલું, શ્વેત વસ્ત્રવડે આચ્છાદિત, શરીરને સુલક્ષણ સ્પર્શવાળું તથા સુકોમળ એવું એક મદ્રાસન પ્રભાવતી દેવી માટે મૂકાવે છે. ત્યાર પછી તે વલ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવી આ પ્રમાણે કહ્યું—

૨૩. ‘હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શીઘ્ર જાઓ, અને અર્ધાંગ મહાનિમિત્તના સૂત્ર અને અર્ધને ધારણ કરનારા, અને વિવિધ શાસ્ત્રમાં કુશલ એવા સ્વપ્નના લક્ષણ પાઠકોને બોલાવો.’ ત્યાર વાદ તે કૌટુંબિક પુરુષો યાવત્ આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરીને વલ રાજાની પાસેથી નીકળે છે; નીકળીને સવર, ચપલપણે, જ્ઞાપાટાવધ અને વેગસહિત હસ્તિનાપુર નગરની વચોવચ જ્યાં સ્વપ્નલક્ષણપાઠકોના ઘરો છે, ત્યાં જઈને સ્વપ્નલક્ષ-

વ્યાયામશાળા અને જ્ઞાનગૃહમાં પ્રવેશ.

સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવવાની આજ્ઞા.



ળલક્ષણપાઠપ સદ્ધાવેંતિ । તપ્ નં તે સુવિળલક્ષણપાઠગા વલસ્સ રપ્નો કોઠુંધિયપુરિસેહિં મ્હાવિયા સમાપ્તા દટ્ટ-તુટ્ટ૦ જ્ઞાપ્ત  
 ક્ય૦ જાવ-સરીરા સિદ્ધત્યગ-હરિયાલિયાકયમંગલમુદ્ધાણા સર્પહિં ૨ મેદેહિંતો ણિગચ્છંતિ, સર્પહિં ૨-ચ્છિત્તા હરિયાણાપુર  
 નગરં મજ્જમઝ્ઞેણં જેણેવ વલસ્સ રપ્નો મવળવરવહંસપ તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા મવળવરવહંસપવિદુવારંસિ  
 પ્ગાઓ મિલંતિ, પ્ગાઓ મિલિત્તા જેણેવ ચાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા કરચ્છલ૦ વલરાયં  
 જપ્પં વિજપ્પં વદ્ધાવેંતિ । તપ્ નં તે સુવિળલક્ષણપાઠગા વલેપં રપ્ના વંધિય-પૂરથ-સકારિય-સંમાણિયા સમાપ્તા પત્તેયં ૨  
 પુલ્લેવ્યેસુ મ્હાસણેસુ નિસીયંતિ । તપ્ નં સે યલે રાયા પમાવતિં દેવીં જરણિયંતરિયં ઠાવેદ, ઠાવેત્તા પુપ્પ-ફલ પઠિપુપ્પહ્યે  
 પેરેણં વિણપણં તે સુવિળલક્ષણપાઠપ પ્વં વયાસી-‘પ્વં સલુ દેવાણુપ્પિયા ! પમાવતી દેવીં અજ્ઞ તંતિ તારિસાંસિ  
 વાસવરંસિ જાવ-સીહં સુવિણે પાસિત્તા ણં પઠિવુજ્ઞં, તપ્પં દેવાણુપ્પિયા ! પયસ્સ ઓરાલસ્સ જાવ કેમદ્દે કલ્લાણે ફલવિત્તિ-  
 વિસેસે મવિસ્સહ ? તપ્ નં સુવિળલક્ષણપાઠગા વલસ્સ રપ્નો અંતિયં પ્યમટ્ટં સોચ્ચા નિસમ્મ દટ્ટ-તુટ્ટ૦ તં સુવિણં ઓગિપ્પહ  
 ઓગિપ્પિહ્ત્તા ર્હં અણુપ્પવિસદ, અણુપ્પવિસિત્તા તસ્સ સુવિણસ્સ અત્યોગ્ગહણં કરેદ, તસ્સ ૦ ૨-ત્તા અન્નમત્તેણં સાદ્ધિં મંચાલેંતિ  
 સંચાલેત્તા તસ્સ સુવિણસ્સ લદ્ધટ્ટા ગદ્ધિયટ્ટા પુચ્છિયટ્ટા ધિણિચ્છિયટ્ટા અભિગયટ્ટા વલસ્સ રપ્નો પુરઓ સુવિણસન્ધ્યાદં ઉચ્ચારે-  
 માણા ૨ પ્વં વયાસી-‘પ્વં સલુ દેવાણુપ્પિયા ! મ્હં સુવિણસન્ધ્યંસિ ધાયાલીસં સુવિણા, તીસં મ્હાસુવિણા, વાવત્તરિ સદ્ધસુ-  
 વિણા વિટ્ટા । તત્તયણં દેવાણુપ્પિયા ! તિત્થગરમાયરો વા ચક્કવટ્ટિમાયરો વા તિત્થગરંસિ વા ચક્કવટ્ટિંસિ વા ગમ્મં વક્કમમાણંસિ  
 પ્પરંસિ તીસાપ મ્હાસુવિણાણં ર્મે ચોદ્ધસ મ્હાસુવિણે પાસિત્તા ણં પઠિવુજ્ઞંતિ । તં જહા-‘‘ગય-વસદ્ધ-સીહ-અમિસેય-  
 દામ-સસિ-દિણયરં શ્યં કુંમં । પડમસર-સાગર-વિમાણ-મવળ-રચણુચ્ચય-સિંહિં ચ’’ ॥ વાસુદેવમાયરો વા વાસુદેવંસિ  
 ગમ્મં વક્કમમાણંસિ પ્પરંસિ ચોદ્ધસપ્પં મ્હાસુવિણાણં અન્નયરે સત્ત મ્હાસુવિણે પાસિત્તા ણં પઠિવુજ્ઞંતિ । વલદેવમાયરો વા વલદે-  
 વંસિ ગમ્મં વક્કમમાણંસિ પ્પરંસિ ચોદ્ધસપ્પં મ્હાસુવિણાણં અન્નયરે ચત્તારિ મ્હાસુવિણે પાસિત્તા ણં પઠિવુજ્ઞંતિ । મંડલિયમાયરો  
 વા મંડલિયંસિ ગમ્મં વક્કમમાણંસિ પ્પતેસિ ણં ચ્ચડ્ધસપ્પં મ્હાસુવિણાણં અન્નયરં પ્પં મ્હાસુવિણં પાસિત્તા ણં પઠિવુજ્ઞંતિ ।  
 ર્મે ય ણં દેવાણુપ્પિયા ! પમાવતીપ દેવીપ પ્પે મ્હાસુવિણે વિટ્ટે, તં ઓરાલે ણં દેવાણુપ્પિયા ! પ્રમાવતીપ દેવીપ સુવિણે વિટ્ટે,  
 જાવ-આરોગ-તુટ્ટિ૦ જાવ-મંગલકારપ્પ ણં દેવાણુપ્પિયા ! પ્રમાવતીપ દેવીપ સુવિણે વિટ્ટે, અત્થલામો દેવાણુપ્પિપ । મોગ-

ળપાઠકોને બોલાવે છે. પ્યારે તે વલ રાજાના કૌટુંબિક પુરુષો તે સ્વમલક્ષણપાઠકોને વોટગ્યા ત્યારે તેઓ પ્રસન્ન થયા, તુટ્ટ થયા અને  
 જ્ઞાન કરી વલિકર્મ કરી યાવત્ શરીરને અલંકૃત કરી, મસ્તકે સર્પ અને લીલી ધરોતું મંગલ કરી પોત પોતાના ધરથી નોકલું છે.  
 નીકળીને હસ્તિનાગપુર નગરની વચ્ચે થઈ પ્યા વલ રાજાનું ઉત્તમ મહાલય છે, ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને શ્રેષ્ઠ મહાલયના દ્વાર પાસે  
 સ્વપ્રપાઠકો એકઠા થાય છે, એકઠા થઈને પ્યાં વહારની ઉપસ્થાનશાઙ છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવી હાય જોડી વલ રાજાને જય  
 ધ્વજાયથી વચાવે છે. ત્યાર વાદ તે વલ રાજાએ વાંદેલા, પૂજેલા, સન્કારેલા અને સન્માનિત કરેલા તે સ્વમલક્ષણપાઠકો પૂર્વે ગોટવેલા મદ  
 સનો ઉપર વેસે છે. ત્યાર પછી તે વલ રાજા પ્રમાવતી દેવીને જવનિકાની-પડદાની અંદર વેસાડે છે. ત્યાર વાદ પુષ્પ અને ફલથી પરિમ  
 હસ્તવાલ્યા તે વલ રાજાએ અતિશય વિનયપૂર્વક તે સ્વમલક્ષણપાઠકોને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘‘હિ દેવાનુપ્રિયો ! એ પ્રમાણે ચરેચર આવે પ્રમ  
 વતી દેવી તે તેવા પ્રકારના વાસગૃહમાં યાવત્ સ્વમમા સિંહને જોડેને જાગેલી છે, તો હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ઉદાર ઇવા સ્વમનું યાવત્ વી  
 કયું કલ્યાણરૂપ ફલ અને વૃત્તિવિગેષ થયે. ત્યાર પછી તે સ્વમલક્ષણપાઠકો વલ રાજાની પાસેથી એ વાત સાંભળી તયા અવધારી સુખ અ  
 સંતુષ્ઠ થઈ તે સ્વમ સંવન્ધે સામાન્ય વિચાર કરે છે, સામાન્ય વિચાર કરી તેનો વિશેષ વિચાર કરે છે, અને પછી તે સ્વમના અર્થનો નિ  
 કરે છે, અને ત્યાર વાદ તેઓ પરત્સર સાથે વિચારણા કરે છે. ત્યાર પછી તે સ્વમના અર્થને સ્વયં જાણી, વીજા પાસેથી પ્રહણ ક  
 તે સંવન્ધી શંકાને પૂટી, અર્થનો નિશ્ચય કરી અને સ્વમના અર્થને અવગત કરી વલ રાજાની આગલ સ્વમશાસ્ત્રોનો ઉચાર કરતાં તેઓ  
 આ પ્રમાણે કહ્યું-‘‘હિ દેવાનુપ્રિય ! એ પ્રમાણે ચરેચર અમારા સ્વમશાસ્ત્રમા વેંતાલીય સામાન્ય સ્વમો, અને ત્રીશ મહાસ્વમો મળીને વુલ વહો  
 તેર જાતના સ્વમો કહેલા છે. તેમા હે દેવાનુપ્રિય ! તીર્થકરની માતાઓ કે ચક્રવર્તિની માતાઓ પ્યારે તીર્થકર કે ચક્રવર્તી ગર્ભમાં આવીને  
 ઉપજે ત્યારે એ ત્રીશ મહાસ્વમોમાંથી આ ચૌદ સ્વમોને જોડેને જાગે છે, તે ચૌદ સ્વમો આ પ્રમાણે છે- ‘‘૧ હાથી, ૨ વલ્લ, ૩ સિંહ, ૪  
 લક્ષ્મીનો અમિષેક, ૫ પુષ્પમાલ્યા, ૬ ચંદ્ર, ૭ સૂરજ, ૮ ધ્વજા, ૯ કુંમ, ૧૦ પદ્મસરોવર, ૧૧ સમુદ્ર, ૧૨ વિમાન અથવા મવન, ૧૩  
 રત્નોનો ઢગલો અને ૧૪ અગ્નિ’’ વળી વાસુદેવની માતાઓ પ્યારે વાસુદેવ ગર્ભમાં આવે ત્યારે એ ચૌદ મહાસ્વમોમાંના કોઈ પળ સાત મહાસ્વમો  
 જોડેને જાગે છે. તયા વલદેવની માતાઓ પ્યારે વલદેવ ગર્ભમા પ્રવેશ કરે ત્યારે એ ચૌદ મહાસ્વમોમાંના કોઈ પળ ચાર મહાસ્વમોને જોડ  
 જાગે છે. માંડલિક રાજાની માતાઓ પ્યારે માંડલિક રાજા ગર્ભમા પ્રવેશ કરે ત્યારે એ ચૌદ મહાસ્વમોમાંના કોઈ એક મહાસ્વમો જોડેને જા

૨૩. \* જો તીર્થકર દેવલોકથી આવીને ઉપજે તો તેની માતા સ્વમમાં વિમાન હુપ અને નરકથી આવીને ઉપજે તો તેની માતા સ્વમમા મવન

લામો દેવાણુપ્પિય ! પુત્તલામો દેવાણુપ્પિય ! રજ્જલામો દેવાણુપ્પિય ! एवं खलु देवाणुपुपिय ! पमावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुत्राणं जाव-धीतिकंताणं तुम्हं कुलकैउं जाव-पयाहिति । से वि य णं दारए उम्मुक्कवालभावे जाव-रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा । तं ओराले णं देवाणुपुपिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, जाव-आरोग-तुड्ढि-दीहाउअ-कल्लाणं जाव-दिट्ठे ।

૨૪. તપ ણં સે વલે રાયા સુવિણલક્ષણપાઠગાણં અંતિય ઇયમટ્ટં સોચ્ચા નિસમ્મ દટ્ટ-તુટ્ટં કરચલં જાવ-કટ્ટુ તે સુવિણલક્ષણપાઠગે પવં વયાસી-‘ઇવમેયં દેવાણુપ્પિયા ! જાવ-સે જહેયં તુલ્હે વદહ’ત્તિ કટ્ટુ તં સુવિણં સમ્મં પડિચ્છઇ, તં ૨-ચ્છિત્તા સુવિણલક્ષણપાઠય વિઝલેણં અસણ-પાણ-આઇમ-સાઇમ-પુપ્ફ-વત્થ-ગંધ-મલ્લાલંકારેણં સક્કારેતિ, સમ્માણેતિ, સક્કારેત્તા સમ્માણેત્તા વિઝલં જીવિયારિહં પીઇદાણં દલયતિ, વિઝલં ૨-યિત્તા પડિવિસજ્જેતિ, પડિવિસજ્જેત્તા સીહાસણાઓ અબ્બુદ્દેહ, સી ૨-ત્તા જેણેવ પમાવતી દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા પમાવતિ દેવિં તાહિં ઇટ્ટાહિં કંતાહિં જાવ-સંલવમાણે ૨ एवं वयासी-‘एवं खलु देवाणुपुपिया ! सुविणसत्थंसि वायालीसं सुविणा तीसं महासुविणा वावत्तरि सधसुविणा दिट्ठा । तत्थ णं देवाणुपुपिय ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्ठिमायरो वा तं चेव जाव अन्नयरं एणं महासुविणं पासित्ता णं पडि-बुज्झंति । इमे य णं तुमे देवाणुपुपिय ! एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, जाव-रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, जाव-दिट्ठे, त्ति कट्टु पभावति देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव-दोषं पि तच्चं पि अणुवूहइ ।

૨૫. તપ ણં સા પમાવતી દેવી વલસ્સ રજ્જો અંતિયં ઇયમટ્ટં સોચ્ચા નિસમ્મ દટ્ટ-તુટ્ટં કરચલં જાવ-પવં વયાસી-‘ઇયમેયં દેવાણુપ્પિયા ! જાવ-તં સુવિણં સમ્મં પડિચ્છતિ, તં ૨-ચ્છિત્તા વલેણં રજ્જા અબ્બણુત્તાયા સમાણી નાણામણિ-ચંચણ-ભત્તિચિત્તં જાવ અબ્બુદ્દેતિ । અનુરિયમચ્ચલં જાવ-ગતીય જેણેવ સય મવણે તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, તે ૨-ચ્છિત્તા સયં મવણમણુપવિટ્ટા ।

૨૬. તપ ણં સા પમાવતી દેવી ણ્હાયા કયવલિકમ્મા જાવ- સદ્ધાલંકારવિભૂસિયા તં ગર્મ્મ ણાહસીપહિં નાંઇઉણ્હેહિં નાઇતિચ્છેહિં નાઇકકુપહિં નાઇકસાપહિં નાઇઅંચિલેહિં નાઇમહુરેહિં ઉડમયમાણસુહેહિં મોચણ-ચ્છાયણ-ગંધ-મલ્લેહિં જં તસ્સ

छे. तो हे देवानुप्रिय ! आ प्रभावती देवीए एक महास्वप्न जोयुं छे, हे देवानुप्रिय ! प्रभावती देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् आरोग्य, तुष्टि यावत् मंगल करनार स्वप्न जोयुं छे. तेथी हे देवानुप्रिय ! तमने अर्थलाभ थशे, भोगलाभ थशे, पुत्रलाभ थशे अने राज्यलाभ थशे. या हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर प्रभावती देवी नव मास संपूर्ण थया पछी अने साडा सात दिवस विला पछी तमारा कुलमां ध्वज एव एवा यावत् पुत्रनो जन्म आपशे. अने ते पुत्र पण वाल्यावस्था मूकी मोटो थशे त्यारे ते यावद् राज्यनो पति राजा थशे, अथवा भावितात्मा साधु थशे. तेथी हे देवानुप्रिय ! प्रभावती देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुप तथा कल्याण करनार स्वप्न जोयुं छे.

૨૭. ત્યાર વાદ તે વલરાજા સ્વપ્નલક્ષણપાઠકો પાસેથી એ વાતને સાંભળી અને અવધારી હર્ષિત, અને સંતુષ્ટ થયો, અને હાય જોડી જાવત્ તેણે સ્વપ્નલક્ષણપાઠકોને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે દેવાનુપ્રિયો ! આ એ પ્રમાણે છે કે, યાવત્ જે તમે કહો છો’-એમ કહી તે સ્વપ્નોનો સારી રીતે સ્વીકાર કરે છે. ત્યાર વાદ સ્વપ્નલક્ષણપાઠકોનો પુષ્કલ અશન, પાન, આદિમ, આદિમ, પુષ્પ, વજ્ર, ગંધ, માલા અને અલંકારો સ્વિકાર કરે છે, સન્માન કરે છે, તેમ કરીને જીવિકાને ઉચિત ઘણુ પ્રીતિદાન આપે છે; અને પ્રીતિદાન આપીને તે સ્વપ્નલક્ષણપાઠકોને આ આપે છે. ત્યાર પછી પોતાના સિંહાસનથી ઉઠે છે, ઊઠીને જ્યાં પ્રભાવતી દેવી છે ત્યાં આવી પ્રભાવતી દેવીને તેણે તે પ્રકારની ઇષ્ટ, મનોહર જાવત્ મધુર વાણીવહે સલાપ કરતા કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે દેવાનુપ્રિયે ! એ પ્રમાણે ખરેખર સ્વપ્નશાસ્ત્રમાં વેતાલીશ સાધારણ સ્વપ્નો, જે ત્રીશ મહાસ્વપ્નો તથા વધુ મઝીને વહોતેર સ્વપ્નો દેખાયા છે. તેમા હે દેવાનુપ્રિયે ! તીર્થંકરની માતાઓ કે ચક્રવર્તિની માતાઓ-ઇત્યાદિ જાવત્ કહેલું, યાવત્ કોઈ એક મહાસ્વપ્નને જોઈને જાગે છે. હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ એક મહાસ્વપ્ન જોયું છે, હે દેવી ! તમે ઉદાર સ્વપ્ન જોયું છે, યાવત્ તે રાજ્યનો પતિ રાજા થશે કે ભાવિતાત્મા અનગાર થશે. હે દેવિ ! તમે ઉદાર સ્વપ્ન જોયું છે, યાવત્ મંગલકર સ્વપ્ન જોયું છે, એમ કહી પ્રભાવતી દેવીની તે પ્રકારની ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય એવી યાવત્ મધુર વાણીવહે વે વાર અને વ્રણ વાર પળ પ્રગંસા કરે છે.

૨૮. ત્યાર વાદ તે પ્રભાવતી દેવી વલ રાજાની પાસેથી એ વાતને સાંભળીને અવધારીને હર્ષવાળી, અને સંતુષ્ટ થઈ યાવત્ હાય જોડી આ પ્રમાણે બોલી-‘હે દેવાનુપ્રિય ! એ એ પ્રમાણે જ છે’ યાવત્ એમ કહી યાવત્ તે સ્વપ્નને સારી રીતે પ્રહણ કરે છે. ત્યાર પછી વલ રાજાની અનુમતિથી અનેક પ્રકારના મણિ અને રત્નોની કારીગરીથી યુક્ત તથા વિચિત્ર એવા તે મદ્રાસનથી ઊઠી ત્વરાપૂર્વક, અચપલપણે યાવત્ હંસ-સમાનગતિ વડે જ્યાં પોતાનું ભવન છે ત્યાં આવી તેણે પોતાના ભવનમાં પ્રવેશ કર્યો.

૨૯. ત્યાર વાદ તે પ્રભાવતી દેવી જ્ઞાન કરી, વલિકર્મ-દેવપૂજા કરી, યાવત્ સર્વ અલંકારથી વિભૂષિત થઈ તે ગર્ભને અતિશીત નહિ, અતિઉષ્ણ નહિ, અતિ તિક્ત નહિ, અતિકટુ નહિ, અતિ તુરા નહિ, અતિઆદા નહિ, અને અતિમધુર નહિ એવા, તથા દરેક ઋતુમાં

## एगतीसइमो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-असोचा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पन्निखयस्स वा, तप्पन्निखयसावगस्स वा, तप्पन्निखयसावियाए वा, तप्पन्निखय-उवासगस्स वा, तप्पन्निखयउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? [उ०] गोयमा ! असोचा णं केवलिस्स वा जाव तप्पन्निखयउवासियाए वा अत्येगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्येगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘असोचा णं जाव नो लभेज्जा सवणयाए’ ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्मणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोचा केवलिस्स वा, जाव तप्पन्निखयउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्मणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोचा णं केवलिस्स वा जाव तप्पन्निखयउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-तं चेव जाव ‘नो लभेज्जा सवणयाए’ ।

२. [प्र०] असोचा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पन्निखयउवासियाए वा केवलं वोहिं बुज्जेज्जा ? [उ०] गोयमा ! असोचा णं केवलिस्स वा जाव अत्येगतिए केवलं वोहिं बुज्जेज्जा, अत्येगतिए केवलं वोहिं णो बुज्जेज्जा ! [प्र०] से

## एकत्रीशमो उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा यावत् [ भगवान् गौतमे ] आ प्रमाणे पृच्छुं—हे भगवन् ! केवलि पासेयी, \*केवलिना श्रावक पासेयी] हे केवलिनी श्राविका पासेयी, केवलिना उपासक पासेयी, केवलिनी उपासिका पासेयी, केवलिना पाक्षिक ( स्वयंबुद्ध ) पासेयी, केवलिना श्राविका श्रावक पासेयी, केवलिना पाक्षिकनी श्राविका पासेयी, केवलिना पक्षना उपासक पासेयी अने केवलिना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी - सामब्ब्या विना जीवने केवलज्जानीए कहेला धर्मना श्रवणनो-ज्ञाननो लाम याय ? [उ०] हे गौतम ! केवलि पासेयी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना पण कोइ जीवने केवलि कहेला धर्मश्रवणनो लाम याय अने कोइ जीवने लाम न याय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहो छे के सामब्ब्या विना यावत् [ धर्म ] श्रवणनो लाम न याय ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे ज्ञानाव-णीय कर्मनो क्षयोपगम करेछे छे ते जीवने केवलि पासेयी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना पण केवलि कहेला धर्मश्रवणनो लाम याय, अने जे जीवे ज्ञानावणीय कर्मनो क्षयोपगम करीं नयी ते जीवने केवलि पासेयी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेयी सामब्ब्या विना केवलि कहेला धर्मने सामब्ब्यानो लाम न याय. हे गौतम ! ते हेतुयी एम कयुं छे के, तेने यावत् साम्-लाम न याय.’

२. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी के यावत् तेना पदानी उपासिका पासेयी [ धर्म ] सामब्ब्या विना कोइ उ-सम्पग्दर्शनने अनुभवै ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेयी यावत् सामब्ब्या विना पण कोइ जीव शुद्ध सम्पग्[उ०] ए प्रमाणे जेम हेवो. ए प्रमाणे शुद्ध

१. \* जेणे केवलज्जानीने स्वयं पृच्छुं छे, अथवा तेमनी पासेयी सामब्ब्यु छे ते केवलिश्रावक. केवलज्जानीनी उपासना करता के-ज्ञान पण उत्पन्न करै, सामब्ब्यु होय ते केवलिटपासक. केवलिनो पाक्षिक एट्टे स्वयंबुद्ध.-टीका.

† अहाँ श्रवण श्रुतज्ञानद्वय जाणवुं, अर्थात् केवलज्जानीवगेरे पासेयी सामब्ब्या विनाय कोइ जीवने धर्मनो बोध याय, अन्यथा मोघ पामेलाने श्रवण शरीरिते याय ?

अम्मा-पियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ, तइए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेइ, छट्टे दिवसे जागरियं करेइ, एक्कारसमे दिवसे शीतिकंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते वारसाहदिवसे चिउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावित्ति, उवक्खडावेत्ता जहा सियो जाव-खत्तिए य आमंतेति, आ० २ तओ पच्छा ण्हाया कय० तं चेव जाव सक्करंति सम्माणंति, २ तस्सेव वृत्त-णाति-जाव-राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूढं कुलसरिसं सुलसंताणंतनुवद्धणकरं अयमेयारूढं गोत्रं गुणनिष्फन्नं नामधेज्जं करंति-‘जम्हा णं अम्हं इमे दारए वलस्स रओ पुत्ते पभाव-णीए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जं महव्वले,’ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करंति ‘महव्वले’त्ति ।

२९. तए णं से महव्वले दारए पंचधाईपरिगहिए, तंजहा-खीरधाईए, एवं जहा दढपइत्ते, जाव-निवाय-निघ्घाघायंसि सुहंसुहेणं परिवह्वति । तए णं तस्स महव्वलस्स दारगस्स अम्मा-पियरो अणुपुत्रेणं ठितिवडियं वा चंदसूरदंसावणियं वा आगरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पयचंकमणं वा जेमामणं वा पिंडवद्धणं वा पज्जपावणं वा कण्णवेहणं वा संबच्छर-मंडिलेहणं वा चोलोयणं च उवणयणं च अन्नाणि य वहुणि गच्चाघाण-जम्मणमादियाई कोउयाई करंति ।

३०. तए णं तं महव्वलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्टवासं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-सुहुत्तंसि० एवं जहा दढप्पइत्तो, जाव-अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था । तए णं तं महव्वलं कुमारं उम्मुक्कवालभावं जाव-अलं भोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मा-पियरो अट्ट पासायवडेंसए करंति, अच्चुग्गय-सूसिय-पहसिए इव वन्नओ जहा रायप्पसेणइत्ते, जाव-पडि-रूवे, तेसि णं पासायवडेंसगणं वहुमज्जदेसभागे एत्थ णं महेगं भवणं करंति अणेगखंभसयसंनिविट्टं, वन्नओ जहा रायप्पसेण-इत्ते पेच्छावरमंडवंसि जाव-पडिरूवे ।

तेता-उत्सव चालु हती ल्यारे ते वल राजा सो रूपियाना, हजार रूपियाना अने लाख रूपियाना खर्चवाळा भागो, दानो अने द्रव्यना अमुक भागोने देतो अने देवरावतो तथा सो रूपियाना, हजार रूपियाना तथा लाख रूपियाना लाभने मेळवतो, मेळवावतो ए प्रमाणे रहे छे. ल्यार वाद ते छोकराना मातापिता प्रथम दिवसे स्थितिपतिता-कुलनी मर्यादा प्रमाणे क्रिया करे छे; श्रीजे दिवसे चंद्र अने सूर्यनुं दर्शन करावे छे, छट्टे दिवसे धर्मजागरण करे छे अने अग्यारमो दिवस वील्या वाद अशुचि जातकर्म करवानुं निवृत्त यथा पछी वारमे दिवसे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम पदार्थोने तैयार करावे छे, अने जेम \*शिव राजा संवन्वे कहुं तेम क्षत्रियोने आमंत्रे छे. ल्यार पछी स्नान तथा बलिकर्म करी इत्यादि पूर्वोक्त यावत् सत्कार अने सन्मान करी तेज मित्र, ज्ञाति यावत् राजन्य अने क्षत्रियोनी समक्ष अर्था-पिता, पर्या-पितामह अने पिताना पण पितामहथी, घणा पुरुपोनी परंपराथी वधेळं, कुलने योग्य, कुलने उचित अने कुलरूपसंतान-तंतुने वधारनार आ आवा प्रकारनुं, गुणयुक्त अने गुणनिष्पन्न नाम पाडे छे. जेथी अमारो आ छोकरो वल राजानो पुत्र अने प्रभावती देवीनो आत्मज छे, माटे ते अमारा आ पुत्रनुं नाम ‘महावल’ हो. ल्यार वाद ते छोकराना माता पिता तेनुं ‘महावल’ एवं नाम करे छे.

पुत्रनुं नाम पाळुं.

२९. ल्यार पछी ते महावल नामे पुत्रनुं पाच धावो वडे पालन करायुं. ते पाच धावो आ प्रमाणे छे-१ क्षीरधात्री, ए प्रमाणे वधुं इट्टप्रतिज्ञनी पेटे जाणवुं. यावत् ते कुमार वायुरहित अने निर्व्याघात-अडचणरहित स्थानमा अत्यंत सुखपूर्वक वृद्धि पामे छे. पछी ते महावलना मातापिताए जन्मना दिवसथी माडी अनुक्रमे स्थितिपतिता, सूर्यचंद्रनुं दर्शन, धर्मजागरण, नामकरण, माखोडीया चालवुं, पगे चालवुं, जमाडवुं, कोळीआ वधारवा, बोलावतुं, कान विंभाववा, वर्षगाठ करवी, चूडा-शिखा रखाववी, उपनयन-शीखवतुं ए वधा अने ए शिवाय वीजा घणा गर्भाधान, जन्म वगैरे कौतुको करे छे.

पांच धावोवडे पुत्र पालन.

३०. ल्यार पछी ते महावल कुमारने तेना मातापिता आठ वरसथी अधिक उमरनो जाणी प्रशस्त तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्तमा [ कलाचार्य पासे भणवा मोकले छे ]-इत्यादि ए प्रमाणे वधुं † इट्टप्रतिज्ञनी पेटे कहेवुं, यावत् ते महावल कुमार विपयोपभोगने उमर्थ थयो. ल्यार वाद ते महावल कुमारनो वालभाव व्यतीत थयो जाणी, यावत् तेने विपयोपभोगने योग्य जाणी तेना माता पिता तेने माटे आठ श्रेष्ठ प्रासादो तैयार करावे छे, ते प्रासादो अतिशय उंचा अने [ श्वेत वर्णना होवाथी ] जाणे हस्तता होयनी-इत्यादि वर्णनऽ राजप्रदनीयसूत्रमा कक्षा प्रमाणे जाणवुं. यावत् ते प्रासादो अत्यंत सुंदर छे, ते प्रासादोना बराबर मध्यभागमां एक मोटु भवन तैयार करावे छे, ते भवन सेंकडो थाभला उपर रहेळं छे-इत्यादि वर्णन ईराजप्रदनीय सूत्रमां कक्षा प्रमाणे प्रेक्षागृह अने मंडपना वर्णननी पेटे जाणवुं, यावत् ते सुन्दर हतुं.

महावल कुमारने भणवा मोकलवो.

२८ \* भग० श० ११ उ० ९ पृ० २२२.

२९ † पाच धावोना नामो आ प्रमाणे छे-१ क्षीरधात्री ( दूध पानारी ), २ मज्जनधात्री ( ज्ञान करावनारी ), ३ मंडनधात्री ( अलंकार पहारावनारी ), ४ क्रीडा करावनारी धात्री, अने ५ अकधात्री-सोळामा वेसादनार. ‡ जुओ इट्टप्रतिज्ञसवन्धे राजप्र० १४७-१,२.

३० † जुओ राजप्र० प० १४७-२. § जुओ राजप्र० प० ८५-२. § प्रेक्षाग्रह मंडपनु वर्णन जुओ राजप्र० प० ३५-१.

३१. तप णं तं महन्वले कुमारं अम्मा-पियरो धम्मया कया दि सोमपांसि निदि-करण-टियस-नक्काम ३३  
 पहायं कयवलिक्कमं कयकोउय-मंगलपायच्छित्तं सत्थालंकारविभूमियं पमक्काणम-णाण-गीय-वाहय-पसाहण-टुंगनिलग-कं-  
 कणअविहवयहुउचणीयं मंगलसुजं पिण्हि य वरकोउयमंगलोवयाग्गयमंतिक्कमं सरिसयाणं सरिसयाणं सरिखियाणं सरिसल्ला  
 वल्ल-स्व-जोघणगुणोवयेयाणं विणीयाणं कयकोउय-मंगलपायच्छित्तानं सरिमण्हि गयसुत्तेहिंनो थाणिहियाणं अट्टणं रायवर  
 कजाणं पगद्विसेणं पाणिं गिण्हारिविसु ।

३२. तप णं तस्स महावल्लस कुमारस्स अम्मा-पियरो अयमेयाकयं पीडदाणं इलयंति, तं जत्ता-अट्ट हिरक्कोडीओ  
 अट्ट सुवन्नकोडीओ, अट्ट मउटे मउडापवरे, अट्ट कुंडल्लुए कुंडल्लुयण्वरे, अट्ट हारे हारण्वरे, अट्ट अद्धहारे अद्धहारण्वरे  
 अट्ट पगावलीओ पगावलिण्वराओ, पयं मुत्तावलीओ, पयं कणगावलीओ, पयं ग्यणावलीओ, अट्ट कउगजोए कउगजो  
 प्वरे, पयं तुडियजोए, अट्ट रोमजुयलाइं रोमजुयलण्वराइं, पयं चउगजुयलाइं, पयं पट्टजुयलाइं, पयं दुगुल्लुजुयलाइं  
 अट्ट सिरीओ, अट्ट हिरीओ, पयं धिइंओ, किन्तीओ, वुडीओ, लच्छीओ, अट्ट नंदाइं, अट्ट मडाइं, अट्ट तले ३  
 सत्तरयणामए, णियगवरमचणकेऊ अट्ट एण अयण्वरे, अट्ट वये वयण्वरे, दसगोसाहस्सिणणं वणणं, अट्ट नाटगाइं नाट  
 गण्वराइं वचीसयडेणं नाटणणं, अट्ट आसे आसण्वरे, सत्तरयणामए, सिरिअरपट्टिस्वए, अट्ट हन्थी हन्थिण्वरे, सत्तरयणा  
 मए सिरिअरपट्टिस्वए, अट्ट जाणाइं जाणण्वराइं, अट्ट जुगाइं जुगण्वराइं, पयं सित्रियाओ, पयं संदमार्णीओ, पयं गिह्ठीओ  
 थिह्ठीओ, अट्ट विउजजाणाइं विउजजाणण्वराइं, अट्ट र्हे पारिजाणिण, अट्ट र्हे संगामिण, अट्ट आसे आसण्वरे, अट्ट ३  
 हत्थिण्वरे, अट्ट गामे गामण्वरे, दसकुलसाहस्सिणणं गामेणं, अट्ट दासे दासण्वरे, पयं चेव दासीओ, पयं किंकरे, ५  
 कंचुउजे, पयं वरिसधरे, पयं महत्तरए, अट्ट सोवन्निए ओलंउणदीवे, अट्ट रुपामए ओलंउणदीवे, अट्ट सुवन्नरुपामए ओलं  
 वणदीवे, अट्ट सोवन्निए उकंउणदीवे, अट्ट पंजरदीवे, पयं चेव तिप्पि वि, अट्ट सोवन्निए थाले, अट्ट रुपमए थाले, अट्ट सुवन्न  
 रुपमए थाले, अट्ट सोवन्नियाओ पत्तीओ ३, अट्ट सोवन्नियाइं थासयाइं ३, अट्ट सोवन्नियाइं मल्लगाइं ३, अट्ट सोवन्नियाओ  
 तलियाओ ३, अट्ट सोवन्नियाओ कावट्ठाओ ३, अट्ट सोवन्निए अवणए ३, अट्ट सोवन्नियाओ अवयक्काओ ३  
 अट्ट सोवण्णिए पायपीढए ३, अट्ट सोवन्नियाओ भिसियाओ ३, अट्ट सोवन्नियाओ करोडियाओ ३, अट्ट सोवन्निए पट्टंके ३

३१. त्वार पट्टी वीजा कोट एक दिवसे शुभ निधि, करण, टियस, नक्षत्र अने सुहूर्तमा जेणे नान, वल्लिकर्न-पूजा, रक्षा आदि  
 कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त कर्युं छे एवा मशवळ कुमारने सर्गे अलंकारथी विभूषित करी अने सत्रवा स्त्रीओए करेला अन्वयजन  
 विलेपन, स्नान, गीत, वादित्त, मंडन, आठ अगमा निलक अने कंकण पहारावी मंगत्र अने आर्गीर्मातपूर्वक उत्तम रक्षा वगैरे वै। पुत्र  
 अने सरसव वगैरे मंगलरूप उपचार वडे शांतिकर्म करी, योग्य, समानत्वचावाळी, समान उमरवाळी, समान लक्षण, रूप, यौवन अ  
 गुणोथी युक्त, विनीत, जेणे कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करेछे छे एवा, समान गजकुलथी आणेछी एवी, उत्तम, राजानो आठ श्रे  
 कन्याओनुं एक दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं.

३२. त्वार पट्टी ते महावल कुमारना माना पिता एवा प्रकारुं आ प्रीतिदान आपे छे, ते आ प्रमाणे-आठ कोटि हिरण्य, आठ ओ  
 सोर्नया, मुकुटोमा उत्तम एवा आठ मुकुट, कुंडल्लुगळमा उत्तम एवा आठ कुंडल्लनी जोडी, हारोमा उत्तम एवा आठ हार, अर्धहारमां श्रेष्ठ एवा आ  
 अर्धहार, एकसरा हारमा उत्तम एवा आठ एकसरा हार, एज प्रमाणे मुक्तावलीओ, वनकावलीओ अने रत्नावलीओ जाणवी; कडा युगल  
 उत्तम एवा आठ कडानी जोडी, ए प्रमाणे तुडिय-वाजुवंचनी जोडी, रेशमी वस्त्र युगलमा उत्तम एवा आठ रेशमी वस्त्रनी जोडी, ए प्रमाणे  
 सूतराट वस्त्रनी जोडीओमा उत्तम एवा आठ सूतराट वस्त्रनी जोडीओ, ए प्रमाणे टसरनी जोडीओ, पट्टयुगळे, दुकूल्लयुगळे, आठ श्री, आठ ही  
 ए प्रमाणे श्री, कीर्ति, बुद्धि, अने लक्ष्मी देवीओनी प्रतिमा जाणवी. आठ नंदो, आठ भद्रो, ताडमां उत्तम एवा आठ ताडवृक्ष-ए सर्वे रत्नम  
 जाणवा. पोताना भवनना केतु-चिह्नरूप ध्वजमा उत्तम एवा आठ ध्वजो, दस हजार गावोनुं एक व्रज-गोकुल थाय छे, तेवा गोकुलमां ८  
 एवा आठ गोकुलो, नाटकोमां उत्तम अने वत्रीग माणसोथी भजवी शकाय एवा आठ नाटको, घोडाओमा उत्तम एवा आठ घोटा, वा वधुं रा  
 मय जाणवुं. भाडागार समान हाथीओमां उत्तम एवा आठ रत्नमय हाथीओ, भाडागार समान सर्वरत्नमय वानोमा श्रेष्ठ एवा आठ वानो, यु  
 मां उत्तम आठ युग्यो ( अमुक जातना वाहनो ), ए प्रमाणे शिविका, स्वदमानिका, ए प्रमाणे गिह्ठी, ( हाथीनी उपरनी अंबाची ), पिच्छि  
 ( घोडाना आडा पलाणो ), विकट वानोमा ( उवाडा वाहनोमां ) प्रधान एवा आठ विकट वानो, आठ पारियानिक ( श्रीडाना ) रयो, संभ्राम  
 योग्य एवा आठ रयो, अशोमां उत्तम एवा आठ अश्व, हाथीओमां उत्तम एवा आठ हाथीओ, प्रामोमा उत्तम एवा आठ गामो, जेमा दस हजा  
 कुलो रहे ते एक गाम कहेवाय छे. दासोमां उत्तम एवा आठ दासो, एज प्रमाणे दासीओ, ए प्रमाणे किंकरो, ए प्रमाणे कंचुकिओ, ए प्र  
 वर्षवरो, ( अंतःपुरना रक्षक खोजाओ ) ए प्रमाणे महत्तरको ( वडाओ ), आठ सोनाना, आठ रुपाना तथा आठ सोना-रूपाना ५५८

३२ \* युग्य-एक जातनु वाहन, जेणे गोश्रेयमां जम्मान व्हे छे-टीका.

अट्ट सोवन्नियाओ पडिसेजाओ ३, अट्ट हंसासणाइं, अट्ट कौंचासणाइं, एवं गरुलासणाइं, उन्नयासणाइं, पणयासणाइं, दीहा-  
सणाइं, महासणाइं, पक्खासणाइं, मगरासणाइं, अट्ट पउमासणाइं, अट्ट दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ट तेहसमुग्गे, जहा रायप्प-  
त्तेणरज्जे, जाव-अट्ट सरिसवसमुग्गे, अट्ट खुजाओ, जहा उववाइए, जाव-अट्ट पारिसीओ, अट्ट छत्ते, अट्ट छत्तधारिओ चेडीओ,  
अट्ट चामराओ, अट्ट चामरधारीओ चेडीओ, अट्ट तालियंटे, अट्ट तालियंतधारीओ चेडीओ, अट्ट करोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ट  
भीरघातीओ, जाव-अट्ट अंकघातीओ, अट्ट अंगमहियाओ, अट्ट उम्महियाओ, अट्ट पहावियाओ, अट्ट पसाहियाओ, अट्ट वन्न-  
पेसीओ, अट्ट चुन्नगपेसीओ, अट्ट कोट्टागारीओ, अट्ट दवकारीओ, अट्ट उवत्थाणियाओ, अट्ट नाडइजाओ, अट्ट कोडुंविणीओ,  
अट्ट महाणसिणीओ, अट्ट भंडागारिणीओ, अट्ट अज्जाधारिणीओ, अट्ट पुष्कधरणीओ, अट्ट पाणिघरणीओ, अट्ट वलिकारीओ,  
अट्ट सेजाकारीओ, अट्ट अर्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ट वाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ट मालाकारीओ, अट्ट पेसणका-  
ओ, अन्नं वा सुवहुं हिरन्नं वा सुवन्नं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणगं जाव-संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आस-  
त्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं । तए णं से महव्वले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं  
हिरन्नकोडिं दलयति, एगमेगं सुवन्नकोडिं दलयति, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयति, एवं तं चैव सव्वं जाव-एगमेगं  
पेसणकारिं दलयति, अन्नं वा सुवहुं हिरन्नं वा जाव-परिभाएउं । तए णं से महव्वले कुमारे उप्पि पासायवरगए जहा जमाली  
जाव-विहरति ।

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने, वन्नओ जहा केसि-  
सामिस्स, जाव पंचाहिं अणगारसपहिं सद्धिं संपरिखुडे पुद्धानुपुद्धिं चरमाणे गामाणुग्गामं दूतिजमाणे जेणेव हत्थिणागपुरे

दीपो ( हांडीओ ), आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना-रुपाना उत्कंचनदीपो ( दंडयुक्त दीवाओ ), ए प्रमाणे त्रणे जातना पंजर-  
दीपो-फानसे, आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना-रुपाना थाळो, आठ सोनानी, आठ रुपानी अने आठ सोना-रुपानी पात्रीओ,  
( नाना पात्रो ), ए प्रमाणे त्रणे जातना आठ स्यासको-तासको, आठ मल्लको-चपणीया, आठ तलिका-रकेवीओ, आठ कलाचिका-चमचा,  
आठ तावेयाओ, आठ तवीओ, आठ पादपीठ-( पग मूकवाना वाजोठ ), आठ मिसिका-(अमुक प्रकारना आसनो), आठ करोटिका (अमुक  
जातना पात्रो, लोटा अथवा कचोला), आठ पलंग, आठ प्रतिगय्या (ढोयणी प्रमुख नानी वीजी शय्याओ), आठ हंसासनो, आठ कौंचासनो,  
ए प्रमाणे गरुडासनो, उंचा आसनो, नीचा आसनो, दीर्घासनो, भद्रासनो, पक्षासनो, मकरासनो, आठ पद्मासनो, आठ दिक्खस्वस्तिकासनो, आठ  
तिलना डावडा-इत्यादि वधुं \*राजप्रश्रीय सूत्रमा कखा प्रमाणे कहेवुं, यावद् आठ सरसवना डावडा, आठ कुच्च दासीओ-इत्यादि वधुं †औप-  
श्रीक सूत्रमा कखा प्रमाणे कहेवुं, यावत् आठ पारसिक देशनी दासीओ, आठ छत्रो, आठ छत्र धरनारी दासीओ, आठ चामरो, आठ चामर  
धरनारी दासीओ, आठ पंखा, आठ पंखा वीजनारी दासीओ, आठ करोटिका-तावूलना करंडिया-ने धारण करनारी दासीओ, आठ क्षीरधानीओ  
( दूध पानारी धावो ), यावद् आठ अंकघात्रीओ, ( खोळामां रमाडनारी धावो ) आठ अगमर्दिकाओ,-शरीरत्तुं अल्प मर्दन करनारी दासीओ,  
आठ उन्मर्दिकाओ ( अधिक मर्दन करनारी दासीओ ), आठ स्नान करावनारी दासीओ, आठ अलंकार पहारावनारीओ, आठ चंदन घसनारीओ,  
आठ तावूल चूर्ण पीसनारीओ, आठ कोष्ठागारत्तुं रक्षण करनारी, आठ परिहास करनारी, आठ सभामां पासे रहेनारी, आठ नाटक करनारीओ,  
आठ कौटुंबिकीओ-साथे जनारी दासीओ, आठ रसोइ करनारी, आठ भाडागारत्तुं रक्षण करनारी, आठ मालणो, आठ पुष्प धारण करनारी,  
आठ पाणी लावनारी, आठ वलि करनारी, आठ पयारी तैयार करनारी, आठ अंदरनी अने आठ वहारनी प्रतिहारीओ, आठ माला करनारीओ,  
आठ पेपण करनारी, अने ए शिवाय वीजुं घणुं हिरण्य, सुवर्ण, कासुं, वन्न तथा विपुल धन, कनक, यावत् विद्यमान सारभूत धन आर्युं,  
जे सात पेढी सुधी इच्छापूर्वक आपवा अने भोगववाने परिपूर्ण हतुं. स्यार वाद ते महावल कुमार दरेक छीने एक एक हिरण्यकोटि, एक  
एक सुवर्णकोटि अने मुकुटोमां उत्तम एक एक मुकुट आपे छे. ए प्रमाणे पूर्वोक्त सर्व वस्तुओ एक एक आपे छे, यावत् एक एक पेपण  
करनारी दासी तथा वीजुं पण घणुं हिरण्य यावद् वहेची आपे छे. स्यार पछी ते महावल कुमार उत्तम प्रासादमा उपर वेसी ‡जमालिनी पेठे  
पावद् विहारे छे.

३३. ते काले-ते समये विमलनाथ तीर्थकरना प्रपौत्र-प्रशिष्य धर्मघोष नामे अनगार हता, ते जातिसंपन्न हता-इत्यादि वर्णन  
केशी स्वामीनी पेठे जाणवुं, यावद् तेओ पांचसो साधुना परिवारनी साथे अनुक्रमे एक गामथी वीजे गाम विहार करता, ज्या हस्तिनागपुर  
नामे नगर छे, अने ज्या सहस्राश्रवण नामे उद्यान छे त्या आवे छे, आवीने यया योग्य अवप्रहने ग्रहण करी समय अने तपवडे आत्माने

धर्मघोष अनगारत्तुं  
भागमन.

३२ \* जुओ राजप्रश्रीय प० ६८-१. † जुओ औपपा० प० ७६-२. ‡ जमालिनुं वर्णन जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६६.

३३ † जुओ राजप्र० प० ११८-१.

નગરે, જેનેવ સદસંવવણે ઉજ્જાણે, તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ર, ઉવાગચ્છિત્તા અદ્વાપડિરૂચં ડગ્ગદં ઓગિણ્ઠિતિ, ઓગિણ્ઠિત્તા સંજમેણ તવસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરતિ । તપ્પ ણં દ્હનિયણાપુરે નગરે સિંઘાડગ-નિયં જાવ-પરિસા પજ્જવામ્મદ્ ।

૩૪. તપ્પ ણં તસ્સ મહવ્વલસ્સ કુમારસ્સ તં મહયાજ્ઞણસદ્દં વા જ્ઞણવૂરં વા એવં જહા જમાલી નહેવ ચિંતા, તદ્દેવ કચુ ઇજ્જપુરિસં સદ્દાવેતિ, કંચુઇજ્જપુરિસો વિ તદ્દેવ અન્નગાતિ, નવરં ધમ્મઘોસસ્સ અણગારસ્સ આગમણગદ્ધિયવિણિચ્છપ્પ કરયન્ત્ત્વં જાવ-નિગ્ગચ્છદ્ । એવં રત્તુ દેવાણુપ્પિયા ! વિમલસ્સ અરહ્સો પડપ્પ, ધમ્મઘોસે નામં અણગારે, સેસં તં ચેવ, જાવ-સો વિ તદ્દેવ રહ્સવેરેણં નિગ્ગચ્છતિ । ધમ્મકદ્દા જહા કેસિસામિસ્સ । સો વિ નહેવ અમ્મા-પિયરો આપુચ્છદ્, નવરં ધમ્મઘોસસ્સ અણગારસ્સ અંતિયં મુંડે ભવિત્તા અગારાથો અણગારિયં પદ્ધત્તપ, તદ્દેવ યુત્તપડિયુત્તયા, નવરં ઇમાઓ ય તે જાયા ! વિટલ્લગાયલુલ, વાલિયાઓ ફલાં, સેસં તં ચેવ જાવ-તાદે અકામાદં ચેવ મહવ્વલકુમારં પયં ઘયાસી-‘તં ઇચ્છામો તે જાયા ! ... વિ રજ્જસિરિં પાસિત્તપ’ । તપ્પ ણં સે મહવ્વલે કુમારે અમ્મા-પિયરાણ વયણમણ્ણયત્તમાણે તુસિર્ણીય સંચિટ્ઠિતિ । તપ્પ ણં સે યો રાયા કોહુંવિયપુરિસે સદ્દાવેદ્, એવં જહા સિવમ્મદ્ધસ્સ તદ્દેવ રાયામિસંઘો ભાણિયઘો, જાવ-અર્મિસિચ્છતિ । ... મહવ્વલં કુમારં જપ્પણં વિજ્જપ્પણં વઙ્ગાવેતિ, જપ્પણં વિજ્જપ્પણં વઙ્ગાવિત્તા જાવ-એવં ઘયાસી-‘મણ જાયા ! કિં ઘેમો, કિં પય ચ્છામો’, સેસં જહા જમાલિસ્સ તદ્દેવ, જાવ-તપ્પ ણં સે મહવ્વલે અણગારે ધમ્મઘોસસ્સ અણગારસ્સ અંતિયં ... ચોદ્ધસ પુઘાદં અદ્ધિજ્જતિ, અદ્ધિજ્જિતા વઘ્ઘાદ્ધિં ચડત્થં જાવ-વિચિત્તેદ્ધિં તવોકમ્મેદ્ધિં અપ્પાણં ભાવેમાણે વઘ્ઘપડિપુઘાદં ... વાસાદં સામન્નપરિયાગં પાડણતિ, વઘ્ઘં ૨-ણિત્તા માસિયાપ સંલેહ્ણણાપ સંટ્ટિ મત્તાદં અણસણાપં આલોહ્ણપડિધંતે સમાદ્ધિ પત્તે કાલમાસે કાલં કિચ્છા ઉદ્ધં ચંદમ-સરિયં જહા ધમ્મડો, જાવ વંમલોપ કપ્પે ઘેવત્તાપ ઉચ્ચઘે । તત્ત્વ ણં ... દેવાણં દસ સાગરોવમાદં ટિત્તી પણ્ણત્તા, તત્ત્વ ણં મહવ્વલસ્સ વિ દસ સાગરોવમાદં ટિત્તી પત્તત્તા । સે ણં તુમં સુદંસણા વંમલોગે કપ્પે દસ સાગરોવમાદં દિઘ્ઘાદં ભોગમોગાદં મુંજમાણે વિહરિત્તા તાથો ચંવ ઘેવલોગાથો આડન્નપણં ૩ અર્ણતરં ... ચદ્ધત્તા ઇહેવ વાણિયગ્ગામે નગરે સેટ્ઠિકુલંસિ પુત્તપ્પાપ પચ્ચાયાપ ।

ભાવિત કરતા યાવદ્ વિહરે છે. તે સમયે દક્ષિનાગપુર નગરમા ઝૂંગાટક, ટ્રિક- [ વગેરે માર્ગોમાં ઘણા માણસો પરસ્પર એમ કહે છે ત્યાદિ યાવત્ પરિપદ્ ઉપાસના કરે છે.

૩૪. ત્યાર વાદ તે મહાવલ કુમાર ઘણા માણસોના શરૂને, જનના કોલાહલને સામઠી એ પ્રમાણે યાવત્ જમાલિની પેટે ના યાવત્ તે મહાવલ કુમાર કંચુકી પુરુષને બોલાવે છે, અને કંચુકી પુરુષ પણ તેજ પ્રમાણે કહે છે, પરન્તુ એટલો મિત્રો છે કે તે કંચુકી ધર્મઘોષ મુનિના આગમનનો નિશ્ચય જાણીને હાથ જોડીને યાવદ્ નોકલે છે. એ પ્રમાણે હે દેવાતુપ્રિય ! વિમલનાય અરિહંતના પ્રથિય ધર્મઘોષ અનગાર અહીં આવ્યા છે-ઇત્યાદિ પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ તે મહાવલ કુમાર પણ ઉત્તમ રયમાં વેસીને વાદવા નોકલે છે. ધર્મકથા કિંમિ સ્વામિની પેટે જાણવી. મહાવલ કુમાર પણ તે પ્રમાણે માતાપિતાની રજા માગે છે, પરન્તુ તે ‘ધર્મઘોષ અનગારની પામે દીક્ષા ત્દ અગારથી-ગૃહ વાસયકી અનગારિકપણું લેવાને ઇચ્છું છું’ એમ કહે છે-ઇત્યાદિ ઉક્તિ અને પ્રત્યુક્તિ તે પ્રમાણે (જમાલિના ચરિતમા વર્ણવ્યા પ્રમાણે) જાણવી. પરન્તુ હે પુત્ર ! [ આ તારી સ્ત્રીઓ ] વિપુલ એવા રાજકુલમા ઉત્પન્ન યયેલી વાલાઓ છે, વઠ્ઠી તે કલાઓમા કુગલ છે-ઇત્યાદિ વધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. યાવત્ માતાપિતા એ ઇચ્છા વિના તે મહાવલ કુમારને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હિ પુત્ર ! એક દિવસ પણ તારી રાજ્યલક્ષ્મીને જોવા અને ઇચ્છી-એટીએ,’ ત્યારે તે મહાવલ કુમાર માતાપિતાના વચનને અનુસરીને ચૂપ રહ્યો. પછી તે વલ રાજાએ કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા-ઇત્યાદિ ડિગિવમ્મ પેટે રાજ્યાભિષેક જાણવો, યાવત્ રાજ્યાભિષેક કર્યો, અને હાથ જોડીને મહાવલ કુમારને જય અને વિજયવઢે વધાવી યાવદ્ આ પ્રમાણે કહ્યું ‘હે પુત્ર ! કહે કે તને શું દડપ, તને શું આપીએ,’ ઇત્યાદિ વાકીનું વધું જમાલિની પેટે જાણવું, યાવત્ ત્યાર પછી તે મહાવલ અનગાર ધર્મઘોષ અનગારની પાસે સામાયિકાદિ ચત્તદ પૂર્વેને મળે છે, મળીને ઘણા ચતુર્થ મક્ક, યાવદ્ વિચિત્ર તપકર્મવઢે આત્માને ભાવિત કરીને સંપૂર્ણ વાગ વર્ષ શ્રમણ પર્યાયને પાલે છે, પાલ્લીને માસિક સલેલનાવઢે નિરાહારપણે સાઠ મક્કોને વીતાવી, આલોચના અને પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિને પ્રાપ્ત થઈ મરણ સમયે કાલ કરી ઊર્વ્ય લોકમા ચંદ્ર અને સૂર્યની ઉપર વઘુ દૂર અવઙ્ગની પેટે યાવત્ બ્રહ્મલોક કન્નપમા દેવપણે ઉત્પન્ન થયો. ત્યા કેટલાક દેવોની સ્થિતિ દસ સાગરોપમની કહેલી છે. તેમાં મહાવલ દેવની પણ દસ સાગરોપમની સ્થિતિ કહેલી છે. હે સુદર્શન ! તું તે બ્રહ્મલોક કન્નપમાં દસ સાગરોપમ સુધી દિવ્ય અને ભોગ્ય એવા મોગોને મોગવી તે દેવલોકથી આયુપનો, મવનો અને સ્થિતિનો ક્ષય થયા હે તુરતજ ચ્યવી અહીંજ વાણિજ્યપ્રામ નામના નગરમાં શ્રેષ્ઠિના કુલમાં પુત્રપણે ઉત્પન્ન થયો છે.

૩૪ \* જુઓ મગં સંં ૩ શં ૧ સં ૨૩ પ્ ૧૬૬ † જુઓ રાજપ્રં ૫૦ ૧૨૦-૧.

‡ જુઓ મગં સંં ૩ શં ૧ સં ૨૩ પ્ ૧૬૯-૧૭૨.

§ જુઓ મગં સંં ૩ શં ૧૧ સં ૧ પ્ ૨૨૨.

¶ મગં સંં ૩ શં ૧ સં ૨૩ પ્ ૧૭૩.

§ જુઓ ઔપાં અવઢાધિકાર ૫૦ ૧૭-૨.

૩૫. તદ્દં પુનઃ તુમે સુદંસણા ! ઉમ્મુક્રવાલભાવેણં વિદ્યાયપરિણયમેત્તેણં જોદ્વળગમણુપ્પત્તેણં તદ્દારૂવાણં થેરાણં અંતિયં  
 ત્તેવલિપ્પત્તે ધમ્મે નિસંતે, સેઽવિ ય ધમ્મે ઇચ્છિય, પડિચ્છિય, અભિરુદ્ધય; તં સુદુ પુનં તુમં સુદંસણા ! ઇદાર્ણિં પકરેસિ । સે  
 તેણદ્દેણં સુદંસણા ! એવં બુદ્ધઈ—અત્થિયં પં પટેસિં પલિઓવમ—સાગરોવમાણં સ્વયેતિ વા અવચ્ચયેતિ વા । તદ્દં પુનં તસ્સ સુદંસણસ્સ  
 સેઽટ્ઠિસ્સ સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં પ્યમદ્દં સોચ્ચા નિસમ્મ સુભેણં અજ્જવસાણેણં સુભેણં પરિણામેણં લેસાર્હિં  
 વિસુજ્જમાણીહિં તથાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્વઓવસમેણં ઈહા—પોહ—મગ્ગણ—ગવેસણં કરેમાણસ્સ સન્નીપુદ્ધજાતીસરણે સમુપ્પન્ને,  
 પ્યમદ્દં સમ્મં અભિસમેતિ । તદ્દં પુનં સે સુદંસણે સેટ્ઠી સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં સંભારિયપુદ્ધભવે દુગુણાણીયસદ્ધસંવેગે આણંદં-  
 સુપુદ્ધનયણે સમણં ભગવં મહાવીરં તિવસુત્તો આયાહિણં પયાહિણં કરેતિ, આ૦ ૨—રેત્તા વંદતિ નમંસતિ, વંદિત્તા નમંસિત્તા એવં  
 તયાસી—‘પવમેયં મંતે ! જાવ સે જહેયં તુજ્જે વદદ્ધ’ત્તિ કદ્દુ ઉત્તરપુરચ્છિમં દિસીમાગં અવક્રમદ્ધ, સેસં જહા ઉસમદત્તસ્સ,  
 ત્તિ વા—સઘદુવ્વપ્પહીણે, નવરં ચોદસ પુદ્ધાઈ અહિજ્જઈ, વહુપડિપુદ્ધાઈ દુવાલસ વાસાઈ સામન્નપરિયાગં પાડણઈ, સેસં તં ચેવ ।  
 એવં મંતે ! સેવં મંતે ! ત્તિ । મહવ્વલો સમત્તો ।

### एकारसमे स एकारसमो उद्देशो समत्तो ।

૩૫. ત્યાર વાદ હે સુદર્શન ! વાલપણાને વીતાવી વિજ્ઞ અને મોટો થઈ, યૌવનને પ્રાપ્ત થઈ તે તેવા પ્રકારના સ્થવિરોની પાસે કેવલિયે કહે-  
 યો ધર્મ સાંભળ્યો, અને તે ધર્મ પળ તને ઇચ્છિત અને સ્વીકૃત થયો, તથા તેના ઉપર તને અભિરુચિ થઈ. હે સુદર્શન ! હાલ તુ જે કરે છે તે  
 કરું કરે છે. તે માટે હે સુદર્શન ! એમ કહેવાય છે કે એ પલ્લોપમ અને સાગરોપમનો ક્ષય અને અપચય થાય છે. ત્યાર વાદ શ્રમણ ભગવંત  
 મહાવીરની પાસેથી ધર્મને સાંભળી, અવધારી તે સુદર્શન શેઠને શુભ અધ્યવસાયવહે, શુભ પરિણામવહે અને વિશુદ્ધ લેશ્યાઓથી તદાવરણીય  
 મોનો ક્ષયોપશમ થવાથી ઈહા, અપોહ, માર્ગણા અને ગવેપણા કરતાં સંજ્ઞિરૂપ પૂર્વ જન્મનું સ્મરણ ઉત્પન્ન થયું, અને તેથી ભગવંતે કહેલા આ  
 ધર્મને સારી રીતે જાણે છે. ત્યાર વાદ તે સુદર્શન શેઠને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરે પૂર્વભવ સંભારેલો હોવાથી વેવડી શ્રદ્ધા અને સવેગ ઉત્પન્ન થયો,  
 આનાં લેચન આનંદાશ્રુથી પરિપૂર્ણ થયા, અને તેણે શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને ત્રણ વાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી, વાદી અને નમીને આ પ્રમાણે  
 કહ્યું—‘હે ભગવન્ ! તમે જે કહો છો તે એજ પ્રમાણે છે—યાવત્ એમ કહી તે સુદર્શન શેઠ ઉત્તરપૂર્વ (ઈજ્ઞાન) દિશા તરફ ગયા. વાકી વધું  
 પાઉં અમદત્તની પેઠે જાણવું, યાવત્ તે સુદર્શન શેઠ સર્વ દુઃખથી રહિત થયા. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે તે પૂરા ચૌદ પૂર્વો મળે છે, અને સંપૂર્ણ  
 આર વરસ સુધી શ્રમણપર્યાયને પાલે છે. વાકી વધુ પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે, હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે—એમ  
 આવી યાવદ્ વિહરે છે.

સુદર્શન શેઠને  
જાતિસરણ.

સુદર્શન શેઠની  
પ્રવચ્ચા.

एकादश शते महाबल नाम एकादश उद्देशक समाप्त.



## दुवालसमं सयं ।

१ संखे २ जयंति ३ पुढवि ४ पोग्गल ५ अइवाय ६ राहु ७ लोगे य ।  
८ नागे य ९ देव १० आया वारसमसए दसुहेसा ॥ १ ॥

### पढमो उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था, वघ्नधो । कोट्टए चेइए, वघ्नधो । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए वह्वे संसप्पामोअया समणोवासगा परिवसंति, अट्ठा, जाव-अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति । तस्स णं संघस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव-सुक्खा समणोवासिया अभिगयजीवा-जीवा जाव-विहरइ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोवण्णी नामं समणोवासए परिवसइ, अट्ठे, अभिगय० जाव-विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया, जाव-पज्जुवासइ । तए णं ते समणोवासगा इमीसे कट्ठाए जहा जालंभियाए जाव-पज्जुवासंति । तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगणं तीसे य महत्ति० धम्मकहा, जाव-परिसा पडिगया । तए णं ते समणो-वासगा समणस्स भगवधो महावीरस्स अंतियं धम्मं सोघा निसग्ग हट्टुट्ट० समणं भगवं महावीरं वंदंति, नमंसंति, वंति ।

### वारसुं शतक.

[ उद्देशक सग्रह- ] १ शंख, २ जयंती, ३ पृथिवी, ४ पुद्गल, ५ अतिपात, ६ राहु, ७ लोक, ८ नाग, ९ देव अने १० आमा-ए विषयो सवन्वे दश उद्देशको वारमा शतकमा कहेवामा आवणे.

### प्रथम उद्देशक.

१. ते काले, ते समये श्रावस्ती नामनी नगरी हती. वर्णन कोटक नामे चैत्य हतु वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीमा शंखप्रमुख घण श्रमणोपासको रहेता हता, तेओ धनिक यावद् अपरिभूत-कोइथी पराभव न पामे तेवा अने जीवाजीव तत्त्वे जाणनारा हता. ते नामना श्रमणोपासकने उत्पला नामे स्त्री हती, ते सुकुमाल हायपगवाळी, यावत् सुरूपा अने जीवाजीव तत्त्वे जाणनारी श्रमणोपासिका यावद् विहरती हती. ते श्रावस्ती नगरीमां पुष्कली नामे श्रमणोपासक रहेतो हतो, ते धनिक अने जीवाजीव तत्त्वे ज्ञाता हतो. ते काले, ते समये त्या महावीर स्वामी समवसर्या, परिपद् वादवाने नीकली, यावत् ते पर्युपासना करे छे. लार वाद ते श्रमणोपासको भगवंत आव्यानी आ वात सामळी आलभिका नगरीना श्रावकोनी पेठे यावत् पर्युपासना करे छे. लार वाद श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा ते अत्यंत मोटीं समाने धर्मकथा कही, यावत् समा पाळी गई. पछी ते श्रमणोपासकोए श्रमण भगवत महावीर पासेयी धर्म सामळी, अवधारी हपित अने सतुष्ट थई श्रमण भगवंत महावीरने वाधा अने नमन करुं, वादीने, नमीने प्रश्नो पूछ्या, प्रश्नो पूछीने तेना

नमंसित्ता पासिणाइं पुच्छंति प० २—च्छित्ता अट्टाइं परियादियंति, अ० २—यित्ता उट्टाप उट्टंति, उ० २—त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

२. तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—‘तुज्जे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं साइमं साइमं उवक्खडावेह, तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजे-माणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो । तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्टं विणएणं पडिभुणंति । तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारुवे अम्मत्थिए जाव—समुप्पज्जित्था—‘नो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव—साइमं आसाएमाणस्स ४ पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोस-हियस्स वंभचारिस्स उम्मुक्कमणि—सुवन्नस्स ववगयमाला—वन्नग—विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ—मुसलस्स एगस्स अविइयस्स द्धमसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए’त्ति कट्टु एवं संपेहेत्ति, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव एए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, ते० २—च्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २—च्छित्ता पोसहसालं अणुपविस्सइ, अणुपविस्सित्ता पोसहसालं पमजइ, पो० २—जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, उ० २—हित्ता द्धमसंथारगं संथरति, द्धम० २—रित्ता द्धमसंथारगं दुरूहइ, इ० २ दुरूहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी जाव—पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरति ।

३. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं २ गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, ते० २—च्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ति, उवक्खडावेत्ता अन्नमन्नं सहावेत्ति, अ० २—वेत्ता एवं वयासी—‘एवं खलु देवाणु-प्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण—पाण—खाइम—साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हद्दमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समणोवासगं सहावेत्तए’ ।

४. तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—‘अच्छह णं तुज्जे देवाणुप्पिया ! सुनिच्चुया पीसत्था, अहन्नं संखं समणोवासगं सहावेमि’त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सावत्थीए नगरीए मज्झं—मज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, ते० २—च्छित्ता संखस्स समणो-वासगस्स गिहं अणुपविट्ठे ।

५. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्टतुट्टं० आसणाओ अच्चु

अर्थों ग्रहण कर्या, अर्थों ग्रहण करी अने उभा यई श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने कोष्टक नामे चैत्यथी नीकळीने तेओए श्रावस्ती नगरी तरफ जवानो विचार कर्यो.

२. पछी ते शंख नामे श्रमणोपासके ए वधा श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कहुं के हे देवानुप्रियो ! तमे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने तैयार करावो, पछी आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारनो आखाद लेता, विशेष खाद लेता, परस्पर देता अने खाता पाक्षिक पोपधनुं अनुपालन करता विहरीशुं. ल्यार पछी ते श्रमणोपासकोए शंख नामना श्रमणोपासकनुं वचन पोपधनुं पूर्वक स्वीकार्युं. ल्यार वाद ते शंख नामे श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावद् उत्पन्न थयो—‘अशन, यावत् खादिम आहा-र आखाद लेता, विखाद लेता, परस्पर आपता अने खाता पाक्षिक पोपधने ग्रहण करीने रहेतुं मने श्रेयस्कर नयी, पण मारी पोपधशा-रामां ब्रह्मचर्यपूर्वक, मणि अने सुवर्णनो त्याग करी माला, उद्वर्तन अने विलेपनने छोडी शख अने मुसल वगैरेने मूकीने तथा डामना पयारा सहित मारे एकलाने—बीजानी सहाय शिवाय—पोपधनो स्वीकार करी विहरतुं श्रेय छे.’ एम विचार करी, श्रावस्ती नगरीमा ज्यां पोतानु घर छे, अने ज्या उत्पला श्रमणोपासिका रहे छे, त्यां आवी उत्पला श्रमणोपासिकाने पूळी, ज्यां पोपधशाला छे त्यां जइ, पोपधशा-रामां प्रवेश करी, पोपधशालाने प्रमार्जी निहार अने पेगाव करवानो जग्याने प्रतिलेही—तपासीने डामनो संथारो पाथरी तेना उपर बेटो, बीजाने पोपधशालामा पोपधग्रहण करी ब्रह्मचर्यपूर्वक यावत् पाक्षिक पोपधनुं पालन करे छे.

३. ल्यार वाद ते श्रमणोपासकोए श्रावस्ती नगरीमा पोतपोताने घेर जइ, पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने तैयार करावो परस्पर एक बीजाने बोलावी आ प्रमाणे कहुं—‘हे देवानुप्रियो ! आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने तैयार करावेछो छे, पण ते शंख श्रमणोपासक जलदी आव्या नहि, माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे शंख श्रमणोपासकने बोलाववा श्रेयस्कर छे.

४. ल्यार वाद ते पुष्कळी नामना श्रमणोपासके ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कहुं—‘हे देवानुप्रियो ! तमे शातिपूर्वक विसामो ल्यो, अने इं शंख श्रमणोपासकने बोलावतुं छुं, एम कही श्रमणोपासकोनी पासेथी नीकळी श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमा ज्या शंख श्रमणोपास-कनुं घर छे, त्या जइ तेणे शंख श्रमणोपासकना घरमां प्रवेश कर्यो.

५. पछी ते [ शंख श्रावकनी पत्नी ] उत्पला श्रमणोपासिका ते पुष्कळी श्रमणोपासकने आवतो जोइ, हर्षित अने सतुष्ट यई पो-

शखनो संकल्प-  
अशनारिनो आहार  
करता पाक्षिक पोपध  
तेनो मने श्रेयस्कर  
नयी

भोजन माटे शंख  
श्रमणोपासकने बो-  
लाववा श्रेय छे.

पुष्कळी श्रमणो-  
पासकना घरमां प्रवेश  
कर्यो.

द्वेष्ट, आ० २-त्ता सत्त-दृ पयाइं अणुगच्छद, अणुगच्छित्ता पोन्नरालि समणोवासगं वंदति, नमंमति, पंदित्ता नमंसित्ता आस-  
णेणं उवनिमंतेद, आ० २-त्ता एवं वयासी-‘मंदिसनु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्ययोजणं ? तप णं से पोक्कली समणो-  
वासप उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी-कहिंमं देवाणुप्पिया ! मंगे समणोयामण ? तप णं सा उप्पला समणोवासिया  
पोक्कालि समणोवासयं एवं वयासी-एवं मलु देवाणुप्पिया ! संगे समणोयामण पोसहसालाप पोसहिय थंगयार्गी जाव-विहरद ।

६. तप णं से पोक्कली समणोवासण जेणेव पोसहसाला, जेणेव संगे समणोयामण तेणेव उचागच्छद, ते० २-च्छित्ता  
गमणागमणाण पडिक्कमद, ग० २-मित्ता संरं समणोवासगं वंदति नमंमति, पंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-‘एवं मलु देवा-  
णुप्पिया ! अमदेहिं से विउले असणे० जाव-साइमे उवमरटाधिप, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! तं विउलं अमणं जाव-मारं  
आसापमाणा जाव-पडिजागरमाणा विहरामो ।

७. तप णं से संखे समणोवासण पोक्कालि समणोवासरं एवं वयासी-‘णो मलु कप्पद देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं  
पाणं खाइमं साइमं आसापमाणस्स जाव-पडिजागरमाणस्स विहरित्तप, कप्पद मे पोसहसालाप पोसहियस्स जाव-विहरि-  
त्तप, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुम्हे तं विउलं असणं पाणं साइमं साइमं आसापमाणा जाव विहरद ।

८. तप णं से पोक्कली समणोवासण संगस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्कमद, पडिनिक्कमित्ता  
सार्वथिं नगरिं मज्झं-मज्जेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उचागच्छद, ते० २-च्छित्ता ते समणोवासण एवं वयासी-‘एवं मलु  
देवाणुप्पिया ! संरो समणोवासण पोसहसालाप पोसहिय जाव-विहरद, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुम्हे विउलं असणं ४ जाव  
विहरद, संरो णं समणोवासण नो द्दममागच्छद । तप णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं ४ आसापमाणा जाव-विहरंति ।

९. तप णं तस्स संरस्स समणोवासगस्स पुद्दरत्ता-वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूचे जाव  
-समुप्पजित्था-‘सेयं मलु मे कल्लं जाव-जलंते समणं भगवं महाधीरं पंदित्ता नमंसित्ता जाव-पज्जयासित्ता तओ पडिनिय-  
त्तस्स पन्निपयं पोसहं पारित्तणंत्ति कट्टु एवं संपेदेति, एवं संपेहेत्ता कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्कमति, पडि-  
निक्कमित्ता मुद्दप्पावेसाइं मंगल्लाइं चत्याइं पवरपरिहिय सयाओ गिहाओ पडिनिक्कमति, स० २-मित्ता पादधिहारचारेणं  
सार्वथिं नगरिं मज्झंमज्जेणं जाव-पज्जयासति, अभिगमो नत्थि ।

ताना आसनथी उठी, सात आठ पगळ तेनी सामे जड पुष्कलि श्रमणोपासकने वादी अने नमी आसनवडे उपनिमंत्रण कर्वा वाद  
आ प्रमाणे बोली-‘हे देवानुप्रिय ! कटो, के तमारा आगमननुं शुं प्रयोजन छे ? त्वारे ते पुष्कलि श्रमणोपासके ते उपला श्रमणोपासिकाने  
आ प्रमाणे कल्लुं-‘हे देवानुप्रिये ! शंख श्रमणोपासक क्या छे ? त्वार वाद ते उत्पटा श्रमणोपासिकाए ते पुष्कलि श्रमणोपासकने आ प्रमाणे  
कल्लुं-‘हे देवानुप्रिय ! खरेखर शंख श्रमणोपासक पोपधशालामा पोपध ग्रहण करी ब्रह्मचारी यइने यावद् विहरे छे ।’

६. त्वार वाद ते पुष्कलि श्रमणोपासके ज्या पोपधशाला छे, अने ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां आवां, गमनागमनने ( जता अ  
वतां कोइ जीवनां हिंसा करी होय तेने ) प्रतिक्रमी शंख श्रमणोपासकने वादी अने नर्माने तेने आ प्रमाणे कल्लुं-‘हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे  
खरेखर अमे घणो अशन, यावत्-स्वादिम आहार तैवार कराव्यो छे, तो हे देवानुप्रिय ! आपणे जडए, अने पुष्कळ अशन, यावत्-स्वादिम  
आहारनो आस्वाद लेना यावत्-पोपधनुं पाठन करता विहरीए.

७. त्वार वाद ते शंख श्रमणोपासके ते पुष्कलि श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कल्लुं-‘हे देवानुप्रिय ! पुष्कळ अशन, पान, खादिम  
अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावत् पोपधनुं पाठन करी विहरखुं मने योग्य नथी, मने तो पोपधशालामा पोपधयुक्त यइने यावत्  
विहरखुं योग्य छे. माटे हे देवानुप्रिय ! तमे इच्छा प्रमाणे घणा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावद् विहरो.

८. त्वार वाद ते पुष्कलि श्रमणोपासक शंख श्रमणोपासकनी पारिथी पोपधशालामाथी बहार नीकळी श्रावस्ती नगरीना मय्यभागमां  
ज्यां ते श्रमणोपासको छे त्यां आव्यो, अने त्या आवी ते श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कल्लुं-‘हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर शंख श्रमणो-  
पासक पोपधशालामा पोपध ग्रहण करीने यावद् विहरे छे. [ तेणे कल्लुं छे के- ] ‘हे देवानुप्रियो ! तमे इच्छा मुजव घणा अशन, पान,  
खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावत् विहरो, शंख श्रमणोपासक तो शीत्र नहि आवे’. त्वार वाद ते श्रमणोपासको ते विपुळ  
अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने आस्वादता यावद्-विहरे छे.

९. त्वार वाद मय्य रात्रिना समये धर्म जागरण करता ते शंख श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ विचार यावत् उत्पन्न थयो-  
‘आवती काले यावत् सूर्य उगवाना समये श्रमण भगवंत महावीरने वादी, नमी यावत् पर्युपासना करी त्यांथी पाछा आवीने पाश्चिक पोपध  
पारणे थैयस्कर छे’-एम विचार करे छे, एम विचारी आवती काले यावत् सूर्योदय समये पोपधशालाथी बहार नीकळी शुद्ध, बहार  
जवा योग्य तथा मंगलरूप वखो उत्तम रीते पहेरी पोताना घरथी बहार नीकळी पने चाली श्रावस्ती नगरीना मय्यभागमां यइने जाव छे,  
यावत् पर्युपासना करे छे. अहिं [ पोपधयुक्त होवाथी ] तेने \*अभिगमो नथी.

१०. तए णं ते समणोवासगा कळं पाडु० जाव—जलंते ण्हाया कयचलिकम्मा जाव—सरीरा सपरहिं २ गेहेहिंतो पडि-  
निक्खमंति, स० २—मिच्चा एगयओ मिलायंति, एगयओ मिलायित्ता सेसं जहा पढमं जाव—पञ्जुवासंति । तए णं समणे  
भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य धम्मकहा, जाव—आणाए आराहए भवति । तए णं ते समणोवासगा समणस्स  
भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेति, उ० २—ट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति,  
वंदिच्चा नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छन्ति, ते० २—च्छित्ता संखं समणोवासयं एवं वयासी—‘तुमं देवा-  
णुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वयासी, तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं० जाव—विहरिस्सामो, तए णं तुमं  
पोसहसालाए जाव विहरिए, तं सुट्टु णं तुमं देवाणुप्पिया ! अम्हे हीलसि । ‘अज्जो’त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए  
एवं वयासी—‘मा णं अज्जो ! तुज्जे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिसह, गरहह, अवमन्नह, संखे णं समणोवासए पिय-  
म्मे चेव, हट्ठधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ।

११. [प्र०] ‘भंते’त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कइविहा णं  
ते ! जागरिया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तंजहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खु-  
जागरिया । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तंजहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खु  
जागरिया’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्नानाण—दंसणधरा जहा खंदए जाव—सवचू सवदरिसी, एए णं बुद्धा  
बुद्धजागरियं जागरंति । जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया भासासमिया जाव—गुत्तवंभचारी एए णं अबुद्धा अबुद्ध-  
जागरियं जागरंति । जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवा—जीवा जाव—विहरन्ति, पते णं सुदक्खुजागरियं जागरंति, से तेणट्टेणं  
गोयमा ! एवं बुच्चइ ‘तिविहा जागरिया जाव—सुदक्खुजागरिया’ ।

१२. [प्र०] तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कोह-  
सट्टे णं भंते ! जीवे किं वंधइ, किं पकरेति, किं चिणाति, किं उचचिणाति ? संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त  
हम्मपगडीओ सिट्ठिलवंधणवद्धाओ—एवं जहा पढमसए असंबुडस्स अणगारस्स जाव—अणुपरियइइ ।

१०. लार वाद [ पूर्वे कहेला ] ते श्रमणोपासको आवती काले यावत् सूर्योदय समये स्नान करी, बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलं-  
कृत करी पोत पोताना धरथी नीकळी एक स्थले मेगा थाय छे, एक स्थले मेगा थइने—इत्यादि बंधुं \*प्रथम निर्गमवत् जाणवुं, यावत् ( भगवंत  
महावीरनी पासे जइ ) तेमनी पर्युपासना करे छे. लार वाद श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा ते सभाने धर्मकथा कही. यावत्  
‘आज्ञाना आराधक थाय छे’ ल्यां सुधी जाणवुं. लार वाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, अव-  
धी, हट्ट अने तुष्ट यया, अने उभा थइ श्रमण भगवंत महावीरने वादी, नमी, ज्या शंख श्रमणोपासक छे ल्यां आव्या; आवीने शंख श्रम-  
णोपासकने तेओए एम कह्युं के—‘हे देवानुप्रिय ! तमे गइ काले अमने एम कह्युं हतुं के, ‘हे देवानुप्रियो ! तमे पुक्कळ अगनादि आहारने  
न्यार करानो, यावद्—आपणे विहरीशुं, लार वाद तमे पोपधशालामा यावद् विहर्या, तो हे देवानुप्रिय ! तमे अमारी ठीक हीलना (हांसी)  
हरी.’ पछी ‘हे आर्यो !’ एम कही श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं—‘हे आर्यो !’ तमे शंख श्रमणोपासकनी हीलना,  
नंदा, खिसना, गहां अने अवमानना न करो, कारण के ते शंख श्रमणोपासक धर्मने विपे प्रीतिवाळो अने दृढतावाळो छे, तथा तेणे  
प्रमाद अने निद्राना त्यागथी ] सुदृष्टि—ज्ञानीशुं जागरण करेल छे.

११. [प्र०] ‘भगवन् ! ए प्रमाणे कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे, वांटी अने नमी तेणे आ प्रमाणे  
कह्युं—‘हे भगवन् ! जागरिका केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जागरिका त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१ बुद्धजाग-  
रिका, २ अबुद्धजागरिका अने ३ सुदर्शनजागरिका. [प्र०] हे भगवन् ! तमे ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के ‘जागरिका त्रण प्रकारनी  
छे, ते आ प्रमाणे—बुद्धजागरिका, अबुद्धजागरिका अने सुदर्शनजागरिका’ ? [उ०] हे गौतम ! जे उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनना धारण  
करलास आ अरिहंत भगवंतो छे—इत्यादि स्कटकना अधिकारमां कह्या प्रमाणे सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे—ए बुद्धो [ केवलज्ञानवडे ] बुद्धजा-  
गरिका जागे छे. जे आ भगवंत अनगारो ईर्यासमितियुक्त, भापासमितियुक्त अने यावत्—गुप्त ब्रह्मचारी छे, तेओ [ ‘केवलज्ञानी नहि होवा-  
थी ] अबुद्ध छे अने तेओ अबुद्धजागरिका जागे छे. तथा जे आ श्रमणोपासको जीवाजीवने जाणनारा छे, यावत् एओ [ सम्यग्दर्शनी  
होवाथी ] सुदर्शनजागरिका जागे छे. माटे ते हेतुथी हे गौतम ! ए प्रमाणे कह्युं छे के जागरिका त्रण प्रकारनी छे, यावत् सुदर्शनजागरिका छे.

१२. [प्र०] लार वाद ते शंख श्रमणोपासके श्रमण भगवंत महावीरने वादी, नमी आ प्रमाणे कह्युं—हे भगवन् ! ‘क्रोधने वश  
होवाथी पीडित थयेले जीव शुं वांवे, शुं करे, शेनो चय करे अने शेनो उपचय करे ? [उ०] हे शंख ! क्रोधने वश थवाथी पीडित  
थयेले जीव आणुप सिवायनी सात कर्मप्रवृत्तिओ शिथिल बन्धनथी वाधेली होय तो कठिन बन्धनवाळी करे—इत्यादि सर्व प्रथम शत-  
कमां कहेला संवररहित अनगारनी पेटे जाणवुं, यावत् ते [ संवररहित साधु ] संसारमां भमे छे.

वीजा श्रमणोपासको  
पण वांदा जाय छे.

शंखनी निद्रा न  
करो.

जागरिकाना  
प्रकार.

क्रोधनी व्याकुल  
थयेले जीव शुं नाने ?

१३. [प्र०] माणवस्ये षं भंते ! जीवे ष्यं च्ये, ष्यं मायावस्येऽपि । ष्यं लोभस्येऽपि, जाय-अणुपरिच्छद ।

१४. तए षं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महाधीग्स्स अंतियं ष्यमट्टं मोघा निसम्म भीया नत्था तणिया संसारभउद्धिगा समणं भगवं महाधीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणव संरे समणोवासए तेणव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता संरं समणोवासगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ष्यमट्टं सम्मं त्रिणएणं भुज्जो २ गामेति । तए षं ते समणोवासगा सेसं जहा आलंभियाण जाय-पडिगया ।

१५. [प्र०] 'भंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महाधीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ष्यं वयासी-पभू षं भंते ! संगे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं० [उ०] सेरं जहा इस्सिमइपुत्तस्स, जाय-अंनं काहेति । सेरं भंते ! सेरं भंते ! ति जाय-विहरइ ।

### पदमो उद्देशो समत्तो ।

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मानने वय धर्माधी पीटित थयेले जीव शुं बावे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कथा प्रमाणे जाणवुं, एज प्रमाणे मायाने वय धर्माधी पीटित थयेला अने लोभने वय धर्माधी पीटित थयेला जीव नंदन्ये पण जाणवुं; यावत् ते नंगारमां भमे छे.

१४. त्यार वाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीरने पामेथी ए प्रमाणे वान सामग्री, अवधानी भय पाम्या, शस पाम्या, त्रिभुवन यथा अने सत्तारना भयथी उद्विग्न थया. तथा तेओ श्रमण भगवंत महावीरने वादी, नगी ज्या शंग श्रमणोपासक छे त्यां जइ शर श्रमणोपासकाने वादी, नगी ए ( अविनयरूप ) अर्थने सारी रीते विनयपूर्वक वारंवार खमावे छे. त्यार वाद ते श्रमणोपासको यावत् पाछा गया. तेनो वाकी रहेले वृत्तात \*आलभिकाना श्रमणोपासकोनी पेटे जाणवो.

१५. [प्र०] 'भगवन् ! एम कही भगवान् गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वादी, नगी आ प्रमाणे कावुं-हे भगवन् ! ते शंग श्रमणोपासक आप देवानुप्रियनी पासे प्रत्रच्या लेवाने समर्थ छे ? [उ०] वाकी वधुं ! ऋषिमद्रपुत्रनी पेटे जाणवुं. यावत्-ते सर्व दु गोनी अ- करवो. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही विहरे छे.

### डादशगते प्रथम उद्देशक समाप्त.

१४ \* आलभिकाना श्रमणोपासक संबन्धे जुओ भग० सं० ३ श० ११ उ० १२ पृ० २४८.

१५ † ऋषिमद्रपुत्रनो संबन्धे जुओ भग० सं० ३ श० ११ उ० १२ पृ० २४८.

## વીઓ ઉદ્દેસો ।

૧. તેણં કાલેણં તેણં સમણં કોસંવી નામં નગરી હત્યા । વન્નઓ । ચંદોવતરણે ચેદ્દ । વન્નઓ । તત્થ ણં કોસંવીય ય સહસ્સાણીયસ્સ રઘ્નો પોત્તે સયાણીયસ્સ રઘ્નો પુત્તે ચેડગસ્સ રઘ્નો નત્તુપ મિગાવતીય દેવીય અત્તપ જયંતીય સમણો-  
પાસિયાપ ભત્તિજ્જણ ઉદાયણે નામં રાયા હત્યા । વન્નઓ । તત્થ ણં કોસંવીય નયરીય સહસ્સાણીયસ્સ રઘ્નો સુણ્ઠા સયાણીયસ્સ  
રઘ્નો ભજ્ઞા ચેડગસ્સ રઘ્નો ધૂયા ઉદાયણસ્સ રઘ્નો માયા જયંતીય સમણોવાસિયાપ માહાજ્ઞા મિગાવતી નામં દેવી હત્યા । વ-  
ન્નઓ, સુકુમાલં જાવ-સુરૂવા સમણોવાસિયા જાવ-વિહરદ્દ । તત્થ ણં કોસંવીય નગરીય સહસ્સાણીયસ્સ રઘ્નો ધૂયા સયાણી-  
યસ્સ રઘ્નો ભગિણી ઉદાયણસ્સ રઘ્નો પિહચ્છા મિગાવતીય દેવીય નણંદા વેસાલીસાવયાણં અરહંતાણં પુષ્પસિજ્ઞાયરી જયંતી નામં  
સમણોવાસિયા હત્યા, સુકુમાલં જાવ-સુરૂવા અભિગયં જાવ વિહરદ્દ ।

૨. તેણં કાલેણં તેણં સમણં સામી સમોસદ્દે । જાવ-પરિસા પહ્ણુવાસદ્દ । તપ ણં સે ઉદાયણે રાયા ઈમીસે કહાપ  
ઠ્ઠદ્દે સમાણે હદ્દ-તુદ્દે કોહુંવિયપુરિસે સહાવેદ્દ, કોં ૨-ત્તા ઇવં વયાસી-પિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! કોસંવિં નગરિં  
પ્રભિતર-વાહિરિયં ઇવં જહા કૂણિઓ તહેવ સદ્દં જાવ-પહ્ણુવાસદ્દ । તપ ણં સા જયંતી સમણોવાસિયા ઈમીસે કહાપ ઠ્ઠદ્દા  
સમાણી હદ્દ-તુદ્દા જેણેવ મિયાવતી દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્દ, તેં ૨-ચ્છિત્તા મિયાવતિં દેવિં ઇવં વયાસી-ઇવં જહા નવમસપ ઉસ-

## દ્વિતીય ઉદ્દેશક.

૧. તે કાલે, તે સમયે કૌશાંવી નામે નગરી હતી. વર્ણન. ચન્દ્રાવતરણ ચૈત્ય હતું. વર્ણન. તે કૌશાંવી નગરીમા સહસ્ત્રાનીક રાજાનો  
પુત્ર, શતાનીક રાજાનો પુત્ર, ચેટક રાજાનો પુત્રીનો પુત્ર, મૃગાવતી દેવીનો પુત્ર, અને જયંતી શ્રમણોપાસિકાનો ભત્રીજો ઉદાયન નામે રાજા  
હતો. વર્ણન. તે કૌશાંવી નગરીમાં સહસ્ત્રાનીક રાજાના પુત્રનો પત્ની, શતાનીક રાજાની પત્ની, ચેટક રાજાની પુત્રી, ઉદાયન રાજાની માતા  
ને જયંતી શ્રમણોપાસિકાની મોજાઈ મૃગાવતી નામે દેવી હતી. સુકુમાલ હાયપગવાળી-ઇત્યાદિ વર્ણન જાણવું, યાવત્ સુરૂપવાળી અને શ્રમ-  
ણોપાસિકા હતી. વળી તે કૌશાંવી નગરીમા જયંતી નામે શ્રમણોપાસિકા હતી, જે સહસ્ત્રાનીક રાજાની પુત્રી, શતાનીક રાજાની ભગિની,  
ઉદાયન રાજાની પોઈ, મૃગાવતી દેવીની નણંદ અને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરના સાધુઓનો પ્રથમ શય્યાતર (વસતિ આપનાર) હતી. તે  
સુકુમાલ, યાવત્ સુરૂપા અને જીવાજીવને જાણનારી યાવત્ વિહરતી હતી.

૨. તે કાલે, તે સમયે મહાવીર સામી સમવસર્યા, યાવત્ પર્યત્ પર્યુપાસના કરે છે. ત્યાર વાદ તે ઉદાયન રાજા આ (શ્રમણ ભગ-  
વંત મહાવીર પધાર્યાની) વાત સાંભળી દષ્ટ તુષ્ટ થયો, અને તેણે કૌટુંબિક પુરુષોને વોટાવી આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હિ દેવાનુપ્રિયો ! શીત્રજ  
કૌશાંવી નગરીને વહાર અને અંદર સાફ કરાવો’-ઇત્યાદિ વધું ‘કૂણિક રાજાનો પેટે કહેવું, યાવત્-તે પર્યુપાસના કરે છે. ત્યાર વાદ (શ્રમણ  
ભગવંત મહાવીર પધાર્યાની) આ વાત સાંભળી તે જયંતી શ્રમણોપાસિકા દષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ, અને ત્યાં મૃગાવતી દેવી છે ત્યાં આમી તેણે મૃગા-  
વતી દેવીને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘પ્રમાણે નવમ શતકમા ઋષ્યપભદ્રત્તના પ્રકરણમા કહ્યા પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ [શ્રમણ ભગવંત મહાવીરનું  
દર્શન આપના કલ્યાણ માટે ] યશે. ત્યાર વાદ જેમ દિવાનંદાઈ ઋષ્યપભદ્રત્તના વચનનો સ્વીકાર કર્યો તેમ મૃગાવતી દેવીએ તે જયંતી શ્રમણો-

કૌશાંવી નગરી.

ઉદાયન રાજા.

જયંતી શ્રમણો  
પાસિકા.

૧ ચંદોવતરણે હ. ૨ તંજહા-સુકુ-હ. ૩ જયંતી સ-હ.

૨ \* ઉત્તવાં ૫૦ ૬૩-૨. † ભગં ૨૦ ૩ ૬૦ ૯ ૭૦ ૩૩ ૫૦ ૧૬૨. ‡ ભગં ૨૦ ૩ ૬૦ ૯ ૭૦ ૩૩ ૫૦ ૧૬૨.

૩૩ મં ૫૦

मदत्तो जाव—भविस्सइ । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा जाव—पडिमुणेति । तए णं सा मियावती देवी कोडुंविद्यपुरिसे सहावेइ, को० २—ता एवं वयासी—‘रिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरण—सुत्तजोइय० जाव—धम्मियं जाणप्पवरं लुत्तामेव उवट्टवेह’ जाव—उवट्टवेनि, जाव—पच्चप्पिणंति । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं प्हाया कयवल्लिकम्मा जाव—सरीरा व्हद्धिं खुज्जाहिं जाव—अंतउराओ निग्गच्छति, अं० २—च्छित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव धम्मियं जाणप्पवरे तेणेव उचागच्छइ, ते० २—च्छित्ता० २ जाव—दुरुढा । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरुढा समाणी नियगपरियाल० जहा उसमदत्तो जाव—धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं व्हद्धिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा जाव—वंदइ नमंसइ, उदायणं रायं पुरओ कट्टु टितिया चेव जाव पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रत्तो मियावरेए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महत्तिमहा० जाव धम्मं परिकहेइ, जाव परिसा पडिगया, उदायणे पडिगए, मियावती देवी वि पडिगया ।

३. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट—तुट्टा समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी—[प्र०] कहन्नं भंते ! जीवा गरुयत्तं हत्थमागच्छन्ति ? [उ०] जयंती ! पाणाइवाएणं, जाव—मिच्छादंसणसहेणं, एवं खलु जीवा गरुयत्तं हत्थमागच्छन्ति । एवं जहा पढमसए जाव—वीईवयंति ।

४. [प्र०] भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाणं किं सभावओ परिणामओ ? [उ०] जयंती ! समावओ, नो परिणामओ ।

५. [प्र०] सधेवि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिद्धिस्संति ? [उ०] हंता ! जयंती ! सधेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिद्धिस्संति ।

६. [प्र०] जउ णं भंते ! सधे वि भवसिद्धिया जीवा सिद्धिस्संति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ! [उ०] णो तिणट्टे समट्टे । [प्र०] से केणं खाइएणं अट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘सधे वि णं भवसिद्धिया जीवा सिद्धिस्संति, नो

पासिकाना वचननो स्वीकार कर्यो, ल्यार पछी ते मृगावती देवीए कौटुविक पुरुपोने वोलावी आ प्रमाणे कहुं—‘हि देवानुप्रियो ! वेगवाहुं ! जोतरसहित यावत् धार्मिक श्रेष्ठ यान जोडीने जट्ठी हाजर करो,’ यावत्—ते कौटुविक पुरुपो यावत् हाजर करे छे, अने तेनी आज्ञा पाछी आपे छे. ल्यार वाद ते मृगावती देवी ते जयंती श्रमणोपासिकानी साथे ज्ञान करी, वल्लिकर्म—पूजा करी, यावत्—शरीरने शणगारी घणी कुञ्ज दासीओ साथे यावत् अंत.पुरथी बहार नीकळे छे, नीकळी ज्या बहारनी उपस्थानशाला छे, अने ज्यां धार्मिक श्रेष्ठ वाहन तैयार उरुं छे, त्या आची यावत् ते वाहन उपर चढी. ल्यार वाद जयंती श्रमणोपासिकानी साथे धार्मिक श्रेष्ठ यान उपर चढेली ते मृगावती देवी पोताना परिवारयुक्त \*ऋषमदत्त ब्राह्मणनी पेटे यावत्—ते धार्मिक श्रेष्ठ वाहनथी नीचे उतरे छे. पछी जयंती श्रमणोपासिकानी साथे ते मृगावती देवी घणी कुञ्ज दासीओना परिवार सहित दिवानंदानी पेटे यावत् वादी, नमी उदायन राजाने आगळ करी त्याज रही नेज यावत् पर्युपासना करे छे. ल्यार वाद श्रमण भगवंत महावीरे उदायन राजाने, मृगावती देवीने, जयंती श्रमणोपासिकाने अने ते अल्पन मोटी परिपटने यावत् धर्मोपदेश कर्यो, यावत् परिपट् पाछी गइ, उदायन राजा अने मृगावती देवी पण पाछा गया.

३. ल्यार वाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवंत महावीरनी पासेयी वर्मने सामळी, अवधारी हट्ट अने तुष्ट थइ, श्रमण भगवंत महावीरने वादी, नमी आ प्रमाणे बोली के—[प्र०] हे भगवन् ! जीवो श्राथी गुरुत्व—भारेपणुं पामे ? [उ०] हे जयंती ! जीवो प्राणो तिपातथी—जीवहिसाथी यावत् मिध्यादर्शनशाल्यथी, ए प्रमाणे खरेखर जीवो मारेकर्मापणुं प्रात करे छे. ए प्रमाणे जेम प्रथम शतक कहुं छे तेम जाणहुं, यावत् तेओ मोक्षे जाय छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोनुं भवसिद्धिकपणुं स्वभावथी छे के परिणामथी छे ? [उ०] हे जयंती ! भवसिद्धिक जीवो स्वभावथी छे, पण परिणामथी नथी.

५. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध यथे ? [उ०] हे जयंती ! हा, सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध यथे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जो सर्वे भवसिद्धिको सिद्ध यथे तो आ लोक भवसिद्धिक जीवो रहित यथे ? [उ०] ते अर्थ यथार्थ नथी, अर्थात् वधा भवसिद्धिको सिद्ध थाय तोपण भवसिद्धिक विनानो लोक नहिं थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे तमे शा हेतुथी कहे छे

२ \* भग० ख० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६४

† भग० ख० ३ पृ० १६४.

३ † भग० ख० १ श० १ उ० ९ पृ० १९९.

४ † सामाजिक भावने स्वभाव कहे छे, जेम पुद्गलने निषे मूर्तव सामाजिक भाव छे. रपान्तरने परिणाम कहे छे, जेम चालव, यावन, वृद्धत्व वगैरे परिणामथी बनेल भावो छे.

चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? [उ०] जयंती ! से जहानामए सद्वागाससेदी सिया, अणादीया अणवद्गगा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए २ अवहीरमाणी २ अणंताहिं ओसप्पिणी—अवसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया, से तेणट्टेणं जयंती ! एवं बुच्चइ—‘सव्वे वि णं भवसिद्धिया जीवा सिद्धिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धिअविरहिए लोए भविस्सइ ।

७. [प्र०] सुत्तं भंते ! साह, जागरियत्तं साह ? [उ०] जयंती ! अत्येगइयाणं जीवाणं सुत्तं साह, अत्येगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साह । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ ‘अत्येगइयाणं जाव—साह’ ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिद्धा अहम्मक्खाइ अहम्मपलोइ अहम्मपलज्जमाणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं सुत्तं साह । एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो व्हणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव—परियावणयाए वट्टंति, एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो व्हहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति, एएसि जीवाणं सुत्तं साह । जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव—धम्मं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साह । एए णं जीवा जागरा समाणा व्हणं पाणाणं जाव—सत्ताणं अदुक्खणयाए, जाव—अपरियावणयाए वट्टंति, ते णं जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा व्हहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एए णं जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साह; से तेणट्टेणं जयंती ! एवं बुच्चइ—‘अत्येगइयाणं जीवाणं सुत्तं साह, अत्येगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साह’ ।

८. [प्र०] वलियत्तं भंते ! साह, दुच्चलियत्तं साह ? [उ०] जयंती ! अत्येगइयाणं जीवाणं वलियत्तं साह, अत्येगइयाणं जीवाणं दुच्चलियत्तं साह । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—जाव साह ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव—विहरंति, एएसि णं जीवाणं दुच्चलियत्तं साह । एए णं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुच्चलियत्तस्स वत्तवया भाणियद्धा । वलियत्तस्स जहा जागरस्स तहा भाणियद्धं, जाव संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं वलियत्तं साह, से तेणट्टेणं जयंती ! एवं बुच्चइ—तं चेव जाव—साह ।

के ‘वधाय पण भवसिद्धिको सिद्ध थशे, अने लोक भवसिद्धिक जीवोथी रहित नही थाय’ ? [उ०] हे जयंती ! जेमके सर्वाकागनी श्रेणी होय, ते अनादि, अनंत, वने वाजुए परिमित अने वीजी श्रेणीओथी परिवृत होय, तेमाथी समये समये एक परमाणु पुद्गलमात्रखंडो काढता काढता अनन्त उत्सर्पिणी अने अनन्त अवसर्पिणी सुथी काडीए तोपण ते श्रेणि खाली थाय नहीं, ते प्रमाणे हे जयंती ! ते हेतुथी कहेवाय छे के, वधाय भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे, तो पण लोक भवसिद्धिक जीवो विनानो थशे नहि.

७. [प्र०] हे भगवन् ! सुतेलापणुं सारुं के जागरितत्व—जागोलापणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं, अने केटलाक जीवोनुं जागोलापणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन् ! या हेतुथी तमे एम कहो छो के ‘केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागोलापणुं सारुं’ ? [उ०] हे जयंती ! जे आ जीवो अधार्मिक, अधर्मने अनुसरनारा, जेने अधर्म प्रिय छे एवा, अधर्म कहेनारा, अधर्मने ज जोनारा, अधर्ममां आसक्त, अधर्माचरण करनारा अने अधर्मथीज आजीविकाने करता विहरे छे, ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. जो ए जीवो सूतेला होय तो वहु प्राणोना, भूतोना, जीवोना तथा सत्त्वोना दु ख माटे, शोक माटे, यावत्—परिताप माटे यता नथी, वळी जो ए जीवो सूतेला होय तो पोताने, वीजाने के वनेने घणी अधार्मिक सयोजना वडे जोडनारा होता नथी, माटे ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. तथा हे जयंती ! जे आ जीवो धार्मिक अने धर्मानुसारी छे, यावत्—धर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं जागोलापणुं सारुं छे, जो ए जीवो जागता होय तो ते घणा प्राणीओना यावत्—सत्त्वोना अदुःख (सुख) माटे यावत्—अपरिताप (शान्ति) माटे वर्ते छे, वळी ते जीवो जागता होय तो पोताने, परने अने वनेने घणी धार्मिक सयोजना (क्रिया) साथे जोडनारा थाय छे, तथा ए जीवो जागता होय तो धर्मजागरिकावडे पोताने जागृत राखे छे, माटे ए जीवोनुं जागोलापणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती ! एम कहेवाय छे के, ‘केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागोलापणुं सारुं छे’.

८. [प्र०] हे भगवन् ! सवलपणुं सारुं के दुर्वलपणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोनुं सवलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्वलपणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन् ! तमे ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, ‘केटलाक जीवोनुं सवलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्वलपणुं सारुं’ ? [उ०] हे जयंती ! जे आ जीवो अधार्मिक छे, अने यावद् अधर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं दुर्वलपणुं सारुं, जो ए जीवो दुवला होय तो कोइ जीवना दुःख माटे यता नथी—इत्यादि ‘सूतेला’नी पेटे दुर्वलपणानी वक्तव्यता कहेवी, अने ‘जागता’नी पेटे सवलपणानी वक्तव्यता कहेवी, यावत्—धार्मिक क्रिया—सयोजनावडे जोडनारा थाय छे, माटे ए जीवोनुं वलवानपणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती ! एम कहेवाय छे के—इत्यादि केटलाक जीवोनुं वलवानपणुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्वलपणुं सारुं छे.

सुतापणु सारु के जागतापणु मारु ?

सवलपणु मारु के दुर्वलपणु मारु ?



९. [प्र०] दम्बत्तं भंते ! साह, आलसियत्तं साह ? [उ०] जयंती ! अत्येगतियाणं जीवाणं दम्बत्तं साह, अत्येगति-याणं जीवाणं आलसियत्तं साह । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-तं चेव जाय साह ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव-विहरंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साह । एए णं जीवा आलसा समाणा नो वट्ठणं, जहा सुत्ता आलसा भाणियघा, जहा जागरा तहा दम्बत्ता भाणियघा, जाव संजोएत्तारो भवंति । एए णं जीवा दम्बत्ता समाणा वट्ठहिं आयरियवे-यावचेहिं, जाव-उवज्झाय०, थेर०, तवस्सि०, गिलाण०, सेह०, कुल०, गण०, संघ०, साहम्मियवेयावचेहिं अत्ताणं संजो-एत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं दम्बत्तं साह, से तेणट्टेणं तं चेव जाय साह ।

१०. [प्र०] सोइंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं वंधट्ट ? [उ०] णं जहा कोहवसट्टे तट्टेव जाव-अणुपरियट्टइ । एवं चरिण्णदियवसट्टे चि, एवं जाव फारिंदियवसट्टे चि, जाव-अणुपरियट्टइ ।

११. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्टं सोच्चा निसम्म छट्ट-तुट्टा सेवं जहा देवानंदा तट्टेव पट्टइया, जाव सट्टदुक्खप्पहीणा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! चि ।

### वीओ उद्देशो समत्तो ।

९. [प्र०] हे भगवन् ! दक्षपणु-उधमीपणुं सारु के आलसुपणु सारु ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोतुं दक्षपणुं सारुं अने केटलाक जीवोतुं आलसुपणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो-इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं. [उ०] हे जयंती ! जे आ जीवो अधार्मिक [ अधर्मानुसारी ] यावद् विहरे छे, ए जीवोतुं आलसुपणुं सारु छे. ए जीवो जो आळसु होय तो घणा जीवोना दुःख माटे यता नथी-इत्यादि वधुं 'सूतेला'नी पेठे कहेवुं, तथा 'जागेला'नी पेठे दक्ष-उधमी जाणया, यावत्-[ धार्मिक प्रवृत्तिओ साथे ] जोडनारा याय छे. वळी ए जीवो दक्ष होय तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, शैक्ष ( नव दीक्षित ), कुल, गण, संघ, अने साधर्मिकना घणा वैयावच्च-सेवा-साथे आत्माने जोडनारा थाय छे. तेथी ए जीवोतुं दक्षपणुं सारुं छे. माटे हे जयंती ! ते हेतुथी एम कहुं छुं-इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं, यावत् केटलाएक जीवोतुं दक्षपणुं सारु छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियने वश थवाथी पीडित थयेले जीव शुं वावे ? [उ०] हे जयंती ! जेम क्रोधने वश थयेला संवन्धे कहुं तेम अहीं पण जाणतुं, यावत् ते संसारमा भमे छे. ए प्रमाणे चक्षुइन्द्रियने वश थयेला अने यावत् स्पर्शेन्द्रियवश थयेला संवन्धे पण जाणतुं, यावत् ते संसारमा भमे छे.

११. सार वाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवत महावीर पासेथी ए वात सामळी, हृदयमां अवधारी, हर्षवाळी अने संतु थई-इत्यादि ( वाकी ) वधुं \*देवानंदानी पेठे जाणतुं. यावत् तेणे प्रत्रज्या ग्रहण करी अने सर्व दुःखथी मुक्त थई. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.

### द्वादशशते द्वितीय उद्देशक समाप्त.

## तईओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-पढमा, दोच्चा, जाव-सत्तमा ।

२. [प्र०]पढमा णं भंते ! पुढवी किंनामा, किंगोत्ता पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! घम्मा नामेणं, रयणप्पमा गोत्तेणं, एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियघो, जाव अप्पावहुगं ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

## तईओ उद्देसो समत्तो ।

## तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावद्-आ प्रमाणे प्पुच्छुं-हे भगवन् ! केटली पृथिवीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-प्रयमा, द्वितीया यावत्-सत्तमी.

पृथिवीओना  
प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम पृथिवी कया नामवाली अने कया गोत्रवाली कही छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रथम पृथिवीतुं नाम 'घम्मा' अने गोत्र रत्तप्रमा छे-ए प्रमाणे \*'जीवाभिगम' सूत्रमा प्रथम नैरयिक उद्देशक कह्यो छे ते वधो यावद्-अल्पवहुत्व सूधी अहिं करेवो. भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.

प्रथमपृथिवीना  
नाम अने गोत्र-

## द्वादशशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

## चउत्थो उहेसो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-पंचं चयासी-दो मंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहस्रंति, एगयओ साहस्रिण्णत्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा ! दुप्पसिण्ण संधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ।

२. [प्र०] तिन्नि मंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहस्रंति, साहस्रिण्णत्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा ! तिपपसिण्ण संधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपपसिण्ण संधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति ।

३. [प्र०] चत्तारि मंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहस्रंति ? जाव-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउपपसिण्ण संधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपपसिण्ण संधे भवइ, अहवा दो दुपपसिया संधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पसिण्ण संधे भवइ, चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ।

४. [प्र०] पंच मंते ! परमाणुपोग्गला-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचपपसिण्ण संधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहाऽवि तिहाऽवि चउहाऽवि पंचहाऽवि कज्जइ; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपपसिण्ण संधे भवइ, अहवा एगयओ दु

## चतुर्थ उदेशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा यावद्-आ प्रमाणे पृथुं-हे भगवन् ! वे परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय, अने एकरूपे एकठा घडने पठी तेतुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो द्विप्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो तेनो भेद थाय तो तेना वे विभाग थाय-एक तरफ एक परमाणुपुद्गल रहे, अने बीजी तरफ एक (बीजो) परमाणुपुद्गल रहे. [.] [.]

२. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ? अने एकठा अईने तेतुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेनो भेद-वियोग थाय तो तेना वे के त्रण विभाग थाय, जो वे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने बीजी तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [.] [..]. तथा जो तेना त्रण विभाग थाय तो त्रण परमाणुपुद्गल रहे. [.] [.] [.]

३. [प्र०] हे भगवन् ! चार परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो ते स्कंधनो भेद थाय तो तेना वे, त्रण अने चार भाग थाय. जो वे भाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध रहे. [.] [...]. अथवा वे द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [..] [..]. जो त्रण भाग थाय तो एक तरफ वे दृष्टा परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [.] [.] [..]. जो चार भाग थाय तो जूदा चार परमाणुपुद्गल रहे. [.] [.] [.] [.]

४. [प्र०] हे भगवन् ! पाच परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय ? [अने पठीं शुं थाय ?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. जो ते भेदाय तो तेना वे, त्रण, चार अने पाच विभाग थाय. जो तेना वे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणु

एसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवन्ति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवति, पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवन्ति ।

५. [प्र०] छम्भंते ! परमाणुपोग्गला-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! छप्पएसिए खंधे भवइ; से भिज्जमाणे दुहाऽवि तिहाऽवि जाव-छ्विहाऽवि कज्जइ; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो तिपएसिया खंधा भवन्ति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा तिन्नि दुपएसिया खंधा भवन्ति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवन्ति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति; छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवन्ति ।

६. [प्र०] सत्त भंते ! परमाणुपोग्गला-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तपएसिए खंधे भवइ; से भिज्जमाणे दुहाऽवि जाव-सत्तहाऽवि कज्जइ; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवन्ति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले,

पुद्गल अने एक तरफ चतुप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••••]. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [••••]. जो तेना त्रण विभाग थाय तो एक तरफ वे परमाणुपुद्गले अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•], [••] [••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ जुदा जुदा वे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•] [••] [••]. जो तेना त्रिप्रदेशिक विभाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [••]. जो तेना त्रिप्रदेशिक विभाग थाय तो जुदा पाच परमाणुओ थाय. [•] [•] [•] [•] [•].

५. [प्र०] हे भगवन् ! छ परमाणुपुद्गले सवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पट्प्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेनो मेद थाय तो तेना वे, त्रण, चार, पाच के छ विभाग थाय. जो तेना वे भाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•••••] अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ एक चतुप्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [••••]. अथवा वे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•••] [•••]. जो तेना त्रण भाग थाय तो एक तरफ जुदा जुदा वे परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक चतुप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••] [•••]. अथवा त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [••] [••] [••]. जो तेना चार भाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ वे परमाणुपुद्गले अने एक तरफ द्विप्रदेशिक वे स्कंधो थाय [•] [•] [••] [••]. जो तेना पाच भाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•] [••]. जो तेना छ भाग थाय तो जुदा जुदा छ परमाणु पुद्गले थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [•].

६. [प्र०] हे भगवन् ! सात परमाणुपुद्गले संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सप्तप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना विभाग थाय तो वे, त्रण, यावत् सात विभाग थाय छे. जो वे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••••••]. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [•••••]. अथवा एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुप्रदेशिक स्कंध थाय. [•••] [••••]. जो तेना त्रण भाग थाय तो एक तरफ वे परमाणुपुद्गले अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय [•] [•] [•••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक अने चतुप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••] [••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ वे त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••] [•••]. अथवा एक तरफ वे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [••] [•••]. जो तेना चार भाग थाय तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक चतुप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [••••]. अथवा

छ परमाणुओ.

सात परमाणुओ.

एगयओ तिन्नि दुपपसिया संधा भवंति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपपसिए संधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपपसिया संधा भवंति; छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपपसिए संधे भवइ; सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति ।

७. [प्र०] अट्ट भंते ! परमाणुपोग्गला-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अट्टपपसिए संधे भवइ; जाव-दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्तपपसिए संधे भवइ; अहवा एगयओ दुपपसिए संधे, एगयओ छप्पपसिए संधे भवइ; अहवा एगयओ तिपपसिए संधे एगयओ पंचपपसिए संधे भवइ; अहवा दो चउप्पपसिया संधा भवंति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पपसिए संधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पपसिए संधे, एगयओ पंचपपसिए संधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपपसिए संधे, एगयओ चउपपसिए संधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपपसिया संधा, एगयओ चउप्पपसिए संधे भवइ; अहवा एगयओ दुपपसिए संधे, एगयओ दो तिपपसिया संधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपपसिए संधे भवति; अहवा एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपपसिए संधे, एगयओ चउप्पपसिए संधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपपसिया संधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपपसिया संधा, एगयओ तिपपसिए संधे भवति; अहवा चत्तारि दुपपसिया संधा भवंति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पपसिए संधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपपसिए संधे, एगयओ तिपपसिए संधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुपपसिया संधा भवंति; छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ

एक तरफ वे परमाणुपुद्गले, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्तंभ अने एक त्रिप्रदेशिक स्तंभ थाय. [•] [•] [••] [•••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्तंभो थाय. [•] [••] [••] [•••]. जो तेना पांच विभाग थाय तो जुदा चार परमाणुपुद्गले, अने एक त्रिप्रदेशिक स्तंभ थाय. [•] [•] [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ वे द्विप्रदेशिक स्तंभो थाय. [•] [•] [•] [••] [••]. जो तेना छ भाग थाय तो एक तरफ जुदा पांच परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्तंभ थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [••]. तथा जो तेना सात भाग थाय तो जुदा जुदा सात परमाणुपुद्गले थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•].

७. [प्र०] हे भगवन् ! आठ परमाणुपुद्गले संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आठ प्रदेशानो एक स्तंभ थाय. [जो तेना विभाग थाय तो वे, त्रण, चार, पाच, छ, सात के आठ विभाग थाय.] यावत् तेना वे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ सात प्रदेशानो एक स्तंभ थाय छे. [•] [••••••]. अथवा एक तरफ वे प्रदेशानो एक स्तंभ अने एक तरफ छ प्रदेशानो एक स्तंभ थाय छे. [••] [••••••]. अथवा एक तरफ त्रण प्रदेशानो एक स्तंभ अने एक तरफ पाच प्रदेशानो एक स्तंभ थाय छे. [•••] [•••••]. अथवा चार चार प्रदेशाना वे स्तंभ थाय छे. [••••] [••••]. जो तेना त्रण विभाग थाय तो एक तरफ जुदा वे परमाणुपुद्गले अने एक तरफ छ प्रदेशानो एक स्तंभ थाय छे. [•] [•] [••••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्तंभ अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्तंभ थाय छे. [•] [•] [•] [•••••] अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्तंभ अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्तंभ थाय छे. [•] [••] [••••]. अथवा एक तरफ वे द्विप्रदेशिक स्तंभो अने एक चतुष्प्रदेशिक स्तंभ थाय छे. [••] [••] [••••]. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्तंभ अने एक तरफ वे त्रिप्रदेशिक स्तंभ थाय छे. [••] [•••] [••••]. जो तेना चार विभाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ पाच प्रदेशानो एक स्तंभ थाय छे. [•] [•] [•] [•••••]. अथवा एक तरफ जुदा वे परमाणुपुद्गले, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्तंभ अने एक चार प्रदेशानो स्तंभ थाय छे. [•] [•] [•] [••••]. अथवा एक तरफ वे परमाणुपुद्गले अने एक तरफ वे त्रिप्रदेशिक स्तंभो थाय छे. [•] [•] [•••] [••••] अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ वे द्विप्रदेशिक स्तंभो अने एक त्रिप्रदेशिक एक स्तंभ थाय छे. [•] [••] [••] [••••]. अथवा चार द्विप्रदेशिक स्तंभो थाय छे. [••] [••] [••] [••]. तेना पाच विभाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणु पुद्गले, अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्तंभ थाय छे. [•] [•] [•] [•] [••••]. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्तंभ अने एक त्रिप्रदेशिक स्तंभ थाय छे. [•] [•] [•] [••] [••••]. अथवा एक तरफ वे परमाणुपुद्गले, एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्तंभो थाय छे. [•] [•] [•] [••] [••]. जो तेना छ विभाग थाय तो एक तरफ जुदा पाच परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्तंभ थाय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [••]. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गले अने एक तरफ वे द्विप्रदेशिक स्तंभो थाय छे. [•] [•] [•] [•] [••] [••] जो तेना सात विभाग थाय तो एक तरफ जुदा

तिपपसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपपसिया खंधा भवन्ति; सत्तहा कज्जमाणे एग-  
यओ छ परमाणुपोगला, एगयओ दुपपसिए खंधे भवइ; अट्टहा कज्जमाणे अट्ट परमाणुपोगला भवंति ।

८. [प्र०] नव भंते ! परमाणुपोगला—पुच्छ । [उ०] गौयमा ! जाव—नवविहा कज्जंति; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमा-  
णुपोगले, एगयओ अट्टपपसिए खंधे भवति; एवं एक्केज्जं संचारतेहिं जाव—अहवा एगयओ चउप्पपसिए खंधे, एगयओ पंचपप-  
सिए खंधे भवति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ सत्तपपसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपो-  
गले, एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ छप्पपसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिपपसिए खंधे,  
एगयओ पंचपपसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो चउप्पपसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपप-  
सिए खंधे, एगयओ तिपपसिए खंधे, एगयओ चउपपसिए खंधे भवइ; अहवा तिन्नि तिपपसिया खंधा भवंति; चउहा कज्जमाणे  
एगयओ तिन्नि परमाणुपोगला, एगयओ छप्पपसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दुपपसिए खंधे,  
एगयओ पंचपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ तिपपसिए खंधे, एगयओ चउप्पपसिए खंधे  
भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो दुपपसिया खंधा, एगयओ चउप्पपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ  
परमाणुपोगले, एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ दो तिपपसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पपसिया खंधा,  
एगयओ तिपपसिए खंधे भवति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला; एगयओ पंचपपसिए खंधे भवइ; अहवा  
एगयओ तिन्नि परमाणुपोगला, एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ चउप्पपसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपो-  
गला, एगयओ दो तिपपसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपपसिया खंधा, एगयओ

परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•	•	•	•	•	••
---	---	---	---	---	---	----

. जो तेना आठ विभाग  
थाय तो जुदा जुदा आठ परमाणुपुद्गले थाय छे. 

•	•	•	•	•	•	•	•
---	---	---	---	---	---	---	---

.

८. [प्र०] हे भगवन् ! नव परमाणुपुद्गले संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नवप्रदेशनो एक स्कंध थाय छे; अने जो तेना विभाग  
करवामा आवे तो [वे, त्रण, चार, पाच, छ, सात, आठ के] यावत् नव विभाग थाय छे. तेना जो वे विभाग थाय तो एक तरफ एक पर-  
माणुपुद्गल अने एक तरफ एक अष्टप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•••••
---	-------

. ए प्रमाणे एक एकनो संचार करवो; यावत्—अथवा एक  
तरफ एक चार प्रदेशनो स्कंध अने एक तरफ पाच प्रदेशनो स्कंध थाय छे. 

•••	•••
-----	-----

. जो तेना त्रण भाग करवामा आवे तो एक  
तरफ वे परमाणुपुद्गले, अने एक तरफ एक सप्तप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•	•••••
---	---	-------

. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल,  
एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	••	••••
---	----	------

. अथवा एक तरफ एक परमाणु, एक  
तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	••	•••
---	----	-----

. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ  
वे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो थाय छे. 

•	••	•••
---	----	-----

. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक  
तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

••	••••	•••
----	------	-----

. अथवा त्रण त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. 

••	••	•••
----	----	-----

. तेना चार भाग  
थाय तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ छप्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. 

•	•	•	••••
---	---	---	------

. अथवा एक तरफ वे  
परमाणुपुद्गले, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•	••	•••
---	---	----	-----

. अथवा एक तरफ वे परमाणु-  
पुद्गले, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ चारप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•	••	•••
---	---	----	-----

. अथवा एक तरफ एक  
परमाणु पुद्गल, एक तरफ वे द्विप्रदेशिक स्कंधो, अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	••	••	•••
---	----	----	-----

. अथवा एक  
तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ वे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. 

•	••	••••	••••
---	----	------	------

.  
अथवा एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध थाय छे. 

••	••	••	••••
----	----	----	------

. पाच भाग थाय  
अने एक तरफ जुदा चार परमाणुओ अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•	•	•	••••
---	---	---	---	------

. अथवा एक तरफ  
त्रण परमाणुओ अने एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•	•	•	•••
---	---	---	---	-----

. अथवा  
एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ वे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो थाय छे. 

•	•	•	••	•••
---	---	---	----	-----

. अथवा एक तरफ वे  
परमाणुपुद्गले, एक तरफ वे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. 

•	•	••	••	•••
---	---	----	----	-----

. अथवा एक  
तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ चार द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. 

•	••	••	••	••
---	----	----	----	----

. जो तेना छ भाग करवामा  
आवे तो एक तरफ पाच परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. 

•	•	•	•	•	••
---	---	---	---	---	----

. अ-  
थवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गले, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध होय छे. 

•	•	•	•
---	---	---	---

नव परमाणुओ-

તિપ્પસિય સંધે મ્વદ્; અહવા ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ ચત્તારિ દુપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ; છઠ્ઠા કજ્જમાણે ઇગયઓ પંચ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ ચડપ્પસિય સંધે મ્વદ્; અહવા ઇગયઓ ચત્તારિ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ દુપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ તિપ્પસિય સંધે મ્વતિ; અહવા ઇગયઓ તિન્નિ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ તિન્નિ દુપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ; સત્તહા કજ્જમાણે ઇગયઓ છ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ તિપ્પસિય સંધે મ્વતિ, અહવા ઇગયઓ પંચ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ દો દુપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ, અઠ્ઠા કજ્જમાણે ઇગયઓ સત્ત પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ દુપ્પસિય સંધે મ્વતિ; નવઠ્ઠા કજ્જમાણે નવ પરમાણુપોગ્ગલા મ્વંતિ ।

૯. [પ્ર૦] ઇસ મંતે ! પરમાણુપોગ્ગલા—[૩૦] જાવ—દુહા કજ્જમાણે ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ નવપ્પસિય સંધે મ્વદ્; અહવા ઇગયઓ દુપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ અઠ્ઠ પ્પસિય સંધે મ્વદ્; એવં એકેકં સંચારેયઘં તિ, જાવ—અહવા દો પંચ પ્પસિયા સંધા મ્વંતિ; તિહા કજ્જમાણે ઇગયઓ દો પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ અઠ્ઠપ્પસિય સંધે મ્વદ્; અહવા ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ દુપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ સત્તપ્પસિય સંધે મ્વદ્; અહવા ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ તિપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ છપ્પસિય સંધે મ્વદ્; અહવા ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ ચડપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ પંચપ્પસિય સંધે મ્વતિ; અહવા ઇગયઓ દુપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ દો ચડપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ; અહવા ઇગયઓ દો તિપ્પસિયા સંધા, ઇગયઓ ચડપ્પસિય સંધે મ્વદ્; ચડહા કજ્જમાણે ઇગયઓ તિન્નિ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ સત્તપ્પસિય સંધે મ્વદ્; અહવા ઇગયઓ દો પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ દુપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ છપ્પસિય સંધે મ્વદ્, અહવા ઇગયઓ દો પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ તિપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ પંચપ્પસિય સંધે મ્વતિ; અહવા ઇગયઓ દો ચડપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ; અહવા ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ દુપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ તિપ્પસિય સંધે, ઇગયઓ ચડપ્પસિય સંધે મ્વતિ; અહવા ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ તિન્નિ તિપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ; અહવા ઇગયઓ તિન્નિ દુપ્પસિયા સંધા, ઇગયઓ ચડપ્પસિય સંધે મ્વતિ; અહવા ઇગયઓ પરમાણુપોગ્ગલે, ઇગયઓ તિન્નિ તિપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ । અહવા ઇગયઓ દો દુપ્પસિયા સંધા, ઇગયઓ દો તિપ્પસિયા સંધા મ્વંતિ; પંચહા કજ્જમાણે ઇગયઓ ચત્તારિ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગયઓ છપ્પસિય સંધે

•• •••. અથવા એક તરફ ત્રણ પરમાણુઓ અને એક તરફ ત્રણ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધો હોય છે. • • • • •  
 ••. જો તેના સાત ભાગ કરવામાં આવે તો એક તરફ છ પરમાણુપુદ્ગલો અને એક તરફ એક ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. •  
 • • • • •. અથવા એક તરફ પાંચ પરમાણુપુદ્ગલો અને એક તરફ બે દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધો હોય છે. •  
 •• •• ••. આઠ ભાગ કરવામાં આવે તો એક તરફ સાત પરમાણુઓ અને એક તરફ દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ હોય છે. • • • • •. જો તેના નવ ભાગ કરવામાં આવે તો છૂદા નવ પરમાણુઓ હોય છે. • • • • •

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! દશ પરમાણુઓ સંવન્ધે પ્રશ્ન. [૩૦] (તેનો એક દશપ્રદેશિક સ્કંધ થાય છે. અને જો તેના વિભાગ કરવામાં આવે તો બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અને દશ વિભાગ થાય છે) યાવત્ બે ભાગ કરવામાં આવે તો એક તરફ એક પરમાણુ અને એક તરફ નવ પ્રદેશનો એક સ્કંધ થાય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ અને એક તરફ અષ્ટપ્રદેશિક એક સ્કંધ હોય છે. •• •• •. એ પ્રમાણે એક એકનો સંચાર કરવો, યાવત્—અથવા બે પંચપ્રદેશિક સ્કંધો થાય છે. •• •• •. જો તેના ત્રણ વિભાગ કરવામાં આવે તો એકતરફ બે પરમાણુપુદ્ગલો અને એક તરફ એક આઠ પ્રદેશનો સ્કંધ હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ પરમાણુપુદ્ગલ, એક તરફ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ, અને એક તરફ સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ પરમાણુપુદ્ગલ, એક તરફ એક ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ અને એક છ પ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ એક પરમાણુપુદ્ગલ, એક તરફ એક ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ અને એક તરફ પંચપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ, એક તરફ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ અને એક તરફ પંચપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. •• •• •. અથવા એક તરફ એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ અને એક તરફ બે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધો હોય છે. •• •• •. અથવા એક તરફ બે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધો અને એક તરફ એક ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. •• •• •. તેના ચાર વિભાગ કરવામાં આવે તો એક તરફ ત્રણ પરમાણુપુદ્ગલો, અને એક તરફ સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ બે પરમાણુપુદ્ગલો, એક તરફ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ અને એક તરફ છપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ બે પરમાણુપુદ્ગલો, એક તરફ એક ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ અને એક પંચપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ બે પરમાણુપુદ્ગલો અને એક તરફ બે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધો હોય છે. • • • • •. અથવા એક તરફ એક પરમાણુપુદ્ગલ, એક તરફ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ, એક તરફ







एषणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियद्यो, जाव-नवगसंजोगो । दसहा कज्जमाणे एगयओ नच परमाणुपोग्गला, एगयओ संखे-  
ज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ अट्ट परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति ।  
एषणं कमेणं एकेको पूरेयद्यो, जाव-अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिया खंधा भवति; अहवा दस  
संखेज्जपएसिया खंधा भवति । संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवति ।

११. [प्र०] असंखेज्जा णं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहजंति, एगयओ साहणित्ता किं भवति ? [उ०] गीयमा !  
असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; से भिज्जमाणे दुहाऽवि, जाव-दसहाऽवि, संखेज्जहाऽवि, असंखेज्जहाऽवि कज्जइ । दुहा कज्ज-  
माणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; जाव-अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एग-  
यओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा दो  
असंखेज्जपएसिया खंधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति;  
अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवति; जाव-अहवा एगयओ परमाणु-  
पोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखे-  
ज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा  
भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवति; एवं जाव-अहवा एगयओ संखेज्जपए-  
सिए खंधे, एगयओ दो असंखिज्जपएसिया खंधा भवति; अहवा तिन्नि असंखेज्जपएसिया खंधा भवति । चउहा कज्जमाणे एग-  
यओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं चउक्कगसंजोगो, जाव-दसगसंजोगो, एए जहेव  
संखेज्जपएसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियद्यं, जाव-अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवति । संखेज्जहा  
कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया  
खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं-जाव-अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपए-

। . . . . स० । ए क्रमवडे एक एकनी संख्या वधारवी, यावद्-अथवा एक  
दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ नव संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. । : : : : । स० । सं० । स० । स० । स० ।  
स० । सं० । स० । सं० । अथवा दश संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. स० । स० । सं० । स० । सं० ।  
सं० । सं० । सं० । सं० । जो तेना संख्यात भागो करवामा आवे तो संख्याता परमाणुपुद्गलो थाय छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता परमाणुपुद्गलो एकठां मळे, अने पछी तेतुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो असंख्यात-  
प्रदेशिक स्कन्ध थाय. जो तेना विभाग करीए तो वे, यावत् दश, संख्याता के असंख्याता विभाग थाय. जो वे विभाग करवामा आवे तो  
एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कंध होय छे. । • । असं० । यावद्-अथवा एक तरफ दशप्रदेशिक  
स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. । : : : : । असं० । अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ  
असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. । सं० । असं० । अथवा वे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. । असं० । असं० । जो तेना त्रण विभाग  
करवामा आवे तो एक तरफ वे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. । • । • । असं० । अथवा एक तरफ  
एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. । • । • • । असं० । यावद्-अथवा  
एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. । • । : : : : । असं० । अथवा  
एक तरफ एक परमाणु, एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. । • । सं० । असं० । अथवा  
एक तरफ एक परमाणु, अने एक तरफ वे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. । • । असं० । असं० । अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक  
स्कन्ध अने एक तरफ वे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. । • • । असं० । असं० । ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक  
स्कन्ध अने एक तरफ वे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. । सं० । असं० । असं० । अथवा त्रण असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे.  
। असं० । असं० । असं० । जो तेना चार भांग करवामा आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध  
होय छे. । • । • । • । असं० । ए प्रमाणे चतुष्कसंयोग, यावद् दशकसंयोग जाणवो. अने ए सर्व संख्यातप्रदेशिकनी पेठे जाणवुं,  
परन्तु एक 'असंख्यात' शब्द अधिक कहेवो. यावद्-अथवा दश असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो संख्याता विभाग करवामा आ  
तो एक तरफ संख्याता परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता द्विप्रदेशिक स्कन्ध  
अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ संख्याता दशप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ ए

असंख्याता परमा-  
णुओ.

સિદ્ધિ સંધિ ભવતિ; અહવા ઇગ્યઓ સંલેજા સંલેજપપસિયા સંધા, ઇગ્યઓ અસંલેજપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; અહવાં સંલેજા અસંલેજપપસિયા સંધા ભવંતિ । અસંલેજહા કજમાણે અસંલેજા પરમાણુપોગલા ભવંતિ ।

૧૨. [પ્ર૦] અણંતા ણં મંતે ! પરમાણુપોગલા જાવ-કિં ભવતિ ? [૩૦] ગોયમા ! અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; સે મિજમાણે દુહાઽવિ તિહાઽવિ જાવ-દસહાઽવિ સંલેજા-અસંલેજા-અણંતહાઽવિ કજજ । દુહા કજમાણે ઇગ્યઓ પરમાણુપોગલા ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; જાવ-અહવા દો અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ । તિહા કજમાણે ઇગ્યઓ દો પરમાણુપોગલા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; અહવા ઇગ્યઓ પરમાણુપોગલા, ઇગ્યઓ દુપપસિદ્ધિ, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; જાવ-અહવા ઇગ્યઓ પરમાણુપોગલા, ઇગ્યઓ અસંલેજપપસિદ્ધિ સંધે, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; અહવા ઇગ્યઓ પરમાણુપોગલા, ઇગ્યઓ દો અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ; અહવા ઇગ્યઓ દુપપસિદ્ધિ સંધે, ઇગ્યઓ દો અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ, એવં જાવ-અહવા ઇગ્યઓ દસપપસિદ્ધિ સંધે, ઇગ્યઓ દો અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ; અહવા ઇગ્યઓ સંલેજપપસિદ્ધિ સંધે, ઇગ્યઓ દો અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ; અહવા ઇગ્યઓ અસંલેજપપસિદ્ધિ સંધે ઇગ્યઓ દો અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ; અહવા તિહિ અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ । ચઢહા ફજમાણે ઇગ્યઓ તિહિ પરમાણુપોગલા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; એવં ચઢકસંજોગો, જાવ-અસંલેજગસંજોગો, પતે સધે જહેવ અસંલેજાણં મણિયા તહેવ અણંતાણઽવિ માણિયઢં, નવરં પઢકં અણંતગં અન્મહિયં માણિયઢં, જાવ-અહવા ઇગ્યઓ સંલેજા સંલેજપપસિયા સંધા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ, અહવા ઇગ્યઓ સંલેજા અસંલેજપપસિયા સંધા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; અહવા સંલેજા અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ । અસંલેજહા કજમાણે ઇગ્યઓ અસંલેજા પરમાણુપોગલા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; અહવા ઇગ્યઓ અસંલેજા દુપપસિયા સંધા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; જાવ-અહવા ઇગ્યઓ અસંલેજા સંલેજપપસિયા સંધા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; અહવા ઇગ્યઓ અસંલેજા અસંલેજપપસિયા સંધા, ઇગ્યઓ અણંતપપસિદ્ધિ સંધે ભવતિ; અહવા અસંલેજા અણંતપપસિયા સંધા ભવંતિ । અણંતહા કજમાણે અણંતા પરમાણુપોગલા ભવંતિ ।

અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા એક તરફ સંલ્યાતા સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને એક તરફ એક અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. અથવા સંલ્યાતા અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. જો તેના અસંલ્યાત વિભાગ કરવામાં આવે તો અસંલ્યાત પરમાણુપુદ્ગલો થાય છે.

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અનન્ત પરમાણુપુદ્ગલો એકઠા થાય અને એકઠા થયા પછી તેનું શું થાય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેનો અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ થાય. જો તેના વિભાગ થાય તો વે, ત્રણ, ચાવત્ દસ, સંલ્યાત, અસંલ્યાત અને અનન્ત વિભાગ થાય. વે વિભાગ કરવામાં આવે તો એક તરફ પરમાણુપુદ્ગલ અને એક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [અનં]. ચાવત્-અથવા વે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો છે. [અનં] [અનં]. જો તેના ત્રણ વિભાગ કરવામાં આવે તો એક તરફ વે પરમાણુપુદ્ગલો અને એક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [•] [અનં]. અથવા એકતરફ એક પરમાણુ, એક તરફ એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને એક તરફ એક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [•] [અનં]. ચાવત્-અથવા એક તરફ એક પરમાણુપુદ્ગલ, એક તરફ અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને એક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [અનં]. [અનં]. અથવા એક તરફ એક પરમાણુ, અને એક તરફ વે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [•] [અનં] [અનં]. અથવા એક તરફ એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને એક તરફ વે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [••] [અનં] [અનં]. એ પ્રમાણે ચાવત્-અથવા એક તરફ એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને એક તરફ વે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [••••] [અનં] [અનં]. અથવા એક તરફ એક સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને એક તરફ વે અનન્ત પ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [મં] [અનં] [અનં]. અથવા એક તરફ એક અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને એક તરફ વે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [અસં] [અનં] [અનં]. જો તેના ચાર ભાગ કરવામાં આવે તો એક તરફ ત્રણ પરમાણુઓ અને એક તરફ એક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [•] [•] [અનં]-એ પ્રમાણે ચતુષ્કર સંયોગ, ચાવત્-સંલ્યાતસંયોગ કહેવો. એ વધારા સંયોગો અસંલ્યાતનાં પેઠે અનન્તને પળ કહેવા; પરન્તુ એક 'અનન્ત' શબ્દ અધિક કહેવો; ચાવત્-અથવા એક તરફ સંલ્યાતા સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને એક તરફ એક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા એક તરફ સંલ્યાતા અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને એક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા સંલ્યાતા અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. જો તેના અસંલ્યાતા વિભાગ કરીએ તો એક તરફ અસંલ્યાત પરમાણુપુદ્ગલો અને એક તરફ એક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા એક તરફ અસંલ્યાત દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને એક તરફ એક અનન્ત પ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે, ચાવત્-અથવા એક તરફ અસંલ્યાતા સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને એક તરફ એક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા એક તરફ અસંલ્યાતા અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને એક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા અસંલ્યાતા અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. જો તેના અનન્ત વિભાગ કરવામાં આવે તો અનન્ત પરમાણુપુદ્ગલો થાય છે.

१३. [प्र०] एषसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा-भेदाणुंवापणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्ठा समणुगंतद्धा भवं-  
तीति मक्खाया ? [उ०] हंता, गोयमा ! एषसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा० जाव-मक्खायां ।

१४. [प्र०] कइविहे णं भंते ! पोग्गलपरियट्ठे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्ठे पण्णत्ते, तंजहा-१  
ओरालियपोग्गलपरियट्ठे, २ वेउच्चियपोग्गलपरियट्ठे, ३ तेयापोग्गलपरियट्ठे, ४ कम्मापोग्गलपरियट्ठे, ५ मणपोग्गलपरियट्ठे, ६  
वइपोग्गलपरियट्ठे, ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्ठे ।

१५. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कतिविहे पोग्गलपरियट्ठे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्ठे पण्णत्ते,  
तंजहा-१ ओरालियपोग्गलपरियट्ठे, २ वेउच्चियपोग्गलपरियट्ठे, जाव- ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्ठे; एवं जाव-वेमाणियाणं ।

१६. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] अणंता, [प्र०] केवइया  
पुरेक्खला ? [उ०] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि; जस्सत्थि जहंत्तेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असं-  
खेज्जा वा अणंता वा ।

१७. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवत्तिया ओरालियपोग्गल० ? [उ०] एवं केव, एवं जाव-  
वेमाणियस्स ।

१८. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवत्तिया वेउच्चियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] अणंता, एवं जहेव  
ओरालियपोग्गलपरियट्ठा तहेव वेउच्चियपोग्गलपरियट्ठाऽवि भाणियद्धा, एवं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव-आणापाणुपोग्गल-  
परियट्ठा, एत्ते एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति ।

१९. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! केवत्तिया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खला ?  
[उ०] अणंता, एवं जाव-वेमाणियाणं, एवं वेउच्चियपोग्गलपरियट्ठाऽवि, एवं जाव-आणापाणुपोग्गलपरियट्ठा, जाव-वेमा-  
णियाणं, एवं एए पोहत्तिया सत्त चउट्ठीसत्तिदंडगा ।

१३. हे भगवन् ! ए परमाणुपुद्गलोना संयोग अने भेदना संबंधी अनन्तानन्त पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कया छे ? अनन्तागन्त पुद्गल  
परिवर्तो.  
[उ०] हा, गौतम ! संयोग अने भेदना योग्यी ए परमाणुपुद्गलोना अनंतानंत पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कया छे.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलपरिवर्तो केटला प्रकारना कया छे ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलपरिवर्तो सात प्रकारना कया छे, ते पुद्गलपरिवर्तना  
प्रकार.  
ए प्रमाणे-१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, ३ तेजसपुद्गलपरिवर्त, ४ कार्मणपुद्गलपरिवर्त, ५ मनपुद्गलपरिवर्त, ६ वचन-  
पुद्गलपरिवर्त अने ७ आनप्राणपुद्गलपरिवर्त.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! नेरयिकोने केटला प्रकारना पुद्गलपरिवर्तो कया छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने सात पुद्गलपरिवर्तो कया  
छे, ते आ प्रमाणे-१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, यावद् ७ आनप्राणपुद्गलपरिवर्त. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिको सुधी जाणवुं.  
नेरयिकोने पुद्गल  
परिवर्तो.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नेरयिकने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत-थया छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त थया छे.  
ए प्रमाणे केटला थनारा छे ? [उ०] कोइने थवाना होय छे अने कोइने नथी, जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, वे के त्रण थवाना छे; अने  
उत्कृष्टथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे.  
एक नेरयिकने जेना  
विकपुद्गलपरिवर्तो.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] ए प्रमाणे-उपर कया प्रमाणे  
जाणवुं, ए प्रमाणे यावद् वैमानिक सुधी जाणवुं.  
असुरकुमारने जेना  
विकपुद्गलपरिवर्त.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नेरयिकने केटला वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] अनन्ता थया छे. ए प्रमाणे जेम औदा-  
रिकपुद्गलपरिवर्त सवन्धे कयुं तेम वैक्रियपुद्गलपरिवर्त सवन्धे पण जाणवुं. यावद् वैमानिक सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त  
सवन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे एक एकने आश्रयी सात दंडको धाय छे.  
ए नेरयिकने जेना  
विकपुद्गलपरिवर्तो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! नेरयिकोने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला  
औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. ए रीते वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो, यावद्  
आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो सवन्धे पण यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. एम [सात पुद्गलपरिवर्त सवन्धे] बहुवचनने आश्रयी सात दंडको  
[नेरयिकादि] चोवीस दंडके कहेवा.  
नेरयिकोने पुद्गल  
परिवर्तो.

२०. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] नत्थि एक्को वि । [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] नत्थि एक्को वि ।

२१. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा० [उ०] एवं चेव, एवं जाव-थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते ।

२२. [प्र०] एगमेस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] अणंता, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि; जस्सन्थि तस्स जट्ठेणं एक्को वा दो वा तिप्पि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं जाव-मणुस्सत्ते, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ।

२३. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवनिया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा ? [उ०] एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्या मणिया, तथा असुरकुमारस्स वि भाणियत्ता, जाव-वेमाणियत्ते, एवं जाव-थणियकुमारस्स, एवं पुढलियइयस्स वि, एवं जाव-वेमाणियस्स, सवेसि एक्को गमो ।

२४. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउद्वियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] अणंता [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] एकोत्तरिया जाव-अणंता वा, एवं जाव-थणियकुमारत्ते ।

२५. [प्र०] पुढवीकाइयत्ते पुच्छा । [उ०] नत्थि एक्कोऽवि, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] नत्थि एक्कोऽवि, जत्थ वेउद्वियसरीरं अत्थि तत्थ एणुत्तरियो, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तथा माणियत्तं, जाव-वेमाणियत्ते । तेयापोग्गलपरियट्ठा, कम्मापोग्गलपरियट्ठा य सद्यत्थ एक्कोत्तरिया भाणियत्ता; मणपोग्गलपरियट्ठा सवेसु पंप्पि दिप्पु एणोत्तरिया, विगालिदिप्पु नत्थि । वइपोग्गलपरियट्ठा एवं चेव, नवरं पंगिदिप्पु नत्थि भाणियत्ता । आणापाणुपोग्गलपरियट्ठा सद्यत्थ एकोत्तरिया, जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।

२०. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामा केट्ठा औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत-यथा छे ? [उ०] तेओने ए-पण औदारिकपुद्गलपरिवर्तं यथो नयी. [प्र०] केट्ठा औदारिक पुद्गलपरिवर्तो यवाना छे ? [उ०] तेओने एरु पण यवानो नयी.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामा केट्ठा औदारिकपुद्गलपरिवर्तो यथा छे ? [उ०] उपर कल्ल प्रमाण जाणवुं, ए प्रमाणे जेम असुरकुमारपणामा कहुं तेम यावत् स्तनितकुमारपणामा पण जाणवुं.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामा केट्ठा औदारिकपुद्गलपरिवर्तो यथा छे ? [उ०] अनन्ता यथा छे [प्र०] केट्ठा यवाना छे ? [उ०] कोइने यवाना छे अने कोइने यवाना नथी, जेने यवाना छे तेने जघन्यथी एक, वे के त्रण यवाना छे अने उक्कथथी सख्याता, असंख्याता के अनन्ता यवाना छे, ए प्रमाणे यावत् मनुष्यपणामां पण जाणवुं. तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां जेम असुरकुमारपणामा कहुं तेम जाणवुं.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केट्ठा औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत-यथा छे ? [उ०] जेम नैरयिकनी वक्तव्यता कही तेम असुरकुमारनी पण वक्तव्यता कहेवी. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे यावद्-स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे पृथिवीथी आरंभी यावद् वैमानिकसुधी वधाओने एक गम-पाठ कहेवो.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामा केट्ठा वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो यथा छे ? [उ०] अनन्ता यथा छे. [प्र०] केट्ठा यवाना छे ? [उ०] हे गौतम ! एकथी माडीने यावद् अनन्ता यवाना छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामा जाणवुं.

२५. [प्र०] पृथिवीकायिकपणामा प्रश्न.—एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो केट्ठा यथा छे ? [उ०] एक पण नथी. [प्र०] केट्ठा यवाना छे ? [उ०] एक पण नथी. ए प्रमाणे जे जीवोने वैक्रियशरीर छे तेओने एकादि पुद्गलपरिवर्तो जाणवा, अने जेओने वैक्रियशरीर नथी तेओने पृथिवीकायिकपणामा कहुं छे तेम कहेवुं, यावद् वैमानिकने वैमानिकपणामा कहेवुं. तेजस-पुद्गलपरिवर्तो अने कार्मणपुद्गलपरिवर्तो सर्वत्र एकथी माडीने अनन्तसुधी कहेवा. मन-पुद्गलपरिवर्तो वधा पंचेन्द्रियोमां एकथी आरंभी [अनन्त सुधी] कहेवा. ते (मनःपुद्गलपरिवर्तो) विकलेन्द्रियोमां नथी. वचनपुद्गलपरिवर्तो पण ए प्रमाणे जाणवा; परन्तु विशेष ए छे के ते एकोन्द्रिय जीवोना नथी. स्वास्तोच्छ्वासपुद्गलपरिवर्तो वधा जीवोमां एकथी माडीने वधारे जाणवा, यावद्-वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं.

२६. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] नत्थि एक्कोऽवि । [प्र०] पुरेक्खडा ? [उ०] नत्थि एक्को वि, एवं जाव-थणियकुमारत्ते ।

२७. [प्र०] पुढविकाइयत्ते पुच्छा । [उ०] अणंता । [प्र०] केवइया पुरेक्खडा ? [उ०] अणंता, एवं जाव-मणुस्सत्ते । वाण-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते, एवं जाव-वेमाणियस्स वेमाणियत्ते, एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्ठा भाणियट्ठा; जत्थ तत्थ अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियट्ठा, जत्थ नत्थि तत्थ दोऽवि नत्थि भाणियट्ठा । जाव-[प्र०] वेमा-यणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्ठा अतीया ? [उ०] अणंता । [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] अणंता ।

२८. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-‘ओरालियपोग्गलपरियट्ठे ओरालियपोग्गलपरियट्ठे’ ? [उ०] गोयमा ! जण्णं वे ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपायोग्गाइं द्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं, वट्टाइं, पुट्टाइं, कडाइं, पट्टा-इं, निविट्टाइं, अभिनिविट्टाइं, अभिसमन्नागयाइं, परियादियाइं, परिणामियाइं, निज्जिन्नाइं, निसिरियाइं, निसिट्टाइं-इं, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-‘ओरालियपोग्गलपरियट्ठे ओरालियपोग्गलपरियट्ठे’ । एवं वेउच्चियपोग्गलपरियट्ठेऽवि, एवं वेउच्चियसरीरे वट्टमाणेणं वेउच्चियसरीरपायोग्गाइं, सेसं तं चेव सव्वं, एवं जाव-आणापाणुपोग्गलपरियट्ठे, नवरं आणा-गुपायोग्गाइं सव्वद्वद्वाइं आणापाणुत्ताए सेसं तं चेव ।

२९. [प्र०] ओरालियपोग्गलपरियट्ठे णं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ? [उ०] गोयमा ! अणंताहिं उस्सप्पिणि-हिं एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ; एवं वेउच्चियपोग्गलपरियट्ठे वि, एवं जाव-आणापाणुपोग्गलपरियट्ठेऽवि ।

३०. [प्र०] एयस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्ठनिव्वत्तणाकालस्स, वेउच्चियपोग्गल, जाव-आणापाणुपोग्गलप-ट्ठनिव्वत्तणाकालस्स कयरे-कयरोहिंतो जाव-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्ठनिव्वत्त-

२६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने नैरयिकपणामा केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत यथा छे ? [उ०] एक पण व्यतीत थयेल . [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] एक पण थवानो नथी. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामा जाणवुं.

२७. [प्र०] पृथिवीकायिकपणामा प्रश्न. (नैरयिकोने पृथिवीकायिकपणामा केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत यथा छे ?) [उ०] अणंता व्यतीत यथा छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत्-मनुष्यपणामा जाणवुं. तथा जेम नैर-यिकपणामा कहुं छे तेम वानव्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामा कहेवुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामा कहेवुं. ए रीते एते पुद्गलपरिवर्तो कहेवा, ज्या होय छे त्या अतीत-थयेल अने पुरस्कृत-भावी पण अनन्ता कहेवा, अने ‘ज्या नथी त्या अतीत अने गवी वने पण नथी-’ एम कहेवुं. यावद्-[प्र०] वैमानिकोने वैमानिकपणामा केटला आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो थयेल छे ? [उ०] अनन्ता थयेल छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! ‘औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त’-एम शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! औदा-रिमा वर्तता जीवे औदारिकशरीरने योग्य द्रव्यो औदारिकशरीरपणे ग्रहण करेला छे, स्पर्शला छे, करेला छे, स्थिर करेला छे, स्थापन छे, अभिनिविष्ट-सर्वथा लागेला छे, सर्वथा प्राप्त थयेला छे, सर्व अवयववडे ग्रहण करायेला छे, परिणाम पामेला छे, निर्जरायेला छे, देशथी नीकळेलां छे, अने जीवप्रदेशथी जूदा थयेला छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम ‘औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त’ थयेला छे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो परन्तु विशेष ए छे के, वैक्रियशरीरमा वर्तता जीवे वैक्रियशरीरने योग्य पुद्गलो , वाकी वधुं तेज प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त सुधी जाणवुं; विशेष ए छे के, त्या ‘आनप्राणयोग्य सर्व द्रव्यो जाणपणे ग्रह्या छे’ इत्यादि कहेवुं, वाकी वधुं पूर्वनी पेठेज जाणवुं.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकपुद्गलपरिवर्त केटला काळे नीपजे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीवडे-काळे-औदारिकपुद्गलपरिवर्त नीपजे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. ए प्रमाणे यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ए औदारिकपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकालमां, वैक्रियपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकालमा, यावद्-आनप्राणपुद्गलप-ना निष्पत्तिकालमां कयो काल कोनाथी (अल्प), यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडो कर्मणपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्ति-छे, तेनाथी अनन्तगुण तैजसपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाल छे, तेनाथी अनन्तगुण औदारिकपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाल छे, तेनाथी

नैरयिकोने नैरयिक-पणामा केटला औदा-रिकपुद्गलपरिवर्त व्यतीत यथा छे ? नैरयिकोने पृथिवी कायिकपणामा औदा-रिकपुद्गलपरिवर्त.

औदारिकपुद्गलपरि-वर्त शा हेतुथी कहेवाय ?

औदारिकपुद्गलपरि-वर्तनो निष्पत्तिकाल.

औदारिकादिपुद्गल-परिवर्तकालानु अल्प-वदुत्त्व.

ણાકાલે, તેયાપોગ્ગલપરિયટ્નિઘ્ત્તણાકાલે અણંતગુણે, ઓરાલિયપોગ્ગલ૦ અણંતગુણે, આણાપાણુપોગ્ગલ૦ અણંતગુણે, મણપો-  
ગ્ગલ૦ અણંતગુણે, વહપોગ્ગલ૦ અણંતગુણે, વેડધિયપોગ્ગલપરિયટ્નિઘ્ત્તણાકાલે અણંતગુણે ।

૩૧. [પ્ર૦] ઇપ્પસિ ણં મંતે ! ઓરાલિયપોગ્ગલપરિયટ્તણં જાવ-આણાપાણુપોગ્ગલપરિયટ્તણ ય કચરે કચરેહિંતો જાવ-  
વિસેસાહિયા વા ? [ઉ૦] ગૌયમા ! સઘ્ત્યોવા વેડધિયપોગ્ગલપરિયટ્તણ, વહપો૦ અણંતગુણા, મણપો૦ અણંતગુણા, આણાપા-  
ણુપો૦ અણંતગુણા, ઓરાલિયપો૦ અણંતગુણા, તેયાપો૦ અણંતગુણા, કમ્મગપો૦ અણંતગુણા । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે' ! ત્તિ મગવં  
જાવ-વિહરદ્ ।

દ્વાદશ શતે ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

આનપ્રાણપુદ્ગલનો નિપ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે, તેનાથી મન પુદ્ગલપરિવર્તનો નિપ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે, તેનાથી વચનપુદ્ગલપરિવર્તનો  
નિપ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે, અને તેનાથી વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તનો નિપ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે.

૩૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! એ ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત, યાવદ્-આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્ત-એઓમા પરસ્પર કયા પુદ્ગલપરિવર્ત કોનાથી યાવદ્  
વિગ્રેપાધિક છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! સૌથી થોડા વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા વચનપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા  
મન પુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણ ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા તૈજ  
સપુદ્ગલપરિવર્તો છે, અને તેનાથી અનન્તગુણ કાર્મણપુદ્ગલપરિવર્તો છે. હે મગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે, હે મગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે'—૧  
કહી યાવદ્-મગવાન્ ગૌતમ વિહરે છે.

દ્વાદશ શતે ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

## पंचमो उद्देशओ ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-अह भंते ! १ पाणाइवाप, २ मुसावाप, ३ अदिघ्नादाणे, ४ मेहुणे, ५ परि-  
-एस णं कतिवन्ने, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे,  
गत्ते ॥

२. [प्र०] अह भंते ! १ कोहे, २ कोवे, ३ रोसे, ४ दोसे, ५ अखमा, ६ संजलणे, ७ कलहे, ८ चंडिके, ९ भंडणे,  
चिवादे-एस णं कतिवन्ने, जाव-कतिफासे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते ॥

३. [प्र०] अह भंते ! १ माणे, २ मदे, ३ दप्पे, ४ थंभे, ५ गधे, ६ अत्तुक्कोसे, ७ परपरिवाप, ८ उक्कासे, ९ अव-  
से, १० उच्चते, ११ उच्चामे, १२ दुच्चामे-एस णं कतिवन्ने ४ ? [उ०] गोयमा ! पंचवन्ने, जहा कोहे तहेव ॥

## पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावद्-आ प्रमाणे वोल्या के हे भगवन् ! १ \*प्राणातिपात, २ मृपावाद, ३ अदत्तादान,  
भैथुन अने ५ परिग्रह-ए वधा केटला वर्णवाळा, केटला गन्धवाळा, केटला रसवाळा अने केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] हे गौतम !  
पाच वर्णवाळा, वे गन्धवाळा, पाच रसवाळा अने चार स्पर्शवाळा कह्या छे.

प्राणातिपातवगेरे के-  
टला वर्णादियुक्त छे ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! १ क्रोध, २ कोप, ३ रोप, ४ दोष, ५ अक्षमा, ६ संज्वलन, ७ कलह, ८ चांडिक्य (रौद्राकार), ९ भंडन  
डादिथी युद्ध करवु) अने १० विवाद-ए वधा केटला वर्णवाळा, यावत्-केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच वर्णवाळा,  
गन्धवाळा, पाच रसवाळा अने चार स्पर्शवाळा कह्या छे.

क्रोधादि केटला व-  
र्णादि महित छे ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! १ मान, २ मद, ३ दर्प, ४ स्तंभ, ५ गर्व, ६ अत्युक्कोश, ७ परपरिवाद, ८ उत्कर्ष, ९ अपकर्ष, १०  
मत (उच्चय), ११ उच्चामे अने १२ दुर्नाम-ए वधा केटला वर्णवाळा, यावत्-केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच  
वाळा-इत्यादि जेम क्रोध सवन्धे कहु तेम अहि जाणवुं.

मान वगेरे केटला  
वर्णादियुक्त छे ?

१ \* प्राणातिपात—जीवहिंसाथी उत्पन्न थयेछं वर्म अथवा जीवहिंसाने उत्पन्न करनार चारित्रमोहनीय-कर्म उपचारथी प्राणातिपात कहेवाय छे ए  
ते मृपावादादि सवन्धे पण जाणवु अने ते कर्म पुद्गलरूप होवाथी तेने वर्णादिक होय छे, माटे तेने पाच वर्ण वगेरे वह्या छे—टीका

२ † क्रोधना परिणामने उत्पन्न करनार कर्मने क्रोध कहे छे तेमा १ क्रोध सामान्य नाम छे अने कोपादि तेना विशेषवाची नामो छे. २ क्रोधना  
यथी स्वभावथी चलित थवु ते कोप, ३ क्रोधनी परंपरा ते रोप, ४ पोताने अथवा परने दूषण भापवु ते दोष, अथवा अप्रीतिमात्र ते द्वेष, ५ वीजाए करेला  
प्राधाने सहन न करवो ते अक्षमा, ६ बारवार क्रोधथी घटवुं ते संज्वलन, ७ मोटेथी ब्रूम पाठी परस्पर अनुचित बोलवुं ते कलह, ८ रौद्राकार धारण करवो  
चांडिक्य, ९ दडादिथी युद्ध करवुं ते भंडन अने १० परस्पर विरोधथी उत्पन्न थयेला वचनो ते विवाद, अथवा आ वधा क्रोधना एकार्थक शब्दो छे—टीका.

३ ‡ मानना परिणामने उत्पन्न करनार कर्मने मान कहेवाय छे. तेमा १ मान सामान्य नाम छे अने मदादि तेना विशेषवाची नामो छे, २ मद-दर्प, ३  
†-दृप्तपणं, ४ स्तंभ-अनमनस्वभाव, ५ गर्व-अहंकार, ६ अत्युक्कोश-वीजाथी पोतानी उत्कृष्टता वताववी, ७ परपरिवाद-परनिन्दा, ८ उत्कर्ष-मानथी पोतानी  
परनी क्रियाने उद्वृष्ट करवी, अथवा अभिमानथी पोतानी समृद्धि वगेरेने प्रकट करवी, ९ अपकर्ष-अभिमानथी पोताना अथवा परना कोइ पण कार्यथी  
ध पटवुं, अथवा अभिमानथी अप्रकट रहेवु, १० उच्चत-पूर्वे प्रवृत्त नमननो त्याग करवो, अथवा उच्चय-अभिमानथी नीतिनो त्याग करवो, ११ उच्चाम-  
पेलाने अभिमानथी न नमवु अने १२ दुर्नाम-मदथी दुष्टरीते नमवु. अहि स्तंभादिक मानना कार्य छे. अथवा आ वधा शब्दो मानना एकार्थवाचक छे—टीका.



૪. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ માયા, ૨ ઉવહી, ૩ નિયડી, ૪ વલયે, ૫ ગહણે, ૬ ણૂમે, ૭ કક્કે, ૮ કુરુપ, ૯ જિન  
૧૦ કિલ્લિસે, ૧૧ આચરણયા, ૧૨ ગૂહણયા, ૧૩ વંચણયા, ૧૪ પલિહંચણયા, ૧૫ સાતિજોગે ય-એસ ણં કતિવચ્ચે ૪ પવ્વત્તે  
[૩૦] ગોયમા ! પંચવચ્ચે, જહેવ કોહે ।

૫. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ હોમ્મે, ૨ ઇચ્છા, ૩ મુચ્છા, ૪ કંચા, ૫ ગેહી, ૬ તળ્હા, ૭ મિચ્છા, ૮ અમિચ્છા, ૯ આસ  
સણયા, ૧૦ પલ્લયણયા, ૧૧ લાલપ્પણયા, ૧૨ કામાસા, ૧૩ મોગાસા, ૧૪ જીવિયાસા, ૧૫ મરણાસા, ૧૬ નંદીરાગે-પ  
ણં કતિવચ્ચે ૪ ? [૩૦] જહેવ કોહે ।

૬. [પ્ર૦] અહ મંતે ! પેલ્લે, દોસે, કલ્લે, જાવ-મિચ્છાદંસણસલ્લે-એસ ણં કતિવચ્ચે ? [૩૦] જહેવ કોહે તહેવ ચડપાસે

૭. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ પાળાદ્વાયવેરમણે, જાવ-૫ પરિગ્ગહવેરમણે, ૬ ક્રોહવિવેગે જાવ-૧૮ મિચ્છાદંસણસલ્લવિવેગે  
એસ ણં કતિવચ્ચે, જાવ-કતિપાસે પળ્લત્તે ? [૩૦] ગોયમા ! અવચ્ચે, અગંથે, અરસે, અપાસે પળ્લત્તે ।

૮. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ ઉપ્પત્તિયા, ૨ વેણદ્વયા, ૩ કસ્મિયા, ૪ પરિણામિયા-એસ ણં કતિવચ્ચા ? [૩૦] તં ચેવ જાવ  
અપાસા પવ્વત્તા ।

૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ \*માયા, ૨ ઉપધિ, ૩ નિક્કલિ, ૪ વલય-વ્રક્રતાજનનસ્વભાવ, ૫ ગહન, ૬ નૂમ, ૭ કલ્ક, ૮ કુરુપ  
૯ જિલ્લતા, ૧૦ કિલ્લિપ, ૧૧ આદરણતા ( આચરણતા ), ૧૨ ગૂહણતા, ૧૩ વંચનતા, ૧૪ પ્રતિકુંચનતા, ૧૫ સાતિયોગ-એ  
કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! એ વધા પાચ વર્ણવાળા-ઇત્યાદિ ક્રોધની પેઠે જાણવા.

૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ હોમ, ૨ ઇચ્છા, ૩ મૂર્છા, ૪ કાક્ષા, ૫ ગૃહ્ણિ, ૬ તૃપ્ણા, ૭ મિથ્યા, ૮ અમિથ્યા, ૯ આગંસના, ૧  
પ્રાર્થના, ૧૧ લાલપ્પણતા, ૧૨ કામાયા, ૧૩ મોગાયા, ૧૪ જીવિતાયા, ૧૫ મરણાયા અને ૧૬ નંદીરાગ-એ વધા કેટલા વર્ણવા  
યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ક્રોધની પેઠે ( સુ. ૨ ) જાણવું.

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ પ્રેમ-રાગ, ૨ દ્વેષ, ૩ કલહ, યાવત્-૮ મિથ્યાદર્શનશલ્ય-એ વધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્-કે  
સ્પર્શવાળા છે ? [૩૦] ક્રોધની પેઠે તે વધા ચાર સ્પર્શવાળા છે.

૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ પ્રાણાતિપાતવિરમણ, યાવત્-૫ પરિગ્રહવિરમણ, ૬ ક્રોધનો લ્યાગ, યાવત્-૧૮ મિથ્યાદર્શનશલ્યને  
લ્યાગ-એ વધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્ કેટલા સ્પર્શવાળા કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વર્ણ વિનાના, ગંધ વિનાના, રસ વિનાના અને સ્પર્  
શ વિનાના કહ્યા છે.

૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ ઔપત્તિકી ( સ્વાભાવિક ઉત્પન્ન થયેલી ), ૨ વૈનયિકી ( ગુરુના વિનય-જ્ઞાત્રામ્યાસદ્વારા થયેલ  
બુદ્ધિ ), ૩ કાર્મિકી ( કર્મદ્વારા થયેલી ) અને ૪ પારિણામિકી ( યાવા કાલ સુધી પૂર્વાપર અર્થના અવલોકનાટિકીથી ઉત્પન્ન થયેલી  
બુદ્ધિ-એ કેટલા વર્ણવાળી, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળી કહી છે ? [૩૦] પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું, યાવત્-સ્પર્શરહિત કહી છે.

૪ \* ૧ માયા સામાન્યવાચક નામ છે અને ઉપધિઆદિ તેના મેદો છે. ૨ ઉપધિ-છેતરવા યોગ્ય મનુષ્યની પાસે જવાના કારણમૂલ ભાવ, ૩ નિક્કલિ-  
આદર કરવા વડે વીજાને છેતરવું, અથવા પૂર્વદૃષ્ટ માયાને ઢાકવા વીજી માયા કરવી, ૪ વલય-જે ભાવ વડે વલયની પેઠે વ્રક્ર વચન કે ચેષ્ટા પ્રવર્તે તે ભાવ  
૫ ગહન-વીજાને છેતરવા માટે ગહનના જેવી-ન સમજી શકાય તેવી-વચનજાલ, ૬ નૂમ-વીજાને ટગવા નીચતાનો અથવા નીચ સ્થાનનો આશ્રય કરવો  
૭ કલ્ક-હિમાદિનિમિત્તે પરને છેતરવાનો અભિપ્રાય, ૮ કુરુપ-નિન્દિતરીતે મોહ પમાહનાર અભિપ્રાય, ૯ જિલ્લતા-વીજાને છેતરવાની બુદ્ધિથી કાર્યમા મનુ  
તાનું અવલમ્બન કરાય તે, ૧૦ કિલ્લિપ-જે માયાથી અર્હિજ કિલ્લિપકના જેવો યાવ તે, ૧૧ આદરણતા-(આચરણતા) જે માયાવિશેષથી કોઈ પળ  
આદર કરે તે આદરણતા, અથવા વીજાને છેતરવા વિવિધ ક્રિયાનું આચરણ કરવું તે આચરણતા, ૧૨ ગૂહણતા-પોતાના સ્વરૂપને છૂપાવવું, ૧૩ વંચનતા-પર  
છેતરવું, ૧૪ પ્રતિકુંચનતા-સરલપણે વહેલા વચનનું સહન કરવું, ૧૫ સાતિયોગ-ઉત્તમ દ્રવ્યની માથે હીન દ્રવ્યનો યોગ કરવો. અથવા આ વધા માયા-  
પ્રત્યય શબ્દો છે ટીકા.

૫ † ૧ હોમ સામાન્યવાચકી નામ છે અને ઇચ્છાદિક તેના વિશેષ મેદો છે, ૨ ઇચ્છા-અભિલાષ, ૩ મૂર્છા-સંરક્ષણ કરવાની નિરન્તર અભિલાષા, ૪ અ  
અગ્રાપ પદાર્થનો ઇચ્છા, ૫ ગૃહ્ણિ-પ્રાપ્ત અર્થના આમત્કિ, ૬ તૃપ્ણા-પ્રાપ્ત પદાર્થનો વ્યય ન યાવ તેવી ઇચ્છા, ૭ મિથ્યા-નિપયોસુ ધ્યાન, એકાગ્રતા, ૮ અમિથ્યા  
અટ્ટ ધમ્મદ્, ચલાયમાન ચિત્તની સ્થિતિ, ૯ આગંસના-પોતાને ઇષ્ટ અર્થની ઇચ્છા, ૧૦ પ્રાર્થના-ત્રીજા માટે ઇષ્ટ અર્થની માગણી, ૧૧ લાલપ્પણતા-અસ્વત્ત બો  
વાર્થી પ્રાર્થના કરવી, ૧૨ કામાયા-ઇષ્ટ શબ્દ અને રૂપ પ્રાપ્તિની સમાધાન, ૧૩ મોગાયા-ઇષ્ટ ગંધાદિ પ્રાપ્તિની સમાધાન, ૧૪ જીવિતાયા-જીવિતવ્યની પ્રાપ્તિ  
સમાધાન, ૧૫ મરણાયા-કોઈક અવસ્થામા મરણ પ્રાપ્તિની સમાધાન, ૧૬ નંદીરાગ-છત્રી સમૃદ્ધિનો રાગ થવો-ટીકા.

૭ ‡ પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિ જીવના ઉપયોગસ્વરૂપ છે, અને જીવનો ઉપયોગ અમૂર્ત હોવાથી તે વર્ણાદિરહિત કહ્યા છે

૮ § ૧ ઉપધિ એ વેદુ પ્રયોજન છે, પરંતુ જેને માત્ર, કર્મ અને અભ્યાસાદિની અપેક્ષા નથી તે ઔપત્તિકી બુદ્ધિ કહેવાય છે. ૨ જેમા વિનય-પુરુષેવ  
કારણમૂલ છે તે વૈનયિકી બુદ્ધિ, તે જીવનો સમાપ્ત હોવાથી અમૂર્ત છે અને તેથી તે વર્ણાદિરહિત છે. એ પ્રમાણે અવગ્રહાદિ અને ઉત્થાનાદિ પ્રતિપાદક સૂત્રો જાણવા

૯. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ ડગ્ગહે, ૨ ર્હા, ૩ અવાપ, ૪ ધારણા—એસ ણં કતિવન્ના ? [૩૦] एवं चेव जाव—अफासा पन्नत्ता ।

૧૦. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ ઉટ્ટાણે, ૨ કમ્મે, ૩ ચલે, ૪ વીરીપ, ૫ પુરિસકારપરક્કમે—એસ ણં કતિવન્ને ? [૩૦] तं च जाव—अफासे पन्नत्ते ।

૧૧. [પ્ર૦] સત્તમે ણં મંતે ! ઉવાસંતરે કતિવન્ને ? [૩૦] एवं चेव जाव—अफासे पन्नत्ते ।

૧૨. [પ્ર૦] સત્તમે ણં મંતે ! તણુવાપ કતિવન્ને ? [૩૦] जहा पाणाइवाए, नवरं अट्टफासे पण्णत्ते, एवं जहा सत्तमे तणुवाए तथा सत्तमे घणवाए, घणोद्धी, पुढवी । छट्टे उवासंतरे अवन्ने, तणुवाए जाव—छट्टी पुढवी—एयाइं अट्टफासाइं, एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्या भणिया तथा जाव—पढमाए पुढवीए भाणियच्चं । जंजुहीवे दीवे जाव—सयंभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे, जाव—ईसिपव्भारा पुढवी, नेरतियावासा, जाव—वेमाणियावासा—एयाणि सव्वाणि अट्टफासाणि ।

૧૩. [પ્ર૦] નેરડયા ણં મંતે ! કતિવન્ના, જાવ—કતિફાસા પન્નત્તા ? [૩૦] गोयमा ! वेउच्चिय—तेयाइं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुग्गंधा, अट्टफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुग्गंधा, चउफासा पण्णत्ता, जीवं पडुच्च अवन्ना, जाव—अफासा पण्णत्ता, एवं जाव—थणियकुमारा ।

૧૪. [પ્ર૦] પુઢવિક્કાઈયાણં પુચ્છા । [૩૦] गोयमा ! ओरालिय—तेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव—अट्टफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव, एवं जाव—चउररिदिया । नवरं वाउक्काइया ओरालिय—वेउच्चिय—तेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव—अट्टफासा पण्णत्ता; सेसं जहा नेरइयाणं । पंचिदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया ।

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ૧ અવગ્રહ ( અલ્પન્ત સૂક્ષ્મ જ્ઞાન ), ૨ ર્હા ( વિચારણા ), ૩ અવાય—નિશ્ચય અને ૪ ધારણા ( ઉપયોગનું સાતત્ય )—એ વધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્—કેટલા સ્પર્શવાળા છે ? [૩૦] ए प्रमाणे यावद्—स्पर्शरहित क्खा छे.

અવગ્રહાદિ.

૧૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ૧ ઉત્થાન, ૨ કર્મ, ૩ વલ, ૪ વીર્ય અને ૫ પુરુપકારપરાક્રમ—એ વધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્—કેટલા સ્પર્શવાળા કહ્યા છે ? [૩૦] पूर्वं प्रमाणे यावद् ते स्पर्शरहित क्खा छे.

उत्थानादि केटला वर्णादियुक्त छे ?

૧૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! સાતમો [ સાતમી\* નરકપૃથિવી નીચેનો ] અવકાશાતર—આકાશનો ઁંડ કેટલા વર્ણવાળો, યાવત્—કેટલા સ્પર્શવાળો કહ્યો છે ? [૩૦] ए प्रमाणे यावद्—स्पर्शरहित क्खो छे.

सप्तम अवकाशान्तर.

૧૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! સાતમી નરકપૃથિવી નીચેનો તનુવાત કેટલા વર્ણવાળો, યાવત્—કેટલા સ્પર્શવાળો કહ્યો છે ? [૩૦] प्राणातिपातनी पेटे ( सू. ११ ) जाणहुं, परंतु विशेष ए छे के अहीं सातमो तनुवात आठ स्पर्शवालो क्खो छे. जेम सातमो तनुवात क्खो छे तेम सातमो घनवात तथा सप्तमपृथिवी जाणवी. छट्टी पृथिवीनी नीचेनो अवकाशातर वर्णादिरहित छे. छट्टो तनुवात तथा यावद्—छट्टी पृथिवी—ए वधा आठ स्पर्शवाळा छे. ए प्रमाणे जेम सातमी पृथिवीनी वक्तव्यता कही, तेम यावत्—प्रथम पृथिवी सुधी जाणहुं. जवूदीप नामे द्वीप, यावत् स्वयंभुरमणसमुद्र, सौधर्म कल्प, यावद्—ईपत्त्याभारा पृथिवी, नैरयिकावासो तथा यावद्—त्रैमानिकावासो—ए वधा आठ स्पर्शवाळा छे.

सप्तम तनुवात.

૧૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! નૈરયિકો કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્ કેટલા સ્પર્શવાળા કહ્યા છે ? [૩૦] हे गौतम ! वैक्रिय अने तैजस—पुद्गलोनी अपेक्षाए तेओ पाच वर्णवाळा, पाच रसवाळा, वे गंधवाळा अने आठ स्पर्शवाळा क्खा छे, अने कार्मण पुद्गलोनी अपेक्षाए पाच वर्णवाळा, पाच रसवाळा, वे गंधवाळा अने चार स्पर्शवाळा क्खा छे, तथा जीवनी अपेक्षाए वर्णरहित, अने यावद् स्पर्शरहित क्खा छे. ए प्रमाणे यावत् स्तानितकुमारो सुधी जाणहुं.

नैरयिकोने वर्णादि.

૧૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! પૃથિવીકાયિકો કેટલા વર્ણવાળા છે ?—ઈત્યાદિ. [૩૦] हे गौतम ! औदारिक अने तैजस पुद्गलोनी अपेक्षाए पाच वर्णवाळा, यावત્—આઠ સ્પર્શવાળા છે, કાર્મણની અપેક્ષાએ જેમ નૈરયિકો કહ્યા તેમ કહેવા, અને જીવની અપેક્ષાએ પણ પૂર્વ પ્રમાણે (વર્ણાદિરહિત) જાણવા. એ પ્રમાણે યાવત્—ચરિન્દ્રિય જીવો સુધી જાણહું, પણ વિશેષ એ છે કે, વાયુકાયિકો ઔદારિક, વૈક્રિય અને તૈજસપુદ્ગલોની અપેક્ષાએ પાચ વર્ણવાળા, યાવત્—આઠ સ્પર્શવાળા કહ્યા છે, વાકી વધું નૈરયિકોની પેટે જાણહું. તથા વાયુકાયિકોની પેટે પંચેન્દ્રિયતિર્યંચયોનિકો પણ જાણવા.

पृथिवीकायिको.

૧૧ \* પ્રથમ અને વીજી નરકપૃથિવીની વચેનો આકાશ તે પ્રથમ અવકાશાન્તર કહેવાય છે, અને તેની અપેક્ષાએ સપ્તમનરકપૃથિવીની નીચેનો આકાશચંડ સપ્તમ અવકાશાન્તર કહેવાય છે, તેના ઉપર સાતમો ઘનવાત છે તેના ઉપર સાતમો ઘનોદધિ છે અને તેના ઉપર સાતમી નરકપૃથિવી છે, તનુવાતાદિ મૌલિક હોવાથી મૂર્ત છે, તેથી તેને વર્ણાદિ હોય છે.—ટીકા.

૧૫. [પ્ર૦] મણુસ્તાણં પુચ્છા । [૩૦] ઓરાલિય-ઘેઉઘિય-આહારગ-તેયગારં પદુચ્ચ પંચવત્તા, જાવ-અટ્ટફાસા પળ્ણત્તા કમ્મગં જીવં ચ પદુચ્ચ જહા નેરદ્ધયાણં, ઘાણમંતર-જોહસિય-ધેમાણિયા જહા નેરદ્ધયા । ધમ્મત્થિકાપ, જાવ-પોગ્ગલત્થિકાપ-પ્પ સઘ્ઘે અવત્તા, જાવ-અફાસા, નવરં પોગ્ગલત્થિકાપ પંચવત્થે, પંચરસે, ઢુગંધે, અટ્ટફાસે પળ્ણત્તે । ણાણાવરણિજ્ઞે, જાવ-અંતરાહપ-પ્પયાણિ ચ્ચડફાસાણિ ।

૧૬. [પ્ર૦] કણ્ઠલેસ્સા ણં મંતે ! કદ્ધવત્તા-પુચ્છા । [૩૦] દ્ધલેસં પદુચ્ચ પંચવત્તા, જાવ-અટ્ટફાસા પળ્ણત્તા, માયલેસં પદુચ્ચ અવત્તા ધ, એવં જાવ સુક્કલેસ્સા । સમ્મદ્દિટ્ઠિ ૩, ચક્કપુદ્ધસણે ધ, આભિણિવોદ્ધિયણાણે ૫, જાવ-વિમ્મંગણાણે, આહારસત્તા, જાવ-પરિગ્ગહસત્તા-પ્પયાણિ અવત્તાણિ ધ । ઓરાલિયસરીરે, જાવ-તેયગસરીરિ-પ્પયાણિ અટ્ટફાસાણિ । કમ્મગસરીરે ચ્ચડફાસે, મળજોગે, વયજોગે ય ચ્ચડફાસે, કાયજોગે અટ્ટફાસે । સાગારોચ્ચોગે ય અણાગારોચ્ચોગે ય અવત્તા ।

૧૭. [પ્ર૦] સઘ્ઘદ્ધા ણં મંતે ! કતિવત્તા-પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! અત્થેગતિયા સઘ્ઘદ્ધા પંચવત્તા, જાવ-અટ્ટફાસ પળ્ણત્તા, અત્થેગતિયા સઘ્ઘદ્ધા પંચવત્તા, ચ્ચડફાસા પળ્ણત્તા; અત્થેગતિયા સઘ્ઘદ્ધા પ્પગવળ્ણા, પ્પગમંધા, પ્પગરસા, ૩ ાસ પત્તન્તા, અત્થેગદ્ધયા સઘ્ઘદ્ધા અવત્તા, જાવ-અફાસા પત્તન્તા । એવં સઘ્ઘપ્પસા યિ, સઘ્ઘપ્પજ્ઞા યિ, તીયહા અવત્તા, જાવ અફાસા પળ્ણત્તા, એવં અણાગયદ્ધા યિ, એવં સઘ્ઘદ્ધા યિ ।

૧૮. [પ્ર૦] જીવે ણં મંતે ! ગમ્મં વઘ્ઘમમાણે કતિવત્તં, કતિગંધં, કતિરસં, કતિફાસં પરિણામં પરિણમદ્ધ ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવત્તં, પંચરસં, ઢુગંધં, અટ્ટફાસં પરિણામં પરિણમદ્ધ ।

૧૯. [પ્ર૦] કમ્મઓ ણં મંતે ! જીવે નો અકમ્મઓ યિમત્તિભાવં પરિણમદ્ધ, કમ્મઓ ણં જપ્પે નો અકમ્મઓ યિમત્તિભાવં પરિણમદ્ધ ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! કમ્મઓ ણં તં ચેવ જાવ-પરિણમદ્ધ, નો અકમ્મઓ યિમત્તિભાવં પરિણમદ્ધ । 'સેવં મંતે, સેવં મંતે'ત્તિ ।

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મનુષ્યો કેટલા વર્ણવાળા કહ્યા છે?—શ્લોકો. [૩૦]. ઔદારિક, વૈક્રિય, આહારક અને તૈજસ સ્વભાવો, અપેક્ષા ૫ પાચ વર્ણવાળા, યાવત્-આઠ સ્પર્શવાળા કહ્યા છે, કાર્મણપુદ્ગલ અને જીવનો અપેક્ષા ૫ નૈરયિકોની પેઠે ( સૂ. ૧૩. ) જાણવા જેમ નૈરયિકો કહ્યા તેમ વાનવ્યંતર, પ્યોતિપ્પક અને ધેમાનિકો કહેવા. ધર્માસ્તિકાયા અને યાવત્-પુદ્ગલાસ્તિકાયા-૯ વધા વર્ણરહિત યે યાવત્ સ્પર્શરહિત છે, પણ વિશેષ ૯ છે કે, પુદ્ગલાસ્તિકાયા પાચ વર્ણવાળો, પાચ રસવાળો, વે ગંધવાળો અને આઠ સ્પર્શવાળો હોય છે. જ્ઞાનાવરણીય, યાવદ્-૮ અતરાય કર્મ-૯ વધા ચાર સ્પર્શવાળા છે.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કૃણ્ણલેદ્ધયા કેટલા વર્ણવાળી છે?—શ્લોકો પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! દ્રવ્યલેદ્ધયાની અપેક્ષા ૫ પાચ વર્ણવાળી યાવદ્-આઠ સ્પર્શવાળી કહી છે અને માયલેદ્ધયાની અપેક્ષા ૫ વર્ણોદિરહિત છે. ૯ પ્રમાણે યાવત્-શુક્લેદ્ધયા સુધી જાણવું. ૧ સમ્યગ્દ્દિટ્ઠિ, ૨ મિથ્યાદ્દિટ્ઠિ, ૩ સમ્યગ્મિથ્યાદ્દિટ્ઠિ, ૪-૭ ચક્કુદર્શન વગેરે ચાર દર્શન, ૮-૧૨ આભિણિવોધિક (મતિજ્ઞાન) વગેરે પાચ જ્ઞાન, યાવદ્-વિમ્મંગ્જ્ઞાન, આહારસત્તા, યાવત્-પરિગ્ગહસત્તા-૯ વધા વર્ણોદિરહિત છે. ઔદારિક શરીર, યાવત્-તૈજસ શરીર-૯ વધા-આઠ સ્પર્શવાળા છે. કાર્મણશરીર મનોયોગ અને વચનયોગ ચાર સ્પર્શવાળા છે, કાયયોગ આઠ સ્પર્શવાળો છે, સાકારોપયોગ અને અનાકારોપયોગ-૯ વધે વર્ણોદિરહિત છે.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વધા દ્રવ્યો કેટલા વર્ણવાળાં છે?—શ્લોકો પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વ દ્રવ્યોમાના કેટલાક પાચ વર્ણવાળા, યાવદ્-આઠ સ્પર્શવાળા છે, અને કેટલાક પાચ વર્ણવાળા અને ચાર સ્પર્શવાળા છે. તથા સર્વ દ્રવ્યોમાના કેટલાક એક વર્ણવાળા, એક ગંધવાળા, એક રસવાળા અને વે સ્પર્શવાળા છે, વહી સર્વ દ્રવ્યોમાના કેટલાક વર્ણરહિત, યાવદ્-સ્પર્શરહિત છે. ૯ પ્રમાણે સર્વ પ્રદેશો, સર્વ પર્યાયો અને અતીતકાલ પણ વર્ણરહિત, યાવત્ સ્પર્શરહિત કહ્યા છે. ૯ પ્રમાણે ભવિષ્યકાલ અને સર્વકાલ પણ જાણવો.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ગર્મમા ઉત્પન્ન થતો જીવ કેટલા વર્ણવાળા, કેટલા ગંધવાળા, કેટલા રસવાળા અને કેટલા સ્પર્શવાળા પરિણામવડે પરિણમે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે પાચ વર્ણવાળા, પાચ રસવાળા, વે ગંધવાળા અને આઠ સ્પર્શવાળા પરિણામવડે પરિણમે.

૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જીવ કર્મવડે વિવિધરૂપે-મનુષ્ય-તિર્યંચાદિ અનેકરૂપે-પરિણમે છે ? કર્મ શિવાય વિવિધરૂપે પરિણમતો નથી ? તથા જગત્ કર્મવડે વિવિધરૂપે પરિણમે છે ? કર્મ વિના પરિણમતું નથી ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! કર્મથી જીવ અને જગત્-જીવનો સમૂહ વિવિધરૂપે પરિણમે છે, કર્મ વિના પરિણમતું નથી. 'હે ભગવન્ ! તે એમજ છે, હે ભગવન્ ! તે એમજ છે'—એમ કહી [ભગવાન્ ગૌતમ] યાવદ્ વિહરે છે.

દ્વાદશ શતે પંચમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

## छठओ उद्देसओ ।

१. रायगिहे जाव-एवं वयासी-वहुजणे णं मंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति, जाव-एवं परूवेइ-‘एवं खलु राहू चंदं ण्हति, एवं०’ २, से कहमेयं मंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! जन्नं से बहुजणे अन्नमन्नस्स० जाव-मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुणं येयमा ! एवमाइक्खामि, जाव एवं परूवेमि-“एवं खलु राहू देवे महिह्वीए, जाव-महेसस्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगंध-रे, वराभरणधारी, राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा-सिंघाडप १, जडिलप २, खत्तप ३, खरप ४, द्दुरे , मगरे ६, मच्छे ७, कच्छमे ८, कण्हसपे ९ । राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवन्ना पण्णत्ता, तंजहा-किण्हा, नीला, नेहिया, हालिहा, सुक्किल्ला । अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवन्नामे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवन्नामे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्टवन्नामे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्वन्नामे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे त्तरासिवन्नामे पण्णत्ते । जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउच्चमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ता णं पच्चत्थिमेणं धीतीवयइ तदा णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू, जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छ-माणे वा विउच्चमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ता णं पुरत्थिमेणं धीतीवयति तदा णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहू, एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेणं य उत्तरेणं य दो आलावगा भाणियद्या, एवं उत्तरपुरत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भाणियद्या, एवं दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भाणियद्या, एवं चेव जाव-तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू । जदा णं राहू आग-

## षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा ( भगवान् गौतम ) यावद्-आ प्रमाणे वोल्या-हे भगवन् ! घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत्-ए प्रमाणे प्ररूपे छे के ‘ए प्रमाणे खरेखर राहु चंद्रने प्रसे छे, ए प्रमाणे खरेखर राहु चंद्रने प्रसे छे’; हे भगवन् ! एवी रीते केम होय ? [उ०] हे गौतम ! बहु माणसो परस्पर जे कहे छे ते यावत् ए प्रमाणे मिथ्या-असत्य कहे छे. हे गौतम ! हुं तो आ प्रमाणे कहुं छुं, यावद्-आ प्रमाणे प्ररूपं छुं-ए प्रमाणे खरेखर राहु महर्षिक, ( महाक्रद्धिवाळो ) यावद्-महासुखवाळो, उत्तम वखो, उत्तम माला, उत्तम मुगंध अने उत्तम आभूषण धारण करनार देव छे, ते राहुदेवना नव नामो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ शृंगाटक, २ जटिलक, ३ क्षत्रक, ४ खर, ५ दर्दुर, ६ मकर, ७ मत्स्य, ८ कच्छप अने ९ कृष्णसर्प. ते राहुदेवना विमानो पांच वर्णवाळा कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ काळा, २ नीला ( लीला ), ३ लाल, ४ पीला अने ५ शुक. तेमां राहुनुं जे काळुं विमान छे ते खंजण-काजळना जेवा वर्णवाळुं छे, जे नीला ( लीला ) विमान छे ते काचा तुंवडाना वर्ण जेवुं छे, जे लाल वर्णनुं राहुनुं विमान छे ते मजिठना वर्ण जेवुं छे, जे पीळुं राहुनुं विमान छे ते हळदरना वर्ण जेवुं छे, अने जे धोळुं विमान छे ते राखना ढगलाना वर्ण जेवुं कहुं छे. ज्यारे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के काम-श्रीडा करतो राहु पूर्वमा रहेला चंद्रना प्रकाशने आवरीने पश्चिम तरफ जाय ल्यारे पूर्वमा चंद्र पोताने देखाडे छे, अर्थात् चन्द्र पूर्वमां देखाय छे, अने पश्चिममा राहु पोताने देखाडे छे, अर्थात् राहु पश्चिममां देखाय छे. ज्यारे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के काम-श्रीडा करतो राहु पश्चिममा चंद्रना प्रकाशने आवरीने पूर्व तरफ जाय ल्यारे पश्चिममां चंद्र पोताने देखाडे छे, अने पूर्वमां राहु पोताने देखाडे छे. ए प्रमाणे जेम पूर्व अने पश्चिमना वे आलापक कह्या तेम दक्षिण अने उत्तरना वे आलापक कहेवा, ए प्रमाणे उत्तर-पूर्व ( ईशान कोण ) अने दक्षिण-पश्चिमना ( नैर्ऋत कोणना ) वे आलापक कहेवा. ए प्रमाणे दक्षिण-पूर्व ( अग्निकोण ) अने उत्तर-पश्चिमना ( वायव्य कोणना ) वे आलापक कहेवा. ए रीते यावत्-ल्यारे उत्तर-पश्चिम-(वायव्य कोण) मां चन्द्र पोताने

राहु चंद्रने प्रसे  
ते सबन्धे प्रश्न.

राहु देवतुं वर्णन  
राहुना नामो.  
राहुना विमानो

राहु आवतो के ज  
चंद्रना प्रकाशने  
आवरे छे.

च्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउद्यमाणे वा परियारेमाणे वा चंद्रलेस्सं आवरेमाणे २ चिदृति तदा णं मणुस्सलोप मणुस्सा वदंति—  
‘एवं खलु राहू चंद्रं गेण्हति, एवं०’ २ । जदा णं राहू आगच्छमाणे ४ चंद्रस्स लेस्सं आवरेत्ता णं पानेणं वीइवयइ तदा णं  
मणुस्सलोप मणुस्सा वदंति—‘एवं खलु चंद्रेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं०’ २ । जदा णं राहू आगच्छमाणे वा ४ चंद्रस्स  
लेस्सं आवरेत्ता णं पचोसकइ तदा णं मणुस्सलोप मणुस्सा वदंति—‘एवं गल्लु राहुणा चंद्रे वंते, एवं०’ २ । जदा णं राहू आगच्छ-  
माणे वा ४ जाव—परियारेमाणे वा चंद्रलेस्सं अहे सर्पिणं सपडिदिंसि आवरेत्ता णं चिदृति तदा णं मणुस्सलोप मणुस्सा  
वदंति—‘एवं खलु राहुणा चंद्रे वत्थे एवं०’ २ ।

२. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! राहू पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! डुविहे राहू पन्नत्ते, तंजहा—धुवराहू य पधराहू य । तन्थ  
णं जे से धुवराहू से णं बहुलपन्थस्स पाडिचप पन्नरसतिभागं पन्नरसतिभागं चंद्रस्स लेस्सं आवरेमाणे २ चिदृति. तंजहा—  
पढमाणे पढमं भागं, वितियाए वितियं भागं, जाव—पन्नरसेमु पन्नरसमं भागं, चरिमसमये चंद्रे रत्ते भवति, अवसेसे समं  
चंद्रे रत्ते य विरत्ते य भवति; तमेव मुक्कपन्थस्स उवदसेमाणे २ चिदृति, पढमाणे पढमं भागं, जाव—पन्नरसेमु पन्नरसमं भागं  
चरिमसमये चंद्रे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चंद्रे रत्ते य विरत्ते य भवइ । तन्थ णं जे से पधराहू से जहरेणं छण्हं मासाए  
उक्कोसेणं वायालीसाए मासाणं चंद्रस्स, अडयालीसाए संवच्छरणं सुरस्स ।

३. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘चंद्रे ससी’ २ ? [उ०] गोयमा ! चंद्रस्स णं जोटसिदस्स जोइसरत्तो मियंने  
विमाणे कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण—सयण—रंभ—भंडमत्तोवगरणाइं, अण्णणा वि य णं चंद्रे जोटसिदे जोइस  
याया सोमे कंते सुमए पियदंसणे सुइवे, से तेणट्टेणं जाव—ससी ।

४. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘सूरे आइच्चे, सूरे० २’ २ ? [उ०] गोयमा ! सुरादिया णं समया इ वा आवलिय  
इ वा जाव—उस्सपिणी इ वा अवसपिणी इ वा, से तेणट्टेणं जाव—आइच्चे ।

देखाडे छे, अने दक्षिण—पूर्वमा ( अग्निक्कोणमा ) राहू पोताने देखाडे छे. वळी प्यारे आवतो के जनो, विडुर्वणा करतो के कामक्रीडा करतो  
राहू चंद्रनी ज्योत्स्नां आवरण करतो २ स्थिति करे, ल्यारे मनुष्यलोकमा मनुष्यो कहे छे के, ‘ए प्रमाणे खरेखर गहू चंद्रने त्रसे छे.’ ए  
प्रमाणे प्यारे राहू आवतो के जतो, विडुर्वणा करतो के कामक्रीडा करतो चंद्रना प्रकाशने आवरीने पासे थडने जाय ल्यारे मनुष्यलोकमा  
मनुष्यो कहे छे के—‘ए प्रमाणे खरेखर चंद्रे राहुनी कुक्षि भेदी’ २, अर्थात् राहुनी कुक्षिमा प्रवेश कर्यो. ए प्रमाणे आवतो के जतो, विडु  
र्वणा करतो के कामक्रीडा करतो राहू प्यारे चंद्रनी लेश्याने टाकीने पाछो वळे ल्यारे मनुष्य लोकमां मनुष्यो कहे छे के, ‘ए प्रमाणे खरेख  
राहुए चंद्रने बन्थो’. वळी ए प्रमाणे प्यारे राहू आवतो के यावत्—कामक्रीडा करतो चंद्रना प्रकाशने नीचेथी, चारे दिग्वाथी अने चारे वि  
दिग्वाथी आवरीने—टाकीने रहे ल्यारे मनुष्यलोकमा मनुष्यो कहे छे के—‘ए प्रमाणे खरेखर राहुए चंद्रने प्रत्यो.’

२. [प्र०] हे भगवन् ! राहू केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! राहू वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—धुवराहू  
( निल्वराहू ) अने पर्वराहू. तेमा जे धुवराहू छे ते कृष्णपक्षना पडवाथी माडीने [प्रतिदिवस] पोताना पन्नरमा भागने चन्द्रलेश्या—चंद्रविम्ब-  
सवन्धी पन्नरमा भागने टांकतो २ रहे छे, ते आ प्रमाणे—एकमने दिवसे प्रथम भागने टाके छे, बीजना दिवसे बीजा भागने टाके छे, ए  
प्रमाणे यावत्—अमावास्याने दिवसे चंद्रना पंदरमा भागने टाके छे; अने कृष्णपक्षने छेछे समये चंद्र रक्त—सर्वया आच्छादित थाय छे अने  
वाकीना समये चंद्र रक्त—अग्रथी आच्छादित अने विरक्त—अग्रथी अनाच्छादित होय छे. शुक्रपक्षना प्रतिपदथी आरभी ( प्रतिदिवस ) तेज  
चंद्रनी लेश्याना पंदरमा भागने देखाडतो २ रहे छे. ते आ प्रमाणे—पडवाने विपे पहला भागने देखाडे छे, यावत् पूर्णिमाने विपे पंदरमा-  
भागने देखाडे छे. शुक्रपक्षना छेवटना समये चन्द्र विरक्त—राहुथी सर्वया मुक्त होय छे, अने वाकीना समये चन्द्र रक्त—आच्छादित अने  
विरक्त—अनाच्छादित होय छे. तेमा जे पर्वराहू छे ते ओछामा ओछां छ मासे (चंद्रने के सूर्यने) टाके छे. अने वधारेमा वधारे वंताळीश-  
मासे चंद्रने अने वधारेमा वधारे अडताळीश वरसे मूर्यने टाके छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी चन्द्रने ‘ससी’ सश्री—ए प्रमाणे कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्योतिष्कना इंद्र अने ज्योतिष्कना  
राजा चंद्रना मृगक ( मृगना चिहवाळ ) विमानमा मनोहर देवो, मनोहर देवीओ, मनोहर आसन, शयन, स्तंभ तथा सुंदर पात्र वगैरे  
उपकरणो छे, तथा ज्योतिष्कनो राजा अने ज्योतिष्कनो इंद्र चंद्र पोते पण सौम्य, कात, सुभग, प्रियदर्शन अने सुरूप छे, ते माटे चंद्र  
ससी—सश्री—शोभासहित कहेवाय छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी मूर्यने आदिल ( आदिमा थयेलो ) एम कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! समथो, आवलिकाओ,  
यावत्—उत्सर्पिणीओ अने अवसर्पिणीओना आदिभूत—कारण सूर्य छे, माटे आदिल—आदिमा थनार कहेवाय छे. [अर्थात् अहोरात्रादिक कालना  
समय—आवलिका अने मुहूर्तादि भेदो मूर्यनी अपेक्षाए थाय छे, माटे सूर्यने अहोरात्रादि कालनो आदिभूत होनाथी आदिल कहेवाय छे. ]

५. [प्र०] चंद्रस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरत्तो कति अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] जहा दसमसप जाव्-णो चैव णं मेहुणवत्तियं । सूस्स वि तहेव ।

६. [प्र०] चंदिम-सूरिया णं भंते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसप कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! से जहानामप केइ पुरिसे पढमजोवणुट्टाणवलत्थे पढमजोवणुट्टाणवलत्थाप भारियाप सद्धि अचिरवत्तविवाहकज्जे, अत्थगवेसणयाप सोलसवासविप्पवासिप, से णं तओ लद्धेट्ठे, कयकज्जे, अण्हसमग्गे पुणरवि नियगगिहं हद्दमागप, ण्हाप कयवलिकम्भे, कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते, सद्वालंकारविभूसिप, मणुच्चं थालिपागसुद्धं अट्टारसवंजणाकुलं भोयणं भुत्ते समाणे, तंसि तारिसगंसि वासधरंसि, वन्नओ महव्वले कुमारे, जाव-सयणोवयारकलिप ताप तारिसियाप भारियाप सिंगारागारचारु-वेसाप जाव-कलियाप अणुरत्ताप अचिरत्ताप मणाणुकूलाप सद्धि इट्ठे सदे फरिसे जाव-पंचविहे माणुस्सप कामभोगे पच्चणु-त्वमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे चिउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणो विहरति ? ओरालं मणाउसो ! तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो चाणमंतराणं देवाणं पत्तो अणंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा; णमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं पत्तो अणंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा; असुरि-ज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं पत्तो अणंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा; असुरकु-राणं देवाणं कामभोगेहिंतो गहगण-नक्खत्त-तारारुवाणं जोतिसियाणं देवाणं पत्तो अणंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा; इगण-नक्खत्त-जाव-कामभोगेहिंतो चंदिम-सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं पत्तो अणंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा; दिम-सूरिया णं गोयमा ! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो परिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' त्ति णं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव-विहरइ ।

### छट्ठो उद्देशओ समत्तो ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिषिकना इंद्र अने ज्योतिषिकना राजा चंद्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम शम शतकमां कहुं छे तेम अही जाणवुं, यावत्-पोतानी राजधानीमां सिंहासन विपे जिनना अस्थिओनुं संनिधान होवार्थी] 'मैथुन मित्ते देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ नथी' ला सुधी जाणवुं, तथा सूर्य संवघे पण तेज प्रमाणे जाणवुं.

चंद्रने अग्गमहि-  
पीओ.

६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिष्कना इंद्र अने राजा, चंद्र अने सूर्य केवा प्रकारना कामभोगोने भोगवता विहरे छे ? [उ०] जेम युवावस्थाना प्रारंभमां वलवान् कोइ एक पुरुषे प्रथम उगती युवावस्थामा वळ्वाळी भार्या साथे ताजो ज विवाह कर्यो, अने पत्नी ते धन ववा माटे सोळवरस सुधी परदेश गयो, अने ते धनने मेळवी, कार्य समाप्त करी समस्त विघ्नरहितपणे पाछो पोताने घेर तुरत आव्यो, खान वलिकर्म-पूजा करी, कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करी तथा सर्वालंकारथी विभूषित यई मनोज्ञ, अने स्थालीमा पाक करवा वडे तथा अढार प्रकारना व्यंजन-शाकादिथी युक्त भोजन कर्या वाद महावल उद्देशकमा वासगृहनुं वर्णन कर्तुं छे तेवा प्रकारना-शयनो-र युक्त वासगृहमा यावत्-तेवा प्रकारनी उत्तम शृंगारना गृहरूप सुंदर वैपवाळी, यावत्-कलित-कलयुक्त, अनुरक्त, अत्यन्त रागयुक्त, मनने अनुकूल एवी स्त्री साथे इष्ट शब्द, स्पर्श यावत्-पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोने भोगवतो विहरे छे, हे गौतम ! ते पुरुष वेदोपशमनना-विकार शांतिना-समये केवा प्रकारना सुखने भोगवे ? हे आयुष्मन् श्रमण ! ते पुरुष उदार सुखने अनुभवे. गौतम ! ते पुरुषना कामभोगो करतां वानव्यंतर देवोने अणंतगुण विशिष्टतर कामभोगो होय छे. वानव्यंतर देवोना कामभोगोथी असु-सिवायना भवनवासी देवोने अनन्तगुण विशिष्टतर कामभोगो होय छे, असुरेन्द्र सिवाय भवनवासी देवोना कामभोगो करता असु-देवोना कामभोगो अणंतगुण विशिष्टतर होय छे, असुरकुमार देवोना कामभोगो करता अणंतगुण विशिष्टतर कामभोगो ज्योतिषिक-प्रहगण, नक्षत्र अने ताराओने होय छे. ज्योतिषिक देवरूप प्रहगण, नक्षत्र अने ताराओना कामभोगो करता अणंतगुण विशि-ष्टतर कामभोगो ज्योतिषिकना इंद्र अने ज्योतिषिक देवोना राजा चंद्र तथा सूर्यने होय छे. हे गौतम ! ज्योतिष्कना इंद्र, अने ज्योतिष्कना राजा चंद्र अने सूर्य आवा प्रकारना कामभोगोने अनुभवता विहरे छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवत्त महावीरने (वादी अने नमी) यावद् विहरे छे.

सूर्य अने चन्द्र केव  
प्रकारना कामभोगे  
भोगवे छे ?

### द्वादश शते पष्ठ उद्देशक समाप्त.

५ \* भग० सू० ३ श० १० उ० १० पृ० २०३ सू० २३.

६ † भग० सू० ३ श० ११ उ० ११ पृ० २३६ सू० १५.

‡ अहिं कामभोगोना सुखने-सुखामासने उदार सुख तरीके कहु ते प्राकृत जननी दृष्टिए समजवुं, वास्तविक रीते तो ते दु खरूप ज छे.—अनुवादक.  
३६ भ० सू०

## सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] तेषां कालेषां तेषां समेषां जाव-एवं ययासी-कैमहालय णं मंते । लोए पन्नत्ते ? [उ०] गौयमा ! महनिमहा लोए पन्नत्ते, पुरन्धिमेषां असंरोज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंयिज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चत्विमेषां वि, एवं रेण वि, एवं उट्टं पि, अहे असंरोज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विपन्नंमेषां ।

२. [प्र०] एयंसि णं मंते ! एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पपसे, जत्थ णं अयं जीवे न वा, न मए वा वि ? [उ०] गौयमा ! नो इणट्टे समट्टे । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चद-‘एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पपसे, जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा, न मए वा वि ? [उ०] गौयमा ! सेजहानामए-पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा; से णं तत्थ जहत्तेणं एगं वा दो वा तित्ति वा, उच्चोसेणं अयासदस्सं पवि वेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहत्तेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उच्चोसेणं छम्मासे पत्थिसेत्त अत्थि णं गौयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पपसे, जे णं तांसि अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा सेत्तं वा सिंवाणएण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिणएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा सुरेहिं नहेहिं वा अणकंतपुट्ठे मचइ ? णो तिणट्टे समट्टे, होज्जा वि णं गौयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पप जे णं तांसि अयाणं उच्चारेण वा जाव-णहेहिं वा अणकंतपुट्ठे, णो चेव णं एयंसि एमहालगंसि लोगंसि लोगस्स य सा मावं, संसारस्स य अणादिमावं, जीवस्स य णिच्चमावं, कम्मवहुत्तं, जम्मण-मरणवाहुत्तं च पटुच्च नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पपसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा न मए वा वि, से तेणट्टेणं तं चेव जाव-न मए वा वि ।

## सप्तम उद्देशक.

१. [प्र०] ते काले-ते समये यावद्-[भगवान् गौतम ] आ प्रमाणे वोल्या के-हे भगवन् ! लोक केटलो मोटो कसो छे ? [उ०] गौतम ! लोक अत्यन्त मोटो कसो छे; ते पूर्व दिशाए असंत्य कोटाकोटी योजन छे, दक्षिण दिशाए ए प्रमाणे असंत्याता कोटाकोटी योजन छे, ए प्रमाणे पश्चिम दिशाए अने उत्तर दिशाए छे. तथा एज प्रमाणे ऊर्ध्व-उपर अने नीचे पण असंत्य कोटाकोटी योजन अ म-उन्नाइ अने विष्कम-विस्तारथी छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! आ एवडा मोटा लोकमां एवो कोइ परमाणुपुद्गलना जेटलो पण प्रदेश छे के, ज्यां आ जीव उत्पन्न न होय, अने मरण पाम्यो पण न होय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के-एवडा मोटा लोकमा एवो कोइ परमाणुपुद्गलमात्र पण प्रदेश नथी, के ज्यां आ जीव उत्पन्न ययो न होय अने मर्यो न होय ? हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष सो वकरीने माटे एक मोटो अजात्रज-वकरीनो वाडो-करे, तथा तेमां ओछामां ओछी एक, वै के अने वधारेमां वधारे एक हजार वकरीओ नांखे, अने ते वाडामां घणुं पाणी अने घणुं गोचर-चरवानुं स्थल-होवाथी ते वकरीओ न्यथी एक दिवस, वै दिवस के त्रण दिवस अने उच्छृष्टथी छ मास सुची रहे, तो हे गौतम ! ते वाडानो एवो कोइ परमाणुपुद्गल प्रदेश होय के जे ते वकरीओनी लिंडिओथी, मूत्रथी, श्लेष्मथी, नाकतां मळथी, वमनथी, पित्तथी, शुक्रथी, लोहिथी, चामडाथी, रोम शिंगडाथी, खरीथी अने नखथी पूर्वे स्पर्श न करायेले होय ? [हे भगवन् !] ए अर्थ यथार्थ नथी. हे गौतम ! कदाच कोइ एक परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश होय के जे ते वकरीओनी लांडोओथी, यावत् नखोथी पूर्वे स्पर्श न करायेले होय. तो पण आ एवडा लोकमां लोकना शाश्वत भावने लइने, संसारना अनादिपणाने लीधे, जीवना नित्य भावने आश्रथी, अने कर्मनी बहुलताने अने जन्म मरणनी बहुलताने अपेक्षी एवो कोइ परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश नथी के ज्यां आ जीव न जन्म्यो होय के न मर्यो होय. माटे हे गौतम ! हेतुथी पूर्वोक्त यावत्-‘ते मर्यो न होय.’

३. [प्र०] कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउ-  
हेसए तहेव आवासा ठावेयद्धा, जाव-अणुत्तरविमाणेत्ति, जाव-अपराजिए सद्य्हसिद्धे ।

४. [प्र०] अयं णं भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि  
पुढविकाइयत्ताए, जाव-वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुधे ? [उ०] हंता गोयमा ! असई, अदुवा अणं-  
तखुत्तो ।

५. [प्र०] सद्यजीवा वि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए गिरया० [उ०] तं चेव जाव-अणंतखुत्तो ।

६. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसा० [उ०] एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणि-  
यद्धा, एवं जाव-धूमप्पभाए ।

७. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि० [उ०] सेसं तं चेव ।

८. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालपसु महानिरपसु एगमेगंसि निरयावा-  
संसि० [उ०] सेसं जहा रयणप्पभाए ।

९. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे चउसट्टीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढविकाइय-  
त्ताए, जाव-वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देविताए आसण-सयण-भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुधे ? [उ०] हंता गोयमा !  
जाव-अणंतखुत्तो । सद्यजीवा वि णं भंते ! एवं चेव, एवं जाव-थणियकुमारसु । नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुद्यभणिया ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीओ केटली कही छे ? [उ०] हे गौतम ! सात पृथिवीओ कही छे, अहीं प्रथम शतकना पंचम \*उद्दे-  
शकमां कह्या प्रमाणे नरकादिना आवासो कहेवा, ए प्रमाणे यावत्-अनुत्तरविमान, यावत्-अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध सुधी जाणवुं.

नरकपृथिवी.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव आ रत्तप्रभा पृथिवीमां अने तेना त्रीश लाख नरकावासोमांना एक एक नरकावासमां पृथ्वीकायि-  
कपणे, यावद्-वनस्पतिकायिकपणे, नरकपणे, नैरयिकपणे, पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! अनेकवार अथवा अनंतवार पूर्वे उत्पन्न  
थएलो छे.

आ जीव रत्तप्रभाना  
एक एक नरकावासमा  
पृथिवीकायिकादिपणे  
उत्पन्न थयो छे ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! सर्व जीवो पण आ रत्तप्रभा पृथिवीमां अने तेना त्रीश लाख नरकावासमांना [एक एक नरकावासमा  
पृथिवीकायिकपणे, यावद्-वनस्पतिकायिकपणे यावत्-पूर्वे उत्पन्न थएला छे ? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे त्या अनेकवार अथवा ] यावत्-  
अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थएला छे.

सर्व जीवो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव शर्कराप्रभाना पचीस लाख नरकावासमांना एक एक नरकावासमा पृथिवीकायिकपणे यावत् वन-  
स्पतिकायिकपणे यावत्-पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] जेम रत्तप्रभाना वे आलापक कह्या तेम शर्कराप्रभाना पण [एक जीव अने सर्व  
जीव आश्रयी ] वे आलापक कहेवा. ए प्रमाणे यावत्-धूमप्रभा सुधी आलापक कहेवा.

शर्कराप्रभाना नर-  
कावासमा पृथिवीका-  
यिकादिपणे उत्पन्न  
थयो छे ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव तमापृथिवीमाना पांच न्यून एक लाख निरयावासमाना एक एक नरकावासमा [पृथिवीकायिकपणे  
यावत्-वनस्पतिकायिकपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ?] [उ०] बाकी वधुं पूर्वे प्रमाणे जाणवुं.

तमा पृथिवी.

८. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव अधःसप्तम नरकपृथिवीना पाच अनुत्तर अने अत्यन्त म्होटा नरकावासोमाना एक एक नरका-  
वासमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे ? [उ०] बाकी वधुं रत्तप्रभानी पेटे जाणवुं.

सप्तम पृथिवीमां  
पूर्वे उत्पन्न थयो छे ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव असुरकुमारोना चोसठ लाख असुरकुमारावासोमांना एक एक असुरकुमारावासमां पृथिवीकायिकपणे,  
यावत्-वनस्पतिकायिकपणे, देवपणे, देवीपणे, आसन, शयन अने पात्र वगैरे उपकरणपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम !  
यावद्-अनंतवार उत्पन्न थएलो छे. सर्व जीवो ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रमाणे यावत्-‘स्तनितकुमारो’ सुधी जाणवुं, परन्तु तेओना आवासोनी  
संख्यामां भेद छे, अने ए आवासो पूर्वे कहेला छे.

असुरकुमार.



૧૦. [પ્ર૦] અયં ણં મંતે ! જીવે અસંગેજ્ઞેસુ પુઢવિકાઢ્યાવાસનસયમ્દસ્તેસુ ઇગમેગંભિ પુઢવિકાઢ્યાવાસંભિ પુઢવિકાઢ્ય-  
યત્તાપ જાવ-ઘનસ્તદકાઢ્યત્તાપ ઉચવપ્રપુઢે ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! જાવ-ઘનંતરુત્તો । પયં સઘજીવા વિ, પયં જાવ-ઘન-  
સ્તદકાઢ્યપસુ ।

૧૧. [પ્ર૦] અયં ણં મંતે ! જીવે અસંગેજ્ઞેસુ વેંદ્રિયાવાસનસયમ્દસ્તેસુ ઇગમેગંભિ વેંદ્રિયાવાસંભિ પુઢવિકાઢ્યત્તાપ, જાવ-  
ઘનસ્તદકાઢ્યત્તાપ, વેંદ્રિયત્તાપ ઉચવપ્રપુઢે ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! જાવ-ગુત્તો । સઘજીવા વિ ણં પયં ચેવ, પયં જાવ-મણુ-  
સ્તેસુ, નવરં તેંદ્રિયપ્સુ જાવ-ઘનસ્તદકાઢ્યત્તાપ તેંદ્રિયત્તાપ, ચરરિંદ્રિયપ્સુ ચરરિંદ્રિયત્તાપ, પંચેંદ્રિયનિરિક્ષગ્જોણિયપ્સુ  
પંચેંદ્રિયનિરિક્ષગ્જોણિયત્તાપ, મણુસ્તેસુ મણુસ્તત્તાપ, સેસં જતા વેંદ્રિયાણં, ઘાણમંતર-જોટનિય-નોઢમ્મી-સાણાણ ય હદા  
અસુરકુમારાણં ।

૧૨. [પ્ર૦] અયં ણં મંતે ! જીવે સળંકુમારે કપ્પે ઘારસસુ વિમાણાવાસનસયમ્દસ્તેસુ ઇગમેગંભિ વેમાણિયાવાસંભિ પુઢ-  
વિકાઢ્યત્તાપ [૩૦] સેસં જદા અસુરકુમારાણં જાવ-ઘનંતરુત્તો, નો ચેવ ણં દેવિત્તાપ, પયં સઘજીવા વિ, પયં જાવ-ઘાણ-  
પાણપસુ, પયં ઘારણ-ઘુપસુ વિ ।

૧૩. [પ્ર૦] અયન્નં મંતે ! જીવે તિસુ વિ અટ્ટારસુત્તરેસુ ગેધિજ્ઞવિમાણાવાસનસયેસુ [૩૦] પયં ચેવ ।

૧૪. [પ્ર૦] અયન્નં મંતે ! જીવે પંચસુ અણુત્તરવિમાણેસુ ઇગમેગંભિ અણુત્તરવિમાણંભિ પુઢવિ [૩૦] તદેવ જાવ-  
ઘનંતરુત્તો, નો ચેવ ણં દેવત્તાપ ઘા દેવીત્તાપ ઘા, પયં સઘજીવા વિ ।

૧૫. [પ્ર૦] અયન્નં મંતે ! જીવે સઘજીવાણં માઢત્તાપ, પિતિત્તાપ, માઢત્તાપ, મગિણિત્તાપ, મજ્જત્તાપ, પુત્તત્તાપ, ધૂય-  
ત્તાપ, સુણહત્તાપ ઉચવપ્રપુઢે ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! અસરં, અદુવા ઘનંતરુત્તો ।

૧૬. [પ્ર૦] સઘજીવા વિ ણં મંતે ! ઇમસ્સ જીવસ્સ માઢત્તાપ જાવ-ઉચવપ્રપુઢા ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! જાવ-  
ઘનંતરુત્તો ।

૧૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ જીવ અસંહ્યાતા ડાલ પૃથિવીકાયાિકાવાસનાંના ઇક ઇક પૃથિવીકાયાિકાવાસનાં પૃથિવીકાયાિકાપ્પે  
યાવદ્-ઘનસ્પતિકાયાિકાપ્પે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયો છે ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! યાવત્-અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેલો છે; ઇ પ્રમાણે સર્વે જીવો પળ  
જાણવા. ઇ પ્રમાણે યાવત્-ઘનસ્પતિકાયાિકાકોમાં પળ જાણવું.

૧૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ જીવ અસંહ્યાતા ડાલ વેંદ્રિયાવાસનાંના ઇક ઇક વેંદ્રિયાવાસનાં પૃથિવીકાયાિકાપ્પે, યાવત્-  
ઘનસ્પતિકાયાિકાપ્પે અને વેંદ્રિયપ્પે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! ત્યાં યાવદ્-અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેલો છે. સર્વે જીવો પળ  
પ્રમાણે જાણવા, ઇ પ્રમાણે યાવદ્-મનુષ્યોમા જાણવું. પરન્તુ વિગ્રેપ ઇ છે કે, તેંદ્રિયોમા યાવદ્-ઘનસ્પતિકાયાિકાપ્પે, યાવત્ તેંદ્રિયપ્પે;  
ચરરિંદ્રિયોમા ચરરિંદ્રિયપ્પે, પંચેંદ્રિયતિયંચયોનિકોમાં પંચેંદ્રિયતિયંચયોનિકાપ્પે, અને મનુષ્યોમા મનુષ્યપ્પે ઉત્પત્તિ જાણવી. વાકી વધું  
વેંદ્રિયોની પેટે જાણવું. જેમ અસુરકુમારો સંવંધે કહ્યું તેમ વાનઘ્યંતર, જ્યોતિય્ક, સૌઘર્મ અને ઇજ્ઞાનમાં પળ જાણવું.

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ જીવ સનરકુમાર કન્પમા તેના ઘાર ડાલ વિમાનાવાસનાંના ઇક ઇક વેમાણિયાવાસનાં પૃથિવીકાયાિકાપ્પે,  
યાવત્-પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] વાકીનું વધું અસુરકુમારોની પેટે (સ્૦ ૯) યાવદ્-‘અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેલો છે’ ત્યા સુઘી જાણવું. ઘ્ણ  
ત્યા દેવોપ્પે ઉત્પન્ન થયો નથી. ઇ પ્રમાણે સર્વે જીવો સંવંધે પળ જાણવું. ઇ પ્રમાણે યાવત્-આનત અને પ્રાણતમા તયા ઘારણ-અચ્યુતમ  
પળ જાણવું.

૧૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ જીવ ઘ્રણસોને અટ્ટાર પ્રેવેચક વિમાનાવાસનાંના ઇક ઇક આઘાસમા પૃથિવીકાયાિકાપ્પે, યાવત્-પૂર્વે  
ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] ઇ પ્રમાણે જાણવું. ( યાવત્-અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેલો છે. )

૧૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ જીવ પાચ અનુત્તર વિમાનોમાંના ઇક ઇક અનુત્તર વિમાનમાં પૃથિવીકાયાિકાપ્પે, ( યાવત્-પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો  
છે ? ) [૩૦] તે પ્રમાણે યાવદ્-અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેલો છે, પળ દેવપ્પે અને દેવોપ્પે ઉત્પન્ન થયો નથી. ઇ પ્રમાણે સર્વે જીવો પળ જાણવા.

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ જીવ સર્વે જીવોના માતાપ્પે, પિતાપ્પે, માઢપ્પે, વહેનપ્પે, સ્ત્રીપ્પે, પુત્રપ્પે, પુત્રી અને પુત્રવધૂપ્પે પૂર્વે  
ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! અનેકવાર, અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેલો છે.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સર્વે જીવો પળ આ જીવના માતાપ્પે, યાવત્-પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! યાવદ્-અનેક-  
વાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થયા છે.

१७. [प्र०] अयणं मंते ! जीवे सद्यजीवाणं अरिस्ताप, वैरिस्ताप, घातगत्ताप, चहृगत्ताप, पडिणीयत्ताप, पञ्चामिच-  
त्ताप उच्यन्नुपुष्टे ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव—अणंतखुत्तो ।

१८. [प्र०] सद्यजीवा वि णं मंते !० [उ०] एवं चेव ।

१९. [प्र०] अयन्नं मंते ! जीवे सद्यजीवाणं रायत्ताप, जुवरायत्ताप, जाव—सत्यवाहत्ताप उच्यन्नुपुष्टे ? [उ०] हंता  
गोयमा ! अर्साति, जाव—अणंतखुत्तो । सद्यजीवाणं एवं चेव ।

२०. [प्र०] अयन्नं मंते ! जीवे सद्यजीवाणं दासत्ताप, पेसत्ताप, भयगत्ताप, भाइहृगत्ताप, भोगपुरिसत्ताप, सीसत्ताप,  
वेसत्ताप उच्यन्नुपुष्टे ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव—अणंतखुत्तो । एवं सद्यजीवा वि अणंतखुत्तो । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'ति  
जाव—विहरइ ।

### सत्तमो उद्देशो समप्तो ।

१७. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना शत्रुपणे, वैरिपणे, घातकपणे, वधकपणे, प्रत्यनीकपणे अने शत्रुना मित्रपणे पूर्वे  
उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावद्—अनंतवार उत्पन्न थयो छे.

आ जीव सर्व जीवोना  
शत्रुरूपे उत्पन्न  
थयो छे ?

१८. [प्र०] हे भगवन् ! वधा य जीवो ( आ जीवना वैरिपणे यावत्—पूर्वे उत्पन्न थएला छे ? ) [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं.

सर्व जीवो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना राजातरीके, युवराजतरीके यावत्—सार्थवाहतरीके पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ?  
[उ०] हा गौतम ! अनेकवार अथवा अनंतवार उत्पन्न थयो छे. ए प्रमाणे सर्व जीवो संवंचे पण जाणवुं.

आ जीव सर्व जीवोना  
राजा तरीके उत्पन्न  
थयेल छे ?

२०. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना दासपणे प्रेष्य—चाकरपणे, श्रूतकपणे, भागीदारपणे, भोगपुरुपपणे (वीजाए उपाजेल्या  
थननो भोग करनारपणे), शिष्यपणे, अने शत्रुपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा गौतम ! यावद्—अनंतवार उत्पन्न थयो छे, ए प्रमाणे  
सर्व जीवो पण यावद् अनंतवार उत्पन्न थयो छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.—एम कही यावद्—विहरे छे.

आ जीव सर्व जीवोना  
दासरूपे उत्पन्न  
थयेल छे ?  
सर्व जीवो.

द्वादश शते सप्तम उद्देशक समाप्त.

## अट्टमो उद्देसओ ।

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव-एवं वयासी-देवे णं भंते ! महिद्दीप जाव-महेसमते अणंतरं चयं चरत्ता विसरीरेसु नागेसु उववजेजा ? [उ०] हंता गोयमा ! उववजेजा ।
२. [प्र०] से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूरय-सकारिय-सम्माणिण दिघे सधे सम्भोघाप संनिहियपाडिंहेरे याचि भवेजा ? [उ०] हंता, भवेजा ।
३. [प्र०] से णं भंते ! तत्रोद्धितो अणंतरं उद्यट्टित्त सिज्जेजा, बुज्जेजा, जाव-अंतं करेजा ? [उ०] हंता सिज्जिजा, जाव-अंतं करेजा ।
४. [प्र०] देवे णं भंते ! महिद्दीप एवं चेव जाव-विसरीरेसु मणीसु उववजेजा । [उ०] एवं चेव जहा नागणं ।
५. [प्र०] देवे णं भंते ! महिद्दीप जाव-विसरीरेसु वम्भेसु उववजेजा ? [उ०] हंता, उववजेजा एवं चेव, नवरं इमं नाणत्तं-जाव-सन्निहियपाडिंहेरे लाउहोइयमहिते याचि भवेजा ? हंता भवेजा, सेसं तं चेव जाव-अंतं-करेजा ।

## अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] ते काले, ते समये, [ भगवान् गौतम ] यावद्-आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! महाकृद्विवाळो यावद्-महामुखवाळो देव च्यवीने-मरण पामाने तुरतज मात्र \* वे शरीरनेज धारण करनारा नागोमां, ( सर्प अथवा हाथीमां ) उत्पन्न थाय ? [उ०] हा गौतम ! उत्पन्न थाय.
२. [प्र०] हे भगवन् ! त्या ते नागना जन्ममा अर्चित, वंदित, पूजित, सत्कारित, सम्मानित, दिव्य, प्रधान, सत्य, सत्यावपातरूप (जेनी सेवा सफल छे एवो) ते संसारनो अन्त करे, अने पासे रहेला [पूर्वना सव्वन्धी देवोए] जेनुं प्रतिहार कर्म करुं छे एवो थाय ? [उ०] हा थाय.
३. [प्र०] ते ल्याथी मरण पामाने सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, यावद्-संसारनो अन्त करे ? [उ०] हा, सिद्ध थाय, यावद्-अन्त करे.
४. [प्र०] हे भगवन् ! महर्बिक देव-ए प्रमाणे यावद्-वे शरीरवाळ मणिमां उत्पन्न थाय ? [उ०] ए प्रमाणे नागनी पेटे जाणवुं.
५. [प्र०] हे भगवन् ! महर्बिक यावद्-महासाह्यवाळो देव वे शरीरनेज धारण करनारा वृक्षोमा उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! उत्पन्न थाय-इत्यादि पूर्वं प्रमाणे जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के 'जे वृक्षमा ते उत्पन्न थाय ते वृक्ष यावत्-सर्मापमा रहेलां देवकृत प्रातिहारवाळुं थाय, तथा [ते वृक्ष] छाणथी लीपेल अने खडीथी बोळेल होय, वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावद्-'ते संसारनो अन्त करे.'

३ \* जेओ नागसुं शरीर छोडीने मनुष्यशरीरने पानी मोक्ष प्राप्त करणे ते मात्र वे शरीरने धारण करनारा नागो कहेवाय छे.

५ † प्रतिहारकर्म-पासे रही तेनुं रक्षणादि कार्य करवुं.

‡ देवाधिष्ठित विशिष्ट वृक्षो बद्धपीठवाळा होय छे, तेथी तेनी पीठ-चोतरो छाणवगेरेथी लीपेल अने रानी वगेरेथी धोळेल होय छे-दीक्षा.

६. [प्र०] अह भंते ! गोलंगूलवस्त्रमे, कुकुडवस्त्रमे, मंडुकवस्त्रमे—एष णं निस्सीला निघ्नया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्च-  
क्खाण—पोसहोववासा कालमासे कालं किञ्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्टितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए  
उचवजेज्जा ? [उ०] समणे भगवं महावीरे वागरेइ—‘उचवज्जमाणे उचवन्ने’त्ति वत्तव्वं सिया ।

७. [प्र०] अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्स( ओस )प्पिणीउद्देशए जाव—परस्सरे—एष णं निस्सीला० [उ०] एवं चेव  
जाव—वत्तव्वं सिया ।

८. [प्र०] अह भंते ! ढंके कंके विलए मग्गुए सिखी—एष णं निस्सीला० [उ०] सेसं तं चेव जाव—वत्तव्वं सिया । ‘सेवं  
भंते ! सेवं भंते !’ त्ति जाव—विहरइ ।

### अट्ठमो उद्देशो समाप्तो ।

६. [प्र०] हे भगवन् ! वानरवृषभ—मोटो वानर, मोटो कुकडो, अने मोटो देडको—ए वधा शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्या-  
दारहित, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासरहित मरणसमये काल करी आ रत्नप्रभा पृथिवीमां उत्कृष्टथी सागरोपमनी स्थितिवाळा नरकमां नैर-  
यिकपणे उत्पन्न थाय ? [उ०] श्रमण भगवंत महावीर कहे छे के [हा नैरयिकरूपे उत्पन्न थाय,] कारण के \*जे उपजतुं होय ते ‘उत्पन्न  
थयुं’ एम कहेवाय.

वानर वगेरे जीवो  
रत्नप्रभामां उत्पन्न  
थाय ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! सिंह, वाघ—वगेरे †अवसर्पिणी उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्—परासर—ए वधा शीलरहित—इत्यादि यावत्  
[उ०] पूर्वं प्रमाणे जाणतुं.

सिंह वगेरे पण नै-  
यिक पणे उपजे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! कागडो, गीध, वीलक, देडको अने मोर—ए वधा शीलरहित—इत्यादि प्रश्न. [उ०] उत्तर पूर्ववत् जाणतुं.  
हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’—एम कही यावद्—विहरे छे.

काक वगेरे-

### द्वादशशते अष्टम उद्देशक समाप्त.

६ \* जे समये वानरादि छे ते समये ते नारकरूपे नयी, माटे ते नारकरूपे केम उत्पन्न थाय ? आ प्रश्नना उत्तरमा भगवान् महावीर कहे छे के ‘जे  
उपजतु होय ते उत्पन्न थएलं’ एम कहेवाय, माटे वानरादि नारकरूपे जे उत्पन्न थवाना छे ते उत्पन्न थएला एम कहेवाय—टीका.

७ † जुओ भग० खं० ३ श० ७ उ० ६ पृ० २२ सू० २२.

## नवमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कद्रविद्वा णं मंते ! देवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्वा देवा पण्णत्ता, तंजहा-१ भवियदघदेवा, नरदेवा, ३ धम्मदेवा, ४ देवाहिदेवा, ५ भावदेवा ।

२. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चद्-भवियदघदेवा भवियदघदेवा ? [उ०] गोयमा ! जे भविप पंचिदियतिरिक्ख-जोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उचवज्जित्तप से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चद्-‘भवियदघदेवा २’ ।

३. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चद्-‘नरदेवा नरदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंतच्चण्वट्ठी उप्पन्न-समत्तच्चकरणप्पहाणा नवनिहिपइणो समिद्धकोसा वत्तीसंरायवरसद्धस्ताणुयातमग्गा सागरवरमेद्धाद्विद्वणो मणुस्सिदा, से तेणट्टेणं जाव-‘नरदेवा २’ ।

४. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चद्-‘धम्मदेवा धम्मदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अणगारां भगवंतो ईरियास्स मिया, जाव-गुत्तयंभयारी, से तेणट्टेणं जाव-‘धम्मदेवा २’ ।

## नवम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! देवो केट्ठा प्रकारना काटा छे ? [उ०] हे गौतम ! देवो पाच प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे-१ भव्य-द्रव्यदेव, २ नरदेव, ३ धर्मदेव, ४ देवाधिदेव अने ५ भावदेव.

२. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी ‘भव्यद्रव्यदेव’ ‘भव्यद्रव्यदेव’-एम कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! जे पंचेन्द्रियतिर्पंचयो-निक के मनुष्य देवोमा उत्पन्न बधाने भव्य-योग्य छे, ते माटे ते ‘भव्यद्रव्यदेव’ २ कहेवाय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी ‘नरदेव’ ‘नरदेव’-एम कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! जे आ राजाओ चार दिशाना अन्तना स्वामी चक्रवर्तीओ छे, जेने समस्त रत्तोभा प्रधान चक्ररत्न उत्पन्न ययुं छे एवा, नव निधिना स्वामिओ, समृद्ध भंडारवाळ्य, जेओनो मार्गे बन्नीस हजार राजाओ वडे अनुसराय छे एवा, महासागररूप उत्तम मेखलापर्यन्त पृथ्वीना पति अने मनुष्यना इंद्रो छे ते माटे ‘नरदेवो’ ‘नरदेवो’-एम कहेवाय छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ‘धर्मदेव’ ‘धर्मदेव’-एम कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! जे आ अनगार भगवंतो, ईर्यासमित्तिवाळ्य न-गुप्त ब्रह्मचारी छे, माटे ते हेतुथी ‘धर्मदेव’ ‘धर्मदेव’-एम कहेवाय छे.

५. [प्र०]

नि थाय-इत्यादि यद्रव्यदेव-अहि द्रव्यशब्द अप्राधान्यनाचक छे, भूतकाळ्या देवत्वपर्यायने प्राप्त थयेला अथवा भविष्य काळमां देवपणाने पाननार, वर्तमान-तेहार्यवाळुं थाय, त<sup>१</sup> द्रव्य होवाथी अप्रधान एवा द्रव्यदेव कहेवाय छे, तेना भविष्यमा देवपणाने प्राप्त पनार भव्यद्रव्यदेव कहेवाय छे. २ नरदेव-मनुष्योमां वा लायक नरदेव कहेवाय छे ३ धर्मदेव-श्रुतादि धर्मवडे देवो लेवा, अथवा जेने धर्म प्रधान छे एवा ‘धार्मिक देवोने’ धर्मदेव कहे देव-पारमार्थिक देवपणुं होवाथी सामान्य देवो करतां अविश्र-श्रेष्ठ देवाधिदेव कहेवाय छे, अथवा देवातिदेव पण कहे छे. ५ भावदेव-  
१ जेओ नागर उदयथी देवपणानो अनुभव करनार भावदेव कहेवाय छे.

५ † प्रतिहारकर्म-  
† वेत्ता.चित्त मि

५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘देवाधिदेवा देवाधिदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्न-  
जाण—दंसणधरा जाव—सव्वदरिसी, से तेणट्टेणं जाव—‘देवाधिदेवा’ २ ।

६. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘भावदेवा भावदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे भवणवइ—वाणमंतर—जोइस—  
वेमाणिया देवा देवगतिनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति, से तेणट्टेणं जाव—‘भावदेवा’ २ ।

७. [प्र०] भवियद्वददेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, किं नेरइण्हितो उववज्जंति, तिरिक्खं मणुस्सं देवेहिंतो  
उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नेरइण्हितो उववज्जंति, तिरि० मणु० देवेहिंतो वि उववज्जंति, भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववा-  
प्यद्या जाव—‘अणुत्तरोववाइय’त्ति, नवरं असंखेज्जावासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगसव्वट्टसिद्धवज्जं जाव—अपराजियदेवेहिंतो वि  
उववज्जंति, णो सव्वट्टसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति ।

८. [प्र०] नरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरतिण्—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरतिण्हितो वि उवव-  
ज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेहिंतो वि उववज्जंति ।

९. [प्र०] जइ नेरइण्हितो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइण्हितो उववज्जंति, जाव—अहेसत्तमपुढविनेरइण्हितो  
उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइण्हितो उववज्जंति, नो सक्करं जाव—नो अहेसत्तमपुढविनेरइण्हितो  
उववज्जंति ।

१०. [प्र०] जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतरं जोइसियं वेमाणियदेवेहिंतो  
उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतरं, एवं सव्वदेवेसु उववाप्यद्या, वक्कंतीभेदेणं जाव—  
सव्वट्टसिद्धत्ति ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी ‘देवाधिदेव’ ‘देवाधिदेव’ कहेवाय छे ? [उ] हे गौतम ! जे आ अरिहंत—भगवंतो उत्पन्न  
येला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनारा यावद्—सर्वदर्शी छे, ते हेतुथी यावद् ‘देवाधिदेव’ ‘देवाधिदेव’ कहेवाय छे.

देवाधिदेव.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ‘भावदेव’ ‘भावदेव’ कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जे आ भवनपतिओ, वानव्यंतरो,  
ज्योतिष्को अने वैमानिक देवो देवगति संवन्धी नाम अने गोत्र कर्मोने वेदे छे, ते माटे ‘भावदेव’ ‘भावदेव’ कहेवाय छे.

भावदेव.

७. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो कयांथी आवीने उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय, तिर्यचोथी आवीने उत्पन्न  
थाय, मनुष्योथी आवीने उत्पन्न थाय, के देवोथी आवीने उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय, तिर्यचोथी,  
मनुष्योथी, अने देवोथी पण आवीने उत्पन्न थाय. अहाँ \*व्युत्क्रान्ति पदमा कह्या प्रमाणे भेद—विशेषता कहेवी, अने तेओनी सर्वने  
विषे उत्पत्ति कहेवी, यावत्—अनुत्तरांपपातिक सुधी कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के, असंख्यात वर्पना आयुष्यवाळा जीवो, अकर्म-  
भूमिना जीवो, अंतरद्वीपना जीवो अने सर्वार्थसिद्ध वर्जिने यावद्—अपराजित देवोथी आवीने उत्पन्न थाय छे. पण सर्वार्थसिद्धना देवो  
उत्पन्न यथा नथी.

भव्यद्रव्यदेवो कयांथी  
आवीने उपजे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवो कयांथी आवीने उत्पन्न थाय ?—शुं नैरयिकोथी, तिर्यचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवीने उत्पन्न  
थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिको अने देवोथी आवीने उत्पन्न थाय छे, पण तिर्यच अने मनुष्योथी आवीने उत्पन्न यथा नथी.

नरदेवो कयांथी आ  
वीने उपजे ?

९. [प्र०] जो तेओ नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय तो शुं रत्नप्रभाना नैरयिकोथी आवीने (नरदेवो) उत्पन्न थाय के यावद्—अधः-  
सुप्तम पृथ्वीना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ रत्नप्रभाना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय, पण शर्कराप्रभायी  
आवीने न उत्पन्न थाय, यावद्—अधःसप्तमपृथ्वीना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न न थाय.

रत्नप्रभादिमांथी कर  
नरक पृथिवीसी  
आवी उपजे ?

१०. [प्र०] जो तेओ देवोथी आवी (नरदेवो) उत्पन्न थाय तो शुं भवनवासी देवोथी आवी उत्पन्न थाय के वानव्यंतर, ज्यो-  
तिष्क अने वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ भवनवासी देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, तथा वानव्यंतर,  
ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे सर्व देवो संवन्धे व्युत्क्रान्ति पदमा कहेली विशेषतापूर्वक यावत् सर्वार्थ-  
सिद्ध सुधी उपपात कहेवो.

शु भवनवासीआदि  
देवोमांथी कया  
देवोथी आवी उपजे ?

११. [प्र०] धम्मदेवा णं भंते ! कयोहंतो उववजंति ? किं नेरुपहंतो ? [उ०] एवं चकंतीभेदेणं सधेसु उववाप-  
यद्या जाव-सधट्टसिद्धत्ति । नवरं तमा-अधेसत्तमाए नो उववाथोतेउ-चाउ-असंपिज्जावासाउयअकम्मभूमगा-अंतरदीवगवजेसु ।

१२. [प्र०] देवाधिदेवा णं भंते ! कतोहंतो उवउजंति, किं नेरुपहंतो उववजंति ? पुच्छ । [उ०] गोयमा ! नेरुप-  
हंतो उववजंति, नो तिरि० नो मणु० देवेहंतो वि उववजंति ।

१३. [प्र०] जइ नेरुपहंतो० [उ०] एवं निसु पुढवीसु उववजंति, सेसाओ सोडेयद्याओ ।

१४. [प्र०] जइ देवेहंतो० [उ०] वेमाणिणसु सधेसु उववजंति जाव-सधट्टसिद्धत्ति, सेसा खोडेयद्या ।

१५. [प्र०] भावदेवा णं भंते ! कयोहंतो उववजंति ? [उ०] एवं जहा चकंतीए भवणवासीणं उववाओ नहा  
भाणियद्यो ।

१६. [प्र०] भवियतद्येदेवाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! जहघ्नेणं अंतोमुहुत्तं, उकोसेणं तिक्कि  
पलिओवमारं ।

१७. [प्र०] नरदेवाणं पुच्छ । [उ०] गोयमा ! जहघ्नेणं सत्त वाससयारं, उकोसेणं चउरासीई पुघसयसहस्सारं ।

१८. [प्र०] धम्मदेवाणं भंते ! पुच्छ । [उ०] गोयमा ! जहघ्नेणं अंतोमुहुत्तं, उकोसेणं देसूणा पुघकोटी ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ! शुं नैरयिकोथी, [तिर्यंचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवी] उत्पन्न  
थाय ? [उ०] ए प्रमाणे वधुं व्युत्क्रांति पदमां कहेला मेद-विशेषवडे थावत्-सर्वार्थसिद्ध सुधी समंथनी उपपाद कहेवो, परन्तु विशेष ए  
छे के, तमःप्रभा अने अधःसप्तमपुष्पीथी, तथा तेजःकाय, वायुकाय, अर्धस्त्ववर्षना आयुष्यवाळा कर्मभूमिजो, अकर्मभूमिजो अने  
अंतरद्वापज मनुष्य तथा तिर्यंचोथी आवी धर्मदेवो उत्पन्न न थाय. [अर्थात्-ए सिंघाय बाकीना स्थानथी आवी धर्मदेव थाय.]

१२. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय-शुं नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम !  
नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे, तिर्यंच अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थना नथी, पण देवो यकी आवीने उत्पन्न थाय छे.

१३. [प्र०] जो नैरयिकोथी आवी ( देवाधिदेव ) उत्पन्न थाय [तो शुं रत्तप्रमाना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय]-इत्यादि प्रश्न.  
[उ०] ए प्रमाणे प्रथम त्रण पृथिवीथी आवी [देवाधिदेव] उत्पन्न थाय छे. बाकीनी पृथिवीओनो प्रतिपेध करवो.

१४. [प्र०] जो तेओ देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं भवनपति वगैरेथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] सर्व वैमानिक देवोथी,  
थावत्-सर्वार्थसिद्धथी आवी उत्पन्न थाय. बाकीना देवोनो निपेध करवो.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] जेम व्युत्क्रातिपदमां भवनवासिओनो उपपात कखो  
छे तेम अहिं कहेवो.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवोनां केटला काळ सुधी स्थिति कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनी ओट्टामां ओट्टी अन्त-  
सुद्धतं अने वधारेमा वधारे त्रण पत्योपमनी स्थिति कही छे.

१७. [प्र०] नरदेवो संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति सातसो वर्षनी अने उत्कृष्ट चोराशीलाख पूर्वनी  
स्थिति कही छे.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति अन्तसुद्धतनी, अने उत्कृष्ट देवोतपूर्वको-  
टिनी कही छे.

११ \* प्रज्ञा० पद ६ प० २१५. † तम प्रभा पृथिवीथी नीकळेलाने मनुष्यपणुं प्राप्त थाय, पण चारित्र प्राप्त वधुं नथी, तथा सातनी नरकपृथिवी,  
तेज काय, वायुकाय, अर्धस्त्ववर्षना आयुष्यवाळा कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज अने अन्तद्वापज मनुष्य अने तिर्यंचो-यकी नीकळेलाने मनुष्यपणना अभाव यकी  
चारित्र होतुं नथी, तेथी त्याथी नीकळी तेथो धर्मदेव ( चारित्रयुक्त अनगार ) घता नथी-टीका.

१३ † प्रथम त्रण नरकपृथिवीयकी नीकळेला तीर्थकरपणे उपजे छे, पण नीचेनी चार पृथिवीथी नीकळेला तीर्थकरो घता नथी, माटे बाकीनी चार  
पृथिवीनो प्रतिपेध करवो-टीका.

१५ † प्रज्ञा० पद ६ प० २११. घणा स्थानोथी आवी भवनपतिदेवपणे उपजे छे, कारणके असजी पण तेमां उत्पन्न थाय छे, माटे भवनपति संवन्धे  
उपपात कखो छे-टीका.

१६ † अन्तसुद्धतना आयुष्यवाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच देवपणे उपजे, माटे भव्यद्रव्यदेवनी जघन्य स्थिति अन्तसुद्धतनी कही छे, तेमज त्रण पत्योपमनी  
स्थितिवाळा उत्तरकुरु आदिना मनुष्यो अने तिर्यंचो देवपणे उत्पन्न थाय माटे उत्कृष्ट त्रण पत्योपमनी स्थिति कही छे-टीका.

१७ † चक्रवर्तिनां जघन्य स्थिति सातसो वर्षनी होय छे, जेमके ब्रह्मदत्तनी, अने उत्कृष्ट स्थिति चोराशी लाख पूर्वनी होय छे, जेमके भरतनी.

१८ † कोडेपण मनुष्य अन्तसुद्धत आयुष्य चाकी होय ल्यारे चारित्रनो स्वीकार करे, तेनी अपेक्षाए धर्मदेवनी जघन्य स्थिति अन्तसुद्धतनी, अने जे  
चंद्र न्यून पूर्वकोटि वर्षपर्यन्त चारित्र पाटन करे तेनी अपेक्षाए उत्कृष्ट स्थिति जाणवी-टीका.

१९. [प्र०] देवाधिदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं यावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुद्धसयसहस्साइं ।

२०. [प्र०] भावदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।

२१. [प्र०] भवियदधदेवा णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउच्चित्तप, पुहुत्तं पभू विउच्चित्तप ? [उ०] गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउच्चित्तप, पुहुत्तं पि पभू विउच्चित्तप, एगत्तं विउच्चमाणे एगिंदियरूवं वा जाव-पंचिंदियरूवं वा, पुहुत्तं विउच्चमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव-पंचिंदियरूवाणि वा, ताइं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संवद्धाणि वा असंवद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउच्चंति, विउच्चिता तओ पच्छा अण्णो जहिच्छियाइं कज्जाइं करेति, एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि ।

२२. [प्र०] देवाधिदेवाणं पुच्छा, [उ०] गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउच्चित्तप, पुहुत्तं पि पभू विउच्चित्तप, नो चेव णं संपत्तीए विउच्चिसु वा, विउच्चित्ति वा, विउच्चिस्संति वा ।

२३. [प्र०] भावदेवाणं पुच्छा [उ०] जहा भवियदधदेवा ।

२४. [प्र०] भवियदधदेवा णं भंते ! अणंतरं उच्चट्ठित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु उववज्जंति ? जाव-देवेषु उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेषु उववज्जंति, जइ देवेषु उववज्जंति सधदेवेषु उववज्जंति जाव-सधट्ठसिद्धन्ति ।

२५. [प्र०] नरदेवा णं भंते ! अणंतरं उच्चट्ठित्ता-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, णो देवेषु उववज्जंति, जइ नेरइएसु उववज्जंति०, सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति ।

२६. [प्र०] धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जेज्जा, नो तिरि०, नो मणु०, देवेषु उववज्जंति ।

१९. [प्र०] देवाधिदेव संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति वहोतर वर्पनी, अने उत्कृष्ट स्थिति चोरा-शीलाख पूर्वनी कही छे.

देवाधिदेवनी स्थिति.

२०. [प्र०] भावदेवोनी स्थिति संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति दशहजार वर्पनी, अने उत्कृष्ट स्थिति तेओनी सागरोपमनी कही छे.

भावदेवनी स्थिति.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो एक रूप विकुर्ववाने समर्थ छे के अनेकरूपो विकुर्ववाने समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! [भव्यद्रव्यदेव वैक्रियलब्धिसंपन्न मनुष्य के तिर्यंच] एक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे अने अनेकरूपो पण विकुर्ववाने समर्थ छे. एक रूपने विकुर्वतो एक एकेन्द्रियरूपने यावत्-एक पंचेन्द्रियरूपने विकुर्वे छे, अथवा अनेक रूपोने विकुर्वतो अनेक एकेन्द्रियरूपोने के अनेक पंचेन्द्रियरूपोने विकुर्वे छे, ते रूपो संख्याता के असंख्याता, सबद्ध के असंबद्ध, समान के असमान विकुर्वे छे, विकुर्व्या पछी पोताना यथेष्ट कार्यो करे छे. ए प्रमाणे नरदेव अने धर्मदेव सर्वे पण जाणतु.

भव्यद्रव्यदेवनी विकुर्वणा शक्ति.

२२. [प्र०] देवाधिदेवो संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ एक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे, अने अनेक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे. पण तेणे [औत्सुक्यना अभावथी शक्ति छता] सप्राप्तिवडे (करवावडे) वैक्रियरूप विकुर्वुं नथी, विकुर्वता नथी अने विकुर्वशे पण नहि.

देवाधिदेवनी विकुर्वणा शक्ति.

२३. [प्र०] भावदेवसंवन्धे प्रश्न. [उ०] जेम भव्यद्रव्यदेवो संवन्धे (सू० २१) कहु तेम भावदेवसंवन्धे पण जाणतुं.

भावदेवनी विकुर्वणा शक्ति.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो तुरतज मरण पामी क्या जाय-क्या उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां उपजे, यावद्-देवोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकोमा, तिर्यंचोमा के मनुष्योमा उत्पन्न थता नथी, पण देवोमा उत्पन्न थाय छे. जो देवोमां उत्पन्न थाय तो ते सर्वदेवोमा उत्पन्न थाय, यावत् सर्वार्थसिद्धमा उत्पन्न थाय.

भव्यद्रव्यदेवो मरण पामी क्या जाय ?

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवो अन्तररहित-तुरतज मरण पामी क्या उत्पन्न थाय-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! \*नैरयिकोमा उत्पन्न थाय, पण तिर्यंच, मनुष्य के देवमा उत्पन्न न थाय, जो नैरयिकोमां उत्पन्न थाय तो साते नरकपृथिवीमा उत्पन्न थाय.

नरदेव मरण पामी क्या उपजे ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो तुरतज मरण पामी क्या उत्पन्न थाय-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकोमां, तिर्यंचोमां के मनुष्योमा उत्पन्न थता नथी, पण देवोमां उत्पन्न थाय छे.

धर्मदेव मरण पामी क्या जाय ?

२५ \* यद्यपि कोईक चक्रवर्तिओ देवमा उत्पन्न थाय छे, परन्तु ते नरदेवपणुं छोडी अने धर्मदेवपणुं पामीने उपजे छे, कामभोगो नो त्याग कर्या शिवाय नरदेव अवस्थामा तो ते नैरयिकमाज उपजे छे.



२७. [प्र०] जइ देवेसु उचवज्जंति किं भवणवासि-पुच्छ । [उ०] गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उचवज्जंति, नो वाणमं-तरं, नो जोइसियं, वेमाणियदेवेसु उचवज्जंति, सवेसु वेमाणिएसु उचवज्जंति जाव-सघट्टसिद्धअणुत्तरोववाइएसु-जाव उचवज्जंति, अत्येगइया सिद्धंति, जाव-अंतं करंति ।

२८. [प्र०] देवाधिदेवा अणंतरं उघट्टिता काहिं गच्छंति, काहिं उचवज्जंति ? [उ०] गोयमा ! सिद्धंति, जाव-अंतं करंति ।

२९. [प्र०] भावदेवा णं भंते ! अणंतरं उघट्टिता-पुच्छ । [उ०] जइ वक्कीएण अमुरकुमारणं उघट्टणा तइ माणियत्ता ।

३०. [प्र०] भवियदघदेवे णं भंते ! 'भवियदघदेवे'त्ति कालो केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जइएणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पल्लोवमाइं, एवं जइए टिइं सचेव संचिट्टणा वि जाव-भावदेवस्स, नवरं धम्मदेवस्स जइएणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देस्सा पुव्वकोडी ।

३१. [प्र०] भवियदघदेवस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जइएणं इसयाससहस्साइं अंतो-मुहुत्तमन्महियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अणस्सइकालो ।

३२. [प्र०] नरदेवाणं पुच्छ । [उ०] गोयमा ! जइएणं सातिरेणं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अवहं पोग्गलप-रियं देस्सं ।

२७. [प्र०] जो तेओ ( धर्मदेवो ) देवोमा उत्पन्न थाय तो शुं भवनवासी देवोमा उत्पन्न थाय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! भवनवासिदेवोमां, वानव्यंतरोमा अने ज्योतिष्कोमा उत्पन्न घता नथी, पण वैमानिक देवोमा उत्पन्न थाय छे. सर्वे वैमानिकोमां, यावत्-सर्वा-र्थसिद्ध अनुत्तरीपपातिक देवोमा यावत्-उत्पन्न थाय छे, अने केटलाक सिद्ध थाय छे, यावत्-सर्वे दुःखोनो नाश करे छे.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवो अन्तररहित-नुरतज मरण पामी क्यां जाय-क्यां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्ध थाय, यावत्-सर्वे दुःखोनो अन्त करे.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो नुरतज मरण पामी क्यां जाय-ए प्रश्न. [उ०] \*जेम 'व्युत्क्रांति' पदमां अमुरकुमारोनी उद्वर्तना कही छे तेम अहिं भावदेवोनो पण उद्वर्तना कहेवी.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो 'भव्यद्रव्यदेवरूपे' काळयी क्यांमुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्थयी अंतमुहुत्ते अने उत्कृष्टयी त्रण पत्थोपम सुधी होय. ए प्रमाणे जेम भवस्थिति कही तेम संस्थिति पण यावद्-भावदेव सुधी जाणवी. परन्तु धर्मदेव जवन्थयी एक समय सुधी अने उत्कृष्ट कंईक न्यून पूर्वकोटि वर्ष सुधी होय.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवने परस्पर केटला काळुं अंतर होय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्थयी अंतमुहुत्ते अविक्क दशहजार वर्ष, अने उत्कृष्ट अनंतकाळ-वनस्पतिकाल पर्यन्त अन्तर होय.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जवन्थयी कांइक अधिक एक सागरोपम, अने उत्कृष्ट अनंतकाळ-कांइक न्यून अर्धपुद्गलपरिवर्त पर्यन्त अन्तर होय.

२९ \* प्रज्ञा० पद ६ प० २१५-१.

३० † अशुभ भावने प्राप्त कर्मा पछी शुभ भावने एक समय मात्र प्राप्त करी नुरतज मरण पामे ते अपेक्षाए धर्मदेवनी जघन्य स्थिति एक समयनी जाणवी.

३१ ‡ कोई भव्यद्रव्यदेव धरने दशहजारवर्षनी स्थितिवाळा ब्यन्तपदिमां उत्पन्न थाय, अने लांभी मरी शुभ पृथ्वी आदिमां जई तां अन्तमुहुत्ते रहीने पुनः भव्यद्रव्यदेव तरीके उपजे-एरीते अन्तमुहुत्ते अधिक दशहजार वर्षुं अन्तर होय. अहिं कोई शंका करे छे के "देवपणायी च्यवी नुरतज भव्यद्रव्यदेव तरीके उत्पत्तिनो संभव होवाधी दश हजार वर्षुं अन्तर होय, पण अन्तमुहुत्ते अधिक केम होय" ? अहिं समाधान करे छे- "सर्वजघन्य आयुषवाळो देव च्यवी शुभ पृथिव्यादिमां उत्पन्न धरई भव्यद्रव्यदेवमां उपजे छे"-आवो प्राचीन टीकाकारनो आशय जणाय छे, ते मतने अनुसरी उपर अहेलुं अन्तर होय छे-नीजा तेतुं समाधान आ प्रमाणे आपे छे-"जेणे देवतुं आयुष बाधेलुं छे ते अहिं भव्यद्रव्यदेव तरीके इष्ट छे, तेमी दशहजारवर्षनी स्थितिवाळा देवमवधी च्यवी भव्यद्रव्यदेवपणे उत्पन्न थाय अने अन्तमुहुत्ते पछी आयुषनो वन्य करे लारे पूर्वे कहेलुं अन्तर घटे. भव्यद्रव्यदेव मरी देव धरई लांभी च्यवी वनसालादिकने विपे अनन्तकाल पर्यन्त रही पुनः भव्यद्रव्यदेव थाय-ते अपेक्षाए उत्कृष्ट अन्तर जाणुं.

३२ † नरदेव-चक्रवर्ती कामभोगोर्मा आसन्न धरई प्रथम नरकपृथिवीमां जघन्य सागरोपम आयुष भोगवी पुनः चक्रवर्ती थाय, अने ज्यांमुधी चक्रवर्त्तन उत्पन्न न थाय तेकाल अधिक एक सागरोपम जघन्य अन्तर होय. कोई सम्मगदष्टिज चक्रवर्तीपणुं पामे, अने ते उत्कृष्ट कंईक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त सप्तर अमण करी पुनः सम्बन्ध पामी छेवटे नरदेवत्व पानी मोझे जाय, ते अपेक्षाए नरदेवतुं उत्कृष्ट अन्तर होय-टीका.

३३. [प्र०] धम्मदेवस्स णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पल्लिओचमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, जाव—अवहं पोग्ग-  
लपरियट्टं देसूणं ।

३४. [प्र०] देवाधिदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नत्थि अंतरं ।

३५. [प्र०] भावदेवस्स णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो ।

३६. [प्र०] एएसि णं भंते ! भवियदधदेवाणं, नरदेवाणं, जाव—भावदेवाण य कयरे कयरोहितो जाव—विसेसाहिया  
चा ? [उ०] गोयमा ! सधत्थोवा नरदेवा, देवाधिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदधदेवा असंखेज्जगुणा,  
भावदेवा असंखेज्जगुणा ।

३७. [प्र०] एएसि णं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं सोहम्मगाणं, जाव—अच्चु-  
अगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरोहितो जाव—विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सधत्थोवा अणुत्तरोववाइया  
भावदेवा, उवरिमगेवेजा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेजा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेजा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखे-  
ज्जगुणा, जाव—आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा, एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पायड्डुयं जाव—जोतिसिया भावदेवा  
असंखेज्जगुणा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ।

### नवमो उद्देश्यो समप्तो.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवने परस्पर केटलं अन्तर होय. ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी \*पल्योपमपृथक्त्व (वेथी  
नव पल्योपम) अने उत्कृष्ट अनंतकाल—कईक न्यून अपार्थ पुद्गलपरिवर्त पर्यन्त अन्तर होय.

धर्मदेवने परस्पर के  
टलं अन्तर होय ?

३४. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवने परस्पर केटलं अन्तर होय—ए संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेने अंतर नथी.

देवाधिदेवने अन्तर.

३५. [प्र०] भावदेवना परस्पर अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अनंतकाल—वनस्पतिकाल  
पर्यन्त अन्तर होय.

भावदेवतुं अन्तर-

३६. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो, नरदेवो, यावद्—भावदेवोमाना कोण कोनाथी यावद्—विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम !  
सौथी थोडा नरदेवो छे, ते करतां देवाधिदेवो संख्यातगुण छे, तेथी धर्मदेवो संख्यातगुण छे, ते करतां भव्यद्रव्यदेवो असंख्यातगुण छे  
अने तेथी भावदेवो असंख्यातगुण छे.

भव्यद्रव्यदेवादिनुं  
परस्पर अल्पवहुत्व-

३७. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो—भवनवासी, वानव्यंतर, ज्योतिष्क, वैमानिक, सौधर्म, ईशान यावद्—अच्युतक, त्रैवेयक तथा  
अनुत्तरौपपातिक—एओमांना कोण कोनाथी यावद्—विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडा अनुत्तरौपपातिक भावदेवो छे, ते करतां  
उपरना त्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण छे, ते करतां मध्यम त्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण छे, तेथी अधस्तन त्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण  
छे, ते करतां अच्युत कल्पना देवो संख्यातगुण छे, यावद्—आनतकल्पना देवो संख्यातगुण छे. ए प्रमाणे जेम 'जीवाभिगम'सूत्रमा  
त्रिविध जीवना अधिकारमां देवपुरुषोतुं अल्पवहुत्व कहुं छे तेम अर्ही पण यावद्—'ज्योतिष्क भावदेवो असंख्येयगुण छे' त्यां सुधी कहेहुं.  
'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' [एम कही—भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

भावदेवतुं अल्पवहुत्व-

### द्वादश शते नवम उद्देशक समाप्त.

३३ \* कोईक धर्मदेव—चारित्र्युक्त साधु सौधर्म देवलोकमां पल्योपमपृथक्त्वना आयुषवालो देव थई त्यांथी च्यवी पुनः मनुष्यपणुं पामी आठ वर्ष  
पछी चारित्र्य स्वीकारे, ते अपेक्षाए काईक अधिक पल्योपमपृथक्त्व अन्तर होय—टीका.

३४ † देवाधिदेव मोक्षे जाय छे तेथी तेओने अन्तर होहुं नथी—टीका.

३७ ‡ जीवाभि० प्रति० २ प० ७१-१.

## દસમો ઉદ્દેસો ।

૧. [પ્ર૦] કહ્વિદ્વા પં મંતે ! આયા પળ્ળતા ? [૩૦] ગોયમા ! અટ્ટવિદ્વા આયા પળ્ળતા, તંજહા-૧ દવિયાયા, ૨ કસાયાયા, ૩ યોગાયા, ૪ ઉવઓગાયા, ૫ ણાણાયા, ૬ દંસળાયા, ૭ ચરિત્તાયા, ૮ વીરિયાયા ।
૨. [પ્ર૦] જસ્સ પં મંતે ! દવિયાયા તસ્સ કસાયાયા, જસ્સ કસાયાયા તસ્સ દવિયાયા ? [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ દવિયાયા તસ્સ કસાયાયા સિય અત્થિ સિય નત્થિ, જસ્સ પુળ કસાયાયા તસ્સ દવિયાયા નિયમં અત્થિ ।
૩. [પ્ર૦] જસ્સ પં મંતે ! દવિયાયા તસ્સ જોગાયા ? [૩૦] એવં જહા દવિયાયા કસાયાયા મળિયા તહા દવિયાયા જોગાયા માળિયઘા ।
૪. [પ્ર૦] જસ્સ પં મંતે ! દવિયાયા, તસ્સ ઉવઓગાયા-એવં સઘ્વત્થ પુચ્છા માળિયઘા । [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ દવિયાયા તસ્સ ઉવઓગાયા નિયમં અત્થિ, જસ્સ વિ ઉવઓગાયા તસ્સ વિ દવિયાયા નિયમં અત્થિ, જસ્સ દવિયાયા તસ્સ ણાણાયા મય-

## દશમં ઉદ્દેશક.

૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આત્મા કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આઠ પ્રકારના આત્મા છે, તે આ પ્રમાણે-<sup>૧</sup> દ્રવ્યાત્મા, ૨ કપાયાત્મા, ૩ યોગાત્મા, ૪ ઉપયોગાત્મા, ૫ જ્ઞાનાત્મા, ૬ દર્શનાત્મા, ૭ ચારિત્રાત્મા અને ૮ વીર્યાત્મા.
૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેને દ્રવ્યાત્મા હોય તેને શું કપાયાત્મા હોય અને જેને કપાયાત્મા હોય તેને શું દ્રવ્યાત્મા હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જેને દ્રવ્યાત્મા હોય તેને કપાયાત્મા કદાચિત્ હોય અને કદાચિત્ ન હોય, પણ જેને કપાયાત્મા હોય, તેને તો અવદ્ય દ્રવ્યાત્મા હોય.
૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેને દ્રવ્યાત્મા હોય તેને યોગાત્મા હોય ? [ અને જેને યોગાત્મા હોય તેને દ્રવ્યાત્મા હોય ? ] [૩૦] એ પ્રમાણે જેમ દ્રવ્યાત્મા અને કપાયાત્માનો સંબંધ કહ્યો તેમ દ્રવ્યાત્મા અને યોગાત્માનો સંબંધ કહેવો.
૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેને દ્રવ્યાત્મા હોય તેને ઉપયોગાત્મા હોય ? [ અને જેને ઉપયોગાત્મા હોય તેને દ્રવ્યાત્મા હોય ? ] એ પ્રમાણે સર્વત્ર પ્રશ્ન કરવો. [૩૦] હે ગૌતમ ! જેને દ્રવ્યાત્મા હોય તેને ઉપયોગાત્મા અવદ્ય હોય, અને જેને ઉપયોગાત્મા હોય તેને પણ

૧ \* ઉપયોગલક્ષણ આત્મા એક પ્રકારે છે, તો પણ અમુક વિશેષતાને લીધે તેના આઠ પ્રકાર છે, તે આ પ્રમાણે—૧ ત્રિકાલ્લવર્તી આત્મા દ્રવ્ય તે દ્રવ્યાત્મા, તે સર્વ જીવોને હોય છે, ૨ ક્રોધાદિકપાયયુક્ત આત્મા તે કપાયાત્મા, તે સક્રપાયી જીવોને હોય છે, પણ ઉપશાન્તકપાય અને ક્ષીણકપાયને હોતો નથી, ૩ મન, વચન અને કાયવ્યાપારવાહ્યને યોગાત્મા હોય છે, ૪ સાધાર અને નિરાકાર ઉપયોગવાલા ઊદ્ધ અને સમારી સર્વ જીવને ઉપયોગાત્મા હોય છે, ૫ સમ્યગ્ મિત્તેપાવબોધરૂપ જ્ઞાનાત્મા સર્વ સમ્યગ્દષ્ટિને હોય છે, ૬ સામાન્યઅવબોધરૂપ દર્શનાત્મા સર્વ જીવોને હોય છે, ૭ ચારિત્રાત્મા વિરતિવાહ્યને હોય છે, ૮ અને વીર્યાત્મા કરણવીર્યાવાહ્ય સર્વ સસારી જીવોને હોય છે-ટીકા.

૨ † અહિં દ્રવ્યાત્મા-આદિ આઠ પદોની સ્થાપના કરવી, તેમા પ્રથમ સૂ. ૨-૪ સુધી દ્રવ્યાત્માનો વાકીના કપાયાત્મા વગેરે સાત આત્માની સાથે સંબંધ વતાવે છે—જેને દ્રવ્યાત્મલ-જીવલ હોય, તેને કપાયાત્મા કદાચિત્ (સક્રપાયાવસ્થામા) હોય, અને કદાચિત્ ક્ષીણકપાય અને ઉપશાન્તકપાયવાહ્યને ન હોય, પણ જેને કપાયાત્મા હોય છે તેને દ્રવ્યાત્મલ-જીવલ અવદ્ય હોય છે, કેમકે જીવલ શિવાય કપાયો હોતા નથી.

૩ ‡ જેને દ્રવ્યાત્મા હોય તેને યોગાત્મા સયોગીઅવસ્થામા હોય છે, અયોગી (યોગરહિત) કેવલી અને સિદ્ધોને યોગાત્મા હોતો નથી, પણ જેને યોગાત્મા હોય તેને અવદ્ય દ્રવ્યાત્મા હોય છે, કેમકે જીવલ શિવાય યોગો હોતા નથી. આ દ્વીકૃત પૂર્વસૂત્રમા વતાવ્યા પ્રમાણે જાણવી.

૪ § જે જીવને દ્રવ્યાત્મા હોય છે તેને અવદ્ય ઉપયોગાત્મા હોય છે, અને જેને ઉપયોગાત્મા હોય છે તેને અવદ્ય દ્રવ્યાત્મા હોય છે, કેમકે દ્રવ્યાત્મા અને ઉપયોગાત્માનો પરસ્પર નિયત સંબંધ છે. ભિદ્ધ અને અન્ય સસારી જીવોને દ્રવ્યાત્મા પણ છે, અને ઉપયોગાત્મા પણ છે, કારણકે ઉપયોગ એ જીવનું લક્ષણ છે.

णाए जस्स पुण णाणाया तस्स द्वियाया नियमं अत्थि, जस्स द्वियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया तस्स द्वियाया नियमं अत्थि, जस्स द्वियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स द्वियाया नियमं अत्थि, एवं वीरियायाए वि समं ।

५. [प्र०] जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, एवं उवओगायाए वि समं कसायाया नेयत्ता, कसायाया य णाणाया य परोप्परं दो वि भइयत्ताओ, जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयत्ताओ, जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियत्ताओ, एवं जहा कसायायाए वत्तघया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियत्ताओ । जहा द्वियायाए वत्तघया भणिया तहा

द्रव्यात्मा अवश्य होय, जेने \*द्रव्यात्मा होय तेने ज्ञानात्मा भजनाए—विकल्पे होय, अने जेने ज्ञानात्मा होय तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय. जेने द्रव्यात्मा होय तेने दर्शनात्मा अवश्य होय, जेने दर्शनात्मा होय तेने द्रव्यात्मा पण अवश्य होय, जेने द्रव्यात्मा होय तेने चारित्रात्मा भजनाए—विकल्पे होय, अने जेने चारित्रात्मा होय तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय. ए प्रमाणे वीर्यात्मानो साथे पण संबन्ध कहेवो.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जेने कपायात्मा होय तेने शुं योगात्मा होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने कपायात्मा होय तेने योगात्मा अवश्य होय, अने जेने योगात्मा होय तेने कदाचित् कपायात्मा होय अने कदाचित् न पण होय. ए प्रमाणे उपयोगात्मानो साथे कपायात्मानो संबन्ध जाणवो. तथा कपायात्मा अने ज्ञानात्मा ए वने परस्पर भजनाए—विकल्पे कहेवा. जेम कपायात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध कह्यो तेम कपायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध कहेवो. तथा कपायात्मा अने चारित्रात्मा—ए वने—परस्पर भजनाए कहेवा. जेम कपायात्मा अने योगात्मा कह्या, तेम कपायात्मा अने वीर्यात्मा पण कहेवा. ए प्रमाणे जेम कपायात्मानो साथे इतर [छ] आत्मानो वक्तव्यता कही, तेम योगात्मानो साथे पण उपरना [पांच] आत्मानो वक्तव्यता कहेवी. जेम द्रव्यात्मानो वक्तव्यता कही तेम उपयोगात्मानो

द्रव्यात्मानो ज्ञानात्मानो साथे संबन्ध. दर्शनात्मा साथे संबन्ध. चारित्रात्मा साथे संबन्ध. वीर्यात्मा. कपायात्मा अने योगात्मानो संबन्ध.

कपायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध.

\* जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने ज्ञानात्मा विकल्पे होय छे, जेमके सम्यग्दृष्टिने तत्त्वना विशेषावबोधरूप सम्यग्ज्ञान होय छे, अने मिथ्यादृष्टिने सम्यग्ज्ञान होतुं नथी; पण जेने ज्ञानात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा सिद्धनी पेटे अवश्य होय छे. जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने सामान्य अवबोधरूप दर्शनात्मा अवश्य होय छे, जेम सिद्धने केवलदर्शन होय छे, जेने दर्शनात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा पण अवश्य होय छे. जेमके चक्षुदर्शनादिवाक्याने द्रव्यात्मा—जीवल होय छे.

† जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने चारित्रात्मा भजनाए होय छे, कारण के सिद्ध अथवा विरतिरहितने द्रव्यात्मा छतां पण हिंसादि दोषधी निवृत्तिरूप चारित्रात्मा होतो नथी, अने विरतिवाक्याने होय छे, माटे भजना जाणवी. जेने चारित्रात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय छे, जेमके चारित्रवाक्याने जीवत्वुं नियतसाहचर्य होय छे. ए प्रमाणे द्रव्यात्मानो वीर्यात्मानो साथे संबन्ध जाणवो. जेमके द्रव्यात्मानो चारित्रात्मानो साथे भजना अने नियम कह्यो तेम वीर्यात्मानो साथे पण जाणवुं. ते आ प्रमाणे—जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने वीर्यात्मा होतो नथी, जेमके सकरण वीर्यनी अपेक्षाए सिद्धने वीर्यात्मा नथी, बीजा ससारीने होय छे पण जेने वीर्यात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय छे. जेमके वीर्यवाक्या ससारी जीवोने द्रव्यात्मा होय छे.

‡ हचे कपायात्मानो साथे बीजा छ आत्मानो संबन्ध बतावे छे—जेने कपायात्मा होय छे तेने योगात्मा होय छे, जेमके कोइ पण सकपायी अयोगी (योगरहित) होतो नथी. पण जेने योगात्मा होय छे तेने कपायात्मा कदाच होय के न होय, जेमके सयोगी सकपायी अने अकपायी वने प्रकारना होय छे. ए प्रमाणे उपयोगात्मा पण कहेवो, ते आ प्रमाणे—जेने कपायात्मा होय छे तेने उपयोगात्मा अवश्य होय छे, जेमके उपयोगरहितने (जड पदार्थने) कपायो होता नथी, पण जेने उपयोगात्मा होय छे तेने कपायात्मा भजनाए होय छे. उपयोगात्मा छतां पण सकपायीने कपायात्मा होय छे, पण वीतरागने कपायो होता नथी. कपायात्मा अने ज्ञानात्मानो परस्पर भजना जाणवी. जेमके जेने कपायात्मा होय छे तेने ज्ञानात्मा कदाचित् होय छे, अने कदाचित् होतो नथी. कारण के सकपायी सम्यग्दृष्टिने ज्ञानात्मा होय छे, पण मिथ्यादृष्टि सकपायीने ज्ञानात्मा होतो नथी, तथा जेने ज्ञानात्मा होय छे तेने कपायात्मा कदाचित् होय छे, कदाचित् होतो नथी. कारण के ज्ञानीने कपायो होय छे, अने होता पण नथी.

§ जेम कपायात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध कह्यो, तेम कपायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध कहेवो, जेमके जेने कपायात्मा होय छे तेने दर्शनात्मा अवश्य होय छे, दर्शनरहित जड पदार्थने. कपायात्मा होतो नथी, पण तेने दर्शनात्मा होय छे, तेने कपायात्मा कदाचित् होय छे अने कदाचित् होतो नथी, जेमके दर्शनवाक्याने कपाय होय छे अने होता पण नथी.

§ कपायात्मा अने चारित्रात्मा परस्पर भजनाए जाणवा, जेमके जेने कपायात्मा होय छे तेने चारित्रात्मा कदाचित् होय छे, कदाचित् होतो नथी, कारण के सकपायीने प्रमत्त साधुनी पेटे चारित्र होय छे, अने असंयतनी पेटे तेनो अभाव पण होय छे. ते आ प्रमाणे—जेने चारित्रात्मा होय छे तेने कपायात्मा कदाचित् होय छे अने कदाचित् होतो नथी. सामायिकादि चारित्रवाक्याने कपायो होय छे अने यथाख्यातचारित्रवाक्याने तेनो अभाव होय छे. जेम कपायात्मा अने योगात्मा कह्या तेम कपायात्मा अने वीर्यात्मानो संबन्ध कहेवो.

§ ए प्रमाणे योगात्मानो उपयोगात्मा वगेरे उपरना पाच पदो साथे पूर्व प्रमाणे संबन्ध कहेवो, जेने चारित्रात्मा होय छे तेने योगात्मा कदाच सयोग चारित्रवाक्यानी पेटे होय छे अने अयोगीनी पेटे कदाच होतो नथी. पण अन्य वाचनानां आवो पाठ छे 'जस्स चरित्ताया तस्स जोगाया नियम अत्थि' जेने प्रत्युपेक्षणारूप चारित्रात्मा होय छे तेने योगात्मा अवश्य होय छे—टीका.

|| हचे उपयोगात्मानो साथे बीजा चार पदोने संबन्ध अतिदेश द्वारा जणावे छे.

ઉચ્ચોગાયાપ વિ ઉચ્ચિદ્ધાર્હિં સમં માણિયદ્વા । જસ્ત નાળાયા તસ્ત દંસળાયા નિયમં અત્થિ, જસ્ત પુળ દંસળાયા તસ્સ ણાળાયા મયળાપ, જસ્ત નાળાયા તસ્ત ચરિત્તાયા સિય અત્થિ સિય નત્થિ, જસ્ત પુળ ચરિત્તાયા તસ્સ નાળાયા નિયમં અત્થિ, ણાળાયા વીરિયાયા દો વિ પરોપ્પરં મયળાપ । જસ્ત દંસળાયા તસ્સ ઉચ્ચરિમાઓ દો ઢિ મયળાપ, જસ્ત પુળ તાઓ તસ્સ દંસળાયા નિયમં અત્થિ । જસ્ત ચરિત્તાયા તસ્સ વીરિયાયા નિયમં અત્થિ, જસ્ત પુળ વીરિયાયા તસ્સ ચરિત્તાયા સિય અત્થિ સિય નત્થિ ।

૬. [પ્ર૦] પ્યાસિ ણં મંતે ! દવિયાયાણં, કસાયાયાણં, જાવ-વીરિયાયાણ ય કયરે કયરેહિતો જાવ-વિસેસાહિયા વા ? [૩૦] ગોયમા ! સદ્ધત્થોઘાઓ ચરિત્તાયાઓ, નાળાયાઓ અણંતગુળાઓ, કસાયાઓ અણંતગુળાઓ, જોગાયાઓ વિસેસાહિયાઓ, વીરિયાયાઓ વિસેસાહિયાઓ, ઉચ્ચોગ-દવિય-દંસળાયાઓ તિન્નિ વિ તુહ્લાઓ વિસેસાહિયાઓ ।

૭. [પ્ર૦] આયા મંતે ! નાળે અન્નાણે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા સિય નાળે સિય અન્નાણે, ણાળે પુળ નિયમં આયા ।

૮. [પ્ર૦] આયા મંતે ! નેરહ્યાણં નાળે, અન્ને નેરહ્યાણં નાળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા નેરહ્યાણં સિય નાળે, સિય અન્નાણે । નાળે પુળ સે નિયમં આયા, एवं જાવ ધણિયકુમારણં ।

૯. [પ્ર૦] આયા મંતે ! પુઢવિકાહ્યાણં અન્નાણે, અન્ને પુઢવિકાહ્યાણં અન્નાણે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા પુઢવિકાહ્યાણં નિયમં અન્નાણે, અન્નાણે વિ નિયમં આયા, एवं જાવ ઘણસ્સહકાદ્યાણં, વેદ્દિય-તેદ્દિય-જાવ-વેમાણિયાણં જદ્દા નેરહ્યાણં ।

૧૦. [પ્ર૦] આયા મંતે ! દંસળે, અન્ને દંસળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા નિયમં દંસળે, દંસળે વિ નિયમં આયા ।

૧૧. [પ્ર૦] આયા મંતે ! નેરહ્યાણં દંસળે, અન્ને નેરહ્યાણં દંસળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા નેરહ્યાણં નિયમા દંસળે, દંસળે વિ સે નિયમં આયા, एवं જાવ-વેમાણિયાણં નિરંતરં દંડઓ ।

પળ ઉપરના આત્માઓની સાથે વક્તવ્યતા કહેવી. જેને \*જ્ઞાનાત્મા હોય તેને દર્શનાત્મા અવશ્ય હોય, અને જેને વઢી દર્શનાત્મા હોય તેને જ્ઞાનાત્મા મજનાઈ હોય. જેને જ્ઞાનાત્મા હોય તેને ચારિત્રાત્મા મજનાઈ હોય-૯ટલે કદાચિદ્ હોય અને કદાચિદ્ ન હોય, વઢી જેને ચારિત્રાત્મા હોય તેને જ્ઞાનાત્મા અવશ્ય હોય. તથા જ્ઞાનાત્મા અને વીર્યાત્મા-૯ વન્ને પરસ્પર મજનાઈ-વિકલ્પે હોય. જેને ઠદર્શનાત્મા હોય તેને ઉપરના ચારિત્રાત્મા, વીર્યાત્મા ૯ વન્ને મજનાઈ હોય, વઢી જેને તે વન્ને આત્મા હોય તેને દર્શનાત્મા અવશ્ય હોય. જેને ચારિત્રાત્મા હોય તેને અવશ્ય વીર્યાત્મા હોય, વઢી જેને વીર્યાત્મા હોય તેને ચારિત્રાત્મા કદાચિદ્ હોય અને કદાચિદ્ ન હોય.

૬. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! દ્રવ્યાત્મા, કપાયાત્મા, યાવદ્-વીર્યાત્મામાં કયા આત્મા કોનાથી યાવદ્-વિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ૧ સૌથી યોડા ચારિત્રાત્મા છે, ૨ તે કરતાં જ્ઞાનાત્મા અનંતગુણ છે, ૩ તેથી કપાયાત્મા અનંતગુણ છે, ૪ તે કરતાં યોગાત્મા વિશેષાધિક છે, ૫ તેથી વીર્યાત્મા વિશેષાધિક છે, ૬ તે કરતા ઉપયોગાત્મા, દ્રવ્યાત્મા અને દર્શનાત્મા-૯ ત્રણે વિશેષાધિક છે અને પરસ્પર તુલ્ય છે.

૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આત્મા જ્ઞાનસ્વરૂપ છે કે અજ્ઞાનસ્વરૂપ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આત્મા કદાચિત્ જ્ઞાનસ્વરૂપ છે, અને કદાચિત્ અજ્ઞાનસ્વરૂપ છે. પળ જ્ઞાન તો અવશ્ય આત્મસ્વરૂપ છે.

૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! નૈરથિકોનો આત્મા જ્ઞાનરૂપ છે, કે અજ્ઞાનરૂપ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નૈરથિકોનો આત્મા કદાચિદ્ જ્ઞાનરૂપ છે, અને કદાચિદ્ અજ્ઞાનરૂપ પણ છે. પરન્તુ તેઓનું જ્ઞાન અવશ્ય આત્મરૂપ છે. ૯ પ્રમાણે યાવદ્-સ્તાનિનકુમારો સુધી જાણવું.

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! પૃથ્વીકાયિકોનો આત્મા જ્ઞાનરૂપ છે કે અજ્ઞાનરૂપ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિકોનો આત્મા અવશ્ય અજ્ઞાનરૂપ છે, અને તેઓનું અજ્ઞાન પણ અવશ્ય આત્મરૂપ છે. ૯ પ્રમાણે યાવદ્-વનસ્પતિકાયિકો સુધી જાણવું. વેદન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને યાવદ્-વૈમાનિકોને નૈરથિકોની પેઠે ( સૂ. ૮ ) જાણવું.

૧૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આત્મા દર્શનરૂપ છે કે તેથી દર્શન વીજું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આત્મા અવશ્ય દર્શનરૂપ છે અને દર્શન પણ અવશ્ય આત્મા છે.

૧૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! નૈરથિકોનો આત્મા દર્શનરૂપ છે ? કે નૈરથિકોનું દર્શન તેથી અન્ય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નૈરથિકોનો આત્મા અવશ્ય દર્શનરૂપ છે, અને તેઓનું દર્શન પણ અવશ્ય આત્મા છે. ૯ પ્રમાણે યાવદ્-વૈમાનિકો સુધી નિરંતર (નોવીસ) દંડક કહેવા.

૫ \* જ્ઞાનાત્મા સાથે ઉપરના ત્રણ આત્માનો સંબન્ધ થતાવે છે. † દર્શનાત્મા સાથે ઉપરના વે પદોનો સંબન્ધ થતાવે છે.

૭ † જ્ઞાન-સમ્યગ્જ્ઞાન અને અજ્ઞાન-મિધ્યાજ્ઞાન પ્રહ્ણ કરવું.

१२. [प्र०] आया भंते ! रयणप्पमापुढवी, अत्ता रयणप्पमा पुढवी ? [उ०] गोयमा ! रयणप्पमा १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवत्तव्वं आयाति य नोआयाइ य । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—‘रयणप्पमा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं आताति य नोआताति य’ ? [उ०] गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे १ आया, परस्स आदिट्ठे २ नोआया, ३ तट्ठमयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं रयणप्पमा पुढवी आयाति य नोआयाति य; से तेणट्टेणं तं चेव जाव—नोआयाति य ।

१३. [प्र०] आया भंते ! सक्करप्पमा पुढवी ? [उ०] जहा रयणप्पमा पुढवी तहा सक्करप्पमाए वि, एवं जाव—अहेसत्तमा ।

१४. [प्र०] आया भंते ! सोहम्मं कप्पे पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सोहम्मं कप्पे १ सिय आया, २ सिय नोआया, जाव नो आयाति य । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! जाव—‘नो आयाति य’ ? [उ०] गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे १ आया, परस्स आदिट्ठे २ नो आया, तट्ठमयस्स आदिट्ठे ३ अवत्तव्वं आताति य नोआताति य; से तेणट्टेणं तं चेव जाव—‘नोआयाति य’ । एवं जाव—अञ्चए कप्पे ।

१५. [प्र०] आया भंते ! गेविज्जविमाणे, अत्ते गेविज्जविमाणे ? [उ०] एवं जहा रयणप्पमा तहेव, एवं अणुत्तरविमाणा वि, एवं ईसिपन्मारा वि ।

१६. [प्र०] आया भंते ! परमाणुपोग्गले, अत्ते परमाणुपोग्गले ? [उ०] एवं जहा सोहम्मं कप्पे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियध्वे ।

१७. [प्र०] आया भंते ! दुपएसिए खंधे, अत्ते दुपएसिए खंधे ? [उ०] गोयमा ! दुपएसिए खंधे १ सिय आया, २

१२. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथ्वी आत्मा—सत्स्वरूप छे के अन्य—असत्स्वरूप रत्नप्रभा पृथिवी छे ? [उ०] हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी १ कथंचित् आत्मा—सद्वरूप छे, २ कथंचित् नोआत्मा—असद्वरूप पण छे, अने ३ सद्वरूपे अने असद्वरूपे [उभयथा] कथंचित् अवक्तव्य—कहेवाने अशक्य छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, ‘रत्नप्रभा पृथिवी कथंचिद् आत्मा—सद्वरूप छे, कथंचित् नोआत्मा—असद्वरूप छे, अने सद्वरूपे अने असद्वरूपे—उभयरूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे?’ [उ०] हे गौतम ! \*रत्नप्रभा पृथिवी पोताना आदेशी—स्वरूपथी आत्मा—विद्यमान छे, परना आदेशी—पररूपे विवक्षायी नोआत्मा—अविद्यमान छे, अने उभयना आदेशी—स्व अने परनी विवक्षायी आत्मा—सद्वरूपे अने नोआत्मा—असद्वरूपे अवक्तव्य छे. ते हेतुथी पूर्वं प्रमाणे कह्युं छे तेम आत्मा—सद्वरूपे अने यावद्—नोआत्मा—असद्वरूपे अवक्तव्य छे.

रत्नप्रभा पृथिवी न-  
द्वरूप छे के असद्व-  
रूप छे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी आत्मा—सद्वरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम रत्नप्रभा पृथ्वी कही तेम शर्कराप्रभा पृथ्वी संबंधे पण जाणवुं. ए प्रमाणे यावद्—अधःसप्तम पृथ्वी सुधी जाणवुं.

शर्कराप्रभा पृथिवी.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! सौधर्म देवलोक आत्मा—सद्वरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सौधर्म कल्प १ कथंचित् आत्मा—सद्वरूप छे, २ कथंचिद् नोआत्मा—असद्वरूप छे, यावद्—आत्मा—सद्वरूपे अने नोआत्मा—असद्वरूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, ‘ते यावद्—आत्मा अने नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे ? [उ०] हे गौतम ! पोताना आदेशी आत्मा—विद्यमान छे, परना आदेशी नोआत्मा—अविद्यमान छे, अने वज्जेना आदेशी अवक्तव्य—आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवाच्य छे, माटे ते हेतुथी इत्यादि पूर्वोक्त यावद्—आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवक्तव्य छे. ए रीते यावद्—अच्युतकल्प पण जाणवी.

सौधर्म देवलोक.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! भ्रैवेयक विमान आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य (अविद्यमान) भ्रैवेयक विमान छे ? [उ०] ए वधुं रत्नप्रभा पृथिवीनी पेठे (सू० १२) जाणवुं, अने ते प्रमाणे अनुत्तर विमान तथा ईपत्त्राग्भारा पृथ्वी (सिद्धशिल्पा) सुधी जाणवुं.

भ्रैवेयक विमान.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! एक परमाणुपुद्गल आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य (अविद्यमान) परमाणुपुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम सौधर्मकल्प संबन्धे कह्युं (सू० १४) तेम एक परमाणुपुद्गलसंबन्धे पण जाणवुं.

एक परमाणु सद्वरूप  
छे के असद्वरूप छे ?

१७. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य द्विप्रदेशिक स्कंध छे ? [उ०] हे गौतम ! द्विप्रदेशिक

द्विप्रदेशिक स्कन्ध.

१२ \* रत्नप्रभा पृथिवी पोताना वर्णादि पर्याय वडे आत्मा—सद्वरूप छे, परवस्तुना पर्याय वडे नोआत्मा—असद्वरूप छे, अने स्वपरना पर्याय वडे आत्म-स्वरूप के अनात्मस्वरूप ए वज्जे प्रकारे कहेवाने अशक्य छे. ए प्रमाणे परमाणु [सू० १६] सुधी त्रण भांगा थाय छे.

१७ † द्विप्रदेशिक स्कन्धने विषे छ भांगा थाय छे, तेमा प्रथमना त्रण भागा सकल स्कन्धनी अपेक्षाए थाय छे, अने ते पूर्वं कहेला छे. याकीना त्रण भागा देशनी अपेक्षाए छे. द्विप्रदेशिक स्कन्ध होवाथी तेना एक देशनी स्वपर्याय वडे सद्वरूपे विवक्षा करीए अने चीजा देशनी परपर्याय वडे असद्वरूपे विवक्षा करीए तो द्विप्रदेशिक स्कन्ध अनुक्रमे ४ कथंचित् आत्मारूपे अने कथंचित् अनात्मरूपे होय, तथा तेना एक देशनी स्वपर्याय वडे सद्वरूपे विवक्षा करीए अने चीजा देशनी सद्वरूपे अने असद्वरूपे उभयरूपे विवक्षा करीए तो ५ कथंचित् आत्मरूपे अने अवक्तव्य कहेवाय. तथा ते स्कन्धने एक देश परपर्याय वडे असद्वरूपे विवक्षित करीए अने एक चीजा देशनी उभयरूपे विवक्षा करीए तो ते ६ नोआत्मा अने अवक्तव्य कहेवाय कथंचित् आत्मा, नोआत्मा अने अवक्तव्य—ए प्रमाणे सातमो भागो द्विप्रदेशिक स्कन्धने विषे तेना वे अश होवाथी थतो नथी. त्रिप्रदेशिकादि स्कन्धने विषे तो आ साते भागा थाय छे.

સ્તિય નોઝાયા, ૩ સ્તિય અવત્તઘં ધાયાઈ ય નોઝાયાતિ ય, ૪ સ્તિય ધાયા ય નોઝાયા ય, ૫ સ્તિય ધાયા ય અવત્તઘં ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય, ૬ સ્તિય નોઝાયા ય અવત્તઘં ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય ।

૧૮. [પ્ર૦] સે કેળટ્ટેણં મંતે ! एवं तं चैव जाव-‘नोआया य अवत्तघं धायाति य नोआयाति य’ ? [उ०] गोयमा । ૧ અપ્પણો આદિટ્ટે ૧ ધાયા, ૨ પરસ્સ આદિટ્ટે નોઝાયા, ૩ તદુભયસ્સ આદિટ્ટે અવત્તઘં દુપ્પણિય સંધે ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય, ૪ દેસે આદિટ્ટે સન્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે અસન્માવપજ્જવે દુપ્પણિય સંધે ધાયા ય નોઝાયા ય, ૫ દેસે આદિટ્ટે સન્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે તદુભયપજ્જવે દુપ્પણિય સંધે ધાયા ય અવત્તઘં ધાયાઈ ય નો ધાયાઈ ય, ૬ દેસે આદિટ્ટે અસન્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે તદુભયપજ્જવે દુપ્પણિય સંધે નોઝાયા ય અવત્તઘં ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય, સે તેળટ્ટેણં તં ચેવ જાવ-‘નોઝાયાતિ ય’ ।

૧૯. [પ્ર૦] ધાયા મંતે ! तिपपसिए संधे अत्रे तिपपसिए संधे ? [उ०] गोयमा ! तिपपसिए संधे ૧ સ્તિય ધાયા, ૨ સ્તિય નોઝાયા, ૩ સ્તિય અવત્તઘં ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય, ૪ સ્તિય ધાયાય નોઝાયા ય, ૫ સ્તિય ધાયા ય નોઝાયાઓ ય, ૬ સ્તિય ધાયાઓ ય નોઝાયા ય, ૭ સ્તિય ધાયા ય અવત્તઘં ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય, ૮ સ્તિય ધાયા ય અવત્તઘાઈ ધાયાઓ ય નોઝાયાઓ ય, ૯ સ્તિય ધાયાઓ ય અવત્તઘં ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય, ૧૦ સ્તિય નોઝાયા ય અવત્તઘં ધાયાતિ ય નોઝાયાતિ ય, ૧૧ સ્તિય નોઝાયા ય અવત્તઘાઈ ધાયાઓ ય નોઝાયાઓ ય, ૧૨ સ્તિય નોઝાયાઓ ય અવત્તઘં ધાયાઈ ય નોઝાયાઈ ય, ૧૩ સ્તિય ધાયા ય નોઝાયા ય અવત્તઘં ધાયાઈ ય નોઝાયાઈ ય ।

૨૦. [પ્ર૦] સે કેળટ્ટેણં મંતે ! एवं बुद्धि-निपपसिए संधे सिय धाया-एवं चैव उच्चारयेद्यं जाव-स्ति य धाया य नो-आया य अवत्तघं धायाति य नोआयाति य ? [उ०] गोयमा ! ૧ અપ્પણો આદિટ્ટે ધાયા, ૨ પરસ્સ આદિટ્ટે નોઝાયા, ૩ તદુભયસ્સ આદિટ્ટે અવત્તઘં ધાયાતિ ય નો ધાયાતિ ય, ૪ દેસે આદિટ્ટે સન્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે અસન્માવપજ્જવે તિપ્પણિય

સ્કંધ ૧ કયંચિત્ આત્મા-વિચમાન છે, ૨ કયંચિત્ નોઆમા-અવિચમાન છે, અને ૩ આત્મા તથા નોઆમા રૂપે કયંચિત્ અવત્તઘ્ય છે, ૪ કયંચિત્ આત્મા છે, અને કયંચિત્ નોઆમા પણ છે, ૫ કયંચિત્ આત્મા છે, અને આત્મા તથા નોઆમા-૯ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે, ૬ કયંચિત્ નોઆમા છે, અને આત્મા અને નોઆમા-ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहे छो के-इत्यादि पूर्वोक्त यावद्-आत्मा अने नोआमा-ए उभयरूपे अव-क्त्य छे ? [उ०] हे गौतम ! ૧ ( દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ) પોતાના આદેશથી આત્મા છે, ૨ પરના આદેશથી નોઆમા છે, ૩ ઉભયના આદે-શથી આત્મા અને નોઆમા-૯ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે, ૪ એક દેશની અપેક્ષા સદ્ભાવપર્યાયની વિવક્ષાથી અને એક દેશની અપેક્ષા અસદ્ભાવપર્યાયની વિવક્ષાથી દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા-વિચમાન, તથા નોઆમા-અવિચમાન છે, ૫ એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યા-યની અપેક્ષા અને એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવ અને અસદ્ભાવ એ બન્ને પર્યાયની અપેક્ષા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા-વિચમાન અને આત્મા તથા નોઆમા એ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે. ૬ એક દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવ અને અસદ્ભાવ-૯ બન્ને પર્યાયની અપેક્ષા તે દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ નોઆમા-અવિચમાન અને આત્મા તથા નોઆમારૂપે અવત્તઘ્ય છે. તે હેતુથી એ પ્રમાણે કહ્યું છે કે યાવદ્-નોઆત્મા-અવિચમાન છે.’

૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा-विचमान छे के तेयी अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रिप्रदे-शिक स्कंध ૧ કયંચિત્ આત્મા-વિચમાન છે, ૨ કયંચિત્ નોઆમા-અવિચમાન છે, ૩ આત્મા તથા નોઆમા-૯ ઉભયરૂપે કયંચિત્ અવત્તઘ્ય છે, ૪ કયંચિત્ આત્મા તથા કયંચિત્ નોઆમા છે, ૫ કયંચિત્ આત્મા તથા નોઆમાઓ છે, ( એકવચન અને વહુવચન. ) ૬ કયંચિત્ આત્માઓ અને નોઆમા છે, ( વહુવચન અને એકવચન. ) ૭ કયંચિત્ આત્મા અને કયંચિત્ આત્મા તથા નોઆમા-૯ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે, ૮ કયંચિત્ આત્મા અને આત્માઓ તથા નોઆમાઓ-૯ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે. ૯ કયંચિત્ આત્માઓ અને આત્મા તથા નો-આમા-૯ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે, ૧૦ કયંચિત્ નોઆત્મા અને આત્મા તથા નોઆમા-૯ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે, ૧૧ કયંચિત્ નોઆમા અને આત્માઓ તથા નોઆમાઓ-૯ બન્ને રૂપે અવત્તઘ્યો છે, ૧૨ કયંચિત્ નોઆમાઓ અને આત્મા તથા નોઆમા-૯ ઉભયરૂપે અવત્તઘ્ય છે, ૧૩ કયંચિત્ આત્મા, નોઆમા અને આત્મા તથા નોઆમા-૯ બન્ને રૂપે અવત્તઘ્ય છે.

૨૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहे छो के, त्रिप्रदेशिक स्कंध कयंचिद् आत्मा छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेहुं, यावद्-कयंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथા નોઆમારૂપે અવત્તઘ્ય છે ? [उ०] हे गौतम ! ( त्रिप्रदेशिक स्कंध ) પોતાના આદેશથી ૧-આત્મા છે, ૨ પરના-આદેશથી નોઆમા છે, ૩ ઉભયના આદેશથી-આત્મા અને નોઆમા-૯ ઉભય રૂપે અવત્તઘ્ય છે, ૪ એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને એક દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા અને નોઆમારૂપ છે, ૫ એક

૧૧ \* ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધને વિષે તેર ભાગ ધાય છે. તેમા પૂર્વે કહેલા છાત્ર ભાગનાથી આદિના ત્રણ ભાગ સ્કંધની અપેક્ષા ધાય છે, પછીના ત્રણ ભાગના એકવચન અને વહુવચનના નેટ થકી ત્રણ ત્રણ વિકલ્પો ધાય છે. અને સાતમો ભાગો એક પ્રકારનો છે.

खंधे आया य नोआया य, ५ देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसा आदिट्टा असन्भावपज्जवा तिपपसिए खंधे आया य नोआयाओ य, ६ देसा आदिट्टा सन्भावपज्जवा देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे तिपपसिए खंधे आयाओ य नोआया य, ७ देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे तदुभयपज्जवे तिपपसिए खंधे आया य अवत्तघं आयाइ य नोआयाइ य, ८ देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसा आदिट्टा तदुभयपज्जवा तिपपसिए खंधे आया य अवत्तघं आयाइ य नोआयाइ य, ९ देसा आदिट्टा सन्भावपज्जवा देसे आदिट्टे तदुभयपज्जवे तिपपसिए खंधे आया य अवत्तघं आयाति य नो आयाति य, एए तिन्नि भंगा, १० देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे तदुभयपज्जवे तिपपसिए खंधे नोआया य, अवत्तघं. आयाइ य नोआयाति य, ११ देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे देसा आदिट्टा तदुभयपज्जवा तिपपसिए खंधे नोआया य अवत्तघं आयाइ य नोआयाइ य, १२ देसा आदिट्टा असन्भावपज्जवा देसे आदिट्टे तदुभयपज्जवे तिपपसिए खंधे नोआयाइ य अवत्तघं आयाति य नो आयाति य, १३ देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे तदुभयपज्जवे तिपपसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तघं आयाति य नोआयाइ य । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—‘तिपपसिए खंधे सिय आया तं—चेव जाव—नोआयाति य’ ।

२१. [प्र०] आया भंते ! चउप्पसिए खंधे अत्रे० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउप्पसिए खंधे १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवत्तघं आयाति य नोआयाति य, ४—७ सिय आया य नोआया य ४, ८—११ सिय आया य अवत्तघं ४, १२—१५ सिय नोआया य अवत्तघं ४, १६ सिय आया य नो आया य अवत्तघं आयाति य नोआयाति य ४, १७ सिय आया य नोआया य अवत्तघं आयाओ य नोआयाओ य, १८ सिय आया य नोआयाओ य अवत्तघं आयाति य नो आयाति य, १९ सिय आयाओ य नोआया य अवत्तघं आयाति य नोआयाति य ।

२२. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘चउप्पसिए खंधे सिय आया य नोआया य अवत्तघं—तं चेव अट्ठे पडि—उच्चारयेयं ? [उ०] गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्टे आया, २ परस्स आदिट्टे नोआया, ३ तदुभयस्स आदिट्टे अवत्तघं आयाति

देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिकस्कंध आत्मा तथा नोआत्माओ छे, ६ देशोना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्माओ अने नोआत्मारूप छे, ७ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी उभय—सद्भाव तथा असद्भाव पर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिकस्कंध आत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा—ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ८ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशथी उभयपर्यायनी विवक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ—ए उभयरूपे अवक्तव्यो छे, ९ देशोना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा ए उभयरूपे अवक्तव्य छे.—ए त्रण भागाओ जाणवा. १० देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी उभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवक्तव्य छे, ११ देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ—ए उभयरूपे अवक्तव्यो छे, १२ देशोना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध नोआत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा उभयरूपे अवक्तव्य छे, १३ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध ( कथंचिद् ) आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा उभयरूपे अवक्तव्य छे. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के—‘त्रिप्रदेशिक स्कंध कथंचिद्—आत्मा छे—इत्यादि यावद्—नो आत्मा छे—’त्या सुची वधुं कहेवुं.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! चतुःप्रदेशिक स्कन्ध आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! \*चतुःप्रदेशिक स्कन्ध—१ कथंचिद् आत्मा छे, २ कथंचिद् नोआत्मा छे, ३ आत्मा अने नोआत्मा उभयरूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे, ४—७ कथंचिद् आत्मा अने नोआत्मा छे ४, ( एकवचन अने बहुवचनना चार भागाओ ) ८—११ कथंचिद् आत्मा अने अवक्तव्य छे ४, १२—१५ कथंचिद् नोआत्मा अने अवक्तव्य छे ४, १६ कथंचिद् आत्मा अने नोआत्मा तथा आत्मा—नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे, १७ कथंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओरूपे अवक्तव्यो छे, १८ कथंचिद् आत्मा नोआत्माओ तथा आत्मा अने नोआत्मा—उभयरूपे अवक्तव्य छे, १९ कथंचिद् आत्माओ, नोआत्मा तथा आत्मा अने अनात्मरूपे अवक्तव्य छे.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के चतुःप्रदेशिक स्कन्ध कथंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने अवक्तव्य छे—इत्यादि पूर्व प्रमाणे अर्थनो पुनरुच्चार करी प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ पोताना आदेशथी—स्वरूपनी विवक्षायी आत्मा छे, २ परना आदेशथी—पररूपनी विवक्षायी नोआत्मा छे, ३ तदुभयना आदेशथी आत्मा अने नोआत्मा—ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ४ देशना आदेशथी सद्भाव

चतुःप्रदेशिक स्कन्ध  
ना १९ भागाओ.

शा हेतुथी ‘आत्मा’  
इत्यादि छे.

२१ \* चतुःप्रदेशिक स्कन्धने विषे पण त्रिप्रदेशिक स्कन्धनी गेटे जाणवुं, परन्तु त्या ओगणीश भागाओ धाय छे. तेमा प्रथमना त्रण भागाओ सकल-देशी—सकल स्कन्धनी अपेक्षाए धाय छे, ते प्रमाणे वाकीना चार भागाना प्रत्येके चार चार विकल्पो धाय छे.



य नोआयाति य, ४ देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे चउमंगो, सन्भावपज्जवेणं तदुमयेण य चउमंगो, असन्भाववेणं तदुमयेण य चउमंगो, देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे तदुमयपज्जवे चउप्प-  
पसिए रंधे आया य नोआया य अवत्तद्धं आयाति य नो आयाति य १६, देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे असन्भाव-  
पज्जवे देसा आदिट्टा तदुमयपज्जवा चउप्पपसिए रंधे भवइ आया य नोआया य अवत्तद्धां आयाओ य नोआयाओ य १७,  
देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसा आदिट्टा असन्भावपज्जवा देसे आदिट्टे तदुमयपज्जवे चउप्पपसिए रंधे आया य नोआयाओ  
य अवत्तद्धं आयाति य नोआयाति य १८, देसा आदिट्टा सन्भावपज्जवा देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे तदुमयपज्जवे  
चउप्पपसिए रंधे आयाओ य नोआया य अवत्तद्धं आयाति य नो आयाति य १९, सं तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धर चउप्पपसिए  
रंधे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तद्धं निरुत्थेवे ते च्च मंगा उच्चारयेद्वा जाव-नोआयाति य ।

२३. [प्र०] आया मंते ! पंचपपसिए रंधे अत्रे पंचपपसिए रंधे ? [उ०] गोयमा ! पंचपपसिए रंधे ? सिय आया, १  
सिय नोआया, ३ सिय अवत्तद्धं आयाति य नोआयाति य, ४-७ सिय आया य नोआया य सिय अवत्तद्धं ४, ८-११ नो-  
आया य अवत्तद्धेण य ४, तियगसंजोगे एक्को ण पडइ ।

२४. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! तं च्च पडिउच्चारयेद्धं । [उ०] गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्टे आया, २ परस्स आदिट्टे नो-  
आया, ३ तदुमयस्स आदिट्टे अवत्तद्धं, ४ देसे आदिट्टे सन्भावपज्जवे देसे आदिट्टे असन्भावपज्जवे-एवं दुयगसंजोगे सधे पडंति  
तियगसंजोगे एक्को ण पडइ । छप्पपसियरस्त सधे पडंति । जहा छप्पपसिए एवं जाव-अणंतपपसिए । 'सेचं मंते ! सेचं मंते'पि  
जाव-विहरति ।

वारसमसए दसमो उद्देशो समत्तो ।

समत्तं वारसमं सयं ।

वपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशधी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए [एकवचन अने बहुवचनना] चार भांगा थाय छे, सद्भावपर्याय अने  
तदुमयनी अपेक्षाए चार भांगा थाय छे, तथा असद्भाव अने तदुमयनी अपेक्षाए पण चार भागा थाय छे, तथा १६ देशना आदेशधी  
सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए देशना आदेशधी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशधी तदुमयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्पदेशिक स्क्ंध  
आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा-ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, १७ देशना आदेशधी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशधी  
असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशधी तदुमयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्पदेशिक स्क्ंध आत्मा, नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआ-  
त्माओरूपे अवक्तव्य छे, १८ देशना आदेशधी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशधी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेश-  
धी तदुमयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्पदेशिक स्क्ंध आत्मा, नोआत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा-उभयरूपे अवक्तव्य छे, १९ देशना  
आदेशधी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशधी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, अने देशना आदेशधी तदुमयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्पदेशिक  
स्क्ंध आत्माओ, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे. माटे हे गौतम ! ते हेतुधी एम कहेवाच छे के, चतुष्पदेशिक स्क्ंध  
कर्यंचिद् आत्मा छे, कर्यंचिद् नोआत्मा छे अने कर्यंचिद् अवक्तव्य छे, ए निक्षेपमा पूर्वोक्त भागाओ यावद्-"नो आत्मा छे" त्यां सुधी कहेवा-

२३. [प्र०] हे भगवन् ! पंचप्रदेशिक स्क्ंध आत्मा छे, के तेथी अन्य पंचप्रदेशिक स्क्ंध छे ? [उ०] हे गौतम ! पंचप्रदेशिक  
स्क्ंध १ कर्यंचिद् आत्मा छे, २ कर्यंचिद् नोआत्मा छे, अने ३ आत्मा तथा नोआत्मारूपे कर्यंचिद् अवक्तव्य छे, ४ कर्यंचिद् आत्मा,  
नोआत्मा अने आत्मा अने अनात्मा-उभयरूपे कर्यंचिद् अवक्तव्य छे. नोआत्मा अने अवक्तव्यवडे ए प्रमाणे चार भांगा करवा, त्रिक संयो-  
गमा ( आठ भागा थाय छे ) एक आठमो भागो उतरतो नथी, एटले सात भागाओ थाय छे. ( कुल मळीने बावीस भांगाओ थाय छे. )

२४. [प्र०] हे भगवन् ! या हेतुधी ( पंचप्रदेशिक स्क्ंध आत्मा छे )-इत्यादि पाठनो पुनः उच्चार करवो. [उ०] हे गौतम ! १  
( पंचप्रदेशिक स्क्ंध ) पोताना आदेशधी आत्मा छे, २ परना आदेशधी नोआत्मा छे, ३ तदुमयना-आदेशधी अवक्तव्य छे, ४ देशना आदेश-  
धी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशधी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए कर्यंचिद् आत्मा छे अने आत्मा नथी-ए प्रमाणे द्विक  
संयोगमा संधे भागा उपजे छे, मात्र त्रिकसंयोगमा ( आठमो ) एक भागो उतरतो नथी. पट्टप्रदेशिक स्क्ंधने विषे सर्वे भांगाओ टागु पडे  
छे, जेम पट्टप्रदेशिक स्क्ंधने विषे कर्तुं, तेम यावत्-अनन्तप्रदेशिक स्क्ंध सक्न्वे जाणहुं, हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते  
एमज छे- एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

द्वादश शतके दशम उद्देशक समाप्त.

द्वादश शतक समाप्त.

२३ \* पंचप्रदेशिक स्क्ंधना चारवांग भागा थाय छे, तेमा आदिना त्रण भागा पूर्व प्रमाणे सकलविग्रहण छे, लार पछीना त्रण भागाना प्रत्येके चार  
चार निरूप्य थाय छे, अने सातमा भागाना सात निरूप्य थाय छे. त्रिकसंयोगना मूल आठ भागा थाय, तेमा अदि प्रथमना सात भागा ग्रहण करवा, एक छेत्त  
भागानो अचनन होमथी ते न ग्रहण करवो. छ प्रदेशिक स्क्ंधने विषे त्रैवीश भागा थाय छे.—दीक्षा.

## तेरसमं सयं ।

१. १ पुढवी २ देव ३ मणंतर ४ पुढवी ५ आहारमेव ६ उववाए ।  
७ भासा ८ कम ९ अणगारे 'केयाघडिया १० समुग्घाए ॥

२. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-कति णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ,  
तं जहा-१ रयणप्पमा, जाव-७ अहेसत्तमा ।

३. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! तीसं  
निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा  
वि असंखेज्जवित्थडा वि ।

४. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु १ एगसम-  
एणं केवतिया नेरइया उववज्जंति ? २ केवतिया काउलेस्सा उववज्जंति ? ३ केवइया कण्हपन्निस्सया उववज्जंति ? ४ केवतिया

## त्रयोदशशतक.

१. [उद्देशक संग्रह-] १ नरक पृथ्वी विपे प्रथम उद्देशक, २ देवनी प्ररूपणा संबन्धे वीजो उद्देशक, ३ अनन्तराहार-उपपात  
क्षेत्रनी प्राप्ति समये तुरतज आहार करनारा-नारक संबन्धे त्रीजो उद्देशक, ४ पृथिवी-नरकपृथिवीनी वक्तव्यता प्रतिपादन करवा माटे  
चोथो उद्देशक, ५ आहार-नारकादिना आहारनी प्ररूपणा करवा माटे पांचमो उद्देशक, ६ उपपात-नारकादिना उपपात संबन्धे छट्ठो  
उद्देशक, ७ भाषा संबन्धे सातमो उद्देशक, ८ कर्मनी प्ररूपणा करवा माटे आठमो उद्देशक, ९ अनगार-भावितात्मा अनगार वैक्रिय  
लब्धिना सामर्थ्यी केयाघडिया-हाथमा दोरडायी वाघेली घटीका लइने [एवारूपे] आकाशमा गमन करी शके-इत्यादिक अर्थतुं प्रतिपादन  
करवा माटे नवमो उद्देशक, १० अने समुद्घाततु प्रतिपादन करवा माटे दशमो उद्देशक-ए प्रमाणे तेरमा शतकने विपे दश उद्देशको  
कहेवामां आवशे.

## प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावत्-ए प्रमाणे वोल्या के-हे भगवन् ! केटली नरक पृथिवीओ कहेली छे ? [उ०]  
हे गौतम ! सात नरकपृथिवीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे-१ रत्नप्रभा, यावत्-७ अधः सप्तमनरकपृथिवी.

नरकपृथिवी.

३. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा नरकपृथिवीने विपे केटला लाख नरकावासो कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रीश लाख नरकावासो  
कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते नरकावासो सख्याता योजन विस्तारवाळा छे के असख्याता योजन विस्तारवाळा छे ? [उ०] हे गौतम !  
संख्याता योजन विस्तारवाळा पण छे अने असख्याता योजन विस्तारवाळा पण छे.

रत्नप्रभानेविपे  
नरकावासो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्यातायोजनविस्तारवाळा नरकावासोने विपे एक  
समये १ केटला नरक जीवो उत्पन्न थाय, २ केटला कापोतलेइयावाळा उत्पन्न थाय, ३ केटला \*कृष्णपाक्षिकजीवो उत्पन्न थाय, ४

सख्यातायोजन  
विस्तारवाळा नरका-  
वासोमां एक समये  
नारकादिनो उत्पाद.

१ केयाघडिया क ।

४ \* जे जीवोने कइक न्यून अर्धपुद्गलपरावर्तं ससार वाकी होय छे ते शुक्रपाक्षिक, अने तेथी अधिक ससार वाकी होय ते कृष्णपाक्षिक कहेवाय छे.-टीका.

सुकृपन्त्रिया उचवजंति ? ५. केवतिया सत्री उचवजंति ? ६. केवतिया असत्री उचवजंति ? ७. केवतिया भवसिद्धीया उचव-  
जंति ? ८. केवतिया अमवसिद्धीया उचवजंति ? ९. केवतिया आभिणिवोहियनाणी उचवजंति ? १०. केवइया सुयनाणी उच-  
वजंति ? ११. केवइया ओहिनाणी उचवजंति ? १२. केवइया मइयनाणी उचवजंति ? १३. केवइया सुययनाणी उचवजंति ?  
१४. केवइया विमंगनाणी उचवजंति ? १५. केवइया चक्रयुदंसणी उचवजंति ? १६. केवइया अचक्रयुदंसणी उचवजंति ?  
१७. केवइया ओहिदंसणी उचवजंति ? १८. केवइया आहारसन्नोवउत्ता उचवजंति ? १९. केवइया भयसन्नोवउत्ता उचवजंति ?  
२०. केवइया मेहुणसन्नोवउत्ता उचवजंति ? २१. केवइया परिगहसन्नोवउत्ता उचवजंति ? २२. केवइया इत्यिवेयगा उचवजंति ?  
२३. केवइया पुरिसवेदगा उचवजंति ? २४. केवइया नपुंसगवेदगा उचवजंति ? २५. केवइया कोहकसाई उचवजंति ? २८.  
जाव—केवइया लोमकसायी उचवजंति ? २९. केवइया सोइंदियउचउत्ता उचवजंति ? जाव—३३. केवइया फासिदियोवउत्ता  
उचवजंति ? ३४. केवइया नोइंदियोवउत्ता उचवजंति ? ३५. केवतिया मणजोगी उचवजंति ? ३६. केवतिया वइजोगी उचव-  
जंति ? ३७. केवतिया कायजोगी उचवजंति ? ३८. केवतिया सागारोवउत्ता उचवजंति ? ३९. केवतिया अणागारोवउत्ता उच-  
वजंति ? [उ०] गौयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरपसु जहन्नेणं  
एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उचवजंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा  
काउलेस्सा उचवजंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपन्त्रिया उचवजंति, एवं सुकृपन्त्रिया चि, एवं  
सत्री, एवं असत्री चि, एवं भवसिद्धीया, एवं अमवसिद्धीया, आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइयनाणी, सुययनाणी,  
विमंगनाणी एवं चैव, चक्रयुदंसणी ण उचवजंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्रयुदंसणी उचवजंति, एवं  
ओहिदंसणी चि, आहारसन्नोवउत्ता चि, जाव—परिगहसन्नोवउत्ता चि, इत्यिवेयगा न उचवजंति, पुरिसवेयगा चि न उचवजंति,  
जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेदगा उचवजंति, एवं कोहकसाई, जाव—लोमकसाई; सोइंदिय-  
उचउत्ता न उचवजंति, एवं जाव—फासिदियोवउत्ता न उचवजंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा

केटला शुक्रपाक्षिक जीवो उत्पन्न थाय, ५. केटला सत्री जीवो उत्पन्न थाय, ६. केटला असत्री जीवो उत्पन्न थाय, ७. केटला भवसिद्धिक  
जीवो उत्पन्न थाय, ८. केटला अमवसिद्धिक जीवो उत्पन्न थाय, ९. केटला आभिनिवोधिकजानी—मतिजानी उत्पन्न थाय, १०. केटला श्रुतज्ञानी  
उत्पन्न थाय, ११. केटला अवधिज्ञानी उत्पन्न थाय, १२. केटला मतिअज्ञानी उत्पन्न थाय, १३. केटला श्रुतअज्ञानी उत्पन्न थाय, १४. केटला  
विमंगजानी उत्पन्न थाय, १५. केटला चक्षुदर्शनी उत्पन्न थाय, १६. केटला अचक्षुदर्शनी उत्पन्न थाय, १७. केटला अवधिदर्शनी उत्पन्न  
थाय, १८. केटला आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा जीव उत्पन्न थाय, १९. केटला भयसंज्ञाना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, २०. केटला मैथुनस्  
ज्ञाना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, २१. केटला परिग्रह संज्ञाना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, २२. केटला स्त्रीवेदी जीव उत्पन्न थाय, २३.  
केटला पुरुषवेदी उत्पन्न थाय, २४. केटला नपुंसकवेदी उत्पन्न थाय, २५. केटला क्रोधकपायवाळा जीव उत्पन्न थाय, यावत्—२८. केटला  
लोमकपायवाळा उत्पन्न थाय, २९. केटला श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, यावत् ३३. केटला स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न  
थाय, ३४. केटला नोइन्द्रिय (मन)ना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, ३५. केटला मनयोगी उत्पन्न थाय, ३६. केटला वचनयोगी उत्पन्न थाय,  
३७. केटला काययोगी उत्पन्न थाय, ३८. केटला साकारोपयोगवाळा उत्पन्न थाय, अने ३९. केटला अनाकारोपयोगवाळा उत्पन्न थाय ? [उ०]  
हे गौतम ! आ रत्तप्रमापृथिवीना त्रीणं एखं नरकावासोमानां संख्याता योजनना विस्तारवाळा नरकावासोने विषे १ जवन्ययी एक, वे के  
त्रण अने उच्छृष्टी संख्याता नारको उत्पन्न थाय छे, २ जवन्ययी एक वे के त्रण, अने उच्छृष्टी संख्याता कापोतलेख्यावाळा उत्पन्न थाय  
छे, कारणके प्रथम नरक पृथिवीमां कापोतलेख्या होय छे. ३ जवन्ययी एक, वे के त्रण अने उच्छृष्टी संख्याता कृष्णपाक्षिक जीवो उत्पन्न  
थाय छे, ए प्रमाणे शुक्रपाक्षिक संबंधे पण जाणहुं, ए रीते सत्री अने असत्रीने पण कहेहुं, ए प्रमाणे भवसिद्धिक अने अमवसिद्धिक जीवो पण  
जाणवा. मतिजानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, विमंगजानी ए सर्व ए प्रमाणेज उत्पन्न थाय छे. चक्षुदर्शनवाळा जीवो  
उत्पन्न थता नथी. जवन्ययी एक, वे अथवा त्रण अने उच्छृष्टी संख्याता अचक्षुदर्शनवाळा जीवो उत्पन्न थाय छे. [कारणके उत्पत्ति समये  
सामान्य उपरोगरूप अचक्षुदर्शन छे.] एम अवधिदर्शनवाळा पण जाणवा. ए रीते आहार संज्ञाना उपयोगवाळा अने यावत् परिग्रह  
संज्ञाना उपयोगवाळा पण ए प्रमाणे उत्पन्न थाय छे. स्त्रीवेदवाळा अने पुरुषवेदवाळा जीवो [भवप्रत्यय नपुंसकवेद होवायी] उत्पन्न थता  
नथी. जवन्ययी एक, वे के त्रण अने उच्छृष्टी संख्याता नपुंसकवेदी उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे क्रोधकपायी, अने यावत् लोमकपायी  
जाणवा. श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थता नथी, अने यावत् स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा पण उत्पन्न थता नथी. जवन्ययी एक, वे

४ \* इन्द्रियो अने मन गिवाद सामान्य उपयोगमात्रे पण अचक्षुदर्शन वहे छे, अने ते उपपत्तिनये पण होय छे तेवी उत्तरमा 'अचक्षुदर्शनी  
उत्पन्न थाय छे'—इम काय छे.

† यावत् इच्छृष्टी भयसंज्ञाना उपयोगवाळा अने मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा जीवो ग्रहण करवा.

नोईद्विओवउत्ता उववज्जंति, मणजोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगी वि, जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति, एवं सागारोवउत्ता वि, एवं अणागारोवउत्ता वि ।

५. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उव्वट्ठंति ? केवतिया काउलेस्सा उव्वट्ठंति ? जाव—केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्ठंति ? [उ०] गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्ठंति, जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्ठंति, एवं जाव—सत्री । असत्री ण उव्वट्ठंति । जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धीया उव्वट्ठंति, एवं जाव—सुयभ-क्षाणी । विमंगनाणी ण उव्वट्ठंति, चक्खुदंसणी ण उव्वट्ठंति । जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खु-दंसणी उव्वट्ठंति, एवं जाव—लोभकसायी । सोईद्विओवउत्ता ण उव्वट्ठंति, एवं जाव—फांसिदियोवउत्ता न उव्वट्ठंति । जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोईद्वियोवउत्ता उव्वट्ठंति । मणजोगी न उव्वट्ठंति, एवं वइजोगी वि । जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्ठंति, एवं सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ।

६. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवइया नेरइया, पन्नत्ता केवइया काउलेस्सा, जाव—केवतिया अणागारोवउत्ता पन्नत्ता ? केवतिया अणंतरोववन्नगा पन्नत्ता ? केवइया परंपरोववन्नगा पन्नत्ता २ ? केवइया अणंतरोवगगा पन्नत्ता ३ ? केवइया परंपरोवगगा पन्नत्ता ४ ? केवइया अणंतराहारा पन्नत्ता ५ ? केवतिया परंपराहारा पन्नत्ता ६ ? केवतिया अणंतरपज्जत्ता पन्नत्ता ७ ? केवतिया परंपरपज्जत्ता पन्नत्ता ८ ? केवतिया चरिमा पन्नत्ता ९ ? केवतिया अचरिमा पन्नत्ता १० ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरतिया पन्नत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पन्नत्ता, एवं जाव—संखेज्जा सत्री पन्नत्ता ।

के त्रण अने उक्कएथी संख्याता \*नोईद्वियना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय छे. मनयोगी अने वचनयोगी उत्पन्न थता नथी. जघन्यथी एक, वे अने त्रण तथा उक्कएथी संख्याता काययोगवाळा उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे साकारोपयोगवाळा अने ए रीते अनाकारोपयोगवाळा पण उत्पन्न थाय छे.

५. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्यातायोजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे एक समयमां केटला नारक जीवो उद्वर्तते—मरण पामे, केटला कापोतलेस्यावाळा उद्वर्तते, यावत्—केटला अनाकारोपयोगवाळा उद्वर्तते ? [उ०] हे गौतम ! ए रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासोमां एक समये जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उक्कएथी संख्याता नारको उद्वर्तते, जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उक्कएथी संख्याता कापोतलेस्यावाळा उद्वर्तते, ए प्रमाणे यावत्—संज्ञी जीवो सुधी उद्वर्तना जाणवी. असंज्ञी जीवो उद्वर्तता नथी. भवसिद्धिक जीवो जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उक्कएथी संख्याता उद्वर्तते छे. ए प्रमाणे—यावत् श्रुतअज्ञानी सुधी जाणवुं. विमंगलानी अने चक्षुदर्शनी उद्वर्तता नथी. जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उक्कएथी संख्याता अचक्षुदर्शनी उद्वर्तते छे. ए प्रमाणे यावत् लोभकपायी जीवो सुधी जाणवुं. श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा उद्वर्तता नथी. ए प्रमाणे यावत्—स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा पण उद्वर्तता नथी. जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उक्कएथी संख्याता नोईद्वियना उपयोगवाळा उद्वर्तते छे. मनयोगी उद्वर्तता नथी. ए प्रमाणे वचनयोगी पण उद्वर्तता नथी. काययोगी जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उक्कएथी संख्याता उद्वर्तते छे. ए प्रमाणे साकारोपयोगवाळा अने अनाकारोपयोगवाळा पण जाणवा. [ए प्रमाणे नारक जीवोने विषे उद्वर्तनानुं परिमाण कहुं].

६. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमां संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे १ केटला नारक जीवो कहेला छे २ केटला कापोत लेस्यावाळा, यावत्—३९ केटला अनाकारोपयोगवाळा कहेला छे. १ केटला अनन्तरोपपन्न—प्रथम समये उत्पन्न थयेला होय छे, अने केटला परंपरोपपन्न—उत्पत्ति समयनी अपेक्षाए वे इत्यादि समयोने विषे उत्पन्न थयेला होय छे. केटला अनन्तरोवगगा—विवक्षित क्षेत्रने विषे प्रथम समयमां रहेला छे, केटला परंपरावगगा—विवक्षित क्षेत्रमां द्वितीयादि समयने विषे रहेला छे, केटला अनन्तराहार—प्रथम समये आहार करवावाळा छे, केटला परंपराहार—द्वितीयादि समये आहार करवावाळा छे, केटला अनन्तरपर्याप्ता—प्रथम समये पर्याप्ता होय छे, अने केटला परंपरपर्याप्ता—द्वितीयादि समये पर्याप्ता होय छे, केटला चरम—जेने छेहो तेज नारकभव वाकी छे एवा होय छे, अथवा केटला नारक भवना चरम छेहे समये वर्तते छे, १० अने केटला अचरम—चरमथकी विपरीत होय छे ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्याता-योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे १ संख्याता नारक जीवो कहेला छे, २

एक समये नारका-दिनी उद्वर्तना.

रत्नप्रभामां नारक जीवोनी सत्ता.

४ \* नोईन्द्रिय—मन, यद्यपि अहि अपर्याप्तावस्थामा मन पर्याप्तो अभाव होवाथी द्रव्य मन होतु नथी, तो पण नैतन्यएप भावमन हंमेशा होय छे, माटे 'नोईन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय छे'—एम कहु छे—टीका.

५ † संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावामने विषे संख्याताज नारको समाइ शके.

‡ उद्वर्तना परभवना प्रथम समयने विषे होय, अने नारकी असंज्ञीने विषे न उपजे, माटे असंज्ञी उद्वर्तता नथी.—टीका.

असत्री सिय अत्थि, सिय नत्थि, जइ अत्थि जह्नेणं पक्खो वा दो वा तिन्नि धा, उद्धोसेणं संयेजा पन्नत्ता । संयेजा भवसिद्धीया पन्नत्ता, एवं जाव—संयेजा परिग्गहसन्नोवउत्ता पन्नत्ता, इन्धियेदग्गा नत्थि, पुरिसवेदग्गा नत्थि, संयेजा नपुंमगवेदग्गा पन्नत्ता, एवं फोहकसायी वि । मानकसाई जहा असत्री, एवं जाव—लोभकसायी । संयेजा नोर्द्धियोवउत्ता पन्नत्ता, एवं जाव—फासिद्धियोवउत्ता । नोर्द्धियोवउत्ता जहा असत्री । संयेजा मणजोगी पन्नत्ता, एवं जाव—अणारावोवउत्ता । अणंतरोववप्रगा सिय अत्थि, सिय नत्थि; जइ अत्थि जहा असत्री । संयेजा परंपरोववप्रगा पन्नत्ता । एवं जहा अणंतरोववप्रगा तथा अणंतरोववगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा, चरिमा । परंपरोववगाढगा, जाव—अचरिमा जहा परंपरोववप्रगा ।

७. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंयेज्जवित्थडेसु प्पासमणं केवत्तिया नेरइया उववज्जंति, जाव—केवत्तिया अणारावोवउत्ता उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंयेज्जवित्थडेसु नरएसु प्पासमणं जह्नेणं पक्खो वा दो वा तिन्नि धा, उद्धोसेणं असंयेजा नेरइया उववज्जंति । एवं जहेव संयेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तथा असंयेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा भाणित्था, नवरं असंयेजा भाणियथा, सेसं तं चेव, जाव—असंयेजा अचरिमा पन्नत्ता, नाणत्तं लेस्सासु, लेस्साओ जहा पढमसए, नवरं संयेज्जवित्थडेसु वि असंयेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संयेजा उच्चट्ठावेयथा, सेसं तं चेव ।

८. [प्र०] सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए केवत्तिया निरयावास—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पणत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संयेज्जवित्थडा, असंयेज्जवित्थडा ? [उ०] एवं जहा रयणप्पभाए तथा सक्करप्पभाए वि । नवरं असत्री तिसु वि गमएसु न भन्नति, सेसं तं चेव ।

सख्याता कापोतलेख्यावाळा कहेला छे, ए प्रमाणे यावत्—संख्याता संज्ञी जीवो कहेला छे. \*अनजी जीवो कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय छे तो जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता होय छे, संख्याता भवसिद्धिज जीवो कहेला छे, ए प्रमाणे यावत्—संख्याता परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा कहेला छे, स्त्रीवेदी नथी अने पुरुषवेदी पण नथी, नपुंमकवेदी संख्याता होय छे. ए प्रमाणे क्रोधकपायी पण संख्याता होय छे. मानकपायी असंज्ञीनी पेटे [कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी.] ए प्रमाणे यावत्—[मायाकपायी अने] लोभकपायी जाणवा. संख्याता श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा कहेला छे, ए प्रमाणे यावत्—स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा पण कहेला छे. नोर्द्धियना उपयोगवाळा असंज्ञीनी पेटे जाणवा, संख्याता मनोयोगी कहेला छे, अने ए प्रमाणे यावत् [संख्याता] ३९ अनाकारोपयोगी जाणवा. अनंतरोपपन्न—प्रथम समये उत्पन्न थयावाळा नारको कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय तो ते असंज्ञीनी पेटे जाणवा. सख्याता परंपरोपपन्न—द्वितीयादि समये उत्पन्न थयेला जाणवा. ए प्रमाणे जेम अनंतरोपपन्न कहेला तेम अनंतरावगाड अनंतराहारक, अनंतरपर्याप्तक अने चरम—जेने छेछोज नारक भव वाकी छे ते अयत्ता नारकभवने छेछे समये वर्तता—जाणवा. परंपरावगाट, यावत्—अचरम सुधी जेम परंपरोपपन्न कहेला तेम कहेवा. [ए प्रमाणे संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासोने वक्तव्यता कही.]

७. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना असंख्यात योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विपे एक समये केटला नारको उत्पन्न थाय, यावत्—केटला अनाकारोपयोगवाळा उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना असंख्यातयोजन विस्तारवाळा नरकावासोने विपे एक समये जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उत्कृष्टथी असंख्याता नारको उत्पन्न थाय छे, ए प्रमाणे जेम संख्याता विस्तारवाळा नरकाने विपे [उत्पाद, च्यवन अने सत्ता—] ए त्रण आलापक कहेला तेम असंख्यातयोजन विस्तारवाळा नरकावासोने विपे पण त्रण आलापक कहेवा, परन्तु अहिं 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो. वाकी वधुं पूर्व पेटे जाणवुं. यावत् 'असंख्याता अचरम नारको कहेला छे'—त्या सुधी कहेवुं. लेख्याने विपे विशेषता छे, अने ते लेख्याओ प्रथम शतकमा कहेला प्रमाणे जाणवी. परन्तु एटले विशेष छे के संख्यात योजन विस्तारवाळा अने असंख्यात योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विपे अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी असंख्याता ज च्ये छे,—एम कहेवुं, वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

८. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभा नरक पृथिवीने विपे केटला नरकावासो होय छे—ते संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पचीश लाख नरकावासो होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते नरकावासो शुं सख्यातायोजनविस्तारवाळा होय के असंख्यातयोजनविस्तारवाळा होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा संवन्धे कहेला तेम शर्कराप्रभा संवन्धे जाणवुं, परन्तु [उत्पाद, उद्धर्तना अने सत्ता—] ए त्रणे आलापकने विपे असंज्ञी न कहेवा [कारण के असंज्ञी प्रथम नरकपृथिवीने विपेज उपजे छे.] वाकी वधुं पूर्व पेटे जाणवुं.

६ \* असंज्ञीथकी मरण पामी जेओ नारकपणे उत्पन्न थया छे, तेओ अपर्याप्तवस्थामा भूतभावनी अपेक्षाए असंज्ञी कहेवाय छे, तेओ अल्प होय छे माटे 'असंज्ञी कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी' एम कहेला छे—टीका.

७ † भग० सं० १ श० १ उ० २ पृ० १०४. जुओ प्रश्ना० लेख्यापद १७ उ० २ प० ३४३-२.

‡ अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी तीर्थंकरादि ज होय, ते थोडा होय माटे ते संख्याताज नीसके.—टीका.

९. [प्र०] वालुयप्पभाए णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा पदमसए ।

१०. [प्र०] पंकप्पभाए णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दस निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उच्चट्ठंति, सेसं तं चेव ।

११. [प्र०] धूमप्पभाए णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिन्नि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए ।

१२. [प्र०] तमाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से षण्णत्ते । सेसं जहा पंकप्पभाए ।

१३. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कति अणुत्तरा महत्तिमहालया महानिरया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंच अणुत्तरा जाव-अपइइण्णे । [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ।

१४. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महत्तिमहालया० जाव-महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवतिया० ? [उ०] एवं जहा पंकप्पभाए, णवरं तिसु नाणेसु न उव्वज्जंति, न उच्चट्ठंति, पन्नत्ता एसु तहेव अत्थि, एवं असंखेज्जवित्थडेसु चि, नवरं असंखेजा भाणियवा ।

१५. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्म-दिट्ठी नेरतिया उव्वज्जंति, मिच्छदिट्ठी नेरतिया उव्वज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरतिया उव्वज्जंति ? [उ०] गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उव्वज्जंति, मिच्छदिट्ठी चि नेरइया उव्वज्जंति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उव्वज्जंति ।

९. [प्र०] वालुकाप्रभा संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंद्रलाख नरकावासो कहा है, बाकी वधुं शर्कराप्रभानी पेठे जाणवुं. पण लेख्याने विपे विशेषता छे, अने ते प्रथम शतकमां कहा प्रमाणे जाणवी.

वालुकाप्रभा  
नरकावासो.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! पंकप्रभा नरकने विपे केटला नरकावासो कहा छे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! दस लाख नरका-वासो कहा छे. ए प्रमाणे जेम शर्कराप्रभा संबन्धे कहुं, तेम अहिं पण जाणवुं. परन्तु अहिथी अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवता नथी, बाकी वधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

पंकप्रभा  
नरकावासो.

११. [प्र०] धूमप्रभा संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्रण लाख नरकावासो कहा छे, ए प्रमाणे जेम पंकप्रभा संबन्धे कहुं छे तेम अहिं जाणवुं.

धूमप्रभा  
नरकावासो.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! तमा नरकपृथिवीने विपे केटला नरकावासो कहा छे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पांच न्यून एक लाख नरकावासो कहा छे. बाकी वधुं पंकप्रभा पेठे जाणवुं.

तम प्रभा  
नरकावासो.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसप्तम नरक पृथिवीने विपे अनुत्तर अने अत्यंत मोटा एवा केटला महानरकावासो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! अनुत्तर अने मोटा पाच नरकावासो कहा छे. यावत्-[ १ काल, २ महाकाल, ३ रोर, ४ महारोर, अने] ५ अप्रतिष्ठान. [प्र०] हे भगवन् ! ते नरकावासो शुं सख्यात योजनना विस्तारवाळा छे के असंख्यात योजनना विस्तारवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! वच्चेनो अप्रतिष्ठान नरकावास संख्यातयोजनना विस्तारवाळो छे अने वीजा असंख्यातयोजनना विस्तारवाळा छे.

सप्तम नरक  
नरकावासो.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसप्तम नरकपृथिवीना पांच अनुत्तर अने अत्यंत मोटा यावत्-महानरकावासोमांना संख्यात योजन विस्तारवाळा नरकावासने विपे एक समये केटला नारको उत्पन्न थाय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम पंकप्रभाने विपे कहुं तेम अहिं जाणवुं; परंतु एटलो विशेषे छे के अहिं त्रण ज्ञानसहित उत्पन्न थता नथी, [केमके सम्यक्त्वभ्रष्ट ज अहिं उपजे छे.] तेम च्यवता पण नथी. तो पण पाच नरकावासोमा ए प्रमाणे-प्रथमादि नरकपृथिवीनी जेम त्रण ज्ञानवाळा होय छे. ए प्रमाणे असंख्यातयोजनविस्तारवाळा नरकावासोने विपे पण जाणवुं, परन्तु त्या 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्याता योजनविस्तारवाळा नरकावासोने विपे शुं सम्य-दृष्टि नारको उत्पन्न थाय, मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय के सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि पण नारको उपजे, मिथ्यादृष्टि पण नारको उपजे, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थता नथी.

रत्नप्रभा  
सख्यातायोजन  
विस्तारवाळा  
नरकावासोमा  
सम्यग्दृष्टि वगेरेनो  
उत्पाद.

९ \* प्रथमनी वे नरक पृथिवीमा कापोतलेइया होय छे, त्रीजी नरकपृथिवीमा मिश्र-कापोत अने नील वच्चे लेइया छे. चतुर्थ पृथिवीमा नीललेइया छे, पाचमी पृथिवीमा मिश्र-कृष्ण अने नील वच्चे लेइया छे, छठी पृथिवीमा कृष्णलेइया छे अने सातमी नरकपृथिवीमा परमकृष्णलेइया छे.

† भग० खं० १ श० १ उ० २ पृ० १०४. लुओ प्रज्ञा० लेइया पद १७ उ० २ प० ३४३-२.

१० † अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी प्राय तीर्थकर ज होय अने चोथी आदि नरकपृथिवीधी नीकलेला तीर्थकर न थाय माटे 'अहिंथी अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवता नथी' एम कहुं छे-टीका.

१६. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाप पुढवीप तीसाप निरयावाससयसदस्सेसु संयेज्जवित्यडेसु नरप्पसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्ठंति ? [उ०] एवं चेव ।

१७. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाप पुढवीप तीसाप निरयावाससयसदस्सेसु संयेज्जवित्यडा नरणा किं सम्मदिट्ठीं नेरइयहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीं नेरइयहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीं नेरइयहिं अविरहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सम्मदिट्ठीं वि नेरइयहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीं वि नेरइयहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीं नेरइयहिं अविरहिया विरहिया वा । एवं असंयेज्जवित्यडेसु वि तिन्नि गमगा भाणियथा । एवं सक्करप्पभाप वि, एवं जाव—तमाप वि ।

१८. [प्र०] अहेसत्तमाप णं भंते ! पुढवीप पंचसु अणुत्तरेसु जाव—संयेज्जवित्यडे नरप किं सम्मदिट्ठी नेरइया—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सम्मदिट्ठी नेरइया न उव्वज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उव्वज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उव्वज्जंति, एवं उव्वट्ठंति वि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाप । एवं असंयेज्जवित्यडेसु वि तिन्नि गमगा ।

१९. [प्र०] से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से, जाव—सुकलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइयसु उव्वज्जंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! कण्हलेस्से जाव—उव्वज्जंति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुघ्घ—कण्हलेस्से जाव—उव्वज्जंति ? [उ०] गोयमा ! लेस्सट्टाणेसु संकिलिस्समाणेसु २ कण्हलेस्सं परिणमइ, कण्ह० २—णमित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइयसु उव्वज्जंति, से तेणट्टेणं जाव—उव्वज्जंति ।

२०. [प्र०] से नूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव—सुकलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइयसु उव्वज्जंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! जाव—उव्वज्जंति । [प्र०] से केणट्टेणं जाव—उव्वज्जंति ? [उ०] गोयमा ! लेस्सट्टाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विमुज्जमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमति, नील० २—णमित्ता नीललेस्सेसु नेरइयसु उव्वज्जंति, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव—उव्वज्जंति ।

२१. [प्र०] से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नील० जाव—भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइयसु उव्वज्जंति ? [उ०] एवं जहा नीललेस्साप तहा काउलेस्साप वि भाणियथा, जाव—से तेणट्टेणं जाव—उव्वज्जंति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' ति ।

त्रयोदश शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्तप्रभापृष्ठीना त्रीश लाख नरकावासोमांसा संख्यातायोजनविस्तारवाच्या नरकावासोने विपे शुं सम्यग्दृष्टि नारको ध्ये ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वं प्रमाणे जाणवुं.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! रत्तप्रभापृष्ठीना त्रीश लाख नरकावासोमांसा संख्याता योजनविस्तारवाच्या नरकावासो शुं सम्यग्दृष्टि नारको वडे अविरहित—सहित छे, मिथ्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे के सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे ? [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि नारको वडे अविरहित छे, अने मिथ्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको वडे कदाचित् अविरहित होय छे अने कदाचित् विरहित होय छे. ए प्रमाणे असंख्याता योजनविस्तारवाच्या नरकोने विपे पण [उत्पाद, उद्वर्तना अने सत्ता संबन्धे] त्रण आलापक कहेवा. ए प्रमाणे शर्कराप्रभाने विपे अने यावत्—तमापृष्ठीना सुची कहेवुं.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! अथ.सप्तमपृष्ठीना पांच अनुत्तर नरकावासोमांसा यावत्—संख्याता योजनविस्तारवाच्या नरकावासोने विपे शुं सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न थाय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न यता नथी, पण मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय छे. सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न यता नथी. [सम्यग्मिथ्यादृष्टि काल न करे माटे न उपजे.] ए प्रमाणे उद्वर्तना पण कहेवी. जेन रत्तप्रभाने विपे सत्ता संबन्धे नारको मिथ्यादृष्ट्यादिवडे अविरहित—सहित कदा छे तेम अहि कहेवुं, ए प्रमाणे असंख्याता योजनविस्तारवाच्या नरकावासोने विपे पण त्रण आलापको कहेवा.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर कृष्णलेस्यावाळो, नीललेस्यावाळो, यावत्—शुक्रलेस्यावाळो यईने कृष्णलेस्यावाळ्य नारकोने विपे उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! कृष्णलेस्यावाळो यईने यावत्—उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुयी आप एन कडो छो के 'कृष्णलेस्यावाळो यईने यावत्—उत्पन्न थाय ?' [उ०] हे गौतम ! लेस्याना स्थानको संकेशने पामता पामतां कृष्णलेस्यारूपे परिणमे छे, कृष्णलेस्यारूपे परिणाम थया वाद ते कृष्णलेस्यावाळ्य नारकोने विपे उत्पन्न थाय छे, ते कारणयी यावत्—'उत्पन्न थाय छे.'

२०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर कृष्णलेस्यावाळो, यावत्—शुक्रलेस्यावाळो यईने नीललेस्यावाळ्य नारकोने विपे उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! यावत्—उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुयी यावत्—उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! लेस्याना स्थानको संकेशने पामतां अने विशुद्धि पामतां, नीललेस्यारूपे परिणमे छे, नीललेस्यारूपे परिणाम थया वाद नीललेस्यावाळ्य नारकोमां ते उत्पन्न थाय छे, ते हेतुयी हे गौतम ! यावत् उत्पन्न थाय छे.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर कृष्णलेस्यावाळो, नीललेस्यावाळो, अने यावत्—[शुक्रलेस्यावाळो यईने] कापोतलेस्यावाळ्य नारकोने विपे उत्पन्न थाय ? [उ०] जेन नीललेस्या संबन्धे कहुं, तेम कापोतलेस्या संबन्धे पण यावत्—'ते हेतुयी यावत्—उत्पन्न थाय छे,' त्यां सुची कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

त्रयोदश शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

## वीओ उद्देशो.

१. [प्र०] कइविहा णं भंते ! देवा पणत्ता ! [उ०] गोयमा ! चउच्चिहा देवा पत्ता, तंजहा- भवणवासी, २ वाणसं-तरा, ३ जोइसिआ, ४ वेमाणिआ ।

२. [प्र०] भवणवासी णं भंते ! देवा कतिविहा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा पणत्ता, तंजहा- १ असुरकु-मारा-एवं भेओ जहा वितियसए देवुद्देसए, जाव-अपराजिया, सच्चइसिद्धगा ।

३. [प्र०] केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! चोसट्टि असुरकुमारावासस-यसहस्सा पणत्ता [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखे-ज्जवित्थडा वि ।

४. [प्र०] चोसट्टीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवतिया असुरकुमारा उववज्जंति, जाव-केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवतिया कण्हपद्विखया उववज्जंति ? एवं जहा खणपभाए त्तेव पुच्छा, तहेव वागरणं; नवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, नपुंसगवेयगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव । उच्चट्टंगा वि तहेव, नवरं असत्ती उच्चट्टंति । ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उच्चट्टंति, सेसं तं चेव, पत्ता एसु तहेव, नवरं संखेज्जगा इत्थि-

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटला प्रकारना देवो-कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारना देवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ भवनवासी, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिपिक अने ४ वैमानिक. देवोना प्रकार-

२. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासी देवो केटला प्रकारना कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे- १ असुरकुमार-इत्यादि भेदो बीजा शतकना \*देवोद्देशकमा क्ख्या प्रमाणे यावत् 'अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध' पर्यन्त कहेवा. भवनवासी देवोना प्रकार-

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना केटला लाख आवासो क्ख्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चोसठ लाख असुरकुमारना आवासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते असुरकुमारना आवासो सख्याता योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातायोजनविस्तारवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! सख्याता योजनविस्तारवाळा पण छे अने असंख्यातायोजनविस्तारवाळा पण छे. असुरकुमारना आवासो

४. [प्र०] हे भगवन् ! चोसठ लाख असुरकुमारना आवासोमाना संख्यातायोजनविस्तारवाळा असुरकुमारोना आवासोमा एक समये केटला असुरकुमारो उपजे, यावत्-केटला तेजोलेस्यावाळा उत्पन्न थाय, केटला कृष्णपाक्षिक जीवो उत्पन्न थाय ? ए प्रमाणे जेम रत्न-प्रभा संबंधे [उ० १ प्र० ४] प्रश्न कर्यो हतो, तेम अहिं प्रश्न करवो. अने ते प्रकारे उत्तर पण आपवो, परन्तु एटलो विशेष छे के अहीं वे वेदो सहित उपजे, नपुंसकवेदवाळा न उपजे, वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. उद्वर्तना संबंधे पण तेज प्रमाणे जाणवुं, परन्तु एटलो असुरकुमारना उत्पाद-  
उद्वर्तना-

२ \* भग० ख० १ श० २ उ० ७ पृ० २५५, जुओ जीवा० प्रति० १ प० ४८-१.

३ † असुरकुमारादिना जे भवनो सौधी न्हाना छे, ते जंबूद्वीपना समान छे, मध्यम सख्याता योजनविस्तारवाळा छे अने वानीना ( मोटां ) छे ते असख्ययोजनना विस्तारवाळा छे.



वेदगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेदगा वि, नपुंसगवेदगा नत्थि । कोट्टकसारं सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ अत्थि जहमेण एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संयेजा पण्णत्ता । एवं माण० माय० । संयेजा लोमकसारं पण्णत्ता, सेसं तं चैव । तिसु वि गमएसु संखेजेसु चत्तारि टेस्साओ भाणियघाओ, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं तिसु वि गमएसु असंयेजा भाणियघा, जाव—असंखेजा अचरिमा पण्णत्ता ।

५. [प्र०] केवत्तिया णं भंते ! नागकुमारावास० ? [उ०] एवं जाव—थणियकुमारा, नवरं जन्व जत्तिया भवणा ।

६. [प्र०] केवत्तिया णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंयेजा वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंयेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा, नो असंयेज्जवित्थडा ।

७. [प्र०] संखेजेसु णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवत्तिया वाणमंतरा उचवजंति ? [उ०] एवं जहा असुरकुमारारणं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तद्देव भाणियघा वाणमंतराण वि तिन्नि गमगा ।

८. [प्र०] केवत्तिया णं भंते ! जोतिसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंयेजा जोदसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संयेज्जवित्थडा० ? [उ०] एवं जहा वाणमंतराणं तद्दा जोदसियाण वि तिन्नि गमगा भाणियघा, नवरं एगा तेउलेस्सा । उचवजंतेसु पन्नत्तेसु य असत्री नत्थि, सेसं तं चैव ।

विशेष छे के अंसी उद्धर्तं छे—च्ये छे, [कारण के ईगानदेवदेवसुधाना देवो पृथिवीकायादि अस्तीमा उपजे छे.] अथधियान्तां अने अवधिदर्शनी त्यांथी उद्धर्तता—नीकळतां नथी, [कारण के असुरकुमारारिथी नीकळेला तीर्थंकरादि न थाय अने अविज्ञान अने अविधि दर्शनसहित तीर्थंकरादि ज उद्धर्तं.] वाकीसुं वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. सत्ताने आश्रथी पूर्व ज कहेलुं छे ते प्रमाणे सप कहेवुं. परन्तु एटले विशेष छे के त्या संख्याता खीवेदवाळा कहेला छे. ए प्रमाणे पुरपवेदवाळा पण कहेला छे, नपुंसगवेदवाळा नथी. \*क्रोधकपायवाळ कदा चित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय छे तो जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उक्कळथी संख्याता होय छे, ए प्रमाणे मां अने माया संबधे पण जाणवुं. लोमकपायवाळ संख्याता कहेला छे. [कारण के देवगतिमां लोमकपायी वणा होय छे, तेथी हनेसां ते संख्याता ज होय.] वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. संख्यातासवन्वे उत्पाद, उद्धर्तना अने सत्ताना त्रण आलापकोने विषे चार ल्हेयाओ कहेवी. ए प्रमाणे असंख्याता योजनविस्तारवाळा असुरकुमारावासो संबधे पण जाणवुं, परन्तु त्रणे आलापकोने विषे 'असंख्याता' पाठ कहेवो यावत्—'असंख्याता अचरम कखा' छे.

५. [प्र०] हे भगवन् ! केटला लाख नागकुमारना आवासो कहेला छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणना. यावत्—स्मिन्नुमार सुधी [उत्पाद, उद्धर्तना अने सत्ता संबधे त्रण आलापक] कहेवा, परन्तु एटलो विशेष छे के ज्यां केटला लाख भवनो होय त्या तितेला लाख भवनो कहेवा.

६. [प्र०] हे भगवन् ! वानव्यंतरदेवोना केटला लाख आवासो कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! वानव्यंतरदेवोना असंख्याता लाख आवासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते आवासो शुं संख्यातयोजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातयोजनविस्तारवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! संख्यात योजनविस्तारवाळा छे, पण असंख्यात योजनविस्तारवाळा नथी.

७. [प्र०] हे भगवन् ! संख्यातालाख योजनविस्तारवाळा वानव्यंतरदेवोना आवासने विषे एक समये केटला वानव्यंतरदेवो उपजे ? [उ०] जेम असुरकुमारोना संख्याता योजनविस्तारवाळा आवासने विषे त्रण आलापको कखा छे ते प्रमाणे वानव्यंतर संबधे पण त्रण आलापको कहेवा.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिषिक देवोना केटला लाख विमानावासो कखा छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्योतिषिक देवोना असंख्याता लाख विमानावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते विमानावासो शुं संख्यात योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यात योजनविस्तारवाळा छे ? [उ०] ए प्रमाणे जेम वानव्यंतर देवो संबधे कखुं छे, ते प्रमाणे ज्योतिषिकोने पण त्रण आलापको कहेवा, परन्तु एटलो विशेष छे के अहि एक मात्र तेजोलेख्या कहेवी. उत्पादने विषे अने सत्ताने विषे असजी जीवो उपजता तेम उद्धर्तता नथी, वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

४ \* देवोमां क्रोध, मान अने मायारूप कपायना उदयवाळा कोशक समये ज होय छे, माटे 'कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी'—एम कखुं छे, अने लोमकपायना उदयवाळा सर्वदा होय छे, माटे 'संख्याता लोमकपायी होय छे'—एम कखुं छे.

५ † असुरकुमारने कोसठ लाख, नागकुमारने चौराशी लाख, सुवर्णकुमारने बहोतेर लाख, वायुकुमारने छत्तुं लाख, द्वीपकुमार, दिक्कुमार, उदधिउमार, विद्युत्कुमार, स्मिन्नुमार अने अग्निउमारना प्रत्येक युगछेने छोतेर लाख भवनो होय छे.—टीका.

९. [प्र०] सोहम्मे णं भंते! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! वत्तीसं विमाणावास-सयसहस्सा पण्णत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि असं-खेज्जवित्थडा वि ।

१०. [प्र०] सोहम्मे णं भंते ! कप्पे वत्तीसाप विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु प्पगसमपणं केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जंति, केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति? [उ०] एवं जहा जोइसियाणं तिन्नि गमगा तहेव तिन्नि गमगा भाणि-यद्वा, नवरं तिसु वि 'संखेज्जा' भाणियद्वा, ओहिनाणी ओहिदंसणी य चयावेयद्वा, सेसं तं चेव । असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिन्नि गमगा, णवरं तिसु वि गमपसु 'असंखेज्जा' भाणियद्वा । ओहिनाणी य ओहिदंसणी य संखेज्जा चर्यंति, सेसं तं चेव । एवं जहा सोहम्मे वत्तयया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियद्वा । सणकुमारं एवं चेव, नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जंति, पन्नत्तेसु य न भण्णंति, असन्नी तिसु वि गमपसु न भण्णंति, सेसं तं चेव, एवं जाव-सहस्सारे, नाणत्तं विमाणेसु लेस्सासु थ, सेसं तं चेव ।

११. [प्र०] भाणय-पाणपसु णं भंते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि विमा-णावाससया पण्णत्ता । [प्र०] तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्ज-वित्थडा वि । एवं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा जहा सहस्सारे, असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य चर्यंतेसु य एवं चेव 'संखेज्जा' भाणियद्वा, पन्नत्तेसु असंखेज्जा, नवरं नोइंदियोवत्ता अणंतरोववन्नगा अणंतरोगाढगा अणंतराहारगा अणंतरपज्जत्तगा य प्पसिं जह्हेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा, पन्नत्तेसु असंखेज्जा भाणियद्वा । आरण-च्चुपसु एवं चेव जहा भाणय-पाणपसु, नाणत्तं विमाणेसु, एवं गेवेज्जगा वि ।

९. [प्र०] हे भगवन्! सौधर्म देवलोकने विपे केटला लाख विमानावासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम! वत्रीश लाख विमानावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन्! ते विमानावासो शुं संख्याता योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातयोजनविस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम! संख्याता योजनविस्तारवाळा छे अने असंख्यात योजनविस्तारवाळा पण छे.

सौधर्मदेवलोक-  
मां विमानावास-

१०. [प्र०] हे भगवन्! सौधर्म देवलोकने विपे वत्रीश लाख विमानावासोमांसा संख्यातायोजन विस्तारवाळा विमानोने विपे एक समये केटला सौधर्म देवो उत्पन्न थाय, केटला तेजोलेख्यावाळा उत्पन्न थाय? [उ०] जेम ज्योतिपिकोने त्रण आलापको कहां तेम अहि पण त्रण आलापको कहेवा, परन्तु त्रणे आलापकोमां 'संख्याता' एवो पाठ कहेवो. [अहिंथी नीकळी तीर्थकरादि थाय माटे] 'अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवे'—एम कहेवुं, वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. असंख्यातायोजनविस्तारवाळा विमानावासोमां ए प्रमाणे त्रण आलापको कहेवा, परन्तु एटलो विशेष छे के ए त्रणे आलापकोमां 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो. अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी संख्याता च्यवे छे. [केमके तीर्थकरादिक अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन सहित च्यवे अने ते संख्याता होय.] वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम सौधर्म देवलोकनी वक्तव्यता कही, तेम ईशान देवलोकने विपे [त्रण संख्याताना अने त्रण असंख्याताना] ए प्रमाणे छ आलापको कहेवा. सन-ल्लुमारने विपे पण एमज जाणवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के अहि छीवेदवाळा उत्पन्न थता नथी, तेम सत्तामां पण होता नथी. त्रणे आला-पकोने विपे असंज्ञी न कहेवा. [कारण के अहि संज्ञीथी आवी उपजे छे अने संज्ञीने विपे जाय छे.] वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्त-सहस्सार देवलोक सुधी जाणवुं, परन्तु विमानो अने लेख्याओमां विशेष छे. वाकी वधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं.

एक समये सौध-  
र्मनी मांदिने  
सहस्सारसुधी दे-  
वोनी वत्ताद-

११. [प्र०] हे भगवन्! आनत अने प्राणत देवलोकने विपे केटला शत (संकडो) विमानावासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम ! चारसो विमानावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन्! ते विमानावासो शुं संख्याता योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातायोजनविस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम ! संख्याता योजन विस्तारवाळा पण छे अने असंख्यातयोजनविस्तारवाळा पण छे. ए प्रमाणे संख्यातायोजनविस्तारवाळा विमानावासोने विपे त्रण आलापको सहस्सार देवलोकनी पेटे कहेवा. \*असंख्यात योजनविस्तारवाळा विमानोने विपे उत्पाद अने च्यवन सं-  
-बन्धे ए प्रमाणे 'संख्याता' ज कहेवा; सत्तामा असंख्याता कहेवा; परन्तु एटलो विशेष छे के नोइंदिय-मनना उपयोगवाळा, अनन्तरोपपन्नक, अनन्तरावगाढ, अनन्तराहारक अने अनन्तरपर्याप्ता—ए पाच पदने विपे जघन्ययकी एक, वे के त्रण अने उल्लूटथी संख्याता उपजे, अने सत्तामां असंख्याता होय—एम कहेवुं. जेम आनत अने प्राणतने विपे कहुं, तेम आरण अने अच्युतने विपे पण ए प्रमाणे जाणवुं, परंतु विमानोनी संख्यामां विशेषता छे. ए प्रमाणे त्रैवेयक संबधे पण जाणवुं.

आनत अने प्रा-  
णत देवलोकमां  
विमानावास-

११ \* आनतादि देवलोकमा संख्यातायोजनविस्तारवाळा विमानावासोमा उत्पाद, च्यवन अने स्थिति विपे संख्याता देवो होय छे, अने असंख्यात योजनविस्तारवाळा विमानोमां उत्पाद अने च्यवनने विपे संख्याता होय छे, अने स्थिति विपे असंख्याता देवो होय छे, कारण के गर्भज मनुष्य यकी ज आनतादि देवोमां उत्पन्न थाय छे, तथा ते देवो त्याधी च्यवीने गर्भज मनुष्यमा ज उत्पन्न थाय छे, अने ते संख्याताज होय छे, माटे एक समये संख्यातानो ज उत्पाद अने च्यवन सभवे छे, अने तेवोशुं भायुप असंख्यवर्षतुं होवाधी तेमा जीवनकालमा असंख्य देवो उपजे छे, तेथी स्थितिने विपे असंख्याता देवो होय छे.—टीका.

† अहिं आरण अने अच्युत देवलोकमा त्रणसो विमान छे.

त्रैवेयक-

१२. [प्र०] कति णं भंते! अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! पंच अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता। [प्र०] ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थेडा, असंखेज्जवित्थेडा? [उ०] गोयमा! संखेज्जवित्थेडे य असंखेज्जवित्थेडा य।

१३. [प्र०] पंचसु णं भंते! अणुत्तरविमाणेषु संखेज्जवित्थेडे विमाणे एगसमपणं केवतिया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति, केवतिया सुकलेस्सा उववज्जंति-पुच्छा तद्देव। [उ०] गोयमा! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेषु संखेज्जवित्थेडे अणुत्तरविमाणे एगसमपणं जहणेणं पक्को वा दोवा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेजा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेषु संखेज्जवित्थेडेसु, नवरं किण्हपप्पिखया, अमवसिद्धिया, तिसु अत्राणेषु एए न उववज्जंति, न चयंति, न पन्नत्तपसु भाणियद्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति, जाव-संखेजा चरिमा पन्नत्ता, सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थेडेसु वि एए न भञ्जंति, नवरं अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जपसु असंखेज्जवित्थेडेसु जाव-असंखेजा अचरिमा पन्नत्ता।

१४. [प्र०] चोसट्टीए णं भंते! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थेडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्महिट्ठी, असुरकुमारा उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी? [उ०] एवं जहा रयणप्पमाए तिन्नि आलावगा भणिया तद्वा भाणियद्वा। एवं असंखेज्जवित्थेडेसु वि तिन्नि गमगा, एवं जाव-गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेषु एवं च्चैवं, नवरं तिसु वि आलावपसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भञ्जंति, सेसं तं चेव।

१५. [प्र०] से नूणं भंते! कण्हलेस्से, नील० जाव-सुकलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति? [उ०] हंता गोयमा! एवं जद्देव नेरूपसु पद्देमे उद्देसए तद्देव भाणियद्दं, नीललेसाए वि जद्देव नेरदयाणं, जहा नीललेस्साए एवं जाव-पद्दलेस्सेसु, सुकलेस्सेसु एवं चेव, नवरं लेस्सट्टाणेषु विसुज्जमाणेषु २ सुकलेस्सं परिणमति, सु० २ परिणमित्ता सुकलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति। से तेणट्टेणं जाव-उववज्जंति। 'सेवं भंते! सेवं भंते'। चि।

### तेरसमसए वीजो उद्देशो समत्तो

१२. [प्र०] हे भगवन्! केट्ठां अनुत्तर विमानो कद्दा छे? [उ०] हे गौतम! पांच अनुत्तर विमानो कहेछा छे. [प्र०] हे भगवन्! ते अनुत्तर विमानो संख्याता योजनविस्तारवाळा छे के असंख्याता योजनविस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम! "संख्याता योजनविस्तारवाळुं पण छे, तेमज असंख्याता योजनविस्तारवाळां पण छे.

१३. [प्र०] हे भगवन्! पाच अनुत्तर विमानोमाना संख्याता योजन विस्तारवाळा विमानने विपे एक समये केट्ठा अनुत्तरौपपातिक देवो उत्पन्न थाय, केट्ठा शुक्कलेस्यावाळा उत्पन्न थाय-इत्यादि प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम! पाच अनुत्तरविमानोमा संख्याता योजन विस्तारवाळा सर्वार्थसिद्ध अनुत्तर विमानने विपे जवन्थी एक, वे के त्रण, अने उक्कट्ठी संख्याता अनुत्तरौपपातिक देवो उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे जेम संख्याता विस्तारवाळा प्रवेयक विमानो संवन्धे कहुं ते प्रमाणे अहि कहेहुं, परन्तु एट्ठो विशेष के कृष्णपाक्षिको, अमक्खी अने त्रण अत्रानने विपे वर्तता जीवो अहिं उपजता नथी, च्यवता नथी अने सत्तामां पण होता नथी-एम कहेहुं. अचरमनो (जेने छेछो अनुत्तर देवनो भव नथी, पण वधारे भवो छे तेनो) पण प्रतिपेव करवो, [केमके अनुत्तरसर्वार्थसिद्धने विपे जे चरम होय तेज उपजे.] यावत्-सा 'संख्याता चरम' (जेने छेछो अनुत्तर देवनो भव छे तेओ) कहेछा छे. वाकी वधुं पूर्व पेटे जाणवुं. असंख्याता योजन विस्तारवाळा अनुत्तर विमानोने विपे पण पूर्वोक्त (कृष्णपाक्षिकादिक) न कहेवां, पण सा अचरम (जेने ते छेछो भव नथी एवा) उपजे छे. वाकी जेम प्रवेयकने विपे कहुं तेम असंख्याता योजन विस्तारवाळा अनुत्तर विमानोने विपे यावत्-'असंख्याता अचरम कद्दा छे' ला सुधी जाणवुं.

१४. [प्र०] हे भगवन्! चोसट्ठाख असुरकुमारना आवासोमाना संख्यातायोजन विस्तारवाळा असुरकुमारना आवासोने विपे शुं सम्यग्दृष्टि असुरकुमारो उत्पन्न थाय, मिथ्यादृष्टि असुरकुमारो उत्पन्न थाय, (के मिश्रदृष्टि उत्पन्न थाय)? [उ०] ए प्रमाणे जेम रत्तप्रमा सवन्धे त्रण आलापको कद्दा (उ० १ सू० १३.) तेम अहिं पण कहेवा. ए प्रमाणे असंख्याता योजन विस्तारवाळा असुरकुमारोना आवासोने विपे पण सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने मिश्रदृष्टि संवन्धे ए त्रण आलापको कहेवा. ए प्रमाणे यावत्-प्रवेयक विमानने विपे अने अनुत्तर विमानने विपे पण जाणवुं, परन्तु एट्ठो विशेष छे के अनुत्तरविमानसवन्धे उत्पाद, च्यवन अने सत्ताना त्रण आलापकने विपे मिथ्यादृष्टि अने मिश्रदृष्टि न कहेवा. वाकी वधुं पूर्व पेटे जाणवुं.

१५. [प्र०] हे भगवन्! खरेखर कृष्णलेस्यावाळा, नीललेस्यावाळा, यावत्-शुक्कलेस्यावाळा थईने कृष्णलेस्यावाळा देवोमा उत्पन्न थाय? [उ०] हा, गौतम! जेम नारको सवन्धे प्रथम उद्देशकमां (सू० १९.) कहुं छे ते प्रमाणे जाणवुं. नीललेस्यावाळाने पण जेम नारकोने कहुं छे तेम कहेहुं. जेम नीललेस्यावाळाने विपे कहुं छे तेम यावत्-पद्दलेस्यावाळा अने शुक्कलेस्यावाळा माटे पण जाणवुं. परन्तु एट्ठो विशेष छे के-लेस्याना स्थानको विशुद्ध यतां यता शुक्कलेस्यारूपे परिणमे छे, शुक्कलेस्यारूपे परिणमन यथा पछी शुक्कलेस्यावाळ देवोमा ते उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी हे गौतम! यावत् 'उत्पन्न थाय छे.' हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

### त्रयोदश शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

१३ \* देमा वधेहुं दर्शयसिद्ध विमान लक्ष योजन प्रमाण होनाथी सरख्याता योजन विस्तारवाळ छे, अने निजयादि चार विमानो असत्ययोजन-विस्तारवाळा छे

## तईओ उदेसो ।

१. [प्र०] नेरइया णं भंते! अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, एवं परियारणापदं निरवसेसं भाणियव्वं । 'सेवं भंते! सेवं भंते! ति ।

तेरसमसए तईओ उदेसो समत्तो.

## तृतीय उदेशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! नारको [उपजवाना क्षेत्रने प्राप्त धर्ता] अनन्तराहारी-तुरतज आहार करवावाळा होय? अने ल्यार पछी निर्व-  
र्तना-शरीरनी उत्पत्ति करे, [ल्यार पछी लोमाहारादिद्वारा पुद्गलो ग्रहण करे, ल्यार पछी इन्द्रियादिरूपे पुद्गलेनो परिणाम करे, ल्यार वाद  
परिचारणा-शब्दादि विषयोनी उपभोग-करे, अने ल्यार पछी अनेक प्रकारना रूपो विकुर्वे? [उ०] [हा, गौतम! ] इत्यादि प्रज्ञापना सूत्रनुं  
\*परिचारणा पद समग्र कहेवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

नारको अनन्तरा-  
हारी होय अने  
ल्यार वाद अनुक्रमे  
परिचारणा करे!

त्रयोदश शतके तृतीय उदेशक समाप्त.

## चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] कति णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-१ रयणप्पमा, जाव-७ अहेसत्तमा ।

२. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महत्तिमहालया जाव-अपइद्दुणे । ते णं णरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरएहिंतो १ महंततरा चेव, २ महाविच्छिन्नतरा चेव, ३ महावासतरा चेव, ४ महापइरिक्कतरा चेव; १ णो तहा महापवेसणतरा चेव, २ आइन्नतरा चेव, ३ आउलतरा चेव, ४ अणोमाणतरा चेव । तेसु णं नरएसु नेरतिया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो १ महाकम्मतरा चेव, २ महाकिरियतरा चेव, ३ महासवतरा चेव, ४ महावेयणतरा चेव; नो तहा १ अप्पकम्मतरा चेव, २ अप्पकिरियतरा चेव, ३ अप्पासवतरा चेव, ४ अप्पवेदणतरा चेव; १ अप्पहियतरा चेव, २ अप्पजुत्तियतरा चेव; १ नो तहा महहियतरा चेव, २ महजुइयतरा चेव । छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते, ते णं नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नेरएहिंतो नो तहा महत्तरा चेव, महाविच्छिन्नतरा चेव ४; महपवेसणतरा चेव आइन्नतरा चेव ४ । तेसु णं नरएसु णं नेरतिया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव अप्पकिरियतरा चेव ४; नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव ४ । महहियतरा चेव महाजुइयतरा चेव, नो तहा अप्प-

## चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटली नरक पृथिवीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! \*सात पृथिवीओ कही छे. ते आ प्रमाणे-१ रत्तप्रमा, यावत्-७ अधःसत्तम पृथिवी.

२. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसत्तम नरकपृथिवीमां पाच अनुत्तर अने अत्यन्त मोटा नरकावासो यावत्-‘अप्रतिष्ठान’ सुधी कहेला छे, ते नरकावासो छट्ठी तम प्रभापृथिवीना नरकावासोयी अत्यन्त मोटा, अतिविस्तारवाळा, घणा अवकाशवाळा, घणाजन रहित अने शून्य छे, परन्तु ते महाप्रवेशवाळा नथी, [अर्थात् छट्ठी नरक पृथिवीमां जेम घणा जीवोनों प्रवेश थाय छे, तेम सत्तम नरकपृथिवीमां घणा जीवोनों प्रवेश थतो नथी.] [घणा नारकोवडे] ते अत्यन्त संकीर्ण अने अत्यन्त व्याप्त नथी, अर्थात् ते नरकावासो घणा विशाल छे. ते नरकावासोमां रहेला नारको छट्ठी तमा पृथिवीना नारकोयी महाकर्मवाळा, महाक्रियावाळा, महाआश्रववाळा अने महावेदनावाळा छे, परन्तु तेओ [छट्ठी नरक पृथिवीनी अपेक्षाए] अल्पकर्मवाळा, अल्पक्रियावाळा, अल्पआश्रववाळा अने अल्पवेदनावाळा नथी. ते नारको अत्यन्त अल्पकृद्धि, वाळा अने अत्यन्त अल्पद्युतिवाळा छे; परन्तु ते महाकृद्धिवाळा अने महाद्युतिवाळा नथी. छट्ठी तमा नरकपृथिवीमां पांच न्यून एक लाख नरकावासो कहेला छे. ते नरकावासो सातमी नरकपृथिवीना नरकावासो करता तेवा अत्यन्त मोटा अने महाविस्तारवाळा नथी, परन्तु ते महाप्रवेशवाळा अने नारकोवडे अत्यन्त संकीर्ण छे. ते नरकावासोमां नारको सातमी नरकपृथिवीना नारको करता अल्पकर्मवाळा अने अल्पक्रियावाळा छे, परन्तु तेवा अत्यन्त महाकर्मवाळा अने महाक्रियावाळा नथी. तेओ सत्तमनरकपृथिवीना नारकोयी महाकृद्धिवाळा अने महाद्युतिवाळा छे. परन्तु तेयी अल्पकृद्धिवाळा अने अल्पद्युतिवाळा नथी, छट्ठी तमा नरकपृथिवीना नरकावासो पाचमी धूमप्रमाननरकपृथिवीना

\* आ उद्देशकमां १३ द्वारो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ नैरयिक, २ स्पर्श, ३ प्रणिधि, ४ निरयान्त, ५ लोकमध्य, ६ दिशा-निर्दिशाप्रवह, ७ अस्त्रिकायप्रवर्तन, ८ अस्त्रिकायप्रदेशस्पर्शना, ९ अवगाहना, १० जीवावगाट, ११ अस्त्रिकायनिपदन, १२ बहुसम अने १३ लोकसंस्थान.

द्वियतरा चैव अप्पञ्जइयतरा चैव । छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चैव ४, नो तद्दा महप्पवेसणतरा चैव ४ । तेसु णं नरएसु नेरतिया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चैव ४ नो तद्दा अप्पकम्मतरा चैव ४; अप्पद्वियतरा चैव २ नो तद्दा महद्वियतरा चैव २ । पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिसि निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता; एवं जद्दा छट्ठीए भणिया एवं सत्त चि पुढवीओ परोप्परं भणंति जाव-र्यणप्पमंति, जाव-नो तद्दा महद्वियतरा चैव, अप्पञ्जत्तियतरा चैव ।

३. [प्र०] र्यणप्पमापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुच्चभवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! अणिट्ठं, जाव-अमणामं, एवं जाव-अहेसत्तमपुढविनेरइया, एवं आउफासं, एवं जाव-वणस्सइफासं ।

४. [प्र०] इमा णं भंते ! र्यणप्पमापुढवी दोच्चं सक्करप्पमं पुढविं पणिहाय सघमहंतिया वाहल्लेणं, सघखुट्ठिया सघं-नेसुं ? [उ०] एवं जद्दा जीवामिगमे वितिए नेरइयउद्देसए ।

५. [प्र०] इमीसे णं भंते ! र्यणप्पभाए पुढवीए गिरयपरिसामंतेसु जे पुढविकाइया० ? [उ०] एवं जद्दा नेरइयउद्देसए जाव-अहेसत्तमाए ।

६. [प्र०] कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्जे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! इमीसे णं र्यणप्पभाए उवासंतरस्स असं-खेज्जतिभागं ओगाहेत्ता एत्थ णं लोगस्स आयाममज्जे पण्णत्ते ।

७. [प्र०] कहि णं भंते ! अहेल्लोगस्स आयाममज्जे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पमाए पुढवीए उवासं-तरस्स सातिरेणं अद्धं ओगाहित्ता एत्थ णं अहेल्लोगस्स आयाममज्जे पण्णत्ते ।

नरकावासोयी अत्यन्तमोटा छे-इत्यादि चार बोल कहेवा. परन्तु तेनी पेठे ते महाप्रवेगवाळा नथी, अर्थात् तेमां घणा जीवो प्रवेश करता नथी. ते नरकावासोमां नारकीओ पांचमी धूमप्रभा पृथिवीना नारको करतां महाकर्मवाळा छे ४, परन्तु तेवा अल्पकर्मवाळा नथी-४, ते अल्पकर्मवाळा छे, परन्तु ते प्रमाणे ते अत्यन्त महद्विक नथी. पाचमी धूमप्रभा नरकपृथिवीमां त्रण लाख नरकावासो कहेला छे-इत्यादि जेम छट्ठी तमापृथिवी संबंधे कलुं, तेम साते नरकपृथिवीओ संबंधे परस्पर यावत्-‘रत्नप्रभा’-सुधी कहेवुं, यावत्-तेथी [शर्कराप्रभाना नारको] महाकर्मवाळा नथी, पण अल्पद्युतिवाळा छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना नारको केवा प्रकारना पृथिवीना स्पर्शने अनुभवता विहरे छे ? [उ०] हे गौतम ! \*अनिष्ट, यावत्-मनने प्रतिकूल-[पृथिवीना स्पर्शने अनुभवता विहरे छे.] इत्यादि यावत्-अधःसत्तम पृथिवीना नारको संबंधे जाणवुं, ए रीते [अनिष्ट अने प्रतिकूल] पाणीना स्पर्शने, †यावत्-वनस्पतिना स्पर्शने (अनुभवता विहरे छे.)

२ रसशंभार.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवी वीजी शर्कराप्रभापृथिवीनी अपेक्षाए जाडाइमां सर्व करतां मोटी छे, अने चारे दिशाए लंबाइ पहोळाइमां सर्वथी न्हाणी छे ? [उ०] हा, गौतम ! इत्यादि-जेम ‡जीवामिगम सूत्रना वीजा नैरयिक उद्देशकमां कलुं छे तेम अहिं जाणवुं.

३ प्रणिधिप्रार.

५. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना नरकावासोनी आसपास जे पृथिवीकायिक जीवो छे, यावत्-वनस्पतिकायिक जीवो छे ते [महाकर्मवाळा अने महावेदनावाळा छे ? [उ०] हा, गौतम !] इत्यादि-जेम जीवामिगम सूत्रना †नैरयिक उद्देशकमां कलुं छे तेम यावत्-अधःसत्तमनरकपृथिवी सुधी जाणवुं.

४ निरयान्नदार.

६. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना आयाम-लंबाईनो मध्य भाग क्यां कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशना खंडनो असंख्यातमो भाग उल्लंघन कर्या पळी अहिं लोकना आयामनो मध्यभाग कहेलो छे.

५ लोकनप्यदार.

७. [प्र०] हे भगवन् ! क्यां अधोलोकना आयाम-लंबाईनो मध्य भाग कस्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! चोथी पंकप्रभा पृथिवीना आकाशना खंडनो कंडक अधिक अरधो भाग उल्लंघन कर्या पळी अहिं अधोलोकना आयामनो मध्य भाग कहेलो छे.

कपोत्थोऊनपर.

३ \* जुओ जीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२५-१.

† यावत् शब्दधी तेजस्कायिक अने वायुकायिक ग्रहण करवा, बादर तेजस्कायिक मात्र समवक्षेत्रने विषे ज होय छे, तेथी अहिं नरकपृथिवीने विषे तेनो रसभाव होतो नथी, परन्तु त्यां क्षमिसमान उष्ण अन्य वस्तुओ होय छे, तेथी ‘तेजस्कायिकना स्पर्शने अनुभवे छे’ एम कलुं छे-टीका.

‡ जीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२५-१.

§ रत्नप्रभा पृथिवी जाडाइमां एक लाख अने एंशीहजार योजनप्रमाण होवाधी सर्व करतां मोटी छे, अने शर्कराप्रभा एक लाख अने बर्योग हजार योजनप्रमाण होवाधी तेनाधी न्हाणी छे. तेमज रत्नप्रभा लंबाइ अने पहोळाइमां एक रज्जु (एज) प्रमाण छे तेथी न्हाणी छे, अने शर्कराप्रभा तेथी क्षयिक प्रमाण होवाधी मोटी छे-टीका.

५ † जीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२५-२.

८. [प्र०] कहि णं भंते ! उद्दलोगस्स आयाममज्जे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! उग्गि सणंहुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेहिं वंसलोए कप्पे सिट्ठविमाणे पत्थडे पत्थ णं उद्दलोगस्स आयाममज्जे पण्णत्ते ।

९. [प्र०] कहिं णं भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्जे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! जंजुदीवे दीवे मंदरस्स पच्चयस्स बद्ध-मज्जदेसभाए इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए उचरिमहेट्टिहेल्लु खुश्रागपररेसु पत्थ णं तिरियलोगस्स मज्जे अट्टपपसिए क्यए पण्णत्ते, जयो णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, तंजहा-१ पुरच्छिमा, २ पुरच्छिमदाहिणा-एवं जहा दसमसए जाव-नामघेजं ति ।

१०. [प्र०] इंदा णं भंते ! दिसा १ किमादीया, २ किपवहा, ३ कतिपदेसादीया, ४ कतिपदेसुत्तरा, ५ कतिपदेसिया, ६ किपज्जवसिया, ७ किंसंटिया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! इंदा णं दिसा १ क्यगादीया, २ क्यगप्पवहा, ३ दुपप्सादीया, ४ दुपप्सुत्तरा, ५ लोणं पडुच्च असंघेज्जपपसिया, अलोणं पडुच्च अणंतपपसिया, ६ लोणं पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोणं पडुच्च साइया अपज्जवसिया, ७ लोणं पडुच्च मुरज्जसंटिया, अलोणं पडुच्च सगडुद्धिसंटिया पन्नत्ता ।

११. [प्र०] अग्गेयी णं भंते ! दिसा १ किमादीया, २ किपवहा, ३ कतिपप्सादीया, ४ कतिपप्सविच्छिन्ना, ५ कतिपप्सिया, ६ किपज्जवसिया, ७ किंसंटिया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! अग्गेयी णं दिसा १ क्यगादीया, २ क्यगप्पवहा ३ एगपप्सादीया, ४ एगपप्सविच्छिन्ना, ५ अणुत्तरा लोणं पडुच्च असंघेज्जपपसीया, अलोणं पडुच्च अणंतपपसीया, ६ लोणं पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोणं पडुच्च साइया अपज्जवसिया, छिन्नमुत्तावलिसंटिया पण्णत्ता । जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी । एवं जहा इंदा तथा दिसाओ चत्तारि, जहा अग्गेई तथा चत्तारि वि विदिसाओ ।

१२. [प्र०] विमला णं भंते ! दिसा किमादीया०-पुच्चा जहा अग्गेयीए । [उ०] गोयमा ! विमला णं दिसा १ क्यगादीया, २ क्यगप्पवहा, ३ चउप्पप्सादीया, ४ दुपप्सविच्छिन्ना, अणुत्तरा लोणं पडुच्च सेसं जहा अग्गेयीए, नवरं क्यग संटिया पण्णत्ता, एवं तमा वि ।

८. [प्र०] हे भगवन् ! क्या ऊर्खलोकनी लंवाईनो मय्यभाग कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! समलुमार अने माहेन्द्र देवलोकन एपर अने ब्रह्मदेवलोकनी नीचे रिष्ट नामे त्रीजा प्रतरने विपे अहि ऊर्खलोकना आयामनो मय्य भाग कहेलो छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग् लोकना आयामनो मय्यभाग क्या कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! जंजूहीपमां मेरुपर्वतना त्रयोवर मय्य भागने विपे आ रत्नप्रभा पृथिवीना एपर अने नीचेना क्षुद्र (सर्व करता लघु) एवा वे प्रतरो छे, तेने विपे तिर्यग्लोकना मय्यभागरूपा आठ प्रदेशनो रुचक कहेलो छे, ज्यायी आ दश दिशाओ नीकळे छे, ते आ प्रमाणे-१ पूर्वदिशा, २ पूर्वदक्षिण, इत्यादि जेम दश शतकना प्रथम उद्देशकने विपे कहुं छे ते प्रमाणे यावत् 'दिशाना दश नाम छे'-त्या सुधी जाणवुं.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! १ ऐन्द्री (पूर्व) दिशानी आदिमां शुं छे ? २ ते क्यायी नीकळे छे ? ३ तेनी आदिमा केटला प्रदेश छे ? ४ केटला प्रदेशोनी उत्तरोत्तर वृद्धि थाय छे ? ५ ते केटला प्रदेशानी छे ? ६ तेनो अन्त क्यां छे ? अने ७ ते केवा आकारे कहेल छे ? [उ०] हे गौतम ! १ ऐन्द्री दिशानी आदिमां रुचक छे, २ ते रुचक थकी नीकळे छे, ३ तेनी आदिमां वे प्रदेशो छे, ४ वे प्रदेशानं उत्तरोत्तर वृद्धि थाय छे, ५ लोकने आश्रयी ते असख्यातप्रदेशवाली छे, अलोकने आश्रयी अनन्तप्रदेशात्मक छे, ६ लोकने आश्रयी आदि अने अन्तसहित छे, अने अलोकने आश्रयी सादि अने अनन्त छे, ७ लोकने आश्रयी मुरज-मृदंगने आकारे छे, अने अलोकने आश्रय गाढानी ऊचने आकारे कहेली छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! १ आग्नेयी दिशानी आदिमां शुं छे ? २ ते क्यायी नीकळे छे ? ३ तेनी आदिमा केटला प्रदेशो छे ? ४ ते केटला प्रदेशना विस्तारवाली छे ? ५ ते केटला प्रदेशानी छे ? ६ तेने अन्ते शुं छे ? ७ अने ते केवा आकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! १ आग्नेयी दिशानी आदिमा रुचक छे, २ ते रुचक थकी नीकळे छे, ३ तेनी आदिमा एक प्रदेश छे, ४ ते एक प्रदेशना विस्तारवाली छे, ५ ते उत्तरोत्तर वृद्धिरहित छे, अने लोकने आश्रयी असख्यातप्रदेशात्मक छे, अलोकने आश्रयी अनन्त प्रदेशात्मक छे, ६ लोकने आश्रय आदि अने अन्त सहित छे, अने अलोकने आश्रयी सादि अने अनन्त छे. अने ७ ते वृद्धी गएली मोतीनी माळ्यना आकारे कहेली छे याम्या (दक्षिण) दिशा ऐन्द्री (पूर्व) दिशानी पेठे जाणवी नैर्ऋती आग्नेयी दिशानी पेठे जाणवी-इत्यादि जेम ऐन्द्री दिशा कही, तेम चां दिशाओ अने आग्नेयी दिशा कही तेम चारे विदिशाओ जाणवी.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! विमला (ऊर्ख) दिशानी आदिमां शुं छे ? इत्यादि आग्नेयीनी पेठे प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ विमला दिशानी आदिमा रुचक छे, २ ते रुचक थकी नीकळे छे, ३ तेनी आदिमा चार प्रदेश छे, ४ ते वे प्रदेशना विस्तारवाली छे, ५ उत्तरोत्तर वृद्धि रहित ते दिशा लोकने आश्रयी असख्यातप्रदेशात्मक छे. वाकी वधुं आग्नेयी दिशाने विपे कहुं छे तेम जाणवुं. परन् एटलो विशेष छे के ते रुचकने आकारे कहेली छे. ए प्रमाणे तमा (अथो) दिशा पण जाणवी.

१३. [प्र०] किमियं भंते ! लोपत्ति पवुच्चइ ? [उ०] गोयमा ! पंचत्थिकाया, एत्तं पवतिए लोप त्ति पवुच्चइ, तंजहा—  
१ धम्मत्थिकाए, २ अहम्मत्थिकाए, जाव—५ पोग्गलत्थिकाए ।

१४. [प्र०] धम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमण—गमण—  
भासु—स्मेस—मणजोगा—वइजोगा—कायजोगा, जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सधे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति, गइलक्खणे  
णं धम्मत्थिकाए ।

१५. [प्र०] अहम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाण—निंसीयण—  
तुयट्ठण, मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सधे ते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति, ठाणलक्खणे णं  
अहम्मत्थिकाए ।

१६. [प्र०] आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! आगासत्थिकाएणं जीव-  
दघाण य अजीवदघाण य भायणभूए । “एणेण वि से पुत्ते दोहि वि पुत्ते सयं पि माएज्जा । कोडिसएण वि पुत्ते कोडिसहस्सं  
पि माएज्जा ॥” अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए ।

१७. [प्र०] जीवत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिवोहियनाण-  
पज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं—एवं जहा वितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव—उवओगं गच्छति, उवओगलक्खणे णं जीवे ।

१८. [प्र०] पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएणं जीवाणं ओरालिय—वेउच्चिय—आहारग—तेया-  
कम्मए सोहंदिअ—चर्खिअदिअ—घाणंदिअ—जिन्मिअदिअ—फांसिअदिअ—मणजोग—वयजोग—कायजोग—आणापाणूणं च गहणं पवत्तति,  
गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए ।

१३. [प्र०] हे भगवन् ! आ लोक केवो कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! आ लोक पंचास्तिकायरूप कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे—  
१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, यावत्—[ ३ आकाशास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय अने ] ५ पुद्गलास्तिकाय.

लोक

१४. [प्र०] धर्मास्तिकाय वडे जीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! धर्मास्तिकाय वडे जीवोनुं आगमन, गमन, भापा,  
उन्नेप (नेत्रनुं उघडनुं), मनोयोग, वचनयोग अने काययोग प्रवर्ते छे, ते शिवाय वीजा तेवा प्रकारना गमनशील भावो छे, ते सर्व धर्मा-  
स्तिकायथी प्रवर्ते छे, केमके गतिलक्षण धर्मास्तिकाय छे.

७ अस्तिकाय-  
प्रवर्तनद्वार-  
धर्मास्तिकायवडे  
जीवोनु प्रवर्तन.

१५. [प्र०] अधर्मास्तिकाय वडे जीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! अधर्मास्तिकाय वडे जीवोनुं उभा रहेवुं, वेसनुं,  
सुनुं अने मनने स्थिर करनुं—वगैरे प्रवर्ते छे, ते शिवाय वीजा स्थिर भावो छे ते सर्वे अधर्मास्तिकाय थकी प्रवर्ते छे, केमके स्थितिलक्षण  
अधर्मास्तिकाय छे.

अधर्मास्तिकायवडे  
प्रवर्तन.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! आकाशास्तिकायवडे जीवोनी अने अजीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! आकाशास्तिकाय  
जीव अने अजीव द्रव्यनो आश्रयरूप छे. अर्थात् तेथी जीव अने अजीवद्रव्यनो अवगाह प्रवर्ते छे. “एक—[परमाणु—]थी के वे—  
[परमाणु] थी पूर्ण एक आकाशप्रदेशनी अंदर सो परमाणुओ पण माय, अने सो क्रोड [परमाणुओ] वडे पूर्ण एक आकाशप्रदेशमां  
हजार क्रोड [परमाणुओ] पण “माय;” केमके अवगाहनालक्षण आकाशास्तिकाय छे.

आकाशास्तिकायवडे  
प्रवर्तन.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायवडे जीवोनुं शुं प्रवर्ते ? [उ०] हे गौतम ! जीवास्तिकायवडे जीव अनन्त आभिनिवोधिक-  
मुतिज्ञानना पर्यायो, अने अनन्त श्रुतज्ञानना पर्यायोना—इत्यादि जेम वीजा शतकना अस्तिकाय उद्देशकमां कहुं छे तेम अहिं कहेवुं,  
यावत्—ते [ज्ञान अने दर्शनना] उपयोगने प्राप्त थाय छे, केमके उपयोगलक्षण जीव छे.

जीवास्तिकायवडे  
प्रवर्तन.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकाय वडे शुं प्रवर्ते ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलास्तिकायवडे जीवोने औदारिक, वैक्रिय, आहा-  
रक, तैजस, कार्मण, श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग अने श्वासोच्छ्वासनुं प्रहण  
प्रवर्ते छे. केमके ग्रहणलक्षण पुद्गलास्तिकाय छे.

पुद्गलास्तिकायवडे  
प्रवर्तन.

१६ \* जेम एक ओरडानो आकाश एक दीवाना प्रकाशथी भराय, अने वीजो दीवो करीए तो तेनो प्रकाश पण त्याज समय, एम सो के सहस्र दीवानो  
प्रकाश पण त्यां ज समय, पण बहार न नीकळे तेम पुद्गलनो परिणाम विविध होवाथी एक, वे, सख्याता, असख्याता के अनन्त परमाणुथी पूर्ण एक  
आकाश प्रदेशमां एकथी माथीने अनन्त परमाणुओ सुथी त्यां समय.



૧૯. [પ્ર૦] एगे मंते ! धम्मत्थिकायपपसे केवतिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं । [प्र०] केवतिपहिं अहम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपप चउहिं, उक्कोसपप सचहिं । [प्र०] केवतिपहिं आगासत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] गोयमा ! सचहिं । [प्र०] केवतिपहिं जीवत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] गोयमा ! अणंतेहिं । [प्र०] केवतिपहिं पोग्गलत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] गोयमा ! अणंतेहिं । [प्र०] केवतिपहिं अद्दासमपहिं पुट्टे ? [उ०] सिय पुट्टे सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे नियमं अणंतेहिं ।


૨૦. [પ્ર૦] एगे मंते ! अहम्मत्थिकायपपसे केवतिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपप चउहिं, उक्कोसपप सचहिं । [प्र०] केवतिपहिं अहम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] जहन्नपप तिहिं, उक्कोसपप छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्त ।

૨૧. [પ્ર૦] एगे मंते ! आगासत्थिकायपपसे केवतिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] गोयमा ! सिय पुट्टे सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे जहन्नपदे एकेण वा दोहिं वा तीहिं वा चउहिं वा, उक्कोसपप सचहिं । एवं अहम्मत्थिकायपपसेहिं वि ।

૧૯. [પ્ર૦] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्यपदे त्रण प्रदेशोवडे, अने उक्कटपदे छ प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्यपदे चार, अने उक्कटपदे सात अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! आकाशास्तिकायना सात प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जीवास्तिकायना अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलास्तिकायना अनन्तप्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय. [प्र०] केटला अद्वा-काठ-ना समयोवडे स्पर्णयिलो होय ? [उ०] कदाचित् कालना समयोवडे स्पर्णयिलो होय अने कदाचित् स्पर्णयिलो न होय. जो स्पर्ण करायिलो होय तो अवश्य अनन्त-समयोवडे स्पर्ण करायिलो होय.

૨૦. [પ્ર૦] हे भगवन् ! अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्णयिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्यपदे चार, अने उक्कटपदे सात धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्ण करायिलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्ण करायिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्यपदे त्रण अने उक्कटपदे छ प्रदेशोवडे स्पर्ण करायिलो होय. वाकी वधुं धर्मास्तिकायना प्रदेशानी पेटे कहें.

૨૧. [પ્ર૦] हे भगवन् ! आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्ण करायिलो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाचित् [लोकने आश्रयी] स्पर्ण करायिलो होय अने कदाचित् [अलोकने आश्रयी] स्पर्ण करायिलो न होय. जो स्पर्ण करायिलो होय

૧૯ \* अहिं जवन्यपद लोचनना कोणने निपे होय छे, ते भूमिने नजीक औरलाना कोणनी पेटे जाणतुं [स्यापना]— त्या धर्मास्तिकायना एक प्रदेशने उपरना एक प्रदेश अने पासेना वे प्रदेशो-एम धर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशोनी स्पर्णना होय छे. अने उक्कटपदे चार दिशाना चार प्रदेशो अने ऊर्ध्व तथा अधोदिशाना एक एक प्रदेश मळीने छ प्रदेशोनी स्पर्णना होय छे. स्यापना— ○

† धर्मास्तिकायना एक प्रदेशने जवन्यपदे त्रेम धर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशोनी स्पर्णना कहा छे, तेवी रीते अधर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशोनी स्पर्णना तथा धर्मास्तिकायना एक प्रदेशने स्थाने रहेला अधर्मास्तिकायना एक प्रदेशोनी स्पर्णना-मळीने चार प्रदेशोनी स्पर्णना होय छे. अने उक्कटपदे छ दिशाना छ प्रदेशो अने धर्मास्तिकायना प्रदेशने स्थाने रहेला एक अधर्मास्तिकायना प्रदेशोनी एम सात प्रदेशोनी स्पर्णना होय छे. लोकान्ते पण अलोकाशादा होयाधी पूर्वोक्त सात आकाशास्तिकायना प्रदेशोनी स्पर्णना होय छे.

‡ एक धर्मास्तिकायना प्रदेशने निपे अने तेनी पासे अनन्तजीवना अनन्त प्रदेशो विद्यमान होयावी ते जीवना अनन्त प्रदेशो वडे न्यर्णयिल होय. ए प्रमाणे पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशोवडे पा स्पर्णयिलो होय.

§ अद्वासमय मात्र समयक्षेत्र-शर्दा हीणमा होय छे, तेनी चाहेर नथी, केमके ममजादिक काल सूर्यनी गतिद्वारा निप्यत्र थाय छे, तेवी कदाचित् धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश स्पर्णयिल होय अने कदाचित् न होय. जो स्पर्णयिल होय तो अनन्त अद्वासमयो वडे स्पर्णयिल होय, केमके ते अनादि होयावी तेने अनन्त समयनी स्पर्णना होय छे अथवा वर्तमानसमयनिश्चित धनन्त द्रव्यो ते अनन्त समय कहेवाय छे, माटे अनन्त समयोवडे स्पष्ट कहेवाय छे.

२० § अधर्मास्तिकायना एक प्रदेशोनी वाक्कीना द्रव्योना प्रदेशोनी माधे स्पर्णना धर्मास्तिकायप्रदेशोनी स्पर्णनाने अनुसारे जाणवी.

२१ || आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश लोकने आश्रयी धर्मास्तिकायना प्रदेश वटे स्पष्ट होय छे, अने अलोचने आश्रयी स्पष्ट होतो नथी जो स्पष्ट होय तो जवन्यपदे १ लोकान्तमा वर्तमान धर्मास्तिकायना एक प्रदेश वडे अलोकाशायना अग्रभागमा वर्ततो एक आकाशप्रदेश स्पष्ट होय, २ वज्रगत आकाशप्रदेश धर्मास्तिकायना वे प्रदेश वटे स्पष्ट होय, ३ जे अलोकाशायना प्रदेशोनी आगळ, नीचे अने उपर धर्मास्तिकायना प्रदेशो छे ते धर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशो वडे स्पष्ट होय ४ लोकान्तने निपे जुगामा रहेलो आकाशप्रदेश ते तदाश्रित प्रदेश, उपरना जे नीचेना अने वे दिशामा रहेला वे प्रदेश-ए रीते चार धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पष्ट होय. ५ जे आकाशको प्रदेश उपरना, नीचेना, वे दिशाना अने खांज रहेला धर्मास्तिकायना प्रदेशो स्पष्ट होय ते पांच प्रदेशो वडे स्पर्णय. ६ जे उपर, नीचे, त्रण दिशा अने खांज रहेला धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्णय ते छ प्रदेशो वडे स्पष्ट होय. ७ अने जे उपर, नीचे, चार दिशामा अने त्या रहेला प्रदेशो वडे स्पर्णय ते धर्मास्तिकायना सात प्रदेशो वडे स्पष्ट होय ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्णना जाणवी.

[प्र०] केवतिर्पहि आगासत्थिकायपप्सेहि पुट्टे ? [उ०] छहिं । [प्र०] केवतिर्पहि जीवत्थिकायपप्सेहि पुट्टे ? [उ०] सिय पुट्टे सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे नियमं अणतेहिं । एवं पोग्गलत्थिकायपप्सेहि वि, अद्दासमपहि वि ।

२२. [प्र०] एगे भंते ! जीवत्थिकायपप्से केवतिर्पहिं धम्मत्थिकाय—पुच्छा । [उ०] जहन्नपदे चउहिं, उक्कोसप सत्तहिं । एवं अहम्मत्थिकायपप्सेहि वि । [प्र०] केवतिर्पहिं आगासत्थिकाय—पुच्छा । [उ०] सत्तहिं । [प्र०] केवतिर्पहिं जीवत्थि० ? [उ०] सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

२३. [प्र०] एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपप्से केवतिर्पहिं धम्मत्थिकायपप्सेहिं० ? [उ०] एवं जहेव जीवत्थिकायस्स ।

२४. [प्र०] दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपप्से केवतिर्पहिं धम्मत्थिकायपप्सेहिं पुट्टा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपप छहिं, उक्कोसप वारसहिं । एवं अहम्मत्थिकायपप्सेहि वि । [प्र०] केवतिर्पहिं आगासत्थिकाय० ? [उ०] वारसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

२५. [प्र०] तिन्नि भंते ! पोग्गलत्थिकायपप्सा केवतिर्पहिं धम्मत्थिकायपप्सेहिं पुट्टा ? [उ०] जहन्नपप अट्टहिं, उक्कोसप सत्तरसहिं । एवं अहम्मत्थिकायपप्सेहि वि । [प्र०] केवतिर्पहिं आगासत्थि० ? [उ०] सत्तरसहिं, सेसं जहा धम्म-

तो जघन्यपदे एक, वे, त्रण के चार धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय, अने उत्कृष्टपदे सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोनी साथे पण स्पर्श जाणवो. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] हे गौतम ! छ प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] कदाचित् स्पर्श करायेलो होय अने कदाचित् स्पर्श न करायेलो पण होय. जो स्पर्श करायेलो होय तो अवश्य अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे अने अद्दा—कालना समयोवडे पण स्पर्शना जाणवी.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय—ए प्रश्न. [उ०] जघन्यपदे चार अने उत्कृष्टपदे सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] वाकी वधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं.

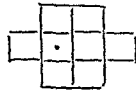
२३. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] जेम जीवास्तिकायना एक प्रदेश संवन्धे कहुं तेम अहि जाणवुं.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यपदे छ प्रदेशोवडे, अने उत्कृष्टपदे वार प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्शना जाणवी. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] वार प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. वाकी वधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] जघन्यपदे आठ, अने उत्कृष्टपदे सत्तर प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला

२४ \* अहिं चूर्णिकारुं आवा प्रकारनु व्याख्यान छ—“लोकान्ते द्विप्रदेशिक स्क्न्ध एक प्रदेशने अवगाहीने रहेलो छे, तो पण ते प्रदेशने ‘प्रतिद्रव्यनी अवगाहना होय छे’ ए नयमतनी विवक्षाथी अवगाह प्रदेश एक छता पण भिन्न मानवाथी ते वे प्रदेशो वडे स्पर्शयेलो छे, तथा जे तेनी उपरलो के नीचेनो प्रदेश छे ते पण नयना मतथी वे प्रदेशथी स्पर्शयेलो छे, अने पासेना वे अणुओ एक एक प्रदेशनो स्पर्श करे छे—आ प्रमाणे धर्मास्तिकायना छ प्रदेशो वडे द्व्यणुक स्क्न्धनो स्पर्श यय छे. नयना मतनो आश्रय न करीए तो द्व्यणुक स्क्न्धने चार प्रदेशनी जघन्य स्पर्शना होय छे ” वृत्तिकार आ प्रमाणे कहे छे—

“अहिं जे वे विंदुओ छे ते वे परमाणुओ जाणवा, तेमा आ तरफनो परमाणु आ तरफना धर्मास्तिकायना प्रदेश वडे स्पर्श करायेल होय, अने पेली तरफनो परमाणु पेली तरफना धर्मास्तिकायप्रदेश वडे स्पृष्ट होय—ए प्रमाणे वे प्रदेशो, दया जे वे प्रदेशोमा वे परमाणुओ स्थापित करेला छे तेनी आगळना वे प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय—ए प्रमाणे चार थया, अने वे अवगाह प्रदेशनी स्पर्शना होय—ए छ प्रदेशनी स्पर्शना होय. उत्कृष्ट वार प्रदेशनी स्पर्शना होय छे, ते आ प्रमाणे—  
दक्षिणनो एक एक मळीने वार प्रदेशनी



द्विप्रदेशावगाह होवाथी वे प्रदेश, वे उपरना अने वे नीचेना, पासेना वन्धे, अने उत्तर स्पर्शना होय छे.

२५ † पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशने एक प्रदेशावगाह छतां पूर्वोक्त नयना मतथी अवगाह त्रण प्रदेश, नीचेना के उपरना त्रण प्रदेश अने पासेना के प्रदेश—ए प्रमाणे धर्मास्तिकायना आठ प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. अहिं वया जघन्य पदे विवक्षित परमाणुथी वमणा करी अने वे अधिक करीए एटला प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. अने उत्कृष्टपदे विवक्षित परमाणुथी पाचगुणा करी वे अधिक करीए एटला प्रदेशनी स्पर्शना होय छे तेमां एक परमाणुने वमणा करीए अने वे सहित करीए एटले जघन्यपदे चार प्रदेशनी स्पर्शना होय, अने उत्कृष्टपदे एक परमाणुने पाच गुणा करीए अने वे सहित करीए एटले सात प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. ए प्रमाणे द्व्यणुक—अणुकादिने विषे जाणवुं—टीका.

जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.

पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश

पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशो.

पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.

त्यिकायस्त । एवं एषणं गमेणं भाणियघं जाव-दस, नवरं जहन्नपदे द्रोत्रि पन्निगवियघा, उक्कोसपप पंच । चत्तारि पोग्गल-  
त्यिकायस्त० जहन्नपप दसहिं, उक्कोसपप घावीसाप । पंच पुग्गल०, जहन्नपप चारसहिं, उक्कोसपप सत्तावीसाप । छ पोग्गल०  
जहन्नपप चोहसहिं, उक्कोसपप चत्तीसाप । सत्त पोग्गल० जहन्नपप सोलसहिं, उक्कोसपप मत्ततीसाप । अट्ट पोग्गल० जहन्नपप  
अट्टारसहिं, उक्कोसेणं वायालीसाप । नव पोग्गल० जहन्नपप वीसाप, उक्कोसपपदे सीयालीसाप । दस पोग्गल० जहन्नपप घावी-  
साप, उक्कोसपप घावघाण । आगासत्थिकायस्त सत्तय उक्कोसगं भाणियघं ।

२६. [प्र०] संखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवत्तिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टा ? [उ०] जहन्नपपदे तेणेव संखे-  
ज्जपणं दुग्गुणेणं दुरूवाहिपणं, उक्कोसपप तेणेव संखेज्जपणं पंचगुणेणं दुरूवाहिपणं । [प्र०] केवत्तिपहिं अधम्मत्थिकाय पपसेहिं ?  
[उ०] एवं चेव । [प्र०] केवत्तिपहिं आगासत्थिकाय० ? [उ०] तेणेव संखेज्जपणं पंचगुणेणं दुरूवाहिपणं । [प्र०] केवत्तिपहिं  
जीवत्थिकाय० ? [उ०] अणंतेहिं । [प्र०] केवत्तिपहिं पोग्गलत्थिकाय० ? [उ०] अणंतेहिं । [प्र०] केवत्तिपहिं अट्टासमपहिं ?  
[उ०] सिय पुट्टे, सिय नो पुट्टे, जाव-अणंतेहिं ।

२७. [प्र०] असंखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवत्तिपहिं धम्मत्थिकायपपदेसेहिं० ? [उ०] जहन्नपप तेणेव असंखे-  
ज्जपणं दुग्गुणेणं दुरूवाहिपणं, उक्कोसपपदे तेणेव असंखेज्जपणं पंचगुणेणं दुरूवाहिपणं, सेसं जहा संखेज्जाणं जाव-नियमं अणंतेहिं ।

२८. [प्र०] अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवत्तिपहिं धम्मत्थिकाय० ? [उ०] एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता  
वि निरवसेसं ।

आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] सत्तर प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. वाकी वधुं वर्मान्तिकायनां पेटे जाणवुं.  
ए प्रमाणे आ पाठ वडे यावत्-दश प्रदेशो सुधी कहेंवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के जघन्यपदे वेनो अने उत्कृष्टपदे पांचनो प्रक्षेप करवो.  
चार पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो जघन्यपदे दश अने उत्कृष्टपदे वात्रीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना पांच प्रदेशो जघ-  
न्यपदे वार अने उत्कृष्टपदे सत्तावीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना छ प्रदेशो जघन्यपदे चौद अने उत्कृष्टपदे वत्रीश  
प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना सात प्रदेशो जघन्यपदे सोल अने उत्कृष्टपदे साठत्रीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय.  
पुद्गलास्तिकायना आठ प्रदेशो जघन्यपदे अटार अने उत्कृष्टपदे वेतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय. पुद्गलास्तिकायना नव प्रदेशो जघन्यपदे  
वीश अने उत्कृष्टपदे सुटतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय. पुद्गलास्तिकायना दश प्रदेशो जघन्यपदे वावीश अने उत्कृष्टपदे बावन प्रदेशो-  
वडे स्पर्शयिला होय. आकाशास्तिकायनुं संवंत्र \*उत्कृष्टपद कहेंवुं.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय ? [उ०] जघन्यपदे तेज  
संख्याता प्रदेशने वमणा करी वे रूप अधिक करीए, अने उत्कृष्टपदे तेज संख्याता प्रदेशने पांच गुणा करी वे रूप अधिक करीए. [तेटला  
प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय.] [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शयिला ? [उ०] ए प्रमाणे [धर्मास्तिकायनी पेटे] जाणवुं. [प्र०]  
केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय ? [उ०] तेज संख्याताने पाचगुणा करी वे रूप अधिक करीए [तेटला प्रदेशोवडे  
स्पर्श करायेल होय.] [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०]  
केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अट्टासमयोवडे स्पर्श  
करायेल होय ? [उ०] कदाच स्पर्श करायेल होय, अने कदाच स्पर्श न करायेल होय, यावत्-अनन्त समयोवडे स्पर्श करायेल होय.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना असंख्याता प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श कराय ? [उ०] जघन्यपदे  
तेज असंख्याताने वमणा करीए अने वे रूप अधिक करीए तेटला प्रदेशोवडे स्पर्श कराय, अने उत्कृष्टपदे तेज असंख्याताने पांच गुणा  
करीए, अने वे रूप अधिक करीए एटला प्रदेशोवडे स्पर्श कराय. वाकी वधुं जेम संख्यातासवन्चे कहुं तेम अहिं जाणवुं, यावत्-'अवश्य  
अनन्त समयोवडे स्पर्श कराय' त्यां सुची जाणवुं.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श कराय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम  
असंख्याता प्रदेश संवन्चे कहुं तेम अनन्ता प्रदेश संवन्चे पण समग्र जाणवुं.

२५ \* आकाशास्तिकायनुं उत्कृष्टपद छे, पण जघन्यपद नही, कारण के आकाश सर्व स्थले विद्यमान छे.—टीका.

२६ † दशधी उपरंत संख्यानी गणना संख्यातामा ज थाय छे. जेमके वीश प्रदेशनो एक स्कन्ध लोकान्तना एक प्रदेशने विभे रहेलो छे, अने ते  
अमुक नयना अभिप्रायधी वीश अवगाढ प्रदेशोवडे, अने तेज नयना मतधी उपरना के नीचेना वीश प्रदेशो वडे तथा पासेना वे प्रदेशो वडे—ए प्रमाणे  
जघन्यपदे वेतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शय. उत्कृष्टपदे निरूपचरित ( नास्तविक) वीश अवगाढ प्रदेशोवडे, वीश नीचेना अने वीश उपरना प्रदेशोवडे अने  
पूर्व अने पश्चिम, ए वन्चे दिशाए वीश वीश प्रदेशोवडे, तथा उत्तर अने दक्षिण यानु एक एक प्रदेशोवडे—सर्व मळी एकसो वे प्रदेशोवडे स्पर्शय.—टीका.

२८ ‡ अहिं एटली विशेषता छे के जेम जघन्यपदने विभे उपरना के नीचेना अवगाढ प्रदेशो औपचारिक छे, तेम उत्कृष्ट पदने विभे पण जाणवुं,  
जेमके अवगाह्यी निरूपचरित अनन्त आकाश प्रदेशो होता नही, पण असंख्याता होय छे.—टीका.

२९. [प्र०] एगे भंते ! अद्वासमय केवतिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] सत्ताहिं । [प्र०] केवतिपहिं अहम्मत्थि० ? [उ०] एवं चेव, एवं आगासत्थिकायहिं वि । [प्र०] केवतिपहिं जीवत्थिकाय० ? [उ०] अणंतेहिं, एवं जाव-अद्वासमपहिं ।

३०. [प्र०] धम्मत्थिकाय णं भंते ! केवतिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टे ? [उ०] नत्थि एक्केण वि । [प्र०] केवतिपहिं अधम्मत्थिकायपपसेहिं ? [उ०] असंखेज्जेहिं । [प्र०] केवतिपहिं आगासत्थिकायपपसेहिं० ? [उ०] असंखेज्जेहिं । [प्र०] केवतिपहिं जीवत्थिकायपपसेहिं० ? [उ०] अणंतेहिं । [प्र०] केवतिपहिं पोग्गलत्थिकायपपसेहिं० ? [उ०] अणंतेहिं । [प्र०] केवतिपहिं अद्वासमपहिं ? [उ०] सिय पुट्टे, सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे नियमा अणंतेहिं ।

३१. [प्र०] अहम्मत्थिकाय णं भंते ! केवइएणं धम्मत्थिकाय० ? [उ०] असंखेज्जेहिं । [प्र०] केवतिपहिं अहम्मत्थि० ? [उ०] णत्थि एक्केण वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । एवं एएणं गमएणं सध्वे वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्टा । परट्ठाणए आदिल्लपहिं तिहिं असंखेज्जेहिं भाणियधं, पच्छिल्लपसु 'अणंता' भाणियघा, जाव-अद्वासमयो त्ति, जाव-[प्र०] केवतिपहिं अद्वासमपहिं पुट्टे ? [उ०] नत्थि एक्केण वि ।

३२. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपपसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपपसा ओगाढा ? [उ०] नत्थि एक्को वि । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थिकायपपसा ओगाढा ? [उ०] एक्को । [प्र०] केवतिया आगासत्थिकायपपसेसा० ?

२९. [प्र०] हे भगवन् ! अद्वा-कालनो एक समय केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] \*अद्वासमय सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] उपर प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्शना जाणवी. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. ए प्रमाणे यावत्-[अनन्त] अद्वासमयोवडे स्पर्शना जाणवी.

कालनो एक समय

३०. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायद्रव्य केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] एक पण प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल न होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] असंख्यात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्ता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अद्वासमयोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] कदाच स्पर्श करायेल होय अने कदाच स्पर्श करायेल न होय. जो स्पर्श करायेल होय तो अवश्य अनन्त समयोवडे स्पर्श करायेल होय.

धर्मास्तिकायद्रव्य.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! अधर्मास्तिकाय केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] एक पण प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल न होय. वाक्की वधुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे ए पाठ वडे सर्वे पण स्वस्थानके एक पण प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल नथी, परस्थानके-आदिना त्रण स्थानके-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रण स्थले असंख्याता प्रदेशो वडे स्पर्श करायेल होय एम कहेवुं, अने पछीना त्रण स्थले 'अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय'-एम यावत्-अद्वा समय सुची कहेवुं. यावत्-[प्र०] केटला अद्वा समयोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] एक पण समयोवडे स्पर्श करायेल न होय.

अधर्मास्तिकाय.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्या धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ-रहेलो होय त्यां वीजा केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय

१ अवगाढद्वार.

२९ \* अहिं वर्तमानसमयविशिष्ट समयक्षेत्रमा रहेलो परमाणु अद्वासमय तरीके जाणवो, अन्यथा अद्वासमयने धर्मास्तिकायना सात प्रदेश साथे स्पर्शना न होय. अहिं जघन्यपद नथी, केमके अद्वासमय मनुष्यक्षेत्रना मध्यवर्ती छे जघन्यपदनो तो लोकान्तने विषे समभव छे, अने लोकान्तने विषे काल नथी. अद्वासमयविशिष्ट परमाणुद्रव्य एक धर्मास्तिकायना प्रदेशने विषे अवगाढ छे, अने वीजा तेनी छ दिशाए धर्मास्तिकायना छ प्रदेशो रहेला छे-ए प्रमाणे तेने सात प्रदेशोनी स्पर्शना होय छे.

† अहिं यावत्शब्दथी एक अद्वासमय अनन्त पुद्गलास्तिकायप्रदेशोवडे अने अनन्त अद्वासमयोवडे स्पर्श करायेल होय, ते आ प्रमाणे-अद्वासमय-विशिष्ट अणुद्रव्य अद्वासमय कहेवाय छे, ते एक अद्वासमय पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशोवडे अने अनन्त अद्वासमय-अद्वासमयविशिष्ट अनन्त परमाणुओवडे स्पर्श कराय छे.

३१ † ज्यां केवल धर्मास्तिकायादि द्रव्यनो तेना प्रदेशोनी साथे स्पर्शानो विचार थाय ते स्वस्थानक कहेवाय, वीजा द्रव्यना प्रदेशोनी साथे स्पर्शानो विचार थाय ते परस्थानक कहेवाय. तेमा स्वस्थानके एक पण प्रदेशोवडे स्पृष्ट नथी, अने परस्थानके धर्मास्तिकायादि त्रण सूत्रने विषे असंख्य प्रदेशोवडे स्पृष्ट होय छे, केमके धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने तत्संबद्ध आकाशना अर्थात् प्रदेशो छे. जीवादि त्रण सूत्रने विषे अनन्त प्रदेशो वडे स्पृष्ट होय छे. केमके तेओना अनन्त प्रदेशो छे. यावत् एक अद्वासमय केटला अद्वासमयो वडे स्पर्श करायेल-होय ? एक पण अद्वासमय वडे स्पर्श करायेल नथी, कारण के निरूपचरित अद्वासमय एक ज होवाथी तेनी समयान्तरनी साथे स्पर्शना नथी.

[उ०] एको । [प्र०] केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? [उ०] अणंता । [प्र०] केवतिया पोग्गलत्थिकायपदेसा० ? [उ०] अणंता । [प्र०] केवतिया अद्दासमया ? [उ०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता ।

३३. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे अहम्मत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? [उ०] एको । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि० ? [उ०] नत्थि एको वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

३४. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे आगासत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? [उ०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एको, एवं अहम्मत्थिकायपपसा वि । [प्र०] केवइया आगासत्थिकाय० ? [उ०] नत्थि एको वि । [प्र०] केवतिया जीवत्थि० ? [उ०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता, एवं जाच-अद्दासमया ।

३५. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे जीवत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थि० ? [उ०] एको, एवं अहम्मत्थि० कायपदेसा वि । एवं आगासत्थिकायपपसा वि । [प्र०] केवतिया जीवत्थि० ? [उ०] अणंता, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

३६. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय० ? [उ०] एवं जहा जीवत्थिकायपपसे तहेव निरवसेसं ।

३७. [प्र०] जत्थ णं भंते ! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय० ? [उ०] सिय एको सिय दोन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

३८. [प्र०] जत्थ णं भंते ! तिन्नि पोग्गलत्थिकायपदेसा तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय० ? [उ०] सिय एको, सिय

छे ? [उ०] एक पण प्रदेश अवगाढ नथी. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ-रहेला होय ? [उ०] एक अधर्मास्तिकायनो प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेश अवगाढ होय ? [उ०] एक प्रदेश अवगाढ होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] अनन्ता प्रदेशो अवगाढ होय. [प्र०] केटला अद्दासमयो अवगाढ होय ? [उ०] अद्दासमयो कदाच अवगाढ होय अने कदाच अवगाढ न होय; जो अवगाढ होय तो अनन्त अद्दासमयो अवगाढ होय.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ-रहेलो होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] त्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] एक पण नथी. वाकीं वधुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] त्या धर्मास्तिकायना प्रदेशो कदाच अवगाढ-रहेला होय, अने कदाच न अवगाढ होय. जो अवगाढ होय तो एक प्रदेश अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो पण जाणवा. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] एक पण न होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] कदाच अवगाढ होय अने कदाच न अवगाढ होय. जो अवगाढ होय तो अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय. ए प्रमाणे यावत्-अद्दासमय सुधी जाणवुं.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां जीवास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्या केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] त्या एक प्रदेश अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो पण जाणवा. आकाशास्तिकायना प्रदेशो पण ए रीते जाणवा. [प्र०] जीवास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] अनन्ता प्रदेशो अवगाढ होय. वाकी वधुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्या पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम जीवास्तिकायना प्रदेश संवन्चे कहुं तेम वधुं कहेवुं.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशो अवगाढ होय त्या धर्मास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ-रहेला होय ? [उ०] कदाच एक प्रदेश अवगाढ होय, अने कदाच वे प्रदेशो अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय संवन्चे पण जाणवुं. ए प्रमाणे आकाशास्तिकाय संवन्चे पण जाणवुं. वाकी वधुं [जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमय संवन्चे] जेम धर्मास्तिकायना प्रदेशानी वक्तव्यतामा कहुं छे तेम पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशानी वक्तव्यताने विषे पण कहेवुं. [अर्थात् तेओना अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय छे.]

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो अवगाढ-रहेला छे त्या केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [उ०] कदाच एक, कदाच वे अने कदाच त्रण प्रदेशो अवगाढ होय. [कारणके व्यारे पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो एक आकाशास्ति-

दोत्रि, सिय तिन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहेवं दोण्हं, एवं एक्केको वद्धियद्यो पपसो आइल्लएहिं तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसेहिं जहेव दोण्हं जाव-दसण्हं सिय एको, सिय दोत्रि, सिय तिन्नि, जाव-सिय दस । संखेज्जाणं सिय एको, सिय दोत्रि, जाव-सिय दस, सिय संखेज्जा । असंखेज्जाणं सिय एको, जाव-सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा । जहा असंखेज्जा एवं अणंता वि ।

३९. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे अद्दासमय ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थि० ? [उ०] एको । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि० ? [उ०] एको । [प्र०] केवतिया आगासत्थि० ? [उ०] एको । [प्र०] केवइया जीवत्थि० ? [उ०] अणंता, एवं जाव-अद्दासमया ।

४०. [प्र०] जत्थ णं भंते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? [उ०] नत्थि एको वि । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थिकाय० ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवतिया आगासत्थि० ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवतिया जीवत्थिकाय० ? [उ०] अणंता । एवं जाव-अद्दासमया ।

४१. [प्र०] जत्थ णं भंते ! अहम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय० ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि० ? [उ०] नत्थि एको वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं सधे, सट्ठणे नत्थि एको वि भाणियद्यं, परट्ठणे आदिल्लगा तिन्नि असंखेज्जा भाणियद्या, पच्छिल्लगा तिन्नि अणंता भाणियद्या जाव-अद्दासमयो त्ति । जाव-[प्र०] केवतिया अद्दासमया ओगाढा ? [उ०] नत्थि एको वि ।

कायना प्रदेशने अवगाहीने रहे ल्यारे तेने विपे एक धर्मास्तिकायनो प्रदेश अवगाहीने रहे, ज्यारे वे आकाशास्तिकायना प्रदेशने अवगाहीने रहे ल्यारे ल्यां वे धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहे, अने ज्यारे त्रण आकाशास्तिकायना प्रदेशोने अवगाहीने रहे ल्यारे ल्यां त्रण धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहे. ] ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायना संबन्धे कहेवुं. वाकी जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमयने आश्रयी जेम वे पुद्गलप्रदेशसंबन्धे कहुं तेम त्रण पुद्गलप्रदेश संबन्धे पण कहेवुं. [अर्थात्-त्रण पुद्गल प्रदेशने स्थाने अनन्त जीवप्रदेशो, अनन्त पुद्गलपरमाणुओ अने अनन्त अद्दासमय अवगाढ होय.] ए प्रमाणे आदिना त्रण अस्तिकायने विपे एक एक प्रदेश वधारवो, वाकीनाने विपे जेम वे पुद्गलास्तिकायना प्रदेशसंबन्धे कहुं तेम यावत्-दश प्रदेश संबन्धे पण कहेवुं. एटले ज्यां पुद्गलास्तिकायना दश प्रदेशो अवगाढ होय ल्यां धर्मास्तिकायनो कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् वे प्रदेश, कदाचित् त्रण प्रदेश, यावत्-कदाचित् दश प्रदेशो अवगाढ होय. ज्या संख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ल्या धर्मास्तिकायनो कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् वे प्रदेश, यावत्-कदाचित् दश प्रदेशो, यावत्-संख्याता प्रदेशो अवगाढ होय. असंख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो ज्यां अवगाढ-रहेला होय ल्या धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश, यावत्-कदाचित् संख्याता प्रदेशो, अने कदाचित् असंख्याता प्रदेशो अवगाढ होय. जेम असंख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो माटे कहुं तेम अनन्त प्रदेशो माटे पण जाणवुं. [अर्थात् ज्या पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय ल्या धर्मास्तिकायना कदाचित् एक, यावत्-संख्याता अने यावत्-असंख्याता प्रदेशो रहेला होय.]

३९. [प्र०] हे भगवन् ! ज्या एक अद्दासमय अवगाढ होय ल्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशो रहेला होय. ए प्रमाणे यावत् अद्दासमय सुधी जाणवुं. [अर्थात् पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमयो अनन्ता रहेला होय.]

एक अद्दासमय.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्या एक धर्मास्तिकाय अवगाढ होय ल्या केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] ल्यां धर्मास्तिकायनो एक पण प्रदेश रहेलो न होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो होय ? [उ०] अनन्ता होय. ए प्रमाणे यावत्-अद्दासमय सुधी जाणवुं.

एक धर्मास्तिकाय.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ज्या एक अधर्मास्तिकाय अवगाढ-रहेलो होय ल्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक पण प्रदेश न होय. वाकी [ आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमयने ] धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं. सर्व धर्मास्तिकायादि द्रव्यने 'स्वस्थानके एक पण प्रदेश नथी'-ए प्रमाणे कहेवुं, अने परस्थानके आदिना त्रण द्रव्यने ( धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायने ) 'असंख्याता' कहेवा, अने पाछळना त्रण द्रव्यने 'अनन्ता' यावत्-अद्दासमय सुधी कहेवा. यावत्-[प्र०] केटला अद्दासमय अवगाढ होय ? [उ०] एक पण नथी.

एक अधर्मास्तिकाय.

४२. [प्र०] जत्य णं भंते ! एमे पुढविक्काइए ओगाढे तत्य णं केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा ? [उ०] असंखेजा । [प्र०] केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? [उ०] असंखेजा । [प्र०] केवइया तेउकाइया ओगाढा ? [उ०] असंखेजा । [प्र०] केवइया वाउकाइया ओगाढा ? [उ०] असंखेजा । [प्र०] केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? [उ०] अणंता ।

४३. [प्र०] जत्य णं भंते ! एमे आउक्काइए ओगाढे तत्य णं केवतिया पुढवि० ? [उ०] असंखेजा । [प्र०] केवतिया आउ० ? [उ०] असंखेजा । एवं जहेव पुढविक्काइयाणं वत्तघता तदेव सघोसिं निरवसेसं भाणियधं जाव-वणस्सइकाइयाणं, जाव- [प्र०] केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? [उ०] अणंता ।

४४. [प्र०] एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकायंसि चक्रिया केई आसइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा नुयट्ठित्तए वा ? [उ०] नो इण्टे समट्ठे, अणंता पुण तत्य जीवा ओगाढा । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-‘एयंसि णं धम्मत्थि० जाव-आगासत्थिकायंसि णो चक्रिया केई आसइत्तए वा जाव-ओगाढा’ ? [उ०] गोयमा ! जहानामए-कूडागारसाला सिया, दुहओ लिता, गुत्ता, गुत्तदुवारा, जहा रायप्पसेणट्ठे, जाव-दुवारवयणाई पिहेट्ठे, दु० २ पिहेटा तीसे कूडागारसालाए वहुमज्जदेसमाए जहेवेणं एतो वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं पदीवसइस्सं पटीवेजा, से नूणं गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अधमन्नसंवद्धाओ अधमन्नपुट्ठाओ जाव-अधमन्नवडत्ताए चिट्ठंति ? इंता चिट्ठंति । चक्रिया णं गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव-नुयट्ठित्तए वा ? भगवं ! णो तिण्टे समट्ठे । अणंता पुण तत्य जीवा ओगाढा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव-‘ओगाढा’ ।

४५. [प्र०] कहि णं भंते ! लोए वहुसमे ? कहिणं भंते ! लोए सघविग्गहिए पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रयण-प्पमाए पुढवीए उव्वरिमहेट्ठिहेसु खुड्ढागपयरेसु एत्थ णं लोए वहुसमे, एत्थ णं लोए सघविग्गहिए पण्णत्ते ।

४६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां एक पृथिवीकायिक जीव अवगाट होय ला बीजा केटला पृथिवीकायिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता पृथिवीकायिको रहेला होय. [प्र०] केटला अष्कायिक जीवो अवगाट होय ? [उ०] असंख्याता जीवो अवगाट होय. [प्र०] केटला तेज-अयिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेला होय. [प्र०] केटला वायुकायिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेला होय. [प्र०] केटला वनस्पतिकायिको रहेला होय ? [उ०] अनन्ता वनस्पतिकायिको रहेला होय.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्या एक अष्कायिक रहेलो होय ला केटला पृथिवीकायिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेल्य होय. [प्र०] केटला अष्कायिको रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेला होय. ए प्रमाणे जेम पृथिवीकायिकनी वत्तयता कही, तेम सर्वनी सबयी वत्तयता यावत्-वनस्पतिकाय सुधी कहेवी. यावत्-[प्र०] केटला वनस्पतिकायिको रहेला होय ? [उ०] अनन्ता रहेला होय.

४८. [प्र०] हे भगवन् ! आ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकायने विपे कोइ पुरुष वेसवाने, उभो रहेवाने, नीचे वेसवाने अने आच्छेदवाने शक्तिमान् होय ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ यथार्थ नथी, परन्तु ते स्थाने तो अनन्ता जीवो अवगाट-रहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! जा हेतुथी एम कहेो छे के आ ‘धर्मास्तिकाय, यावत्-आकाशास्तिकायने विपे कोइ पुरुष वेसवाने शक्तिमान् नथी’-इत्यादि यावत्-सा अनन्ता जीवो अवगाट-रहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ कूटागारगाला होय, तेने अदर ने बहार लीपी होय, चारे तरफती टाकेली होय, अने तेना वारणां पण वन्ध कर्यां होय-इत्यादि\* राजप्रश्रीय मूत्रमां कला प्रमाणे तेनुं वर्णन जाणतुं, यावत्-ते कूटागार गालना द्वारना कमाडने बंध करी, ते कूटागार गालना बराबर मध्यभागमा जवन्थी एक, वे, व्रण अने उच्छेद्यी एक हजार दीवाओ सज्जावे. हे गौतम ! खरेखर ते दीवाओनुं तेज परस्पर मळीने, परस्पर स्पर्श करीने, यावत् एक दीवा साथे एकरूपे थदने रहे ? हा, भगवन् ! रहे, हे गौतम ! कोइ पण पुरप ते दिवाओना तेजमां वेसवाने यावत्-अथवा आच्छेदवाने शक्तिमान् थाय ? हे भगवन् ! अर्थ योग्य नथी, पण अनन्ता जीवो ला अवगाट-रहेला होय छे. ते माटे हे गौतम ! एम कहेवाय छे के यावत्-‘अनन्ता जीवो ला अवगाट होय छे.’

४९. [प्र०] हे भगवन् ! लोकनो बराबर सम-प्रवेगनी वृद्धि-हानिरहित भाग क्या कहेलो छे ? हे भगवन् ! लोकनो सर्वथी सक्षिप्त-साकडो भाग क्या कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्तप्रभा पृथिवीना उपर अने नीचेना क्षुद्र (लघु) प्रतरने विपे अहिं लोकनो बराबर असमभाग कहेलो छे, वने अहिज लोकनो सर्वथी सक्षिप्त (साकडो) भाग कहेलो छे.

८८ \* कूटागारगालानु वर्णन सुओ-राजप्रश्रीय प० १३५.

४९ † आ वने क्षुद्र प्रतरनी धारनीने उपर अने नीचे प्रतरती वृद्धि थाय छे-दीक.

४६. [प्र०] क्विं णं भंते ! विग्गहविग्गहिण लोण पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! विग्गहकंडप पत्थ णं विग्गहविग्गहिण लोण पण्णत्ते ।

४७. [प्र०] किंसंठिण णं भंते ! लोण पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! सुपइद्वियसंठिण लोण पण्णत्ते, हेट्ठा विच्छिप्पे, मज्जे जहा सत्तमसण पढमुद्देसे जाव—‘अंतं करेति’ ।

४८. [प्र०] एयस्स णं भंते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उट्टलोगस्स य कयरे कयरोहिंतो जाव—विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सधत्थोचे तिरियलोण, उट्टलोण असंयेज्जगुणे, अहेलोण विसेसाहिए । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते’ । त्ति ।

तेरसमसए चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

४६. [प्र०] हे भगवन् ! क्यां विग्रहविग्रहिक—लोकरूप शरीरनो वक्रतायुक्त भाग छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यां विग्रहकंडक—वक्रता-युक्त अवयव छे ( अर्थात् लोकरूप शरीरनो ब्रह्मदेवलोकरूप कोणीनो भाग छे, त्यां प्रदेशनी वृद्धि—हानि होवाथी वक्र अवयव छे ) त्यां लोकरूपशरीर वक्रतायुक्त छे.

लोकनो वक्रतायुक्त

४७. [प्र०] हे भगवन् ! लोकानुं संस्थान केवा प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! लोकानुं सुप्रतिष्ठक—( उंधा वाळैला शरावना उपर मूकैला शरावसंपुट )ने आकारे आ लोक कहुं छे. नीचे विस्तीर्ण, मध्यमां संक्षिप्त—इत्यादि जेम \*सातमा शतकना प्रथम उद्देशकमां कथा प्रमाणे यावत्—‘संसारनो अन्त करे छे’—त्या सुधी जाणवुं.

१३ संस्थानात्

४८. [प्र०] हे भगवन् ! आ अधोलोक, तिर्यग्लोक, अने ऊर्ध्वलोकमा कयो लोक कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ? [उ०] सर्वथी थोडो तिर्यग्लोक छे, तेथी असंत्यातगुण ऊर्ध्वलोक छे अने तेथी विशेषाधिक अधोलोक छे. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.’

त्रयोदश शतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.



## पंचमो उद्देशो ।

१. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं सच्चित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ? [उ०] गोयमा ! नो सच्चित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा । एवं असुरकुमारा, पढमो नेरइयउद्देशओ निरवसेसो भाणियघो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ।

तेरसमसए पंचमो उद्देशओ समत्तो ।

## पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको शुं सच्चित्ताहारी छे, अचित्ताहारी छे के मिश्राहारी ( सचित्त अने अचित्त उभय आहारवाळा ) छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सच्चित्ताहारी नथी, मिश्राहारी नथी, परन्तु अचित्ताहारी छे. असुरकुमारो ए प्रमाणे जाणवा. अहीं }  
[ 'प्रज्ञापना' सूत्रना अठ्यावीअमा आहारपदनो ] \* प्रथम नैरयिक उद्देशक समग्र कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'—  
एम कही भगवान् गौतम यावद्—विहरे छे.

त्रयोदश शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

## छट्टो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव—एवं वयासी—संतरं भंते ! नेरतिया उववज्जंति, निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति । एवं असुरकुमारा वि, एवं जहा गंगेये तहेव दो दंडगा जाव—  
'संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति' ।

## पष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा [भगवान् गौतम] यावत्—आ प्रमाणे वोल्या के—हे भगवन् ! नारको सांतर—समयादिकना अतर सहित उपजे, के निरन्तर—समयादिकना अतर रहित उपजे ? [उ] हे गौतम ! नैरयिको सातर पण उपजे छे, अने निरन्तर पण उपजे छे. असुरकुमारो पण ए प्रमाणे जाणवा, ए प्रमाणे 'लेम गागेय उद्देशकमां कछुं छे तेम उत्पाद अने उद्घर्तना सर्वे वे दंडको यावत्—'वैमानिको सातर पण च्यवे छे, अने निरन्तर पण च्यवे छे'—त्या सुधी कहेवा.

२. [प्र०] कहिं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचंचा नामं आवासे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! जंबुईव्हे वीवे मंदरस्स पद्ययस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेजे दीवसमुदे-एवं जहा वितियसए समाउहेसए वत्तद्यया सच्चोव अपरिसेसा नेयद्या, नवरं इमं नाणत्तं-जाव-तिगिच्छकूडस्स उप्पायपद्ययस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपद्ययस्स थयेमिं च वहुणं सेसं तं चोव जाव-तेरस य अंगुलाइं अदंगुलं च किंचि विसेसाहिया परिकखेवेणं । तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चच्छिमेणं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पन्नासं च सहस्साइं अरुणोदगसमुदं तिरियं वीइवइत्ता पत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचे नामं आवासे पण्णत्ते, चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविकखंमेणं, दो जोयणसयसहस्सा पचाट्टिं च सहस्साइं छच्च वचीसे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिकखेवेणं । से णं एणेणं पागारेणं सद्यओ संमता संपरिक्खत्ते । से णं पागारे दिवहं जोयणसयं उटं उच्चत्तेणं, एवं चमरचंचाए रायहाणीए वत्तद्यया भाणियद्या समाविहणा, जाव-चत्तारि पासायपंतीओ ।

३. [प्र०] चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति ? [उ०] नो तिण्ण्टे समट्टे । [प्र०] से केणं खाइ अट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘चमरचंचे आवासे० ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए-इहं मणुस्सलोगंसि उचगा-रियलेणाइ वा, उज्जाणियलेणाइ वा, णिज्जाणियलेणाइ वा, वारिधारियलेणाइ वा, तत्थ णं वद्वे मणुस्ता य मणुस्सीओ य आसयंति, सयंति-जहा रायप्पसेणाइजे जाव-कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, अन्नत्थ पुण वसहिं उवेति, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचे आवासे केवलं किट्टा-रतिपत्तियं, अन्नत्थ पुण वसहिं उवेति, से तेण्णट्टेण जाव-आवासे । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते’ ! त्ति जाव-विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ जाव-विहरइ ।

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इन्द्र अने असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंचा नामे आवास क्यां कल्लो छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपमा मेरु पर्वतनी दक्षिणे तिर्यग् असंख्याता द्वीपसमुद्रे उल्लंघीने [अरुणवर द्वीपनी बाह्य वेदिकाना अन्नथी अरुणवर समुद्रमा वेंतालीश लाख योजन गया बाद चमरेन्द्रनो तिगिच्छककूटनामे \*उत्पातपर्वत आवे छे, तेनी दक्षिण दिशाए ६५५ कोड, ३५ लाख अने पचास हजार योजन अरुणोदक समुद्रमा तीर्छा गया बाद नीचे रत्नप्रमा पृथिवीनी अंदर चालीश हजार योजन जइए एटले चमरेन्द्रनी चमरचंचा नामे राजधानी आवे छे-इत्यादि] वीजा शतकर्त्तौ आठमा सभा उद्देशकमा-जे वक्तव्यता कही छे ते समग्र अहिं कहेवी, परंतु तेमा आ विशेष छे के तिगिच्छककूट नामे उत्पात पर्वत, चमरचंचानामे राजधानी, चमरचंच नामे आवासपर्वत, अने वीजा घणाना-इत्यादि वयुं ते प्रमाणे कहेवुं, यावत्-त्रण लाख, सोळ हजार, वसो सत्यावीश योजन [त्रण गाउ, वसो अठ्यावीश धनुए अने कंडक विशेषाधिक ] साडा तेर अंगुल-एटली चमरचंचानी परिधि छे. ते चमरचंचा राजधानीयी दक्षिण-पश्चिम दिशाए ( नैर्ऋत्य कोणने विषे, छसो पंचावन कोड, पंजीश लाख, अने पचास हजार योजन अरुणोदक समुद्रमा तिर्छा गया बाद अहिं असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंच नामे आवास कल्लो छे. ते लंबाइ अने पहोळाइमा चोराशी हजार योजन छे. तेनी परिधि बे लाख, पानठ हजार अने छसो वत्रीश योजनथी कंडक विशेषाधिक छे. ते आवास एक प्राकारथी ( किल्लथी ) चोतरफ विंटाएले छे. ते प्राकार उंचो-उंचाइमा दोढसो योजन छे. ए प्रमाणे चमरचंचा राजधानीनी वधी वक्तव्यता यावत्-“चार प्रासाद पंकिनओ छे”-त्या सुधी कहेवी, परन्तु [ १ सुधर्मासभा, २ उपपातसभा, ३ अभियेकसभा, ४ अटंकारसभा अने ५ व्यवसायसभा-] ए पाच सभा न कहेवी.

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमर चमरचंच नामे आवासमा रहे छे ? [उ०] ए अर्थ ययार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कल्लो छे के, चमरचंच नामे आवासमा-इत्यादि अश्र. [उ०] हे गौतम ! जेमके आ मनुष्यलोकमा उपकारक-पीठवद्ध धरो, उयानमा रहेला लोकने उपकारक ( नगरप्रवेश गृहो ) धरो, नगरनिर्गम-नगरथी बहार नीकाळनां प्रात धता धरो अने वारिधार-युक्त ( पुनारायुक्त ) धरो होय, त्या घणा पुत्रपो अने रीओ वेसे, मुवे-इत्यादि राजप्रश्रीय मूत्रमा कला प्रमाणे यावत्-‘कन्यापत्य फळ अने वृत्तिविशेषने अनुभनता रहे छे’ त्या सुधी कहेवुं, पण त्यां रहेण करता नथी, अर्थात् पोतानो निग्रम तो बीजे रळके करे छे, ए प्रमाणे हे गौतम ! असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंच नामे आजान केवल व्रीजा अने रति निमित्ते छे, धने बीजे सट्टे ते पोतानो वास करे छे; ते हेतुथी एम कल्लुं छे के चमरचंच आवासने विषे ते पोतानो वास करनो नथी. हे भगवन् ! ने ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे-‘एम कही यावत् गिहरे छे. त्याखाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोद दिग्ने राजगृह नगम्यगी अने गुणसिद्धा चैलथकी यावत्-निहार करे छे.

असुरकुमारना चमरेन्द्रनो चमरचंच नामे आवास.

चमरेन्द्र चमरचंच नामे आवासमा रहे छे.

२ \* चमरेन्द्रने तिगिच्छकमां पणुं होय लरे या पर्वत उपर आनी वसतन करे छे माटे ते पर्वतने उपातर रीत करेनामां आवे छे -ईछ.

† उतो भग० सं० १ सं० २ उ० ८ पृ० ३५७.

‡ † राजप्र० प० ७६ मू० ३०.

૪. તેણં કાલેણં તેણં સમણં ચંપા નામં નયરી હત્યા, વદ્મથો । પુત્રમદે ચંદ્રણ, વદ્મથો । તપ ણં સમણે ભગવં મહા-  
વીરે અન્નયા કદાદ્ પુદ્ધાણુપુદ્ધિં ચરમાણે જાવ-વિહરમાણે જેણેવ ચંપા નગરી જેણેવ પુત્રમદે ચેતિપ. તેણેવ ઉચ્ચાગચ્છદ, તેં ૨  
-ચ્છિત્તા જાવ-વિહરદ્ । તેણં કાલેણં તેણં સમણં સિંધૂસોવીરેનુ જળવણ્ણુ વીતીમણ નામં નગરે હત્યા, વદ્મથો । તસ્મ ણં  
વીતીમયસ્સ નગરસ્સ વહિયા ઉત્તરપુરચ્છિમે દિસીમાણ પત્થ ણં મિયવણે નામં ઉચ્ચાણે હત્યા, સઘોડયં વદ્મથો । તત્થ ણં  
વીતીમણ નગરે ઉદાયણે નામં રાયા હત્યા, મહયાં વદ્મથો । તસ્સ ણં ઉદાયણસ્સ રઘો પમાવતી નામં દેવી હત્યા, સુકુ-  
માલં વદ્મથો । તસ્સ ણં ઉદાયણસ્સ રઘો પુત્તે પમાવતીપ દેવીપ અત્તપ અમીતિનામં કુમારે હત્યા, સુકુમાલં જદ્ધા સિચ-  
મદ્દે, જાવ-‘પચ્ચુવેક્કપમાણે વિહરતિ’ । તસ્સ ણં ઉદાયણસ્સ રઘો નિયપ્પ ભાદ્ધણિજ્ઞે કેલીનામં કુમારે હત્યા, સુકુમાલં જાવ-  
સુરુચે । સે ણં ઉદાયણે રાયા સિંધૂસોવીરપ્પામોન્નપ્પાણં સોલસપ્પહં જળવયાણં, વીતીમયપ્પામોન્નપ્પાણં તિપ્પદં તેસટ્ટીણં નગરા-  
ગરસ્સયાણં, મદ્દસેણપ્પામોન્નપ્પાણં દ્વસપ્પહં રાર્દ્ધિણં વદ્ધમહાણં વિદ્ધિપ્પહ્ણત્ત-ચામર-ચાલવીયણાણં, અન્નેસિં ચ યદ્ધણં રાર્દ્ધિ-સર-  
તલવરં જાવ-સત્થવાહપ્પભિર્દ્ધિણં આદેવથં પોરેવથં જાવ-ફારેમાણે, પાલેમાણે સમણોચાસપ્પ અભિગયજીવાજીવે જાવ-વિહરદ્ ।

૫. તપ ણં સે ઉદાયણે રાયા અન્નયા કયાદ્ જેણેવ પોસહસાલા તેણેવ ઉચ્ચાગચ્છદ, જદ્ધા સંરે જાવ-વિહરદ્ । તપ ણં  
તસ્સ ઉદાયણસ્સ રઘો પુદ્ધરત્તાવરત્તકાલસમયંસિં ધમ્મજાગરિયં જાગરમાણસ્સ અયમેયાત્થવે અન્નત્થિય જાવ-સમુપ્પજિન્ન્યા-  
‘ધન્ના ણં તે ગામા-ગર-નગર-લેહ-ફવ્વહ-મહંવ-દ્વોણમુદ્દ-પટ્ટણા-સમ-સંવાહસપ્પિવેસા, જત્થ ણં સમણે ભગવં મહાવીરે  
વિહરદ્, ધન્ના ણં તે રાર્દ્ધિ-સર-તલવરં જાવ-સત્થવાહપ્પભિર્દ્ધિઓ, જે ણં સમણં ભગવં મહાવીરં વંદંતિ નમંસંતિ, જાવ-પલ્લુવાસંતિ ।  
જદ્ધ ણં સમણે ભગવં મહાવીરે પુદ્ધાણુપુદ્ધિં ચરમાણે ગામાણુગામં જાવ-વિહરમાણે રૂદ્ધમાગચ્છેજ્ઞા, રૂદ્ધ સમોસરેજ્ઞા, રૂદ્ધેવ વીતી-  
મયસ્સ નગરસ્સ વહિયા મિયવણે ઉચ્ચાણે અદ્ધાપ્પહિરુવં ઉગ્ગહં ઉગ્ગિગ્ગિદ્ધિત્તા સંજમેણં તવસા જાવ-વિહરેજ્ઞા, તો ણં અદ્ધં સમણં  
ભગવં મહાવીરં વંદેજ્ઞા, નમંસેજ્ઞા, જાવ-પલ્લુવાસેજ્ઞા । તપ ણં સમણે ભગવં મહાવીરે ઉદાયણસ્સ રઘો અયમેયાત્થવે અન્નત્થિયં  
જાવ-સમુપ્પજં વિયાણિત્તા ચંપાઓ નગરીઓ પુત્રમદ્દાઓ ચેદ્ધયાઓ પડિનિક્કપમતિ, પડિનિક્કપમિત્તા પુદ્ધાણુપુદ્ધિં ચરમાણે ગામાણુ  
જાવ-વિહરમાણે જેણેવ સિંધૂસોવીરે જળવણ જેણેવ વીતીમયે નગરે, જેણેવ મિયવણે ઉચ્ચાણે તેણેવ ઉચ્ચાગચ્છદ, તેં ૨-ચ્છિત્તા

૪. તે કાલે તે સમયે ચંપા નામની નગરી હતી. વર્ણન. પૂર્ણમદ્ર ચૈત્ય હતું. વર્ણન. ત્યારવાદ શ્રમણ ભગવંત મહાવીર અન્ય કોઈ દિવસે  
અનુક્રમે ગમન કરતા, યાવત્-વિહાર કરતા ય્યાં ચંપા નગરી છે, અને ય્યાં પૂર્ણમદ્ર ચૈત્ય છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને યાવત્-વિહારે છે.  
તે કાલે તે સમયે સિંધૂસૌવીર દેશને વિષે વીતિમય નામે નગર હતું. તે વીતિમય નગરની વહાર ઉત્તરપૂર્વ દિશા (ઈશાન કોણને વિષે)  
મૃગવન નામનું ઉદ્યાન હતું. તે સર્વ ઋતુના પુષ્પાદિકથી સમૃદ્ધ હતું-ઈત્યાદિ વર્ણન જાણવું. તે વીતિમય નગરને વિષે ઉદાયન નામે રાજા  
હતો, તે મહાહિમવાન્ જેઓ-ઈત્યાદિ વર્ણન જાણવું. તે ઉદાયન રાજાને પ્રમાવતી નામની દેવી (રાણી) હતી, તે સુકુમાલહાયપગવાઠી-  
ઈત્યાદિ વર્ણન જાણવું. તે ઉદાયન રાજાને પ્રમાવતી દેવીથી ધયેલો અમીચિ નામે કુમાર હતો. તે સુકુમાલ-ટ્યાદિ વર્ણન \*શિવમદ્રની  
પેઠે જાણવું, યાવત્-તે રાજ્યની ચિંતા કરતો વિહારે છે. તે ઉદાયન રાજાને પોતાનો માણેજ કેશી નામે કુમાર હતો, તે સુકુમાલહાયપગવાઠો  
અને યાવત્-સુરુપ હતો. તે ઉદાયન રાજા સિંધૂસૌવીર પ્રમુલ્લ સોલ્લ દેશ, વીતિમયપ્રમુલ્લ ત્રણસોને ત્રેસઠ નગર અને આકરનું (સુવર્ણાદિ  
ખાણોનું) તથા જેને છત્ર ચામર અને ચાલવ્યજન-(વિંજણો) આપેલા છે એવા મહાસેન પ્રમુલ્લ દગ્ગ મુક્કટવદ્ધ ગજાઓ, અને એવા વીજા વળા  
રાજા, યુવરાજ, તલવર (કોટવાલ) યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુલ્લનું અધિપતિપણું કરતો, રાજ્યનું પાલન કરતો, જીવાજીવ તત્ત્વને જાણતો,  
શ્રમણોનો ઉપાસક થઈને યાવત્-વિહારે છે.

૫. ત્યારવાદ તે ઉદાયન રાજા અન્ય કોઈ દિવસે ય્યાં પોયવશાલા છે ત્યાં આવે છે, અને ઈશ્વર શ્રમણોપાસકની પેઠે યાવત્-  
વિહારે છે. ત્યારવાદ તે ઉદાયન રાજાને મથ્યારાત્રીને સમયે ધર્મજાગરણ કરતા આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ યાવત્-ઉત્પન્ન થયો-‘તે ગામ,  
આકર, નગર, લેહ, કર્વેટ, મંડવ, દ્વોણમુલ્લ, પટ્ટન, આશ્રમ, સંવાહ અને સન્નિવેશ ધન્ય છે, ય્યા શ્રમણ ભગવંત મહાવીર વિચરે છે, તે  
રાજા, શેઠ, તલવર યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુલ્લ ધન્ય છે, જેઓ શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વંદન-નમસ્કાર કરે છે અને યાવત્-પર્યુપાસના  
કરે છે. જો શ્રમણ ભગવંત મહાવીર અનુક્રમે વિચરતા એક ગામથી વીજે ગામ જતા, યાવત્-વિહાર કરતા અહિં આવે, અહિ સમોસરે,  
અને આ વીતિમય નગરની વહાર મૃગવન નામે ઉદ્યાનમા યયાયોગ્ય અવગ્રહને ગ્રહણ કરી સંયમ અને તપવડે આત્માને ભાવિત કરતા  
યાવત્-વિચરે તો હું શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વંદન કરું, અને નમસ્કાર કરું, યાવત્-તેમની પર્યુપાસના કરું. ત્યારવાદ શ્રમણ ભગવંત  
મહાવીર ઉદાયન રાજાના આવા પ્રકારના ઉત્પન્ન થયેલા આ સંકલ્પને જાણીને ચંપા નગરીથી અને પૂર્ણમદ્ર ચૈત્ય થકી નીકળે છે, નીકળીને

जाव-विहरति । तए णं वीतीभये नगरे सिंघाडग० जाव-परिसा पञ्जुवांसइ । तए णं से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धे समणे हट्टतुट्ट० कोडुंविपुसिसे सदावेति, को० २-त्ता एवं वयासी-“खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं सध्मि-तरवाहिरियं जहा कूणिओ उववाइए जाव-‘पञ्जुवासति’ । पभावतीपामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव-पञ्जुवासंति । धम्मकहा । तए णं से उदायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट-तुट्टे उट्टाए उट्टेइ, उट्टा० २-त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव-नमंसित्ता एवं वयासी-‘एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! जाव-से जहेयं तुट्टे चदह’त्ति कट्टु जं नवरं देवाणुप्पिया ! अभीयिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव-पवयामि । ‘अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंथं’ । तए णं से उदायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं बुत्ते समणे हट्ट-तुट्टे समणं भगवं महावीरं चंदति नमंसति, चंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेकं हत्थि दूरुहति, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

६. तए णं तस्स उदायणस्स रज्जे अयमेयारुवे अब्भत्थिए जाव-समुप्पज्जित्था-“एवं खलु अभीयीकुमारे ममं एगे पुत्ते इट्टे कंते, जाव-किमंग पुण पासणयाए ? तं जदी णं अहं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता जाव-पवयामि, तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्टे य जाव-जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गट्टिए, अज्जोवचने, अणादीयं, अणवदगं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयी-कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव-पवइत्तए, सेयं खलु मे गियगं भाइणेजं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ जाव-पवइत्तए’-एवं संपेहेइ, एवं संपेहेत्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २-गच्छित्ता वीती-भयं नगरं मज्झंमज्जेणं जेणेव सए गेहे जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता आभिसेकं हत्थि ठवेति, आभि० २-वेत्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुमइ, आ० २-मित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, ते० २-च्छित्ता

अनुक्रमे गमन करता, एक गामथी वीजे गाम यावत्-विहरता, ज्यां सिंधुसौवीर देश छे, ज्यां वीतभय नगर छे, अने ज्या मृगवन नामे उद्यान छे त्या आवे छे, त्यां आवीने यावद्-विहरे छे. ते समये वीतभय नगरमा शृंगाटक-शींगोडाना जेवा त्रिकोण (आकारवाळा)-इत्यादि मार्गोमां [ घणा माणसो परस्पर कहे छे के ‘अहिं मृगवन उद्यानमां भगवान् महावीर पवार्या छे’ एम सांभळीने घणा क्षत्रियो वगेरे वंदन करवा नीकळे छे इत्यादि ] यावद्-परिपद् पर्युपासना करे छे. ल्यार पछी भगवान् महावीर आव्यानी आ वातथी विदित थयेला ते उदायन राजाए हर्षित अने संतुष्ट थई कौटुंबिक पुरुपोने बोलावी आ प्रमाणे कहुं के-“हे देवानुप्रियो ! तमे शीघ्र वीतभय नगरने अंदर अने बहार साफ करावो”-इत्यादि वधुं \*औपपातिक सूत्रमा कूणिक संवन्धे कहुं छे तेम अहि पण कहेहुं. यावत्-ते पर्युपासना करे छे. तथा प्रभावती प्रमुख देवीओ पण तेज प्रमाणे यावत्-पर्युपासना करे छे. ल्यारवाद [ भगवंते ] धर्म कथा कही. पछी ते उदायन राजा श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मने साभळी, अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थई उठी उभो थाय छे, उभो थइने श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत्-नमस्कार करीने आ प्रमाणे बोल्थो-‘हे भगवन् ! ए ए प्रमाणे ज छे, हे भगवन् ! ते ते प्रकारे छे’-यावत्-जे प्रकारे आ तमे कहो छो, परन्तु एटलो विषेण छे के, हे देवानुप्रिय ! अभीचिकुमारने राज्यने विषे स्थापन करुं, अने ल्यारवाद हुं देवानु-प्रिय एवा आपनी पासे मुंड थईने यावत्-प्रत्रय्यानो स्वीकार करुं. [ भगवंते कहुं के ] ‘हे देवानुप्रिय ! जेम सुख थाय तेम करो, प्रति-बंध न करो.’ ल्यार वाद श्रमण भगवंत महावीरे उदायन राजाने ए प्रमाणे कहुं एटले ते हर्षित अने संतुष्ट थई श्रमण भगवत महावीरने वंदन अने नमस्कार करे छे, वंदन अने नमस्कार करीने ते अभिषेकने योग्य (पट्ट) हस्ती उपर चढी श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने मृगवन नामना उद्यानथी नीकळीने ज्या वीतभय नामे नगर छे ते तरफ जवानो तेणे विचार कर्यो.

६. ल्यार पछी ते उदायन राजाने आवा प्रकारनो आ सकल्प यावत्-उत्पन्न थयो के ‘ए प्रमाणे खरेखर अभीचिकुमार मारे एक मूत्र छे अने ते मने इष्ट अने प्रिय छे, यावत्-तेनुं नाम श्रवण पण दुर्लभ छे, तो पछी तेनुं दर्शन दुर्लभ होय तेमा श्रुं कहेहु ? ते माटे जो हुं अभीचिकुमारने राज्यने विषे स्थापनीने श्रमण भगवत महावीरनी पासे मुंड थई यावत्-प्रत्रय्या ग्रहण करुं, तो अभीचिकुमार राज्य, राष्ट्र, यावत्-जनपदमा अने मनुष्यसर्वंधी कामभोगोमां मूर्छित, गूढ, प्रथित अने तल्लीन थई अनादि अनंत अने दीर्घमार्गावाळा चारगति-रूप ससार अटवीने विषे परिश्रमण करणे, ते माटे अभीचिकुमारने राज्यने विषे स्थापन करी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावत्-प्रत्रय्या लेवी ए श्रेयरूप नथी, परन्तु मारे मारा भाणेज केसीकुमारने राज्यने विषे स्थापन करीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे प्रत्रय्या लेवी श्रेयरूप छे’-ए प्रमाणे विचार करे छे. एम विचारने ज्या वीतभय नगर छे, त्या आवी वीतभय नगरनी वधे ज्या पोतानुं घर छे, अने ज्यां वाहेरनी उपस्थानसाला छे त्या आवे छे, त्या आवीने अभिषेकने योग्य-पट्ट हस्तीने उभो राखीने तेना उपरथी नीचे उतरे छे, नीचे उतरीने ज्या सिंहासन छे, त्या आवी उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशासन्मुख वेसे छे, वेसीने कौटुंबिक पुरुपोने बोलावी तेणे ए प्रमाणे

पोताना भाणेज के-  
सी कुमारने राच्या-  
भिषेक करवानो उदा-  
यननो सकल्प.

સીદ્ધાસનવરંસિ પુસ્ત્યામિમુદે નિસીયતિ, નિમીઠ્ઠા કોઠુંવિયપુરિસે સદાવંતિ; કોઠું ૨.—વંચા ઇવં વયાસી—‘વિષ્ણામેવ મો દેવા-  
ણુપ્પિયા । વીતીમયં નગરં સન્નિમતરવાહિરિયં’ જાવ—પચ્ચપ્પિણંતિ । તપ્પ ણં સે ઉદાયણે રાયા દોષં પિ કોઠુંવિયપુરિમે સદા-  
વેતિ, સદાવેત્તા ઇવં વયાસી—‘વિષ્ણામેવ મો દેવાણુપ્પિયા । કેસિસ્વ હુમારસ્સ મહન્દ્યં ૨.—ઇવં રાયામિસેઝો જહા સિયમદ્દસ્સ.  
હુમારસ્સ તદેવ માણિયદ્ધો જાવ—‘પરમાઠં પાલયાદિ, ઇટ્ટજણસંપરિહુદે મિંધૂસોર્વારપામોન્નરાણં સોલમ્મહં જણવયાણં વીતીન-  
યપામોક્કયાણં તિપ્પિ તેસદ્દીપ્પં નગરા—ગરસ્સયાણં મહન્નેપપામોક્કયાણં દસણં રાર્ણં ઝદ્ધોમિં ચ વટ્ઠાણં રાર્ણવરં જાવ—કારે-  
માણે, પાલેમાણે વિહરારહિ’ત્તિ કટ્ટુ જયજયસદ્દં પઠંતંતિ । તપ્પ ણં સે કેસી હુમારં રાયા જાપ, મહયાં જાવ—વિહરંતિ ।

૭. તપ્પ ણં સે ઉદાયણે રાયા ફેમિં રાયાણં શ્રાપુચ્છદ્દ । તપ્પ ણં સે કેસી રાયા કોઠુંવિયપુરિસે સદાવંતિ—ઇવં જહા જમા-  
લિસ્સ તદેવ સન્નિમતરવાહિરિયં તદેવ જાવ—નિક્કમગ્ગામિસેયં ઉવટ્ટવેતિ । તપ્પ ણં સે કેસી રાયા ઝણેગનાણાયગં જાવ—સંપ-  
રિહુદે ઉદાયણં રાયં સીદ્ધાસનવરંસિ પુસ્ત્યામિમુદે નિસીયાવેતિ, નિસીયાવેચ્છા વટ્ટન્નગ્ગણં સોવ્વપ્પિયાણં ૦ પ્પં જહા જમાલિસ્સ  
જાવ—ઇવં વયાસી—‘મણ સામી ! કિં દેમો, કિં પયચ્છામો, કિણા વા તે ઝદ્ધો’ ? તપ્પ ણં સે ઉદાયણે રાયા ફેમિં ગયં ઇવં  
વયાસી—‘દ્ધચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! કુત્તિયાવળાઓ’—ઇવં જહા જમાલિસ્સ, નવરં પટમાવતી કમ્મકેને પડિચ્છદ્દ પિયવિ-  
પ્પયોગદ્દુસદ્દા । તપ્પ ણં સે કેસી રાયા દોષં પિ ઉત્તરાવકમ્મણં સીદ્ધાસણં ગયાવેતિ, દો ૨. રયાવેત્તા, ઉદાયણં રાયં સેયાપીનપીદ્દ  
કલ્લસેહિં ૦ સેસં જહા જમાલિસ્સ, જાવ—સન્નિસપ્પે, તદેવ અમ્મધાની, નવરં પટમાવતી હંસલક્કમ્મણં પટસાટગં ગદાય સેસં તં  
ચેવ, જાવ—સીયાઓ પચ્છોરમતિ, સી ૦ ૨.—મિત્તા, જેણેવ સમ્મણે મગ્ગં મહાવીરે તેણેવ ડયાગચ્છદ્દ, તે ૦ ૨.—ચ્છિત્તા સમ્મણં મગ્ગં  
મહાવીરં તિમ્મપુત્તો વંદંતિ નમંસંતિ, વંદિત્તા નમંસિત્તા ઉત્તરપુરચ્છિમં દિન્નીમાગં ધવકમ્મતિ, ૩ ૦ ૨.—ધવકમિત્તા સયમેવ  
આમરણમહાલંકારં તં ચેવ પટમાવતી પડિચ્છતિ, જાવ—‘ધલિયદ્ધં સામી ! જાવ—નો પમાવેયદ્ધં’તિ કટ્ટુ કેસી રાયા પટમાવતી  
ય સમ્મણં મગ્ગં મહાવીરં વંદંતિ નમંસંતિ, વંદિત્તા, નમંસિત્તા જાવ—પડિગયા । તપ્પ ણં સે ઉદાયણે રાયા સયમેવ પંચમુદ્ધિયં  
લોયં ૦ સેસં જહા ઉસમદ્દત્તસ્સ, જાવ—સદ્ધદુક્કમ્મપ્પહીણે ।

કહ્યું—‘હિ દેવાનુપ્રિયો ! શ્રીમ વીતમય નગરને વહાર અને અંદરથી સાફ કરાવો’—ઇત્યાદિ યાવત્—તેઓ તેમ કરીને આજ્ઞા પાછી આપે છે.  
સ્વારપછી તે ઉદાયન રાજા વીજીવાર કોઠુંવિન પુરુષોને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું—‘હિ દેવાનુપ્રિયો ! શ્રીમ કેશીકુમારનો મહાઅર્ચયગ્ગે  
૩ વિપુલ રાજ્યામિષેક કરો’ . એ પ્રમાણે જેમ \* શિવમટ્ટકુમારનો રાજ્યામિષેક કરો છે તેમ અહિ ‘દીર્ઘાયુષી યાઓ’—ત્યાં મુવી કહેજો.  
હવે તે યાવત્—ઇટ્ઠજનથી પરિવૃત્ત થઈ સિંધુસૌવીર પ્રમુખ સોલ વેશો, વીનભય પ્રમુખ ઝણસો વેસઠ નગરો અને યાણોતું તથા મહાનેન પ્રમુખ  
દશ રાજાઓ, અન્ય વીજા ઘણા રાજા અને યુવરાજ વગેરેનું સ્વામિપણું યાવત્—કરનો, પાલન કરતો વિહર’ એમ કહી ‘જય જય’ શબ્દ બોલે  
છે. ત્યારે તે કેશીકુમાર રાજા થયો અને તે મોટા હિમવાનું પવિત્રના જેવો—ઇત્યાદિ વર્ણન જાણવું, યાવત્—તે વિહરે છે.

૭. સ્વારાઠ ઉદાયન રાજા કેશી રાજા પામે [દીક્ષા લેવાનાં] રજા મારે છે, સ્વાર પછી તે કેશીરાજા કોઠુંવિન પુરુષોને બોલાવે છે—  
ઇત્યાદિ જેમ જમાલિ સંવન્ધે કહ્યું છે તેમ નગરનો વહાર અને અંદર સાફ કરાવો—ઇત્યાદિ યાવત્—નિક્કમગ્ગામિષેક—દીક્ષામિષેક કરે છે. સ્વારપછી  
અનેક ગણનાયક વગેરેના પરિવાર યુક્ત તે કેશી રાજા ઉદાયન રાજાને ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર પૂર્વદિશા સન્મુલ્ય વેસાડીને એકસો આઠ  
સોનાના કલ્લગો વડે અમિષેક કરે છે—ઇત્યાદિ જેમ જમાલિ સંવન્ધે કહ્યું છે તેમ કહેવું, યાવત્—તે કેશી રાજાએ એ પ્રમાણે કહ્યું કે—‘હિ  
સ્વામિન્ ! અમે શું દહણ, અમે શું આપણ, અને તમારે શેનુ પ્રયોજન છે? પછી તે ઉદાયન રાજાએ કેશી રાજાને એ પ્રમાણે કહ્યું—‘હિ દેવાનુ-  
પ્રિય ! કુત્તિકાપણથી [દુ એક રજોહરણ અને એક પાત્ર] મંગાવવા ઇચ્છું છું.—ઇત્યાદિ જેમ જમાલિ સંવન્ધે કહ્યું તેમ અહિ જાણવું. પરન્તુ  
પટલો વિશેષ છે કે જેને પ્રિયનો વિયોગ દુઃસદ છે એવી પદ્માવતી અપ્રકેશોને પ્રહણ કરે છે. સ્વારાઠ કેશી રાજા વીજીવાર પણ ઉત્તર  
દિશા તરફ સિંહાસન ગોઠાવીને ઉદાયન રાજાનો શ્રવન અને પીન ( સોના—રૂપાના ) કલ્લગો વડે અમિષેક કરે છે. વાકી વધું જમાલિનો  
પેઠે જાણવું, યાવત્—તે શિવિકામા વેટો. તે પ્રમાણે ધાવમાતા સંવન્ધે જાણવું, પરંતુ પટલો વિશેષ છે કે અહિ પદ્માવતી હંસના ચિહ્નવાચક  
રેગમી પટને પ્રહણ કરી—ઇત્યાદિ વાકી વધું તે પ્રમાણે જાણવું, યાવત્—તે ઉદાયન રાજા શિવિકા ધક્કી ઉતરીને વ્યા શ્રમણ ભગવંત મહા-  
વીર છે, ત્યા આવીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને ઝણવાર વંદન અને નમસ્કાર કરી ઉત્તર—પૂર્વ દિશા—દેશાન કોણ તરફ જઈને પોતે જ  
આમરણ, માલ્યા અને અલંકારને ઘૂકે છે—ઇત્યાદિ પૂર્વ પ્રમાણે કહેવું, યાવત્—પદ્માવતી તેને પ્રહણ કરે છે, અને યાવત્—[તે બોલી કે—]  
‘હિ સ્વામિન્ ! સયમને વિષે પ્રયત્ન કરજો, યાવત્—પ્રમાદ ન કરજો’—એમ કહી કેશી રાજા અને પદ્માવતી શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વંદન અને  
નમસ્કાર કરે છે. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ પોતાને સ્થાનકે ગયા પછી ઉદાયન રાજા પોતાનો મેઢે પંચ મુદ્ધિક લોચ કરે છે—વાકીતું  
વૃત્તાત ક્ષપમદ્દત્તનાં પેઠે જાણવું, યાવત્—તે સર્વ દુઃખથી રહિત થાય છે.

૬ \* જુઓ શિવમટ્ટકુમારના રાજ્યામિષેક સંવન્ધે મગ ૦ સં ૩ શ ૦ ૧૧ સ ૦ ૧ પ ૦ ૨૨૨.

૭ † જુઓ—મગ ૦ સં ૩ શ ૦ ૧ સ ૦ ૩૩ પ ૦ ૧૭૩.

‡ જુઓ—મગ ૦ સ ૦ ૩ શ ૦ ૧ સ ૦ ૩૩ પ ૦ ૧૭૩.

§ જુઓ—મગ ૦ સ ૦ ૩

८. तए णं तस्स अभीयस्स कुमारस्स अन्नदा कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स अय-  
मेयारूवे अचमत्थिए जाव-समुप्पज्जितथा-‘एवं खलु अहं उदायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए णं से उदायणे राया  
ममं अवहाय नियगं भाइणिजं केसिकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ जाव-पव्वइए’-इमेणं एयारूवेणं महया अप्पत्तिएणं  
मणोमाणसिणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अंतैउपरियालसंपरिवुडे समंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छति,  
निग्गच्छित्ता पुव्वानुपुद्धिं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, ते० २-  
च्छित्ता कूणियं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । तत्थ चि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए याचि होत्था । तए णं से अभी-  
यीकुमारे समणोवासए याचि होत्था, अभिगय० जाव-विहरइ, उदायणंमि रायरिंसिमि समणुवद्धवेरे याचि होत्था । तेणं  
कालेणं तेणं समएणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोसाइं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता । तए णं से  
अभीयीकुमारे व्हइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणति, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए  
छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु  
चोयट्टीए आयावा० जाव-सहस्सेसु अन्नयरंसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आतावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववन्नो । तत्थ णं  
अत्थेगइयाणं आयावगणं असुरकुमाराणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, तत्थ णं अभीयस्स चि देवस्स एगं पलिओवमं  
ठिई पणत्ता । [प्र०] से णं भंते ! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति, कहिं  
उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिहिति, जाव-अंतं काहिति । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते’ ! त्ति ।

### तेरसमसए छट्टो उदेसो समत्तो ।

८. स्यार पछी अन्य कोई दिवसे अभीचिकुमारने मध्यरात्रिने समये कुटुंबजागरण करता आवा प्रकारनो आ विचार उत्पन्न थयो-  
‘ए प्रमाणे खरेखर हुं उदायन राजानो पुत्र अने प्रभादेवीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयो छुं, अने ते उदायन राजाए मने छोडी पोताना भाणेज  
केसिकुमारने राज्य उपर वेसाडी श्रमण भगवत महावीरनी पासे यावत्-प्रव्रज्या लीधी’-आवा प्रकारना आ मोटा अप्रीतिरूप मानसिक  
आतर दुःखथी पीडित थएले ते अभीचिकुमार पोताना अतःपुरना परिवारसहित पोतानुं भांडमात्रोपकरण-पात्र वगैरे सामग्री लईने नीकळे  
छे, नीकळी अनुक्रमे जतां-एक गामथी वीजे गाम जतां ज्या चंपा नगरी छे, अने ज्यां कूणिक राजा छे त्या आवा कूणिकनो आश्रय करी  
विहरे छे. अने त्या पण तेने विपुल भोगनी सामग्री प्राप्त थई. पछी ते अभीचिकुमार श्रावक पण थयो, अने जीवाजीवतत्त्वनो ज्ञाता थइ  
यावत्-विहरे छे, तो पण ते अभीचिकुमार उदायन राजपिने विपे वैरना अनुबन्धयी युक्त हतो. ते काले, ते समये आ रत्नप्रभा पृथिवीना  
नरकावासोनी पासे चोसठ लाख असुरकुमारोना आवासो क्हा छे, हवे ते अभीचिकुमार घणा वर्षो सुधी श्रमणोपासक पर्यायने पाळी अर्ध  
मासिक सलेखनाथी त्रीश भक्तो अनशनपणे व्यतीत करी, ते पाप स्थानकनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्या सिवाय मरणसमये काळधर्म  
पामी आ रत्नप्रभा पृथिवीना नरकावासोनी पासे चोसठ लाख आयाव ( आताप-प्रकाशरूप ) असुरकुमारावास्तोमाना कोइ एक आयावरूप  
असुरकुमारावासमा आतावरूप असुरकुमार देवपणे उत्पन्न थयो. त्या केटलाक आयावरूप असुरकुमार देवोनी एक पल्योपम स्थिति कही छे,  
अने त्या अभीचिदेवनी पण एक पल्योपमनी स्थिति कही छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते अभीचिदेव आयु क्षय थया पछी तया भवक्षय  
थया पछी मरण पामी क्या जशे-क्या उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्रने विपे सिद्ध थशे, यावत्-सर्व दुःखोनो अंत करशे.  
हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’-एम कही भगवान् गौतम यावत्-विहरे छे.

त्रयोदश शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

## सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-प्यं वयासी-याया मंते ! भासा, अता भासा ? [उ०] गोयमा ! नो आया भासा, यत्ता भासा ।
२. [प्र०] रूवि मंते ! भासा, अरूवि भासा ? [उ०] गोयमा ! रूवि भासा, नो अरूवि भासा ।
३. [प्र०] सच्चित्ता मंते ! भासा, अच्चित्ता भासा ? [उ०] गोयमा ! नो सच्चित्ता भासा, अच्चित्ता भासा ।
४. [प्र०] जीवा मंते ! भासा, अजीवा भासा ? [उ०] गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा ।
५. [प्र०] जीवाणं मंते ! भासा, अजीवाणं भासा ? [उ०] गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा ।
६. [प्र०] पुर्वि मंते ! भासा, भासिज्जमाणी भासा, भासासमयवीतिकंता भासा ? [उ०] गोयमा ! नो पुर्वि भासा, भासिज्जमाणी भासा, णो भासासमयवीतिकंता भासा ।
७. [प्र०] पुर्वि मंते ! भासा मिज्जति, भासिज्जमाणी भासा मिज्जति, भासासमयवीतिकंता भासा मिज्जति ? [उ०] गोयमा ! नो पुर्वि भासा मिज्जति, भासिज्जमाणी भासा मिज्जति, नो भासासमयवीतिकंता भासा मिज्जति ।

## सत्तम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमा भगवन् गौतम यावत्-आ प्रमाणे बोद्ध्या के, हे भगवन् ! "भाषा ए आत्मा-जीवस्वरूप छे के तेयी अन्य छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा ए आत्मा नयी, पण तेयी अन्य ( पुद्गलस्वरूप ) भाषा छे.
२. [प्र०] हे भगवन् ! भाषा रूपी-रूपवाळी छे के अरूपी-रूप विनानी छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा ( पुद्गलमय होवायी ) रूपी छे, पण रूप विनानी नयी.
३. [प्र०] हे भगवन् ! भाषा सचित्त-सजीव छे के अचित्त-अजीव छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा सचित्त नयी, पण अचित्त छे.
४. [प्र०] हे भगवन् ! भाषा जीवरूप-प्राणधारणरूप छे के अजीवन्वरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा जीवरूप नयी, पण अजीवरूप छे.
५. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने भाषा होय छे के अजीवोने भाषा होय छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवोने भाषा होय छे, पण अजीवोने भाषा नयी होती.
६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं [बोलाया] पूर्वे भाषा कहेवाय, बोलाती होय लारे भाषा कहेवाय, के बोलाया पछी भाषा कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! बोलाया पहिला भाषा न कहेवाय, तेमज बोलाया पछी पण भाषा न कहेवाय, पण बोलाती होय लारे भाषा कहेवाय.
७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं बोलाया पहिला भाषा भेदाय, बोलाती भाषा भेदाय, के बोलाया पछी भाषा भेदाय ? [उ०] हे गौतम ! बोलाया पहिला भाषा न भेदाय, तेमज बोलाया पछी भाषा न भेदाय, पण बोलाती होय लारे भाषा भेदाय.

१ \* जीवयी प्रयोजाय छे, जीवना वन्व धने मोक्षतुं कारण घाय छे माटे जीवनो धन होवायी भाषा 'आत्मा-जीव'-एम कही सकाय ? अथवा भाषा जीवस्वरूप नयी-एम पण कहेवाय ? केमके ते श्रोत्रेन्द्रियप्राप्त होवायी मूर्तपणवडे जीव करतां भिन्न छे, माटे शंकायी आ प्रश्न घाय छे. उत्तर-भाषा पुद्गलमय होवायी ते आत्मस्वरूप नयी-दीक्षा.

८. [प्र०] कतिविहा णं भंते! भासा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! चउद्धिहा भासा पण्णत्ता, तंजहा—१ सच्चा, २ मोसा, ३ सच्चा मोसा, ४ असच्चा मोसा।

९. [प्र०] आया भंते! मणे, अन्ने मणे? [उ०] गोयमा! नो आया मणे, अन्ने मणे। जहा भासा तहा मणे वि, जाव—नो अजीवाणं मणे।

१०. [प्र०] पुद्धिं भंते! मणे, मणिज्जमाणे मणे? [उ०] एवं जहेव भासा।

११. [प्र०] पुद्धिं भंते! मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिकंते मणे भिज्जति? [उ०] एवं जहेव भासा।

१२. [प्र०] कतिविहे णं भंते! मणे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! चउद्धिहे मणे पन्नत्ते, तंजहा—१ सच्चे, जाव—४ असच्चा मोसे।

१३. [प्र०] आया भंते! काये, अन्ने काये? [उ०] गोयमा! आया वि काये, अन्ने वि काये।

१४. [प्र०] रूद्धिं भंते! काये, अरूद्धिं काये?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! रूद्धिं पि काये, अरूद्धिं पि काय, एवं एक्केके पुच्छा। गोयमा! सच्चित्ते वि काये, अच्चित्ते वि काय। जीवे वि काय, अजीवे वि काय, जीवाण वि काय, अजीवाण वि काय।

१५. [प्र०] पुद्धिं भंते! काये?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! पुद्धिं पि काय, कायिज्जमाणे वि काय, कायसमयवीतिकंते वि काये।

१६. [प्र०] पुद्धिं भंते! काये भिज्जति?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! पुद्धिं पि काय भिज्जति, जाव—काय भिज्जति।

८. [प्र०] हे भगवन्! भापा केटला प्रकारनी कही छे? [उ०] हे गौतम! भापा चार प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१ सत्य, २ मृपा—असत्य, ३ सत्यमृपा—सत्य लयने असत्य मिश्र, अने ४ असत्यामृपा—सत्य पण नहि तेम असत्य पण नहि.

भापाना प्रकार

९. [प्र०] मन ए आत्मा छे, के तेयी अन्य मन छे? [उ०] हे गौतम! मन ए आत्मा नयी, पण मन अन्य छे—इत्यादि जेम भापा संवन्धे कह्यु, तेम मनसंवन्धे पण जाणतुं, यावत्—अजीवोने मन नयी.

मन.  
मन आत्मा छे  
तेयी अन्य छे

१०. [प्र०] हे भगवन्! [मनननी] पूर्वे मन होय, मनन समये मन होय, के मननसमय वीत्या पछी मन होय? [उ०] जेम भापासंवन्धे कह्युं तेम जाणतुं.

मन वयारे होय

११. [प्र०] हे भगवन्! मनननी पूर्वे मन मेदाय, मननसमये मन मेदाय, के मननसमय वीत्या पछी मन मेदाय? [उ०] जेम भापासंवन्धे कह्युं छे तेम अहिं जाणतुं.

मन वयारे मेदाय

१२. [प्र०] हे भगवन्! मन केटला प्रकारनु कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! मन चार प्रकारनु कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—१ सत्य, २ असत्य, [३ मिश्र] यावत्—४ असत्यामृपा—सत्य पण नहि अने असत्य पण नहि.

मनना प्रकार.

१३. [प्र०] हे भगवन्! काय—शरीर आत्मा छे के तेयी अन्य—आत्मायी 'भिन्न—काय छे? [उ०] हे गौतम! काय आत्मा पण छे, अने आत्मायी भिन्न पण काय छे.

काय आत्मा छे  
तेयी अन्य?

१४. [प्र०] हे भगवन्! काय रूपी छे के अरूपी छे? [उ०] हे गौतम! काय रूपी पण छे अने काय अरूपी पण छे. ए प्रमाणे पूर्ववत् एक एक प्रश्न करवो. हे गौतम! काय सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे, काय जीवरूप पण छे अने अजीवरूप पण छे, तथा काय जीवोने होय छे, तेम अजीवोने पण होय छे.

रूपी के अरूपी

१५. [प्र०] हे भगवन्! पूर्वे काय होय?—इत्यादि [पूर्ववत्] प्रश्न. [उ०] हे गौतम! काय—शरीर [जीवोने संवन्ध थया] पूर्वे पण होय, चीयमान—पुद्गलोना ग्रहण समये पण काय होय, अने कायसमय—पुद्गल ग्रहण समय वीत्या पछी पण काय होय.

काय वयारे होय

१६. [प्र०] हे भगवन्! काय [जीवे ग्रहण कर्या] पूर्वे मेदाय?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! पूर्वे पण काय मेदाय, यावत्—[पुद्गल ग्रहण समय वीत्या वाद] पण यावत्—मेदाय.

काय वयारे मेदाय

१३ \* काय—आत्मस्वरूप छे, केमके काये करेला कर्मनो अनुभव आत्माने थाय-छे, अथवा काय आत्मायी भिन्न छे, केमके कायना एक अशानो छेद थवा छटां पण आत्मानो छेद यतो नयी, माटे आ प्रश्न उपस्थित थाय छे. उत्तर—कथंचित्त काय आत्मस्वरूप पण छे, केमके शरीरने स्पर्श थता तेनो आत्माने अनुभव थाय छे, तेमज कथंचिद् आत्मायी भिन्न पण छे, जो अत्यंत अमिन्न होय तो शरीरनो नाश थता आत्मानो नाश पण थाय—टीका.



१७. [प्र०] कश्चिदे णं भंते ! काये पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे काये पन्नत्ते, तंजहा-१ ओराले, २ ओरालि-यमीसप, ३ वेउच्चिण, ४ वेउच्चियमीसप, ५ आहारप, ६ आहारगामीसप, ७ कम्मप ।

१८. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! मरणे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे मरणे पण्णत्ते, तंजहा-१ आर्याचियमरणे, २ ओह्मिमरणे, ३ आदिंतियमरणे, ४ वालमरणे, ५ पंडियमरणे ।

१९. [प्र०] आधीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-१ द्वाधीचियमरणे, २ सेत्ताधीचियमरणे, ३ कालाधीचियमरणे, ४ भवाधीचियमरणे, ५ भावाधीचियमरणे ।

२०. [प्र०] द्वाधीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउच्चिहे पण्णत्ते, तंजहा-१ नेरइयद्व्या-वीचियमरणे, २ तिरिक्कपजोणियद्व्याधीचियमरणे, ३ मणुस्सद्व्याधीचियमरणे, ४ देवद्व्याधीचियमरणे । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘नेरइयद्व्याधीचियमरणे नेरइयद्व्याधीचियमरणे’ ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइय द्दये वट्टमाणा जाइं, द्दघाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं, वच्चाइं, पुट्टाइं, फडाइं, पट्टवियाइं, निविट्टाइं, अब्भिनिविट्टाइं, अब्भिसमन्नागयाइं भवन्ति ताइं द्दघाइं आधीचियमणुसमयं निरंतरं मरंति त्ति कट्टु से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘नेरइयद्व्याधीचियमरणे,’ एवं जाव-‘देवद्व्या-वीचियमरणे ।

२१. [प्र०] सेत्ताधीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउच्चिहे पण्णत्ते, तंजहा-१ ‘नेरइयसेत्ता-वीचियमरणे, जाव-४ देचयेत्ताधीचियमरणे’ ।

२२. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘नेरइयसेत्ताधीचियमरणे नेर० २’ ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयसेत्ते वट्टमाणा जाइं द्दघाइं नेरइयाउयत्ताए-एवं जदेव द्दघाधीचियमरणे तहेव सेत्ताधीचियमरणे वि । एवं जाव-भावाधीचियमरणे ।

१७. [प्र०] हे भगवन् ! काय केटला प्रकारे कहेट्ठे ? [उ०] हे गौतम ! काय सात प्रकारे कहेट्ठे, ते आ प्रमाणे-१ आदारिक, २ औदारिकमिथ, ३ वैक्रिय, ४ वैक्रियमिथ, ५ आहारक, ६ आहारकमिथ, ७ कार्यण.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! मरण केटला प्रकारे कलुं छे ? [उ०] हे गौतम ! मरण पाच प्रकारुं कलुं छे, ते आ प्रमाणे-१ आधीचिकमरण, २ अवधिमरण, ३ आलांतिकमरण, ४ वालमरण, ५ पंडितमरण.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! आधीचिकमरण केटला प्रकारे कलुं छे ? [उ०] हे गौतम ! आधीचिकमरण पांच प्रकारे करुं छे, ते आ प्रमाणे-१ द्रव्याधीचिकमरण, २ क्षेत्राधीचिकमरण, ३ कालाधीचिकमरण, ४ भवाधीचिकमरण, अने ५ भावाधीचिकमरण.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्याधीचिकमरण केटला प्रकारे कलुं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कलुं छे, ते आ प्रमाणे-१ नैरयिकद्रव्याधीचिकमरण, २ तिर्यचयोनिकद्रव्याधीचिकमरण, ३ मनुष्यद्रव्याधीचिकमरण अने ४ देवद्रव्याधीचिकमरण. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी नैरयिकद्रव्याधीचिकमरणे नैरयिकद्रव्याधीचिकमरण कहो छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकजीवपणे वर्तना नारकोए जे द्रव्योने नैरयिकआयुपणे [स्पर्शयकी] प्रहां छे, [बंधनथी] बावेलां छे, [प्रदेशथी] पुष्ट कर्या छे, [मिश्रिष्टरसथी] करेला छे, [स्थितिबडे] प्रस्थापित कर्या छे, [जीवप्रदेशोमां] निविष्ट-प्रवेशेलां छे, अभिनिविष्टिष्ट-अलंत गाठ प्रवेशेला छे, अने अभिसमन्नागत-उदयाभिमुख थयेला छे, ते द्रव्योने आधीचिक-निरंतर प्रतिसमय मरे छे-छोडे छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! नैरयिक द्रव्याधीचिकमरण नैरयिकद्रव्या-धीचिकमरण कहेवाय छे. ए प्रमाणे [तिर्यचयोनिकद्रव्याधीचिकमरण, मनुष्यद्रव्याधीचिकमरण अने] यावत्-देवद्रव्याधीचिकमरण जाणुं.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्राधीचिकमरण केटला प्रकारे कलुं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कलुं छे, ते आ प्रमाणे-नैरयिकक्षेत्राधीचिकमरण, २ तिर्यचयोनिकक्षेत्राधीचिकमरण, यावत्-४ देवक्षेत्राधीचिकमरण.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे शा हेतुथी नारकक्षेत्राधीचिकमरण नारकक्षेत्राधीचिकमरण कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकक्षेत्राधीचिकमरण वर्तता नारक जीवोए जे द्रव्योने पोते नारकायुपणे ग्रहण करेला छे, अने ते [द्रव्योने प्रतिसमय निरंतर मूके छे]-इत्यादि द्रव्याधीचिकमरण सवधे कहेहुं छे ते अहि कहेहुं, ते माटे नैरयिकक्षेत्राधीचिकमरण कहेवाय छे. अने ए प्रमाणे यावत्-[कालाधीचिकमरण, भवाधीचिकमरण, तथा] भावाधीचिकमरण पण जाणुं.

१८ \* १ आ-समन्ताव, कीचि-तरगनी पेटे प्रतिसमय अनुभवता आयुपकर्मपुद्गलोने अन्य अन्य आयुपना दलिकना उदय धवा साधे क्षय धवो ते आधीचिकमरण, २ अवधि-मर्यादासहित मरण, अर्थात् नरकादि भवना हेतुभूत जे वर्तमान आयुपकर्मना पुद्गलोने अनुभव करीने मरण पामे, अने पुन तेज आयुपकर्मना पुद्गलोने आगामी भवमां ग्रहण करीने मरण पामे जे अवधिमरण कहेवाय छे, कारण के ते द्रव्यनी अपेक्षाए पुनः ते पुद्गलोने ग्रहण करे लां सुधी जीव मरण पामेला छे, बली परिणामना मित्रपणथी ग्रहण करीने छोडेला पुद्गलो पुनः ग्रहण पण सभवे छे, ३ जे नारकादिआयुपकर्मना दलिक भोगवी मरण पामे, अने मरण पामो बली तेज आयुपकर्मना पुद्गलोने अनुभव कर्या शिवाय मरण पामे एवुं जे मरण ते द्रव्यनी अपेक्षाए अलान्तभावी-पणाथी आलान्तिकमरण कहेवाय छे, ४ अविरतिउं मरण ते वालमरण, ५ अने सर्वविरतिउं मरण ते पंडितमरण कहेवाय छे.-टीका.

२३. [प्र०] ओहिमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ दधोहिमरणे, २ खे-  
त्तोहिमरणे, जाव—५ भावोहिमरणे ।

२४. [प्र०] दधोहिमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउच्चिहे पण्णत्ते, तंजहा—१ नेरइयदधोहि-  
मरणे, जाव—४ देवदधोहिमरणे ।

२५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ नेरइयदधोहिमरणे २ ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदधे वट्टमाणा  
जाइं दध्वाइं संपयं मरंति, तेणं नेरइया ताइं दध्वाइं अणागए काले पुणो वि मरिस्संति, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव—दधोहि-  
मरणे । एवं तिरिक्खजोणिय०, मणुस्स०, देवदधोहिमरणे वि । एवं एण्णं गमेणं खेत्तोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि,  
भवोहिमरणे वि, भावोहिमरणे वि ।

२६. [प्र०] आदिंतियमरणे णं भंते ! युच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—१ दध्वादिंतियमरणे, २ खेत्ता-  
दिंतियमरणे, जाव—५ भावदिंतियमरणे ।

२७. [प्र०] दध्वादिंतियमरणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउच्चिहे पन्नत्ते, तंजहा—१ नेरइयदध्वादिंति-  
यमरणे, जाव—४ देवदध्वादिंतियमरणे ।

२८. [प्र०] से केणट्टेणं भंते एवं बुच्चइ—‘नेरइयदध्वादिंतियमरणे नेर० २’ ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदधे  
वट्टमाणा जाइं दध्वाइं संपयं मरंति, तेणं नेरइया ताइं दध्वाइं अणागए काले नो पुणो वि मरिस्संति, से तेणट्टेणं जाव—मरणे ।  
एवं तिरिक्ख०, मणुस्स०, देवाइंतियमरणे, एवं खेत्ताइंतियमरणे वि, एवं जाव—भावाइंतियमरणे वि ।

२९. [प्र०] वालमरणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुवालसविहे पन्नत्ते, तंजहा—१ वलयमरणं, जहा  
खंदए, जाव—१२ गद्धपट्टे ।

२३. [प्र०] हे भगवन् ! अवधिमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ द्रव्याव-  
धिमरण, २ क्षेत्रावधिमरण, [३ कालावधिमरण, ४ भवावधिमरण] यावत्—अने ५ भावावधिमरण. अवधिमरण.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यावधिमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे—१ नेर-  
यिकद्रव्यावधिमरण, २ यावत्—[तिर्यञ्चयोनिकद्रव्यावधिमरण, ३ मनुष्यद्रव्यावधिमरण] अने ४ देवद्रव्यावधिमरण. द्रव्यावधिमरण.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकद्रव्यावधिमरण शा माटे कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकपणे वर्तता नारक जीवो जे द्रव्योने  
सांप्रत काले मूके छे, अने वली ते नारको थइने तेज द्रव्योने भविष्यकाले फरीथी [ग्रहण करीने] पण छोडशे, ते माटे हे गौतम ! नैरयिक-  
द्रव्यावधिमरण कहेवाय छे. ए प्रमाणे तिर्यंचयोनिकद्रव्यावधिमरण, मनुष्यद्रव्यावधिमरण अने देवद्रव्यावधिमरण पण जाणतुं. तथा ए पाठ  
वडे क्षेत्रावधिमरण, कालावधिमरण, भवावधिमरण अने भावावधिमरण जाणतुं. नैरयिकद्रव्यावधि-  
मरण शा हेतुथी कहे  
वाय छे ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! आलंतिकमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! पाच प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१  
द्रव्यालंतिकमरण, २ क्षेत्रालंतिकमरण, यावत्—५ भावालंतिकमरण. आलंतिक मरण.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यालंतिकमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१  
नैरयिकद्रव्यालंतिकमरण, अने यावत्—४ देवद्रव्यालंतिकमरण. द्रव्यालंतिकमरण.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ‘नैरयिकद्रव्यालंतिकमरण’ २ कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकपणे वर्तता जे नारक जीवो  
जे द्रव्योने सांप्रत काले छोडे छे, ते नैरयिको ते द्रव्योने भविष्यकाले फरी चार नहि छोडे, हे गौतम ! ते हेतुथी ‘नैरयिकद्रव्यालंतिकमरण’  
२ कहेवाय छे. ए प्रमाणे तिर्यंचयोनिकद्रव्यालंतिकमरण, मनुष्यद्रव्यालंतिकमरण, अने देवद्रव्यालंतिकमरण पण जाणतुं, तथा ए प्रमाणे  
क्षेत्रालंतिकमरण, यावत्—[कालालंतिकमरण, भवालंतिकमरण अने] भावालंतिकमरण जाणतुं. नैरयिकद्रव्यालंति-  
कमरण शाथी कहे  
वाय छे ?

२९. [प्र०] हे भगवन् ! वालमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ \*वलय-  
मरण,—इत्यादि †स्कन्दकना अधिकारमां कह्या प्रमाणे यावत्—१२ गृध्रस्पृष्टमरण जाणतुं. वालमरणना प्रकार.

३०. [प्र०] पंडित्यमरणे णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तंजदा-१ पाओवगमणे य  
२ भक्तपञ्चखाणे य ।

३१. [प्र०] पाओवगमणे णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तंजदा-णाहारिमे य अनीहारिमे  
य, जाव-नियमं अपडिकम्मे ।

३२. [प्र०] भक्तपञ्चखाणे णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ? [उ०] एवं तं चेवं, नयरं नियमं सपडिकम्मे । 'सेवं भंते !  
सेवं भंते !'त्ति ।

तेरसमसए सत्तमो उद्देशो समत्तो ।

३०. [प्र०] हे भगवन् ! पंडितमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ पादपोपगमन  
( पढेला पादप—वृक्षनी पेठे हाल्या चाल्या शिवाय एकज स्थितिमा उपगमन—रहेवुं ), २ भक्तप्रत्याख्यान ( आहार पाणिनो त्याग करवो ).

३१. [प्र०] हे भगवन् ! पादपोपगमन मरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारसुं कहुं छे, ते आ प्रमाणे—  
१ निर्हारिम ( वसतिना एक भागमां पादपोपगमन कराय के ज्याथी मृत कलेवरने वहार काटवुं पडे ते निर्हारिम पादपोपगमन ) २ अनिर्हारिम  
( पर्वतनी गुफामा के तेवा बीजा स्थळे पादपोपगमन करे के ज्याथी तेसुं मृत कलेवर वहार न काटवुं पडे ते ) यावत्—आ वने प्रकारसुं  
पादपोप गमन मरण अवदय अप्रतिकर्म ( शरीरसंस्काररहित ) होय छे.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! भक्तप्रत्याख्यानरूप मरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] ए प्रमाणे पूर्व कहुआ प्रमाणे तेना ( निर्हारिम अने  
अनिर्हारिम ए वे भेद जाणवा ) पण विशेष ए छे के आ वने प्रकारसुं भक्तप्रत्याख्यानरूप मरण अवदय सप्रतिकर्म—शरीरसंस्कारसहित होय  
छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही विहरे छे.

त्रयोदशशते सप्तम उद्देशक समाप्त.

## अट्टमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, एवं चंधट्टिह-उद्देशो भाणियच्चो निरवसेसो जहा पन्नवणाए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' ति ।

तेरमसए अट्टमो उद्देशो समत्तो ।

## अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मनी केटली प्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! कर्मनी आठ प्रकृतिओ कही छे, अहिं प्रज्ञापना सूत्रनो \*बंधस्थिति नामे संपूर्ण उद्देशक कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

कर्मप्रकृति.

त्रयोदशशते अष्टम उद्देशक समाप्त.

## नवमो उद्देशो ।

१. रायगिहे जाव—एवं वयासी—[प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि मावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएणं अप्पाणेणं उहं वेहासं उप्पएज्जा ? [उ०] गोयमा ! हंता, उप्पएज्जा ।

२. [प्र०] अणगारे णं भंते ! मावियप्पा केवत्तियाइं पभू केयाघडियाहत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउच्चित्तए ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे—एवं जहा तइयसए पंचमुद्देशए जाव—'नो चेव णं संपत्तीए विउच्चिसु वा विउच्चित्ति वा विउच्चिस्संति वा' ।

## नवम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृहमा [भगवान् गौतम] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! जेम कोइ एक पुरुष दोरडाथी वाघेली घटिकाने लइने गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा साधु दोरडाथी वाघेली घटिकानुं कार्य हस्तगत करी [वैक्रियलब्धिथी एवं रूप धारण करी] पोते ऊंचे आकाशमा उडे ? [उ०] हा गौतम ! उडे.

वैक्रियशक्तिथी को दोरडाथी वाघेली घटिका लेरने एवा रूपे गमन करे ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार दोरडाथी वाघेली घटिकाने हायमां धारण करवारूप केटलां रूपो विकुर्वीं शकवाने समर्थ होय ? [उ०] हे गौतम ! 'जेम कोइ एक युवान पुरुष युवतिं स्त्रीने हाय वडे आलिंगे'—इत्यादि ए प्रकारे नृतीयशतकना पांचमा उद्देशकमां कहा प्रमाणे यावत्—संप्राप्ति (संपादन) करवावडे तेवां रूपो विकुर्व्यां नथी, विकुर्वता नथी अने विकुर्वंशो पण नहि.

केटलां रूपो विकुर्वता नथी ?

३. [प्र०] से जहानामप केइ पुरिसे हिरप्रपेलं गहाय गच्छेजा, पचामेव अणगारं वि भाचियप्पा हिरणपेलहत्थकिष्ण-  
गणं अप्पाणेणं ? [उ०] सेसं तं चेव, एवं सुवप्रपेलं, एवं रयणपेलं, दणरपेलं, वत्थपेलं, धामरणपेलं, एवं वियलकिट्टं,  
सुंवकिट्टं, चम्मकिट्टं, कंचलकिट्टं, एवं अयभारं, तंयभारं, तउयभारं, सीसगभारं, हिरभारं, सुवजभारं, वडभारं ।

४. [प्र०] से जहानामप वग्गुली सिया, दो वि पाप उहंविद्या २ उटंपादा अटोसिरा चिट्टंजा; पचामेव अणगारं वि  
भाचियप्पा वग्गुलीकिष्णगणं अप्पाणेणं उटं वेदासं ? [उ०] एवं जघोवइयवत्तयया भाणियथा, जाय-विउच्चिन्संति या ।

५. [प्र०] से जहानामप जलोया सिया, उदगंसि फायं उच्चिदिया २ गच्छेजा, पचामेव ? [उ०] सेसं जहा वग्गुलीए ।

६. [प्र०] से जहानामप वीयंचीयगसउणे सिया, दो वि पाप समतुरंगेमाणे २ गच्छेजा, पचामेव अणगारं ? [उ०]  
सेसं तं चेव ।

७. [प्र०] से जहानामप पनियविरालए सिया, रुदग्गाओ रुदयं उडेमाणे २ गच्छेजा, पचामेव अणगारं ? [उ०] सेसं  
तं चेव ।

८. [प्र०] से जहानामप जीचंजीवगसउणे सिया, दो वि पाप समतुरंगेमाणे २ गच्छेजा, पचामेव अणगारं ? [उ०]  
सेसं तं चेव ।

९. [प्र०] से जहानामप हंस सिया, तीराओ तीरं अभिरममाणे २ गच्छेजा, पचामेव अणगारं हंसकिष्णगणं अप्पा-  
णेणं ? [उ०] तं चेव ।

१०. [प्र०] से जहानामप समुहचायसए सिया, वीईओ वीई उडेमाणे २ गच्छेजा, पचामेव ? [उ०] तहेव ।

३. [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष हिरण्यनी पेटीने उडने गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण हिरण्यनी पेटीना कूलने हन्त-  
गत करी ( एतुं रूप विकुर्वी ) पोते गमनमा उडे ? [उ०] वाकी वधुं पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रकारे सुवर्णनी पेटी, रतनी पेटी, वज्रनी पेटी,  
वखनी पेटी अने घरेणानी पेटीने उडने [आकाशमां गमन करे ?] ए प्रमाणे विदलकट-वासनी सादडी, शुंवकट-वासनी सादडी, चर्मकट,  
चामटाथी भरेल खाटली वगैरे, अने कांवलकट-पायरवाना उनना कांवल्य, तथा छोडाना भारने, तावाना भारने, कलइना भारने, सीसाना  
भारने, हिरण्यना-रूपाना भारने, सुवर्णना भारने अने वज्रना भारने उडने पण गमन करे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जेम कोइ एक वडवागुली होय अने ते पोताना वने पण [वृक्षादिक साथे] उंचा उटकाची, उंचा पण अने  
माथुं नीचे राखीने रहे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण वागुलीना कूलने प्राप्त थयेले [अर्थात् वागुलीनीं पेटे] पोते आकाशमां उंचे  
उडे ? [उ०] हा, उडे. एज प्रमाणे यज्ञोपवीतनी (जनोइनी) वक्तव्यना पण कहेवी. [जेम कोइ ब्राह्मण गळामा जनोइ नाखी गमन करे तेम  
भावितात्मा अनगार तेवुं रूप विकुर्वी-इत्यादि], परन्तु (संप्राप्तिवट तेवा रूपो) विकुर्वी नहि.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जेम कोइ एक जळो होय अने ते पोताना अरारने पाणीना प्रेरी प्रेरीने गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा  
अनगार तेवुं रूप विकुर्वी आकाशमां गमन करे ? [उ०] वाकी वधुं वागुलीनीं पेटे जाणवुं.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जेम कोइ एक वीजंवीजक पक्षी होय, अने ते पोताना वने पणने घोडानी पेटे साथे उपाडतुं गमन करे,  
ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार [तेवा आकारे आकाशमां उडे ? [उ०] हा, उडे.] वाकी वधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं.

७. [प्र०] जेम कोइ एक विलाडक नामे पक्षी होय, अने ते एक वृक्षथी वीजा वृक्षे जतुं, वीजा वृक्षथी वीजा वृक्षे जतुं गति करे  
ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार [तेवा आकारे गमन करे ? [उ०] हा गमन करे.] वाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

८. [प्र०] जेम कोइ एक जीवंचीवक नामे पक्षी होय, अने ते पण पोताना वने पणने घोडानी पेटे साथे उपाडतुं गति करे, एज  
प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पोते तेवा आकारे आकाशमां उडे ? [उ०] वाकी वधुं पूर्व पेटे जाणवुं.

९. [प्र०] जेम कोइ एक हंस होय अने ते आ काठेथी वीजे कांठे रमतो रमतो गति करे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण  
हंस कूलने प्राप्त करी पोते गमनमा [हंसने आकारे उडे ?] [उ०] पूर्ववत् जाणवुं.

१०. [प्र०] जेम कोइ एक समुद्रवायस (समुद्रनो कागडो) होय, अने ते एक तरंगथी वीजा तरंगे जतो गति करे, ए प्रमाणे  
[भावितात्मा साधु पोते एवा आकारे गमनमां गति करे ?] [उ०] ते प्रमाणे जाणवुं.

११. [प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे चकं गहाय गच्छेजा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा चक्रहृत्यकिच्चगएणं अप्पाणेणं ? [उ०] सेसं जहा केयाघडियाए; एवं छत्तं, एवं चमरं ।

१२. [प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेजा, एवं चेव, एवं वहरं, वेरुलियं, जाव-रिट्ठं, एवं उप्पल-हत्थगं, पडमहत्थगं, कुमुदहत्थगं; एवं जाव-से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तगं गहाय गच्छेजा ? [उ०] एवं चेव;

१३. [प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे भिसं अवहालिय २ गच्छेजा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएणं अप्पाणेणं ? [उ०] तं चेव ।

१४. [प्र०] से जहानामए मुणालिया सिया, उदगंसि कायं उम्मज्जिय २ चिट्ठिजा, एवामेव ? [उ०] सेसं जहा वग्गुलीए ।

१५. [प्र०] से जहानामए वणसंडे सिया, किण्ढे, किण्होभासे, जाव-निकुखंभूए, पासादीए ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वणसंडकिच्चगएणं अप्पाणेणं उहं वेहासं उप्पाएजा ? [उ०] सेसं तं चेव ।

१६. [प्र०] से जहानामए पुक्खरणी सिया, चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुवसुजाय० जाव-सदुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा पोक्खरणीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उहं वेहासं उप्पाएजा ? [उ०] हंता उप्पाएजा ।

१७. [प्र०] अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइं रुवाइं विउच्चित्तए ? [उ०] सेसं तं चेव जाव-विउच्चित्तंति वा ।

१८. [प्र०] से भंते ! किं मायी विउच्चति, अमायी विउच्चति ? [उ०] गोयमा ! मायी विउच्चइ, नो अमायी विउच्चइ । मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय० एवं जहा तइयसए चउत्थुइसए जाव-‘अत्थि तस्स आराहणा’ । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते !’त्ति विहरइ ।

### तेरसमसए नवमो उद्देशो समत्तो ।

११. [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष चक्रने लइने गति करे, एज प्रमाणे भावितात्मा अनगार पोते चक्रकृत्यने हस्तगत करिने [एवा आकारे आकाशमां उडे ?] [उ०] बाकी वधुं पूर्वे कहेली दोरडायी वाघेल घटिकानीं पेठे ( सू० १ ) जाणवुं. एज प्रमाणे छत्र तथा चामरने लइने गमन करे.

चक्रहस्त पुरुषनी जेम गति करे ?

१२ [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष रत्तने लइने गमन करे, ए प्रमाणे वज्र, वैडूर्य, यावत्-रिष्ट ( श्यामरत्न ), ए प्रमाणे उत्पलने हस्तगत करी, पद्मने हस्तगत करी, ए प्रमाणे यावत्-कोइ एक पुरुष सहस्रपत्रने लइने गति करे, तेम भावितात्मा अनगार पोते एवा आकारे आकाशमा गति करे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं.

रत्नहस्त पुरुषनी पेठे गति करे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! जेम कोइ एक पुरुष विसनी-कमळनी डाडलीने तोडी तोडीने गति करे, ते प्रमाणे अनगार पण पोते विसकृत्यने प्राप्त करी-एवा प्रकारे] पोते गगनमां गमन करे ? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं.

विस.

१४. [प्र०] जेम कोइ एक मृणालिका-कमलनो छोड पाणीमा कायने-पोताना शरीरने डुवाडी डुवाडी [ मुख वहार राखीं ] रहे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पोते एवा आकारे गगनमां उडे ? [उ०] बाकी वधुं वागुलीनीं पेठे जाणवुं.

मृणालिका.

१५. [प्र०] जेम कोइ एक वनखंड होय, अने ते काळो, काळा प्रकाशवाळो, यावत्-मेघना समूहरूप, प्रसन्नता देनार अने [दर्शनीय] होय, ए ज प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पोते वनखंडना कृत्यने प्राप्त करी अर्थात् एवा आकारे पोते गगनमां उडे ? [उ०] बाकी वधुं पूर्वे प्रमाणे जाणवुं.

वनखंड

१६. [प्र०] जेम कोइ एक पुष्करिणी-वाव होय, अने ते चोखंडी, समान काठावाळी, जेने अनुक्रमे सुशोभित वप्र-वंडी छे एवी, पोपट वगेरे पक्षीओना मोटा शब्दवाळी, तेओना मधुर स्वरवाळी अने प्रसन्नता आपनार होय, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पुष्करिणीना कृत्यने प्राप्त करी-एवा आकारने विकुर्वी पोते आकाशमा उडे ? [उ०] हा उडे.

पुष्करिणीना आकारे आकाशमा गमन करे ?

१७. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार पुष्करिणीना कृत्यने प्राप्त-एवा आकारवाळां केटलां रूपो विकुर्ववाने समर्थ थाय ? [उ०] बाकी पूर्वे प्रमाणे जाणवुं, पण ते संप्राप्तियी यावत्-विकुर्वशे नहि.

केटला रूपो विकुर्वे ?

१८. [प्र०] हे भगवन् ! [पूर्वोक्त रूपो] मायावाळो विकुर्वे के मायारहित ( अनगार ) विकुर्वे ? [उ०] हे गौतम ! मायावाळो विकुर्वे, पण मायारहित साधु न विकुर्वे. मायावाळो साधु विकुर्वेणारूप प्रमाद स्थानकनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्था शिवाय काळ करे-इत्यादि \*तृतीय शतकना चोथा उद्देशकमा कक्षा प्रमाणे जाणवुं, यावत्-‘तेने आराधना थाय छे-’ ल्यां सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे-’ एम कही [भगवान् गौतम ! ] यावद्-विहरे छे.

मायारहित के मायारहित विकुर्वे ?

### त्रयोदशशते नवम उद्देशक समाप्त.

## दसमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कति णं मंते ! छाउमत्त्वियसमुग्वाया पत्रत्ता ? [उ०] गोयमा ! छ छाउमत्त्वियया समुग्वाया पत्रत्ता, तंजहा-  
१ वेयणासमुग्वाय, एवं छाउमत्त्वियसमुग्वाया नेयत्ता, जहा पत्रवणाप, जाय-आहारगतसमुग्वायेत्ति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !'  
त्ति जाय-विहरति ।

तेरसमसए दसमो उद्देशो समत्तो ।

तेरसमं सयं समत्तं ।

## दशम उद्देशक.

१. [प्र०]-हे भगवन् ! छात्रस्थिक समुद्घातो केटल कखा छे ? [उ०] हे गौतम ! छात्रस्थिक छ समुद्घातो कखा छे, ते आ  
प्रमाणे-१ वेदनासमुद्घात-इत्यादि ए प्रमाणे छात्रस्थिक समुद्घातो \* प्रजापनामूत्रता समुद्घात पदमा कखा प्रमाणे यावत्-आहारसमुद्घात  
सुची जाणवा. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही [भगवान् गौतम]यावद्-निहरे छे.

त्रयोदशशते दशम उद्देशक समाप्त.

त्रयोदशशतक समाप्त.

## चौदसमं सयं ।

१. १ चर २ उम्माद ३ सरीरे ४ पोग्गल ५ अगणी तथा ६ किमाहारै ।  
७ संसिद्ध ८ मंतरे खलु ९ अणगारे १० केवली चैव ॥

### पढमो उद्देशो ।

२. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-अणगारे णं मंते ! भावियप्पा चरमं देवावासं वीतिकंते, परमं देवावासम-संपत्ते, पत्थ णं अंतरा कालं करेज्जा, तस्स णं मंते ! कहिं गती, कहिं उववाप पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे से तत्थ परिय-स्सथो तल्लेसा देवावासा, तहिं तस्स गहिं, तहिं तस्स उववाप पन्नत्ते । से य तत्थ गप विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडिपडति, से य तत्थ गप नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ता णं विहरति ।

### चतुर्दश शतक.

१. [उद्देशक संग्रह-] १ चरमशब्दसहित होवाथी चरमनामे प्रथम उद्देशक, २ उम्मादना अर्थनो प्रतिपादक होवाथी उम्मादनामे बीजो उद्देशक, ३ शरीरशब्दसहित होवाथी शरीरनामे बीजो उद्देशक, ४ पुद्गल-पुद्गलार्थ प्रतिपादित करवाथी पुद्गलनामे चौथो उद्देशक, ५ अग्निशब्दसहित होवाथी अग्निनामे पंचम उद्देशक, ६ किमाहार-( कहीं दिशाना आहारवाळो होय छे ? ) ए प्रश्नयुक्त होवाथी किमाहार-नामे षष्ठ उद्देशक, ७ \*'विरसंसिद्धो सि गोयमा' !-आ पदमा आवेला संश्लिष्टशब्दसहित होवाथी सातमो संश्लिष्ट उद्देशक, ८ नरकपृथिवीना अन्तरने प्रतिपादन करवाथी आठमो अन्तर उद्देशक, ९ प्रारंभमा 'अनगार'-पद होवाथी नवमो अनगार उद्देशक, अने १० आरंभमा 'केवली'-ए पद होवाथी दशमो केवली उद्देशक-[ए प्रमाणे चौदमां शतकमा दश उद्देशको कहेवामा आवशे.]

### प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावद्-आ प्रमाणे वोल्या के, हे भगवन् ! भावित्तामा अनगार (साधु) जेणे चरम-छेछा देवावासतुं उल्लंघन कर्युं छे, अने हजी परम-आगळना देवावासने प्राप्त थयो नथी, आ अवसरे ते काल करे-मरण पामे तो हे भगवन् ! तेनी क्या गति थाय अने तेनो क्या उत्पाद थाय ? [उत्तरोत्तर प्रशस्त अध्यवसायस्थानने विपे वर्तमान अनगार चरम-सौधर्मादिदेवलोकना आ छेडे वर्तमान देवावासनी स्थित्यादिना बन्धने योग्य अध्यवसायस्थानने ओळंगी गयो छे, अने परम-उपर रहेला सनत्कुमारादि देवलोकना स्थित्यादिना बन्धने योग्य अध्यवसायने प्राप्त थयो नथी, आ अवसरे काल करे तो ते क्यां उपजे ?] [उ०] हे गौतम ! चरम देवावास अने परम देवावासनी पासे ते लेख्यावाळं देवावासो छे त्यां तेनी गति अने त्या तेनो उत्पाद कहेलो छे. [सौधर्मादिदेवलोक अने सनत्कुमारादि देव-लोकनी पासि ईशानादि देवलोकमा जे लेख्याए साधु मरण पामे ते लेख्यावाळा देवावासोने विपे तेनी गति अने तेनो उत्पाद थाय छे.] ते साधु त्यां जइने पोतानी पूर्व लेख्याने विराधे-छोडे तो ते कर्मलेख्या-भावलेख्याथी पडे छे, अने जो ते त्यां जइने न विराधे तो तेज लेख्यानो आश्रय करी विहरे छे.

भावित्तामा अन-  
गार जेणे चर-  
देवावासतुं उल-  
घन कर्युं छे अ-  
परम देवावासनं  
प्राप्त थयो नथी  
ते मरीने क्यां  
उपजे ?

१ \* हे गौतम ! तुं लांबा कालथी [मारी साथे] संबन्धवाळो छे.

२ † देव अने नारको ब्रह्म लेख्याथी पडता नथी, भावलेख्याथी पडे छे, कारण के तेने ब्रह्मलेख्या अवस्थित होय छे.



३. [प्र०] अणगारे णं भंते ! माधियण्णा चरमं असुरकुमारावासं धीतिपंते, परमं असुर० [उ०] एवं चैव, एवं जाव-धणियकुमारावासं, जोइसियावासं, एवं वेमाणियावासं, जाव-विहरति ।

४. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कइं सीहा गती, कइं सीहे गतिविसए पणत्ते ? [उ०] गोयमा ! से जदानामए-अए पुरिसे तरणे बलवं जुगवं जाव-निउणसिण्णोवगए आउट्टियं घाहं पसारेज्जा, पसारियं वा घाहं आउट्टेज्जा, विमिसणं वा सुट्टि साहरेज्जा, साहरियं वा सुट्टि विमिसरेज्जा, उमिमिसियं वा अचिं णिमिसेज्जा, निम्मिसियं वा अचिं उम्मिसेज्जा, भवे पयारुवे ? णो तिण्टे समट्टे, नेरइया णं प्गममपण वा दुसमपण वा निममपण वा विग्गहेणं उवयज्जंति; नेरइयाणं गो-यमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पणत्ते. एवं जाव-वेमाणियाणं, नवरं पंगदियाणं चउसमए विग्गहे भाणि-यधे । सेसं तं चैव ।

५. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं अणंतरोवघ्नगा, परंपरोवघ्नगा, अणंतरपरंपरअणुवघ्नगा ? [उ०] गोयमा ! नेरइया अणंतरोवघ्नगा वि, परंपरोवघ्नगा वि, अणंतरपरंपरअणुवघ्नगा वि [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं चुचइ-जाव-अणंतरपरंपरअणुवघ्नगा वि ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयोवघ्नगा ते णं नेरइया अणंतरोवघ्नगा, जे णं नेरइया अपढम-

३. [प्र०] हे भगवन् ! भावितामा अनगर चरम-आ तरफ छेहा असुरकुमारावामने ओळंगी गयो छे अने परम असुरकुमारावासने प्राप्त थयो नथी, ते जो आ अवसरे मरण पामे तो ते क्या उपजे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं. ए रीते यावत्-स्तनिनकुमारावास, ज्योतिनि-कावास अने वैमानिकावासपर्यन्त यावत्-‘विहरे छे’ त्यां सुधी जाणवुं.

४. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोनी केवा प्रकारनी शीघ्र गति कही छे, अने तेओनो केवा प्रकारनी शीघ्र गतिनो विषय (समय) कस्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष तरुण, बलिष्ठ, युगवाळो (विशिष्ट बलवाळा सुपमादिकाळमा उत्पन्न थयेछो) अने यावत्-निपुण शिल्पशास्त्रनो ज्ञाता होय; ते पोताना संकुचित हायने (त्वराथी) पसारे अने पसारेछा हायने संकुचित करे, पसारेछा मुठिने संकुचित करे, अने संकोचेली मुठिने पसारे-उघाडे, उघाडेली आंगने मीची ठे अने मीचेली आंगने उघाटे, हे गौतम ! (नारकोनी) आवा प्रकारनी-शीघ्रगति अथवा शीघ्र गतिनो विषय होय ? आ अर्थ समर्थ-यथार्थ नथी. नारको एक समयनी (ऋजुगनिवटे) अने वे समय के त्रण समयनी विग्रहगतिवडे उत्पन्न थाय छे. हे गौतम ! तेवा प्रकारे (एक समय, वे समय के त्रण समयनी) नैरयिकोनी शीघ्रगति अथवा शीघ्रगतिनो विषय कस्यो छे. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के, एकेन्द्रियोने (उत्कृष्ट) चार समयनी विग्रहगति कहेवी. चाकी (पृथिवीकायिकादि दंडकने विषे) वधुं पूयं प्रमाणे जाणवुं.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जुं नैरयिको अनन्तरोपपन्न (जेओनी उत्पत्तिमां समयादिकलुं अन्तर नथी, अर्थात् नारकभवना प्रथम समये उत्पन्न थयेछा एवा) छे, परंपरोपपन्न (जेओनी उत्पत्तिने वे-त्रण-इत्यादि समयनो परंपरा थयेली छे तेवा) छे, अनन्तरपरंपरानुपपन्न (जेओनी अनन्तर अने परंपर-ए वने प्रकारनी उत्पत्ति थयेली नथी एवा) छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको अनन्तरोपपन्न छे, परंपरोपपन्न छे अने अनन्तरपरंपरानुपपन्न पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे जा हेतुधी कस्यो छो के, नैरयिको यावत्-अनन्तरपरंपरानुपपन्न छे ? [उ०] हे गौतम ! जे नैरयिको प्रथम समये उत्पन्न थया छे तेओ ‘अनन्तरोपपन्न’ कहेवाय छे, जे नैरयिकोनी उत्पत्तिमां प्रथम समय शिवाद्य द्वितीयादि समयो व्यतीत थया छे तेओ ‘परंपरोपपन्न’ कहेवाय छे अने जे नैरयिको विग्रहगतिने प्राप्त थया छे ते ‘अनन्तरपरंपरानुपपन्न’ कहेवाय छे,

४ \* अहिं एक भवथी भवान्तरमां गमनकरवाह्य गति जाणवी. नारको नरकगतिमां एक समय, वे समय अने त्रण समयनी गतिवडे उत्पन्न थाय छे. तेमां ऋजुगति एक समयनी होय छे, अने विग्रहगति वे अथवा त्रण समयनी होय छे ते शीघ्रगति कहेवाय छे. बाहुप्रमारणादि गतिनो बाल अरुंरुय समयनो छे, तेथी तेवा प्रकारनी गतिने शीघ्रगति न कहेवाय. स्वारे जीव समभ्रेणिए थावेला उत्पत्ति स्थानके जइने उपजे छे स्वारे तेने ऋजुगति एक समयनी होय छे, पण ज्यारे उत्पत्तिस्थानक समभ्रेणिमा होवुं नथी स्वारे विग्रहगति वे के त्रण समयनी होय छे, अने एकेन्द्रिय जीवने उत्कृष्ट चार समयनी विग्रहगति होय छे, तेमा वे समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे-ज्यारे कोइ जीव भरतज्ञेवनी पूर्व दिशाथी नरकमां पश्चिम दिशाए उत्पन्न थाय, स्वारे प्रथम समये नीचे थावे, चीजे समये तिछी उत्पत्तिस्थानके जाय. ए रीते वे समयनी विग्रहगति जाणवी. त्रण समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे-ज्यारे कोइ जीव भरतनी पूर्व दिशाथी नरकमां वायव्य दिशा तरफ उपजे स्वारे ते एक समये समभ्रेणिद्वारा नीचे थावे, चीजे समये तिछी पश्चिम दिशाए जाय, त्रीजा समये तिर्यग् वायव्य दिशाने विषे उत्पत्तिस्थानके जइने उपजे. ए प्रमाणे नारकोनो शीघ्रगतिकाल अथवा आवा प्रकारनी शीघ्रगति कही.

† एकेन्द्रियोने चार समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे होय छे-एक समयमां त्रसनादीथी बहार अधोलोकनी विदिशाथी दिशा तरफ जाय, केमके जीवनी गति भ्रेणिने अधुसारे होय छे. चीजा समये लोकना मध्यमागमां प्रवेश करे, त्रीजा समये उंचे (ऊर्ध्वलोकमां) जाय, अने चोथे समये त्रसनादीथी नीकळी दिशाने विषे व्यवस्थित उत्पत्तिस्थाने जाय. आ वात सामान्यरीते घणा जीवने आश्रयी कही. अन्यथा एकेन्द्रियने पांच समयनी विग्रहगति संभवे छे. ते आ प्रमाणे—१ त्रसनादीथी बहार अधोलोकनी विदिशाथी दिशा तरफ जाय, २ चीजा समये लोकमा प्रवेश करे, ३ त्रीजा समये ऊर्ध्वलोकमां जाय, ४ चोथी समये लाथी दिशा तरफ जाय, अने ५ पांचमा समये विदिशासा रहैवा उत्पत्तिस्थानके जाय. एम पांच समयनी विग्रहगति कही.

समयोववन्नगा ते णं नेरइया परंपरोववन्नगा, जे णं नेरइया विग्गहगइसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतरपरंपरअणुववन्नगा, से तेणट्टेणं जाव—अणुववन्नगा वि, एवं निरंतरं जाव—वेमाणिया ।

६. [प्र०] अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्ख०, मणुस्स०, देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव—नो देवाउयं पकरेंति ।

७. [प्र०] परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, जाव—देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति ।

८. [प्र०] अणंतरपरंपरअणुववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा । [उ०] नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव—नो देवाउयं पकरेन्ति, एवं जाव—वेमाणिया, नवरं पंचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति, सेसं तं चव ।

९. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं अणंतरनिग्गया, परंपरनिग्गया, अणंतरपरंपरअनिग्गया ? [उ०] गोयमा ! नेरइया णं अणंतरनिग्गया वि, जाव—अणंतरपरंपरनिग्गया वि । [प्र०] से केणट्टेणं जाव—अणिग्गया वि ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे णं नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया परंपरनिग्गया, जे णं नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतरपरंपरअणिग्गया, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव—अणिग्गया वि, एवं जाव—वेमाणिया ।

१० [प्र०] अणंतरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, जाव—देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव—नो देवाउयं पकरेंति ।

माटे ते हेतुथी हे गौतम ! नैरयिको पूर्वं प्रमाणे यावत्—‘अनन्तरपरम्परानुपपन्न छे—’ल्यां सुधी कहेहुं. ए प्रमाणे निरन्तर यावत्—वैमानिको सुधी कहेहुं.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्न ( प्रथम समये उत्पन्न थयेला ) नैरयिको शुं नैरयिकुं आयुप वांघे, तिर्यचनुं आयुप वांघे, मनुष्यनुं आयुप वांघे, के देवनुं आयुप वांघे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकुं आयुप न वांघे, यावद्—देवनुं आयुप पण न वांघे.

अनन्तरोपपन्न नारको आशयी आसुपनो बन्ध

७. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन्न नैरयिको शुं नैरयिकुं आयुप वांघे, यावद्—देवनुं आयुप वांघे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकुं आयुप वाधता नथी, तिर्यचनुं आयुप वांघे छे, मनुष्यनुं आयुप पण वांघे छे, देवनुं आयुप वांघता नथी.

परंपरोपपन्न नैरयिकोने आयुपनो बन्ध

८. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरपरंपरानुपपन्न ( विग्रहगतिने प्राप्त थयेला ) नैरयिको शुं नैरयिकुं आयुप वांघे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकुं आयुप न वांघे, यावत्—देवायुप पण न वांघे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जानुं. परन्तु एट्टो विशेष छे के परंपरोपपन्न पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको अने मनुष्यो चारे प्रकारना आयुप वांघे छे. बाकी वधुं पूर्वं प्रमाणे कहेहुं.

अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरयिको अनन्तरनिर्गत ( नरकादिथी नीकळी भवान्तर प्राप्त थयेला जेओने प्रथम समय वर्ते छे, समयादिना अन्तरनो अभाव छे )—परंपरनिर्गत ( नरकादिथी नीकळी भवान्तरने प्राप्त थयेला जेओने वे—त्रण—इत्यादि समयोनुं अन्तर छे ) अने अनन्तर—परम्परानिर्गत ( जेओ नरकथी नीकळी विग्रहगतिमां वर्तता होय छे, अने ज्यां सुधी उत्पत्ति क्षेत्रने प्राप्त न थाय त्यासुधी ते अनन्तरभावे अने परंपरभावे अनिर्गत एवा ) छे ? [उ०] हे गौतम ! नारको अनन्तरनिर्गत पण होय छे, यावत्—अनन्तरपरम्परानिर्गत पण होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के यावत्—‘नारको अनन्तरपरम्परानिर्गत छे’ ? [उ०] हे गौतम ! जे नैरयिको नरकथी प्रथम समये नीकळेल छे तेओ अनन्तरनिर्गत, जेओ प्रथमसमय व्यतिरिक्त द्वितीयादि समयथी निकळेल छे तेओ परंपरनिर्गत, अने जेओ विग्रहगतिने प्राप्त थयेला छे तेओ अनन्तरपरंपरानिर्गत छे. माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के नैरयिको

अनन्तरनिर्गतादि नैरयिको.

यावत्—अनन्तरपरम्परानिर्गत छे. ए प्रमाणे यावद्—वैमानिको सुधी [ ए त्रण त्रण आलापको ] कहेवा.

नारको अनन्तरनिर्गतादि केम कहेवाय छे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरनिर्गत नारको शुं नरकायुप वांघे, के यावद्—देवायुप वांघे, [उ०] हे गौतम ! तेओ नारकायुप न वांघे, यावत्—देवायुप न वांघे.

अनन्तरनिर्गतादिने आशयी आसुपनो बन्ध

५ \* जेओनी अनन्तर अने परम्पर—ए बन्धे प्रकारनी उत्पत्ति नथी एवा विग्रहगतिमां वर्तमान जीवो ‘अनन्तरपरंपरानुपपन्न’ कहेवाय छे, केमके अनन्तर उत्पत्ति भवना प्रथमसमये होय छे, परंपरोत्पत्ति द्वितीयादि समये होय छे, अने विग्रहगतिमा बन्धे प्रकारनी उत्पत्तिनो अभाव छे.

६ † अहिं अनन्तरोपपन्न अने अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको चारे प्रकारना आयुपनो बन्ध करता नथी, केमके ते अवस्थामा तेवा प्रकारना अध्यवसायना अभावे सर्वे जीवोने आयुपनो बन्ध थतो नथी पोताना आयुपना तृतीय भागादि बाकी होय ल्यारे आयुपनो बन्ध धाय छे, तेथी परंपरोपपन्न नैरयिको पोताना आयुपना छ मास बाकी होय ल्यारे अने सतान्तरं उच्छेद्यथी छ मास अने जघन्यथी अन्तर्दुर्हृत बाकी होय ल्यारे भवनिमित्तक तिर्यच अने मनुष्यायुप वांघे छे, ते शिवाय देव अने नारकना आयुपनो बन्ध करता नथी.—टीका.

११. [प्र०] परंपरनिगया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं०-पुच्छा । [उ०] गीयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, जाय-देवाउयं पि पकरेंति ।

१२. [प्र०] अणंतरपरंपरअणिगया णं भंते ! नेरइया-पुच्छा । [उ०] गीयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाय-नो देवाउयं पकरेंति, एवं निरखसेसं जाय-घेमाणिया ।

१३. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं अणंतरपेदोवघग्गा, परंपरपेदोवघग्गा, अणंतरपरंपरसेदाणुवघग्गा ? [उ०] गीयमा ! नेरइया०, एवं एएणं अभिलाषेणं तं चेव चत्तारि दंडगा भाणियथा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !'त्ति जाय-विहरए ।

### चौदसमसए पढमो उद्देशो समचो ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरनिर्गत नारको शुं नारकायुप वाधे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नारकायुप पण वाधे, यावत्-देवायुप पण वाधे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरपरंपरानिर्गत नारको शुं नारकायुप वाधे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नारकायुप न वाधे, यावद्-देवायुप पण न वाधे. [कारण के अनन्तरपरंपरानिर्गत नारको विग्रहगतिते विधे होय छे अने त्वां आयुपनो वन्ध यतो नथी.] ए प्रमाणे समग्र यावद्-त्रैमानिको सुची जाणवुं.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नेरयिको शुं अनन्तरखेदोपपन्न (समयादिना अन्तररहित-प्रथम समये जेओनो दुःखयुक्त उत्पाद छे एवा) छे, परंपरखेदोपपन्न (जेओना खेदयुक्त उत्पादमां वे-त्रण इत्यादि समयो थयेला छे एवा) छे के अनन्तरपरंपरखेदानुपपन्न (जेओनी उन्पत्ति अनन्तर-तुरतज अने परम्पर खेदवडे नथी तेवा) छे? [उ०] हे गौतम ! ए नेरयिको अनन्तरखेदोपपन्न-इत्यादि त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे ए अभिलाषयी पूर्व प्रमाणे चार दंडको कहेवा 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,' एम कही [भगवान् गौतम] यावद्-विहारे छे.

### चतुर्दशशतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

## बीओ उद्देशो ।

१. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! उम्मादे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तंजहा—जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं । तत्थ णं जे से जक्खाएसे से णं सुहवेयणतराय चेव सुहविमोयणतराय चेव । तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयणतराय चेव दुहविमोयणतराय चेव ।

२. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तंजहा—जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तंजहा—जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स जाव—उदएणं’ ? [उ०] गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा, से तेणट्टेणं जाव—उम्माए ।

३. [प्र०] असुरकुमारारणं भंते ! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते ? [उ०] एवं जहेव नेरइयाणं, नवरं देवे वा से महिङ्गीयतराय असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा, सेसं तं चेव, से तेणट्टेणं जाव—उदएणं, एवं जाव—थणियकुमारारणं । पुढविकाइयाणं जाव—मणुस्साणं एएसिं जहा नेरइयाणं; वाणमंतर—जोइस—वेमाणियाणं जहा असुरकुमारारणं ।

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटला प्रकारनो उन्माद कल्लो छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारनो \*उन्माद कल्लो छे, ते आ प्रमाणे—१ यक्षणा आवेशरूप, अने २ मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो. तेमा जे यक्षावेशरूप उन्माद छे ते सुखपूर्वक वेदी शकाय अने सुखपूर्वक मूकी शकाय तेवो छे, अने तेमां जे मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो उन्माद छे ते दुःखपूर्वक वेदवा लायक अने दुःखपूर्वक मूकी शकाय तेवो छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनो उन्माद कल्लो छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने वे प्रकारनो उन्माद होय छे, ते आ प्रमाणे—१ यक्षावेशरूप उन्माद अने २ मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो उन्माद. [प्र०] हे भगवन् ! आप एम शा हेतुथी कहो छो के, ‘नैरयिकोने एक यक्षावेशरूप अने वीजो मोहनीयकर्मजन्य एम वे प्रकारनो उन्माद होय छे’ ? [उ०] हे गौतम ! देव ते नैरयिकना उपर अशुभ पुद्गलोने प्रक्षेप करे अने ते अशुभ पुद्गलोना प्रक्षेपथी ते नारक यक्षावेशरूप उन्मादने प्राप्त थाय, अने मोहनीय कर्मना उदयथी मोहनीयजन्य उन्मादने पामे; माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावत्—‘मोहनीयजन्य उन्माद कल्लो छे.’

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटला प्रकारनो उन्माद कल्लो छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकनी पेठे यावत् वे प्रकारनो उन्माद कल्लो छे. परन्तु विशेष ए छे के तेनाथी महर्द्धिक—महासामर्थ्यवाळो देव ते [असुरकुमारो उपर] अशुभ पुद्गलोने प्रक्षेप करे, अने ते अशुभ पुद्गलोना प्रक्षेप करवाथी ते यक्षावेशरूप उन्मादने प्राप्त थाय. अथवा मोहनीयकर्मना उदयथी मोहनीयजन्य उन्मादने प्राप्त थाय. वाकी वधुं पूर्वप्रमाणे ‘ते हेतुथी यावत्—मोहनीयजन्य उन्माद कल्लो छे’ त्या सुची जाणहुं. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमार सुची जाणहुं. पृथिवीकायिकथी आरंभी यावत् मनुष्योने नैरयिकनी पेठे जाणहुं. जेम असुरकुमारोने कल्लुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिपिक अने वैमानिक संबन्धे पण कहहुं.

१ उन्माद—स्पष्ट चेतनानो ( विवेकज्ञाननो ) भ्रंश, तेना वे प्रकार छे—१—यक्ष—देवविशेषना प्रवेश करवाथी चेतनानो भ्रंश थाय ते यक्षावेशरूप उन्माद, अने मोहनीयकर्मना उदयथी आत्मा पारमार्थिक सद्—असद्ना विवेकथी भ्रंश थाय ते मोहनीयजन्य उन्माद. २ मोहनीयजन्य उन्मादना वे मेद छे— १ मिथ्यात्वमोहनीयजन्य अने २ चारित्रमोहनीय जन्य. मिथ्यात्वमोहनीयना उदयथी प्राणी अतत्त्वने तत्त्व माने अने तत्त्वने अतत्त्व माने छे, चारित्रमोहनीयना उदयथी विषयादिषु स्वरूप जाणता छतां पण तेमा अज्ञानीनी पेठे वलें छे अथवा वेदमोहनीयना उदयथी हिताहिततुं भान भूली उन्मात्त थाय छे. टीका.

उन्मादना प्रकार

नारकोनो उन्मा  
नारकोने शा हे  
तुथी उन्माद  
होय !

असुरकुमारोने  
उन्माद-

४. [प्र०] अत्रिय णं मंते ! पञ्चमे कालयासी वुट्टिकायं पकरेति ? [उ०] हंता अत्रिय ।

५. [प्र०] जाहे णं मंते ! सके देविंदे देवराया वुट्टिकायं काउकामे भवति से कम्मियाणि पकरेति ? [उ०] गोयमा ! ताहे चेव णं से सके देविंदे देवराया अम्मितरपरिसाए देवे सहावेति, तए णं ते अम्मितरपरिसगा देवा सहाविया समाणा मज्जिमपरिसए देवे सहावेति, तए णं ते मज्जिमपरिसगा देवा सहाविया समाणा वाहिरपरिसए देवे सहावेति, तए णं ते वाहिरपरिसगा देवा सहाविया समाणा वाहिरवाहिरगे देवे सहावेति, तए णं ते वाहिरवाहिरगा देवा सहाविया समाणा आम्मिओगिए देवे सहावेति, तए णं ते जाव-सहाविया समाणा वुट्टिकाए देवे सहावेति, तए णं ते वुट्टिकाए देवा सहाविया समाणा वुट्टिकायं पकरेति, एवं सल्लु गोयमा ! सके देविंदे देवराया वुट्टिकायं पकरेति ।

६. [प्र०] अत्रिय णं मंते ! असुरकुमारा चि देवा वुट्टिकायं पकरेति ? [उ०] हंता अत्रिय । [प्र०] किंपत्तियं णं मंते ! असुरकुमारा देवा वुट्टिकायं पकरेति ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अरहंता भगरंता पणनि णं जम्मणमहिमासु वा निम्मणमहिमासु वा णाणुप्पायमहिमासु वा परिनिघाणमहिमासु वा एवं सल्लु गोयमा ! असुरकुमारा चि देवा वुट्टिकायं पकरेति, एवं नागकुमारा चि, एवं जाव-अणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-त्रेमाणिया एवं चेव ।

७. [प्र०] जाहे णं मंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं काउकामे भवति से कम्मियाणि पकरेति ? [उ०] गोयमा ! ताहे चेव णं से ईसाणे देविंदे देवराया अम्मितरपरिसाए देवे सहावेति, तए णं ते अम्मितरपरिसगा देवा सहाविया समाणा एवं जहेव सक्ख्त जाव-तए णं ते आम्मिओगिया देवा सहाविया समाणा तमुकाए देवे सहावेति, तए णं ते तमुकाए देवा सहाविया समाणा तमुकायं पकरेति, एवं सल्लु गोयमा ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं पकरेति ।

८. [प्र०] अत्रिय णं मंते ! असुरकुमारा चि देवा तमुकायं पकरेति ? [उ०] हंता अत्रिय । [प्र०] किं पत्तियं णं मंते ! असुरकुमारा देवा तमुकायं पकरेति ? [उ०] गोयमा ! किट्टा-रुत्तियं वा पटिणीयविमोहणट्टयाए वा गुत्तीसारक्खणहेइं वा अण्णो वा सरीप्पच्छायणट्टयाए, एवं सल्लु गोयमा ! असुरकुमारा चि देवा तमुकायं पकरेति, एवं जाव-त्रेमाणिया । 'संवं मंते ! संवं मंते !' चि जाव-विहरइ ।

### वीओ उदेशो समत्तो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के काले वरसनार पर्जन्य (मिव) वृष्टिकाय (जडसमूह)ने वरसावे ? [अथवा जिन जन्ममहोत्सवादि काले वृष्टि करनार पर्जन्य-इन्द्र वृष्टि करे ? [उ०] हा, गौतम ! वृष्टि करे.

५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे देवेन्द्र अने देवनो राजा अक्र वृष्टि करवानो इच्छागळो होय ल्यारे ते वृष्टि केवो रीते करे ? [उ०] हे गौतम ! [ज्यारे ते वृष्टि करवानो इच्छागळो होय] ल्यारे देवेन्द्र अने देवनो राजा अक्र अन्यन्तर परिपदना देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते अन्यन्तर परिपदना देवो मय्यम परिपदना देवोने बोलावे छे, मय्यम परिपदना बोलावेला ते देवो बहारनो परिपदना देवोने बोलावे छे, ल्यार पछी बहारनो परिपदना बोलावेला ते देवो बहारबहारना देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते बहार बहारना देवो आम्मिओगिक देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते आम्मिओगिक देवो वृष्टिकायिक (वृष्टि करनार) देवोने बोलावे छे, पछी ते बोलावेला वृष्टिकायिक देवो वृष्टि करे छे. ए प्रमाणे हे गौतम ! देवेन्द्र देवनो राजा अक्र वृष्टिकाय करे छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो पण शुं वृष्टि करे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, करे छे. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो आ हेतुथी वृष्टि करे छे ? [उ०] हे गौतम ! जे आ अरिहंत भगवन्नो छे, एओना जन्मोत्सवनिमित्ते, दीक्षोत्सवनिमित्ते, ज्ञानोत्पत्तिनिमित्ते अने निर्वाणना उत्सवनिमित्ते ए प्रमाणे असुरकुमार देवो वृष्टि करे छे. ए प्रमाणे नागकुमारो अने यावत्-स्नानिकुमारो सुर्वा जाणहुं. वानव्यंतर ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण ए प्रमाणे जाणहुं.

७. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र अने देवना राजा ईशान ज्यारे तमस्कायने करवाने इच्छे ल्यारे ते तेने केवो रीते करे ? [उ०] हे गौतम ! ल्यारे देवेन्द्र अने देवना राजा ईशान अन्यन्तर परिपदना देवोने बोलावे छे, ल्यार वाड बोलावेला ते अन्यन्तर परिपदना देवो-इलादि पूर्वोक्त वधुं अक्रनी पेटे यावत्-बोलावेला ते आम्मिओगिक देवो तमस्कायिक (तमस्काय करनार) देवोने बोलावे छे, अने ल्यार पछी बोलावेला ते तमस्कायिक देवो तमस्काय करे छे. हे गौतम ! ए प्रमाणे देवेन्द्र अने देवना राजा ईशान तमस्काय करे छे.

८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के असुरकुमार देवो पण तमस्कायने करे ? [उ०] हे गौतम ! हा, करे छे [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो आ हेतुथी तमस्काय करे छे ? [उ०] हे गौतम ! क्रीडा के रतिनिमित्ते, शत्रुने मोहपमाडवा निमित्ते, दृग्वावेला द्रव्यने साचववा निमित्ते अथवा पोताना शरीरने टाकी देवा निमित्ते हे गौतम ! ते असुरकुमार देवो पण तमस्काय करे छे. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुर्वा जाणहुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावत् [भगवान् गौतम] बिहरे छे.

## तईओ उहेसो ।

१. देवे णं भंते ! महाकाय महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्जेणं वीइवएज्जा ? [उ०] गोयमा ! अत्येगइए वीइवएज्जा, अत्येगतिप नो वीइवएज्जा । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘अत्येगतिप वीइवएज्जा, अत्येगतिप नो वीइवएज्जा’ ? [उ०] गोयमा ! दुविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा—मायीमिच्छादिट्टीउववघ्ना य अमायीसम्मदिट्टीउववघ्ना य, तत्थ णं जे से मायीमिच्छादिट्टीउववघ्ना देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता नो वंदति, नो नमंसति, नो सक्कारेति, नो सम्माणेइ, नो कल्लणं मंगलं देवयं चेइयं जाव—पज्जुवासति, से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्जेणं वीइवएज्जा । तत्थ णं जे से अमायीसम्मदिट्टीउववघ्ना देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता वंदति, नमंसति, जाव—पज्जुवासति । से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्जेणं नो वीयीवएज्जा, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—जाव—नो वीइवएज्जा ।

२. [प्र०] असुरकुमारो णं भंते ! महाकाये महासरीरे—? [उ०] एवं चेव, एवं देवदंडओ भाणियद्वो जाव—वेमाणिप ।

३. [प्र०] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं सक्कारे ति वा, सम्माणे ति वा, किइकस्से इ वा अभुट्टाणे इ वा, अंजलिपग्गहे ति वा; आसणाभिग्गहे ति वा, आसणाणुप्पदाणे ति वा, इंतस्स पच्चुग्गच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छतंस्स पडिसंसाहणया ? [उ०] नो तिणट्टे समट्टे ।

४. [प्र०] अत्थि णं भंते ! असुरकुमारणं सक्कारे ति वा, सम्माणे ति वा, जाव—पडिसंसाहणया वा ? [उ०] हंता अत्थि, एवं जाव—थणियकुमारणं । पुढविकाइयाणं जाव—चउरिंदियाणं एपांसं जहा नेरइयाणं ।

## तृतीय उदेशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! महाकाय—मोटा परिवारवाळो अने मोटा शरीरवाळो देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय ? [उ०] हे गोतम ! केटला एक देव जाय, अने केटला एक देव न जाय. [प्र०] हे भगवन् ! आप एम शा हेतुथी कहो छो के, ‘केटला एक देव जाय अने केटला एक न जाय’ ? [उ०] हे गोतम ! देवो वे प्रकारना कल्ला छे, ते आ प्रमाणे—१ मायीमिध्यादृष्टिउपपन्न अने २ अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्न; तेमा जे मायीमिध्यादृष्टिउपपन्न देवो छे ते भावितात्मा अनगारने जुए छे अने जोइने वादतो नथी, नमतो नथी, सक्कार करतो नथी, सन्मान करतो नथी, अने कल्याणरूप अने मंगलभूत देवचैत्यनी पेठे यावत्—तेनी पर्युपासना करतो नथी, तेथी ते देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय. तेमा जे अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्न देवो छे, ते भावितात्मा अनगारने जुए छे, जोइने वादे छे, नमे छे, यावत्—तेनी पर्युपासना करे छे, तेथी ते भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने न जाय, माटे ते हेतुथी हे गोतम ! एम कह्युं छे के, ‘कोड जाय अने कोड न जाय.’

२. [प्र०] हे भगवन् ! घणा परिवारवाळा अने महाशरीरवाळा असुरकुमारो [ भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय ? ] इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे ‘देवदंडक यावत्—वैमानिको सुधी कह्यो.

३. [प्र०] हे भगवन् ! नारकोमा सक्कार ( विनय करवाने योग्य व्यक्तियो आदर करवो ), सन्मान ( तथाविध सेवा करवी ) कृत्तिकर्म ( वंदन ), अभ्युत्थान ( गौरव करवाने लायक व्यक्तिये जोता आसननो त्याग करी उभा थवुं ), अञ्जलिकरण ( वस्त्रे हाथ जोटवा ), आसनाभिग्रह ( आसन आपवुं ), आसनानुप्रदान—गौरवने योग्य व्यक्तिसाठे आसनने एक स्थानथी वीजे स्थाने लाववुं, गौरव योग्य मनुष्यनी सामा जवु, वेठेलानी सेवा करवी, अने जाय स्यारे तेनी पाछळ जवुं—इत्यादि विनय छे ? [उ०] हे गोतम ! ए अर्थ नमर्थ—युक्त नथी. अर्थात्—नैरथिकोने सक्कारादि विनय नथी.

४. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारोमा सक्कार, सन्मान यावत्—जनारनी पाछळ जवुं—वगेरे विनय छे ? [उ०] हे गोतम ! हा छे. ए प्रमाणे यावत्—स्तानितकुमारो सुधी जाणवुं. जेम नैरथिकोने काहुं तेम पृथिवीकायिकथी आरनी यावत्—चतुरिन्द्रिय जीवो नंक्चे पण जाणवुं.

महाकाय देव भा  
वितात्मा अनगारनी  
वच्चे थईने जाय ?

महाकाय असुर-  
कुमार भावितात्मा  
अनगारनी वच्चे  
थईने जाय ?  
नारकोमा सक्कारादि  
विनय होय हे ?

असुरकुमारोमा  
सक्कारादि विनय

५. [प्र०] अरिय णं भंते ! पंचिन्द्रियतिरिक्खज्जोणियाणं सवारे इ वा, जाव-पडिसंसाहणया चा ? [उ०] हंता अरिय, नो चैव णं आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्ययाणे उ वा ! मणुस्साणं जाव-वेमाणियाणं जहा असुरकुमारणं ।

६. [प्र०] अप्पटीप णं भंते ! देवे महत्तियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीरयणजा ? [उ०] नो तिण्ण्टे समट्ठे ।

७. [प्र०] महत्तीप णं भंते ! देवे समत्तियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीरयणजा ? [उ०] णो इण्ण्टे समट्ठे, पमत्तं पुण वीरयणजा ।

८. [प्र०] से णं भंते ! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू. अणकमित्ता पभू ? [उ०] गोयमा । अक्कमित्ता पभू, नो अणक-मित्ता पभू ।

९. [प्र०] से णं भंते ! किं पुंथिं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीरयणजा, पुंथिं वीरयणजा पच्छा सत्थेणं अक्कमेत्ता ? [उ०] एवं एण अमिल्लावेणं जहा दसमसए आरुत्ताउद्देसए नहेव निरवसेसं चत्तारि दंडगा भाणियवा जाव-‘महत्तिया वेमा-णिणी अप्पट्टियाप वेमाणिणीए’ ।

१०. [प्र०] रयणप्यमापुद्धविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चणुन्मवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! अणिट्ठं, जाव-अमणामं, एवं जाव-अहेसत्तमापुद्धविनेरइया, एवं वेदणापरिणामं. एवं जहा जीवाभिगमं विनिप नेरइयउद्देसए जाव-[प्र०] अहेसत्तमापुद्धविनेरइया णं भंते ! केरिसयं परिग्गहसत्तापरिणामं पच्चणुन्मवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! अणिट्ठं, जाव-अमणामं । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते !’ ति ।

चोदसमसए तईओ उद्देसो समत्तो ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रियतिरिक्खोनिक्कोमा सक्कार, यावत्-जनारनी पाछळ वज्जया जवुं-इत्यादि विनय होय छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, होय छे. परन्तु आसनाभिग्रह-आसन आपवुं, आनानुप्रदान-आसनने एक स्थानयी वीजे स्थानके लाववुं-इत्यादि विनय होतो नयी. मनुष्यो अने यावत्-धैमानिकोने जेम असुरकुमारने कर्तुं नेम करैवुं.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अल्परुद्धिवाळो देव महारुद्धिवाळो देवनी वच्चे थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-यथार्थ नयी.

७. [प्र०] हे भगवन् ! समानरुद्धिवाळो देव समानरुद्धिवाळो देवनी वच्चे थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नयी. पण जो ते [समानरुद्धिवाळो देव] प्रमत्त होय तो तेनी वच्चे थईने जाय.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ( वच्चे थईने जनार ते देव ) शु शक्यी प्रहार करीने जवा समर्थ थाय के प्रहार करी शिवाय जवा समर्थ थाय ? [उ०] हे गौतम ! अक्षप्रहार करीने जवा समर्थ थाय, पण प्रहार करी शिवाय जवा समर्थ न थाय.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [देव] प्रथम शक्यप्रहार करे अने पछी जाय के पहेछा जाय अने पछी शक्यप्रहार करे ? [उ०] इत्यादि आ प्रकारना अमिल्लपथी दणम शतकाना आरुद्धिअनामे ( आनर्द्धिक ) उद्देसकमा कथा प्रमाणे समप्रमाणे चार दंडको ( इंग्र आलापक-सहित ) कहेवा, यावत् ‘मोटी रुद्धिवाळी धैमानिक देवी अल्परुद्धिवाळी धैमानिक देवीनी वच्चे थईने जाय.’

१०. [प्र०] हे भगवन् ! रत्तप्रमापृथिवीना नारको केवा प्रजारना पुद्गलपरिणामने अनुभवना विहरे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अनिष्ट, यावत्-मनने नहि गमना पुद्गलपरिणामने अनुभवना विहरे छे. ए प्रमाणे यावत्-नातनी नरकपृथिवीना नारको सुवी जागवुं. ए रीते यावत्-वेदनापरिणामने पण अनुभवे छे-इत्यादि जेम जीवाभिगम नृपना वीजा नैरयिक उद्देसकमा कर्तुं छे ते प्रमाणे अहिं कहेवुं. यावत्-[प्र०] हे भगवन् ! साननी नरकपृथिवीना नैरयिको केवा प्रकारना परिग्रहसत्तापरिणामने अनुभवे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अनिष्ट, यावत्-मनने नहि गमना परिग्रहसत्तापरिणामने अनुभव करता विहरे छे. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’-एम कहे [भगवान् गौतम ] यावत् विहरे छे.

चतुर्दशशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

१ \* भग० खं० ३ अ० १० द० ३ पृ० १९३.

† अल्परुद्धिक अने महारुद्धिको प्रथम आलापक, समरुद्धिक अने समरुद्धिको वीजो आलापक, तथा महरुद्धिक अने अल्परुद्धिको वीजो आलापक तेमां अल्परुद्धिक अने महरुद्धिको आलापक तथा न्यरुद्धिकालापक-ए वे आलापक साक्षात् कथा छे, केवल समरुद्धिकालापकने अन्ते बाकीना सूत्रनी अश वा प्रमाणे जानवो-‘प्रथम शक्यी हणीने जाय, पण पूवें जईने पछी न हणे. हे भगवन् ! महरुद्धिक देव अल्परुद्धिक देवना मध्यमा थईने जाय ? हा जाय. ते महरुद्धिक देव शक्यी हणीने जवा समर्थ होय के हणया शिवाय जवा समर्थ होय ? हे गौतम ! हणीने पण जवा समर्थ होय अने हणया शिवाय पण जवा समर्थ होय. हे भगवन् ! पूवें शक्यवदे हणीने पछी जाय के पूवें जईने पछी हणे ? हे गौतम ! पूवें शक्यवदे हणीने पछी जाय, अथवा पूवें जईने पछी शक्यवदे हणे.’

‡ १ देव अने देवनी प्रथमदंडक, २ देव अने देवी संबन्धे वीजो दंडक, ३ देवी अने देव संबन्धे वीजो दंडक, अने ४ देवी अने देवी संबन्धे चोथो दंडक-ए रीते चार दंडक जाणवा.

१० † नैरयिकसंघे हकीकत जीवाभिगमसूत्र प्रति० ३ द० १-२-३ प० ८९-१२९ सुवीमा छे, परन्तु उपरना सूत्रने लगतो थोडो पाठ मात्र प्रति० ३ नैरयिक द० ३ प० १२९ मां छे.

## चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] एस णं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं लुक्खी, समयं अलुक्खी, समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुं च णं करणेणं अणेगवन्नं अणेगरूवं परिणामं परिणमति ? अह से परिणामे निज्जिन्ने भवति, तथो पच्छा एगवन्ने एगरूवे सिया ? [उ०] हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतं तं चेव जाव-एगरूवे सिया ।

२. [प्र०] एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्नं सासयं समयं ? [उ०] एवं चेव, एवं अणागयमणंतं पि ।

३. [प्र०] एस णं भंते ! खंधे तीतमणंतं ? [उ०] एवं चेव, खंधे वि जहा पोग्गले ।

४. [प्र०] एस णं भंते ! जीवे तीतमणंतं सासयं समयं दुक्खी, समयं अदुक्खी, समयं दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुं च णं करणेणं अणेगभावं अणेगभूयं परिणामं परिणमइ ? अह से वेयणिज्जे निज्जिन्ने भवति, तथो पच्छा एगभावे एगभूए सिया ? [उ०] हंता गोयमा ! एस णं जीवे जाव-एगभूए सिया, एवं पडुप्पन्नं सासयं समयं, एवं अणागयमणंतं सासयं समयं ।

## चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! आ पुद्गल [परमाणु के स्कन्ध] अनन्त-अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विपे एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवालो, एक समय सुधी अरूक्ष-स्निग्धस्पर्शवालो, तथा एक समय सुधी रूक्ष अने स्निग्ध-वन्ने प्रकारना स्पर्शवालो हतो ? अने पूर्वे कारण-प्रयोगकरण अने विस्रसाकरणथी अनेक वर्णवाळा अने [अनेक गन्ध, रस, स्पर्श अने संस्थानना मेदथी] अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? [परमाणुनो भिन्न भिन्न समये अनेक वर्णादिरूपे परिणाम थाय छे, अने स्कन्धनो एकसमये अनेक वर्णादिरूपे परिणाम थाय छे.] हवे ते अनेक वर्णादिपरिणाम क्षीण थाय ल्यार पछी ते पुद्गल एकवर्णवाळो अने एकरूपवाळो हतो ? [उ०] हा, गौतम ! आ पुद्गल अतीतकालने विपे-इत्यादि यावत्-‘एकरूपवाळो हतो’-त्या सुधी समग्र पाठ कहेवो.

पुद्गलपरिणाम-  
अतीतकालने विपे  
एक समयमा पुद्ग-  
गलनो परिणाम

२. [प्र०] हे भगवन् ! आ पुद्गल ( परमाणु के स्कन्ध ) शाश्वत वर्तमान कालने विपे ( एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवाळो, स्निग्ध-स्पर्शवाळो, तथा स्निग्ध अने रूक्ष-वन्ने स्पर्शवाळो होय ? अने प्रयोग अने विस्रसाथी अनेक वर्णादिरूपे परिणत थाय ? ते परिणामना क्षीण थया वाद एकवर्णवाळो अने एकरूपवाळो होय ? ) [उ०] पूर्वप्रमाणे उत्तर जाणवो, ए प्रमाणे अनागतकाल सवन्धे पण जाणवुं.

वर्तमानकाले  
पुद्गलपरिणाम  
अनागतकाल.

३. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्त-अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विपे पुद्गलस्कन्ध ( एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवाळो, स्निग्ध-स्पर्शवाळो तथा स्निग्ध अने रूक्ष-ए वन्ने स्पर्शवाळो हतो ? अने अनेकवर्ण अने अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? पछी ते परिणामना क्षीण थयाथी तेनो एकवर्णवाळो अने एकरूपवाळो परिणाम थयो हतो ? ) [उ०] ए प्रमाणे जेम पुद्गलसवन्धे कद्दुं तेम विपे सवन्धे पण जाणवुं.

पुद्गलस्कन्ध

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव अनन्त-अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विपे एक समय ( दुःखना हेतुथी ) दुःखी, एक समय ( सुखना हेतुथी ) अदुःखी-सुखी, तथा \*एक समय [सुख अने दुःखना हेतुथी] दुःखी के सुखी हतो ? अने पूर्वे कारणथी-कालस्व-नावादि कारणवडे शुभाशुभकर्मबंधना हेतुभूत क्रियाथी-अनेक प्रकारना सुखिपणुं अने दुःखिपणुं-इत्यादि भाववाळा, अने अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? ल्यारपछी वेदवा लायक ज्ञानावरणादि कर्मनी निर्जरा थया वाद जीव एकभाववाळो अने एकरूपवाळो हतो ? [उ०] हा, गौतम ! आ जीव यावत्-एक रूपवाळो हतो. ए प्रमाणे शाश्वत एवा वर्तमानसमयसवन्धे तथा अनन्त अने शाश्वत भविष्यकाल सवन्धे पण जाणवुं.

अतीत, वर्तमान  
अने अनागतकाले  
जीवपरिणाम

\* सुख अने दुःखना कारणो एकसमये विद्यमान होय छे, परन्तु सुख अने दुःखनु वेदन एकसमये होवुं नथी, कारण के जीवने एकसमये एकत्र योग होय छे.



५. [५०] परमाणुपोगले णं भंते ! किं सासए, असासए ? [५०] गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए । [५०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—'सिय सासए, सिय असासए' ? [५०] गोयमा ! द्दघट्टयाए सासए, वन्नपज्जवेहिं, जाय-फासपज्जवेहिं असासए, से तेणट्टेणं जाव-सिय सासए, सिय असासए ।

६. [५०] परमाणुपोगले णं भंते ! किं चरिमे, अचरिमे ? [५०] गोयमा ! द्दघादेसेणं नो चरिमे, अचरिमे, खेसादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, कालादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, मावादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।

७. [५०] कइविहे णं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? [५०] गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, तंजहा—जीवपरिणामे य व-वपरिणामे य । एवं परिणामपयं निरवसेसं माणियघं । 'सेवं भंते ! संवं भंते !' ति जाव-विहरति ।

### चोद्दसमसए चउत्थो उद्देशो समत्तो ।

५. [५०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [५०] हे गौतम ! ते कयंचित् शाश्वत छे अने कयंचित् अशाश्वत छे. [५०] हे भगवन् ! आप एम शा हेतुयी कहो छो के 'कयंचित् शाश्वत छे अने कयंचित् अशाश्वत छे' ? [५०] हे गौतम ! द्रव्यार्थरूपे ते परमाणुपुद्गल शाश्वत छे, अने वर्णपर्यायवटे यावत्—स्पर्शपर्यायवटे अशाश्वत छे, माटे ने हेतुयी हे गौतम ! एम कतुं छे के 'परमाणुपुद्गल कयंचित् शाश्वत छे अने कयंचित् अशाश्वत छे.'

६. [५०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गल चरम छे के अचरम छे ? [५०] हे गौतम ! (परमाणुपुद्गल) द्रव्यनी अपेक्षाए चरम नयी, पण अचरम छे. क्षेत्रादेशयी कटाचित् चरम छे अने कटाचित् अचरम छे. कालादेशयी कटाचित् चरम छे अने कटाचित् अचरम छे. मात्रादेशयी कयंचित् चरम अने कयंचित् अचरम छे.

७. [५०] हे भगवन् ! परिणाम केटला प्रकारनो कतो छे ? [५०] हे गौतम ! परिणाम वे प्रकारनो कतो छे, ते आ प्रमाणे—जीवपरिणाम अने अजीवपरिणाम. ए प्रमाणे अहिं [प्रज्ञापना सूत्रतुं] परिणामपट सपूर्ण कहवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

### चतुर्दशशतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

६ \* जे परमाणु निवक्षित परिणामयी रहित धडेने पुन. ते परिणामने पामये नहि ते परमाणु ते परिणामनी अपेक्षाए चरम कहेवाय छे, अने जे परमाणु पुन ते परिणामने पामये ते अपेक्षाए ते अचरम कहेवाय छे. द्रव्यनी अपेक्षाए परमाणु चरम नयी, पण अचरम छे, कारणके द्रव्ययी-परमाणुपरिणामयी रहित धयेलो परमाणु सजानपरिणामने पानी कालान्तरे पुन परमाणुपरिणामने पामये. क्षेत्रनी अपेक्षाए परमाणु कयंचित् चरम अने कयंचित् अचरम छे, ते आ प्रमाणे—जे क्षेत्रमा केवलजानी समुद्रघातने प्राप्त धयेला छे, अने ला जे परमाणु रहेलो छे, हवे समुद्रघातने प्राप्त धयेला तेकेवलजानीना सचन्वविशिष्ट ते परमाणु कोट पण समये ते क्षेत्रनो आश्रय नहि करे, केनके ते केवलीनु निर्वाण यनायी ते क्षेत्रमा पुन कदि आवदाना नयी माटे ए प्रमाणे क्षेत्रयी परमाणु चरम कहेवाय छे, विशेषणरहित क्षेत्रनी अपेक्षाए परमाणु फगे ते क्षेत्रमा अवगाट धये, माटे 'अचरम' कहेवाय छे कालनी अपेक्षाए कयंचित् चरम छे अने कयंचित् अचरम छे, ते आ प्रमाणे—जे पूर्वाहादि कालने पिपे जे केवलीए समुद्रघात कयों, ते कालने पिपे जे परमाणु रहेलो छे ते परमाणु ते केवलिंसमुद्रघातविशिष्ट ते कालने कदि पण प्राप्त नहि करे, कारण के ते केवलजानी मोक्षे जनायी पुन समुद्रघात करवाना नयी, माटे तेनी अपेक्षाए कालयी चरम, अने विशेषणरहित कालनी अपेक्षाए परमाणु अचरम छे मात्रनी अपेक्षाए परमाणु चरम अने अचरम छे. ते आ प्रमाणे—केवलिसमुद्रघातने धनसरे जे परमाणु वर्णादिभावविशेषने प्राप्त ययो हतो ते परमाणु निवक्षित केवलिसमुद्रघातविशिष्ट वर्णादिपरिणामनी अपेक्षाए चरम छे, कारण के केवलजानीना निर्वाण यनायी पुन ते परमाणु विशिष्ट परिणामने प्राप्त नहि याय. आ द्वाह्वान चूर्णिकारना मतने अनुमती करेलुं छे.—टीका.

७ † द्रव्यनी अन्वयान्तरप्राप्ति ते परिणाम, कतुं छे के—'परिणाम-अन्वयान्तरप्राप्ति, द्रव्यनु संवेदा एतरेपे अस्थित रहवुं, तेमज तेनो मवेवा नाश यवो ते परिणाम नयी' तेनां जीवपरिणाम दश प्रकारनो छे—१ गति, २ टन्दित्रय, ३ कृपाय, ४ लेज्जा, ५ योग, ६ उपयोग, ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र, अने १० वेद. अजीवपरिणाम पण दश प्रकारनो छे—१ वन्वन, २ गति, ३ सस्थान, ४ भेद, ५ वर्ण, ६ गन्व, ७ रम, ८ स्पर्श, ९ अणुवलय अने १० शब्दपरिणाम.—टीका.

## पंचमो उद्देशो ।

१. [प्र०] नेरइए णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] गोयमा ! अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येग-  
तिए नो वीइवएज्जा । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ- 'अत्येगइए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ?' [उ०] गोयमा !  
नेरइया दुविहा पणत्ता, तंजहा-विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगतिसमावन्नगा य, तत्थ णं जे से विग्गहगतिसमावन्नए  
नेरतिए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा । [प्र०] से णं तत्थ द्वियाएज्जा ? [उ०] णो तिणट्टे समट्टे, नो खलु तत्थ  
सत्थं कमइ । तत्थ णं जे से अविग्गहगइसमावन्नए नेरइए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं णो वीइवएज्जा, से तेणट्टेणं  
जाव- 'नो वीइवएज्जा' ।

२. [प्र०] असुरकुमारे णं भंते ! अगणिकायस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइव-  
एज्जा । [प्र०] से केणट्टेणं जाव-नो वीइवएज्जा ? [उ०] गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पणत्ता, तंजहा-विग्गहगइसमावन्नगा  
य अविग्गहगइसमावन्नगा य । तत्थ णं जे से विग्गहगइसमावन्नए असुरकुमारे से णं-एवं जहेव नेरतिए जाव- 'कमति' । तत्थ  
णं जे से अविग्गहगइसमावन्नए असुरकुमारे से णं अत्येगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइ-

## पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! नारक अग्निकायना मध्यभागमा थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक नारक न  
जाय. [प्र०] ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के, 'कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक नारक न जाय' ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको  
वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे-विग्रहगतिने प्राप्त थयेला, अने अविग्रहगतिसमापन्न-उत्पत्तिक्षेत्रने प्राप्त थयेला. तेमा जे  
विग्रहगतिने प्राप्त थयेला नारक छे ते अग्निकायना मध्यमा थईने जाय. [प्र०] ते त्या वळे ? [उ०] आ अर्थ ययार्थ नथी, केमके तेने \*अग्नि-  
रूप शस्त्र असर करतुं नथी. तेमा जे अविग्रहगतिने प्राप्त थयेला नारक छे ते अग्निकायनी मध्यमा थईने न जाय. माटे हे गौतम ! ते  
हेतुथी एम कह्युं के, 'कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक न जाय'

नारक अग्निकायन  
मध्यभागमा गमन  
करे ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारो अग्निकायनी वच्चे थईने जाय ?-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोइ एक †( असुरकुमार ) जाय  
अने कोइ एक न जाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम आप शा हेतुथी कहो छो के, 'कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय' ? [उ०] हे गौतम !  
असुरकुमारो वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे-विग्रहगतिने प्राप्त थयेला अने अविग्रहगतिने प्राप्त थयेला. तेमा जे विग्रहगतिने प्राप्त  
असुरकुमारो छे-इत्यादि वधुं नारकनी पेठे जाणवु. यावत्-तेने ( अग्नि वगोरे ) शस्त्र असर करतुं नथी.' तेमा जे अविग्रहगति प्राप्त असुर-  
कुमारो छे तेमांना कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] जे अग्नि वच्चे थईने जाय ते त्या वळे ? [उ०] ए

असुरकुमारो.

१ \* विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो जीव कामणशरीरतुक्त होवाथी अने ते सूक्ष्म होवाथी तेने अग्निवगेरे शस्त्र असर करतुं नथी.-टीका.

† अविग्रहगतिसमापन्न-उत्पत्ति क्षेत्रने प्राप्त थयेलो नारक समजवो, 'परन्तु ऋजुगतिने प्राप्त थयेलो'-ए अर्थ अहिं विवक्षित नथी, कारण के तेनी  
अहिं अधिकार नथी, उत्पत्तिक्षेत्रने प्राप्त थयेलो नारक अग्निकाय मध्ये थईने जतो नथी, केमके नारक क्षेत्रने विपे वादर अग्निकायनो अभाव छे, अने मनु-  
ष्यक्षेत्रने विपेज वादर अग्निकायनो सद्भाव छे -टीका

२ † विग्रहगति प्राप्त असुरकुमार विग्रहगति प्राप्त नारकनी पेठे जाणवो, अविग्रहगति प्राप्त-उत्पत्तिक्षेत्रने प्राप्त थयेला असुरकुमार, के जे मनुष्यलोकमा  
आवे ते अग्निनी वच्चे थईने जाय, जे ( मनुष्यलोकमा ) न आवे ते अग्निकायनी वच्चे थईने न जाय, जे वच्चे थईने जाय छे ते पण वळे नहि, कारण के वै-  
क्रिय शरीर सूक्ष्म छे अने तेनी गति अति शीघ्र छे.-टीका.

वपजा । [प्र०] जे णं वीयीवपजा से णं तत्थ झियापजा ? [उ०] नो तिण्ठे सम्भे, नो खलु तत्थ सत्थं कमति, से तेण्ठेणं, एवं—जाव थणियकुमारे । एगिदिया जहा नेरइया ।

३. [प्र०] वेइंदिया णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्जेणं ? [उ०] जहा असुरकुमारे तहा वेइंदिपवि, नचरं—[प्र०] जे णं वीयीवपजा से णं तत्थ झियापजा ? [उ०] हंता झियापजा, सेसं तं चेव, एवं जाव—चउरिदिप ।

४. [प्र०] पंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! अगणिकाय—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्येगतिप वीइवपजा, अत्येगतिप नो वीइवपजा । [प्र०] से केण्ठेणं ? [उ०] गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगइसमावन्नगा य । विग्गहगइसमावन्नप जहेथ नेरइप, जाव—‘नो खलु तत्थ सत्थं कमइ’ । अविग्गहगइसमावन्नगा पंचिदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पत्तत्ता, तंजहा—इट्ठिपत्ता य अणिट्ठिपत्ता य । तत्थ णं जे से इट्ठिपत्ते पंचिदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्येगइप अगणिकायस्स मज्झंमज्जेणं वीयीवपजा, अत्येगइप नो वीयीवपजा । [प्र०] जे णं वीयीवपजा से णं तत्थ झियापजा ? [उ०] नो तिण्ठे सम्भे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । तत्थ णं जे से अणिट्ठिपत्ते पंचिदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्येगतिप अगणिकायस्स मज्झंमज्जेणं वीयीवपजा, अत्येगतिप नो वीइवपजा । [प्र०] जे णं वीयीवपजा से णं तत्थ झियापजा ? [उ०] हंता झियापजा, से तेण्ठेणं जाव—‘नो वीयीवपजा’ एवं मणुस्से वि । चाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिए जहा असुरकुमारे ।

५. नेरतिया दस ठाणाइं पच्चण्णमवमाणा विहरंति, तंजहा—१ अणिट्ठा सद्दा, २ अणिट्ठा रत्ता, ३ अणिट्ठा गंधा, ४ अणिट्ठा रसा, ५ अणिट्ठा फासा, ६ अणिट्ठा गती, ७ अणिट्ठा डिती, ८ अणिट्ठे लावन्ने, ९ अणिट्ठे जसो—कित्ती, १० अणिट्ठे उट्टाण—कम्म—वल्ल—धीरिय—पुरिसकारपरकमे ।

अर्थ यथार्थ नयी. केमके तेने अग्नि वगेरे शख असर करतुं नयी. ते हेतुयी हे गौतम ! एम कहुं छे के ‘कोइ एक [असुरकुमार] जाय अने कोइ एक न जाय.’ ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. एकेन्द्रियो \*संवन्हे नैरयिकनी पेटे जाणवुं.

३. [प्र०] हे भगवन् ! वेइन्द्रिय जीवो अग्निकायनी मय्यमा थईने जाय ? [उ०] जेम असुरकुमारो संवन्हे कहुं तेम वेइन्द्रिय संवन्हे कहेवुं. परन्तु विशेष ए छे के, [प्र०] ‘जे वेइन्द्रिय अग्नि वच्चे थईने जाय, ते त्यां वळे ? [उ०] हा, ते त्यां वळे’—एम कहेवुं. अने वाकी वधुं पूर्वे कक्षा प्रमाणे यावत्—चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं.

४. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव अग्निनी वच्चे थईने जाय ?—ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुयी कहो छो के ‘कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय’ ? [उ०] हे गौतम ! पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको वे प्रकारना कक्षा छे, ते आ प्रमाणे—विग्रहगतिने प्राप्त थयेला अने अविग्रहगतिने प्राप्त थयेला. तेमा जे विग्रहगतिने प्राप्त थयेला पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको छे ते नैरयिकनी पेटे जाणवा, यावत्—‘तेने शख असर करतुं नयी.’ जे पंचेन्द्रियतिर्यचो अविग्रहगतिने प्राप्त थयेला छे ते वे प्रकारना कक्षा छे, ते आ प्रमाणे—ऋद्धिप्राप्त (वैक्रियलच्चियुक्त) अने ऋद्धिने अप्राप्त (वैक्रियलच्चियरहित). तेमा जे पंचेन्द्रियतिर्यचो ऋद्धिने प्राप्त थयेला छे, तेमायी कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने न जाय. [प्र०] जे अग्निनी वच्चे थईने जाय छे ते त्या वळे ? [उ०] ए अर्थ समर्थ—यथार्थ नयी, केमके तेने शख असर करतुं नयी. तेमा जे पंचेन्द्रिय तिर्यचो ऋद्धिने प्राप्त थयेला नयी तेमायी कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] जे जाय ते वळे ? [उ०] हा, वळे; माटे हे गौतम ! ते हेतुयी एम कहुं छे के, यावत्—‘कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय’ ए प्रमाणे मनुष्य संवन्हे पण जाणवुं. जेम असुरकुमारो संवन्हे कहुं, तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संवन्हे पण कहेवुं.

५. नारको दया स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ अनिष्ट शब्द, २ अनिष्ट रूप, ३ अनिष्ट गंध, ४ अनिष्ट रस, ५ अनिष्ट स्पर्श, ६ अनिष्ट गति, ७ अनिष्ट स्थिति, ८ अनिष्ट लावण्य, ९ अनिष्ट यशःकीर्ति अने १० अनिष्ट उत्थान, कर्म, वल्ल, वीर्य, तथा पुरुषकारपराक्रम.

\* विग्रहगतिप्राप्त एकेन्द्रिय जीवो अग्नि वच्चे थईने जाय, अने सूक्ष्म होवायी ते वळे नहि. अविग्रहगतिप्राप्त एकेन्द्रियो अग्नि वच्चे थईने जता नयी, कारण के तेओ स्यावर छे तेज (अग्नि) अने वायु गतिप्राप्त होवायी तेसुं अग्निमध्यमा थईने जतु समवे छे, परन्तु ते अहिं विवक्षित नयी, अहिं तो स्यावरपणानी निपक्षा छे अने तेथी तेओमा गतिनो अभाव छे तथा वाय्वादिनी प्रेरणादी पृथिव्यादिनुं अग्निमध्यमा गमन सममित छे, परन्तु अहिं स्वातन्त्र्यरुत गमन विवक्षित होवायी तेसुं स्वतन्त्रपणे अधिने निपे गमन सममित नयी—टीका.

† अनिष्टगति—नारकोनी अग्रशस्त्रनिहासोर्गतिरूप के नरकगतिरूप अनिष्ट गति, नरकमा रद्देवात्प अथवा नरकायुत्प अनिष्ट स्थिति, अनिष्ट लावण्य—अग्निनो वेदोळ धारणविशेष, अपयम अने धपकीतिरूप अनिष्ट यशःकीर्ति, वीर्यान्तराचन धयोपशमादिथी उत्पन्न थयेळ दर्यानादिवीर्यविशेष अनिष्ट—निन्दित छे.

६. असुरकुमारा दस टाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तंजहा-१ इट्टा सहा, २ इट्टा रूवा, जाव-इट्टे उट्टाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसकारपरकमे, एवं जाव-थणियकुमारा ।

७. पुढविकाइया छ टाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा-इट्टाणिट्टा फासा, इट्टाणिट्टा गती, एवं जाव-परकमे एवं जाव-वणस्सइकाइया ।

८. वेइंदिया सत्त टाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तंजहा-इट्टाणिट्टा रसा, सेसं जहा एंदिदियाणं ।

९. तेंदिया अट्ट टाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति, तं जहा-इट्टाणिट्टा गंधा, सेसं जहा वेंदियाणं ।

१०. चउरिंदिया नव टाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरति, तंजहा-इट्टाणिट्टा रूवा, सेसं जहा तेंदियाणं ।

११. पंचेदियतिरिक्खजोणिया दस टाणाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तंजहा-इट्टाणिट्टा सहा, जाव-परकमे, एवं मणुस्सा वि, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।

१२. [प्र०] देवे णं भंते ! महिह्वीए जाव-महेसक्खे वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू, तिरियपच्चयं वा तिरियभिन्ति वा उल्लंघेत्तए वा पल्लंघेत्तए वा ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्टे समट्टे ।

१३. [प्र०] देवे णं भंते ! महिह्वीए जाव-महेसक्खे वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू, तिरिय० जाव-पल्लंघेत्तए वा ? [उ०] हंता पभू ! 'सेवं भंते ! सेवं भंते'त्ति ।

### चोइसमसए पंचमो उद्देशो समत्तो.

६. असुरकुमारो दश स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे-१ इष्ट शब्द, २ इष्ट रूप, यावत्-१० इष्ट उत्थान, कर्म, बल, वीर्य अने पुरुपकार पराक्रम-ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. अक्षरकुमारी.

७. पृथिविकायिको छ स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे-१ \*इष्टानिष्ट स्पर्श, २ इष्टानिष्ट गति, यावत्-६ 'इष्टानिष्ट पुरुपकार-पराक्रम'-ए प्रमाणे यावत्-वनस्पतिकायिक सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको.

८. वेइन्द्रिय जीवो सात स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे-१ इष्टानिष्ट रस-इत्यादि समग्र एकेन्द्रियोनीं पेटे अहि कहेवुं. वेइन्द्रियो.

९. तेइन्द्रिय जीवो आठ स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे-१ इष्टानिष्ट गन्ध-इत्यादि वाकी वधु वेइन्द्रियोनीं पेटे कहेवुं. तेइन्द्रियो

१०. चउरिन्द्रिय जीवो नव स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे-१ इष्टानिष्ट रूप-इत्यादि वाकी वधुं तेइन्द्रिय जीवोनीं पेटे जाणवुं. चउरिन्द्रिय जीवो.

११. पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको दश स्थानकोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे-१ इष्टानिष्ट शब्द-इत्यादि यावत्-पराक्रम सुधी कहेवु. ए प्रमाणे मनुयो पण जाणवा. जेम असुरकुमार संवन्धे कहुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक सवन्धे कहेवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यचो

१२. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋद्धिवाळो यावत्-मोटा सुखवाळो देव बहारना-भवधारणीय शरीर व्यतिरिक्त पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय तिर्छीं पर्वतने के तिर्छीं [प्राकारनीं] भीतने उल्लंघवा के वारवार उल्लंघवा समर्थ थाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ ययार्थ नथी, [अर्थात् भवधारणीय शरीर व्यतिरिक्त वीजा बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय पर्वतादिने उल्लंघवानुं सामर्थ्य प्रवर्ततुं नथी ] महर्द्धिक देव ब-  
धारना पुद्गलोने  
ग्रहण कर्या शिवा  
य पर्वतादिने उ  
ल्लंघी शके ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋद्धिवाळो यावत्-मोटा सुखवाळो देव बहारना पुद्गलोने ग्रहण करी तिर्छीं [पर्वतने के तिर्छीं प्राका-  
रनीं भीतने उल्लंघवा समर्थ छे ? [उ०] हा, गौतम ! समर्थ छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही [भगवान्  
गौतम यावद् विहरे छे.] बहारना पुद्गलोने  
ग्रहण करी पर्वता-  
दिने उल्लंघवा स-  
मर्थ छे.

### चतुर्दश शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

७ \* एकेन्द्रियोनीं शुभाशुभ क्षेत्रमा उत्पत्ति थवानो सभव होवाथी तेने साता अने असाताना उदयनो सभव छे माटे तेने इष्टानिष्ट स्पर्शादि होय छे. यद्यपि तेओ स्यावर छे तेथीं तेने स्वभावथी गमनरूप गतिनो सभव नथी तो पण तेओमा परप्रेरित गति होय छे, अने ते शुभाशुभरूप होवाथी 'इष्टानिष्ट' कहेवाय छे. इष्टानिष्ट लवण्य मणि अने पत्थरने विषे जाणवुं स्यावर होवाथी एकेन्द्रियने विषे उत्थानादि होता नथी, परन्तु पूर्वभवमा अनुभवैला उत्थानादिना सस्कारनिमित्ते तेउ इष्टानिष्टपणुं जाणवुं.-टीका.

## छद्मओ उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-नेरइया णं भंते ! किमाहारा, किपरिणामा, किजोणीया, किट्टितीया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! नेरइया णं पोगगलाहारा, पोगगलपरिणामा, पोगगलजोणिया, पोगगलट्टितीया, कम्मोचगा, कम्मनियाणा, कम्मट्टितीया, कम्मणामेव विप्परियासमंति, एवं जाव-धेमाणिया ।

२. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं वीचीदघ्दाइं आहारंति अवीचिदघ्दाइं आहारंति ? [उ०] गोयमा ! नेरतिया वीचिदघ्दाइं पि आहारंति, अवीचिदघ्दाइं पि आहारंति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘नेरतिया वीचि० तं चेव जाव-आहारंति’ ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया पणपसुणाइं पि दघ्दाइं आहारंति, ते णं नेरतिया वीचिदघ्दाइं आहारंति, जे णं नेरतिया पडि-पुचाइं दघ्दाइं आहारंति ते णं नेरइया अवीचिदघ्दाइं आहारंति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-जाव-आहारंति, एवं जाव-धेमाणिया आहारंति ।

३. [प्र०] जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउंकामे भवति से कइमियाणं पकरंति ? [उ०] गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया एणं महं नेमिपडिरुवगं विउच्चति, एणं जोयणसयसहस्सं धायाम-विन्नपंभेणं, तिन्नि जोयणसयसहस्साइं, जाव-अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिस्सेवेणं । तस्स णं नेमिपडिरुवगस्स उचारं बहुसमरम-णिजे भूमिभागे पन्नत्ते, जाव-मणीणं फासे, तस्स णं नेमिपडिरुवगस्स वहुमज्जदेसभागे तत्थ णं महं एणं पासायवउंसणं विउच्चति पंच जोयणसयाइं उट्टं उच्चत्तेणं, अह्वाइंजाइं जोयणसयाइं विन्नपंभेणं, अच्चुग्गय-मूसिय० वचओ जाव-पडिरुवं ।

## पष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृहमा [भगवान् गौतम] आ प्रमाणे योल्या के हे भगवन् ! नारको जो आहार करे, अने ते [आहारनो] जो परिणाम थाय, तेनी योनि ( उत्पत्तिस्थानक ) केवी होय, अने तेनी स्थिति-अवस्थानु कारण शुं छे ? [उ०] हे गौतम ! नारको पुद्गलनो आहार करे, अने तेनो पुद्गलरूपे परिणाम थाय, [शीत अने उष्ण रपर्शवाळा] पुद्गलो एज तेनी योनि-उत्पत्तिस्थानक छे, [ आयुपकर्माना ] पुद्गलो ए तेनी नरकमा स्थितितु कारण छे. तथा ते [वन्धद्वाग] कर्मने प्राप्त थयेला छे, ते नारकपणानुं निमित्तभूतकर्मवाळा छे, कर्मपुद्गलथी तेओनी स्थिति छे, अने कर्मने लीधे अन्य पर्यायने प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिको सुधी जाणवुं.

२ [प्र०] हे भगवन् ! नारको वीचिद्रव्योनो आहार करे छे के अवीचि द्रव्योनो आहार करे छे ? [उ०] हे गौतम नारको वीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे अने अवीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप गा हेतुधी कहो छो के, ‘नारको वीचिद्रव्यो अने अवीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे’ ? [उ०] हे गौतम ! जे नारको एक प्रदेश पण न्यून द्रव्योनो आहार करे छे तेओ वीचिद्रव्योनो आहार करे छे, अने जे नैरयिको परिपूर्ण द्रव्योनो आहार करे छे तेओ अवीचि द्रव्योनो आहार करे छे, ते हेतुधी हे गौतम ! एम कहुं छे के, ‘नारको वीचि तथा अवीचि ए वने प्रकारना द्रव्योनो आहार करे छे.’ ए प्रमाणे यावद्-‘वैमानिको आहार करे छे’ त्या सुधी जाणवुं.

३. [प्र०] हे भगवन् ! देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा अक्र उचार भोगववा योग्य दिव्य [मनोज्ञ स्पर्शादिक] भोगोने भोगववाने इच्छे ल्यारे ते तेने ते वखते केवी रीते भोगवे ? [उ०] हे गौतम ! ल्यारे ते देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा अक्र एक मोट्टे चक्रना जेवुं (वृत्ताकार) स्थान विकुर्वे छे, तेनी लंबाइ अने पहोळाइ एक लाख योजननी अने तेनी परिधि त्रण लाख [ सोळ हजार वसो सत्यावीश योजन त्रण क्रोश, एकसो अठ्ठावीश धनुष अने कंडक अधिक साडातेर ] आगुल छे. ते चक्रना आकारवाळा स्थाननी उपर वरोवर सम अने रमणीय

२ \* जेटला पुद्गलद्रव्यना समुदायथी सपूर्ण आहार थाय ते अवीचिद्रव्य, अने सपूर्ण आहारथी एकादिप्रदेश न्यून आहार ते वीचिद्रव्य

३ † अहिं शरुने सुधर्मासभा भोगस्थान छे, तो पण ते चक्रना आकारवाळ स्थान विकुर्वे छे ते जिननी आशातनानो त्याग करवा माटे छे. कारण के सुधर्मा सभामा माणवक स्तम्भने विपे लभटाया जिनना अस्थिओ छे, अने तेनी पासे ( मैथुननिमित्त ) विपयोपभोग करवामा जिननी आशातना थाय, माटे मैथुन निमित्तक विपयोपभोगमाटे चक्रना आकारवाळ वीजुं स्थान विकुर्वे छे.-टीका

तस्स पासायवडेंसगस्य उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते, जाव—पडिरूवे । तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिजे भूमिभागे, जाव—मणीणं फासो, मणिपेढिया अट्टजोयणिया जहा वेमाणियाणं । तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं एगे देवस-यणिजे विउव्वइ, सयणिज्जवन्नओ, जाव—पडिरूवे । तत्थ णं से सक्के देविंदे देवराया अट्टहिं अगमहिंसीहिं सपरिवाराहिं, दोहि य अणिपहिं नट्टाणिण्य य गंधवाणिण्य य सद्धिं महयाहयनट्टं जाव—दिवाइं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरइ ।

४. [प्र०] जाहे ईसाणे देविंदे देवराया दिवाइं० ? [उ०] जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेसं, एवं सणकुमारे वि, नवरं पासायवडेंसओ छ जोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं, तिन्नि जोयणसयाइं विन्खंभेणं, मणिपेढिया तहेव अट्टजोयणिया । तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ सपरिवारं भाणियव्वं । तत्थ णं सणकुमारे देविंदे देवराया वावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव—चउहिं वावत्तरीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं य वहुहिं सणकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिपहिं देवेहिं य देवीहिं य सद्धिं संपरिखुडे महया० जाव—विहरइ । एवं जहा सणकुमारे तहा जाव—पाणओ अच्चुओ, नवरं जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो, पासायउच्चत्तं जं सएसु २ कप्पेसु विमाणणं उच्चत्तं, अद्धद्धं वित्थारो, जाव—अच्चुयस्स नवजोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, तत्थ णं गोयमा ! अच्चुए देविंदे देवराया दसाहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव—विहरइ, सेसं तं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ।

### चौदसमसए छट्टओ उद्देशो समत्तो ।

भूमिभाग कहेलो छे. [तिनुं वर्णन] यावत्—'भनोन्न स्पर्श होय छे' त्या सुधी जाणवुं. ते चक्राकारवाळा ते स्थाननी वरोवर मध्यभागे एक मोटो प्रासादावतंसक—भूषणरूप सुन्दर प्रासाद विकुर्वे छे. ते उंचाइमां पांचसे योजन उंचो अने तेनो विष्कंभ—विस्तार अटीसो योजननो छे. ते प्रासाद अभ्युदगत—अत्यन्त उंचो [अने प्रमाना पुंजवडे व्याप्त होवाधी जाणे हसतो होयनी !]—इत्यादि \*प्रासादवर्णन जाणवुं, यावत्—ते प्रतिरूप—सुंदर अने दर्शनीय छे. तथा ते प्रासादावतंसकनो उल्लोच—उपरनो भाग पद्म अने लताओना चित्रामणधी विचित्र अने यावत्—दर्शनीय छे. वळी ते प्रासादावतंसकनो अंदरनो भाग बराबर सम अने रमणीय छे, यावत्—'स्यां मणिओनो स्पर्श होय छे'—स्यां सुधी वर्णन जाणवुं. वळी त्यां आठ योजन उंची एक मणिपीठिका छे, अने ते वैमानिकोनी मणिपीठिका जेवी जाणवी. ते मणिपीठिकानी उपर एक मोटी देवशय्या विकुर्वे छे, ते देवशय्यानुं वर्णन यावत् 'प्रतिरूप' छे त्यां सुधी कहेवुं. त्यां देवनो इन्द्र अने देवनो राजा शक्र पोतपोताना परिवारयुक्त आठ पट्टराणीओ साथे गन्धर्वानीक अने नाट्यानीक ए वे प्रकारना अनीकनी साथे मोटेयी आहत—वगाडेल्ला नाट्य, गीत अने वादित्रना शब्दवडे यावत्—भोगववा योग्य दिव्य भोगोने भोगवतो विहरे छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र अने देवनो राजा ईशान दिव्य भोगोने भोगववा इच्छे ल्यारे ते केवी रीते भोगवे ? [उ०] जेम शक्र संवन्धे कल्लुं तेम ईशान संवन्धे पण समग्र कहेवुं. ए प्रमाणे सनत्कुमारने विपे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, ए प्रासादावतंसक उंचाइमां छसो योजन अने पहोळाइमा त्रणसो योजन छे. तथा ते मणिपीठिकानी उपर एक मोटुं सिंहासन सपरिवार—पोताना परिवारने योग्य आसनो सहित विकुर्वे छे—इत्यादि कहेवुं. तेमा देवेन्द्र अने देवनो राजा सनत्कुमार व्होतेर हजार सामानिक देवो साथे, यावत्—वे लाख अठ्याशी हजार आत्मरक्षक देवो साथे, अने सनत्कुमार कल्पमा रहेनारा घणा वैमानिक देवो अने देवीओ साथे परिवृत थइ [मोटा गीत अने वादित्रना] शब्दोवडे यावत्—विहरे छे. ए प्रमाणे जेम सनत्कुमार संवन्धे कल्लुं, तेम यावत्—प्राणत तथा अच्युत देवलोक सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के, जेनो जेटलो परिवार होय तेनो तेटलो अहि कहेवो. पोत पोताना कल्पना विमानोनी उंचाइना जेटली प्रासादनी उंचाइ जाणवी, अने उंचाइना अडधा भाग जेटलो तेनो विस्तार जाणवो, यावत्—अच्युत देवलोकनो प्रासादावतंसक नवसो योजन उंचो छे, अने साडा-चारसो योजन पहोळो छे. तेमा हे गौतम ! देवेन्द्र देवराज अच्युत दश हजार सामानिक देवो साथे यावत्—विहरे छे. वाकी वधुं पूर्वे प्रमाणे जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्—[भगवान् गौतम] विहरे छे.

### चतुर्दश शतके षष्ठ उद्देशक समाप्त.

३ \* प्रासादवर्णन संवन्धे जुओ—भग० खं० १ पृ० ३००.

४ † सनत्कुमारेन्द्र मात्र सिंहासन विकुर्वे छे, परन्तु शक्र अने ईशाननी पेठे देवशय्या विकुर्वतो नथी, कारण के ते स्पर्शमात्रधी विषयोपभोग करतो होवाधी तेने शय्यानु प्रयोजन नथी.

‡ सनत्कुमारेन्द्रनो परिवार बस्यो छे, माहेन्द्रने सीतेर हजार सामानिक देवो अने वे लाख एंशी हजार अग्ररक्षक देवो होय छे, ब्रह्मदेवलोकने साठ हजार, लान्तकने पचास हजार, शुक्रने चाळीश हजार, सहस्रारने त्रौश हजार, आणत—प्राणतने वीश हजार अने आरण—अच्युतने दश हजार सामानिक देवो होय छे, अने तेथी चारगुणा आत्मरक्षक देवो जाणवा.

¶ सनत्कुमार अने माहेन्द्र देवलोकना विमान छसो योजन उंचा छे, माटे तेना प्रासादनी उंचाइ पण छसो योजन जाणवी, ब्रह्म अने लान्तकने विपे सातसो योजन, शुक्र अने सहस्रारने विपे आठसो योजन, आणत—प्राणत अने आरण—अच्युतेन्द्रना प्रासादो नवसो योजन उंचा छे, अने तेनो विस्तार तेथी अरधो छे. यावत्—अच्युतनो नवसो योजन प्रासाद उंचो छे, अने तेनो विस्तार साडा चारसो योजन छे. आ अच्युत देवलोकने विपे अच्युतेन्द्र दश हजार सामानिक देवो साथे यावत् विहरे छे. अहिं एटलो विशेष छे के सनत्कुमारादि इन्द्रो सामानिकादि देवोना परिवार सहित चक्रना आकारवाळा स्थानने विपे जाय छे, कारण के तेओना समक्ष स्पर्शादि विषयोनो उपभोग करवो अनिष्ट छे, शक्र अने ईशानेन्द्र परिवार सहित त्या जता नथी, कारण के ते कायसेवी होवाधी तेओना समक्ष कायप्रतिचारणा (कायद्वारा विषयोपभोग) सेववो लजनीय अने अनुचित छे.—टीका.

## सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-परिसा पडिगया । 'गोयमा' ! दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी-  
'चिर संसिद्धोऽसि मे गोयमा ! चिरसंयुधोऽसि मे गोयमा ! चिरपरिचिद्योऽसि मे गोयमा ! चिरसुसिद्धोऽसि मे गोयमा !  
चिराणुगयोऽसि मे गोयमा ! चिराणुवत्ती सि मे गोयमा ! अणंतरं देवलोप अणंतरं माणुस्सप भवे, किं परं ? भरणा कायस्स  
भेदा, इधो सुत्ता दो वि तुल्ला पगट्ठा अविस्सेसमणाणत्ता भविस्सामो ।

२. [प्र०] जहा णं भंते ! वयं प्यमट्टं जाणामो, पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा प्यमट्टं जाणंति, पासंति ?  
[उ०] हंता गोयमा ! जहा णं वयं प्यमट्टं जाणामो, पासामो तहा अणुत्तरोववाइया वि देवा प्यमट्टं जाणंति, पासंति ।  
[प्र०] से केणट्टेणं जाव-पासंति ? [उ०] गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणंतायो मणोद्धवग्गणाओ लद्धाओ, पत्ताओ,  
अमिसमन्नागयाओ भवंति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-जाव-'पासंति' ।

३. [प्र०] कइविहे णं भंते ! तुल्लप पणत्ते ? [उ०] गोयमा ! छद्विहे तुल्लप पणत्ते, तंजहा-१ दधतुल्लप, २ खेत्त-  
तुल्लप, ३ कालतुल्लप, ४ भवतुल्लप, ५ भावतुल्लप, ६ संटाणतुल्लप ।

## सप्तम उद्देशक.

१. राजगृहमां यावत्-परियद् वार्दने पाछी गई. [भगवान् श्री महावीर स्वामी केवलज्ञाननी अप्राप्तियी खिन्न थयेला गौतम स्वामीने  
आन्धासन आपवा माटे पोतानो तेमनी साथेनो लांवा कालनो परिचय वतावी भविष्यमां पोतानी साथे तेमनी तुल्यता वतावे छे-] श्रमण  
भगवंत महावीरे 'हे गौतम !' एम भगवान् गौतमने बोलावी आ प्रमाणे कयुं-"हे गौतम ! तुं मारी साथे घणां काळ सुची केद्वयी बंवायेल  
छे, हे गौतम ! ते घणा लावा काळयी [ लेहने लीवे ] मारी प्रगंसा करी छे, हे गौतम ! तारो मारी साथे घणा लावा काळयी परिचय  
छे, हे गौतम ! तें घणा लांवा काळयी मारी सेवा करी छे, हे गौतम ! तुं घणा लावा काळयी मने अनुसयो छे, हे गौतम ! तुं घणा लांवा  
काळयी मारी साथे अनुकूलपणे वर्यो छे, हे गौतम ! अनन्तर (तुरतना) देवभयमां अने तुरतना मनुष्यभयमां [ ए प्रमाणे तारी साथे  
संबन्ध छे, ] वघारे शुं ? पण भरण पछी शरीरनो नाश थया वाट अर्हीयी ध्यवी आपणे वने सरखा, एकार्थ-एकप्रयोजनवाळा, (अथवा  
एक सिद्धिदेवमां रहेवावाळा ) विशेषता अने भेदरहित थईशुं.

२ [प्र०] हे भगवन् ! जेम आपणे वने आ (पूर्वोक्त) अर्थने \*जाणीए छीए अने जोइए छीए, तेम अनुत्तरौपपातिक देवो पण  
ए वातने जाणे छे अने जुए छे ? [उ०] हा, गौतम ! जेम आपणे वने पूर्वोक्त वातने जाणीए छीए अने जोइए छीए तेम अनुत्तरौपपातिक  
देवो पण ए वातने जाणे छे अने जुए छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुयी कहो छो के 'जेम आपणे जाणीए छीए तेम  
अनुत्तरौपपातिक देवो पण जाणे छे अने जुए छे' ? [उ०] हे गौतम ! अनुत्तरौपपातिक देवोए मनोद्रव्यनी अनंत वर्गणाओ (अवधिज्ञाननी  
लब्धिथी ) [ज्ञेयरूपे] मेळवी छे, प्राप्त करी छे, अने [गुण-पर्यायना ज्ञानयी ] व्याप्त करी छे, माटे हे गौतम ! एम कहेवाय छे के ते  
(अनुत्तरौपपातिक देवो ) जाणे छे अने जुए छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! केटला प्रकारे तुल्य कहेल छे ? [उ०] हे गौतम ! तुल्य छ प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ द्रव्यतुल्य,  
२ क्षेत्रतुल्य, ३ कालतुल्य, ४ भवतुल्य, ५ भावतुल्य अने ६ संस्थानतुल्य.

२ \* गौतमस्वामी महावीर भगवंतने कहे छे-"हुं भविष्यकाळमा आपना तुल्य थईश" एम आप केवलज्ञानथी जाणे छे, अने ते वात हुं आपना  
उपदेशथी जाणुं छुं, तेम अनुत्तरौपपातिक देवो पण आ वात जाणे छे अने जुए छे?-ए प्रश्ननो आगत्य छे-टीका.

४. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘दधतुल्लप’ २ ? [उ०] गोयमा ! परमाणुपोगगले परमाणुपोगगलस्स दधओ तुल्ले, परमाणुपोगगले परमाणुपोगगलवहरित्तस्स दधओ णो तुल्ले, दुपपसिए खंधे दुपपसियस्स खंधस्स दधओ तुल्ले, दुपपसिए खंधे दुपपसियवहरित्तस्स खंधस्स दधओ णो तुल्ले, एवं जाव—दसपपसिए, तुल्लसंखेज्जपपसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपपसियस्स खंधस्स दधओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपपसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपपसियवहरित्तस्स खंधस्स दधओ णो तुल्ले, एवं तुल्लअसंखेज्जपपसिए वि, एवं तुल्लअणंतपपसिए वि, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—‘दधतुल्लप’ २ ।

५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘खेत्तुल्लप’ २ ? [उ०] गोयमा ! एगपपसोगाढे पोगगले एगपपसोगाढस्स पोगगलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपपसोगाढे पोगगले एगपपसोगाढवहरित्तस्स पोगगलस्स खेत्तओ णो तुल्ले, एवं जाव—दसपपसो-गाढे, तुल्लसंखेज्जपपसोगाढे तुल्लसंखेज्ज०, एवं तुल्लअसंखेज्जपपसोगाढे वि, से तेणट्टेणं जाव—‘खेत्तुल्लप’ २ ।

६. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘कालतुल्लप’ २ ? [उ०] गोयमा ! एगसमयट्ठितीए पोगगले एगसमयट्ठि-यस्स य पोगगलस्स कालओ तुल्ले, एगसमयट्ठितीए पोगगले एगसमयट्ठितीयवहरित्तस्स पोगगलस्स कालओ णो तुल्ले, एवं जाव—दससमयट्ठितीए, तुल्लसंखेज्जसमयट्ठितीए एवं चेव, एवं तुल्लअसंखेज्जसमयट्ठितीए वि, से तेणट्टेणं जाव—‘कालतुल्लप’ २ ।

७. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘भवतुल्लप’ २ ? [उ०] गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स भवट्टयाए तुल्ले, नेरइयवह-रित्तस्स भवट्टयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एवं चेव, एवं मणुस्से, एवं देवे वि, से तेणट्टेणं जाव—‘भवतुल्लप’ २ ।

८. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘भावतुल्लप’ २ ? [उ०] गोयमा ! एगगुणकालए पोगगले एगगुणकालस्स पोगग-लस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोगगले एगगुणकालगवहरित्तस्स पोगगलस्स भावओ णो तुल्ले, एवं जाव—दसगुणकालए, एवं तुल्लसंखेज्जगुणकालए पोगगले, एवं तुल्लअसंखेज्जगुणकालए वि, एवं तुल्लअणंतगुणकालए वि, जहा कालए एवं नीलय, लोहि-

९. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यतुल्य ए ‘द्रव्यतुल्य’ एम केम कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! एक परमाणुपुद्गल बीजा परमाणुपुद्गलनी साथे द्रव्यथी तुल्य छे, पण परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गल शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्यथी तुल्य नथी, ए प्रमाणे द्विप्रदेशिक स्कन्ध (बीजा) द्विप्रदेशिक स्कन्धनी साथे द्रव्यथी तुल्य छे, पण द्विप्रदेशिक स्कन्ध द्विप्रदेशिक स्कन्ध शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्यथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्—दशप्रदेशिक स्कन्ध सुधी कहेवुं. तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध (तेना) तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी साथे द्रव्यथी तुल्य छे, पण तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्यथी तुल्य नथी, ए प्रमाणे तुल्यअसंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध तथा तुल्यअनन्तप्रदेशिक स्कन्ध संवन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते कारणथी द्रव्यतुल्य ए ‘द्रव्य-तुल्य’ कहेवाय छे.

द्रव्यतुल्य.

५. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रतुल्य ए ‘क्षेत्रतुल्य’ शा कारणथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! आकाशना एक प्रदेशावगाढ—एक प्रदेशामां रहेल पुद्गल द्रव्य एक प्रदेशामां रहेल पुद्गलद्रव्यनी साथे क्षेत्रथी तुल्य कहेवाय छे; पण एक प्रदेशामां रहेल पुद्गलद्रव्य शिवायना द्रव्य साथे क्षेत्रथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्—दशप्रदेशावगाढ—दश प्रदेशामां रहेल पुद्गल द्रव्य संवन्धे पण जाणवुं. तथा तुल्यसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्धनी साथे तुल्यसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्ध तुल्य होय, ए प्रमाणे तुल्यअसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्ध संवन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी क्षेत्रतुल्य ए ‘क्षेत्रतुल्य’ कहेवाय छे.

क्षेत्रतुल्य.

६. [प्र०] हे भगवन् ! कालतुल्य ए ‘कालतुल्य’ शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! एक समयनी स्थितिवाळुं पुद्गलद्रव्य एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गलनी साथे कालथी तुल्य छे. एक समयनी स्थितिवाळुं पुद्गलद्रव्य एक समयनी स्थिति शिवायना पुद्गलद्रव्यनी साथे कालथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्—दशसमयनी स्थितिवाळा पुद्गलद्रव्य संवन्धे जाणवुं. तुल्यसंख्यातासमयनी स्थितिवाळा अने तुल्य-असंख्यात समयनी स्थितिवाळा पुद्गलद्रव्य संवन्धे पण ए प्रमाणे जाणवुं. ते हेतुथी ए प्रमाणे कालतुल्य ए ‘कालतुल्य’ कहेवाय छे.

कालतुल्य

७. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के—भवतुल्य ए ‘भवतुल्य’ छे ? [उ०] हे गौतम ! नारक जीव नारकनी साथे भवरूपे तुल्य छे, नारक नारक शिवायना बीजा जीव साथे भवरूपे तुल्य नथी. ए प्रमाणे तिर्यचयोनिक्, मनुष्य अने देवसंवन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावत्—‘भवतुल्य’ कहेवाय छे.

भवतुल्य.

८. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के—भावतुल्य ए ‘भावतुल्य’ छे ? [उ०] हे गौतम ! एकगुण काळावर्णवाळुं पुद्गलद्रव्य एकगुण काळावर्णवाळा पुद्गलद्रव्यनी साथे भावथी तुल्य छे, परन्तु एकगुण काळावर्णवाळुं पुद्गलद्रव्य एकगुणकाळा वर्ण शिवायना बीजा पुद्गलद्रव्य साथे भावतुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत् दशगुण काळावर्णवाळा पुद्गल संवन्धे जाणवुं. तुल्यसंख्यातगुणकाळा, तुल्यअसं-

भावतुल्य.



વપ, દ્વાલિદ્ધે, મુક્તિહણ, एवं मुक्तिमग्धे, एवं दुक्तिमग्धे, एवं तिक्ते, जाव-महुरे, एवं कवग्धे, जाव-लुम्भे, उदरप भावे उदर्यस्स भावस्स भावओ तुहे, उदरप भावे उदर्यभाववदरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुहे, एवं उवसमिप, खरप, अओ-वसमिप, पारिणामिप । संनिवाद्य भावे संनिवाद्यस्स भावस्स, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘भावतुहण’ २ ।

૧. [પ્ર૦] સે કેળટ્ટેણં મંતે ! एवं बुच्चइ-‘संटाणतुहण’ २ ? [उ०] गोयमा ! परिमंडले संटाणे परिमंडलस्स संटाणस्स संटाणओ तुहे, परिमंडलसंटाणवदरित्तस्स संटाणओ नो तुहे, एवं घट्टे, तंसे, चउरंसे, आयप, समचउरंसंटाणे समचउर-सस्स संटाणस्स संटाणओ तुहे, समचउरंसे संटाणे समचउरंसंटाणवदरित्तस्स संटाणस्स संटाणओ नो तुहे, एवं जाव-परिमंडले वि, एवं जाव-हुंढे, से तेणट्टेणं जाव-‘संटाणतुहण’ २ ।

૧૦. [પ્ર૦] મત્તપચ્ચન્નાયપ ણં મંતે ! अणगारे मुच्छिप जाव-अज्जोववघ्ने आहारमाहारेति, अहे णं वीससाप कालं फरेति, तओ पच्छा अमुच्छिप अग्धिद्वे जाव-अणज्जोववघ्ने आहारमाहारेति? [उ०] हुंता गोयमा ! मत्तपचचन्नायप णं अणगारे तं चव । [प्र०] से केणट्टेणं मन्ते ! एवं बुच्चइ-‘मत्तपचचन्नायप णं तं चव’ ? [उ०] गोयमा ! मत्तपचचन्नायप णं अणगारे मुच्छिप जाव-अज्जोववघ्ने आहारे भवइ, अहे णं वीससाप कालं फरेइ, तओ पच्छा अमुच्छिप जाव-आहारे भवइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव-आहारमाहारेति ।

લ્યાતગુણકાલા અને તુલ્યઅનંતગુણકાલા પુદ્ગલદ્રવ્ય સંવન્ધે પળ એ પ્રમાણે જાણવું. જેમ કાચ્યવર્ણવાચ્ય પુદ્ગલદ્રવ્ય સંવન્ધે કાચું, તેમ નીલ (લીલા) રાતા, પીચા અને શુદ્ધ પુદ્ગલદ્રવ્ય સંવન્ધે પળ જાણવું. એ પ્રમાણે મુર્ગંચી, દુર્ગંચી, કટુક યાવદ્ મધુર દ્રવ્ય સંવન્ધે તથા કર્કશ (વરસઠ) યાવદ્-રુક્ષ પુદ્ગલદ્રવ્ય સંવન્ધે જાણવું. ઔદયિક ભાવ ઔદયિક ભાવની સાથે માત્રથી તુલ્ય છે. ઔદયિક ભાવ સિવાયના વીજા ભાવ સાથે માત્રથી તુલ્ય નથી. એ પ્રમાણે ઔપશમિક, ક્ષાયિક, ક્ષાયોપશમિક તથા પારિણામિક ભાવસંવન્ધે જાણવું. સાનિપાતિક (અનેક ભાવના મઝાવાડે થયેલા) ભાવ સાનિપાતિક ભાવની સાથે માત્રથી તુલ્ય છે. તે હેતુથી હે ગૌતમ ! એમ કહેવાય છે કે ભાવતુલ્ય એ ‘ભાવતુલ્ય’ છે.

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શા હેતુથી એમ કહેવાય છે કે-‘સંસ્થાનતુલ્ય’ એ ‘સંસ્થાનતુલ્ય’ છે ? [उ०] હે ગૌતમ ! (૧) પરિમંડલ-સંસ્થાન પરિમંડલસંસ્થાનની સાથે સંસ્થાનવડે તુલ્ય છે, પરિમંડલસંસ્થાન તે શિવાયના વીજા સંસ્થાનની સાથે સંસ્થાનવડે તુલ્ય નથી. એ પ્રમાણે (૨) વૃત્ત (ગોલ) સંસ્થાન, (૩) ત્ર્યસ (ત્રિકોણ) સંસ્થાન, (૪) ચતુરસ-ચોરસસંસ્થાન અને (૫) આયત-ટાંટું સંસ્થાન પણ જાણવું. તથા સમચતુરસ સંસ્થાન સમચતુરસ સંસ્થાનની સાથે સંસ્થાનથી તુલ્ય છે, પણ સમચતુરસ શિવાયના વીજા સંસ્થાનની સાથે સંસ્થાનથી તુલ્ય નથી. એ પ્રમાણે ન્યપ્રોવપરિમંડલ, અને યાવત્-હુંટ સંસ્થાન મુઘી જાણવું. માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી યાવત્-સંસ્થાનતુલ્ય એ ‘સંસ્થાનતુલ્ય’ કહેવાય છે.

૧૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! મત્તપ્રલાહ્યાન કરનાર (આહારનો લ્યાગી) અનગાર મૂર્છિત, યાવત્-અલ્યન્ત આસક્ત થઈને આહાર કરે, અને પછી સ્વમાવથી કાલ-મારણાતિક સમુદ્ઘાત કરે, ત્યાર પછી અમૂર્છિત-મૂર્છા વિના, અગુદ્ધ-લાલચ વિના યાવત્-અનાસક્ત થઈ આહાર કરે ? [उ०] હા, ગૌતમ ! મત્તપ્રલાહ્યાન કરનાર અનગાર-હ્યાદિ પૂર્વ પ્રમાણે આહાર કરે. [प्र०] હે મગવન્ ! શા હેતુથી એમ કહેવાય છે કે મત્તપ્રલાહ્યાન કરનાર અનગાર-હ્યાદિ [ પૂર્વ પ્રમાણે ] આહાર કરે ? [उ०] હે ગૌતમ ! મત્તપ્રલાહ્યાન કરનાર અનગાર (પ્રથમ) મૂર્છિત, યાવત્-આહારને વિષે આસક્ત હોય છે, ત્યાર પછી સ્વમાવથી તે કાલ-મારણાતિક સમુદ્ઘાત કરે છે અને ત્યાર વાદ યાવદ્ આહારને વિષે અમૂર્છિત-રાગરહિત થઈ આહાર કરે છે. માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી મત્તપ્રલાહ્યાન કરનાર અનગાર પૂર્વ પ્રમાણે યાવત્-‘આહાર કરે છે.’

૯ \* ૧ કર્મનો ઉદય, અથવા કર્મના ઉદયથી થયેલો જીવનો પરિણામ તે ઔદયિક ભાવ, ૨ ઉદયગ્રાહ કર્મનો ક્ષય અને ઉદયમા નહિ પ્રાપ્ત થયેલા કર્મના ઉદયને અમુક કાલમુઘી રોકવો તે ઔપશમિક ભાવ એટલે ઉપશમક્રિયા, અથવા કર્મના ઉપશમ વડે થયેલો આત્મનો પરિણામ તે ઔપશમિક ભાવ, ૩ કર્મનો ક્ષય અથવા કર્મના ક્ષય થવા-વડે ઉત્પન્ન થયેલો ભાવ-પરિણામ તે ક્ષાયિક ભાવ. ૪ ક્ષય-ઉદય પ્રાપ્ત કર્મના નાશ સાથે ઉપશમ-ઉદયને રોકવો તે ક્ષાયોપશમિક ભાવ, અથવા ક્ષયોપશમવડે થયેલો જે આત્મપરિણામ તે ક્ષાયોપશમિકભાવ. અહિં ઔપશમિક અને ક્ષાયોપશમિક ભાવની વ્યાખ્યા એક પ્રકારની છે, તો પળ એટલો વિશેષ છે કે ક્ષાયોપશમિક ભાવને વિષે માત્ર વિપાકવેદન નથી, પણ પ્રદેશવેદન છે, અને ઔપશમિક ભાવને વિષે પ્રદેશવેદન પણ નથી. ૫ કર્મના ક્ષયાદિ શિવાય અનાદિ કાલનો સ્વામાવિક ભાવ તે પારિણામિક ભાવ. ૬ ઔદયિકાદિ વે ત્રણ ભાવોનો સંયોગ તે સાનિપાતિક ભાવ કહેવાય છે-ટીકા.

૯ † સસ્થાન-આકારવિશેષ, તેના વે પ્રકાર છે-૧ જીવસંસ્થાન અને ૨ અજીવસંસ્થાન. તેમાં અજીવસસ્થાન પાંચ પ્રકારે છે-(૧) પરિમંડલસંસ્થાન સુઘીની પેઠે વહારથી ગોલ અને મધ્યમા પોચ્છ હોય છે. તેના ઘન અને પ્રતરના મેદથી વે પ્રકાર છે (૨) રૂત-કુંભારના ચક્રની પેઠે વહારથી ગોલ અને અદરથી પોલાણરહિત તેના ઘન અને પ્રતર-એ વે મેદ છે, વઠ્ઠી એક એકના ચચ્ચે મેદ છે-સમસંહ્યાવાચ્ય પ્રદેશયુક્ત અને વિપમસંહ્યાવાચ્ય પ્રદેશયુક્ત એ પ્રમાણે (૩) ત્ર્યસ (ત્રિકોણાકાર), (૪) ચતુરસ (ચતુષ્કોણ), (૫) આયત-ટુંબની પેઠે લાહું, તેના ત્રણ પ્રકાર છે ૧ શ્રેષ્ઠાયત, ૨ પ્રતરાયત અને ૩ ધનાયત. વઠ્ઠી એક એકના વે પ્રકાર છે-સમસંહ્યાપ્રદેશવાલું અને વિપમસંહ્યાપ્રદેશવાલું આ પાંચ પ્રકારના સંસ્થાન વિવ્રસા અને પ્રયોગથી ધાય છે. સંસ્થાનનામકર્મના ઉદયથી જીવોનો આકારવિશેષ ધાય તે જીવસંસ્થાન કહેવાય છે. તેના સમચતુરસાદિ છ પ્રકાર છે.—ટીકા.

११. [प्र०] अत्थि णं भंते ! लवसत्तमा देवा २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्टेणं भन्ते ! एवं बुच्चइ—‘लवसत्तमा देवा’ २ ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए—केट्ट पुरिसे तरुणे जाव—निउणसिप्पोवगए सालीण वा, वीहीण वा, गोधू-माण वा, जवाण वा, जवजवाण वा, पक्काणं, परियाताणं, हरियाणं, हरियकंडाणं तिक्खेणं णवपज्जणएणं असिअएणं पडिसाह-रिया २ पडिसंखिविया २ जाव—इणामेव २ त्ति कट्टु सत्त लवए लुएजा, जति णं गोयमा ! तेसिं देवाणं एवतियं कालं आउए पट्टुपते तो णं ते देवा तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झंता जाव अंतं करंता, से तेणट्टेणं जाव—‘लवसत्तमा देवा’ २ ।

१२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! ‘अणुत्तरोववाइया देवा’ २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘अणुत्तरोववाइया देवा’ २ ? [उ०] गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं अणुत्तरा सहा, जाव—अणुत्तरा फासा, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—जाव—‘अणुत्तरोववाइया देवा’ २ ।

१३. [प्र०] अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा णं केवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उचवत्ता ? [उ०] गोयमा ! जावतियं छट्टभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइया देवा देवत्ताए उव-वत्ता । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते’ त्ति ।

### चौदसमसए सत्तमो उद्देशो समत्तो ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! शुं \*लवसत्तम देवो ए लवसत्तम देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! लवसत्तम देवो ए ‘लवसत्तम देवो’ एम शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई जुवान पुरुष यावत्—निपुण शिल्पनो ज्ञाता होय, अने ते पा-केला, लणवाने योग्य थयेला, पीला थयेला अने पीलीनालवाळा शालि, व्रीहि, गहुं, जव अने जवजव (धान्यविशेष) ने [हाथथी] एकटा करी, मुठिवडे ग्रहण करी ‘आ काप्पा’ ए प्रमाणे शीघ्रतापूर्वक नवीन पाणी चढावेळ तीक्ष्ण दातरडावडे सात लव (कोळी) जेटला समयमा कापी नाखे, हे गौतम ! जो ते देवोनुं एटलं (सात लव जेटलं) आयुप्य वधारे होत तो ते देवो तेज भवमा सिद्ध यात, यावत् सर्व दु.खोनो अन्त करत. माटे ते हेतुथी हे गौतम ! ते लवसत्तम देवो ए ‘लवसत्तम’ एम कहेवाय छे.

लवसत्तम देवो

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अणुत्तरौपपातिक देवो २ छे ? [उ०] हा गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! आ हेतुथी अणुत्तरौपपातिक देवो ‘अणुत्तरौपपातिक’ एम कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! अणुत्तरौपपातिक देवोनी पासे अनुत्तर शब्दो, यावत्—अनुत्तर स्पर्शो होय छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावद् तेओने अणुत्तरौपपातिक देवो कहेवामां आवे छे.

अणुत्तरौपपातिक देवो.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! केटलं कर्म वाकी रहेवाथी अणुत्तरौपपातिक देवो अणुत्तरौपपातिकदेवपणे उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ छट्ट भक्कवडे जेटला कर्मनी निर्जरा करे तेटलं कर्म वाकी रहेवाथी अणुत्तरौपपातिक देवो अणुत्तरौपपातिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’—एम कही [ भगवान् गौतम ] यावद् विहरे छे.

केटल कर्म वाकी रहेवाथी अणुत्तरौपपातिक देवपणे उत्पन्न थाय

### चतुर्दश शतके सप्तम उद्देशक समाप्त.

११ \* शालि वगेरे धान्यनी एक कोळी लणता जेटलो काळ राने तेने ‘लव’ कहे छे. तेवा सप्तम लव सुधीनु आयुप थोळु होवाथी जे विशुद्ध अप्यन-सायवाळा गनुप्यो मोक्षे न गया, पण सर्वाथिसिद्ध विमानमा उत्पन्न थया ते लवसत्तम देवो कहेवाय छे.—टीका.

૧૪. [પ્ર૦] એસ ણં મંતે ! ઉંચરલદ્વિયા ડળહામિદ્વયા ૩ કાલમાસે કાલં કિંચા જાવ-કાદિં ડંચવજિહિતિ ? [૩૦] ગોયમા ! ડ્હેવે જંબૂદીવે દીવે માષ્ટે યાસે માડલિપુષ્ટે નગરે પાડલિદમ્બલ્લાપ પચાયાહિતિ । સે ણં તલ્ય અધિય-વંદિય-જાવ-મવિસ્સતિ । સે ણં મંતે ! ડળંતરં ડલ્લદ્વિષ્ટા-સેસં તં ચેવ જાવ-અંતં કાહિતિ ।

૧૫. તેણં કાલેણં તેણં સમપ્ણં ડમ્મડસ્સ પરિધાયગસ્સ સ્સત્ત અંનેવાસીસયા ગિમ્મકાલસમયંસિં ૦ પયં જદ્દા ડવવાઇય, જાવ-આરાહગા ।

૧૬. યહુજ્જે ણં મંતે ! અન્નમન્નસ્સ પચમારખ્ખવ્વ, પયં યલુ અમ્મડે પરિધાયવ કંપિહ્હપુરે નગરે યરસ્સ, પયં જદ્દા ડવવાઇય અમ્મડસ્સ વત્તધયા જાવ-દ્દપ્પરૂણો અંતં કાહિતિ ।

૧૭. [પ્ર૦] અલિય ણં મંતે ! અઘ્ઘાવાદ્દા દેવા ૨ ? [૩૦] હંતા અલિય । [પ્ર૦] સે કેળદ્દેણં મંતે ! પયં ડુચ્છ-‘અઘ્ઘાવાદ્દા દેવા’ ૨ ? [૩૦] ગોયમા ! પમ્મૂ ણં પ્પમેમે અઘ્ઘાવાદ્દે દેવે પ્પમેગસ્સ પુરિસસ્સ પ્પમેગંતિ અચ્છિપત્તંસિ દિચ્છં દેવિંદિ, દિચ્છં દેવજ્જુત્તિ, દિચ્છં દેવાણુમાગં, દિચ્છં યત્તીસતિવિહં નદ્દવિહં ડવદંસંત્તપ, ણો ચેવ ણં તસ્સ પુરિસસ્સ કિંચિ આયાદં વા પવાદં વા ડપ્પાપ્પદ, ડવિચ્છેયં વા કરંતિ, પ્પસુહમં ચ ણં ડવદંસેજ્જા, સે તેણદ્દેણં જાવ-‘અઘ્ઘાવાદ્દા દેવા’ ૨ ।

૧૮. [પ્ર૦] પમ્મૂ ણં મંતે ! સ્સલ્લે દેવિંદે દેવરાયા પુરિસસ્સ સીસં પાણિણા અલિણો ડિંદિદ્દા કમંડલુમિ પન્નિપવિત્તપ ? [૩૦] હંતા પમ્મૂ । [પ્ર૦] સે કહ્મમિદ્દાણિં પક્કરેતિ ? [૩૦] ગોયમા ! ડિંદિયા ડિંદિયા ચ ણં પન્નિવેજ્જા, મિંદિયા મિંદિયા ચ ણં પન્નિવેજ્જા, કોટ્ટિયા કોટ્ટિયા ચ ણં પન્નિવેજ્જા, ડુઠિયા ડુઠિયા ચ ણં પન્નિવેજ્જા, તથો પચ્છા પિપ્પામેવ પહિસંધાપજ્જા, નો ચેવ ણં તસ્સ પુરિસસ્સ કિંચિ આયાદં વા યાયાદં વા ડપ્પાપ્પજ્જા, ડવિચ્છેદં પુણ કરેતિ, પ્પસુહમં ચ ણં પન્નિવેજ્જા ।

૧૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! [સૂર્યનો] ગરમીથી હળાપેટ, તૃપાથી પીડાપેટ અને દવામિનાઝથી ઝડી મયેલ આ ડંચગૃહ્ણનાં શાગ્ગા મરણસમયે કાલ કરી ક્યાં જશે, ક્યા ડત્તજ થશે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે આજ જંબૂદીપના ભારતવર્ષમા પાટલિપુત્ર નામના નગરમા પાટલિવૃક્ષપણે ડત્તજ થશે. અને ત્યા તે અર્ચિત, વંદિત અને યાવત્-પૂજનીય થશે. [પ્ર૦] તે ત્યાથી મરણ પામી ક્યા જશે, ક્યાં ડત્તજ થશે ? [૩૦] ૯ વર્ષ પૂર્વનો પેઠે જાણવું, યાવત્-સર્વ દુઃખોનો અન્ત કરશે.

૧૫. તે કાલે, તે સમયે ડંચડ પરિવ્રાજકના સાતસો શિષ્યો ગ્રીષ્મ કાલના સમયને વિષે વિહાર કરતા-હ્યાદિ વધું ઔપપાતિક સૂત્રમા કહ્યા પ્રમાણે અહિં કહેવું. યાવત્-‘તેઓ આરાધક થયા’-ત્યાં સુધી જાણવું.

૧૬. હે ભગવન્ ! ઘણા માણસો પરપર આ પ્રમાણે કહે છે કે, ‘અંચડ પરિવ્રાજક કામિન્ડપુર નગરમા સો ઘેર જમે છે’-હ્યાદિ વધું ઔપપાતિક સૂત્રમા કયા પ્રમાણે અવડની વધી વત્તલ્યના કહેવી, યાવત્-‘દેવપ્રતિજ્ઞાનો પેઠે યાવત્-‘તે સર્વ દુઃખોનો અન્ત કરશે.’

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શું એમ છે કે અચ્યાવાથ દેવો ૯ ‘અચ્યાવાથ દેવો’ ( પીડા નહિ કરનારા ) કહેવાય છે ? [૩૦] હા ગૌતમ ! એમ છે. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શા હેતુથી એમ કહેવાય છે કે અચ્યાવાથ દેવો ૯ ‘અચ્યાવાથ દેવો’ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! એક એક અચ્યાવાથ દેવ એક એક પુરુષની એક એક પાપણ ઉપર દિવ્ય દેવાર્થિ, દિવ્ય દેવદ્યુતિ, દિવ્ય દેવાનુભાવ અને વર્ત્તીશ પ્રકારના દિવ્ય નાચ્ય-વિધિને વતાવી શકના સમર્થ છે, પરન્તુ તે પુરુષને સ્વપ્ન કે અધિક દુઃખ યવા દેતો નથી, તેમ તેના અવયવનો હેદ પળ કરતો નથી. એવી સૂક્ષ્મતાધૂર્વક ( નાચ્યવિધિ ) વતાવી શકે છે, તે હેતુથી અચ્યાવાથૈ દેવો ૯ ‘અચ્યાવાથ’ ( પીડા નહિ કરનાર દેવો ) એમ કહેવામા આવે છે.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવના ઇન્દ્ર અને દેવના રાજા શક્ર (કોટ) પુરુષના માયાને હાથગ્રહે તરવારથી કાપી નાલી કમંડલુમાં નાખવા સમર્થ છે ? [૩૦] હા, સમર્થ છે. [પ્ર૦] તે તે ઘણે કમંડલુમાં કેવી રીતે નાલે ? [૩૦] તે શક્ર માયાને છેદી છેદીને, મેદી મેદીને, કૂદી કૂદીને અને ચૂર્ણ કરી કરીને કમંડલુમાં નાલે, અને સ્વાર પછી તુરતજ ( તે માયાના અવયવોને ) મેઝવે-એકઠા કરે, એટલું સૂક્ષ્મ કરી કમંડલુમાં નાલે, તેના અવયવોનો હેદ કરે તો પણ તે પુરુષને શરા પણ પીડા ડત્તજ ન યાય.

૧૫ \* જુઓ ઔપપા. ૫૦ ૧૩. “ગ્રીષ્મકાલે અવટપરિવ્રાજકના સાતસો શિષ્યો ૯ ગંગાનદીના ઘણે કાઠા ઉપર આવેલા કામિન્ડપુરથી પુરિન્ડતાલ નગર તરફ પ્રયાણ કર્યું ત્યાર પછી તેઓ ૯ ગંગાને અટવીમા પ્રવેશ કર્યો ત્યારે પૂર્વે સાંધે લીધેલ પાણી થડ રડ્યું, સ્વાર યાદ તરસથી પીડાયેલા તેઓ પાણીનો અપનાર કોઈ પણ નહિ સચવાથી અટકને નહિ પ્રહ્ણ કરતાં અરિહતને નમસ્કાર કરવાપૂર્વક અત્યંત હૃદને કાલ કરીને ત્રણદેવ લોકમાં ગયા અને પરલોકના આરાધક થયા.

૧૬ † અવટપરિવ્રાજક વૈક્રિયલલિચના સામર્થ્યથી મરુપ્યોને વિસ્રવ નરવા માટે યો ઘેર જમે છે અને સો ઘેર પોતે રહે છે. જુઓ-ઔપપા. ૫૦ ૧૬.

‡ ઠટપ્રતિજ્ઞ સવન્ધે જુઓ રાજપ્ર. ૫૦ ૧૪૯.

૧૭ ‡ જે પરને મીલા ન કરે તે અચ્યાવાથ. ૧ સારસ્વત, ૨ આરિલ, ૩ વહિ, ૪ વદન, ૫ ગર્વતોય, ૬ તુપિત, ૭ અચ્યાવાથ, ૮ અચ્યવાં અને ૯ અરિદ-૯ નવ લોકાન્તિક દેવોમાના સાતમા અચ્યાવાથ નામે લોકાન્તિક દેવ છે. તત્કાર્થનૂત્રમાં વરુણને વદ્દે અહ્ણ અને અચ્યવાંને વદ્દે મહત્ ૯ નામ આપેલું છે. “સારસ્વત-દિલ્-વન્દ-દન-ગર્વતોય-તુપિતા-અચ્યાવાથ-મરુતોડરિશઘ ( તત્કા. ૦ ૪ સૂ. ૨૬ ).

१९. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जंभया देवा २ ? [उ०] हंता अत्थि ! [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चद्—‘जंभया देवा’ २ ? [उ०] गोयमा ! जंभगा णं देवा निच्चं पमुद्दय—पक्कीलिया कंदप्परतिमोहणसीला, जे णं ते देवे कुड्ढे पासेज्जा, से णं पुरिसै महंतं अयसं पाउणिज्जा, जे णं ते देवे तुट्टे पासेज्जा, से णं महंतं जसं पाउणेज्जा, से तेणट्टेणं गोयमा ! ‘जंभगा देवा’ २ ।

२०. [प्र०] कत्तिविहा णं भंते ! जंभगा देवा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा पणत्ता, तंजहा—१ अन्नजंभगा, २ पाणजंभगा, ३ वत्थजंभगा, ४ लेणजंभगा, ५ सयणजंभगा, ६ पुप्फजंभगा, ७ फलजंभगा, ८ पुप्फ—फलजंभगा, ९ विज्जाजंभगा, १० अवियत्तजंभगा ।

२१. [प्र०] जंभगा णं भंते ! देवा कहिं वसहिं उवेंति ? [उ०] गोयमा ! सव्वेसु चेष दीहवेयहेसु, चित्त—विचित्त—जमगपव्वएसु, कंचणपव्वएसु य, एत्थ णं जंभगा देवा वसहिं उवेंति ।

२२. [प्र०] जंभगाणं भंते ! देवाणं केवत्तियं कालं ठिती पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! एणं पल्लिओवमं ठिती पणत्ता । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते’ ! त्ति जाव—विहरति ।

### चोद्दसमसए अट्टमो उद्देशो समत्तो ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जंभक देवो ते जंभक (स्वच्छन्दचारी) देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! क्या हेतुथी जंभकदेवो ए ‘जंभकदेवो’ (स्वच्छन्दचारी देवो) कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! जंभकदेवो हंमेशा प्रमोदवाळा, अत्यन्त क्रीडाशील, कंदर्पने विपे रतिवाळा अने मैथुन सेववाना स्वभाववाळा होय छे, जे ते देवोने गुस्से ययेला जुए छे, ते पुरुषो घणो अपयश पामे छे, तथा जेओ ते देवोने तुष्ट थयेला जुए छे तेओ घणो यश पामे छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी जंभकदेवो ए ‘जंभकदेवो’ एम कहेवाय छे.

जंभक देवो-  
जंभक देवो शायी  
कहेवाय छे ?

२०. [प्र०] हे भगवन् ! जंभक देवो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कह्या छे—१\* अन्नजंभक, २ पानजंभक, ३ वल्लजंभक, ४ गृहजंभक, ५ शयनजंभक, ६ पुप्फजंभक, ७ फलजंभक, ८ पुप्फ—फलजंभक, ९ विद्याजंभक अने १० अव्यक्तजंभक.

जंभक देवोना प्रकार

२१. [प्र०] हे भगवन् ! जंभक देवो क्या वसे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ (जंभकदेवो) वधा दीर्घ वैताड्योमा, चित्र, विचित्र, यमक अने समक पर्वतोमा तथा काचनपर्वतोमा वसे छे.

जंभक देवो क्या  
रते छे ?

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जंभक देवोनी स्थिति केटला काळनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेनी एक पल्योपमनी स्थिति कही छे. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’—एम कही भगवान् गौतम यावद् विहारे छे.

जंभक देवोनी स्थिति.

### चतुर्दश शतके अष्टम उद्देशक समाप्त.

२० \* भोजनविपे तेनो अभाव करवो के सदभाव करवो, तेने अल्प करवुं के घणुं करवुं, सरस करवुं के नीरस करवुं—इत्यादि चेष्टा करे ते अन्नजंभक देवो कहेवाय छे. ए प्रमाणे पानादिजंभक देवो पण जाणवा. अजादिना विभाग तिवाय सामान्यरूपे जे चेष्टा करे ते अव्यक्तजंभक कहेवाय छे.—टीका.

## नवमो उद्देशो ।

१. [प्र०] अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणद्द, न पासद्द, तं पुण जीवं सरूविं सकम्मलेस्सं जाणद्द, पासद्द ? [उ०] हंता गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो जाव-पासति ।

२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ष ? [उ०] हंता अत्थि ।

३. [प्र०] कयरे णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति, जाव-पमासंति ? [उ०] गोयमा ! जाओ इमाओ चंदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंते लेस्साओ व्हिया अभिनिस्सडाओ ताओ ओभासंति, पमासंति, एवं एएणं गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ष ।

४. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गल

## नवम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! [संयमभावनाघडे] \*भावितात्मा अनगार जे पोतानी कर्मलेइयाने [विशेषरूपे] जाणतो नथी, अने [सामान्यरूपे] जोतो नथी ते सरूपी-सशरीरी अने कर्म-लेइयासहित जीवने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, गौतम ! भावितात्मा अनगार जे पोताना कर्मसंबन्धी लेइयाने जाणतो अने जोतो नथी ते शरीरसहित अने कर्म-लेइयावाळा पोताना आत्माने यावत्-जुए छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! रूपी-वर्णादियुक्त सकर्मलेइय-कर्मने योग्य कृष्णादि लेइयाना पुद्गलस्कन्धो प्रकाशित थाय छे ? [उ०] हा, गौतम ! तेवा पुद्गलस्कन्धो प्रकाशित थाय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! रूपवाळा अने कर्मने योग्य अथवा कर्मसंबन्धी लेइयाना जे पुद्गलो प्रकाशित थाय छे, यावत् प्रभासित थाय छे ते केटला छे ? [उ०] हे गौतम ! चंद्र अने सूर्यना विमानोथी जे आ वहार नीकळेला लेइयाओ (प्रकाशना पुद्गलो) छे तेओ अवभासित थाय छे, प्रभासित थाय छे, ए प्रमाणे हे गौतम ! ए वधा रूपयुक्त, कर्मने योग्य लेइयावाळा पुद्गलो प्रकाशित थाय छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! शु नैरयिकोने आत्त-सुखकारक पुद्गलो होय छे के अनात्त-दुःखकारक पुद्गलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आत्त पुद्गलो नथी पण अनात्त पुद्गलो होय छे.

१ \* भावितात्मा अनगार छद्मस्थ होवाथी ज्ञानावरणादि कर्मने योग्य अथवा कर्मसंबन्धी कृष्णादि लेइयाने जाणतो नथी, कारण के कर्मद्रव्य अने लेइयाद्रव्य अतिसूक्ष्म होवाथी छद्मस्थना ज्ञानने अगोचर छे, परन्तु ते कर्म अने लेइयावाळा तथा शरीरयुक्त आत्माने जाणे छे, कारण के शरीर चक्षुथी प्राण होवाथी अने आत्मानो शरीरनी साथे कथञ्चित् अमेद होवाथी [ तथा ते स्वसन्निहित होवाथी ] तेने जाणे छे—टीका

३ † यद्यपि चन्द्रादिविमानाना पुद्गलो पृथिवीकायिक होवाथी सचेतन छे अने तेथी ते कर्म-लेइयावाळा छे, पण तेथी नीकळेला प्रकाशना पुद्गलो कर्म-लेइयावाळा नथी, तोपण तेथी नीकळेला होवाथी प्रकाशना पुद्गलो उपचारथी कर्मलेइयावाळा कही शकय छे.—टीका.

५. [प्र०] असुरकुमाराणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! अत्ता पोग्गला, णो अणत्ता पोग्गला, एवं जाव-थणियकुमाराणं ।

६. [प्र०] पुढविकाइयाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एवं जाव-मणुस्साणं । चाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

७. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! किं इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला, जहा अत्ता भणिया, एवं इट्ठा वि, कंता वि, पिया वि, मणुत्ता वि भाणियत्ता । एए पंच दंडगा ।

८. [प्र०] देवे णं भंते ! महहिण जाव-महेसक्खे रूवसहस्सं विउच्चित्ता पभू भासासहस्सं भासित्तए ? [उ०] हंता पभू ।

९. [प्र०] सा णं भंते ! किं एगा भासा भासासहस्सं ? [उ०] गोयमा ! एगा णं सा भासा, णो खलु तं भासासहस्सं ।

१०. तेणं कालेणं, तेणं सभएणं भगवं गोयमे अचिरुगयं वालसूरियं जासुमणाकुसुमपुंजप्पकासं लोहितगं पासइ, पासित्ता जायसइ जाव-समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, जाव-नमसित्ता जाव-एवं वयासी- [प्र०] किमिदं भंते ! सूरिय, किमिदं भंते ! सूरियस्स अट्टे ? [उ०] गोयमा ! सुभे सूरिय, सुभे सूरियस्स अट्टे ।

११. [प्र०] किमिदं भंते ! सूरिय, किमिदं भंते ! सूरियस्स पमा ? [उ०] एवं चेव, एवं छाया, एवं लेस्सा ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं असुरकुमारोने आत्त-सुखकारक पुद्रलो होय छे के अनात्त पुद्रलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आत्त पुद्रलो होय छे, पण अनात्त पुद्रलो होता नथी. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

असुरकुमारने आत्त पुद्रलो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं पृथिवीकायिकोने आत्त पुद्रलो होय छे के अनात्त पुद्रलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आत्त पुद्रलो पण होय छे, अने अनात्त पुद्रलो पण होय छे. ए प्रमाणे यावत्-मनुष्यो सुधी जाणवुं. वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असुरकुमारोनी पेटे जाणवुं.

पृथिवीकायिकोने आत्त अने अनात्त पुद्रलो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने इष्ट पुद्रलो होय छे के अनिष्ट पुद्रलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने इष्ट पुद्रलो होता नथी, पण अनिष्ट पुद्रलो होय छे. जेम आत्त पुद्रलो सवन्चे कहुं, तेम इष्ट, कात्त, प्रिय तथा मनोज्ञ पुद्रलो सवन्चे पण कहेवु. वळी ए प्रमाणे अहि पाच दंडक कहेवा.

नारकोने इष्ट के अनिष्ट पुद्रलो होय छे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! महद्धिक यावत्-मोटा सुखवाळो देव हजार रूपोने विकुर्वीने हजार भापा बोल्वा समर्थ छे ? [उ०] हा, गौतम ! तेम करवा समर्थ छे.

महद्धिक देवतु हजार रूपो विकुर्वीने हजार भापा बोल्वा समर्थ.

९. [प्र०] हे भगवन् ! ते एक भापा छे के हजार भापा छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक भापा छे, पण हजार भापा नथी.

एक भापा के हजार भापा ?

१०. ते काले, ते समये भगवंत गौतमे तुरतनो उगेलो अने जासुमणाना पुप्पना पुंज जेवो रातो वालसूर्य जोयो, ते सूर्यने जोइने श्रद्धावाळ, अने यावत्-जेने श्रद्धुं कुवहल उत्पन्न थयुं छे एवा भगवंत गौतम स्वामी ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे त्या आव्या, अने यावत्-नमीने यावत्-आ प्रमाणे बोल्या-[प्र०] हे भगवन् ! सूर्य ए शुं छे अने हे भगवन् ! सूर्यनो अर्थ जो छे ? [उ०] हे गौतम ! सूर्य ए शुभ पदार्थ छे, अने सूर्यनो अर्थ पण शुभ छे.

सूर्यनो अर्थ

११. [प्र०] हे भगवन् ! सूर्य ए शुं छे अने सूर्यनी प्रभा ए शुं छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे छाया-प्रतिविम्ब अने लेइया-प्रकाशना समूह नवन्चे पण जाणवुं.

सूर्यनी प्रभा ए शुं छे ?

९ \* एक समये बोल्वाती सत्तारि कोइ पण प्रहारनी भापा एक जीवत्त अने एक उपयोग होसामी ते एक भापा कहेवास छे, पण हजार भापा कहेवाती नथी-टीका.

૧૨. [પ્ર૦] જે શ્મે મંતે ! અજ્ઞસાપ સમણા નિગ્ગંથા વિહરંતિ, ણ્તે ણં કસ્સ તેયલેસ્સં વીતીવયંતિ ? [ઉ૦] ગોયમા ! માસપરિયાપ સમણે નિગ્ગંથે વાણમંતરાણં દેવાણં તેયલેસ્સં વીરૂંવયતિ, દુમાસપરિયાપ સમણે નિગ્ગંથે અસુરિદ્વચ્ચિયાણં ભવણ-વાસીણં દેવાણં તેયલેસ્સં વીચીવયતિ, एवं एएणं अमिलाघेणं तिमासपरियाप समणे निगंथे असुरकुमाराणं देवाणं तेयलेस्सं वीरूंचयद्, चउम्मासपरियाप समणे निगंथे गहगण-नकपत्त-त्ताराव्वाणं जोतिसियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीनीवयद्, पंचमासपरियाप य समणे निगंथे चंदिम-सूरियाणं जोतिसिदाणं जोतिसरायाणं तेयलेस्सं वीरूंचयद्, छमासपरियाप समणे निगंथे सोद्धर्मा-साणाणं देवाणं०, सत्तमासपरियाप समणे निगंथे सणंकुमार-माहिंदाणं देवाणं०, अट्टमासपरियाप यंभलोन-उंतगाणं देवाणं तेय०, नवमासपरियाप समणे निगंथे महासुक्क-सहस्साराणं देवाणं तेय०, दसमासपरियाप धाणय-पाणय-धारण-श्रुयाणं देवाणं०, एक्कारसमासपरियाप गेवेज्जगाणं देवाणं०, वारसमासपरियाप समणे निगंथे अणुत्तरोववाद्याणं देवाणं तेयलेस्सं वीरूंचयति, तेण परं सुक्के सुक्काभिजाप भवित्ता तथो पच्छा सिट्ठति, जाव-अंतं करेति । 'सेयं भंतं ! सेयं भंतं' ! त्ति जाव-विहरति ।

### ચોદસમમણ નવમો ઉદ્દેશો સમત્તો ।

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જે આ શ્રમણ નિર્મ્યો આર્યપણે-પાપકર્મરતિપણે વિરે છે, તેઓ કોની તેજોલેશ્યાને-સુગ્ધને અતિક્રમે છે ? અર્થાત્-તેમનું સુખ કોનાથી ચર્ડીયાતુ છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! એક માસના દીક્ષા પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય વાનવ્યંતર દેવોની તેજો-લેશ્યાને-સુખને અતિક્રમે છે, ( અર્થાત્-વાનવ્યંતર દેવો કરતા અધિક મુર્ખો છે. ) એ માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય અસુરેન્દ્ર સિવાયના ભવનવાસી દેવોની તેજોલેશ્યાને-સુખને અતિક્રમે છે. એ પ્રમાણે એ પાઠ વડે ત્રણ માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય અસુરકુમાર દેવોની તેજોલેશ્યાને અતિક્રમે છે, ચાર માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય પ્રહગણ, નક્ષત્ર અને તારારૂપ જ્યોતિષિક દેવોની તેજોલેશ્યાને અતિક્રમે છે, પાંચ માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય, જ્યોતિષિકના ઇન્દ્ર, જ્યોતિષિકના રાજા ચંદ્ર અને સૂર્યની તેજોલેશ્યાને અતિક્રમે છે, છ માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય સૌધર્મ અને ઈજ્ઞાનવાસી દેવોની [તેજોલેશ્યાને અતિક્રમે છે], સાત માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય સનકુમાર અને માહેન્દ્ર દેવોની, આઠ માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય વ્રણલોક અને યાતક દેવોની, નવ માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય મહાશુક્ર અને સહસ્ત્રાર દેવોની તેજોલેશ્યાને અતિક્રમે છે, દશ માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય આનત, પ્રાણત, આરણ અને અચ્યુત દેવોની તેજોલેશ્યાને અતિક્રમે છે, અર્ગીયાર માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય ધ્રેવેયક દેવોની અને વાર માસના પર્યાયવાલો શ્રમણ નિર્મ્ય અતુત્ત-રૂપપાતિક દેવોની તેજોલેશ્યાને અતિક્રમે છે ત્યાર વાદ શુદ્ધ અને શુદ્ધતર પરિણામવાલો ધરૂને પછી સિદ્ધ યાવ છે, યાવત્-તર્પ દુઃખોનો અન્ત કરે છે. 'હે ભગવન્ ! તે એમજ છે, હે ભગવન્ ! તે એમજ છે'—એમ કહી યાવત્ વિહરે છે.

### ચતુર્દશ શતકે નવમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

## दसमो उद्देशो ।

१. [प्र०] केवली णं भंते ! छउमत्थं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।

२. [प्र०] जहा णं भंते ! केवली छउमत्थं जाणइ, पासइ, तथा णं सिद्धे वि छउमत्थं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।

३. [प्र०] केवली णं भंते ! आहोहियं जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव । एवं परमाहोहियं, एवं केवलिं, एवं सिद्धं, जाव—जहा णं भंते ! केवली सिद्धं जाणइ, पासइ, तथा णं सिद्धे वि सिद्धं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।

४. [प्र०] केवली णं भंते ! भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? [उ०] हंता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा ।

५. [प्र०] जहा णं भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा तथा णं सिद्धे वि भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? [उ०] णो तिण्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा णो तथा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा’ ? [उ०] गोयमा ! केवली णं सउट्ठणे, सकम्मे, सवले, सवीरिण्ण, सपुरिसक्कारपरक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठणे जाव—अपुरिसक्कारपरक्कमे, से तेणट्ठेणं जाव—वागरेज्ज वा ।

६ [प्र०] केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा ? [उ०] हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, एवं चेव, एवं आउट्ठेज्ज वा पसारेज्ज वा, एवं टाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा ।

## दशम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी छद्मस्थने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, जाणे अने जुए.

केवलज्ञानी छद्मस्थने जाणे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जेम केवलज्ञानी छद्मस्थने जाणे अने जुए तेम सिद्ध पण छद्मस्थ जीवने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जुए.

सिद्ध पण छद्मस्थने जाणे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी आधोवधिकने—प्रतिनियतक्षेत्रविषयक अवधिज्ञानवंतने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जुए. एम परमावधिज्ञानीने पण जाणे अने जुए. ए प्रमाणे केवलज्ञानी अने सिद्धने पण जाणे, यावत्—[प्र०] जेम हे भगवन् ! केवलज्ञानी सिद्धने जाणे अने जुए तेम सिद्ध पण सिद्धने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, जाणे अने जुए.

केवली अवधिज्ञानीने जाणे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर कहे ? [उ०] हा, गौतम ! केवली बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर कहे.

केवलज्ञानी बोले ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! जेम केवलज्ञानी बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर कहे तेम सिद्ध पण बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर आपे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ—युक्त नथी, अर्थात् सिद्ध बोले नहि. [प्र०] हे भगवन् ! कया हेतुथी एम कहे छो के—‘जेम केवलज्ञानी बोले अथवा कहे तेम सिद्ध बोले नहि अथवा प्रश्नोत्तर न कहे’ ? [उ०] हे गौतम ! केवलज्ञानी उत्थान—उभा थवुं, कर्म—गमनादि क्रिया, बल, वीर्य अने पुरुषकार—पराक्रम सहित होय छे पण सिद्धो उत्थानरहित, यावत्—पुरुषकार—पराक्रमरहित होय छे, माटे हे गौतम ! सिद्धो केवलीनी पेटे यावत्—प्रश्नोत्तर कहेता नथी.

केवलीनी पेटे सिद्ध बोले के नहि ! केवलज्ञानीनी पेटे सिद्ध केम न बोले ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी पोतानी आख उघाडे अने मीचे ? [उ०] हा, गौतम ! आंख उघाडे अने मीचे, एज प्रमाणे शरीरने संकुचित करे अने प्रसारे, उमा रहे, वेसे अने आडे पडले थाय, तथा शय्या (वसति) अने नैपेथिकी (थोडा काल माटे वसति) करे.

केवलज्ञानी आंख उघाटे अने मीचे ?



७. [प्र०] केवली णं भंते ! इमं रयणप्पमं पुढविं रयणप्पमापुढवीति जाणति, पासति ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।

८. [प्र०] जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्पमं पुढविं रयणप्पमापुढवीति जाणइ, पासइ, तथा णं सिद्धे वि इमं रयण-  
प्पमं पुढविं रयणप्पमापुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।

९. [प्र०] केवली णं भंते ! सक्करप्पमं पुढविं सक्करपमापुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव—अहेसत्तमा ।

१०. [प्र०] केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्पं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ एवं चेव, एवं ईसाणं, एवं  
जाव—अच्चुयं ।

११. [प्र०] केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणे गेवेज्जविमाणेत्ति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव, एवं अणुत्तरविमाणे वि ।

१२. [प्र०] केवली णं भंते ! ईसिपम्मारं पुढविं ईसीपम्मारपुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव ।

१३. [प्र०] केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं परमाणुपोग्गलेत्ति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव, एवं दुपपसियं खंधं,  
एवं जाव—[प्र०] जहा णं भंते ! केवली अणंतपपसियं खंधं अणंतपपसिए खंधेत्ति जाणइ, पासइ तथा णं सिद्धे वि अणंतपप-  
सियं जाव—पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ।

चौद्दसमसए दसमो उद्देशो समत्तो ।

समत्तं चौद्दसमं सयं ।

७. [प्र०] हे भगवन् ! केवली रत्तप्रभा पृथिवीने आ 'रत्तप्रभा पृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] हा गौतम ! जाणे  
अने देखे.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जेम केवलज्जानी रत्तप्रभा पृथिवीने आ 'रत्तप्रभा' एम जाणे अने देखे तेम सिद्ध पण रत्तप्रभा पृथिवीने  
'रत्तप्रभा'—एम जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने देखे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्जानी शर्कराप्रभा पृथिवीने 'शर्कराप्रभापृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणहुं.  
ए प्रमाणे यावत्—सातमी नरकपृथिवी सुची जाणहुं.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! केवली सौधर्मकल्पने 'सौधर्मकल्प' एम जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने देखे. ए प्रमाणे  
ईशान अने यावत् अच्युतकल्प सुची जाणहुं.

११. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्जानी प्रैवेयकविमानने 'प्रैवेयकविमान' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणहुं.  
ए प्रमाणे यावत्—अनुत्तरविमान सन्नवे पण जाणहुं.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्जानी ईपत्ताग्भारा पृथिवीने 'ईपत्ताग्भारा पृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] ए प्रमाणे  
जाणहुं.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्जानी परमाणुपुद्गलने 'परमाणुपुद्गल' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने  
देखे. ए प्रमाणे द्विप्रदेशिक स्कन्ध, अने यावत्—जेम—[प्र०] हे भगवन् ! केवलज्जानी अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने 'अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध'—  
एम जाणे अने देखे तेम सिद्ध पण अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने यावत्—जुए ? [उ०] हा, जाणे अने जुए. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे  
भगवन् ! ते एमज छे'.

चतुर्दश शतके दशम उद्देशक समाप्त.

चतुर्दश शतक समाप्त.

## पन्नरसमं सयं ।

नमो सुयदेवयाए भगवईए ।

१. तेणं कालेणं तेणं समणं सावत्थी नामं नगरी होत्था, वन्नओ । तीसे णं सावत्थीए नगरीए वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए तत्थ णं कोट्टए नामं चेइए होत्था, वन्नओ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए हालाहला नामं कुंभकारी आजीविओवा-सिया परिवसति, अह्वा जाव-अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्टा गहियट्टा पुच्छियट्टा विणिच्छियट्टा अट्टिमिजपेम्माणुरा-गरत्ता, अयमाउसो ! 'आजीवियसमये अट्टे, अयं परमट्टे, सेसे अणट्टे'त्ति आजीवियसमणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउद्धीसवासपरियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरि-बुडे आजीवियसमणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अन्नदा कदायि इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउच्चमवित्था, तंजहा-१ साणे, २ कलंदे, ३ कण्णियारे, ४ अच्छिदे, ५ अग्गिवेसायणे, ६ अज्जुणे गोमायुपुत्ते । तए णं ते छ दिसाचरा अट्टविहं पुट्टगयं मग्गदसमं सतेहिं २ मतिदंसणेहिं निज्जुहंति, स० २-हित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्टा

## पंचदश शतक.

भगवती श्रुतदेवताने नमस्कार.

१. ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीनी उत्तर-पूर्व दिशाए ( ईशानकोणमा ) कोष्टक नामे चैल्य हतुं. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीमा आजीविक मतनी उपासिका हालाहला नामे कुंभारण रहेती हती. ते ऋद्धिवाळी यावत्-कोइथी परामव न पामे तेवी हती. तेणे आजीविकना सिद्धातनो अर्थ (रहस्य) ग्रहण कर्यो हतो, अर्थ पूछयो हतो अने अर्थनो निश्चय कर्यो हतो. तेना अस्थिनी मज्जा प्रेम अने अनुरागवडे रंगाएली हती. 'हे आयुष्मान् ! आजीविकना सिद्धातरूप अर्थ तेज खरो अर्थ छे अने तेज पर-मार्थ छे, वाकी सर्व अनर्थ छे'-ए प्रमाणे ते आजीविकना सिद्धातवडे आत्माने भावित करती विहरती हती. ते काले अने ते समये चोवीश वर्षना दीक्षा पर्यायवाळो मंखलिपुत्र गोशालक हालाहला नामे कुंभारणना कुंभकाराण-हाटमा आजीविकना सचवडे परिवृत्त थई आजीविकना सिद्धातवडे आत्माने भावित करतो विहरे छे. ते वखते ते मंखलिपुत्र गोशालकनी पासे अन्य कोइ दिवसे आ छ \*दिशाचरो आब्या. ते आ प्रमाणे-१ शान, २ कलंद, ३ कर्णिकार, ४ अछिद्र, ५ अग्निवेश्यायन अने ६ गोमायुपुत्र अर्जुन. स्यार पछी ते छ दिशाचरोए पूर्व-श्रुतमा कहेला आठ प्रकारना निमित्त, (नवमा) गीतमार्ग अने दशमा नृत्यमार्गने पोतपोतानी मतिना दर्शनवडे (पूर्वश्रुतमाथी) उद्धरी मंखलिपुत्र गोशालकनो (शिष्यभावे) आश्रय कर्यो. स्यार वाद ते मंखलिपुत्र गोशालक ते अष्टांग महानिमित्तना कइक (स्वल्प) उपदेशवडे सर्व प्राणीओ, सर्व भूतो, सर्व जीवो अने सर्व सत्त्वोने आ छ वावतना अनतिक्रमणीय-अन्यथा न थाय तेवा उत्तर आपे छे, ते छ वावत आ प्रमाणे-१ लाभ, २ अलाभ, ३ सुख, ४ दुःख, ५ जीवित अने ६ मरण. स्यार पछी ते मंखलिपुत्र गोशालक अष्टाग

श्रावस्ती नगरी.  
कोष्टक चैल्य.  
हालाहला कुंभारण

गोशालक सचमहि  
त हालाहला उमा  
रणने घेर आगमन  
गोशालकने छ दि-  
शाचरोनु आनी  
मळवु.

१ \* आ छ दिशाचरो पासत्था (पतित) थयेला महावीर स्वामीना शिष्य हता-एम प्राचीन टीकाकार कहे छे अने पार्श्वनाथनी परंपरामा थयेला छे-एम चूर्णिकार कहे छे -टीका.

† निमित्तना आठ प्रकार छे-१ दिव्य, २ औत्पात, ३ आतरिक्ष, ४ भौम, ५ आग, ६ स्वर, ७ लक्षण अने ८ च्यंजन.

इंसु । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्टंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सघेसिं पाणाणं, सघेसिं भूयाणं, सघेसिं जीवाणं, सघेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइकमणिज्जाइं चागरणाइं वागरेति, तं जहा “१-ल्लामं २ अल्लामं ३ सुहं ४ दुस्सं ५ जीवियं ६ मरणं तहा” । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्टंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असच्च सच्चप्पलावी, अजिणे जिणसहं पगासेमाणे विहरइ ।

२. तप णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-जाव-पदेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव-एवं पस्सेति-‘एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव-पकासेमाणे विहरति, से कहमेयं मत्ते एवं’? तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, जाव-परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवथो महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूती णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं जाव-छट्टंछट्टेणं-एवं जहा वितियसए नियंतुहेसए जाव-अडमाणे बहुजणसहं निसामेति, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-‘एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव-पगासेमाणे विहरति, से कहमेयं मत्ते एवं’? तप णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्टं सोच्चा निसम्म जाव-जायसइ जाव-भत्तपाणं पडिदंसेति, जाव-पल्लुवासमाणे एवं वयासी-‘एवं खलु अहं भंते ! छट्टं० तं चव जाव-जिणसहं पगासेमाणे विहरति’; से कहमेयं भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्टाणपरियाणियं परिकहियं । ‘गोयमा’ ! दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-जणं गोयमा ! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-‘एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव-पगासेमाणे विहरइ’ तणं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव-परूवेमि-‘एवं खलु एयस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखलिनामं मंखे पिता होत्था । तस्स णं मंखलिस्स मंखस्स भद्धानामं भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव-पडिक्खा । तप णं सा भद्दा भारिया अन्नदा कदायि गुष्णिणी यावि होत्था । तेणं कालेणं तेणं समएणं सरवणे नामं सन्निवेसे होत्था, रिद्ध-त्थिमिय० जाव-सन्निभप्पगासे, पासादीए ४ । तन्थ णं सरवणे सन्निवेसे गोवहुले नामं माहणे परिवसति, अट्टे जाव-अपरिभूए, रिउच्चेद० जाव-सुपरिनिट्टिए यावि होत्था । तस्स णं गो-

महानिमित्तना कोइक एवा उपदेशमात्रवडे श्रावस्ती नगरीमा अजिन छता ‘हुं जिन छुं’ एम प्रलाप करतो, अर्हत् नहि छता ‘हुं अर्हत् छुं’ एम मिथ्या वक्काद करतो, केवली नहि छता ‘हुं केवली छुं’ एम निरर्थक बोलतो, सर्वज्ञ नहि छता ‘हुं सर्वज्ञ छुं’ एम मिथ्या कथन करतो अने अजिन छता जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे.

२. लार वाद श्रावस्ती नगरीना शृंगाटकना आकारवाळ्य त्रिक अने यावत्-राजमार्गोने विपे घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत्-एम प्ररूपे छे के ‘हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर मंखलिपुत्र गोशालक जिन थईने पोताने जिन कहेतो, यावत्-जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे, तो ए प्रमाणे केम मानी शकाय’? ते काले ते समये महावीर स्वामी समोसर्था; यावत्-पर्यदा (वादीने) पाछी गइ. ते काले-ते समये श्रमण भगवंत महावीरना ज्येष्ठ अतेवासी ( शिष्य ) गौतमगोत्रीय इन्द्रभूति नामे अनगार यावत्-छट्ट छट्टने पारणे-इत्यादि बीजा शतकना \*निर्ग्रन्थ उदेशकमा कह्या प्रमाणे यावत्-गोचरी माटे फरता घणा माणसो नो शब्द साभळे छे, घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के, ‘हे देवानुप्रिय ! खरेखर मंखलिपुत्र गोशालक जिन थईने पोताने जिन कहेतो, यावत्-जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे, तो ए प्रमाणे केम मानी शकाय’? लार वाद भगवान् गौतम घणा माणसो पासेथी आ वात साभळीने अने अवधारीने श्रद्धावाळ्य थई यावत्-भातपाणी देखाडी यावत्-पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्यो-‘ए प्रमाणे खरेखर हे भगवन् ! हुं छट्ट छट्टने पारणे इत्यादि पूर्वोक्त कहेसु, यावत्-ते गोशालक जिन शब्दनो प्रकाश करतो विहरे छे, तो हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होय ? माटे हे भगवन् ! मंखलिपुत्र गोशालकनो जन्मथी आरभाने अन्त सुधीनो आपनार्थी कहेवायेलो वृत्तान्त साभळ्या इच्छुं छुं.’ ‘हे गौतम’ ! ए प्रमाणे कही श्रमण भगवान् महावीरे भगवंत गौतमने आ प्रमाणे कहुं-‘हे गौतम ! जे घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के ए प्रमाणे खरेखर मंखलिपुत्र गोशालक जिन थईने अने पोताने जिन कहेतो यावत्-जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे, ते मिथ्या-असत्य छे.’ हे गौतम ! हुं आ प्रमाणे कहूं छुं, यावत्-प्ररूपं छुं-‘ए प्रमाणे खरेखर आ मंखलिपुत्र गोशालकनो मंखलिनाने मंखजातिनो पिता हतो. ते मंखलिनाने मंखने भद्दा नामे ली हती. ते सुकुमाल हायपगवाळी, यावत्-प्रतिरूप-सुंदर हती. लार वाद ते भद्दा नामे ली अन्य कोइ दिवसे गर्भिणी यइ. ते काले अने ते समये सरवण नामे गाम हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, उपद्रवरहित, यावत्-देवलोक समान प्रकाशवाळुं अने मनने प्रसन्नता आपनार हतुं. ते सरवण नामे गामने विपे गोवहुल नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. ते धनिक, यावत्-कोइथी परामव न पामे तेवो अने ऋवेद-इत्यादि यावत्-ब्राह्मणना शास्त्रोने विपे निपुण हतो. ते गोवहुल ब्राह्मणने एक गोशाला हती. ते वखते ते मंखलि नामे मंख-

बहुलस्त माहणस्त गोसाला यावि होत्था । तप णं से मंखली मंखे अन्नया कदायि भद्दाय भारियाय गुद्धिणीय सद्धि चित्तफल-  
गहत्थगप मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुद्धानुपुद्धिं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सन्निवेशे जेणेव गोवहुलस्त  
माहणस्त गोसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता गोवहुलस्त माहणस्त गोसालाए पगदेसंसि मंडनिक्खेवं करेति, मंड०  
२ करेत्ता सरवणे सन्निवेशे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्त भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सद्धओ समंता  
मग्गण-गवेसणं करेति, वसहीए सद्धओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे अन्नत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोवहुलस्त  
माहणस्त गोसालाए पगदेसंसि वासावासं उवागप । तप णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुद्धानं अद्धट्टमाण  
राइंविद्याणं धीतिकंताणं सुकुमाल० जाव-पडिरूवगं दारगं पयाया । तप णं तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो पक्कारसमे दिवसे  
धीतिकंते जाव-वारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्पन्नं नामधेज्जं करेति-‘जम्हा णं अम्हं इमे दारए गोवहुलस्त  
माहणस्त गोसालाए जाप तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं ‘गोसाले’ ‘गोसाले’त्ति । तप णं तस्स दारगस्स  
अम्मा-पियरो नामधेज्जं करेति ‘गोसाले’त्ति । तप णं से गोसाले दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णायपरिणयमेत्ते जोद्धणगमणुपत्ते  
सयमेव पाडिपक्कं चित्तफलं करेति, सयमेव० २ करेत्ता चित्तफलगहत्थगप मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।

३. तेणं कालेणं तेणं समपणं अहं गोयमा । तीसं वासाइं आगारवासमज्जे वसित्ता अम्मा-पिईहिं देवत्तगपहिं एवं जद्दा  
भावणाए जाव-एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगरियं पद्दत्तए । तप णं अहं गोयमा । पढमं वासं अद्ध-  
मासंअद्धमासेणं खममाणे अट्टियगामं निस्साए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागप । दोच्चं वासं मासंमासेणं खममाणे पुद्धानु-  
पुद्धिं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा वाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवा-  
गच्छामि, ते० २-च्छित्ता अद्दापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हामि, अद्दा० २-गिहत्ता तंतुवायसालाए पगदेसंसि वासावासं उवा-  
गप । तप णं अहं गोयमा । पढमं मासखमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगप  
मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुद्धानुपुद्धिं चरमाणे जाव-दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा वाहिरिया, जेणेव  
तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता तंतुवायसालाए पगदेसंसि मंडनिक्खेवं करेति, मंड० २ करेत्ता रायगिहे  
नगरे उच्च-नीय० जाव-अन्नत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए पगदेसंसि वासावासं उवागप, जत्थेव णं

भिक्षाचर अन्य कोइ दिवसे गर्भिणी एवी भद्रा नामे स्त्री साथे चित्रनुं पाटीउं हाथमां लइ भिक्षाचरणवाडे आत्माने भावित करतो अनु-  
क्रमे विचरतो एक गामथी वीजे गाम जतो ज्यां शरवण नामे सन्निवेश-ग्राम छे अने ज्या गोवहुल नामे ब्राह्मणनी गोशाला छे त्यां आव्यो;  
ज्या आवीने गोवहुल नामे ब्राह्मणनी गोशालाना एक भागमां पोतातुं राचरचीलुं मूक्युं, मूकीने शरवण नामे गाममां उच्च, नीच अने मध्यम  
कुळना घर समुदायमा भिक्षाचर्या माटे फरतो रहेवा माटे चोतरफ स्थाननी गवेपणा करवा लाग्यो, चोतरफ गवेपणा करतां कोइ पण स्थळे  
रहेवानुं स्थान नहि मळता तेणे गोवहुल ब्राह्मणनी गोशालाना एक भागमा वर्षाकृतु माटे आवास कर्यो. ते वखते ते भद्रानामे स्त्रीए पूरा  
नवमास अने साडा सात दिवस वील्या पछी सुकुमालहायपगवाळा अने यावत्-सुन्दर एवा पुत्रने जन्म आय्यो. ल्यार वाद ते वाळकना  
मात-पिताए अगियारमो दिवस वील्या पछी यावद्-वारमे दिवसे आ आवा प्रकारतुं गुणयुक्त अने गुणनिप्पन्न नाम पाड्युं. कारण के ‘आ  
वाळक गोवहुलनामे ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थयो छे, ते माटे आ वाळकतुं नाम गोशालक हो’-एम विचारी मातापिताए ते वाळकतुं  
‘गोशालक’ एवुं नाम पाड्युं. ल्यार वाद ते गोशालक नामे वाळक वाल्यावस्थानो त्याग करी विज्ञानवडे परिणतमतिवाळो थइ यौवनने  
प्राप्त थयो अने पोतेज स्वतंत्र चित्रपट हाथमा लइ मंखपणावडे आत्माने भावित करतो विहरवा लाग्यो.

गोशालक नाम.

३. ते काले अने ते समये हे गौतम । में त्रीश वर्ष सुधी गृहवासमां रहीने मातापिता देवगत थया पछी ए प्रमाणे-(आचा-  
रागना वीजा श्रुतस्कंधना पंदरमा ) भावना अध्ययनने विपे कक्षा प्रमाणे ‘मातापिता जीवता दीक्षा नहि लउं’ आवो अभिग्रह पूर्ण थयो  
जाणी सुवर्णनो त्याग करी, बलनो त्याग करी-इत्यादि यावत्-एक देवदूम्य वलने ग्रहण करी मुंड-दीक्षित थईने गृहस्थावासनो त्याग करी  
प्रत्रय्यानो स्वीकार कर्यो. ते वखते हे गौतम । हु पहेला वर्षने विपे अर्धमास अर्धमासक्षमण करता अस्थिग्रामनी निश्राए प्रथम वर्षकालमां रहेवा  
माटे आव्यो, वीजा वर्षे मास मासक्षमण करता करता अनुक्रमे विहार करतां, एक गामथी वीजे गाम जतां ज्यां राजगृह नगर छे, ज्या  
नालंदानो बाह्य भाग छे अने ज्या तंतुवाय-वणकरनी शाला छे त्या आव्यो, आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी तंतुवायनी शालाना  
एक भागमा वर्षाकृतुमां रख्यो. ल्यार वाद हे गौतम । हुं प्रथम मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. ते समये मंखलिपुत्र गोशालक  
चित्रपट हाथमां ग्रहण करी मंखपणावडे-भिक्षाचरणवाडे आत्माने भावित करतो अनुक्रमे विचरतो, यावत्-एक गामथी वीजे गाम जतो  
ज्या राजगृह नगर छे, ज्या नालंदानो बाह्य भाग छे अने ज्या वणकरनी शाला छे त्यां आव्यो, त्यां आवीने तंतुवायनी शालाना एक  
भागमा राचरचीलु मूक्युं. मूकीने राजगृह नगरमा उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां आहारने माटे जतो, यावत्- वीजे क्यांइ पण वसति नहि

भगवान् महावीरे  
मातापिता देवलोः  
गया पछी दीक्षा  
लीधी.प्रथम वर्षे अस्थिग्र  
ममां चातुर्मास-  
वीजा वर्षे राजगृह  
नगर.

अहं गोयसा ! । तप णं अहं गोयसा ! पढममासफखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिफखमामि, तंतु० २-फखमिच्छा  
 णालंदावाहिरियं मज्झमज्जेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, रायगिहे नगरे उच्च-नीय० जाव-अडमाणे विजयस्स  
 गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे । तप णं से विजय गाहावती ममं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्टुत्तु० खिप्पामेव आसणाओ  
 अम्भुट्टेइ, खि० २-ट्टेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पा० २-हित्ता पाउयाओ ओमुयइ, पा० २ ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं  
 करेति, करेत्ता अंजलिमउडियइत्थे ममं सत्तट्टुपयाइं अणुगच्छइ, २ ममं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, २ ममं वंदति  
 नमंसति, २ ममं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामित्ति कट्टु तुट्ठे, पडिलाभेमाणे चि तुट्ठे, पडिलामित्ते चि  
 तुट्ठे । तप णं तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेणं वधसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मप  
 पडिलामिप समाणे देवाउए निवद्धे, संसारे परित्तीकप, गिहंसि य से इमाइं पंच दिवाइं पाउम्भूयाइं, तंजहा-१ वसुधारा  
 बुट्टा, २ दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिप, ३ चेलुफखेवे कप, ४ आहयाओ देवदुंदुमीओ, ५ अंतरा वि य णं आगासे 'अहो दाणे  
 दाणे' त्ति घुट्ठे । तप णं रायगिहे नगरे सिंघाडग० जाव-पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइफखइ, जाव-एवं परुवेइ-धन्ने णं  
 देवाणुप्पिया ! विजय गाहावती, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कयपुत्ते णं देवाणुप्पिया ! विजय गाहावई, कय-  
 लफखणे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया !  
 माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधु साधुस्से पडिलामिप समाणे इमाइं पंच  
 दिवाइं पाउम्भूयाइं, तंजहा-१ वसुधारा बुट्टा, जाव-'अहो दाणे दाणे'त्ति घुट्ठे, तं धन्ने, कयत्थे, कयपुत्ते, कयलफखणे, कया  
 णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, विज०' २ । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स  
 अंतिप एयमट्टं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसप समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव  
 उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं बुट्टं, दसद्धवन्नं कुसुमं निवडियं, ममं च णं विजयस्स गाहाव-  
 इस्स गिहाओ पडिनिफखममाणं पासति, पासित्ता हट्टुत्तुट्ठे जेणेव ममं अंतिप तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो

मळता ते तंतुवायनी शालाना एक भागमा ज्यां हुं रहेलो हतो त्या वर्षाऋतुमां रहेवा माटे आव्यो. ल्यार वाद हे गौतम ! हुं प्रथम मासक्ष-  
 मणना पारणाने दिवसे तंतुवायनी शालायकी बहार नीकळी नालंदाना बहारना भागना मध्य भागमा थई ज्या राजगृह नगर छे त्या आव्यो.  
 एजगृह नगरमा उच्च, नीच अने मध्यम कुळमा यावत्-आहार माटे फरता में विजयनामे गाथापतिना घरमा प्रवेश कर्यो. ते वखते ते विजयनामे  
 गाथापतिए मने आवतां जोयो, मने आवता जोईने प्रसन्न अने संतुष्ट थइ ते तुरत आसनथी उठ्यो, उठीने जलदी सिंहासनथी उतरी पादु-  
 कानो त्याग करी एक साडीवाळुं उत्तरासग करी, अजलिबडे हाथ जोडी सात आठ पगलां मारी सामो आव्यो, मारी सामो आवीने मने  
 ऋण वार प्रदक्षिणा करी, वंदन अने नमस्कार कर्यो, वंदन अने नमस्कार करी 'मने पुष्कल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारथी  
 प्रतिलाभी-सत्कारीग'-एम विचारी ते संतुष्ट थयो, प्रतिलाभता पण संतुष्ट थयो, प्रतिलाभ्या वाद पण संतुष्ट थयो, अने ल्यार पछी ते  
 विजयगाथापतिए द्रव्यनी शुद्धिथी, दायकनी शुद्धिथी अने पात्रनी शुद्धिथी तथा त्रिविध-मन, वचन, कायानी शुद्धिथी अने त्रिकरण शुद्धिथी  
 दानवडे मने प्रतिलाभवाथी देवनुं आयुप वाध्युं, संसार अल्प कर्यो अने तेना घरमा आ पाच दिव्यो प्रगट थया, ते आ प्रमाणे-१ वसु-  
 धारानी वृष्टि, २ पाच वर्णना पुष्पोनी वृष्टि, ३ ध्वजारूप वखनी वृष्टि, ४ देवदुंदुभितुं वागुं अने ५ आकाशने विपे 'आश्चर्यकारी दान,  
 आश्चर्यकारी दान'-एवी उद्घोषणा. ल्यार वाद राजगृह नगरमा शृंगाटक-त्रिकमार्ग, यावत्-राजमार्गमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे,  
 यावत्-एवी प्ररूपणा करे छे के 'हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापति धन्य छे, हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापति कृतार्थ छे, हे देवानुप्रिय !  
 विजयगाथापति पुण्यशाली छे, हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापति कृतलक्षण छे, हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापतिना उभय लोक सार्थक छे  
 अने विजयगाथापतितुं मनुष्यसंबन्धी जन्म अने जीविततुं फल प्रशंसनीय छे, जेना घरने विपे तेवा प्रकारना साधु-उत्तम अने सौम्य  
 आकारवाळा-श्रमणने प्रतिलाभवाथी आ पाच दिव्यो प्रगट थयां; ते पांच दिव्यो आ प्रमाणे-१ वसुधारानी वृष्टि, यावत्-५ 'आश्चर्यकारी  
 दान, आश्चर्यकारी दान'-एवी उद्घोषणा. ते माटे ते धन्य छे, कृतार्थ छे, कृतपुण्य छे, कृतलक्षण छे, अने तेना वने लोक सार्थक छे, तेमज  
 विजयगृहपतितु मनुष्यसंबन्धी जन्म अने जीविततुं फल प्रशंसनीय छे.' ल्यार वाद ते मंखलिपुत्र गोशालक घणा माणसो पासेथी आ वात  
 सामळी, अवधारी जेने सशय अने कुतहल उत्पन्न थया छे एवो ते विजयगृहपतिना घेर आव्यो. आवीने तेणे विजयगृह-  
 पतिना घरने विपे वरेंली वसुधारा, नीचे पडेल पाच वर्णाना पुष्पो, तथा घरथी बहार नीकळता मने अने विजयगृहपतिने जोया; जोईने  
 प्रसन्न खने सतुष्ट थइ ते गोशालक ज्या हुं हतो त्या आव्यो, त्यां आवी मने ऋणवार प्रदक्षिणा करी, वंदन अने नमस्कार करी तेणे  
 आ प्रमाणे कयुं-हे भगवन् ! तमे मारा धर्माचार्य छो अने हु तमारो धर्मशिष्य छुं.' ते वखते हे गौतम ! में मखलिपुत्र गोशालकनी आ  
 यातनो आदर न कर्यो, तेम स्वीकार न कर्यो, परन्तु हुं मौन रखो. ल्यार वाद हे गौतम ! हुं राजगृह नगर थकी नीकळी नालंदाना बहा-  
 रना मध्य भागमा थई ज्या तंतुवायनी शाला छे त्या आव्यो, त्यां आवी वीजा मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. ल्यार पछी हे

आयाह्निपयाह्निं करेद्, करेत्ता ममं वंदद्, नमंसद्, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी-‘तुज्जे णं भंते । ममं धम्मायरिया, अहन्नं तुज्जं धम्मंतेवासी’ । तप णं अहं गोयमा । गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स प्यमडुं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीप संचिट्ठामि । तप णं अहं गोयमा । रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता णालंदं वाहिरियं मज्झंमज्जेणं जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्चं मासखमणं उवसंपजित्ता णं विहरामि । तप णं अहं गोयमा । दोच्चंमासखमणपारणंगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तं० २-क्खमित्ता णालंदं वाहिरियं मज्झंमज्जेणं जेणेव रायगिहे नगरे जाव-अडमाणे आनंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे । तप णं से आणंदे गाहावती ममं एजमाणं पासति-एवं जहेव विजयस्स, नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए ‘पडिलाभेस्सामी’ति तुट्ठे, सेसं तं चैव, जाव-तच्चं मासखमणं उवसंपजित्ता णं विहरामि । तप णं अहं गोयमा । तच्चंमासखमणपारणंगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तंतु० २-क्खमित्ता तहेव जाव-अडमाणे सुणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे । तप णं से सुणंदे गाहावती एवं जहेव विजयगाहावती, नवरं ममं सधकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेति, सेसं तं चैव जाव-चउत्थं मासखमणं उवसंपजित्ता णं विहरामि । तीसे णं णालं-दाए वाहिरियाए अदूरसामंते एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेशे होत्था, सन्निवेशेवन्नओ । तत्थ णं कोल्लाए संनिवेशे वहुले नामं माहणे परिवसद्, अहे जाव-अपरिभूए, रिउद्धेय० जाव-सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तप णं से वहुले माहणे कत्तियचाउ-म्मासियपाडिचंगंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमणेणं माहणे आयामेत्था । तप णं अहं गोयमा । चउत्थमासखमणपारण-गंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तंतु० २-क्खमित्ता णालंदं वाहिरियं मज्झंमज्जेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए संनिवेशे तेणेव उवागच्छामि, ते० उवागच्छित्ता कोल्लाए सन्निवेशे उच्च-नीय० जाव-अडमाणस्स वहुलस्स माहणस्स गिहं अणुपविट्ठे । तप णं से वहुले माहणे ममं एजमाणं तहेव जाव-ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमणेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे । सेसं जहा विजयस्स, जाव-वहुले माहणे वहु० २ ।

४. तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सध्मिभतरवाहिरियाए ममं सधओ समंता मग्गणगवेसणं करेति, ममं कत्थ वि सुतिं वा खुतिं वा पवसिं वा अलभमाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवा-गच्छद्, ते० २ उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ य कुंडियाओ य वाहणाओ य चित्तफलंगं च माहणे आयामेति, आयामेत्ता सउत्तरोट्टं मुंडं करेति, स० २ कारेत्ता तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमिति, तं० २-क्खमित्ता णालंदं वाहिरियं

गौतम ! वीजा मासक्षमणना पारणाने विपे तंतुवायनी शालाथी नीकळी णालंदाना वहारना मध्य भागमा थई ज्यां राजगृह नगर छे त्यां यावद्-भिक्षा माटे जतां आनंदगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. ल्यार वाद ते आनंदगृहपति मने आवतो जोई-इत्यादि वधो वृत्तात विजय-गृहपतिनी पेठे (सू० ३.) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के ‘मने अनेक प्रकारनी भोजन विधिथी प्रतिलामीश’-एम विचारी ते आनंद-गृहपति संतुष्ट थयो-इत्यादि वाकीनुं वृत्तान्त पूर्वे कक्षा प्रमाणे जाणवुं, यावत्-हुं वीजा मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. ल्यार वाद हे गौतम ! में वीजा मासक्षमणना पारणाने विपे तंतुवायनी शालाथी वहार नीकळी यावत्-भिक्षाए जतां सुनन्दगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. ल्यार वाद ते सुनन्दगृहपति-इत्यादि सर्व वृत्तान्त विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के तेणे मने सर्वकामना गुणयुक्त भोजनवडे प्रतिलाभ्यो. वाकीनुं वधुं पूर्वे प्रमाणे जाणवुं. ल्यार पछी हुं चोया मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. हवे ते णालंदाना वहारना भागथी थोडे दूर एक कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो. अहीं सन्निवेशनुं वर्णन जाणवुं, ते कोल्लाक सन्निवेशने विपे वहुल नामे ब्राह्मण वसतो हतो. ते धनिक, यावत्-कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो. ते ऋग्वेद-इत्यादि ब्राह्मणोना शाख तथा रीत-रीवा-जमां कुशल हतो. ल्यार वाद ते वहुल नामे ब्राह्मणे कार्तिक चातुर्मासनी प्रतिपदने विपे पुष्कळ मधु-खांड अने घी-संयुक्त परमान्न-क्षीरवडे ब्राह्मणेने जमाड्या. ते वखते हे गौतम ! हुं चोया मासक्षमणना पारणाने विपे तंतुवायनी शालाथी नीकळी णालंदाना वहारना मध्यभागमा थई ज्या कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो त्यां आव्यो, त्या आवी कोल्लाक संनिवेशने विपे उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां यावत्-भिक्षार्चार्थे जता मे वहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश कर्यो. ल्यार पछी ते वहुल ब्राह्मणे मने आवता जोयो-इत्यादि पूर्वे प्रमाणे कहेवुं, यावत्-‘मने मधु अने घृत संयुक्त परमान्नवडे प्रतिलामीश’ एम धारी ते संतुष्ट थयो-वाकी वधुं विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवुं, यावत्-‘वहल ब्राह्मण धन्य छे’.

गौतम ! वीजा मासक्षमणना पारणाने विपे तंतुवायनी शालाथी नीकळी णालंदाना वहारना मध्य भागमा थई ज्यां राजगृह नगर छे त्यां यावद्-भिक्षा माटे जतां आनंदगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. ल्यार वाद ते आनंदगृहपति मने आवतो जोई-इत्यादि वधो वृत्तात विजय-गृहपतिनी पेठे (सू० ३.) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के ‘मने अनेक प्रकारनी भोजन विधिथी प्रतिलामीश’-एम विचारी ते आनंद-गृहपति संतुष्ट थयो-इत्यादि वाकीनुं वृत्तान्त पूर्वे कक्षा प्रमाणे जाणवुं, यावत्-हुं वीजा मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. ल्यार वाद हे गौतम ! में वीजा मासक्षमणना पारणाने विपे तंतुवायनी शालाथी वहार नीकळी यावत्-भिक्षाए जतां सुनन्दगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. ल्यार वाद ते सुनन्दगृहपति-इत्यादि सर्व वृत्तान्त विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के तेणे मने सर्वकामना गुणयुक्त भोजनवडे प्रतिलाभ्यो. वाकीनुं वधुं पूर्वे प्रमाणे जाणवुं. ल्यार पछी हुं चोया मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. हवे ते णालंदाना वहारना भागथी थोडे दूर एक कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो. अहीं सन्निवेशनुं वर्णन जाणवुं, ते कोल्लाक सन्निवेशने विपे वहुल नामे ब्राह्मण वसतो हतो. ते धनिक, यावत्-कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो. ते ऋग्वेद-इत्यादि ब्राह्मणोना शाख तथा रीत-रीवा-जमां कुशल हतो. ल्यार वाद ते वहुल नामे ब्राह्मणे कार्तिक चातुर्मासनी प्रतिपदने विपे पुष्कळ मधु-खांड अने घी-संयुक्त परमान्न-क्षीरवडे ब्राह्मणेने जमाड्या. ते वखते हे गौतम ! हुं चोया मासक्षमणना पारणाने विपे तंतुवायनी शालाथी नीकळी णालंदाना वहारना मध्यभागमा थई ज्या कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो त्यां आव्यो, त्या आवी कोल्लाक संनिवेशने विपे उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां यावत्-भिक्षार्चार्थे जता मे वहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश कर्यो. ल्यार पछी ते वहुल ब्राह्मणे मने आवता जोयो-इत्यादि पूर्वे प्रमाणे कहेवुं, यावत्-‘मने मधु अने घृत संयुक्त परमान्नवडे प्रतिलामीश’ एम धारी ते संतुष्ट थयो-वाकी वधुं विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवुं, यावत्-‘वहल ब्राह्मण धन्य छे’.

४. ल्यारवाद मंखलिपुत्र गोशालके मने तन्तुवायनी शालाथी नहि जोवाथी राजगृह नगरनी वहार ने अंदर चोतरफ मारी गवेपणा-तपास करी, परंतु मारी क्याइ पण श्रुति, क्षुति-शब्द के प्रवृत्ति नहि मळवाथी ज्यां तन्तुवायनी शाला हती त्या ते गयो, त्या जईने तेणे शाटिका-अदरना वखो, पाटिका-उपरना वखो, कुंडीओ, उपानह-पगरखा अने चित्रपटने ब्राह्मणेने आपीने दाढी अने मुंछुं मुंडन करावुं. ल्यारवाद तन्तुवायनी शाला थकी नीकळी णालंदाना बाहेरना मध्य भागमां थई ज्यां कोल्लाक नामे सन्निवेश छे त्यां आव्यो. ल्यार पछी कोल्लाक सन्निवेशनां वहारना भागमां घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे, यावत्-प्ररूपे छे के-‘हे देवानुप्रियो ! वहुल नामे

भगवते करेलो गोशालकेनी शिष्यवृत्तीके स्वीकार

वृद्धमंज्जुं निगगच्छ, निगगच्छित्ता जेणेव कोट्टागसन्निवेशे तेणेव उवागच्छ। तप णं तस्स कोट्टागस्स संनिवेशस्स बहिया वहुजणो अन्नमद्यस्स एवमाइप्पग्गि, जाव-परुवेत्ति-‘अप्पे णं देवाणुप्पिया। वहुले माहणे, तं चेव जाव-तीवियफले वहुलस्स माहणस्स व०’ २ । तप णं तस्स गोसाळस्स मंगलिपुत्तस्स वहुजणस्स धंनियं एयमट्ठं सोद्या निमम्म अयमेयारुवे अन्न-दिय ए जाव-समुप्पज्जित्था-‘जास्सित्थिा णं ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवन्नो महावीरस्स इही जुत्ती जसे वले वीरिण पुरिसकारपरकामे लङ्गे पत्ते अभिसमन्नागप, नो रालु अत्थि तारिग्निया णं अन्नस्स कस्सइ तद्दाहवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इही जुत्ती जाव-परकामे लङ्गे पत्ते अभिसमन्नागप, तं निस्संदिद्धं च णं एत्थ ममं धम्मायरिण धम्मोवदेसप समणे भगवं महावीरे भविस्सतीति कट्टु कोट्टागसन्निवेशे संधित्तयाहिरिण ममं सद्यन्नो समंता मग्गणवत्तेसणं करेइ, ममं सद्यन्नो जाव-करेमाणे कोट्टागसन्निवेशे बहिया पणियभूमिप मप सद्धिं अभिसमन्नागप । तप णं से गोसाले मंगलिपुत्ते इट्ठ-तुट्ठे ममं तिस्सुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव-नमंसित्ता पयं वयासी-‘तुज्जे णं भंते ! मम धम्मायरिया, अहं नुज्जे अंनेवासी’ । तप णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंगलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिस्सुणेमि । तप णं अहं गोयमा ! गोमा-लेणं मंगलिपुत्तेणं सद्धिं पणियभूमिप उघासाइं लामं अलामं चुत्तं दुक्कं सक्कारमनकारं पच्चणुच्चमाणे अणियजागरियं विहरित्था ।

५. तप णं अहं गोयमा ! अथवा कदापि पढमसखकालसमयंसि अप्युत्तिकायंसि गोसालेणं मंगलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्ध-व्यगामाथो नगराथो कुम्भगामं नगरं संपट्टीणं विहारण । तस्स णं सिद्धव्यगामस्स नगरस्स कुम्भगामस्स नगरस्स च अंतरा एत्थ णं महं एगे तिलयंमप पत्तिप पुष्पिण हट्टियगरेरिज्जमाणे खिरीण अतीव २ उवसोमेमाणे २ चिट्ट । तप णं से गोसाले मंगलिपुत्ते तं तिलयंमगं पासइ, पासित्ता ममं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता पयं वयासी-‘एत्थ णं भंते ! तिलयंमप किं निप्पज्जिस्सइ नो निप्पज्जिस्सति ? एए य सत्त तिलपुष्पजीवा उदाइत्ता २ कहिं गच्छिंति, कहिं उववज्जिंति ? तप णं अहं गोयमा ! गोसालं मंगलिपुत्तं पयं वयासी-‘गोसाला ! एत्थ णं तिलयंमप निप्पज्जिस्सइ, नो न निप्पज्जिस्सइ; एए य सत्त तिलपुष्पजीवा उदाइत्ता २ एयस्स चेव तिलयंमगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पघायाइस्संति’ । तप णं से गोसाले मंगलिपुत्ते ममं एवं आइक्कमाणस्स एयमट्ठं नो सइइति, नो पत्तियति, नो रोपइ, एयमट्ठं असइहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोपमाणे ममं पणिहाए ‘अयं णं मिच्छावादी भवउ’ त्ति कट्टु ममं अंतियाअं सणियं २ पच्चोसइइ, पच्चोसकित्ता जेणेव इडे

ब्राह्मण धन्य छे’-इत्यादि पूर्वे कथा प्रमाणे कहेहुं, यावत्-‘वहुल ब्राह्मणो जन्म अने जीवितव्यनुं फल प्रदंभनीव छे’। ते वरते वणा माणसो पासेयी आ वात सांभलीने अने धवधारीने मखलिपुत्र गोशालकने आवा प्रकारनो आ विचार यावत्-उत्पन्न धयो-‘मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवान् महावीरने जेवी ऋद्धि, बुत्ति-तेज, यग, बल, वीर्य अने पुरुषकार-पराक्रम लब्ध छे, प्राप्त थए छे, सन्मुख थयेल छे, तेवा प्रकारनी ऋद्धि, बुत्ति-तेज, यावत्-पुरुषकार-पराक्रम अन्य कोई तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने लब्ध, प्राप्त के सन्मुख थएल नथी, ते माटे अवश्य अहिं मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवंत महावीर हशे’-एम विचारी ते कोट्टाक सन्निवेशनी बहार अने अदर चोतरफ मारी मार्गणा अने गवेपणा करवा लाग्यो. चोतरफ मारी गवेपणा करना कोट्टाक सन्निवेशना बहारना मागमा मनोइ भूमिने विपे ते मने मळ्यो. ल्यारवाद ते मंखलिपुत्र गोशालक प्रसन्न अने संतुष्ट थई मने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत्-नमस्कार करो आ प्रमाणे बोळ्यो-‘हे भगवन् ! तमे मारा धर्माचार्य छे, अने हुं तमारो शिष्य हुं’। ल्यारे हे गौतम ! में मंखलिपुत्र गोशालकनी ए वातने स्वीकारी. ल्यारवाद हे गौतम ! हुं मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे प्रणीतभूमिने विपे छ वर्ष सुधी लाम, अलाम, सुख, दुःख, सत्कार अने असत्कारनो अनुभव करतो अने तेनी अनिस्तानो विचार करतो विहरवा लाग्यो.

५. ल्यारवाद हे गौतम ! अन्य कोई दिवसे प्रथम शरद काळना समयमां ल्यारे वृष्टि थती न होती ल्यारे में मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे सिद्धार्थ प्रामनामे नगरथी कूर्मप्राम नामे नगर तरफ जवा माटे प्रयाण कर्युं, सिद्धार्थ प्रामनामे नगर अने कूर्मप्राम नगरनी वचे अहि एक मोटो तलनो छोट पत्रवाळो, पुष्पवाळो, हरितपणाथी अलंत शोभतो अने शोभावडे अलंत अविक अविक दीपतो हतो. हवे ते मंखलिपुत्र गोशालकने ते तलना छोडने जोयो, जोडने मने वंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे कहुं के हे भगवन् ! आ तलनो छोट नीपजशे के नहि नीपजे ? आ सात तलना पुष्पना जीवो मरी मरीने क्या जशे अने क्यां उपजशे ? हे गौतम ! ल्यारे मंखलिपुत्र गोशालकने में आ प्रमाणे कहुं-‘हे गोशालक ! आ तलनो छोट नीपजशे, नहि नीपजे एम नहि, आ सात तलना पुष्पना जीवो मरी मरीने आज तलना छोडनी एक तलफळीने विपे सात तलरूपे उपजशे.’ ल्यारे ए प्रमाणे कहेतां मारी आ वातनी मंखलिपुत्र गोशालके श्रद्धा, प्रतीति तेम रुचि न करी, आ वातनी श्रद्धा नहि करता, प्रतीति नहि करतां अने अरुचि करतां ‘मारा निमित्ते आ मिथ्यावादी धाओ’-एम समजी मारी पासेयी धीमे धीमे गयो, अने ध्यां ते तलनो छोट छे, ल्यां आवीने तेणे ते तलना छोडने माटीसहित मूळथी उखेडी नांख्यो, उखेडीने तेने एकान्ते मूख्यो. हे गौतम ! तत्काल ज आकाशमां दिव्य वादळ थयुं, अने ते दिव्य वादळ क्षण वारमां ज

तिलधर्मणं तेणेव उवागच्छद्, उवागच्छत्ता तं तिलधर्मणं सलेदुयायं चैव उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता एगंते पडेति । तक्खणमेत्तं च णं गोयमा ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउच्चूए । तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाएति, खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमद्वियं पचिरलपफुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासति, जेणं से तिलधर्मण आसत्थे पच्चायाए, तत्थेव चद्दमूले, तत्थेव पतिट्ठिए । ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ तस्सेव तिलधर्मणस्स एगाए तिलसंगलि-याए सत्त तिला पच्चायाया ।

६. तए णं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं जेणेव कुम्मगामे नगरे तेणेव उवागच्छामि, तए णं तस्स कुम्मगामस्स नगरस्स वहिया वेसियायणे नामं वालतवस्सी छट्टंछट्टेणं अणिक्वित्तेणं तवोकम्मेणं उद्धं वाहाओ पगिच्छिय २ सुरामिसुद्दे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरद्, आइच्चतेयतवियाओ य से छप्पदीओ सद्धओ समंता अमिनिस्सवंति, पाण-भूय-जीव-सत्त-दयदुयाए च णं पडियाओ २ तत्थेव भुज्जो २ पच्चोरुभेति । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं वालतवस्सि पासति, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कद्, ममं २ पच्चोसक्कित्ता जेणेव वेसियायणे वालतवस्सी तेणेव उवागच्छति, ते २-च्छित्ता वेसियायणं वालतवस्सि एवं वयासी-‘किं भवं मुणी, मुणिए, उद्दाहु जूयासेज्जारए’ ? तए णं से वेसियायणे वालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमद्धं णो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए संचिट्ठति । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं वालतवस्सि दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी-‘किं भवं मुणी, मुणिए, जाव-सेज्जा-यरए’ । तए णं से वेसियायणे वालतवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव-मिसि-मिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभेति, आ २-रुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहन्नद्, तेया २ समोहणित्ता सत्तदुपयाइं पच्चोसक्कद्, स २-सक्कित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरद् । तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अणुकंपणदुयाए वेसियायणस्स वालतवस्सिस्स तेयपडिसाहरणदुयाए एत्थ णं अंतरा अहं सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स वालतवस्सिस्स सा उसिणा तेयलेस्सा पडिहया । तए णं से वेसियायणे वालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए सीओसिणं तेयलेस्सं पडिहयं जाणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स

गर्जना करवा लाग्युं, एकदम वीजली चमकवा लागी, अने तुरतज अत्यंत पाणी अने अत्यंत कादव न थाय तेवी थोडा पाणीनां विदुवाळी, रज अने धूलने शात करनार एवी दिव्य उदकनी वृष्टि थई. (अथवा सीतादिक महानदीओना पाणी जेवा पाणीनी वृष्टि थई.) जेयी करी ते तलनो छोड स्थिर थयो, विशेष स्थिर थयो, उग्यो अने वद्धमूल थई ला ज प्रतिष्ठित थयो. ते सात तल पुप्पना जीवो मरण पामी पामीने तेज तलना छोडनी एक तलफळीमा सात तलरूपे उत्पन्न थया.

६. स्यारवाद हे गौतम ! हूं मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे ज्यां कूर्मप्राम नामे नगर छे त्यां आव्यो. ते वखते ते कूर्मप्राम नगरनी बहार वेद्यायन नामे वालतपस्वी निरंतर छट्ट छट्टना तप करवावडे पोताना वने हाय उंचा राखी राखीने सूर्यना सन्मुख उमो रही आतापनाभूमिने विषे आतापना लेतो विहरतो हतो. सूर्यना तेजवडे तपेली यूकाओ चोतरफथी नीकळती हती, अने ते सर्व प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वनी दयाने माटे पळी गयेली ते यूकाओने पाछी ला ने त्यां मूकतो हतो. हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके वेद्यायन नामे वालतपस्वीने जौयो, जोईने मारी पासेथी ते धीमे धीमे पाछो गयो. पाछो जईने ज्या वेद्यायन नामे वालतपस्वी छे त्या आवी वेद्यायन नामे वालतपस्वीने ए प्रमाणे कहुं- ‘शुं तमे \*मुनि छे के मुनिक-चसकेल छे, अथवा यूकाना शय्यातर छे’ ? स्यारे ते वेद्यायन नामे वालतपस्वीए मंखलिपुत्र गोशाल-कना ए कथननो आदर अने स्वीकार कर्यो नहि, परन्तु मौन धारण कर्युं. स्यारवाद ते मंखलिपुत्र गोशालके वेद्यायन नामे वालतपस्वीने बीजी वार अने त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कहुं के ‘तमे मुनि छे, चसकेल छे, के यूकाना शय्यातर छे’ ? स्यारे मंखलिपुत्र गोशालके बीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे कहुं स्यारे ते वेद्यायन नामे वालतपस्वी एकदम कुपित थयो अने यावत्-क्रोधे धमधमायमान थई आतापनाभूमिथी नीचे उतर्यो. नीचे आवीने तेजःसमुद्घात करी सात आठ पगला पाछो खसी मंखलिपुत्र गोशालकना वधने माटे तेणे शरीरमांधी तेजोलेइया बहार काडी. स्यारवाद हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशालकना उपर अनुकंपाथी वेद्यायन वालतपस्वीनी तेजोलेइयानुं प्रतिसंहरण करवा माटे आ प्रसंगे में शीत तेजोलेइया बहार काडी, अने मारी शीत तेजोलेइयाए वेद्यायन वालतपस्वीनी उष्ण तेजोलेइयानो प्रतिघात कर्यो. स्यार पछी ते वेद्यायन वालतपस्वीए मारी शीततेजोलेइयाथी पोतानी उष्णतेजोलेइयानो प्रतिघात थयेलो जाणीने अने मंख-लिपुत्र गोशालकना शरीरने कंह पण थोडी के वधारे पीडा अथवा अवयवनो छेद नहि करायेलो जोईने पोतानी उष्ण तेजोलेइयाने पाछी खेंची लीधी, पोतानी उष्ण तेजोलेइयाने पाछी खेंचीने ते आ प्रमाणे बोल्थो-‘हे भगवन् ! में जाण्युं, हे भगवन् ! में जाण्युं.’ स्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके मने ए प्रमाणे कहुं के ‘हे भगवन् ! आ यूकाना शय्यातर वालतपस्वीए आपने हे भगवन् ! में जाण्युं, हे भगवन् !

गोशालकने वेद्या-यन वालतपस्वीनो समागम, तेमने गोशालकनु उपहा-सपूर्वक कथन, तेमनु गोशालक उपर तेजोलेइयानु मुक्य, शीतलेइया मूकी मगनते करेळ गोशालकनु रक्षण



सरीरगस्स किञ्चि आवाहं वा वावाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता सीओसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरद, सीओ २—साहरत्ता ममं एवं वयासी—‘से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं ! । तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—किं णं मंते ! एस ज्ञयासिजायरए तुम्मे एवं वयासी—‘से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं ? तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—‘तुमं णं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सि पाससि, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पञ्चोसकसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, ते ० २—च्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सि एवं वयासी—‘किं भवं मुणी, मुणिण, उदाह ज्ञयामेजायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्टं नो आहाति, नो परिजाणनि, तुसिणीए संचिद्वट्ट । तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सि दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—‘किं भवं मुणी, मुणिण, जाव—सेजायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तुमं दोच्चं पि तच्चं पि एवं बुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव—पञ्चोसकसि, पञ्चोसकसि तव चहाए सरीरगसि तेयलेस्सं निस्सिरद । तए णं अहं गोसाला ! तव अणुकंपणट्टयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सीयतेयपडिसाहरणट्टयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निस्सिरामि, जाव—पडिहयं जाणित्ता तव य सरीरगस्स किञ्चि आवाहं वा वावाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता सीओसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, सी ० २—साहरत्ता ममं एवं वयासी—‘से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं ! तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं अंतियाओ एयमट्टं सोच्चा, निसम्म भीए जाव—संजायमये ममं वंदति नमंसति; ममं वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—‘कहं मंते ! संखित्तिउल्लतेयलेस्से भवति ? तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—‘जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासर्पिडियाए एणेण य त्रियटासएणं छट्टंछट्टेणं अनिम्बिक्खेणं तत्रोकम्मेणं उट्टं वाहाओ पगिच्छिय २ जाव—विहरति, से णं अंतो छण्हं मासाणं संखित्तिउल्लतेयलेस्से भवति । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एयमट्टं सम्मं विणएणं पडिसुणेति ।

७. तए णं अहं गोयमा ! अन्नदा कदाइ गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्भगामाओ नगराओ सिद्धत्थग्गामं नगरं संपट्टिए विहारए, जाहे य मो तं देसं ह्यमगाया जत्थ णं से तिलयंमए । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—‘तुज्जे णं मंते ! तदा ममं एवं आइक्खह, जाव—परुवेह—गोसाला ! एस णं तिलयंमए निप्फज्जिस्सद, नो न निप्फज्जिस्सद, तं चेव जाव—पच्चायाइस्संति’ तण्णं मिच्छा, इमं च णं पच्चन्धमेव दीसइ—‘एस णं से तिलयंमए णो निप्फजे, अन्निप्फज्जमेव । ते य में जाण्युं—एम सुं कहुं ? लारे हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशाळकने में आ प्रमाणे कहुं के—हे गोशाळक ! तें वेद्यायन बालतपस्तीने जेओ अने जोईने मारी पासेयी धीमे धीमे तुं पाछो गयो, पाछो जईने ज्यां वेद्यायन बालतपस्ती हतो त्या गयो, अने त्यां जईने ते वेद्यायन बालतपस्तीने एम कहुं के—‘शुं तमे मुनि छो, चसकेळ छो के यूकाना श्याातर छो ? तो पण वेद्यायन बालतपस्तीए तारा ए कयननो आदर—स्वीकार न कर्यो अने ते मौन रह्यो. लारवाद हे गोशाळक ! तें वेद्यायन बालतपस्तीने वीजीवार अने त्रीजीवार पण ए प्रमाणे कहुं के—‘तमे मुनि छो, चसकेळ छो के यूकाना श्याातर छो ? लारवाद प्यारे ते वीजीवार अने त्रीजीवार ए प्रमाणे कहुं एटले ते वेद्यायन बालतपस्ती गुस्से थयो, अने यावत्—पाछो जईने तारो ब्रथ करवा माटे तेणे शरीरमायी तेजोलेइया बहार काडी. लार पछी हे गोशाळक ! मे तारी दयायी वेद्यायन बालतपस्तीनी तेजोलेइयातुं प्रतिसंहरण करवा माटे ए अवसरे में शीत तेजोलेइया मूकी, यावत्—तेणे तेनी उष्ण तेजोलेइया प्रतिधान वएली जाणानि अने तारा शरीरने कंइ पण थोडी के वचारे पीडा अथवा अवयवतो छेद नहि कराचेछो जोईने पोताना उष्ण तेजोलेइया पाछी खेंचो लीवी; अने पाछी खेंचीने मने ए प्रमाणे कहुं के—‘हे भगवन् ! में जाण्युं, हे भगवन् ! में जाण्युं.’ लार वाद मंखलिपुत्र गोशाळक मारी पासेयी आ वात सामळी, हृदयमा अन्नधारी भय पाम्यो, यावत्—भयमीत थई मने वंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्हो—‘हे भगवन् ! (अप्रयोगकाले) संक्षित अने (प्रयोगकाले) विपुल तेजोलेइया केम प्राप्त थाय ? लारे हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशाळकने में ए प्रमाणे कहुं—‘हे गोशाळक ! जे नखसहित बालेळी अडटना वाकळानी मुठीवडे अने एक विकटाशय—एक चुटुक पाणी वडे निरन्तर छट्ट छट्टनो तप करी लंचा हाथ राखी राखीने यावत्—विहरे तो तेने छ मासने अन्ते (अप्रयोगकाले) नमिष्ठ अने [ प्रयोगकाले ] विस्तीर्ण एवी तेजोलेइया प्राप्त थाय’. लार पछी मंखलिपुत्र गोशाळके मारा आ कयननो विनयवडे साने रीते स्वीकार कर्यो.

७. लार वाद हे गौतम ! अन्य कोर्द दिवसे मंखलिपुत्र गोशाळकनी साथे कूर्मग्रामनगरयी सिद्धार्थग्रामनगर तरफ जवा माटे में प्रमाण कहुं. प्यारे अमे ज्यां ते तलनो छोड हतो ते प्रवेश तरफ तुरत आच्या लारे मंखलिपुत्र गोशाळके मने ए प्रमाणे कहुं—‘हे भगवन् ! तमे मने ते वगने ए प्रमाणे कहुं हतुं, यावत्—एम प्ररूप्युं हतुं के हे गोशाळक ! आ तलनो छोड नीपजणे, नहि नीपजे एम नहि—इलात्रि यावत्—नखरूपे उपजणे’ ते मिथ्या—असत्य थयुं. आ प्रत्यक्ष देखाय छे के आ पेछो तलनो छोड उग्यो नथी, अने तेथी उग्या शिमाय ते सात तळ पुप्यना जीवो मरण पामी पामीने आज तलना छोडनी एक तळफळीमा सात तळरूपे उत्पन्न थया नथी. लार पछी मंखलिपुत्र गोशाळकने में ए प्रमाणे कहुं के हे गोशाळक ! ते वखते ए प्रमाणे कहेता, यावत्—प्ररूपणा करता मारा ए कयननी तुं श्रद्धा

સત્ત તિલપુષ્પજીવા ઉદાહરતા ૨ નો પચ્ચસ્સ ચેવ તિલથંભગસ્સ પગાપ તિલસંગલિયાપ સત્ત તિલા પચ્ચાયાયા' । તપ્પ ણં અહં ગોયમા ! ગોસાલં મંચલિપુત્તં પવં વયાસી—'તુમં ણં ગોસાલા ! તદ્દા મમં પવં આહ્વજ્જમાણસ્સ, જાવ—પરુવેમાણસ્સ પચ્ચમટ્ટં નો સહહસિ, નો પત્તિયસિ, નો રોયસિ, પચ્ચમટ્ટં અસહ્હમાણે, અપત્તિયમાણે, અરોપમાણે મમં પણિહાપ 'અચન્નં મિચ્છાવાદી' ભવત્'ત્તિ કટ્ટુ મમં અંતિયાઓ સણિયં ૨ પચ્ચોસક્કસિ, પચ્ચોસક્કિત્તા જેણેવ સે તિલથંભપ તેણેવ ઉવાગચ્છહ, તે ૦ ૨—ગચ્છિત્તા જાવ—પગંતમંતે પટેસિ । તક્કણ્ણમેત્તં ગોસાલા ! દિઘ્ઘે અન્નવહ્લપ પાઠ્ઠભૂપ । તપ્પ ણં સે દિઘ્ઘે અન્નવહ્લપ ચિપ્પામેવ તં ચેવ જાવ—તસ્સ ચેવ તિલથંભગસ્સ પગાપ તિલસંગલિયાપ સત્ત તિલા પચ્ચાયાયા; તં પસ ણં ગોસાલા ! સે તિલથંભપ નિપ્પન્ને, ણો અનિપ્પન્નમેવ । તે ય સત્ત તિલપુષ્પજીવા ઉદાહરતા ૨ પચ્ચસ્સ ચેવ તિલથંભયસ્સ પગાપ તિલસંગલિયાપ સત્ત તિલા પચ્ચાયાયા । પવં ચલ્લુ ગોસાલા ! વણસ્સહ્હકાહ્યા પટ્ટપરિહારં પરિહરંતિ । તપ્પ ણં સે ગોસાલા મંચલિપુત્તે મમં પવમાહ્વજ્જમાણસ્સ, જાવ—પરુવેમાણસ્સ પચ્ચમટ્ટં નો સહહતિ ૩, પચ્ચમટ્ટં અસહ્હમાણે જાવ—અરોપમાણે જેણેવ સે તિલથંભપ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, તે ૦ ૨—ગચ્છિત્તા ૨ તાઓ તિલથંભયાઓ તં તિલસંગલિયં ચુહ્હુતિ, ચુહ્હિત્તા કરચલંસિ સત્ત તિલે પ્પ્પોહેદ્દ । તપ્પ ણં તસ્સ ગોસાલસ્સ મંચલિપુત્તસ્સ તે સત્ત તિલે ગણમાણસ્સ અચમેયારુવે અન્નથિપ જાવ—સમુપ્પજિત્થા—'પવં ચલ્લુ સઘ્ઘ-જીવા વિ પટ્ટપરિહારં પરિહરંતિ'—પસ ણં ગોયમા ! ગોસાલસ્સ મંચલિપુત્તસ્સ પટ્ટે, પસ ણં ગોયમા ! ગોસાલસ્સ મંચલિપુત્તસ્સ મમં અંતિયાઓ આયાપ અવક્કમણે પન્નત્તે ।

૮. તપ્પ ણં સે ગોસાલા મંચલિપુત્તે પગાપ સણહાપ કુમ્માસાર્પિડિયાપ ય પ્પેણ ય ચિયડાસપ્પં છટ્ટંછટ્ટેણં અનિચ્છિત્તેણં તવોક્કમેણં ઉહ્હં વાહાઓ પગિચ્છિય ૨ જાવ—વિહરહ્હ । તપ્પ ણં સે ગોસાલા મંચલિપુત્તે અંતો છ્ણં માસાણં સંચિત્તવિહરેવે-યલેસે જાપ ।

૯. તપ્પ ણં તસ્સ ગોસાલસ્સ મંચલિપુત્તસ્સ અન્નયા કયા વિ ઇમે છ હિસાચરા અંતિયં પાઠ્ઠવિત્થા, તંજહા ૧—સાણે તં ષેવ, સઘ્ઘં જાવ—અજિણે જિણસહ્હં પગાસેમાણે વિહરતિ, તં નો ચલ્લુ ગોયમા ! ગોસાલા મંચલિપુત્તે જિણે, જિણપ્પલાવી જાવ—જિણસહ્હં પગાસેમાણે વિહરહ્હ; ગોસાલા ણં મંચલિપુત્તે અજિણે, જિણપ્પલાવી જાવ—પગાસેમાણે વિહરહ્હ । તપ્પ ણં સા

કરતો ન હતો, પ્રતીતિ કરતો ન હતો, રુચિ કરતો નહોતો, એ કથનની શ્રદ્ધા નહિ કરતા, પ્રતીતિ નહિ કરતાં અને રુચિ નહિ કરતા મને આશ્રયી—મારા નિમિત્તે આ મિથ્યાવાદી થાઓ'—એમ સમજી મારી પાસેથી ધીમે ધીમે તું પાછો ગયો, પાછો જઈને ય્યાં તે તલનો છોડ હતો ત્યાં આવી યાવત્—તેને માટીસહિત ઉખાડીને એકાતે મૂક્યો. હે ગોશાલક ! તે વચ્ચે તલક્ષણમાં આકાશમા દિવ્ય વાદલ પ્રગટ થયું, ત્યાર વાદ તે દિવ્ય પાણીનું વાદલ એકદમ ગર્જના કરવા લાગ્યું—ઈસ્યાદિ યાવત્—તે તલના છોડની એક તલ્પાળીમા સાત તલરૂપે ઉત્પન્ન થયા છે. તે માટે હે ગોશાલક ! તે તલનો છોડ નિપ્પન્ન થયો છે, અનિપ્પન્ન છે—એમ નથી. તે સાત તલના પુષ્પના જીવો મરીને આજ તલના છોડની એક તલ્પાળીમા સાત તલરૂપે ઉત્પન્ન થયા છે. એ પ્રમાણે હે ગોશાલક ! વનસ્પતિકાયિકો મરીને પ્રવૃત્ત પરિહારનો પરિહાર—ઉપભોગ કરે છે. અર્થાત્—મરીને તેજ શરીરમા પુનઃ ઉપજે છે. ત્યાર પછી મંચલિપુત્ર ગોશાલકને એ પ્રમાણે કહેતા યાવત્—પ્રરૂપણા કરતા મારા આ કથનની શ્રદ્ધા, પ્રતીતિ અને રુચિ ન કરી, આ કથનની અશ્રદ્ધા, યાવત્—અરુચિ કરતા ય્યાં તે તલનો છોડ હતો ત્યાં જઈને તેણે તે તલના છોડથી તે તલની તલ્પાળીને તોડીને હસ્તતલ્પા મસઝી સાત તલ વહાર કાઢ્યા. ત્યાર વાદ મંચલિપુત્ર ગોશાલકને તે સાત તલને ગણતા આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ યાવત્—ઉત્પન્ન થયો કે 'એ પ્રમાણે ચરેચર સર્વ જીવો પણ પ્રવૃત્ત પરિહાર પરિહરે છે.' અર્થાત્—મરીને તેજ શરીરમાં ઉત્પન્ન થાય છે. હે ગૌતમ ! મંચલિપુત્ર ગોશાલકનો આ પરિવર્તવાદ છે. અને હે ગૌતમ ! મારી પાસેથી (તેજોલેશ્યાનો ઉપદેશ) પ્રહણ કરીને મંચલિપુત્ર ગોશાલકનું આ અપક્રમણ (જૂદા પડવું) છે.

૮. ત્યાર પછી મંચલિપુત્ર ગોશાલક નલ્પસહિત એક અહ્હદના વાહુલ્યાની મુઠીવડે અને એક વિકટાગય—ચુલ્લક પાણીવડે નિરન્તર છટ્ટુ છટ્ટુનો તપ કરી ડંચા હાથ રાખી રાખીને વિચરે છે. ત્યાર વાદ તે મંચલિપુત્ર ગોશાલકને છ માસને અન્તે સંક્ષિપ્ત અને વિપુલ તેજોલેશ્યા ઉત્પન્ન થઈ.

૯. ત્યાર પછી તે મંચલિપુત્ર ગોશાલકને અન્ય કોઈ દિવસે આ છ દિશાચરો આવી મળ્યા. તેના નામ આ પ્રમાણે—૧ શાન—ઈસ્યાદિ સર્વ પૂર્વોક્ત યાવત્—'જિન નહિ છતાં જિન શબ્દને પ્રકાશિત કરતો તે વિહરે છે' ત્યાં સુધી કહેવું. માટે હે ગૌતમ ! મંચલિપુત્ર ગોશાલક ખરી રીતે જિન નથી, પરન્તુ જિનનો પ્રલાપ કરતો, યાવત્—જિન શબ્દનો પ્રકાશ કરતો વિહરે છે. મંચલિપુત્ર ગોશાલક અજિન છે, તો પણ પોતાને જિન કહેતો યાવત્—જિન શબ્દનો પ્રકાશ કરતો તે વિહરે છે. ત્યાર વાદ અત્યન્ત મોટી પર્યદા \*શિવરાજર્પિના ચરિત્રને વિષે કહું

ગોશાલકનો પરિવર્તવાદસ્વીકાર અને ભગવત્તથી તેનું જૂદા પડવું.

ગોશાલકને તેજોલેશ્યાની પ્રાપ્તિ

ગોશાલકના છ દિશાચરો શિષ્ય થયા અને તે દ્વારા જિન તરીકે વિચરવા લાગ્યો.

महतिमहालया महच्चपरिसा जहा सिवे जाव-पडिगया । तप णं सावत्थीप नगरीप सिंघाङ्ग० जाव-बहुजणो अन्नमन्नस्स जाव-परूवेइ-‘जन्नं देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव-विहरइ’ तं मिच्छा । समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ-जाव-परूवेइ-‘एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था । तप णं तस्स मंखलिस्स एवं चेव तं सद्यं भाणियद्यं, जाव-अजिणे जिणसहं पगासेमाणे विहरइ; तं नो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी जाव-विहरइ, गोसाले मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव-विहरइ, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव-जिणसहं पगासेमाणे विहरइ’ । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं पयमट्ठं सोच्चा, निसम्म आसुवचे, जाव-मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुइइ, आया० २ पच्चोरुहिता सावत्थि नगरिं मज्झमत्थेणं जेणेव हालाहलाए कुंमकारीए कुंमकारावणे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छिता हालाहलाए कुंमकारीए कुंमकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिखुडे महया अमरिसं वहमाणे एवं यावि विहरइ ।

१०. तेणं कालेणं तेणं समणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगइभइए, जाव-विणीए, छट्ठेणं अणिक्खिणं तवोकम्मैणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तप णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव-उच्च-नीय-मज्झिम० जाव-अडमाणे हालाहलाए कुंमकारीए कुंमकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयइ । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंमकारीए कुंमकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-‘एहि ताव आणंदा ! इओ एणं महं उचमियं निसामेहि’ । तप णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं बुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंमकारीए कुंमकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी-‘एवं खलु आणंदा ! इतो चिरातीयाए अद्दाए केइ उच्चावया वणिथा अत्थत्थी, अत्थलुद्धा, अत्थगवेसी, अत्थकंखिया, अत्थपिवासा, अत्थगवेसणयाए णाणाविहविउलप-

छे तेम वादीने पाछी गइ. लार पछी श्रावस्ती नगरीमा शृंगाटक-त्रिक मार्ग, यावत्-राजमार्गमा घणा माणसो परस्पर यावत्-प्ररूपणा करे छे के हे देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र गोशालक जिन वई जिननो प्रलाप करतो यावत् विहरे छे, ते मिथ्या-असत्य छे. श्रमण भगवान् महावीर एम कहे छे, यावद्-प्ररूपे छे के ए प्रमाणे खरेखर ते मंखलिपुत्र गोशालकने मंखलिनामे मंख ( भिक्षाचरविशेष ) पिता हतो. हवे ते मंखलिने-इत्यादि सवं यावत्-जिन नहि छता जिन शब्दनो प्रकाश करतो विहरे छे-त्या सुवी कहेवुं. ते माटे मंखलिपुत्र गोशालक जिन नथी, परन्तु जिननो प्रलाप करतो यावद्-विहरे छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन छे, अने जिनप्रलापी, यावत्-जिन शब्दनो प्रकाश करता विहरे छे.’ लार वाद ते मंखलिपुत्र गोशालक घणा माणसो पासेथी आ कथन सामळी, विचारी, अत्यन्त गुस्ते धयो, यावत्-अतिशय क्रोधे बळतो ते आतापना भूमिथी नीचे उतर्यो, आतापनाभूमिथी नीचे उतरी श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमा वईने ज्यां हालाहला कुंभारणनो कुंभकारापण-हाट छे त्या आव्यो, आवीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण-हाटमा आजीविक संघवडे सहित अत्यन्त अमर्पने धारण करतो ए प्रमाणे विहरवा लायो.

१०. ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना शिष्य आनन्द नामे स्वविर प्रकृतिना भद्र अने यावद्-विनीत हता. ते छट्ठ छट्ठना निरन्तर तपकर्म करवावडे अने सयमवडे आत्माने भावित करता विहरता हता. हवे ते आनंद स्वविर छट्ठक्षपणना पारणाने दिवसे प्रथम पौरुपीने विषे-इत्यादि गौतम स्वामीनी \*पेठे रजा मार्गी, अने यावत्-ते उच्च, नीच अने मध्यम कुळमा यावत्-गोचरीए जता हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण-हाटथी थोडे दूर गया. ते वखते मंखलिपुत्र गोशालके हालाहला कुंभारणना हाटथी थोडे दूर जतां आनन्द स्वविरने जोया, जोईने तेणे ए प्रमाणे कहुं के ‘हे आनन्द ! अहि आव, अने एक मारं दृष्टान्त सामळ, ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कहुं एटले ते आनन्द स्वविर ज्यां हालाहला कुंभारणनुं कुंभकारापण छे, अने ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक छे त्या आव्या.’ हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके आनंद स्वविरने आ प्रमाणे कहुं-‘हे आनन्द ! ए प्रमाणे खरेखर आजयी घणा काल पहलां अनेक प्रकारना धनना अर्थी, धनना लोमी, धननी गवेपणा करनारा, धनना कांक्षी अने धननी तृष्णावाळा केटला एक वणिकोए धन मेळववा माटे अनेक प्रकारना पुष्कळ प्रणीत-सुन्दर भाड-वस्तुओ ( अथवा करीयाणारूप भाडने ) लईने तथा गाडी अने गाडाओना समूहवडे पुष्कळ अनाज अने पाणीरूप पाधेय ग्रहण करीने एक मोटी गामरहित, पाणीना प्रवाहरहित, सार्यादिकना आगमनरहित अने लांवा मार्गवाळी अटवीमा प्रवेश कर्यो.’ लार पछी ते वणिकोनुं गामरहित, पाणीना प्रवाह रहित, सार्यादिकना आगमनरहित अने लावा रस्तावाळी ते अटवीनो कंडक भाग गया पछी पूर्वे लीचेछं पाणी अनुक्रमे पीतां पीता खट्टुं. लारे पाणिरहित थयेला अने तृपाथी पीडाता ते वणिकोए परस्पर बोलावीने आ प्रमाणे कहुं-‘ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रियो ! आ गामरहित-इत्यादि यावत्-अटवीमा कंडक भाग गया पछी पहला लीचेछं आपणुं

णियमंडमायाय सगडीसागडेणं सुबहुं भक्तपाणं पत्ययणं गहाय एगं महं अगामियं, अणोहियं, छिन्नावायं, दीहमद्धं अडवीं अणुप्पविट्ठा । तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाय, अणोहियाय, छिन्नावायाय, दीहमद्धाय अडवीय किचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिय उदय अणुपुव्वेणं परिभुंजेमाणे परिभुंजेमाणे खीणे । तए णं ते वणिया खीणोदगा समाणा तण्हाय परि-  
भवमाणा अन्नमन्ने सद्दवैति, अन्न० २-सद्दवित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमीसे अगामियाय जाव-अडवीय किचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिय उदय अणुपुव्वेणं परिभुंजेमाणे परिभुंजेमाणे खीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमीसे अगामियाय जाव-अडवीय उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेत्तए'त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिय एयमट्ठं पडि-  
सुणंति, अन्न० २-सुणेत्ता तीसे णं अगामियाय जाव-अडवीय उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेति, उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा एगं महं वणसंडं आसादेंति, किण्हं किण्होभासं जाव-निकुरंवंभूयं पासादीयं जाव-पडिरूवं । तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाय एत्थ णं महेगं वम्मियं आसादेंति । तस्स णं वम्मियस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ, अभिनिंसदाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ जाव-पडिरूवाओ । तए णं ते वणिया हट्टुत्तुट्टु० अन्नमन्नं सद्दवैति, अ० २ सद्दवित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमीसे अगामियाय जाव-सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिय, किण्हे, किण्होभासे, इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदे-  
सभाय इमे वम्मिय आसादिय, इमस्स णं वम्मियस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ, जाव-पडिरूवाओ, तं सेयं खलु देवाणु-  
प्पिया ! अहं इमस्स वम्मियस्स पढमं वप्पि भिन्दित्तए, अविचाइं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो । तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणंति, अन्न० २-सुणेत्ता तस्स वम्मियस्स पढमं वप्पं भिंदंति । ते णं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फ़ालियवन्नामं ओरालं उदगरयणं आसादेंति । तए णं ते वणिया हट्टुत्तुट्टु० पाणियं पिवंति, पा० २ पिवित्ता वाहणाइं पज्जेति, वा० २ पज्जेत्ता भायणाइं भरेति, भा० भरेत्ता दोच्चं पि अन्नमन्नं एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमस्स वम्मि-  
यस्स पढमाय वप्पाय भिण्णाय ओराले उदगरयणे अस्सादिय, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमस्स वम्मियस्स दोच्चं पि वप्पं भिदित्तए, अविचाइं एत्थ ओरालं सुवन्नरयणं आसादेस्सामो' । तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसु-  
णंति, अन्न० २-सुणेत्ता तस्स वम्मियस्स दोच्चं पि वप्पं भिंदंति, ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं महत्थं महग्गं महरिहं ओरालं सुवन्नरयणं अस्सादेंति । तए णं ते वणिया हट्टुत्तुट्टु० भायणाइं भरेति, पवहणाइं भरेति, भरेत्ता तच्चं पि अन्नमन्नं एवं वयासी-  
एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमस्स वम्मियस्स पढमाय वप्पाय भिन्नाय ओराले उदगरयणे आसादिय, दोच्चाय वप्पाय भिन्नाय ओराले सुवन्नरयणे अस्सादिय, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अहं इमस्स वम्मियस्स तच्चं पि वप्पं भिदित्तए । अवि-

पाणी अनुक्रमे पीता पीतां खूटी गयुं छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! आ गामरहित, यावत्-अटवीने विपे आपणे पाणीनी चोतरफ गवेपणा करवी श्रेयस्कर छे'-एम विचार करी एक वीजानी पासेथी आ वात सामळीने तेओए गामरहित यावत्-अटवीमा पाणीनी चोतरफ तपास करी. पाणीनी चोतरफ तपास करतां तेओने एकमोट्टुं वनखंड प्राप्त थयुं. जे वनखंड श्याम अने श्याम कान्तिवालुं यावत्-महामेघना समूह जेवुं, प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने यावत्-सुन्दर हतुं. ते वनखंडना वरोवर मध्य भागमा तेओए एक मोटो वल्मिक-राफडो जोयो. ते वल्मिकने सिंहनी केशवाळी जेवा अवयवोवाळा उंचां चार शिखरो हता, ते तीर्छी-विस्तीर्ण, नीचे अर्ध सर्पना जेवां, अर्ध सर्पनी आकृति-वाळा, प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने यावत्-सुन्दर हतां. ते वल्मिकने जोइने प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए एक वीजाने वोळवीने आ प्रमाणे कहुं के 'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर आपणे आ गामरहित-एवी अटवीमा यावत्-चोतरफ तपास करतां आ श्याम अने श्याम कान्तिवालुं वनखंड जोयुं, अने आ वनखंडना वरावर मध्य भागमा आ वल्मिक जोयो. आ वल्मिकने चार उंचा यावत्-प्रतिरूप-सुन्दर शिखरो छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! आ वल्मिकनुं पहेलुं शिखर फोडवुं ए श्रेयस्कर छे, के जेथी आपणे पुष्कळ उत्तम पाणी प्राप्त करीए'. ल्यार पळी ते वणिकोए एक वीजा पासेथी आ कथन सामळीने ते वल्मिकना प्रथम शिखरने फोडवुं. तेथी तेओने त्या स्वच्छ, हित-कारक, उत्तम, हलकुं अने स्फटिकना वर्ण जेवुं, पुष्कळ अने उत्तम पाणी प्राप्त थयुं. ल्यार पळी प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पाणी पीधुं, अने (वळद बगोरे) वाहनोने पाणी पायुं, पाणी पाईने पात्रो भर्यां, पात्रो भरिने वीजी चार तेओए परस्पर आ प्रमाणे कहुं-  
'हे देवानुप्रियो ! आपणे ए प्रमाणे खरेखर आ वल्मिकना प्रथम शिखरने मेदवावडे पुष्कळ उत्तम पाणी प्राप्त कयुं, तो हे देवानुप्रियो ! हवे आपणे आ वल्मिकना वीजा शिखरने मेदवुं श्रेयस्कर-योग्य छे, के जेथी आपणे अहिं उदार अने उत्तम सुवर्ण प्राप्त करीए.' ल्यार वाद ते वणिकोए एक वीजानी पासेथी आ कथन सामळीने ते वल्मिकना वीजा शिखरने पण फोडवुं. तेथी तेमा स्वच्छ, उत्तम, तापने सहन करनार महार्थवाळुं-महाप्रयोजनवाळुं-अने महामूल्यवाळुं पुष्कळ उत्तम सुवर्ण प्राप्त कयुं. सुवर्णने प्राप्त करवाथी प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पात्रो भर्यां, पात्रो भरिने वाहनो भर्यां, वाहनो भरिने वीजी चार तेओ परस्पर ए प्रमाणे वोल्या-हे देवानुप्रियो ! आपणे आ वल्मिकना प्रथम शिखरने मेदतां उदार एवुं उत्तम जल प्राप्त कयुं, अने वीजुं शिखर मेदतां उदार एवुं उत्तम सुवर्ण प्राप्त

याइं पत्य ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो' । तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्टं पडिसुणेंति, अन्न० २-सुणेत्ता तस्सं वंम्मीयस्स तच्चं पि वप्पं मिंदंति । ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निकलं महत्थं महत्थं महत्थं ओरालं मणिरयणं अस्सादेति । तए णं ते वणिया हट्टुट्टु० भायणाइं भरेति, मा० २ भरेत्ता पवहणाइं भरेति, भरेत्ता चउत्थं पि अन्नमन्नं एवं वयासी-‘एवं खलु देवाणुप्पिया ! अग्हे इमस्स वंम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिप, दोच्चाए वप्पाए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिप, तच्चाए वप्पाए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिप, तं सेयं खलु देवाणु-प्पिया ! अग्हे इमस्स वंम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पं मिंदित्तप, अवियाइं उत्तमं महत्थं महत्थं ओरालं वइररयणं अस्सादे-स्सामो' । तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए, सुहकामए, पत्थकामए, आणुंप्पिए, निस्सेसिए, हिय-सुह-निस्सेस-कामए ते वणिए एवं वयासी-‘एवं खलु देवाणुप्पिया ! अग्हे इमस्स वंम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिन्नाए ओराले उदगरयणे जाव-तच्चाए वप्पाए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिप, तं होउ अलाहि पज्जत्तं, एसा चउत्थी वप्पा मा मिज्जउ-चउत्थी णं वप्पा सउवसग्गा यावि होत्या' । तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकाम० जाव-हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स, जाव-परुवेमाणस्स एयमट्टं नो सहंति, जाव-नो रोयंति, एयमट्टं असइहमाणा जाव-अरोएमाणा तस्स वंम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पं मिंदंति । ते णं तत्थ उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायमहा-कायं मसिमूसाकालगयं नयणविसरोसपुत्तं अंजणपुंजनिगरप्पणासं रत्तच्छं जमलजुयलचंचलचलंतजीहं धरणिंतलवेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडुलकक्खडविकडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरवम्ममाणधमधमंतवोसं अणागलियचंडतिवरोसं समुहिं तुरियं चवलं धमंतं दिट्ठीविसं सप्पं संघट्टंति । तए णं से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिपाहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव-मिसिमि-सेमाणे सणियं २ उट्टेति, उट्टेत्ता सरसरसरस्स वंम्मीयस्स सिह्हरतलं डुरुहेइ, सि० २ डुरुहेत्ता आइच्चं णिज्जाति, आ० २ णिज्जाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति । तए णं ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेणं सप्पेणं अणि-मिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव समंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि होत्या । तत्थ णं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए, जाव-हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं अणुकंपयाए देवयाए समंडमत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं साहिए' । एवामेव आणंदा ! तव वि धम्मपरिणं धम्मोचएस्सएणं समणेणं नायपुत्तेणं

कर्युं. ते माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे हवे आ वल्मिकनुं व्रीजुं शिखर पण फोडवुं श्रेयस्कार छे, के जेथी अहिं उदार एवुं मणिरत्न प्राप्त करीए.' ल्यार पछी ते वणिकोए एक वीजानी पासेथी आ कथन सामळीने ते वल्मिकनुं व्रीजुं शिखर पण मेवुं. तेथी तेओए त्यां विमल, निर्मळ, अत्यन्त गोळ, निष्कल-त्रासादिदोपरहित, महाअर्थ-महाप्रयोजनवाळुं, महामूल्यवाळुं अने उदार एवुं मणिरत्न प्राप्त कर्युं. मणि-रत्नने प्राप्त करवाथी ह्यट्ट अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पात्रो भयां, पात्रो भरीने वाहनो भयां, वाहनो भरीने तेओए चोथी वार पण एक वीजाने कहु के 'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर आ वल्मिकना प्रथम शिखरने मेदवाथी पुष्कळ अने उत्तम पाणी प्राप्त कर्युं, वीजुं शिखर मेदवाथी पुष्कळ सुवर्ण प्राप्त कर्युं, व्रीजुं शिखर मेदवाथी उदार मणिरत्न प्राप्त कर्युं, तो हे देवानुप्रियो ! आपणे हवे आ वल्मिकना चोथा शिखरने पण मेदवुं योग्य छे, के जेथी आपणे उत्तम, महामूल्य, महाप्रयोजनवाळुं, महापुरुषने योग्य अने उदार एवुं वज्ररत्न प्राप्त करीए.' ल्यार पछी ते वणिकोना हितनी इच्छावाळो, सुखनी इच्छावाळो, पय्यनी इच्छावाळो, अनुकम्पावाळो, निश्रेयस-कल्याणनी इच्छा-वाळो, तेमज हित, सुख अने निःश्रेयसनी इच्छावाळो एक वणिक हतो, तेणे ते वणिकोने ए प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रियो ! आपणे आ वल्मिकना प्रथम शिखरने मेदवाथी उदार अने उत्तम जल प्राप्त कर्युं, यावत्-व्रीजु शिखर मेदवाथी उदार मणिरत्न प्राप्त कर्युं, एटलुं वणुं छे, हवे आपणे आ चोथु शिखर मेदवुं योग्य नथी, कारण के चोथु शिखर कदाच आपणने उपद्रव करनार थाय'. ल्यारे ते वणिकोए हितनी इच्छावाळा, सुखनी इच्छावाळा यावत्-हित, सुख अने निःश्रेयसनी इच्छावाळा तथा उपर प्रमाणे कहेता, यावत्-प्ररूपणा करता एवा ते वणिकना कथनमा श्रद्धा न करी, यावत्-रुचि न करी, तेना कथननी श्रद्धा नहि करता, यावत्-रुचि नहि करता ते वणिकोए-ते वल्मिकना चोथा शिखरने पण मेवुं. तेथी तेओए त्या उग्रविपवाळो, प्रचंडविपवाळो, घोरविपवाळो, महाविपवाळो, अतिकायवाळो, मोटो शरीरवाळो अने मपी तथा मूषाना समान काळावर्णवाळो, दृष्टिना विप अने रोपवडे पूर्ण, मपीना दगलाना जेवो कान्तिवाळो, लाल आं-खवाळो, जेने चपळ अने साथे चालता वे जीमो छे एवो, पृथिवीतलमा वेणिसमान, उत्कट स्पष्ट वक्र जटिल-केशवाळीयुक्त अने विस्तीर्ण फणानो आटोप करवामा दक्ष, आकर-खाणने विपे अग्निथी तपावेला लोढाना जेवो धमधमायमान शब्द छे जेनो एवो, नहि जाणी शकाय तेवो उग्र अने तीव्र रोपवाळो, श्वानना मुखपेठे त्वरित अने चपळ शब्द करतो एवो दृष्टिविप सर्प स्पर्शो. ल्यार वाद ते वणिकोए ते दृष्टिविप सर्पनो स्पर्श कर्यो एटले अत्यन्त गुस्ते थयेला, अने यावत्-क्रोधथी वळना तेणे धीमे धीमे उठी सरसराट करता वल्मिकना शिखर उपर चढीने सूर्यने जोडने ते वणिकोने अनिमिप दृष्टिवडे चोतरफ जोया. ल्यार पछी ते दृष्टिविप सर्पे चोतरफ जोई ते

ओराले परियाए आसाइए, ओराला. किञ्चित्-वन्न-सद्-सिलोगा सदेवमणुयासुरे. लोणं पुर्वति, गुर्वति, थुर्वति इति खलु 'समणे भगवं महावीरे' इति २ । तं जदि मे से अज्ज किञ्चि चि वदति तो णं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरारसिं करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया । तुमं च णं आणंदा ! सारक्खामि, संगोवामि, जहा वा से वणिए तेसिं वणियाणं हिय-कामए, जाव-निस्सेसकामए अणुकंपयाए देवयाए समंडं जाव-साहिए । तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवपसगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि । तए णं से आणंदे. थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं बुत्ते समाणे भीए, जाव-संजायमए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडि-निक्खमिच्चा सिग्घं तुरियं सावत्थि नगरिं मज्झंमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिच्चा जेणेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगवं महा-वीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणे २-गच्छिच्चा समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमं-सुति, वंदिच्चा नमंसिच्चा एवं वयासी-‘एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणंगंसि तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीयं जाव-शडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए जाव-वीयीवयामि, तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हालाह-लाए जाव-पासिच्चा एवं वयासी-‘एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि’ । तए णं अहं गोसालेणं मंख-लिपुत्तेणं एवं बुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी-एवं खलु आणंदा ! इओ चिरातीयाए अद्दाए केइ उच्चावया वणियां एवं तं चेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव-‘नियगनगरं साहिए’ । तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! धम्मायरियस्स धम्मोवपसगस्स जाव-परिकहेहि ।

११. [प्र०] तं पभू णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरारसिं करेत्तए, विसए णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स जाव-करेत्तए, समत्थे णं भंते ! गोसाले जाव-करेत्तए ? [उ०] पभू णं आणंदा ! गोसाले मंख-लिपुत्ते तवेणं जाव-करेत्तए । विसए णं आणंदा ! गोसालं जाव-करेत्तए । समत्थे णं आणंदा ! गोसाले जाव-करेत्तए,

वणिकोने पात्र विगरे उपकरणसहित एक प्रहारवडे कूटाघात-पापाणमययन्नना आघातनी पेटे जल्दी भस्मराशिरूप कर्या. ते वणिकोमा जे वणिक ते वणिकोना हितनी इच्छावाळो, यावत्-हित, सुख अने नि.श्रेयस-कल्याणनी इच्छावाळो हतो तेना उपर दयाथी ते देवे पात्र वगरे उपकरण सहित तेने पोताना नगरे मूक्यो’ . ए प्रमाणे हे आनन्द ! तारा पण धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्रे उदार पर्याय-अवस्था प्राप्त कर्यो छे, अने तेनी देवो, मनुष्यो अने असुरोसहित आ जीवलोकमा ‘श्रमण भगवान् महावीर, श्रमण भगवान् महा-वीर’-एवी उदार कीर्ति, वर्ण, शब्द अने श्लोक-यश व्याप्त यया छे, व्याकुल थया छे, अने स्तवाया छे. तो जो मने ते आज कंइ पण कहेशे तो मारा तपना तेजवडे एक घाए कूटाघात-पापाणमययन्नना आघातनी पेटे जेम सपे वणिकोने वाळ्या तेम वाळीने भस्म करीश. हे आनन्द ! जेम ते वणिकोतुं हित इच्छनार यावत्-निःश्रेयस-कल्याण इच्छनार ते वणिकने देवताए अनुकपाथी पात्रो वगरे उपकरण सहित पोताने नगरे मूक्यो तेम हुं तारु सरक्षण अने संगोपन करीश, ते माटे हे आनन्द ! तुं जा, अने तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्रने आ वात कहे. सार वाद मंखलिपुत्र गोशालाए ते आनन्द स्वविरने आ प्रमाणे कहु एटले ते भय पाम्या, अने यावत्-भयभीत थयेला ते मंखलिपुत्र गोशालानी पासेथी अने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणथी पाछा वळीने शीघ्र अने त्वरित श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमाथी नीकळीने ज्या कोष्टक चैस हतुं अने ज्या श्रमण भगवान् महावीर हता, त्या आव्या. त्या आवीने श्रमण भगवान् महा-वीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी वंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या-‘हे भगवन् ! खरेखर ए प्रमाणे हु छट्ठ खमणना पारणाने विपे आपनी अनुज्ञाथी श्रावस्ती नगरीमा उच्च, नीच अने मध्यमकुळमा गोचरीए जता हालाहला कुंभारणना घर पासेथी यावत्-जतो हतो, त्यां मंखलिपुत्र गोशालाए मने हालाहला कुंभारणना घरथी थोडे दूर जता यावत्-जोइने ए प्रमाणे कहुं-‘हे आनन्द ! अहीं आव, अने मारु एक दृष्टान्त साभळ’ सार पळी मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कहुं एटले ज्यां हालाहला कुंभारणतुं कुंभकारापण हतु, अने ज्या मंख-लिपुत्र गोशालक हतो, त्या हुं आव्यो, सार मंखलिपुत्र गोशालके मने आ प्रमाणे कहुं-‘हे आनन्द ! खरेखर आजथी घणा काल पूर्वे अनेक प्रकारना केटलाएक वणिको-इसादि पूर्वोक्त सर्व कहेवुं, यावत्-देवताए पोताना नगरे मूक्यो.’ ते माटे हे आनन्द ! तुं जा अने तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशकने यात्रत्-कहे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! मंखलिपुत्र गोशालक पोताना तपना तेजवडे एक घाए कूटाघातनी पेटे भस्मराशि करवाने प्रभु-समर्थ छे, हे भगवन् ! मंखलिपुत्र गोशालकनो यावत्-तेम करवानो \*विषय छे, हे भगवन् ! गोशालक यावत्-तेम करवाने समर्थ छे ? [उ०] हे आनन्द ! मंखलिपुत्र गोशालक तपना तेजवडे यावत्-तेम करवाने प्रभु-समर्थ छे, हे आनन्द ! गोशालक मंखलिपुत्रनो तेम करवानो यावद-

गोचरीथी पाछा फरता आनन्दतु गोशालके आपेली धमकीतु भगवतने निवेदन.

गोशालक तपोजन्म तेजोलेइया वडे वाळी भस्म करवा समर्थ छे ते संबन्धे प्रश्नोत्तर.

११ \* प्रभुत्व वे प्रकारे छे-विषयमात्रनी अपेक्षाए अने करवानी अपेक्षाए, माटे पुन प्रश्न करे छे के विषयनी अपेक्षाए ममर्थ छे के करवानो अपेक्षाए समर्थ छे ?

नो चेव णं अरहंते भगवंते, परियावणियं पुण करेज्जा । जावतिप णं आणंदा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवतेप, एत्तो अणंत-  
गुणविसिट्ठयराए चेव तवतेप अणगाराणं भगवंताणं, संतिखमा पुण अणगारा भगवंतो । जावइए णं आणंदा ! अणगाराणं भग-  
वंताणं तवतेप एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयराए चेव तवतेप थेराणं भगवंताणं, संतिखमा पुण थेरा भगवंतो । जावतिप णं आणंदा !  
थेराणं भगवंताणं तवतेप एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयतराए चेव तवतेप अरहंताणं भगवंताणं, संतिखमा पुण अरहंता भगवंतो ।  
तं पभू णं आणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेपणं जाव-करेत्तए, विसए णं आणंदा ! जाव-करेत्तए, समत्थे णं आणंदा !  
जाव करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, परियावणियं पुण करेज्जा ।

१२. तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्टं परिकहेहि-‘भा णं अज्जो ! तुब्भं केइ गोसालं  
मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले  
णं मंखलिपुत्ते समणेहि निग्गंथेहि मिच्छं विपडिविधे । तए णं से आणंदे थेरे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाप्पे  
समणं भगवं महावीर वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादिसमणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, तेणे २-गच्छित्ता  
गोयमादिसमणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी-‘एवं खलु अज्जो ! छट्ठकम्मणपारणंगंसि समणेणं भगवया महा-  
वीरेणं अम्मणुत्ताए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय० तं चेव सधं जाव-नायपुत्तस्स एयमट्टं परिकहेहि, तं मा णं अज्जो !  
तुब्भं केइ गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, जाव-मिच्छं विपडिविधे ।

१३. जावं च णं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्टं परिकहेइ, तावं च णं से गोसाले मंखलिपुत्ते  
हालाहलाए कुंमकारीए कुंमकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिच्चा आजीवियसंवसंपरिखुडे महया अमरिसं वदमाणे  
सिग्घं तुरियं जाव-सावत्थि नगरिं मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे  
तेणेव उवागच्छइ, ते २-गच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते टिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी-

विपय छे, हे आनन्द ! तेम करवाने यावत्-गोशालक समर्थ छे, परन्तु अरिहंत भगवंतने वाळी भस्म करवा समर्थ नयी, तो पण तेमने  
परिताप-दुःख उत्पन्न करवा समर्थ छे. हे आनन्द ! मंखलिपुत्र गोशालकलुं जेटलुं तपनुं तेज छे, तेथी अनगार भगवंतनुं अनन्तगुण विधिष्ट  
तपतेज छे, कारण के अनगार भगवत क्षमा-श्रोवणो निग्रह-करवामा समर्थ छे. हे आनन्द ! अनगार भगवंतनुं जेटलुं तपोवळ छे, तेथी  
अनन्त गुण विधिष्ट तपोवळ \*स्वविर भगवंतनुं छे; केमके स्वविर भगवंतो क्षमा करवामा समर्थ होय छे. हे आनन्द ! स्वविर भगवंतनुं जेटलुं  
तपोवळ होय छे, तेथी अनन्तगुण विधिष्ट तपोवळ अरिहंत भगवंतनुं होय छे, कारण के अरिहंत भगवंतो क्षमा करवामा समर्थ होय छे.  
हे आनन्द ! मंखलिपुत्र गोशालक पोताना तप-तेजवडे यावत्-भस्मराशि करवाने समर्थ छे, हे आनन्द ! यावत्-तेम करवानो तेनो विपय  
(शक्ति) छे, हे आनन्द ! तेम करवाने यावत्-समर्थ छे. परन्तु अरिहंत भगवंतने तेम करवाने समर्थ नयी, मात्र तेमने दुःख उत्पन्न कर-  
वाने शक्तिमान् छे.

१२. हे आनन्द ! ते माटे तुं जा, अने गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने आ वात कहे के-‘हे आर्यो ! तमे कोई मंखलिपुत्र गो-  
शालकनो साथे धर्मसंबन्धी प्रतिकोदना-तेना मतथी प्रतिकूल वचन न कहेओ, धर्मसंबन्धी प्रतिसारणा-तेना मतथी प्रतिकूलपणे अर्थनुं  
स्मरण न करावओ, अने धर्मसंबन्धी प्रत्युपचार-तिरस्कार वडे तेनो तिरस्कार न करओ. मंखलिपुत्र गोशालके श्रमण निर्ग्रन्थो साथे मि-  
थ्यात्व-भ्लेच्छपणुं अथवा अनार्यपणुं विज्ञेपतः आदर्युं छे’. लार पछी श्रमण भगवान् महावीरे ए प्रमाणे कहुं एटले ते आनन्द स्वविर  
श्रमण भगवंत महावीरने वादी अने नमी ज्यां गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थो छे ला आर्वाने तेणे गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलाव्या, बोलावोने  
आ प्रमाणे कहुं के-‘हे आर्यो ! छट्ठ क्षपणना पारणाने दिवसे श्रमण भगवंत महावीरे अनुज्जा आपी एटले हुं श्रावस्ती नगरीमा उच्च, नीच  
अने मध्यमकुलमां गोचरीए जतो हतो-इत्यादि सर्व यावत्-ज्ञातपुत्रने आ अर्थने कहे जे-‘सासुवां कहेवुं, ते माटे हे आर्यो ! तमे कोई  
मंखलिपुत्र गोशालकने धर्मसंबन्धी तेना मतने प्रतिकूल वचन न कहेओ, यावत्-तेणे निर्ग्रन्थोनी साथे विज्ञेपतः अनार्यपणुं आदर्युं छे.

१३. जेटलामा आनन्द स्वविर गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने आ वात कहे छे तेटलामां हालाहला कुंमारणा कुंमकारापण-हाटथी  
नीकळी आजीविकसंवसहित वणा अमर्षने धारण करतो मंखलिपुत्र गोशालक शीघ्र अने त्वरित गतिए यावत्-श्रावस्ती नगरीना  
मध्यभागमांथी नीकळी ज्यां कोष्टक चैत्य छे अने ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे ला आब्यो. लां आर्वाने तेणे श्रमण भगवंत महावीरथी  
योडे दूर उभा रही श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कहुं-‘हे आयुप्मान् काश्यपगोत्रीय ! मने ए प्रमाणे सारुं कहेओ छे, हे आयुप्मान्  
काश्यप ! तमे मने एम ठीक कहेओ छे के ‘मंखलिपुत्र गोशालक मारो धर्मसंबन्धी शिष्य छे’ २. जे मंखलिपुत्र गोशालक तमारो धर्म

\* ११ स्वविर-वृद्ध तेना श्रण प्रकार छे १ वय स्वविर-उमरमां वृद्ध, २ श्रुतस्वविर-शास्त्रज्ञानमा वषेला, अने ३ पर्यायस्वविर-जेनो वीक्षापर्याय व्रीध  
वर्षथी अधिक होय ते.

‘सुदृ णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी, साहू णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी-गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मं-तेवासी, गोसाले’ २, जे णं से मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी से णं सुक्के सुक्कामिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किञ्चा अन्न-यरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहन्नं उदाइनामं कुंडियायणीए, अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विण्णजहामि, अ० २ विण्ण-जहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, गो० २ अणुप्पविसित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि । जे वि आइं आउसो कासवा ! अहं समयंसि केइ सिज्झिसु वा सिज्झंति वा सिज्झिस्संति वा सव्वे ते चउरासीति महाकप्पसयस-हस्साइं, सत्त दिव्वे, सत्त संजूहे, सत्त सन्निगन्ने, सत्त पउट्टपरिहारे, पंच कम्मणि सयसहस्साइं सट्ठि च सहस्साइं छच्च सए तित्ति य कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झंति, वुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वाइंति, सव्वदुक्खणमंतं करेसु वा करेति वा करिस्संति वा । से जहा वा गंगा महानदी जओ पवूढा, जहिं वा पज्जुवत्थिया, एस णं अद्धा पंचजोयणसयाइं आयामेणं, अद्ध-ज्जोयणं विक्खंमेणं, पंच धणुसयाइं उव्वेहेणं, एणं गंगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा, सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा, सत्त सादीणगंगाओ सा एगा मच्चुगंगा, सत्त मच्चुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा, सत्त लोहियगंगाओ, सा एगा आवंतीगंगा, सत्त आवंतीगंगाओ सा एगा परमावती, एवामेव सपुद्धावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तर सहस्सा छच्च गुणपन्नं गंगासया भवंतीति मक्खाया । तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तंजहा-सुहुमवोदिकलेवरे चैव, वायरवोदिकलेवरे चैव । तत्थ णं जे से सुहुमवोदिकलेवरे से ठप्पे । तत्थ णं जे से वायरवोदिकलेवरे तओ णं वाससए २ गए २ एगमेणं गंगावालुयं अव-हाय जावतिपणं कालेणं से कोट्टे खीणे, गीरए, निह्वेवे, निट्टिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे । एणं सरप्पमाणेणं तिन्नि सरस-यसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीइ महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे । अणंताओ संजूहाओ जीवे चयं चइत्ता उवरिह्वे माणसे संजूहे देवे उववज्जति १ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउ-क्खएणं, भवक्खएणं, टिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता पढमे सन्निगन्ने जीवे पच्चायाति १ । से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्ठित्ता मज्झिह्वे माणसे संजूहे देवे उववज्जइ २ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव-विहरित्ता ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं

संवन्धी शिष्य हतो ते शुक्ल-पवित्र अने शुक्लमिजातिवाळो-पवित्रपरिणामवाळो\* थईने मरणसमये काल करी कोइपण देवलोकने विपे देवपणे उत्पन्न थयो छे, हुं कौडिन्यायनगोत्रीय उदायी नामे छुं, अने में गौतम पुत्र अर्जुनना शरीरनो त्याग करी मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरमा प्रवेश करीने आ सातमो प्रवृत्तपरिहार-शरीरान्तर प्रवेश कर्यो छे. वळी हे आयुष्मन् काश्यप ! जे कोई अमारा सिद्धान्तने अनुसारे मोक्षे गयेला छे, जाय छे अने जशे ते† सर्वे चोराशी लाख महाकल्प (कालविशेष), सात देवभवो, सात संयूय निकायो, सात सज्ञीगर्भ-मनुष्यगर्भवास, सात प्रवृत्तपरिहार-शरीरान्तरप्रवेश अने पाच लाख, साठ हजार, छसो त्रण कर्मना भेदोनो अनुक्रमे क्षय कर्या पछी सिद्ध थाय छे, बुद्ध थाय छे, मूकाय छे, निर्वाण पामे छे, अने सर्व दुःखनो अन्त कर्यो छे, करे छे अने करशे. जेम गंगा महानदी ज्याथी नीकळे छे अने ज्या समाप्त थाय छे ते गंगानो अद्धा-मार्ग आयाम-लंवाइवडे पाचसो योजन छे, विक्कंभ-विस्तार अर्ध योजन छे, अने उंडाइमां पांचसो धनुष छे-ए रीते गंगाप्रमाणे सात गंगाओ मळीने एक महागंगा थाय छे, सात महागंगाओ मळीने एक सादीन गंगा थाय छे, सात सादीन गंगाओ मळीने एक मृत्युगंगा थाय छे, सात मृत्युगंगा मळीने एक लोहितगंगा थाय छे, सात लोहितगंगाओ मळीने एक अवंतीगंगा थाय छे, सात अवंती गंगाओ मळीने एक परमावती गंगा थाय छे. ए प्रमाणे पूर्वापर मळीने एक लाख, सत्तर हजार, छसो अने ओगण पचास गंगा नदीओ थाय छे-एम कहुं छे. ते गंगानदीनी वालुकाकणनो वे प्रकारे उद्धार कछो छे, ते आ प्रमाणे-१ सूक्ष्मवोदिकलेवररूप अने २ वादरवोदिकलेवररूप. [ जेमा वालुकाकणना सूक्ष्मवोदि-सूक्ष्मआकारवाळा कलेवरो-असंख्यात खंडो कल्पेला छे ते सूक्ष्मवोदिकलेवर-रूप उद्धार कहेवाय छे, अने जेमा वादरवोदि-वादरआकारवाळा कलेवरो-वालुकाकणो छे ते वादरवोदिकलेवररूप उद्धार कहेवाय छे. ] तेमां सूक्ष्म वोदिकलेवररूप उद्धार छे ते स्थायी राखवा योग्य छे. [ अर्थात् निरूपयोगी होवाथी तेना विचारनी आवश्यकता नथी. ] तेमा जे वादरवोदिकलेवररूप उद्धार छे तेमांथी सो सो वपे एक एक वालुकाना कणनो अपहार करीए अने जेटल काळे गंगाना समुदायरूप ते कोठो क्षीण-खाली थाय, नीरज-वालुकारहित थाय, निर्लेप थाय, अने निष्ठित-समाप्त थाय ल्यारे सरप्रमाण काल कहेवाय छे. एवा प्रकारना त्रण लाख सरप्रमाण काळवडे एक महाकल्प थाय छे, चोराशी लाख महाकल्पे एक महामानस थाय छे. अनन्त सयूथ-अनन्तजीवना समुदायरूप निकायथी जीव च्यवी संयूथ-देवभवने विपे उपरना मानस-सरप्रमाण आयुपवडे उत्पन्न थाय छे १, अने ते त्या दीव्य अने भोग्य एवा भोगेने भोगवतो विहरे छे. हवे ते देवलोकथी आयुपनो क्षय थवाथी, भवना क्षयथी अने स्थितिना क्षयथी तुरतज च्यवीने प्रथम संज्ञी गर्भज पंचेन्द्रिय मनुष्यपणे उत्पन्न थाय छे १. त्यारवाद ते त्याथी च्यवीने तुरतज मध्यम मानस-सरप्रमाण आयुपवडे संयूथ-देवनि-

गोशालकर्तुं पोतानुं  
स्वरूप निवेदन  
अने ते द्वारा  
स्वमतप्रदर्शन-

चोराशी लाख  
महाकल्पनु प्रमाण.

सात दिव्यभवान्तरित  
सात मनुष्य भवो.

१३ \* जेम लेइया-परिणामना कृष्णादि छ प्रकार छे, तेम तेवा परिणामवाळा धात्माना पण कृष्ण, कृष्णामिजातीय, नील, नीलमिजातीय, यावत्-शुक्ल, शुक्लमिजातीय-ए छ प्रकारो होय एम लागे छे.

† अहिं चूर्णिकार कहे छे के ‘गोशालकनो सिद्धान्त संदिग्ध होवाथी ते सबन्धे अमे काई लखता नथी.’ पण अहिं टीकाकारे मात्र शब्दार्थ कर्यो छे.



૩ જાવ-ચરૂતા, દોષે સન્નિગમ્ને જીવે પચાયાતિ ૨ । સે ણં તથોહિતો ંણંતરં ઉઘટ્ટિત્તા દેદ્વિહ્લે માણસે સંજૂદે દેવે ઉચવજ્ઞદ્ ૩ । સે ણં તત્થ દિઘ્વાદં જાવ-ચરૂતા તથે સન્નિગમ્ને જીવે પચાયાતિ ૩ । સે ણં તથોહિતો જાવ-ઉઘટ્ટિત્તા ઉચરિહ્લે માણુસુ-ત્તરે સંજૂદે દેવે ઉચવજ્ઞિહિતિ ૪ । સે ણં તત્થ દિઘ્વાદં મોગ૦ જાવ-ચરૂતા ચરૂત્યે સન્નિગમ્ને જીવે પચાયાતિ ૪ । સે ણં તથોહિતો ંણંતરં ઉઘટ્ટિત્તા મજ્જિહ્લે માણુસુત્તરે સંજૂદે દેવે ઉચવજ્ઞતિ ૫ । સે ણં તત્થ દિઘ્વાદં મોગ૦ જાવ-ચરૂતા પંચમે સન્નિગમ્ને જીવે પચાયાતિ ૫ । સે ણં તથોહિતો ંણંતરં ઉઘટ્ટિત્તા હિદ્વિહ્લે માણુસુત્તરે સંજૂદે દેવે ઉચવજ્ઞતિ ૬ । સે ણં તત્થ દિઘ્વાદં મોગ૦ જાવ-ચરૂતા છટ્ટે સન્નિગમ્ને જીવે પચાયાતિ ૬ । સે ણં તથોહિતો ંણંતરં ઉઘટ્ટિત્તા વંમલોને નામં સે કવ્યે પચ્ચત્તે, પાર્શ્વપડી-ણાયતે ઉદીણદાહિણવિચ્છિન્ને, જહા ઠાણપદે જાવ-પચ્ચ વડેસગા પચ્ચત્તા, તંજહા-૧અસોગવડેસપ, જાવ-પટિરૂવા । સે ણં તત્થ દેવે ઉચવજ્ઞદ્ ૭ । સે ણં તત્થ દસ સાગરોવમાદં દિઘ્વાદં મોગ૦ જાવ-ચરૂતા સત્તમે સન્નિગમ્ને જીવે પચાયાતિ ૭ । સે ણં તત્થ નવવહં માસાણં વહુપલ્લિપુત્તાણં અદ્દટ્ટમાણ૦ જાવ-વીતિકંતાણં સુરુમાલગમદ્દલ્લ મિડકુંડલકુંચિયકેસણ મટ્ટગંડતલકપ્પ-પીઠપ દેવકુમારસપ્પમપ દારપ્પ પયાતિ । સે ણં અહં કાસવા ! તપ્પ ણં અહં આડસો કાસવા ! કોમારિયપચ્ચજાણ કોમારણ્ણ, વંમચેરવાસેણં અવિદ્ધકપ્પણ ચેવ સંપાણં પટિલભામિ સં ૦ ૨-લભિત્તા શ્મે સત્ત પટ્ટપરિહારે પરિહારામિ, તંજહા-૧ણે-જસ્સ, ૨ મહ્ધરામસ્સ, ૩ મંડિયસ્સ, ૪ રોહસ્સ, ૫ મારદ્વાસ્સ, ૬ અજ્જુણગસ્સ ગોયમપુત્તસ્સ, ૭ ગોસાલસ્સ મંચલિપુ-ત્તસ્સ । તત્થ ણં જે સે પદ્દમે પટ્ટપરિહારે સે ણં રાયગિહ્લસ્સ નગરસ્સ વહિયા મંડિકુલ્લિસિ ચેદ્દયંસિ ઉદાહસ્સ કુંડિયાય-ણસ્સ સરીરં વિપ્પજહામિ, ઉદા ૦ ૨-જહિત્તા ણેજગસ્સ સરીરં અણુપ્પવિસામિ, ણે ૦ ૨-પ્પવિસિત્તા વાવીસં વાસાદં પદ્દમં પટ્ટપરિહારં પરિહારામિ । તત્થ ણં જે સે દોષે પટ્ટપરિહારે સે ણં ઉદ્દંડપુરસ્સ નગરસ્સ વહિયા ચંદોયરણ્ણમિ ચેદ્દયંસિ ણેજ-ગસ્સ સરીરં વિપ્પજહામિ, ણે ૦ ૨-જહિત્તા મહ્ધરામસ્સ સરીરં અણુપ્પવિસામિ, મહ્ધ ૦ ૨-વિસિત્તા ઇકવીસં વાસાદં દોષં પટ્ટપરિહારં પરિહારામિ । તત્થ ણં જે સે તથે પટ્ટપરિહારે સે ણં ચંપાણ નગરીણ વહિયા અંગમંદિરંમિ ચેદ્દયંસિ મહ્ધ-રામસ્સ સરીરં વિપ્પજહામિ, મહ્ધ ૦ ૨-જહિત્તા મંડિયસ્સ સરીરં અણુપ્પવિસામિ, મંડિ ૦ ૨ પ્પવિસિત્તા વીસં વાસાદં તથં પટ્ટપરિહારં પરિહારામિ । તત્થ ણં જે સે ચરૂત્યે પટ્ટપરિહારે સે ણં વાણારસીણ નગરીણ વહિયા કામમહાવર્ણમિ ચેદ્દયંસિ મંડિયસ્સ સરીરં વિપ્પજહામિ, મંડિ ૦ ૨-જહિત્તા રોહસ્સ સરીરં અણુપ્પવિસામિ, રોહ ૦ ૨-પ્પવિસિત્તા ઇકૂણવીસં વાસાદ

કાપવિપે ઉત્પન્ન થાય છે. ૨. ત્યાં દિવ્ય મોગવવા યોગ્ય મોગોને મોગવી યાવત્-વિહરી તે દેવલોકથી આયુપના ક્ષયથી ૩ યાવત્-ચ્યવીને વીજા સ્ત્રીગર્ભ-ગર્ભજ મનુષ્યને વિપે જન્મે છે. ૨. ત્યાર પછી ત્યાંથી નીકળી તુરત હેઠેના માનસ પ્રમાણ આયુપ વડે સંયૂય-દેવનિકાયને વિપે ઉપજે છે. ૩. ત્યાં દિવ્ય મોગોને મોગવી ત્યાંથી ચ્યવી ત્રીજા સ્ત્રીગર્ભ-ગર્ભજ મનુષ્યને વિપે જન્મે છે. ૩. ત્યાંથી યાવત્-નીકળી ઉપ-રના માનસોત્તર-મહામાનસ આયુપવડે સંયૂય-દેવનિકાયને વિપે ઉપજે છે. ૪. ત્યાં દિવ્ય મોગોને મોગવી યાવત્-ત્યાંથી ચ્યવી ચોથા સ્ત્રી-ગર્ભ-ગર્ભજમનુષ્યને વિપે ઉપજે છે. ૪. ત્યાંથી ચ્યવીને તુરત મધ્યમ માનસોત્તર આયુપવડે સંયૂય-દેવનિકાયમા ઉપજે છે. ૬. ત્યાં દિવ્ય મોગો મોગવી યાવત્-ત્યાંથી ચ્યવી પાચમા સ્ત્રીગર્ભ-ગર્ભજ મનુષ્યમાં ઉત્પન્ન થાય છે. ૫. ત્યાંથી ચ્યવીને તુરત હેઠેના માનસોત્તર આયુપસહિત સંયૂય-દેવનિકાયમા ઉપજે છે. ૬. ત્યાં દિવ્ય મોગો મોગવી યાવત્-ચ્યવી છટ્ટા સ્ત્રી ગર્ભજ મનુષ્યોમા ઉપજે છે. ૬. ત્યાંથી નીકળી તુરત ત્રણલોક નામે કમ્પ-દેવલોક કહ્યો છે, તે પૂર્વ તથા પશ્ચિમ લાગે છે, અને ઉત્તર તથા દક્ષિણ વિસ્તારવાળો છે, જેમ પ્રજાપના સૂત્રના \*સ્થાનપદને વિપે કહ્યું છે તેમ અહિ જાણવું, યાવત્-તેમા પાચ અવતંતક વિમાનો કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે-૧ અશોકાવતંતક, યાવત્-પ્રતિરૂપ-સુન્દર છે; તે દેવલોકમા ઉત્પન્ન થાય છે. ૭. ત્યાં દશ સાગરોમ સુધી દિવ્ય મોગો મોગવીને યાવત્-ત્યાંથી ચ્યવીને સાતમા સ્ત્રીગર્ભ-ગર્ભજ મનુષ્યમા ઉપજે છે. ૭. ત્યાં નવ માસ વરોવર પૂર્ણ થયા પછી અને સાડાસાત દિવસ વ્યતીત થયા વાટ સુકુમાલ, મદ્ર, મૃદુ અને દર્ભના કુંડલની પેટે સંકુચિત કેશવાળો, કર્ણના આમૂષ્ણવડે જેના ગાલને સ્પર્શ થયો છે એવો, દેવ કુમારસમાન કાન્તિ-વાળો વાલ્ક જન્મ્યો; હે કાશ્યપ ! તે હું છું. ત્યાર પછી હે આયુષ્મન્ કાશ્યપ ! કુમારાવસ્થામા પ્રત્રવ્યાવડે, કુમારાવસ્થામા ત્રણચર્ય-વડે અવિદ્ધકર્ણ-ચ્યુત્વન્ન વુદ્ધિવાળા એવા મને પ્રત્રવ્યા ગ્રહણ કરવાની વુદ્ધિ યઈ અને સાત પ્રવૃત્ત પરિહાર-શરીરાન્તરને વિપે સંચાર કર્યો, તે આ પ્રમાણે-૧ ણેયક, ૨ મહ્ધરામ, ૩ મંડિક, ૪ રોહ, ૫ મારદ્વાજ, ૬ ગૌતમપુત્ર અર્જુન અને ૭ મંચલિપુત્ર ગોશાલકના શરીરમાં પ્રવેશ કર્યો. તેમા જે પ્રથમ પ્રવૃત્તપરિહાર-શરીરાન્તર પ્રવેશમા રાજગૃહનગરની વહાર મંડિકુલ્લિનામે ચૈલ્લને વિપે કુંડિયાયન ગોત્રીય ઉદા-યનના શરીરનો લાગ કરી ણેયકના શરીરમાં પ્રવેશ કર્યો. પ્રવેશ કરી વાવીજ વર્ષ સુધી પ્રથમ શરીરાન્તરમા પરાવર્તન કર્યું. ત્રીજા શરીરાન્તરપ્રવેશમાં હંડંડપુર નગરની વહાર ચન્દ્રાવતરણ ચૈલ્લને વિપે ણેયકના શરીરનો લાગ કરી મહ્ધરામના શરીરમા પ્રવેશ કર્યો, અને પ્રવેશ કરીને ઇકવીજ વરસ સુધી ત્રીજા શરીરાન્તરમા પરાવર્તન કર્યું. ત્રીજા શરીરાન્તરપ્રવેશમા ચંપાનગરીની વહાર અગમંદિરનામે ચૈલ્લને વિપે મહ્ધરામના શરીરનો લાગ કરી મંડિકના શરીરમા પ્રવેશ કર્યો, અને ત્યાં વીશ વર્ષ સુધી ત્રીજું શરીરાન્તર પરાવર્તન કર્યું. તેમા જે ચોથું

चैत्यं पट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से पंचमे पट्टपरिहारे से णं आलभियार्यं नगरीय वहिया पत्तकालंगयंसि चैत्यंसि रोहस्स सरीरगं विप्पजहामि, रोह० २—जहिच्चा भारद्वाइस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, भा० २ प्पविसित्ता अट्टारस्स वासाइं पंचमं पट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से छट्ठे पट्टपरिहारे से णं वेसालीय नगरीय वहिया कौडियायणंसि चैत्यंसि भारद्वाइयस्स सरीरं विप्पजहामि, भा० २—जहिच्चा अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अ० २—प्पविसित्ता सत्तरस्स वासाइं छट्ठं पट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से सत्तमे पट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीय नगरीय हाल्लाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणंसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, अज्जुण० २ विप्पजहिच्चा । गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं 'अलं थिरं धुवं धारणिज्जं सीयसहं उण्हसहं खुहासहं विविहदंसमसगपरीसहोवसगसहं थिरसंघयणं' ति कट्टु तं अणुप्पविसामि, तं० २—प्पवित्ता सोलस वासाइं इमं सत्तमं पट्टपरिहारं परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा ! एणेणं तेत्तीसेणं वाससपणं सत्त पट्टपरिहारा परिहरिया भवंतीति मक्खाया, तं सुट्टु णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी, साधु णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी—'गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासि'त्ति गोसाले० २।

१४. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—'गोसाला ! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहिं परब्भमाणे प० २ कत्थ य गट्ठं वा दरिं वा दुग्गं वा पिन्नं वा पद्यं वा विसमं वा अणस्सादेमाणे एणेणं महं उच्चालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपग्हेण वा तणसूएण वा अत्ताणं आवरेत्ता णं चिट्ठेज्जा, से णं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मन्नइ, अप्पच्छण्णे य पच्छणमिति अप्पाणं मन्नति, अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाणं मन्नति, अपलाय पलायमिति अप्पाणं मन्नति, एवामेव तुमं पि गोसाला ! अणत्ते संते अन्नमिति अप्पाणं उपलभसि, तं मा एवं गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सब्बेव ते सा छाया नो अन्ना' ।

१५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं बुत्ते समणे आसुरुत्ते ५ समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसति, उच्चा० २ आउसित्ता उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसति, उद्धंसित्ता उच्चावयाहिं निच्चं-

शरीरान्तर परावर्तन छे ते वाराणसी नगरीनी वहार काममहावन नामे चैत्यने विपे मंडिकना शरीरनो ल्याग करी रोहकना शरीरमा प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने त्या ओगणीश वर्ष सुधी चोथुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमा जे पांचमु शरीरान्तर परावर्तन छे ते आलभिका नगरीनी वहार प्राप्तकाल नामे चैत्यने विपे रोहना शरीरनो ल्याग करी भारद्वाजना शरीरमा प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने अट्टार वर्ष सुधी पाचमु शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमा जे छट्ठुं शरीरान्तर परावर्तन छे ते वैशाली नगरीनी वहार कुंडियायननामे चैत्यने विपे भारद्वाजना शरीरनो ल्याग करी गौतमपुत्र अर्जुनना शरीरमा प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने त्या सत्तर वर्ष सुधी छट्ठुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे सातमु शरीरान्तर परावर्तन छे ते आज श्रावस्ती नगरीने विपे हाल्लाहला कुंभारणना कुंभकारापण—हाटने विपे गौतमपुत्र अर्जुनना शरीरनो ल्याग करी मंखलिपुत्र गोशालकनुं शरीर समर्थ, स्थिर, ध्रुव, धारण करवा योग्य, शीतने सहन करनार, उष्णताने सहन करनार, क्षुधाने सहन करनार, विविध डास मच्छर वगैरे परिपह अने उपसर्गने सहन करनार, तथा स्थिरसंघयणवाळु छे—'एम समजी तेमा में प्रवेश कर्यो, अने तेमा सोळ वरससुधी आ सातमुं शरीरान्तरपरावर्तन कर्युं छे. ए प्रमाणे हे आयुष्मन् काश्यप ! में एकसो तेत्रीश वर्षमा सात शरीरान्तर परावर्तन कर्या छे—एम में कहुं छे. ते माटे हे आयुष्मन् काश्यप ! तमे मने ए प्रमाणे सारुं कहो छो, हे आयुष्मन् काश्यप ! तमे मने ए प्रमाणे ठीक कहो छो के 'मंखलिपुत्र गोशालक मारो धर्मान्तेवासी छे'. २.

पंचमशरीरप्रवेश.

षष्ठशरीरप्रवेश.

सप्तमशरीरप्रवेश.

१४. [ उपर प्रमाणे गोशालके कहुं एटले ] श्रमण भगवान् महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कहुं—'हे गोशालक ! जेम कोड चोर होय अने ते ग्रामवासी जनोथी पराभव पामतो २ कोड गर्ता—खाडो, गुफा, दुर्ग—दुःखे जन्ना योग्य स्थान, निन्न—नीचाण प्रदेश, पर्वत के विपम—खाडा अने टेकरावाळा प्रदेशने नहि प्राप्त करतो एक मोटा ऊनना लोमथी, शणना लोमथी, कपासना लोमथी अने तृणना अग्रभागथी पोताने ढाकीने रहे, अने ते नहि ढंकाया छता हुं ढंकायेल छुं एम पोताने माने, अप्रच्छन्न—नहि छूपाया छता पोताने प्रच्छन्न—छूपायेल माने, नहि संतावा छता पोताने सतायेल माने, अपलापित—गुप्त नहि छता पोताने गुप्त माने, ए प्रमाणे हे गोशालक ! तुं पण अन्य नहि छता हुं अन्य छुं—एम पोताने देखाडे छे. ते माटे हे गोशालक ! एम नहि कर, हे गोशालक ! एम करवाने तुं योग्य नथी. तेज आ तारी प्रकृति छे, अन्य नथी.

भगवन्ते कहु के हे गोशालक ! तु तारा आत्माने छूपावे छे.

१५. श्रमण भगवान् महावीरे ए प्रमाणे कहुं एटले ते मखलिपुत्र गोशालक एकदम गुत्से थयो अने श्रमण भगवान् महावीरने अनेक प्रकारना अनुचित वचनोवडे आक्रोश करवा लाग्यो, आक्रोश करीने अनेक प्रकारनी उद्धर्पणा—पराभवना वचनोवडे तिरस्कार करवा लाग्यो, तिरस्कार करी अनेक प्रकारनी निर्भर्त्सना वडे निर्भर्त्सित करवा लाग्यो, निर्भर्त्सना करी अनेक प्रकारनी निश्छोटना—कर्कश

गोशालकना भगव-  
तने आक्रोशयुक्त  
वचनो कहेवा.

छणाहिं निम्नंछेति, उ० २ निम्नंछेत्ता उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, उ० २ निच्छोडेत्ता एवं वयासी-‘नट्टे सि कदाइ, विणट्टे सि कदाइ, मट्टे सि कयाइ, नट्ट-विणट्ट-मट्टे सि कदायि, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहिंतो सुहमत्थि’ ।

१६. तेणं कालेणं तेणं समणं समणस्स भगवथो महावीरस्स अंतेवासी पाईणजाणवप सद्याणुभूती णामं अणगारे पगइमइए, जाव-विणीए, धम्मयारियाणुरागेणं एयमट्टं असइएमाणे उट्टाप उट्टेति, उ० २ उट्टेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, ते० २-गच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-‘जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति, जाव-कल्लणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ, किमंग पुण तुमं गोसाला ! भगवया चैव पद्याविप, भगवया चैव मुंडाविप, भगवया चैव सेहाविप, भगवया चैव सिन्खाविप, भगवया चैव बहुस्सुतीकए, भगवथो चैव मिच्छं विप्पडिवत्ते, तं मा एवं गोसाला !, नारिहसि गोसाला ! सच्चैव ते सा छाया नो अत्ता । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्याणुभूतिणामं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरेत्ते ५ सद्याणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरारसिं करेति । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्याणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरारसिं करेत्ता दोच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसर, जाव-सुहं नत्थि ।

१७. तेणं कालेणं तेणं समणं समणस्स भगवथो महावीरस्स अंतेवासी कोसलजाणवप सुणक्खत्ते णामं अणगारे पगइमइए, जाव-विणीए, धम्मयारियाणुरागेणं जहा सद्याणुभूती तहेव जाव-स चैव ते सा छाया नो अत्ता । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुणक्खत्तेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरेत्ते ५ सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेइ । तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविप समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २-गच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिकवुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महइयाइं आरुमेति, स० २ आरुमेत्ता समणा य समणीथो य खामेइ, सम० २ खामेत्ता आलोइयपडिकंते समाहिपत्ते आपुपुवीए कालगए ।

वचनो वडे हलका पाइया प्रयत्न करवा लाग्यो, अने तेम करी ते गोशालक आ प्रमाणे वोन्यो-“कदाचित्-हं एम मानुं हूं के तुं नष्ट ययो छे, कदाचित् विनष्ट ययो छे, कदाचित् भ्रष्ट ययो छे, अने कदाचित् नष्ट, विनष्ट अने भ्रष्ट ययो छे, कदाचित् तुं आजें हइइए नहिं, तने मारथी सुख थवानुं नथी”.

१६. ते काले अने ते ते समये श्रमण भगवंत महावीरना अन्तेवासी-शिष्य पूर्व देजमां उत्पन्न थयेला सर्वानुभूति नामे अनगार भद्र प्रकृतिना अने यावत्-विनीत हता. ते पोताना धर्माचार्यना अनुरागथी आ गोशालकनी वातनी अश्रद्धा करता उट्या, उठीने ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक हतो त्या आवी मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कह्युं-“हे गोशालक ! जे तेवा प्रकारना श्रमण के ब्राह्मणनी पासे एक पण आर्थ-निर्दोष अने धार्मिक सुवचन सामळे छे ते पण तेने वंदन अने नमस्कार करे छे, यावत्-ते कल्याणकर अने मंगलकर देवना चैलनी पेटे तेनी पर्युपासना करे छे; पण हे गोशालक ! तारे माटे तो शुं कहेवुं !!! भगवते तने दीक्षा आपी, अर्थात् शिष्यरूपे स्वीकार कर्यो, भगवंते तने मुंल्यो, भगवंते तने व्रतसमाचार शीखव्यो, भगवंते तने शिक्षिन कर्यो अने भगवंते तने बहुश्रुत कर्यो, तो पण ते भगवंतनी साथे अनार्यपणुं आदर्युं छे; ते माटे हे गोशालक ! एम नहि कर, हे गोशालक तुं एम करवाने योग्य नथी. आ तेज तारी प्रकृति छे, अन्य नथी.” ए प्रमाणे सर्वानुभूति अनगारे कह्युं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक गुस्से ययो, अने सर्वानुभूति अनगारने पोताना तपना तेजथी एक प्रहारे करी कूटावात-पायाणमय वंजना आधाननी पेटे बाळी भस्म कर्यो. तार वाट मंखलिपुत्र गोशालके सर्वानुभूति अनगारने पोताना तपना तेजथी एक बाए कूटावातनी पेटे भस्मराशि करीने वीजी वार पण श्रमण भगवंत महावीरने अनेक प्रकारनी आक्रोशना वडे आक्रोश कर्यो, यावत्-‘मारथी तमने सुख थवानुं नथी.”

१७. ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना अन्तेवासी कोशलदेश-अयोध्यादेशमां उत्पन्न थयेला सुनक्षत्र नामे अनगार भद्र प्रकृतिना अने यावत्-विनीत हता. ते धर्माचार्यना अनुरागथी-इत्सादि जेम सर्वानुभूति संवन्धे कह्युं तेम अहिं यावत्-‘आ तारी प्रकृति छे अन्य नथी’ त्यासुथी कहेवुं; सुनक्षत्र अनगारे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक अत्यंत गुस्से थयो, अने सुनक्षत्र अनगारने तेण तपना तेजथी ब्राह्म्या. मंखलिपुत्र गोशालकवडे तपना तेजथी वळेला सुनक्षत्र अनगारे ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां ज्यां श्रमण भगवंत महावीरने व्रणवार प्रदक्षिणा करी वन्दन अने नमस्कार कर्यो. वन्दन अने नमस्कार करी सयमेव पाच महाव्रतनो उचार करी साधुओ अने साध्वीओने खमाथ्या, खमावने आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाविने प्राप्त थई ते अनुक्रमे कालधर्मेने पाय्या.

१८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेत्ता तच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चा-  
वयाहिं आउसणाहिं आउसतिं, सधं तं चैव जाव-सुहं नत्थि । तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं  
वयासी-जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा तं चैव जाव-पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला !  
तुमं मए चैव पद्दाविए, जाव-मए चैव वहुस्सुइकए, ममं चैव मिच्छं विप्पडिवन्ने ? तं मा एवं गोसाला ! जाव-नो अन्ना,  
तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ तेयांसमुग्घाएणं समोहन्नइ, तेया०-  
हणित्ता सत्तट्टु पयाइं पच्चोसकइ, पच्चोसकित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरंगंसि तेयं निसिरति । से जहा-  
नामए वाउक्कलिया इ वा वायमंडलिया इ वा सेलंसि वा कुडुंसि वा थंभंसि वा थूमंसि वा आवरिज्जिमाणी वा निवारिज्जिमाणी  
वा सा णं तत्थ णो कमति, नो पक्कमति, एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स  
वहाए सरीरंगंसि निसिट्ठे समाणे से णं तत्थ नो कमति, नो पक्कमति, अंचियंचियं करेति, अंचि० २ करेत्ता आयाहिण-  
पयाहिणं करेति, आ० २ करेत्ता उहं वेहांसं उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्ते समाणे तमेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स  
सरीरंगं अणुडहमाणे २ अंतो अणुप्पविट्ठे । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे समणं भगवं  
महावीरं एवं वयासी-‘तुमं णं आउसो कासवा ! ममं तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगय-  
सरीरे दाहवकंतीए छउमत्थे चैव कालं करेस्ससि’ । तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-‘नो  
खलु अहं गोसाला ! तव तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं जाव-कालं करेस्सामि, अहन्नं अन्नाइं सोलस वासाइं  
जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तुमं णं गोसाला ! अप्पणा चैव सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगय-  
सरीरे जाव-छउमत्थे चैव कालं करेस्ससि’ ।

१९. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग- जाव-पहेसु वहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव-एवं परूवेइ-‘एवं खलु  
देवाणुप्पिया ! सावत्थीए नगरीए वहिया कोट्टए चेइए दुवे जिणा संलवंति, एगे वयंति-तुमं पुधिं कालं करेस्ससि, एगे वदंति  
तुमं पुधिं कालं करेस्ससि, तत्थ णं के पुण सम्मावादी के पुण मिच्छावादी, ? तत्थ णं जे से अहप्पहाणे जणे से वदति-‘समणे  
भगवं महावीरे सम्मावादी, गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावादी, ‘अज्जो’ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं

१८. लार वाद मंखलिपुत्र गोशालक सुनक्षत्र अनगारने तपना तेजथी वाळीने त्रीजीवार श्रमण भगवंत महावीरने अनेक प्रकारना  
अनुचित वचनोधी आक्रोश करवा लागयो-इत्यादि पूर्वोक्त सर्व कहेहुं, यावत्-‘तने माराथी सुखं थवानुं नयी.’ ल्यारे श्रमण भगवान्  
महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कहुं के ‘हे गोशालक ! जे तेवां प्रकारना श्रमण अने ब्राह्मणनुं-[ आर्य अने धार्मिक सुवचन  
सांभळे छे-इत्यादि ] पूर्वोक्त कहेहुं, ते तेनी यावत्-पर्युपासना करे छे, तो हे गोशालक ! तारे माटे तो शुं कहेहुं ! ! में तने प्रत्रज्या  
आपी, यावत्-में तने बहुश्रुत कर्यो, अने ते मारी साथे मिथ्यात्व-अनार्यपुं आदर्युं छे. ते माटे हे गोशालक ! एम नहि कर,  
यावत्-ते आ तारी ज प्रकृति छे, अन्य नथी.’ श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कहुं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक अत्यंत गुस्से थयो,  
अने तैजस समुद्घात करी, सात आठ पगला पाछे खसी तेंगे श्रमण भगवंत महावीरनो वध करवामाटे शरीरमाथी तेजोलेइया बहार काडी.  
जेम कोइ वातोक्कलिका ( जे रही रहीने वायु वाय ते ) के वंटोळीओ होय ते पवंत, भींत, स्तंभ के स्तूपवेडे आवरण कारायेलो के निवा-  
रण कारायेलो होय तो पण तेने विपे समर्थ थतो नथी, विशेष समर्थ थतो नथी, ए प्रमाणे मंखलिपुत्र गोशालकनी तपोजन्य तेजोलेइया  
श्रमण भगवंत महावीरनो वध करवा माटे शरीरमाथी बहार काढ्या छता तेने विपे समर्थ थती नथी, विशेष समर्थ थती नथी, पण गमना-  
गमन करे छे, गमनागमन करीने प्रदक्षिणा करे छे, प्रदक्षिणा करी उंचे आकाशमां उछळे छे, अने ल्याथी स्वलित थईने पाछी फरती  
तपोजन्य तेजोलेइया मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने वाळती वाळती तेना शरीरनी अंदर प्रविष्ट थाय छे. ल्यार वाद पोतानी तेजोलेइयावेडे  
पराभवने प्राप्त थयेला मंखलिपुत्र गोशालके श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कहुं-‘हे आयुष्मन् काइएप ! मारी तपोजन्य तेजोले-  
इयाथी पराभवने प्राप्त थई छ मासने अन्ते पित्तज्वरयुक्त शरीर छे जेनुं एवो तुं दाहनी पीडाथी छन्नस्स अवस्थामां काळ करीश.’ ल्यारे  
श्रमण भगवंत महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने ए प्रमाणे कहुं के ‘हे गोशालक ! हुं तारी तपोजन्य तेजोलेइयाथी पराभव पामी छ मासने  
अन्ते यावत्-काळ करीश नहिं, पण बीजा सोळ वरस सुधी जिन-तीर्थकरपणे गन्धहस्तीनी पेटे विचरीश, परन्तु हे गोशालक ! तुं पोतेज  
तारा तेजथी पराभव पामी सात रात्रिने अन्ते पित्तज्वरथी पीडित शरीरवाळो थई छन्नस्थावस्थामां काळ करीश.’

१९. ल्यार पछी श्रावस्ती नगरीमां शृंगाटकना आकारवाळा त्रिकोण मार्गमां यावत्-राजमार्गमां घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे  
कहे छे, यावत्-आ प्रमाणे प्ररूपे छे-‘हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर श्रावस्ती नगरीनी बहार कोष्टक चैत्यने विपे वे जिनो परस्पर  
कहे छे, तेमा एक आ प्रमाणे कहे छे के ‘तुं प्रथम काळ करीश’ अने बीजा एम कहे छे के ‘तुं प्रथम काळ करीश.’ तेमां कोण सम्य-  
ग्वादी-सत्यवादी छे, अने कोण मिथ्यावादी छे ? तेमां जे जे प्रधान-मुख्य माणसो छे ते वोले छे के श्रमण भगवान् महावीर सम्यग्वादी छे,  
४९ म० सू०

गोशालकनो भगवंत  
प्रति त्रीजी वारनो  
आक्रोश.

गोशालके भगवतनो  
वध करवामाटे शरी-  
माथी तेजोलेइया  
बहार काडी.

तेजोलेइया गोशाल-  
कना शरीरमा पेठी  
हु तारा तपना तेज-  
थी पराभूत थर छ  
मासने अन्ते काळ  
करीश नहिं, पण  
तु सात रात्रीने  
अंते काळ करीश-  
एतु गोशालकने  
भगवतनु कथन.

श्रावस्तीनगरीना ज-  
नोनी भगवत अने  
गोशालकना सम्य-  
ग्वादित्व सदर्भके  
प्रवाद.

व्यासी—‘अज्ञो’ ! से जहानामय तणरासी इ वा कट्टरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरारी इ वा भुसरारी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा धगणिन्नमिय धगणिन्नसिय अगणिपरिणामिय ह्यतेप गयतेप नट्टतेप मट्टतेप लुत्ततेप विणट्टतेये जाव—पवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते मम वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरेत्ता ह्यतेप गयतेप जाव—विणट्टतेप जाप, तं उद्वेणं अज्ञो ! तुम्मे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाप पडिचोयणाप पडिचोएह, धम्मि० २ पडिचोएत्ता धम्मियाप पडिसारणाप पडिसारेह, धम्मि० २ पडिसारेत्ता धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह, धम्मि० २ पडोयारेत्ता अट्टेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्टपसिणवागरणं करेह ।

२०. तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं पवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाप पडिचोयणाप पडिचोएंति, ध० २ पडिचोएत्ता धम्मियाप पडिसारणाप पडिसारंति, ध० २ पडिसारेत्ता धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारंति, ध० २ पडोयारेत्ता अट्टेहि य हेऊहि य कारणेहि य जाव—वागरणं करंति ।

२१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाप पडिचोयणाप पडिचोत्तिज्जमाणे जाव—निप्पट्टपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते जाव—मिसिमिसेमाणे नो संचापति समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पापत्तए, छविच्छेदं वा करेत्तए । तए णं ते आजीविया येरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाप पडिचोयणाप पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाप पडिसारणाप पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेणं य पडोयारेज्जमाणं, अट्टेहि य हेऊहि य जाव—करेमाणं, आसुरुत्तं जाव—मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ जायाप अवक्कमंति, जायाप अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जायाहिणं पयाहिणं करंति, आ० २ करेत्ता, वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, अत्येगइया आजीविया येरा गोसालं चैव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

अने मंखलिपुत्र गोशालक मिथ्यावादी छे.” श्रमण भगवान् महावीरे ‘हे आर्यो !’ ए प्रमाणे निर्प्रन्योने बोलावी एम कहुं के ‘हे आर्यो ! जेम कोइ लृणनो राशि, काष्ठनो राशि, पादवानो राशि, त्वचा—छालनो राशि, तुप—फोतरानो राशि, भुसानो राशि, टाणनो राशि अज्ञे कचरानो राशि अग्निथी दग्ध थयेलो, अग्निथी युक्त अने अग्निथी परिणमेलो होय तो ते जेनुं तेज हणायुं छे, जेनुं तेज गयेलुं छे, जेनुं तेज नष्ट थयुं छे, जेनुं तेज भ्रष्ट थयुं छे, जेनुं तेज छुप्त थयेलुं छे अने जेनुं तेज विनष्ट थयेलुं छे एवो यावत्—थाय, ए प्रमाणे मंखलिपुत्र गोशालक मारो वध करवा माटे शरीरमाथी तेजोलेइया बहार काढीने जेनुं तेज हणायुं छे एवो, तेजरहित अने यावत्—विनष्टतेजवाट्टे ययो छे; माटे हे आर्यो ! तमारी इच्छाथी तमे मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे धार्मिक प्रतिचोदना—तेना मतथी प्रतिकूल वचन कहो, धार्मिक प्रतिचोदना करी धार्मिक प्रतिसारणा—तेना मतथी प्रतिकूलपणे विस्मृत अर्थनुं संस्मरण करावो, धार्मिक प्रतिसारणा करी धार्मिक वचनना प्रत्युपचारवडे प्रत्युपचार करो, तेमज अर्थ—प्रयोजन, हेतु, प्रश्न, व्याकरण—उत्तर अने कारण वडे पूछेला प्रश्ननो उत्तर न आपी शके तेम निरुत्तर करो’.

२०. प्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कहुं लारे ते श्रमण निर्प्रन्यो श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे. वंदन—नमस्कार करी ज्या गोशालक मंखलिपुत्र छे त्यां आवी मंखलिपुत्र गोशालकने धर्मसंवन्धी प्रतिचोदना—तेना मतथी प्रतिकूल वचनो कहे छे, धर्मसंवन्धी प्रतिचोदना करी धार्मिक प्रतिसारणा—तेना मतने प्रतिकूलपणे अर्थनुं स्मरण करावे छे, धर्मसंवन्धी प्रतिसारणा करी धर्मसंवन्धी वचनना प्रत्युपचारवडे प्रत्युपचार करे छे अने अर्थ—प्रयोजन, हेतु अने कारणवडे यावत्—तेने निरुत्तर करे छे.

२१. लार बाद श्रमण निर्प्रन्योए धार्मिक प्रतिचोदना—तेना मतथी प्रतिकूल प्रश्नो करी अने यावत्—तेने निरुत्तर करी एट्टे मंखलिपुत्र गोशालक अत्यन्त गुस्से ययो अने यावत्—क्रोधथी अत्यंत प्रज्वलित थयो, परन्तु श्रमण निर्प्रन्योना शरीरने कंडूपण पीडा के उपद्रव करवाने तया तेना कोइ अवयवनो छेद करवाने समर्थ न थयो. लार पछी आजीविक स्थिरो श्रमण निर्प्रन्यो वडे धर्मसंवन्धी तेना मतथी प्रतिकूलपणे कहेवायेला, धर्मसंवन्धी प्रतिसारणा—तेना मतथी प्रतिकूलपणे स्मरण करावायेला, अने धर्मसंवन्धी प्रत्युपचार वडे प्रत्युपचार करायेला तया अर्थ अने हेतुथी यावत्—निरुत्तर करायेला, अत्यन्त गुस्से करायेला, यावत्—क्रोधथी बळना, श्रमण अने निर्प्रन्योना शरीरने कंडूपण पीडा—उपद्रव के अवयवना छेद नहि करता एवा मंखलिपुत्र गोशालकने जोड़ने तेनी पासिथी पोते नीकब्या, अने त्याथी नीकळी ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे त्या आव्या, त्या आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, वादी अने नमीने श्रमण भगवान् महावीरनो आश्रय करी विहरवा लाग्या, अने केटळा एक आजीविक स्थिरो मंखलिपुत्र गोशालकनो आश्रय करी विहरवा लाग्या.

२२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्टाप हव्वंमागए तमट्ठं असाहेमाणे, रुंदाइं पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाए लुंचमाणे, अवट्ठं कंङ्खमाणे, पुयल्लिं पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिट्ठणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे, 'हा हा अहो ! हओऽहमस्सि'त्ति कट्ठु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमत्ति; पडिनिक्खमिन्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छिच्चा हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंवकूणगहत्थगए, मज्जपाणं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलएणं मट्ठियापाणएणं आयंचणित्ठएणं गायाइं परिंसिचमाणे विहरति ।

२३. 'अज्जो'त्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—'जावतिए णं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे, से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा—१ अंगाणं, २ वंगाणं, ३ मगहाणं, ४ मलयाणं, ५ मालवगाणं, ६ अच्छाणं, ७ वच्छाणं, ८ कोच्छाणं, ९ पाढाणं, १० लाढाणं, ११ वज्जाणं, १२ मोलीणं, १३ कासीणं, १४ कोसलाणं, १५ अवाहाणं, १६ संभुत्तराणं घाताए, वहाए, उच्छादणयाए, भासीकरणयाए । जं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंवकूणगहत्थगए, मज्जपाणं पियमाणे, अभिक्खणं जाव—अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पन्नवेति । तंजहा—१ चरिमे पाणे, २ चरिमे गेये, ३ चरिमे नट्ठे, ४ चरिमे अंजलिकम्मे, ५ चरिमे पोक्खलसंवट्ठए महामेहे, ६ चरिमे सेयणए गंधहत्थी, ७ चरिमे महासिलाकंटक संगामे, ८ अहं च णं इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थंकराणं चरिमे तित्थंकरे सिज्झिस्सं, जाव—अंतं करेस्सं ति । जं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्ठियापाणएणं आयंचणित्ठएणं गायाइं परिंसिचमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारि पाणगाइं पन्नवेति ।

२४. [प्र०] से किं तं पाणए ? [उ०] पाणए चउच्चिहे पन्नत्ते, तंजहा—१ गोपुट्टए, २ हत्थमहियए, ३ आयवतत्तए, ४ सिलापन्मट्टए, सेत्तं पाणए ।

२२. स्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालक जेने माटे शीघ्र आव्यो हतो ते कार्यने नहि साधतो, दिशाओ तरफ लांवी दृष्टिथी जोते, दीर्घ अने उष्ण नीसासा नाखतो, दाढिना वाळने खंचतो, अवट्टु—डोकनी पाळळना भागने खजवाळतो, पुतप्रदेशने प्रस्फोटित करतो, हस्तने हलावतो अने वने पग वडे भूमिने कूटतो, 'हा हा ! अरे ! हुं हणायो छुं'—ए म विचारी श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने कोष्टक चैत्यथी नीकळी ज्या श्रावस्ती नगरी छे, अने ज्या हालाहलानामे कुंभारणतुं कुंभकारापण—हाट छे त्या आव्यो. त्या आवीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणमा जेना हाथमां \*आम्रफल रहेल्लं छे एवो, मधपान करतो, वारंवार गातो, वारंवार नाचतो, वारंवार हालाहला कुंभारणने अंजलि करतो अने माटीना भाजनमा रहेला शीतल माटीना पाणी वाडे गात्रने सींचतो विहरे छे.

गोशालकतुं भगवं पासेथी हालाहल कुंभारणने घेर जव्हं

२३. 'हे आर्यो ! ए म कहीने श्रमण भगवान् महावीरे श्रमण निर्ग्रन्थेने आमंत्रिने ए प्रमाणे कहुं के हे आर्यो ! मंखलिपुत्र गोशालके मारो वध करवा माटे शरीरयकी तेजोलेख्या काढी हती, ते आ प्रमाणे—१ अग, २ वंग, ३ भगध, ४ मलय, ५ मालव, ६ अच्छ, ७ वत्स, ८ कौत्स, ९ पाट, १० लट, ११ वज्र, १२ मौली, १३ काशी, १४ कोशल, १५ अवाध अने १६ समुत्तर—ए सोळ देशनो घात करवा माटे, वध करवा माटे, उच्छेदन करवा माटे, भस्म करवा माटे समर्थ हती. वळी हे आर्यो ! मंखलिपुत्र गोशालक हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणमा आम्रफल हाथमां ग्रहण करी मधपान करतो, वारंवार यावत्—अजलिकर्म करतो विहरे छे ते अवध—दोपने प्रच्छादन—ढाकवामाटे आ आठ चरम—छेळी वस्तु कहे छे. ते आ प्रमाणे—१ चरम पान, २ चरम गान, ३ चरम नाट्य, ४ चरम अजलिकर्म, ५ चरम पुक्कल सवर्त महामेघ, ६ चरम सेचनक गन्धहस्ती, ७ चरम महाशिलाकंटक संग्राम अने ८ हुं आ अवसर्पिणीमां चोवीश तीर्थकरोमा चरम तीर्थकरणे सिद्ध थईश, अने यावत्—'सर्वं दुःखिनो अन्त करीश'. वळी हे आर्यो ! मंखलिपुत्र गोशालक माटीना पात्रमा रहेला माटीमिश्रित शीत पाणीवाडे शरीरने सींचतो विचरे छे ते अवधने पण ढाकवामे माटे आ चार प्रकारना पानक—पीणा अने चार नहि पीवा योग्य (शीतल अने दाहोपगमक) अपानक जणावे छे—

तेजोलेख्यातुं सामर्थ्य.

२४. [प्र०] पाणी केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] पाणी चार प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ गायना पृष्ठथी पडेल्लं, २ हा— चार प्रकारना पानक यथी मसळेल्लं, ३ सूर्यना तापथी तपेल्लं, अने ४ शिलाथी पडेल्लं. ए प्रमाणे पाणी कहुं.

२५. [प्र०] से किं तं अपाणय ? [उ०] अपाणय चउघिहे पण्णत्ते, तंजहा—१ थालपाणय, २ तयापाणय, ३ सिबलि-पाणय, ४ सुद्धपाणय ।

२६. [प्र०] से किं तं थालपाणय ? [उ०] था० २ जण्णं दायालगं वा दावारगं वा दाकुंमगं वा दाकलसं वा सीयलगं उहणं हत्थेहि परामुसइ, न य पाणियं पियइ; सेत्तं थालपाणय ।

२७. [प्र०] से किं तं तयापाणय ? [उ०] त० २ जण्णं अयं वा अंयाउगं वा जहा पन्नोगपदे जाव-शोरं वा तिदुरुयं वा, तरुणगं वा, आमगं वा आसगंसि आधीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ, सेत्तं तयापाणय ।

२८. [प्र०] से किं तं सिबलिपाणय ? [उ०] सि० २ जण्णं कलसंगलियं वा, मुग्गसिगलियं, वा माससंगलियं वा सिबलिसंगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आधीलेति वा, पवीलेति वा, न य पाणियं पियति, सेत्तं सिबलिपाणय ।

२९. [प्र०] से किं तं सुद्धपाणय ? [उ०] सु० २ जण्णं छमासे सुद्धग्वाइमं ग्हाइति, दो मासे पुढविसंथारोवगए य, द्वे मासे कट्टसंथारोवगए, दो मासे दच्चमसंथारोवगए, तस्स णं वहुपडिपुत्ताणं छण्हं मासाणं अंतिमराइए इमे दो देवा महइया जाव-महेसन्ना अंतियं पाउच्चमवति, तंजहा-पुत्तमदे य माणिमहे य । तए णं ते देवा सीयलएहि उहएहि हत्थेहि गायारं परामुसंति, जे णं ते देवे साउज्जति, से णं आसीधिसत्ताए कम्मं पकरेति, जे णं ते देवे नो साउज्जनि तस्स णं संसि सरी-रांसि अगणिकाए संभवति, से णं सएणं तेएणं सरीरगं आमिेति, स० २ शामेत्ता तथो पच्छा सिज्जति, जाव-अंतं करेति, सेत्तं सुद्धपाणय ।

३०. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले पाणं आजीविओवासए परिवसइ, अहे, जाव-अपरिमूए, जहा हालाइला, जाव-आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे चिहरति । तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स अत्रया कट्टायि पुद्गरत्ता-वरत्तकालसमयंसि कुहुंजजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अम्मत्थिए जाव-समुप्पजित्था-‘किसंठिया इह्हा पण्णत्ता’ ?

२५. [प्र०] अपानक केटला प्रकारे छे ? [उ०] अपानक चार प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे—१ स्यात्तुं पाणी, २ वृक्षादिनी छात्तुं पाणी, ३ शीगोतुं पाणी अने ४ शुद्ध पाणी (देवहस्तना स्पर्शतुं पाणी) ।

२६. [प्र०] स्यात्पाणी केवा प्रकारे कसुं छे ? [उ०] जे उदकधी मीजायेले स्यात्, पाणीधी मीनो वारक-करवडो, पाणीधी मीनो मोटो वट, पाणीधी मीनो न्हानो वट, अथवा पाणीधी मीना माटीना वासण, तेनो हायथी स्पर्श करे पण पाणी न पीए ते स्पोत्त पाणी, ए प्रमाणे स्यात्पाणी कसुं ।

२७. [प्र०] त्वचापाणी केवा प्रकारतुं छे ? [उ०] जे आत्रो, अवाडग-ट्ट्यादि \*प्रयोगपदमा कला प्रमाणे यावत्-शोर, तिदुरुक सुधी जाणवा, ते तरुण-अपक्व अने आम-काचा होय, तेने मुखमा नाहीं थोहुं चावे, विशेष चावे, पण पाणी न पीए ते त्वचापाणी. ए प्रमाणे त्वचापाणी कसुं ।

२८. [प्र०] शीगोतुं पाणी केवा प्रकारतुं छे ? [उ०] जे अज्यासिबली-बटाणानी शीग, मगनी शीग, अउदनी शीग के शिबलीनी शीग वगेरे तरुण-अपक्व अने आम-काची होय तेने मुखमा थोहुं चावे के विशेष चावे, पण तेतुं पाणी न पीए ते शीगोतुं पाणी कहवाय. ए प्रमाणे शीगोतुं पाणी कसुं ।

२९. [प्र०] शुद्ध पाणी केवा प्रकारतुं छे ? [उ०] जे छ मास सुधी शुद्ध खादिम आहारने खाय, तेमां वे मास सुधी पृथिवीरूप संस्तारकने विपे रहे, वे मास सुधी लाकडाना संस्तारकने विपे रहे, अने वे मास सुधी दर्भना संस्तारकने विपे रहे, तेने वरोवर पूर्ण थयेल्ला छ मासनी छेडी रात्रीए महर्द्धिक अने यावत्-महासुखवाळ्य वे देवो तेनी पासे प्रगट् थाय, ते आ प्रमाणे-पूर्णभद्र अने माणिमद्र; स्यार पछी ते देवो शीतल अने आर्द्र हस्त वडे शरीरना अवयवोनी स्पर्श करे, हवे जे ते देवोने अनुमोदे, एटले तेना आ कार्यने सारं जाणे ते आजीविपपणे कर्म करे, जे ते देवोने न अनुमोदे, तेना पोताना शरीरमां अशिकाए उत्पन्न थाय, अने ते पोताना तेज वडे शरीरने बाळे, अने स्यार पछी ते सिद्ध थाय, यावत्-सर्व दुःखोनी अन्त करे, ते शुद्ध पानक कहवाय. ए प्रमाणे शुद्ध पानक कसुं ।

३०. ते श्रावस्ती नगरीमा अयंपुलनामे आजीविकमतनो उपासक-श्रावक रहतो हतो. ते वनिक, यावत्-कोइथी परामव न पाने तेवो अने हाथहाला कुंमारणीने पेटे यावत्-आजीविकना सिद्धान्त वडे आत्माने भावित करतो बिहरतो हतो. स्यार पछी ते अयंपुल नामे आजीविकोपासकने अन्य कोइ दिवसे कुहुंजजागरण करता मध्यरात्रिना समये आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्-उत्पन्न थयो के “किंवा

તપ ણં તસ્સ અયંપુલસ્સ આજીઓવાસગસ્સ દોષ્ઠં પિ અયમેયારૂઘે અન્મત્થિય જાવ-સમુપ્પજ્જિત્યા-‘એવં યલુ મમં ધમ્માયરિય, ધમ્મોવદેસય ગોસાલે મંચલિપુત્તે ઉપ્પલનાણદંસણધરે જાવ-સઘ્ઘ્ઠુ સઘ્ઘરિસી રૂઠેવ સાવત્થીય નગરીય હાલાહલાય કુંમ-કારીય કુંમકારાવણંસિ આજીવિયસંઘસંપરિવુઠે આજીવિયસમણં અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરહ, તં સેયં યલુ મે કહ્ઠં જાવ-જલંતે ગોસાલં મંચલિપુત્તં વંદિત્તા, જાવ-પજ્જુવાસેત્તા ઇમં યયારૂઘં વાગરણં વાગરિત્તય ત્તિ કઠ્ઠુ એવં સંપેહેતિ, એવં સંપેહેત્તા કહ્ઠં જાવ-જલંતે ગ્હાપ, કયં જાવ-અપ્પમહ્ઘામરણાલંકિયસરીરે, સામો ગિહાઓ પડિનિક્કવમતિ, સાં ૨ પટિનિક્કવ-મિત્તા પાયવિહારચારેણં સાવર્થિય નગરિં મજ્ઝંમજ્ઞેણં જેણેવ હાલાહલાય કુંમકારીય કુંમકારાવણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા ગોસાલં મંચલિપુત્તં હાલાહલાય કુંમકારીય કુંમકારાવણંસિ અંચકૂળગહત્થગયં જાવ-અંજલિકમ્મં કરેમાણં સીયલણં મટ્ટિયાં જાવ-ગાયાહં પરિસિંચમાણં પાસહ, પાસિત્તા લજ્જિય, વિલિય, વિઠ્ઠે, સણિયં ૨ પચ્ચોસક્કહ । તપ ણં તે આજીવિયા થેરા અયંપુલં આજીવિયોવાસગં લજ્જિયં જાવ-પચ્ચોસક્કમાણં પાસહ, પાસિત્તા એવં વયાસી-‘એહિ તાવ અયંપુલા ! એત્તઓ’ । તપ ણં સે અયંપુલે આજીવિયોવાસય આજીવિયથેરેહિં એવં વુત્તે સમાણે જેણેવ આજીવિયા થેરા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા આજીવિય થેરે વંદતિ નમંસતિ, વંદિત્તા નમંસિત્તા નચ્ચાસન્ને જાવ-પજ્જુવાસહ । ‘અયંપુલા’હ આજીવિયા થેરા અયંપુલં આજીવિયોવાસગં એવં વયાસી-‘સે નૂણં તે અયંપુલા ! પુઘરત્તાવરત્તકાલસમયંસિ જાવ-કિંસંઠિયા હહ્ઠા પ્પણત્તા’ ? તપ ણં તવ અયંપુલા ! દોષ્ઠં પિ અયમેયાં તં ચેવ સઘં ભાણિયઘં, જાવ-સાવર્થિય નગરિં મજ્ઝંમજ્ઞેણં જેણેવ હાલાહલાય કુંમકારીય કુંમકારાવણે, જેણેવ રૂઠં તેણેવ હઘ્ઘમાગય । સે નૂણં તે અયંપુલા ! અટ્ટે સમટ્ટે ? હંતા અત્થિ । જં પિ ય અયંપુલા ! તવ ધમ્માયરિય ધમ્મોવદેસય ગોસાલે મંચલિપુત્તે હાલાહલાય કુંમકારીય કુંમકારાવણંસિ અંચકૂળગહત્થગય જાવ-અંજલિં કરેમાણે વિહરતિ, તત્થ વિ ણં ભગવં રૂમાહં અટ્ટ ચરિમાહં પન્નવેતિ, તંજહા-ચરિમે પાણે, જાવ-અંતં કરેસ્સતિ’ । જે વિ ય અયંપુલા ! તવ ધમ્માયરિય ધમ્મોવદેસય ગોસાલે મંચલિપુત્તે સીયલણં મટ્ટિયાં જાવ-વિહરતિ, તત્થ વિ ણં ભગવં રૂમાહં ચત્તારિ પાણગાહં, ચત્તારિ અપાણગાહં પન્નવેતિ । સે કિં તં પાણય ? ૨ જાવ-તઓ પચ્છા સિજ્ઞતિ, જાવ-અંતં કરેતિ । તં ગચ્છ ણં તુમં અયંપુલા ! એસ ચેવ તવ ધમ્માયરિય ધમ્મોવદેસય ગોસાલે મંચલિપુત્તે ઇમં યયારૂઘં વાગરણં વાગરિત્તય’ત્તિ ।

આકારે હહ્ઠા ( કીટવિશેષ ) કહેલી છે’ ? સ્યાર પછી તે અયંપુલનામે આજીવિકોપાસકને વીજી ત્રાર આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે “ એ પ્રમાણે યેરેય મારા ધર્માચાર્ય અને ધર્મોપદેશક મંચલિપુત્ર ગોશાલક ઉત્પન્ન થયેલા જ્ઞાન-દર્શનને ધારણ કરનારા, યાવત્-સર્વજ્ઞ અને સર્વદર્શી છે, તેઓ આજ શ્રાવસ્તી નગરીમા હાલાહલા કુંમારણના કુંમકારાપણ-હાટમા આજીવિકસંઘસહિત આજીવિકના સિદ્ધાન્ત યઢે આત્માને ભાવિત કરતા વિહરે છે. તે માટે મારે આવતી કાલે યાવત્-સૂર્યોદય થયે મંચલિપુત્ર ગોશાલકને વંદન કરી, પર્યુપાસના કરી આવા પ્રકારનો આ પ્રશ્ન પૂછવો શ્રેયરૂપ છે”-એમ વિચારી કાલે યાવત્-સૂર્યોદય થયે જ્ઞાન કરી, વલિકર્મ કરી, અલ્પ અને મહામૂલ્ય આ-ભરણવઢે શરીરને અલંકૃત કરી, પોતાના ઘર થકી વહાર નીકળી, પગે ચાલી, શ્રાવસ્તી નગરીના મધ્યમાગમા થઈ, જ્યાં હાલાહલા નામે કુંમારણનું કુંમકારાપણ છે, ત્યાં આવી તે હાલાહલા નામે કુંમારણના કુંમકારાપણમા જેના હાયમા આમ્રફલ રહેલું છે એવા યાવત્-હાલાહલા કુંમારણને અંજલિકર્મ કરતા અને શીતલ માટીમિશ્રિત જલવઢે યાવત્-શરીરના અવયવને સિંચતા મંચલિપુત્ર ગોશાલકને જુણ છે; જોઈને તે લજિત, વિલ્લખો અને ત્રીહિત થઈ ધીમે ધીમે પાછો જાય છે. સ્યાર પછી તે આજીવિક સ્થવિરોએ લજિત યાવત્-પાછા જતા આજીવિકોપાસક અયં-પુલને જોઈ એ પ્રમાણે કહ્યું-‘હિ અયંપુલ ! અહિં આવ’ . જ્યારે આજીવિક સ્થવિરોએ એ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તે અયંપુલ જ્યાં આજીવિક સ્થવિરો હતા ત્યાં આવ્યો, અને ત્યાં આવી આજીવિક સ્થવિરોને વંદન-નમસ્કાર કરી અત્યન્ત પાસે નહિ તેમ અત્યન્ત દૂર નહિ એમ વેસી પર્યુપાસના કરવા લાગ્યો. ‘હિ અયંપુલ ! એમ કહી આજીવિક સ્થવિરોએ આજીવિકોપાસક અયંપુલને એ પ્રમાણે કહ્યું-“ હે અયંપુલ ! યેરેય તને મધ્ય-રાત્રિના સમયે યાવત્-કેવા આકારવાળી હહ્ઠા કહેલી છે ? [ એવો સંકલ્પ થયો હતો ? ] સ્યાર પછી તને વીજીવાર આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ થયો હતો’ ?-હ્યાંથી પૂર્વોક્ત સર્વ કહેલું, યાવત્-શ્રાવસ્તી નગરીના મધ્યમાગમા જ્યાં હાલાહલા કુંમારણનું કુંમકારાપણ છે અને જ્યાં આ સ્થાન છે, ત્યાં તું શીઘ્ર આવ્યો. હે અયંપુલ ! યેરેય આ વાત સત્ય છે ? હા સત્ય છે. હે અયંપુલ ! વઢી તારા ધર્માચાર્ય અને ધર્મોપ-દેશક મંચલિપુત્ર ગોશાલક હાલાહલા કુંમારણના કુંમકારાપણમાં આમ્રફલ હાયમા લઈ યાવત્-અજલિ કરતા વિહરે છે, તેમા પળ તે ભગવાન્ આઠ ચરમનો પ્રરૂપણા કરે છે. તે આ પ્રમાણે-૧ ચરમપાનક, યાવત્-સર્વ દુઃખનો અન્ત કરશે. વઢી હે અયંપુલ ! તારા ધર્માચાર્ય અને ધર્મોપદેશક મંચલિપુત્ર ગોશાલક શીતલ માટીના પાણી વઢે યાવત્-શરીરને છાટતા યાવત્-વિહરે છે, તેમા પળ તે ભગવાન્ ચાર પાનક અને ચાર અપાનક પ્રરૂપે છે. પાનક કેવા પ્રકારે છે ? યાવત્-સ્યાર પછી તે સિદ્ધ થાય છે, યાવત્-‘સર્વ દુઃખોનો અન્ત કરે છે’. તે માટે હે અયંપુલ ! તું જા, અને આ તારા ધર્માચાર્ય અને ધર્મોપદેશક મંચલિપુત્ર ગોશાલકને આવા પ્રકારનો આ પ્રશ્ન પૂછજે.’

અયંપુલ આગમન, ગોશાલકની વિનિષ્ઠ અવસ્થા જોઈ પાછુ જવું, સ્થવિરોએ અયંપુલને પાછા ઘોલાવી તેના મનના સંકલ્પનું નિવેદન અને તેના મનનું નમાધાન-



૩૧. તપ નં સે અયંપુલે આજીવિયોવાસણ આજીવિપર્ણિ થેરેઈ પ્યં વુત્તે સમાણે દટ્ટ-તુટ્ટે ઉટ્ટાપ ઉટ્ટેતિ, ૩૦ ૨ ઉટ્ટેત્તા જેણેવ ગોસાલે મંગલિપુત્તે તેણેવ પદારેત્ય ગમણાપ । તપ નં તે આજીવિયા થંરા ગોસાલસ્સ મંગલિપુત્તસ્સ અંચકૂળગપ્પઙ્ગા-વણટ્ટયાપ પંગંતમંતે સંગારં કુર્હતિ । તપ નં સે ગોસાલે મંગલિપુત્તે આજીવિયાણં થેરાણં સંગારં પટિચ્છદ્ધ, સં૦ ૨ પટિચ્છિત્તા અંચકૂળગં પંગંતમંતે પ્પેદ્ધ । તપ નં સે અયંપુલે આજીવિયોવાસણ જેણેવ ગોસાલે મંગલિપુત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ, તેણેવ ઉવા-ગચ્છિત્તા ગોસાલં મંગલિપુત્તં તિમ્પુત્તોં જાવ-પજ્જુવાસતિ । ‘અયંપુલા, ઢી ગોસાલે મંગલિપુત્તે અયંપુલં આજીવિયોવાસણં એવં વયાસી-‘સે નૂળં અયંપુલા ! પુથ્થરત્તાવરત્તકાલસમયંસિ જાવ-જેણેવ મમં અંતિયં તેણેવ દ્ધમાગપ । સે નૂળં અયંપુલા ! અટ્ટે સમટ્ટે ? હંતા અત્થિ, તં નો પલુ एस અંચકૂળપ, અંચચોયપ નં પસે । કિંસંટિયા દ્ધહ્મા પત્ત્તા ? ઘંસીમૂલસંટિયા દ્ધહ્મા પ્પણ્ણત્તા । ઘીણં ઘાપ્પહિ ૨ ઘીરગા ઘી૦ ૨ । તપ નં સે અયંપુલે આજીવિયોવાસણ ગોસાલેણં મંગલિપુત્તેણં ઇમં પ્પ્યારૂત્તં ઘાગરણં ઘાગરિય સમાણે દટ્ટ-તુટ્ટે જાવ-હિયપ ગોસાલં મંગલિપુત્તં વંદતિ નમંસતિ, વંદિત્તા નમંસિત્તા પસિણાઠં પુચ્છતિ, પસિણાદ્ધ પુચ્છિત્તા અટ્ટાદ્ધં પરિયાદિયદ્ધ, અ૦ ૨ પરિયાદિદ્ધિત્તા ઉટ્ટાપ ઉટ્ટેતિ, ઉટ્ટાપ ઉટ્ટેત્તા ગોસાલં મંગલિપુત્તં વંદતિ નમંસતિ, વંદિત્તા નમંસિત્તા જાવ-પડિગપ ।

૩૨. તપ નં સે ગોસાલે મંગલિપુત્તે અપ્પણો મરણં આમોપ્પદ, આમોહિત્તા આજીવિપ થેરે સહાવેદ, આ૦ ૨ સહાવેત્તા એવં વયાસી-‘તુભ્ભે નં દેવાણુપ્પિયા ! મમં કાલગયં જાણેત્તા સુરભિણા ગંધોદ્ધણં પ્પહાણેદ્ધ, સુ૦ ૨ પ્પહાવિત્તા પમ્મહલસુકુમા-લાપ ગંધકાસાર્ણે ગાયાદ્ધં લૂદ્ધેદ્ધ, ગા૦ ૨ લૂદ્ધેત્તા સરસેણં ગોસીસચંદ્ધણં ગાયાદ્ધં અણુલિપ્પદ્ધ, સ૦ ૨ અણુલિપિત્તા મહરિદ્ધં હંસલક્ખણં પડસાડગં નિયંસેદ્ધ, મહ૦ ૨ નિયંસિત્તા સઘાલંકારચિમ્મૂસિયં કરેદ્ધ, સ૦ ૨ કરેત્તા પુરિસસહસ્સવાહિણિં સીયં દુરુદ્ધેદ્ધ, પુરિ૦ ૨ દુરુદ્ધિત્તા સાવત્થીપ નયરીપ સિંવાડગ૦ જાવ-પહેસુ મહયા મહયા સદ્ધેણં ઉગ્ગોસેમાણા એવં વદ્ધ-‘એવં સલુ દેવાણુપ્પિયા ! ગોસાલે મંગલિપુત્તે જિણે, જિણપ્પલાઘી, જાવ-જિણસદ્ધં પગાસેમાણે વિહરિત્તા ઇમ્મીસે ઓસપ્પિણીપ ચ્ચઉઘીસાપ તિત્થયરાણં ચરિમે તિત્થયરે, સિદ્ધે, જાવ-સઘદુક્ખપ્પહીણે’-દ્ધિસકારસમુદ્ધણં મમ સરીરગસ્સ ણીહરણં કરેદ્ધ । તપ નં તે આજીવિયા થેરા ગોસાલસ્સ મંગલિપુત્તસ્સ એયમટ્ટં ઘિણણં પડિસુણેતિ ।

૩૧. સ્વાર વાદ તે અયંપુલ આજીવિક સ્થવિરોપ એ પ્રમાણે કહ્યું પડેલે દષ્ટ અને સતુષ્ટ થઈ ઉટ્ટો, ઉઠીને જ્યા મંગલિપુત્ર ગોશાલક હતો ત્યા જવા તેણે વિચાર કર્યો. સ્વારે તે આજીવિક સ્થવિરોપ મંગલિપુત્ર ગોશાલકને આમ્રફલ એક સ્થલે મૂકાવવા માટે સકેત કર્યો. સ્વાર વાદ તે મંગલિપુત્ર ગોશાલક આજીવિક સ્થવિરોનો સકેત જાણી આમ્રફલને એક સ્થલે મૂકે છે. સ્વાર પછી તે આજીવિકોપાસક અયંપુલ જ્યા મંગલિપુત્ર ગોશાલક હતો ત્યા આવી મંગલિપુત્ર ગોશાલકને ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા કરી યાવત્-પર્યુપાસના કરે છે. ‘હિ અયંપુલ ! એ પ્રમાણે કહી મંગલિપુત્ર ગોશાલકે આજીવિકોપાસક અયંપુલને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘અયંપુલ ! યેરેયર તને મચ્ચરાત્તિના સમયે યાવત્-તને સકલ્પ થયો હતો, અને જ્યા હું છું ત્યા મારી પાસે તું શીખ આવ્યો, હે અયંપુલ ! યેરેયર આ વાત સત્ય છે ?’ હા સત્ય છે. તે માટે યેરેયર આ આમ્રની ગોટલી નથી, પરન્તુ તે આમ્રફલની છાલ છે. ‘કેવા આકારવાઢી હજ્જા હોય છે’ [આવો જે સંકલ્પ થયો હતો તેના ઉત્તરમાં] વાસના મૂલના આકાર જેવી હજ્જા હોય છે. [વઢી વધે ગોશાલક ઉન્માદમા કહે છે-] ‘હે વીરા ! ઘીણા વગાડ, હે વીરા ! ઘીણા વગાડ.’ સ્વાર વાદ મંગલિપુત્ર ગોશાલકે આવા પ્રકારનો આ પ્રશ્નોનો ઉત્તર આપ્યો પડેલે પ્રસન્ન-સંતુષ્ટ અને જેતું ચિત્ત આકાર્યિત થયું છે એવો આજીવિકોપાસક અયંપુલ મંગલિપુત્ર ગોશાલકને વંદન-નમસ્કાર કરી પ્રશ્નો પૂછે છે, પ્રશ્નો પૂછીને અર્થ પ્રહણ કરે છે, અર્થ પ્રહણ કરી ઊઠી [પુનઃ] મંગલિપુત્ર ગોશાલકને વંદન અને નમસ્કાર કરી યાવત્-તે [સ્વસ્થાનકે] પાછો જાય છે.

૩૨. સ્વાર વાદ મંગલિપુત્ર ગોશાલકે પોતાનું મરણ [નજીક] જાણીને આજીવિક સ્થવિરોને બોલવ્યા, અને બોલવી તેણે એ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે દેવાનુપ્રિયો ! યારે મને કાલધર્મ પ્રાપ્ત થયેલો જાણો સ્વારે સુગંધી ગન્ધોદક વડે સ્નાન કરાવજો, સ્નાન કરાવી છેડાવાઢા અને સુકુમાલ ગન્ધકાપાય (સુગંધી ભગવા) વજ્રવડે શરીરને સાફ કરજો, શરીરને સાફ કરી સરસ ગોશીર્ષચન્દનવડે શરીરને વિલેપન કરજો, વિલેપન કરી મહામૂલ્ય હંસના ચિહ્વાઢા પટશાટકને પહેરાવજો, પહેરાવી સર્વાલંકારથી વિભૂષિત કરજો, વિભૂષિત કરી હજાર પુરુષોથી ઉપાઢવા ઢાયક શીવિકામાં વેસાડજો, શીવિકામાં વેસાડી શ્રાવસ્તી નગરીમાં શૃંગાટકના આકારવાઢા યાવત્-રાજમર્ગીમાં મોટા મોટા શબ્દથી ઉદ્ઘોષ પાળા કરતા આ પ્રમાણે કહેજો-‘એ પ્રમાણે યેરેયર હે દેવાનુપ્રિયો ! મંગલિપુત્ર ગોશાલક જિન, જિનપ્રલપી, યાવત્-જિનશબ્દને પ્રકાશ કરતા વિહરીને આ અવસર્ષિણીના ઘોષીઝ તીર્થકરોમાં છેઢા તીર્થકર થઈને સિદ્ધ થયા, યાવત્-સવંદુઃખરહિત થયા-આ પ્રમાણે ઋદ્ધિ અને સત્કારના સમુદાયથી મારા શરીરને વહાર કાઢજો.’ સ્વારે તે આજીવિક સ્થવિરોએ મંગલિપુત્ર ગોશાલકની એ વાતનો વિનયપૂર્વક સ્વીકાર કર્યો.

૩૧ \* ગોશાલક અયંપુલને કહે છે કે તું જે આમ્રફલની ગોટલી ધારે છે તે નથી, પણ આમ્રફલની છાલ છે, અને તેનું પાનક નિર્વાણસમયે પીવા યોગ્ય છે. ટીકા—

३३. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्धसम्मत्तस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिएण जाव-समुप्पज्जित्था-‘णो खलु अहं जिणे, जिणप्पलावी, जाव-जिणसइं पगासेमाणे विहरति (विहरिते), अहं णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए, समणमारए, समणपडिणीए, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए, अवन्नकारए, अकित्तिकारए, वहुह्हि असन्भावुन्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेशेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बुग्गाहेमाणे, बुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिणयसरीरे दाहवकंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं । समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव-जिणसइं पगासेमाणे विहरइ-’एवं संपेहेति, एवं संपेहिच्चा, आजीविए थेरे सद्दावेइ, आ० २ सद्दावेत्ता उच्चावयसवहस्साविए पकरेति, उच्चा० २ पकरेत्ता एवं वयासी-’नो खलु अहं जिणे, जिणप्पलावी, जाव-पकासेमाणे विहरइ (विहरिए), अहन्नं गोसाले मंखलिपुत्ते, समणघायए, जाव-छउमत्थे चेव कालं करेस्सं, समणे भगवं महावीरे जिणे, जिणप्पलावी, जाव-जिणसइं पगासेमाणे विहरइ, तं तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणेत्ता वामे पाए सुवेणं वंधह, वा० २ वंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्टुहह, ति० २ उट्टुहिच्चा सावत्थीए नगरीए सिंघाडग० जाव-पहेसु आकट्टुविकट्टिं करेमाणा महया महया सहेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदह-’नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी, जाव-विहरिए, एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते, समणघायए, जाव-छउमत्थे चेव कालगए । समणे भगवं महावीरे जिणे, जिणप्पलावी, जाव-विहरइ-’महया अणिही-असकारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेज्जाह-’एवं वदिच्चा कालगए ।

३४. तए णं आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेत्ति, दु० २ पिहेत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स बहुमज्जदेसभाए सावत्थिं नगरिं आलिहंति, सा० २ आलिहिच्चा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पादे सुवेणं वंधति, वा० २ वंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्टुमंति, उट्टुमिच्चा सावत्थीए नगरीए सिंघाडग० जाव-पहेसु आकट्टुविकट्टिं करेमाणा, णीयं २ सहेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-’नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी, जाव-विहरिए, एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए, जाव-छउमत्थे चेव कालगए । समणे भगवं महावीरे जिणे, जिणप्पलावी जाव-विहरइ, सवहपडिमोक्खणणं करंति, स० २ करेत्ता दोसं पि पूया-सकार-थिरीकरणट्टयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुवं सुयंति, सुं० २ मुइच्चा हालाहलाए

३३. हवे ते मंखलिपुत्र गोशालकने सात रात्री परिणमतां-व्यतीत यथा सम्यक्त्व प्राप्त थयुं, अने तेने आवा प्रकारानो अथ्यव-साय-सकल्प उत्पन्न थयो-“हुं खरेखर जिन नथी, तो पण जिनप्रलापी, यावत् जिन शब्दने प्रकाशतो विहर्यो हुं. हुं श्रमणनो घात कर-नार, श्रमणने मारनार, श्रमणनो प्रखनीक-विरोधी, आचार्य अने उपाध्यायनो अपयश करनार, अवर्णवादकारक अने अपकीर्ति करनार मंखलिपुत्र गोशालक हुं. तथा घणी असद्भावना वडे अने मिथ्यात्वामिनिवेश वडे पोताने, परने अने वनेने व्युद्ग्राहित-भ्रान्त करतो, व्युत्पादित ( मिथ्यात्वयुक्त ) करतो विहरीने मारा पोतानी तेजोलेक्ष्या वडे पराभव पामी सात रात्रीना अन्ते पित्तज्वरथी व्याप्त शरीरवाळो थई दाहनी उत्पत्तिथी छद्मस्थावस्थामा ज काल करीश. श्रमण भगवान् महावीर जिन छे अने जिनप्रलापी यावत्-जिनशब्दने प्रकाशित करता विहरे छे-’एम विचारी ते ( गोशालक ) आजीविक स्वविरोने बोलावे छे, बोलावीने अनेक प्रकारना सोगन आपे छे, सोगन आपीने ते आ प्रमाणे बोल्थो-“हुं खरेखर जिन नथी, पण जिनप्रलापी यावत्-जिनशब्दने प्रकाश करतो विहर्यो हुं, हुं श्रमणनो घात करनार मंखलिपुत्र गोशालक हुं, यावत्-छद्मस्थावस्थामां काळ करीश. श्रमण भगवान् महावीर जिन, जिनप्रलापी, यावत्-जिनशब्दने प्रकाश करता विहरे छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! तमे मने काळधर्म पामेलो जाणीने मारा डावा पगने दोरडावती बांधी त्रणवार मुखमा थूंकजो, थूंकनीने श्रावस्ती नगरीमा शृंगाटकना आकारवाळा, यावत्-राजमार्गने विपे घसडता अत्यन्त मोटे शब्दे उद्घोषणा करता करता एम कहेजो के ‘हे देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र गोशालक जिन नथी, पण जिनप्रलापी अने जिनशब्दने प्रकाशित करतो विहर्यो छे. आ श्रमणनो घात करनार मंखलिपुत्र गोशालक यावत्-छद्मस्थावस्थामा ज काळधर्म पाम्यो छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन अने जिनप्रलापी थई यावत्-विहरे छे, एम ऋद्धि अने सत्कारना समुदाय शिवाय मारा शरीरने वहार काढजो-’एम कहीने ते ( गोशालक ) काळधर्म पाम्यो.

३४. ल्यार पछी आजीविक स्वविरोए मंखलिपुत्र गोशालकने काळधर्म पामेल जाणीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणना द्वार बन्ध कर्या. वारणा बन्ध करीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणना वरोवर मध्य भागमा श्रावस्ती नगरीने आळेखीने मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने डावे पगे दोरडा वडे बांधीने त्रणवार मुखमा थूंकनीने श्रावस्ती नगरीना शृंगाटकना आकारवाळा, यावत्-राजमार्गने विपे घसडता घीमा घीमा शब्दथी उद्घोषणा करता करता आ प्रमाणे बोल्थो-“हे देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र-गोशालक जिन नथी, पण जिनप्रलापी थईने यावत्-विहर्यो छे, आ श्रमणघातक मंखलिपुत्र गोशालक यावत् छद्मस्थावस्थामा ज काळधर्म पाम्यो छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन, अने जिन-प्रलापी थईने यावत्-विहरे छे.” ए प्रमाणे तेओ शपथथी छूटा थाय छे, अने वीजी वार तेनी पूजा अने सत्कारने स्थिर करवामाटे मंख-लिपुत्र गोशालकना डावा पगथी दोरहुं छोडी नाखे छे, छोडी नाखी हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणना द्वार उघाडे छे, उघाडीने मंखलिपुत्र

गोशालकने सम्यक्त्व थयुं, ‘हुं जिन नथी’ एम पोतानी वास्त-विक स्थिति प्रकाशित करवी, तेनो पश्चात्ताप अने महावीरजिन छे-एयु तेनु निवेदन.

मने काळधर्म पामे-लो जाणी मारा डावा पगने दोरडावती बां-धी घसडनो अने सु-खमा थूंकजो, तथा ‘हुं जिन नथी’ एम उद्-घोषणा करता मारा शरीरने निदापूर्वक बहार काढजो-एनी गोशालकनी पोता-ना शिष्योने म-लामण.

आजीविक स्वविरोनुं हालाहला कुंभारण-ना द्वार बन्ध करी श्रा-वस्तीने बाळेखी गो-शालकना वरणा प्रमा-णे करयु.

कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवारवयणाइं अवगुणंति, अवगुणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरं सुरभिणा गंधोदपणं प्हाणंति, तं चेव जाव-महया इहि-सक्कारसमुदपणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरस्स नीहरणं करंति ।

३५. तप णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्टयाओ चेइयाओ पड्डिनिकखमति, पड्डि-  
निकखमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समणं मँडियगामे नामं नगरे होत्था, वन्नओ । तस्स णं  
मँडियगामस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं साण(ल)कोट्टए नामं चेइए होत्था, वन्नओ, जाव-पुढविसि-  
लापट्टओ । तस्स णं साण(ल)कोट्टगस्स णं चेइयस्स अदूरसामंते एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए याचि होत्था, किण्हे किण्हो-  
भासे, जाव-निकुरंभवभूए, पत्तिए, पुप्फिए, फलिए, हरियगरेरिज्जमाणे, सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे चिट्ठति । तत्थ णं  
मँडियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति, अहा, जाव-अपरिभूया । तप णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कदायि  
पुघ्वाणुपुघ्वा चरमाणे जाव-जेणेव मँडियगामे नगरे जेणेव साण(ल)कोट्टए चेइए जाव-परिसा पड्डिगया । तप णं समणस्स भग-  
वओ महावीरस्स सरीरंगंसि विपुले रोगायंके पाउच्चूए, उज्जले जाव-दुरहियासे, पित्तज्वरपरिगयसरीरे, दाहवक्कंतीए याचि ।  
विहरति, अवियाइं लोहियवच्चाइं पि पकरेइ, चाउच्चन्नं वागरेति-‘एवं खलु समणे भगवं महावीरे गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स  
तवेणं तेपणं अन्नाइट्टे समाणे अंतो छणं मासाणं पित्तज्वरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सति’ । तेणं  
कालेणं तेणं समणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सीहे नामं अणगारे, पगइभइए, जाव-विणीए मालुयाकच्छ-  
गस्स अदूरसामंते छट्टंछट्टेणं अनिक्खित्तेणं २ तवोकस्सेणं उहंवाहा जाव-विहरति । तप णं तस्स सीहस्स अणगारस्स  
ज्ञानंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव-समुप्पज्जित्था-‘एवं खलु’ ममं धम्मयारियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ  
महावीरस्स सरीरंगंसि विउले रोगायंके पाउच्चूए, उज्जले जाव-छउमत्थे चेव कालं करिस्सति, वदिस्संति य णं अन्नति-  
त्थिया-‘छउमत्थे चेव कालगए’ । इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणत्तिपणं दुक्खेणं अमिभूए समाणे आयावणभूमिओ पच्चोरुमइ

गोशालकना शरीरने सुगन्धी गन्धोदक वडे स्नान करावे छे-इत्यादि-पूर्वोक्त कहेवुं; यावत्-अत्यन्त मोटी ऋद्धि अने सत्कारना समुदायथी  
मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने बहार काढे छे.

३५. स्यार पछी श्रमण भगवान् महावीर अन्य कोइ दिवसे श्रावस्ती नगरीथी अने कोष्ठक चैलथी नीकळी बहारना देशोमां विहरे छे.  
ते काले ते समये मँडिकग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. ते मँडिकग्राम नामे नगरनी बहार उत्तर-पूर्व दिग्गाने विपे अहिं साणकोष्ठक  
(स्नानकोष्ठक ?) नामें चैल हतुं. वर्णन. यावत्-पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते साणकोष्ठक चैलनी थोडे दूर अहिं मोटुं एक मालुका (एक  
वीजवाळा) वृक्षतुं वन हतुं. ते श्याम, श्यामकान्तिवाळुं, यावत्-महामेघना समूहना जेवुं हतुं. वळी ते पत्रवाळुं, पुष्पवाळुं, फलवाळुं, हरि-  
तवर्णवडे अत्यन्त देदीप्यमान अने श्री-शोभावडे अत्यन्त सुगोभित हतुं. ते मँडिकग्राम नामे नगरमां रेवतीनामे गृहपत्नी (घरघणियाणी)  
रहेती हती. ते ऋद्धिवाळीं अने कौंडीथी परामव न पामे तेवी हती. ते समये श्रमण भगवान् महावीर अन्य कोइ दिवसे अनुक्रमे विहार  
करता यावत्-ज्यां मँडिकग्राम नामें नगर छे, अने ज्यां साणकोष्ठक नामे चैल छे त्या आल्या, यावत्-पर्यदा वादीने पाछी गई. ते वखते  
श्रमण भगवंत महावीरना शरीरने विपे महान् पीडाकारी, उज्वल-अत्यन्त दाह करनार, यावत्-दु.खे सहन करवा योग्य, यावत्-जेणे  
पित्तज्वर वडे शरीर व्याप्त करुं छे एवो अने जेमां दाह उत्पन्न थाय छे एवो रोग पेदा थयो, अने तेथी लोहीवाळ्य झाडा थवा लाग्या.  
चार वर्णना मनुष्यो कहे छे के-“ए प्रमाणे खरेखर श्रमण भगवान् महावीर मंखलिपुत्र गोशालकना तपना तेजवडे परामव पामी छ मासने  
अन्ते पित्तज्वरयुक्त शरीरवाळा थईने दाहनी उत्पत्तिथी छन्नस्थावस्थामा काळ करशे.” ते काले ते समये श्रमण भगवान् महावीरना अन्ते-  
वासी-शिष्य सिंहनामे अनगार प्रकृति वडे भद्र, यावत्-विनीत हता. ते मालुकावनथी थोडे दूर निरन्तर छट्टनो तप करवावडे वाहु उंचा  
राखी यावत्-विहरे छे. ते वखते ते सिंह अनगारने ध्यानान्तरिकामे विपे वर्तता आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्-उत्पन्न थयो-“ए  
प्रमाणे खरेखर मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवंत महावीरना शरीरने विपे अत्यन्त दाह करनार, महान् पीडाकारी रोग पेदा  
थयो छे-इत्यादि यावत्-ते छन्नस्थावस्थामा काळधर्म पामशे, अन्यतीर्थिको कहेशे के ते छन्नस्थावस्थामां काळधर्म पाम्या”-आवा प्रकारना आ  
मोटा मानसिक दु.खवडे पीडित थयेळ ते (सिंह अनगार) आतापना भूमिथी नीचे उतरी ज्यां मालुकावन छे त्या आवीने मालुकावननी अदर  
प्रवेश करीने तेणे मोटा शब्दथी कुहुकुहु (ठुठुवो मूकी)-ए रीते अत्यन्त रुदन करुं. श्रमण भगवान् महावीरे हे आर्यो ! ए प्रमाणे  
श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलावो ए प्रमाणे कहुं-“हे आर्यो ! ए प्रमाणे खरेखर मारा अन्तेवासी सिंहनामे अनगार प्रकृतिवडे भद्र छे-इत्यादि पूर्वोक्त  
कहेवुं, यावत्-तेणे अत्यन्त रुदन करुं, ते माटे हे आर्यो ! जाओ, अने तमे सिंह अनगारने बोलावो.” ज्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे  
कहुं एटले ते श्रमण निर्ग्रन्थो श्रमण भगवंत महावीरने वंदन करे छे, नमे छे, वंदन करी नमीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने साण-

आया० २ पञ्चोत्सृज्य जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अंतो अणुपविसइ, मालुया० २ अणुपविसित्ता महया २ सहेणं कुहुकुहुस्स परुत्ते । 'अज्जो'त्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ति, आमंतेत्ता एवं वयासी—'एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभइए तं चेव सद्धं भाणियद्धं, जाव—परुत्ते, तं गच्छह णं अज्जो ! तुज्जे सीहं अणगारं सइह' । तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साण(ल)कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, सा० २ पडिनिक्खमित्ता जेणेव मालुयाकच्छए जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छन्ति, तेणेव उवागच्छित्ता सीहं अणगारं एवं वयासी—'सीहा ! धम्मायरिया सइवेंति' । तए णं से सीहे अणगारे समणेहिं निग्गंथेहिं सद्धिं मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव साण(ल)कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण—पयाहिणं जाव—पज्जुवासति । 'सीहा'दि समणे भगवं महावीरे सीहं अणगारं एवं वयासी—'से नूनं ते सीहा ! ज्ञाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारुत्ते जाव—परुत्ते, से नूनं ते सीहा ! अट्टे समट्टे' ? इंता अत्थि । तं नो खलु अहं सीहा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अच्चाइट्टे समाणे अंतो छण्हं मासाणं जाव—कालं करेस्सं, अहन्नं अन्नाइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छह णं तुमं सीहा ! मंडियगामं नगरं, रेवतीए गाहावतिणीए गिहे, तत्थ णं रेवतीए गाहावतिणीए ममं अट्टाप दुवे कवोयसरीरा उवक्खड्डिया, तेहिं नो अट्टो, अत्थि से अत्ते पारियासिए मज्जारकडए कुकुडमंसए, तमाहराहि, एएणं अट्टो' । तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ट—तुट्टुं जाव—हियए समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता अतुरियमचवलमसंभंतं मुहपोत्तियं पडिलेहेति, मु० २ पडिलेहेत्ता जहा गोयमसांमी जाव—जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साण(ल)कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय० जाव—जेणेव मंडियगामे नगरे

कोष्ठक चैल्यथी नीकळी ज्यां मालुकावन छे अने ज्यां सिंह अनगार छे त्या आवे छे, त्यां आवीने तेणे सिंह अनगारने ए प्रमाणे कहुं—'हे सिंह ! धर्माचार्य तमने बोलावे छे.' ल्यारे ते सिंह अनगार श्रमण निर्प्रन्थोनी साथे मालुकावनथी नीकळी ज्या साणकोष्ठक चैल्य छे, अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्या आवे छे, त्यां आवी श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करे छे, यावत्—पर्युपासना करे छे. श्रमण भगवंत महावीरे 'हे सिंह ! ए प्रमाणे सिंह अनगारने बोलावी आ प्रमाणे कहुं—'हे सिंह ! खरेखर ध्यानान्तरिकामां वर्तता तने आवा प्रकार-नो आ सकल्प थयो हतो, यावत्—ते अत्यन्त रुदन कर्तुं हतुं ? हे सिंह ! खरेखर आ वात सल्य छे ? हा, सल्य छे. हे सिंह ! हुं नक्की मंखलिपुत्र गोशालकना तपना तेजथी पराभव पामी छमासने अन्ते यावत् काळ करीश नहि, हुं बीजा सोळ वरस जिनपणे गन्धहस्तिनी पेठे विचरीश. ते माटे हे सिंह ! तुं मंडिकग्राम नगरमां रेवती गृहपतीना घेर जा, त्या रेवती गृहपतीए मारे माटे वे \*कोहळाना फळो संस्कार करी तैयार कर्यां छे, तेतुं मारे प्रयोजन नथी, परन्तु तेथी बीजो गइकाले करेलो मार्जारकृत—मार्जारनामे वायुने शान्त करनार बीजोरा पाक छे, तेने लाव, एतुं मारे प्रयोजन छे. ल्यार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कहुं एटले ते सिंह अनगार प्रसन्न अने संतुष्ट, यावत्—प्रफुल्लितहृदयवाळा थई श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करी त्वरा, चपलता अने उतावळरहितपणे मुखवह्निकातुं प्रति-लेखन करी गौतम स्वामीनी पेठे ज्या श्रमण भगवंत महावीर छे त्या आवे छे. त्या आवीने श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करी श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने साणकोष्ठक चैल्यथी नीकळे छे, ल्याथी नीकळी त्वरारहितपणे यावत्—ज्या मंडिकग्राम नामे नगर छे त्यां आवे छे, त्यां आवी मंडिकग्राम नगरना मध्यभागमा थई ज्या रेवती गृहपतीनुं घर छे, त्यां आवी तेणे रेवती गृहपतीना घरमां प्रवेश कर्यां. ल्यारे ते रेवती गृहपतीए सिंह अनगारने आवता जोया, जोईने प्रसन्न अने संतुष्ट थई जल्दी आसनथी उमी थई, उमी थईने सिंह अनगारनी सामे सात आठ पगला सामी गई, सामी जइने तेणे त्रणवार प्रदक्षिणा करी वंदन अने नमस्कार करी ए प्रमाणे कहुं—'हे देवानुप्रिय ! आगमनतुं प्रयोजन कहो.' ल्यारे ते सिंह अनगारे रेवती गृहपतीने एम कहुं—'ए प्रमाणे खरेखर तमे श्रमण भगवंत महावीरने माटे वे कोहळा संस्कार करी तैयार कर्यां छे, तेतुं प्रयोजन नथी, परन्तु बीजो गइ काले करेलो मार्जारकृत (मार्जारवायुने शमावनार) बीजोरापाक छे तेने आपो, तेतुं प्रयोजन छे.' ल्यारे ते रेवती गृहपतीए सिंह अनगारने ए प्रमाणे कहुं—'हे सिंह ! कोण आ ज्ञानी के तपस्वी छे के जेणे तने आ रहस्य ( गुप्त ) अर्थ तुरत कळो, अने जेथी तुं जाणे छे ?'—ए प्रमाणे त्रस्कन्दकना अधिकारमा

भगवत्सुधर्म  
मनोगत भाव  
कथन.

भगवत्सुधर्म रेवती  
विकापासेथी बीज  
रापाकतु मंगाव

३५ \* आ स्थले मूळमा "दुवे कवोयसरीरा उवक्खड्डिया तेहिं नो अट्टो, अत्थि से अत्ते पारियासिए मज्जारकडए कुकुडमंसए तमाहराहि" एवो पाठ छे, तेनो टीकांमा कोइ आचार्य वे कपोत पक्षीना शरीरो छे—एवो प्रसिद्ध अर्थ करे छे, अने मार्जारकृत कुकुटमासनो पण प्रसिद्ध अर्थ स्वीकारे छे, बीजा अन्य आचार्य कपोतपक्षीना जेवो वर्ण होवाथी कृष्णाड—कोहोलु—एवो अर्थ करे छे, अने विरालिका नामे वनस्पति विशेषथी भावित कुकुटमास—बीजोरानो गर्भ—एवो अर्थ करे छे.—टीका.

† भग० सं० १ श० २ उ० १ पृ० २३४.

५० भ० सू०

તેણેવ ઉવાગચ્છદ, તે૦ ૨ ઉવાગચ્છિત્તા મૈંદિયગામં નગરં મજ્જમલ્લેણં જેણેવ રેવતીણ ગાહાવટ્ઠીણ ગિદ્દે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, તે૦ ૨ ઉવાગચ્છિત્તા રેવતીણ ગાહાવટિનીણ ગિદ્દં અણુપ્પવિટ્ટે । તપ્પ ણં સા રેવતી ગાહાવટિની સીહં અણગારં પ્પજ્જમાણં પાસતિ, પાસિત્તા દટ્ટતુટ્ટં પિપ્પામેવ આસણાથો અચ્ચુટ્ટેદ, અચ્ચુટ્ટેત્તા સીહં અણગારં સત્તદ્દ પયાદં અણુગચ્છદ, સ૦ ૨ અણુગચ્છિત્તા તિન્નુત્તો આપ્યાહિણં પયાહિણં કરેતિ, આ૦ ૨ કરેત્તા ચંદતિ નમંસતિ, ચંદિત્તા નમંસિત્તા પ્પવં વયાસી—‘સંદિસંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! કિમાગમણપ્પયોયણં’ ? તપ્પ ણં સે સીહિ અણગારે રેવતિ ગાહાવટ્ઠીણં પ્પવં વયાસી—‘પ્પવં ચલુ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! સમણસ્સ ભગવથો મહાવીરસ્સ ઇટ્ટાણ દુવે કવોયસરીરા ઉવખપાડિયા, તેહિં નો અટ્ટો, ખલિય ને અદ્દે પાગિયાતિણ મજ્જારકાડપ્પે કુલ્લમંસપ્પ ઇયામાહરાદિ, તેણં અટ્ટો’ । તપ્પ ણં સા રેવતી ગાહાવટ્ઠી સીહં અણગારં પ્પવં વયાસી—‘કેસ ણં સીહા ! સે ણાળી વા તવસ્સી વા, જેણં તવ્વ ઇદ્દે મમ તાવ ચ્છસ્સકુટે દ્દમ્મનગ્ગાણ, જઓ ણં તુમં જાણાસિ ? પ્પવં જહા સંદપ્પ, જાવ—જઓ ણં અહં જાણામિ । તપ્પ ણં સા રેવતી ગાહાવટિની સીહસ્સ અણગારસ્સ અંતિયં ઇયામટ્ટં સોઝા નિત્તમ્મ દટ્ટ—તુટ્ટા જેણેવ મચ્છ— ઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા પત્તગં મોપતિ, પત્તગં મોપત્તા જેણેવ સીહિ અણગારે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા સીહસ્સ અણગારસ્સ પડિગ્ગદાંસિ તં સઘં સંમં નિસ્સિરતિ । તપ્પ ણં તીણ રેવતીણ ગાહાવટિનીણ તેણં દ્વલ્લસુલ્લેણં જાવ—દ્વાણેણં સીહિ અણગારે પડિલ્લામિણ સમાણે દેવાડપ્પ નિવલ્લે, જહા વિજ્જયસ્સ, જાવ—જમ્મજીવિયપલ્લે રેવતીણ ગાહાવટિનીણ રેવતી૦ ૨ । તપ્પ ણં સે સીહિ અણગારે રેવતીણ ગાહાવટિનીણ ગિદ્દાઓ પડિનિન્નપ્પમતિ, પડિનિન્નપ્પમિત્તા મૈંદિયગામં નગરં મજ્જમલ્લેણં નિગ્ગચ્છતિ, નિગ્ગચ્છિત્તા જહા ગોયમસામી જાવ—મત્તપાણં પડિદંસેતિ, પડિદંસેત્તા સમણસ્સ ભગવથો મહાવીરસ્સ પાણિસિ તં સઘં સંમં નિસ્સિરતિ । તપ્પ ણં સમણે ભગવં મહાવીરે અમુચ્છિણ જાવ—અણજ્જોવવધ્દે વિલમિવ પ્પગ્ગમૂણં અપ્પાણેણં તમાહારં સરીરકોટ્ટગંસિ પ્પત્તિવવતિ । તપ્પ ણં સમણસ્સ ભગવથો મહાવીરસ્સ તમાહારં આહારિયસ્સ સમાણસ્સ સે વિપુલ્લે રોગાયંકે પિપ્પામેવ ઉવસમં પત્તે, દટ્ટે જાણ, આરોગે, ચલિયનરીરે, તુટ્ટા સમણા, તુટ્ટાઓ સમણીઓ, તુટ્ટા સાવયા, તુટ્ટાઓ સાવિયાઓ, તુટ્ટા દેવા, તુટ્ટાઓ દેવીઓ, સદેવમણુયાસુરે લોણ તુટ્ટે ‘દટ્ટે જાણ સમણે ભગવં મહાવીરે’ દટ્ટે૦ ૨ ।

૩૬. ‘મંતે’ત્તિ મગ્ગવં ગોયમે સમણં મગ્ગવં મહાવીરં ચંદતિ નમંસતિ, ચંદિત્તા નમંસિત્તા પ્પવં વયાસી—‘પ્પવં ચલુ દેવાણુપ્પિયાણં અંતેવાસી પાઈણજાણવપ્પ સઘાણુભૂતીનામં અણગારે પગ્ગનિમ્મદ્દ જાવ—વિળીણ, સે ણં મંતે ! તદ્દા ગોસાલેણં મંચલિપુત્તેણં તવેણં તેણં માસરાસીકપ્પ સમાણે કાહિં ગણ, કાહિં ઉવવધ્દે ? [૩૦] પ્પવં ચલુ ગોયમા ! મમં અંતેવાસી પાઈણજાણવપ્પ સઘાણુભૂતીનામં અણગારે પગ્ગમ્મદ્દ જાવ—વિળીણ, સે ણં તદ્દા ગોસાલેણં મંચલિપુત્તેણં માસરાસીકપ્પ સમાણે ઉહં ચંદિમંચ્છ સૂરિય૦ જાવ—વંમ—લંતક—મહાસુલ્લે કપ્પે વીદ્ધચ્છિત્તા સહસ્સારે કપ્પે દેવચ્છાણ ઉવવધ્દે । તત્થ ણં અત્થેગતિયાણં દેવાણં અટ્ટ

કહ્યા પ્રમાણે અહિં કહેલું, યાવત્—જેથી ( ભગવંતના કથનથી ) હું જાણું છું. ત્યારે તે રેવતી ગૃહપત્ની સિંહ અનગારનો ૯ વાત સાંભળી, હૃદયમાં અવધારી દ્રષ્ટ અને સંતુષ્ટ થઈ ત્યાં મક્કગૃહ—રસોટું છે ત્યાં આવીને પાત્ર નીચે મૂકે છે, પાત્ર નીચે મૂકીને ત્યાં સિંહ અનગાર છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને સિંહ અનગારના પાત્રને વિષે તે સર્વ ( વીજોગ પાત્ર ) આપે છે. તે સમયે તે રેવતી ગૃહપત્ની ૯ દ્રવ્યશુદ્ધ ૯વા યાવત્—તે ઠાનવડે સિંહ અનગારને પ્રતિભાષિત કરવાથી દેવાયુપ વાચું, યાવત્—\*વિજયની પેટે રેવતી ૯ ‘જન્મ અને જીવિતવ્યતું ફલ પ્રાપ્ત કર્યું ૨’—૯વી ઉદ્વોષણ થઈ. હવે તે સિંહ અનગાર રેવતી ગૃહપત્નીના ઘરથી નીકળી મૈંદિકપ્રામ નગરના મન્ચભાગમાં થઈને નીકળે છે, નીકળી ‘ગૌતમસ્વામીની પેટે માત—પાળી દેખાડે છે. દેખાડી શ્રમણ ભગવંત મહાવીરના હાયમા તે સર્વ સારી રીતે મૂકે છે. ત્યાર વાદ શ્રમણ ભગવંત મહાવીર મૂર્છા—આસક્તિરહિત, યાવત્—તૃષ્ણારહિતપણે સર્વ જેમ વિલમા પેસે તેમ પોતે તે આહારને શરીરરૂપ કોષ્ટમા નાખે છે. હવે તે આહારને આધા પછી શ્રમણ ભગવંત મહાવીરનો તે મહાન્ પીડાકારી રોગ તુરત જ શાન્ત થયો. તે દ્રષ્ટ, રોગરહિત અને વલ્લાનશરીરવાલ્ય થયા. શ્રમણો તુષ્ટ થયા, શ્રમણીઓ તુષ્ટ થઈ, શ્રાવકો તુષ્ટ થયા, શ્રાવિકાઓ તુષ્ટ થઈ, વેગો તુષ્ટ થયા, દેવીઓ તુષ્ટ થઈ, અને દેવ, મનુષ્ય અને અસુરો સહિત સમગ્ર વિશ્વ સંતુષ્ટ થયું કે ‘શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર દ્રષ્ટ—રોગરહિત થયા.’

૩૬. [પ્ર૦] મગ્ગવાન્ ગૌતમે ‘મગ્ગવન્’ ! એમ કહી શ્રમણ મગ્ગવાન્ મહાવીરને વંદન અને નમસ્કાર કરી ૯ પ્રમાણે કહ્યું—૯ પ્રમાણે યાવત્—વિનીત હતા, હે મગ્ગવન્ ! ત્યારે તેને મંચલિપુત્ર ગોશાલકે તપના તેજથી મસ્મરાશિરૂપ કર્યા ત્યારે તે મરીને ક્યા ગયા, ક્યા ઉત્પન્ન થયા ? [૩૦] ‘૯ પ્રમાણે યાવત્—વિનીત હતા, તેને ત્યારે મંચલિપુત્ર ગોશાલકે મસ્મરાશિરૂપ કર્યા ત્યારે તે ઝર્યલોકમાં ચન્દ્ર અને સૂર્યને, યાવત્—ત્રણ, લાન્તક અને મહાશુક કરૂપને ઓલંગી સહસ્સાર કરૂપમાં દેવરૂપે ઉત્પન્ન થયા. ત્યાં કેટલાક એક દેવોની અદાર સાગરોપમની સ્થિતિ કહી છે. ત્યાં સર્વાતુભૂતિ દેવની પળ અદાર સાગરોપમની

રસ સાગરોવમાદં ઠિતી પન્નત્તા, તત્થ ણં સઘાણુભૂતિસ્સ વિ દેવસ્સ અટ્ટારસ સાગરોવમાદં ઠિતી પન્નત્તા । સે ણં સઘાણુભૂતી દેવે તાઓ દેવલોગાઓ આડક્ષણં, ઠિદ્ધક્ષણં, જાવ-મહાવિદેહે વાસે સિદ્ધિહિતિ, જાવ-અંતં કરેહિતિ ।

૩૭. [પ્ર૦] एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसलजाणवण सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभइए जाव-विणीए, से णं भंते ! तदा णं गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उवचन्ने ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभइए जाव-विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, ते० २ उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महद्वयाइं आरुभेति, सयमेव० २ आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिकंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उहं चंदिम-सूरिय० जाव-आणय-पाणया-रणकप्पे वीईवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उवचन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं वावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स वावीसं सागरोवमाइं, सेसं जहा सघाणुभूतिस्स, जाव-अंतं काहिति ।

૩૮. [પ્ર૦] एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उवचन्ने ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघायए, जाव-उउमत्थे चेव कालमासे कालं किच्चा उहं चंदिम-सूरिय० जाव-अच्चुए कप्पे देवत्ताए उवचन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं वावीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । तत्थ णं गोसालस्स वि देवस्स वावीसं सागरोवमाइं ઠિતી પન્નત્તા ।

૩૯. [પ્ર૦] સે ણં ભંતે ! ગોસાલે દેવે તાઓ દેવલોગાઓ આડક્ષણં ૩ જાવ-કાહિં ઉવવજ્ઞિહિતિ ? [ઉ૦] ગોયમા ! ઇહેવ જંબુદ્વીવે દ્વીવે મારહે વાસે વિંદ્ધગિરિપાયમૂલે પુંડેસુ જળવપ્પુ સયદુવારે નગરે સંમુતિસ્સ રત્તો મહાપ મારિયાપ કુ-ચ્છિસિ પુત્તપ્પા પચ્ચાયાહિતિ । સે ણં તત્થ નવણં માસાણં વહુપહ્વિપુત્ત્રાણં જાવ-વીતિકંતાણં જાવ-સુરુવે દારપ્પ પયાહિતિ ।

સ્થિતિ છે, તે સર્વાનુભૂતિ દેવ તે દેવલોકથી આયુપનો ક્ષય થવાથી અને સ્થિતિનો ક્ષય થવાથી યાવત્-મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા સિદ્ધ થશે, યાવત્-સર્વ દુઃખોનો અન્ત કરશે.

૩૭. [પ્ર૦] ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपना शिष्य कोशल देशमा उत्पन्न थयेला सुनक्षत्र नामे अनगार प्रकृतिना भद्र, यावत्-विनीत हता, तेने ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजयी परिताप उत्पन्न कर्यो ल्यारे ते मरणसमये काळ करीने क्या गया, क्या उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे खरेखर मारो शिष्य सुनक्षत्र नामे अनगार प्रकृतिनो भद्र यावत्-विनीत हतो, तेने ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजयी परिताप उत्पन्न कर्यो ल्यारे ते मारी पासे आब्यो, मारी पासे आवी वन्दन-नमस्कार करी खयमेव पाच महाव्रतोनो उच्चार करी श्रमण अने श्रमणीओने खमावी, आलोचना अने प्रतिक्रमण करी, समाधिने प्राप्त थई मरणसमये काळ करीने ऊर्ध्व लोकमा चन्द्र अने सूर्यने तथा यावत्-आणत, प्राणत अने आरण कल्पने ओळंगी अच्युत देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्या केटलाएक देवोनी वावीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. तेमा सुनक्षत्र देवनी पण वावीश सागरोपमनी स्थिति छे. वाकी वसुं सर्वाणुभूति संबन्धे कछुं छे तेम अहि जाणवुं; यावत्-सर्व दुःखोનો अन्त करशे.

૩૮. [પ્ર૦] ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपनो अन्तेवासी कुशिष्य मंखलिपुत्र गोशालक छे, ते मंखलिपुत्र गोशालक मरण समये काळ करीने क्या गयो, क्या उत्पन्न थयो ? [उ०] ए प्रमाणे खरेखर हे गौतम ! मारो अन्तेवासी कुशिष्य मंखलिपुत्र गोशालक जे श्रमणनो घातक अने यावत्-उत्पन्न हतो, ते मरणसमये काळ करीने ऊर्ध्वलोकमा चन्द्र अने सूर्यने ओळंगी यावत्-अच्युत कल्पने विपे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटला एक देवोनी वावीश सागरोपमनी स्थिति कही छे, त्यां गोशालक देवनी पण वावीश सागरोपमनी स्थिति छे.

૩૯. [પ્ર૦] ते गोशालक देव ते देवलोकથી આયુપના ક્ષય થવાથી ૩ યાવત્-ક્યા ઉત્પન્ન થશે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! આ જંબુ-દ્વીપનામે દ્વીપમા ભરત ક્ષેત્રને વિપે વિન્ધ્યાચલ પર્વતની તલેટીમા પુંડનામે દેશને વિપે શતદ્વારનામે નગરમાં સમુતિ ( સન્મૂર્તિ ) નામે રાજાને ભદ્રા નામે માર્યાની કુક્ષિને વિપે પુત્રરૂપે ઉત્પન્ન થશે. તે લ્યા નવ માસ વરોવર પૂર્ણ થયા વાદ અને સાઢા સાત દિવસ વીસ્યા પછી યાવત્-સુન્દર વાઙ્કાને જન્મ આપશે.

સુનક્ષત્ર અનગાર  
કાલ કરી ક્યા ગયો

ગોશાલક કાલ  
ક્યા ગયો ?

ગોશાલક દેવલોક  
ચવી ક્યા ગયો

૪૦. જં ર્યાણં ચ ણં સે દારણ જાઠહિતિ, તં ર્યાણં ચ ણં સ્યદુવારે નગરે સમ્મિતરવાહિરિય ભારગસો ય કુંમગસો ય પડમવામે ય ર્યાણવાસે ય વામે વાસિહિતિ । તપ ણં તસ્સ દારણસ્સ અમ્માપિયરો પ્ફારસમે દિવસે ધીનિઘંતે જાવ-સંપસે વારસાહદિવસે અયમેયારુવં ગોણં ગુણનિપ્પઘ્નં નામધેજં કાર્હિતિ-‘જમ્હા ણં અમ્હં ઇમસિ દારણમિ જાયસિ સમાણંસિ સયદુવારે નગરે સમ્મિતરવાહિરિય જાવ-ર્યાણવાસે યુટ્ટે, તં હોડ ણં અમ્હં ઇમસસ દારણસ્સ નામધેજં મહાપડમે મહાં’ ૨ । તપ ણં તસ્સ દારણસ્સ અમ્માપિયરો નામધેજં કરેહિતિ ‘મહાપડમે’ત્તિ । તપ ણં તં મહાપડમં દારણં અમ્માપિયરો સાતિરે ગદ્ધવાસજાયગં જાણિત્તા સોમણંસિ તિહિ-કરણ-દિવસ-નમ્મયત્ત-મુણ્તંસિ મહયા ૨ રાયાભિસેગેણં અભિસિંચેહિતિ । સે ણં તત્થ રાયા ભવિસ્સતિ, મહયાહિમચંતં વપ્પથો, જાવ-વિહરિસ્સદ્ધ । તપ ણં તસ્સ મહાપડમસ્સ રઘ્નો અપ્પદા કદાપિ હો દેવા મહદિયા જાવ-મહેસક્ખા સેણાકમ્મં કાર્હિતિ । તંજહા-પુત્તમહે ય માણિમહે ય । તપ ણં સયદુવારે નગરે વહવે રાઈ-સર-તલવરં જાવ-સત્થવાહપ્પભિદ્ધો અપ્પમરં સદ્ધાવેહિતિ, અં ૨ સદ્ધાવેત્તા ધ્વં વદેહિતિ-‘જમ્હા ણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં મહાપડમસ્સ રઘ્નો દ્વો દેવા મહદિયા જાવ-સેણાકમ્મં કરંતિ, તંજહા-પુત્તમહે ય માણિમહે ય, તં હોડ ણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં મહાપડમસ્સ રઘ્નો દ્વોં વેં પિ નામધેજે ‘દેવસેને દે’ ૨ । તપ ણં તસ્સ મહાપડમસ્સ રઘ્નો દ્વોં વેં વિ નામધેજે ભવિ-સ્સતિ ‘દેવસેને’તિ ૨ ।

૪૧. તપ ણં તસ્સ દેવસેણસ્સ રઘ્નો અપ્પયા કયાહ સેતે સંપતલવિમલસન્નિગાસે ચડહંતે હત્થિર્યાણે સમુપ્પજિસ્સદ્ધ । તપ ણં સે દેવસેને રાયા તં સેયં સંપતલવિમલસન્નિગાસં ચડહંતં હત્થિર્યાણં દુરુદ્ધે સમાણે સયદુવારં નગરં મજ્જમન્નેણં અભિવક્ષણં ૨ અભિજાહિતિ, નિજ્ઞાહિતિ ય । તપ ણં સયદુવારે નગરે વહવે રાઈસરં જાવ-પમિદ્ધો અપ્પમરં સદ્ધાવેહિતિ, અં ૨ સદ્ધાવેત્તા વદેહિતિ-જમ્હા ણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં દેવસેણસ્સ રઘ્નો સેતે સંપતલસન્નિકાસે ચડહંતે હત્થિર્યાણે સમુપ્પન્ને, તં હોડ ણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં દેવસેણસ્સ રઘ્નો તથ્થે વિ નામધેજે ‘વિમલવાહણે વિ’ ૨ । તપ ણં તસ્સ દેવસેણસ્સ રઘ્નો તથ્થે વિ નામધેજે ‘વિમલવાહણે’ત્તિ ।

૪૨. તપ ણં સે વિમલવાહણે રાયા અપ્પયા કદાપિ સમણોદિં નિગ્ગંધેદિં મિચ્છં વિપ્પડિવજ્જિહિતિ, અપ્પેગતિય આડસે-હિતિ, અપ્પેગતિય અવહસિહિતિ, અપ્પેગતિય નિચ્છોડેહિતિ, અપ્પેગતિય નિન્મત્થેહિતિ, અપ્પેગતિય વંધેહિતિ, અપ્પેગતિય ણિહં-

૪૦. જે રાત્રિને વિપે તે વાઙ્કનો જન્મ થયો, તે રાત્રિને વિપે શતદ્વાર નામે નગરમાં અંદર અને બહાર અનેક \*મારપ્રમાણ અને અનેક કુંભપ્રમાણ વૃષ્ટિરૂપ પદ્મની વૃષ્ટિ અને રત્નની વૃષ્ટિ થશે. તે વખતે તે વાઙ્કના માત-પિતા અગીયારમો દિવસ ધીલા પછી વારસે દિવસે આવા પ્રકારનું ગુણયુક્ત અને ગુણનિપ્પન્ન નામ કરશે-“જે હેતુથી અમારા આ વાઙ્કનો જન્મ થયો દેવલે શતદ્વાર નગરને વિપે વાચ અને અંદર યાવત્-રત્નની વૃષ્ટિ થઈ, તે માટે અમારા આ વાઙ્કનું નામ ‘મહાપદ્મ’ ૨ હો.” સ્વાર પછી તે વાઙ્કના માત-પિતા ‘મહાપદ્મ’ એવું નામ પાડશે. સ્વાર પછી તે મહાપદ્મ વાઙ્કને માતાપિતા કાંઈક અધિક આઠ વર્ષનો થયેલો જાણીને સારા તિથિ, કરણ, દિવસ નક્ષત્ર અને મુહૂર્તને વિપે અલ્પનત મોટા રાજ્યાભિષેકવડે અભિષેક કરશે. હવે તે રાજા થશે, તે મહાહિમવાન આદિ પર્વતની જેમ બલવાલો થશે-ઈત્યાદિ વર્ણન જાણું, યાવત્-તે વિહરશે. હવે અન્ય કોઈ દિવસે તે મહાપદ્મ રાજાનું મહર્દિક યાવત્-મહાસુખવાળા વે દેવો સેનાકર્મ કરશે. તે દેવોના નામ આ પ્રમાણે-પૂર્ણમદ્ર અને માણિમદ્ર. સ્વાર પછી શતદ્વાર નગરને વિપે ઘણા માંડલિક રાજાઓ, યુવરાજા, તલવર, યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુખ પરસ્પર બોલાવીને એ પ્રમાણે કહેશે કે-‘હે દેવાનુપ્રિયો ! જે હેતુથી અમારા મહાપદ્મ રાજાનું વે મહર્દિક દેવો યાવત્-સેનાકર્મ કરે છે, તે દેવોના નામ આ પ્રમાણે-પૂર્ણમદ્ર અને માણિમદ્ર, તે માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા મહાપદ્મ રાજાનું વીંજું નામ ‘દેવસેન’ ૨ હો, તે વખતે તે મહાપદ્મ રાજાનું ‘દેવસેન’ એવું વીંજું નામ થશે.

૪૧. સ્વાર વાદ તે દેવસેન રાજાને અન્ય કોઈ દિવસે શ્વેત, નિર્મલ શંખના તલ્લીયાસમાન અને ચાર દન્તવાળું હસ્તિરત્ન ઉત્પન્ન થશે, સ્વારે તે દેવસેન રાજા શ્વેત, નિર્મલ શંખના તલ્લીયાસમાન અને ચાર દન્તવાળા હસ્તિરત્ન ઉપર ચઢીને શતદ્વાર નગરના મધ્યભાગમાં થઈને વારં-વાર જશે અને નીકળશે. તે વખતે શતદ્વાર નગરને વિપે ઘણા માંડલિક રાજાઓ, યુવરાજા યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુખ એક વીંજાને બોલાવશે, બોલાવીને કહેશે કે ‘હે દેવાનુપ્રિયો ! જેથી અમારા દેવસેન રાજાને શ્વેત, નિર્મલ શંખતલ્લીયા જેવો અને ચાર દાંતવાળો ઉત્તમ હસ્તી ઉત્પન્ન થયો છે, તે માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા દેવસેન રાજાનું વીંજું નામ ‘વિમલવાહન’ હો. સ્વારે તે દેવસેન રાજાનું ‘વિમલવાહન’ એવું વીંજું નામ પડશે.

૪૨. સ્વાર વાદ તે વિમલવાહન રાજા અન્ય કોઈ દિવસે શ્રમણ નિર્મળ્યોની સાથે મિથ્યાલ-અનાર્થપણું આચરશે, કેટલાક શ્રમણ નિર્મળ્યોનો આશ્રોગ કરશે, કેટલાકની હાસી કરશે, કેટલા એકને જુદા પાડશે, કેટલાએકની નિર્મલ્સના કરશે, કેટલાએકને વાંધશે,

૪૦ \* વીંજ પલ અથવા સો પલને માર કહે છે, અને સાત શાઢક પ્રમાણ, એકી શાઢક પ્રમાણ અને સો શાઢક પ્રમાણ માનને જપ્પ્ય, મધ્ય અને વટ્ટટ કુમ કહે છે.

अहेति, अप्पेगतियाणं छविच्छेदं करेहिति, अप्पेगतिप पमारहेति, अप्पेगतियाणं उद्वेहिति, अप्पेगतियाणं वत्थं, पडिग्गहं, कंबलं, पायपुंछणं आच्छिदिहिति, विच्छिदिहिति, मिदिहिति, अवहरिहिति, अप्पेगतियाणं भत्तपाणं वोच्छिदिहिति, अप्पेगतिप णिन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिप निव्विसप करेहिति । तए णं सयदुवारे नगरे वहवे राईसर० जाव-वदिहिंति-एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने अप्पेगतिप आउस्सति, जाव-निव्विसप करेति, तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं अहं सेयं, नो खलु एयं विमलवाहणस्स रत्तो सेयं, नो खलु एयं रत्तस्स वा रट्टस्स वा वलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जणं विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अहं विमलवाहणं रायं एयमट्टं विन्नवित्तप, त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्टं पडिसुणेंति, अ० २ पडिसुणित्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, ज० २ वद्धावेत्ता एवं वदिहिंति-‘एवं खलु देवाणुप्पिया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना अप्पेगतिप आउस्संति, जाव-अप्पेगतिप निव्विसप करेंति, तं नो खलु एयं देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एयं अहं सेयं, नो खलु एयं रत्तस्स वा जाव-जणवयस्स वा सेयं, जं णं देवाणुप्पिया ! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, तं विरमंतु णं देवाणुप्पिया ! एअस्स अट्टस्स अकरणयाप ।

४३. तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं वहूहिं राईसर० जाव-सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्टं विन्नत्ते समाणे ‘नो धम्मो’त्ति ‘नो तवो’त्ति मिच्छा विणएणं एयमट्टं पडिसुणेहिं(हि)ति । तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं सुभूमिभागे नामं उज्जाणे भविस्सइ । सद्योउय० वन्नओ । तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पउप्पए सुमंगले नामं अणगारे जाइसंपन्ने० जहा धम्मघोसस्स वन्नओ, जाव-संखित्तविउलतेयलेस्से, तिन्नाणोवगए, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्टंछट्टेणं अणिव्वित्तेणं जाव-आयावेमाणे विहरिस्सति ।

४४. तए णं से विमलवाहणे राया अन्नया कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति । तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्टंछट्टेणं जाव-आयावेमाणं पासिहिति । पासित्ता

केटलाएकने रोकशे, केटलाएकना अवयवोनो छेद करशे, केटलाएकने मारशे, केटलाएकने उपद्रव करशे, केटलाएकना वल्ल, पात्र, कावल अने पादपुंछन छेदशे, विशेष छेदशे, मेदशे, अपहरण करशे; केटलाएकना भात-पाणीनो विच्छेद करशे, केटलाएकने नगरथी बहार काडशे अने केटलाएकने देशथी बहार काडशे. ते समये शतद्वार नगरने विपे घणा मांडलिक राजाओ अने युवराजाओ यावत् परस्पर-कहेशे के ‘हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर विमलवाहन राजाए श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्या-अनार्यपणुं स्वीकार्युं छे, यावत्-केटलाएकने देशथी बहार काडे छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! ए आपणने श्रेयरूप नथी, आ विमलवाहन राजाने श्रेयरूप नथी, तेमज आ राज्यने, आ राष्ट्रने, वल्लने, वाहनने, पुरने, अन्तःपुरने के देशने श्रेयरूप नथी के जे विमलवाहन राजाए श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्या-अनार्यपणुं स्वीकार्युं छे. ते माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे विमलवाहन राजाने आ वात जणाववी योग्य छे.’-एम विचारी एक बीजानी पासे आ वातनो स्वीकार करे छे, स्वीकार करीने ज्या विमलवाहन राजा छे त्यां आवेछे, त्या आवीने करतल परिगृहीत करीने-हाथ जोडीने विमलवाहन राजाने जय अने विजयथी वधावेछे. वधावीने एम कहेशे के ‘हे देवानुप्रिय ! आप श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्या-अनार्यपणाने आचरता केटलाएकनो आक्रोश करो छे, यावत्-केटलाएकने देशथी बहार काढे छे, ते देवानुप्रिय एवा आपने श्रेयरूप नथी, ए अमने पण श्रेयरूप नथी, तेमज आ राज्यने, यावत्-देशने श्रेयरूप नथी के जे देवानुप्रिय एवा आप श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्यात्व-अनार्यपणुं आचरो छे, ते माटे हे देवानुप्रिय ! आप नहि करवा वडे आ कार्यथी वन्ध पडो’.

४३. ज्यारे ते घणा मांडलिक राजाओ, युवराजाओ यावत्-सार्थवाहप्रमुख आ वावत विनति करशे ल्यारे ते विमलवाहन राजा ‘धर्म नथी, तप नथी’-एवी सुद्धिथी मिथ्या विनय वडे आ वात कवूल करशे. हवे ते शतद्वार नगरनी बहार उत्तर-पूर्व दिशाए अहिं सुभूमिभाग नामे उद्यान हशे. ते सर्व ऋतुना पुष्पादिकयुक्त-इत्यादि वर्णन जाणवुं. ते काले ते समये विमलनामे तीर्थकरना प्रपौत्र-शिष्य परपरामा थयेला सुमंगल नामे अनगार हशे. ते जातिसपन-इत्यादि धर्मघोष अनगारना वर्णन प्रमाणे वर्णन करवुं, यावत्-सक्षित अने विपुल तेजोलेश्यावाळा, त्रण ज्ञान वडे सहित ते सुमंगल नामे अनगार सुभूमिभाग नामे उद्यानथी थोडे दूर निरन्तर छट्टनो तप करवावडे यावत्-आतापना लेता विहरशे.

४४. हवे ते विमलवाहन राजा अन्य कोई दिवसे रयचर्या करवा निकळशे ल्यारे सुभूमिभाग नामे उद्यानथी थोडे दूर रयचर्या करतो ते विमलवाहन राजा निरंतर छट्टनो तप करता यावत्-आतापना लेता सुमंगल अनगारने जोशे. जोइने कोपाविष्ट थयेले यावत्-

विमलवाहन राजा  
श्रमण निर्ग्रन्थोनी  
साथे अनार्यपणा  
आचरण.

सुमंगल अनगार



आसुरत्ते जाव-मिसिमिलेमाणे सुमंगले अणगारं रहसिरेणं णोह्वावेदिति । तप णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रणा रहसिरेणं नोह्वाविण समाणे सणियं २ उट्टेदिति, उट्टेत्ता दोषं पि उट्टं वाहाओ पणिल्लिय २ जाव-आयावेमाणे विहरिस्सति । तप णं से विमलवाहणे राया सुमंगले अणगारं दोषं पि रहसिरेणं णोह्वावेदिति । तप णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रणा दोषं पि रहसिरेणं णोह्वाविण समाणे सणियं २ उट्टेदिति, उट्टेत्ता ओह्मि पउंजेदिति, ओ० २ पउंजिना विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं ओह्मिणा आभोग्गदिति, आभोग्गत्ता विमलवाहणं रायं एवं वट्टदिति-‘नो एत्तु तुमं विमलवाहणे राया, नो एत्तु तुमं देवसेणे राया, नो एत्तु तुमं महापउमे राया, तुमण्णं इओ तथे भवग्गहणे गोसाळे नामं मंगल्लिपुत्ते होत्था, समणवायए, जाव-एउमत्थे चेव कालगए, तं जति ते तदा सद्धाणुभूतिणा अणगारेणं पमुणा वि होऊणं सम्मं सहियं, रामियं, निनिम्मियं, अहियासियं, जइ ते तदा सुजग्गत्तेणं अणगारेणं जाव-अहियासियं, जइ ते तदा समणेणं भगवथा महात्तारेणं पमुणा वि जाव-अहियासियं, तं नो एत्तु ते अहं तदा सम्मं सहिस्सं, जाव-अहियासिस्सं; अहं ते नयरं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेपणं पगाहच्चं कूडाहच्चं भासरारिं करेज्जामि ।

४५. तप णं से विमलवाहणे राया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते जाव-मिसिमिलेमाणे सुमंगले अणगारं तथं पि रहसिरेणं णोह्वावेदिति । तप णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तथं पि रहसिरेणं नोह्वाविण समाणे आसुरत्ते जाव-मिसिमिलेमाणे आयावणभूर्माओ पच्चोरुभइ, आ० २ पच्चोदमिच्चा तेयासनुवाएणं समोह्मिदिति, तेया० २ समोह्मिच्चा सत्तट्ट पयाइं पच्चोसकिदिति, सत्तट्ट० २ पच्चोसकिच्चा विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेपणं जाव-भासरारिं करेदिति ।

४६. [प्र०] सुमंगले णं भंते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव-भासरारिं करेत्ता कदिं गच्छिदिति, कदिं उवयच्चिदिति ? [उ०] गोयमा ! सुमंगले अणगारे णं विमलवाहणं रायं सहयं जाव-भासरारिं करेत्ता वहुहं एट्ट-ट्टम-दम्म-दुवा-लस० जाव-विचिच्चेहिं तवोक्कमेहिं अष्णाणं भावेमाणे वहुहं चासाइं सामन्नपरियाणं पाउणेदिति, पाउणिच्चा मासियाए संले-ह्णाए सदिं भत्ताइं अणसणाए जाव-एदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समादिपत्ते उट्टं चंदिम० जाव-गैयिच्चिमाणावाससयं वीथी-

क्रोवथी अत्यन्त वळ्णो एवो ते राजा रथना अग्रभाग वडे सुमंगळ अनगारने अभिघात करी पाडी नाखये. प्यारे विमलवाहन राजा रथना अग्रभागवडे ते सुमंगळ अनगारने पाडी नाखये ल्यारे ते सुमंगळ अनगार धीमे धीमे उठये, उठीने वीजीवार ऊंचा हाथ करी करीने आ-तापना केना विहरये; ल्यारे ते विमलवाहन राजा सुमंगळ अनगारने वीजीवार रथना अग्रभागवडे अभिघात करी पाडी नाखये. प्यारे विमलवाहन राजा सुमंगळ अनगारने वीजीवार रथना अग्रभागवडे अभिघात करी पाडी नाखये ल्यारे ते सुमंगळ अनगार धीमे धीमे उठये, उठीने अवधिज्ञान प्रयुंजये, अवधिज्ञान प्रयुंजीने विमलवाहन राजाने अतीतकाळे अवधिज्ञान वडे जोशे, जोशेने विमलवाहन राजाने एम कहये-“तुं खरेखर विमलवाहन राजा नथी, तुं खरेखर देवनेन राजा नथी, तुं खरेखर महापन्न राजा नथी, तुं आ मवथी वीजा भवमां मंखलिपुत्र गोशालकनामे हतो, अने श्रमणनो धान करनार तुं छग्गस्यावस्थामां काळधर्म पाम्पो हतो, जो के ते वखने सर्वाणुभूति अनगारे समर्थ छतां पण तारो अपराध सम्भक् प्रकारे सहन कर्यो, तेनी क्षमा करी, तितिक्षा करी अने तेने अप्यासिन कर्यो, जो के ते वखने सुनधन्न अनगारे पण यावत्-अप्यासिन-सहन कर्यो, जो के ते समये श्रमण भगवान् महावीरे समर्थ छतां पण यावत्-सहन कर्यो, परन्तु खरेखर हुं ते प्रमाणे सम्भक् सहन नहिं करं, यावत्-अप्यासिण नहिं, हुं घोडा, रथ अने सारथिसहित तने मारा तपना तेजथी एकवए कूटावान-पापाणमय वंजना आधानती जेम भत्तराशिरूप करीश.”

४५. प्यारे ते सुमंगळ अनगारे ए प्रमाणे काळुं ल्यारे अत्यन्त गुस्से थयेले अने यावत्-अत्यन्त क्रोवथी वळ्णो ते विमलवाहन राजा सुमंगळ अनगारने वीजी वार पण रथना अग्रभाग वडे अभिघात करी पाडी नाखये. प्यारे विमलवाहन राजा रथना अग्रभागवडे वीजीवार ते सुमंगळ अनगारने अभिघात करी पाडी नाखये ल्यारे अत्यन्त गुस्से थयेले अने यावत्-क्रोवथी वळ्णो एवा ते सुमंगळ अन-गार आनापना भूमिथी उतरी तैजस समुद्वात करये, तैजस समुद्वात करीने, सात आठ पगळां पाछा जइ घोडा, रथ अने सारथिसहित विमलवाहन राजाने भत्तराशिरूप करये.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! सुमंगळ अनगार घोटासहित, यावत्-विमलवाहन राजाने भत्तराशिरूप करीने [काळ करी] क्या जशे क्या उपपन्न थये ? [उ०] हे गौतम ! सुमंगळ अनगार विमलवाहन राजाने घोडासहित यावत्-भत्तराशिरूप करीने घणा प्रकारना छट्ट, अट्टम, दशम (चार उपवास), द्वादश मक्त (पाच उपवास) यावत्-विचित्र तपकर्म वडे आत्माने भावित करता घणा वरस सुधी श्रमणपणान पर्याने पाळये. पाळीने मासिक सलेखना वडे साठ मक्त अनशनपणे चीतावीने आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त थई ऊर्ध्व

पञ्चा सङ्घट्टसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता ।  
य णं सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । से णं भंते ! सुमंगले देवे ताओ देव-  
गेगाओ जाव-महाविदेहे वासे सिज्जिहिति, जाव-अंतं काहिति ।

४७. [प्र०] विमलवाहणे णं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहए जाव-भासरासीकए समाणे कर्हिं गच्छिहिति,  
र्हिं उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! विमलवाहणे णं राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये जाव-भासरासीकए समाणे अहेस-  
त्ताए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जि-  
हेति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवकंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि अहेसत्तामाए पुढवीए उक्कोसकालट्टितीयंसि नर-  
यंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं तथोऽणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-  
केच्चा छट्टीए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं तथोर्हितो जाव-उव्वट्टित्ता  
स्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे दाह० जाव-दोच्चं पि छट्टीए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल० जाव-उव्वट्टित्ता  
दोच्चं पि स्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल० जाव-उव्व-  
ट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा दोच्चं पि पंचमाए जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि उरएसु उवव-  
ज्जिहिति, जाव-किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्टितीयंसि जाव-उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति । तत्थ  
वि णं सत्थवज्जे तहेव जाव-किच्चा दोच्चं पि चउत्थीए पंक० जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा  
तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल० जाव-उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा  
दोच्चं पि तच्चाए वालुय० जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव-उव्वट्टित्ता  
सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ० जाव-किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु  
उववज्जिहिति, जाव-किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्टितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । जाव-उव्व-  
ट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा असन्नीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-

लोकमां चन्द्र अने सूर्य, यावत्-सो त्रैवेयक विमानावासने ओळंगी सर्वार्थसिद्ध महाविमानमा देवपणे उपजणे. त्या देवोनी जघन्य अने  
उत्कृष्टरहित एवी तेन्नीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्या सुमंगल देवनी पण जघन्य अने उत्कृष्टरहित एवी तेन्नीश सागरोपमनी स्थिति  
हशे. ते सुमंगल देव ते देवलोकथी यावत्-भवना क्षय थवाथी महाविदेह क्षेत्रमा सिद्ध थशे, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करणे.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे सुमंगल अनगार घोडासहित विमलवाहन राजाने यावत्-भस्मराशिरूप करणे ल्यार वाद ते कयां  
जशे, कयां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! सुमंगल अनगारे घोडासहित यावत्-भस्मराशिरूप कर्या पछी ते विमलवाहन राजा अधः-  
सत्तम पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकने विपे नारकपणे उत्पन्न थशे. त्याथी च्यवीने तुरत मत्स्योने विपे उत्पन्न थशे. त्यां पण  
शस्त्रवडे वध थवाथी दाहनी पीडावडे मरणसमये काळ करीने वीजीवार पण अधःसत्तम नरकपृथिवीमां उत्कृष्टस्थितिवाळा नरकावासने  
विपे नारकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी अन्तररहितपणे च्यवी वीजीवार पण मत्स्योमां उत्पन्न थशे. त्या पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ  
करीने छट्टी तमा नामे नरकपृथिवीमा उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकमां नैरयिकपणे उत्पन्न थशे. त्याथी नीकळी तुरतज स्त्रीने विपे उत्पन्न  
थशे. त्या पण शस्त्रद्वारा वध थतां दाहनी पीडाथी यावत्-वीजीवार छट्टी तमा पृथिवीमा उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकमां नारकपणे  
उत्पन्न थशे. यावत्-त्यांथी नीकळीने वीजीवार पण स्त्रीओमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने  
पांचमी धूमप्रभाने विपे उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकावासमां यावत्-उत्पन्न थशे. त्याथी नीकळीने उरःपरिसर्पमां उत्पन्न  
थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी काळ करीने वीजीवार पांचमी नरकपृथिवीमां उत्पन्न थइ, त्याथी नीकळी यावत्-वीजीवार  
उरःपरिसर्पमां उत्पन्न थशे. त्याथी यावत्-काळ करीने चौथी पंकप्रभा पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकने विपे  
नारकपणे उत्पन्न थइ, यावत्-त्याथी नीकळी सिंहोमा उत्पन्न थशे, त्या पण शस्त्रवडे वध थवाथी ते प्रमाणेज यावत्-काळ  
करीने वीजीवार चौथी पंकप्रभामा उत्पन्न थइ, यावत्- त्याथी नीकळी वीजीवार सिंहोमां उत्पन्न थशे, त्याथी यावत्-काळ करीने  
त्रीजी वालुकाप्रभामा उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळा नरकावासमा उत्पन्न थइ, त्यांथी नीकळी पक्षीओमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध  
थाथी यावत्-काळ करी वीजीवार त्रीजी वालुकाप्रभामा उत्पन्न थइ यावत्-त्याथी नीकळी वीजीवार पक्षीओमां उत्पन्न थशे. यावत्-काळ  
रा त्याथी वीजी शर्कराप्रभामां उत्पन्न थइ, यावत्-त्याथी नीकळी सरिरूप ( शीकारी पशुओ )ने विपे उपजशे. त्यां शस्त्रवडे वध  
थाथी यावत्-काळ करी वीजीवार शर्कराप्रभाने विपे यावत्-उत्पन्न थशे. अने त्याथी नीकळी वीजीवार मरीरूपमां उत्पन्न थशे. यावत्-  
त्यांथी नीकळीने राक्षीने  
उपजशे. त्या पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने असन्नीमा उत्पन्न थशे. त्यापण शगाने वध थतां यावत्-काळ करीने  
वीजीवार पण आ रत्नप्रभापृथिवीमा पत्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा नरकावासमां नारकपणे उत्पन्न थशे. एने त्यांथी यावत्-

विमलवाहन मरण  
पछी कयां जशे ?